मान सागरी पद्धति :

वि. भू. मिश्र परमानन्द शास्त्री
व
ज्यो. पं. गौरीशंकर शर्म्मामिश्र

मथुरा

श्री गोवर्धन संस्कृत पुस्तकालय
व
श्री कृष्णा पब्लिसिंग हाऊस

॥ श्रीहरिः शरणम् ॥

भूमिका

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तत्र केवलम् ।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥ १ ॥

पाठक वृन्द ! भारतवर्षकी इस आधुनिक अवनत दशामें भी ऋषिकृत भविष्यवाणी के यथार्थताका जनमात्र के हृदय पर अगर सच्चा विश्वास तथा प्रत्यक्षफल दर्शक एवं चमत्कार दिखाने वाला कोई शास्त्र है तो ज्योतिष शास्त्र है, कोई चाहे नास्तिक से भी परे नास्तिक हो तथा किसी भी धर्म्म एवं मत व देशका मनुष्य क्यों न हो परन्तु प्रत्यक्षफलबोधक ज्योतिषशास्त्र को उसे सच्चा मानना ही पड़ेगा, दूसरे शास्त्रों की तरह इसमें किन्तु, यदि, क्या क्यूं के लिये जगह ही नहीं रहती, और संदिग्ध बातों में तो "सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तः करणप्रवृत्तयः" के अनुसार कार्य करना पड़ता है लेकिन इसमें "प्रत्यक्षे किं प्रमाणं" का ऐसा हिसाब लगा हुआ है कि जिसमें सन्देह को कहीं स्थान ही नहीं मिलता खुद प्रत्यक्ष फल ही अन्तः करणके ऊपर ऐसा आसन जमाकर बैठ जाता है, कि जिससे उसके अन्तःकरणमें संदेह ही नहीं रहता कि जो अन्तःकरणकी प्रवृत्ति को प्रमाणों के लिये सन्देहों की लहरों में गोता लगाने पड़े।

अतः विवश होकर सर्वथा इस शास्त्रके महत्त्वकी ओर शिर झुकाना ही पड़ता है, इस शास्त्र में कहे हुए सभी विषय प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर जनता के होजाते हैं, ऐसा कौन होगा कि जो प्रतिवर्ष यथा समय पर शास्त्रसे निर्दिष्ट किये हुए ग्रहण, वृष्टि आदिको न दृष्टिगोचर करता हो अन्यान्य भी ऐसी कई प्रधान २ बातें हैं कि जो लोगों के विश्वास को इस शास्त्रकी सत्यता में दृढ करती हैं, अत एवही यह ज्योतिः शास्त्र 'दृष्टे सम्भवत्यदृष्टकल्पना न न्याय्या' के अनुसार अदृष्टकल्पनाओं से निर्मुक्त होकर दृष्टार्थताओं से भरा पड़ा है, 'ज्योतिषामयनं चक्षुः, सर्वेन्द्रियाणां नयनं प्रधानम्' "तद्वद्वेदाङ्गशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि स्थितम्" इन कारणों से निर्विवाद सिद्ध है कि यह शास्त्र सर्वशास्त्रोपरि प्रधान है, इसमें अणुमात्र भी संदेह नहीं है, अब हमें प्रकृतग्रन्थ मान सागरी को लेकर कहना है कि यह मानसागरी ग्रन्थ जन्मपत्री के विषय के लिये भारतवर्षमें जितना प्रचलित है ऐसा और कोई ग्रन्थ नहीं देखा जाता, इस ग्रन्थके महत्त्व से छोटे से छोटे बड़े से बड़े सभी ज्योतिषी खूब परिचित हैं, जैसा कि जन्मपत्री का विषय इसमें सरलता से स्पष्ट किया है वैसा अन्यत्र नहीं, गणित तथा

फलित के जतलाने के लिये किसी बातको वाकी छोडा ही नहीं है जिससे कि किसी अन्य ग्रन्थका आश्रय लेना पडे, कई ग्रन्थ इकट्ठे करने पर भी इतना विषय नहीं मिल सका, इसी के आधार पर बडे २ तथा छोटे२ सभी ज्योतिषी जन्मपत्री का कार्य करते हैं यह प्राचीन तथा अत्यन्त प्रामाणिक ग्रंथ है, जातक ग्रन्थों में सबसे बढ़कर यही ग्रन्थ पाया जाता है, इसकी संस्कृत यद्यपि अतीव दुर्बोध नहीं है तथापि साधारण-श्रेणी के विद्वान् कठिनता से समझ सके हैं अतः उसी कठिनता के दूर करने के लिये अत्यन्त सरल हिन्दी भाषा, उदाहरण गणित न्यास तथा कठिन स्थलों पर ग्रन्थान्तरों से उपयुक्त टिप्पणी देकर इतनी सरल करदी है कि स्कूल से केवल ५-६ कक्षोत्तीर्ण भी बालक इसके तत्वको पहिचान कर अपना कार्य सुगमता से कर सक्ते हैं, यद्यपि इसकी टीकायें मुम्बय्यादि प्रदेशोंमें भी छपी हैं तथापि ऐसी नहीं हैं कि जो सुकुमारमति-बालकों के लिये विषयको पूर्णतया हृदयङ्गम कराने में समर्थ हो सकें, व्याकरण साहित्यादि विषय को छोडकर ज्योतिष विषय पर जिसके कि विना मूल ग्रन्थका समझना नितान्त कठिन प्रतीत होता था ग्रंथान्तरों से उद्धृत कर हिन्दी में ही टिप्पणी की है जिससे दूसरे ग्रन्थों के देखने की आवश्यकता नहीं रहती, इसमें पांच अध्याय हैं प्रथमाध्यायमें मङ्गलाचरण के बाद संवत्सरानयन, संवत्सरादिपंचाङ्गफल, तथा चन्द्र-कुण्डलीविचार, आदि विषय निरूपण किये हैं, द्वितीयाध्याय में गतकल्यब्दानयन, द्वादशभावस्पष्टीकरण, ग्रहफल द्विग्रहीयोगादि फल निरूपित हैं, तृतीयाध्यायमें भावगत लग्नेश आदिका फल, उच्चादिग्रहफल तन्वादिद्वादशभावगतराशिफल, मेषादिराशिगतसूर्यादिग्रहफल तथा षड्वर्गसाधनरीति और फल आदिवर्णितहैं,चतुर्थाध्याय में पञ्चमहापुरुषादियोग, सुनफादियोग, अरिष्टयोग, अरिष्टभंगयोग, द्वादशभावफल, नव ग्रहोंका पुरुषाकार चक्र, फल सहित अनेक चक्र, ससाधन रश्मिफल, अष्टकवर्ग फल, स्थानादिग्रह फल, भावफल तथा पिण्डायुः आदि वर्णित हैं, पंचमाध्यायमें विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी, सन्ध्या दशा, योगिनीयों की दशान्तर्दशादि वर्णित हैं, यह परिश्रम विद्वानों के अर्थ नहीं किया है क्योंकि विद्वान् तो विद्वान् हैं ही, जो सामान्यतया अपना कार्य सुचारुरूप से करने में उत्सुक रहते हैं उनके लिये यह परिश्रमहै, प्रार्थना है कि दृष्टिदोष, तथा प्रमाद एवं अक्षरसंयोजकोंकी असावधानी से जो कुछ अशुद्धियां रहगई हों उनको सदयहृदय सज्जन क्षमा करेंगे।क्योंकि—

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः ॥

इसके अनुसार भूल होना मनुष्य मात्र का धर्म है।

इसके लिये पुस्तकों की सहायता जिन २ महानुभावों ने दी है उनके नाम सधन्यवाद के निर्दिष्ट किये जाते हैं—

१—दैवज्ञचक्रचक्रवर्त्ती, भारतसुप्रसिद्ध, ज्योतिषाचार्य, गवर्नमेन्टप्राप्त-सुवर्णपदक, पटियाला, नाभा, धवलपुर आदि नरेशों के महामान्य राजज्योतिषी प्रति-

धर्षीय तथा दशवर्षीय भारतमार्तण्डनामक पंचाङ्ग निर्माता एवम् दैवज्ञकल्पद्रु माद्य-नेकग्रन्थ रचयिता, ज्योतिष विद्याके हमारे परमगुरु विद्यावारिधि स्वर्गीय श्री १०८ श्री गङ्गाराम राजज्योतिषीजी के सुपुत्र श्री राजज्योतिषी सनाढ्यकुलभूषण पं कृष्णदत्त शर्म्मा मुख्योपाध्याय धवलपुर स्टेट।

२—गौड़वंशावतंस वैद्यवर्य ज्यो० गोस्वामि श्री पं चिरञ्जीलालजी महाराज गली मेघा मथुरा, मथुरा।

श्री गोवर्द्धन संस्कृत पुस्तकालय व श्रीकृष्ण पब्लिशिंग हाउस

प्रेस के अध्यक्ष मथुरास्थ श्रीमान् श्रेष्ठि वर्य्य श्री गोवर्द्धनदास जी महोदय को अनेक धन्यवाद दिया जाताहै क जो अपने निज गोवर्द्धन पुस्तकालय द्वारा उपयुक्त अनेक दुर्लभ ग्रन्थों को छापकर प्रकाशित करके देशोपकार कर रहे हैं श्री भगवान् द्वारकाधीश इनको सकुटुम्ब चिरायु करे तथा इनकी अतुलकीर्ति देश देशान्तरों में विस्तार को प्राप्त होवे। आशा है कि आगे भी अन्यान्य ऐसे ग्रन्थों का प्रकाशनकर देश हित करते रहेंगे। इसका पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार पारितोषिक पाकर श्रीमान् प्रकाशक सेठ श्रीगोवर्द्धनदासजी को सर्वदा के लिये दे दिया है।

विदुषां कृपाभिलाषिणौ—

वि० भू० मिश्र परमानन्द शास्त्री
त्रिगुणायकः
साहित्यप्रधानाध्यापक—
श्री द्वारकेश संस्कृतपाठशाला मथुरा।

ज्यो. पं० गौरीशंकर शर्म्मा मिश्र
त्रिगुणायकः
तेजाढाना पो० बरारी (मथुरा)
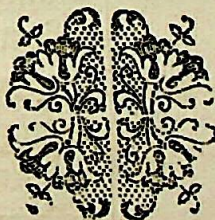
* श्रीगुरुःशरणम् *

अथ मानसागरीस्थविषयानुक्रमणिका ।

पंचमोऽध्यायः ।

—*—

विज्ञप्तिः—

(१) १५ पृष्ठे १२ पंक्तौ ३० प्रक्तौच अशुद्ध४३१०० स्थाने ४४१०० शुद्धा बोध्याः इतोऽग्रेऽपि ४ अंकानुसारेणैव संशोधनीयम् ।

(२) १११ पृष्ठे १३ पंक्तौ २४८४ स्थाने २४६४ शोध्यास्तथा तत्रैव पंक्तौ १५ पंक्तौ च.३५४स्थाने ३४४ शोध्याः अग्रेऽप्येतदनुसारेणैव शोध्याः ।

(३) १२१ पृष्ठे २३ पंक्तौ ३-५२-५५ स्थाने ३-५३-२५ शोध्याः, एवं तदग्रे तत्रैव पंक्तौ ७-५-३७-५४ स्थाने ७-५-३८-२४ शोध्याः ।

(४) १२३ पृष्ठे १५ पंक्तौ ५९-२४-०-०स्थाने *४६-२४-०-० शुद्धाङ्का ज्ञेयाः ततोऽग्रेप्येतदनुसारेणैव संशोधनं विधेयम् ।

(५) तत्रैव पृष्ठे ३२ पंक्तौअशुद्धम् १८-११-२२- शुद्धम् १८-११-२१, ३३ पंक्तौ अशुद्धम्-८-११-४८-३८ शुद्धम्-८-११-४८-३९ ।

दोषाणां मनुजमात्रसाधारणत्वान्मम प्रयासस्याऽभिनवत्वाद्वा यद्यदन्यदपि स्खलितं लक्षयेयुर्विद्वांसस्तत्क्षाम्यन्त सन्तः सफलयन्तु मदीयायासम् लिखतोऽङ्कयतः संशोधयतो जनस्य स्खलनं क्वापि भवत्येव स्थानाभावादशुद्धिशुद्धि सूचकदलश्च न संयोजितमितिशम्—

* अनुक्रमणिका समाप्ता *

गुर्वैकपक्षपातिनां परिचारकस्य—

ज्यो० गौरीशंकरशर्म्म, मिश्रत्रिगुणायंकस्य ।

"श्रीकृष्णपत्रिकाशङ्ग छाऊस प्रेस" मथुरा में छापा ।

॥ श्रीहरिः ॥

अथ मानसागरीपद्धतिः

॥ प्रारभ्यते ॥

नमः श्रीराजाधिराजश्रीद्वारकेशाय ।
श्री १०८ श्री गयादत्तगुरुभ्यः ॥
स्वस्तिश्रीसिद्धिबृद्धिर्जयो मंगलाभ्युदयश्च ।
श्रीपार्वतीजानिर्विजयतेतराम् ॥

[१]स्वस्तिश्रीसौख्यधात्री सुतजयजननी तुष्टिपुष्टिप्रदात्री ।
मांगल्योत्साहकर्त्री गतभवसदसत्कर्मणांव्यंजयित्री ॥
नानासंपद्विधात्री धनकुलयशसामायुषां वर्द्धयित्री ।
दुष्टापद्विघ्नहर्त्रीगुणगणवसति लिख्यते जन्मपत्री ॥ १ ॥

टीका कर्तुर्मङ्गला चरणम् ।

कलिन्दात्मजाकूलकेलिप्रसक्तः स्ववन्दारुमन्दारपादारविन्दः ।
सराजाधिराजः सदा द्वारकेशःकरोतुस्वभक्तस्यसन्मंगलानि ॥१॥
यस्यानुग्रहतो मयाऽऽपि विदुषांमध्ये प्रशस्तिः परा ।
तत्संरक्षित मन्दिरे च ससुखं विद्यालयो ऽध्याप्यते ॥

---

१ ग्रन्थादौ ग्रन्थमध्ये ग्रंथान्ते च मंगलमाचरणीयमिति शिष्टाचार त्वाद् निर्विघ्नतापरिसमाप्ति सिद्ध्यर्थं तत्रभवान् ग्रन्थकारो नास्तिकमतनिराकरणपूर्वका-ऽस्तिकमतावलम्बित्वबोधनार्थं च कृतं मङ्गलं शिष्यशिक्षार्थं ग्रन्थमुखे निबध्नाति स्वस्तीत्यादिना ।

श्रीमन्नागरविप्रवंशतरणेः श्रीद्वारकाधीश्वरः ।
लज्जाशंकरशर्मणो वितनुतादायुः शिवं श्रीपतिः ॥ २ ॥
चञ्चचन्द्रिकचन्द्राभचन्द्रकालंकृतिप्रियः ।
राधाराधितपादाब्जःशं दधात्वनिशं मम ॥ ३ ॥
चिरंजीलालपुत्रेण तेजाढानानिवासिना ।
परमानन्दमिश्रेण विवृतिः क्रियतेमया ॥ ४ ॥

कल्याण लक्ष्मी सौख्य की धात्री (पालने वाली) पुत्र और जय की उत्पन्न करने वाली, तुष्टि पुष्टि की देने वाली; मंगल और उत्साह को करने वाली, संस्कार में शुभाशुभ कर्मों की सूचना करने वाली, अनेक प्रकारकी संपत्तिओं की करने वाली, धन, कुल, यश, और आयुष्य की वढाने वाली, दुष्टजनों से आने वाली आपत्ति और अनेक विघ्नों की हरने वाली, गुणों के गण समूह का निवास, स्थान जन्मपत्री इस ग्रन्थमें लिखी जाती है (अर्थात् जितना कुछ जन्मपत्री के लिखने का प्रकार है वह सब इस ग्रन्थ में लिखते हैं) ॥ १ ॥

तत्रादौ जैन वैष्णवी प्रशस्तिः ।

श्री आदिनाथप्रमुखाजिनेशाः श्रीपुंडरीकप्रमुखागणेशाः ॥
सूर्यादिखेटर्क्षयुताश्चभावाःशिवायसंतु प्रकटप्रभावाः ॥ २ ॥

श्री आदिनाथ प्रभृति जिनके मतानुयायी, श्रीपुण्डरीक आदि गणेश और सूर्य आदि ग्रह नक्षत्रयुक्त भाव प्रत्यक्ष प्रभाव वाले ये सब कल्याण कारक हों ॥२॥

दशावतारो भुवनैकमल्लो गोपांगनासेवितपादपद्मः ॥
श्रीरामचन्द्रःपुरुषोत्तमोयं ददातु वः सर्वसमीहितं मे ॥ ३ ॥

दश अवतारों का धारण करने वाले चतुर्दश भुवनों में विख्यात प्रताप गोपीजनों द्वारा सेवन किये जिनके चरण ऐसे पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजी महाराज मेरे सब वाञ्छितों के देने वाले होवें ॥ ३ ॥

श्रीमानस्मानवतु भगवान्पार्श्वनाथः प्रियंवोश्रेयो लक्ष्म्याक्षिति–

पतिगणैःसादरं स्तूयमानः ॥ भर्तुर्यस्य स्मरणकरणात्तेपिसर्वे विवस्वन्मुख्याः खेटाददतु कुशलं सर्वदादेहभाजाम् ॥ ४ ॥

जिन स्वामी पारसनाथजी के सेवन करने से सूर्यादि नवग्रह भी देह धारिओं को सर्वदा कुशल देते हैं और लक्ष्मीजी सहित सम्पूर्ण राजमण्डल आदर से स्तुति करते हैं वे श्री पार्श्वनाथ (पारसनाथ) जी हमारी सदा रक्षा करें और तुमको प्रिय कल्याण के देने वाले होवें ॥ ४ ॥

सूर्यःशौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मंगलंमंगलःसद्बुद्धिं चबुधोगुरुश्चगुरुतांशुक्रःसुखंशंशनिः ॥ राहुर्बाहुबलंकरोतु विपुलंकेतुः कुलस्योन्नतिंनित्यंप्रीतिकरा भवन्तुभवतां सर्वेप्रसन्नाग्रहाः॥५॥

शूरवीरता को सूर्य ,उत्कृष्ट पदवीको चन्द्रमा, उत्तम मंगलोंको मंगल,सद्‌ बुद्धिको बुध, बड़प्पन को गुरु (बृहस्पति,) सुखको शुक्र, कल्याणको शनि, विपुल भुजबलको राहु, और तुह्मारे कुलकी उन्नत्तिको केतु करे, और प्रसन्न हुये ये सब ग्रह तुमको नित्य प्रसन्नता करने वाले होवें ॥ ५ ॥

कल्याणंकमलासनःसभगवान्विष्णुःसजिष्णुःस्वयंप्रालेयाद्रिसुतापतिःसतनयोज्ञानंचनिर्विघ्नताम् ॥ चंद्रज्ञास्फुजिदर्कभौमधिषणच्छायासुतैरन्वितंज्योतिश्चक्रमिदंसदैवभवतामायुश्चिरंयच्छतु ॥ ६ ॥

कमल पर विराजमान भगवान् ब्रह्माजी और अर्जुन सहित भगवान् विष्णु अर्थात् नर नारायण तुमको कल्याण देने वाले होवें, और पार्वतीकान्त शिवजी अपने पुत्र गणपतिजी सहित तुमको ज्ञान देने वाले और निर्विघ्नता देने वाले होवें, चन्द्र बुध शुक्र सूर्य मंगल और शनि इन ग्रहों से युक्त समग्र ज्योतिश्चक्र तुमको चिरायु देने वाले होवें ॥ ६ ॥

सूर्योयच्छतुभूपतांद्विजपतिः प्रीतिंपरांतन्वतांमांगल्यंविदधातु भूमितनयोबुद्धिंविधत्तांबुधः ॥ गौरंगौरवमातनोतुचगुरुःशुक्रः सशुक्रार्थदःसौरि वैंरिविनाशनं वितनुतेरोगक्षयंसैंहिकः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यकी इस जन्मपत्री को मैं लिखता हूं उस मनुष्य को सूर्य-

नारायण ते राज्य देने वाले होवें, चन्द्रमा परा (उत्तमा) प्रीति का विस्तार करें, मंगल देवता उसको मंगल देने वाले होवें, बुध देवता उसकी बुद्धिका विधान करें (बढावें) बृहस्पति जी गुरुजन के गौरवको विस्तार करें शुक्र देवता वीर्य सहित धनको देवें और शनि देवता उनके शत्रुजनों का नाश करें और केतु देवता उनके रोगों को नाश करें ॥ ७ ॥

श्रीमान्पङ्कजिनीपतिःकुमुदिनीप्राणेश्वरोभूमिभूःशशांकिःसुररा-
जवंदितपदोदैत्येन्द्रमंत्रीशनिः॥स्वर्भानुः शिखिनांगणोगणपति-
ब्रह्मेशलक्ष्मीधरास्तंरक्षंतुसदैवयस्यविमलापत्रीत्वियंलिख्यते ॥८॥

कमलों का पति (सूर्य) कुमुदिनीयों का पति (चन्द्र) मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनि राहु केतु और गणपति ब्रह्मा शिवजी विष्णु ये सम्पूर्ण देवता उस पुरुषकी सदैव रक्षा करें जिसकी कि जन्मपत्री मैं लिखता हूं ॥ ८ ॥

कृतंमयानोदकयंत्रसाधनं न भेक्षणं चापि न शंकुधारणम् ।
परोपदेशात्समयावबोधकंविलिख्यतेजन्मफलंनराणाम् ॥ ९ ॥

ग्रन्थकार कहता है कि मैंने कोई जल यन्त्रका साधन नहीं किया है, मैंने नक्षत्रों को नहीं देखा है और न मैंने कोई शंकुधारण (शंकुविद्या का साधन) किया है। केवल दूसरे के बताये हुए समय के अनुसार मनुष्यों के शुभाशुभ समय के फलको बताने के लिये इस जन्मपत्रके फलको कहता हूं ॥९॥

ललाटपट्टे लिखिता विधात्रा षष्ठीदिने याक्षरमालिकाच ।
तांजन्मपत्रीप्रकटीं विधत्तेदीपोयथावस्तुघनांधकारे ॥ १० ॥

छठी के दिन विधाताने ललाट में जो कुछ वर्णमाला(प्रारब्धभोग)लिखीहै उसीको जन्मपत्री कहते हैं क्योंकि उस वर्णमाला को वह जन्मपत्री ही प्रकट करती है जिस तरह दीपक अंधेरे घरमें रक्खी हुई चीजको दिखाता है ॥ १० ॥

---

१ भानामीक्षणं भेक्षणं नक्षत्राणामित्यर्थः " नक्षत्रमृक्षभंतारेत्यमरः ।

२ जन्मकाले घटीपलज्ञानार्थं शंकुर्घर्मे ध्रियते इति ज्योतिर्ग्रन्थेषु सर्वत्र भणितम्, साम्प्रतं तु तज्ज्ञानार्थं घटिकायन्त्रमेवविद्यते ।

३ परस्यान्यस्य अर्थाज्जातस्यशिशोः सम्बन्धिनः कथित समयाऽनुसारेणैवेत्यर्थः ।

यावन्मेरुर्धरापीठेयावच्चंद्रदिवाकरौ ।
तावन्नंदतु बालोऽयंयस्यैषा जन्मपत्रिका ॥ ११ ॥

जब तक पृथ्वी पर सुमेरु और आकाश में सूर्य चंद्रमा स्थित हैं तब तक वह बालक प्रसन्न रहे जिसकी यह जन्मपत्री है ॥ ११ ॥

यस्यनास्तिकिलजन्मपत्रिकायाशुभाशुभफलप्रदर्शिनी ।
अंधकंभवतितस्यजीवितंदीपहीनमिवमंदिरंनिशि ॥ १२ ॥

जिस मनुष्य की शुभ अशुभ फल को दिखाने वाली जन्म पत्री नहीं होती है उस मनुष्य का जीवन रात्रि में दीपक रहित घर की तरह अन्धा होता है ॥ १२ ॥

वंशोविस्तारतांयातुकीर्तिर्यातुदिगंतरे ।
आयुर्विपुलतांयातुयस्यैषाजन्मपत्रिका ॥ १३ ॥

जिस पुरुष की ये जन्मपत्री है उसका वंश बढ़ै, और आयु बढ़ै दिशाओं में कीर्ति बढ़ै ॥ १३ ॥

यंब्रह्मवेदांतविदोवदंतिपरप्रधानं पुरुषंतथान्ये ।
विश्वोद्गतेःकारणमीश्वरंवातस्मैनमोविघ्नविनाशनाय ॥१४

जिसे वेदान्ती लोग ब्रह्म बताते हैं बहुत से मनुष्य जिसे प्रकृति से पर पुरुष बताते हैं और कितने ही लोग जिसे इस विश्व में उत्तम गति के देने का कारण बताते हैं मैं उस विघ्नों के नाश करने वाले गणपति रूप भगवान को नमस्कार करता हूं ॥ १४ ॥

आदित्याद्याग्रहाःसर्वेसनक्षत्राःसराशयः ।
सर्वान्कामान्प्रयच्छंतुयस्यैषाजन्मपत्रिका ॥ १५ ॥

जिस की ये जन्मपत्री है उस मनुष्य को राशि और नक्षत्रों सहित सूर्यादि सम्पूर्ण ग्रह सब कामों के देने वाले होवें ॥ १५ ॥

जननीजन्मसौख्यानांवर्धनीकुलसंपदाम् ।
पदवीपूर्वपुण्यानांलिख्यतेजन्मपत्रिका ॥ १६ ॥

जन्मपर्यंत के सुखों की देने वाली कुल की संपत्तिओं को बढ़ाने वाली

और पूर्व पुण्यों का आदर्श दिखाने वाली तसवीर हैं उस जन्मपत्री को लिखने का मैं प्रारंभ करता हूं ॥ १६ ॥

एकदंतो महाबुद्धिः सर्वज्ञोगणनायकः ।
सर्वसिद्धिकरो देवो गौरीपुत्रोविनायकः ॥ १७ ॥

वडे बुद्धिमान् एक जिनके दंत सबों के हृदय की जानने वाले सब सिद्धिओंके देने वाले पार्वती के पुत्र गणों के नायक विनायक देव (गणेशजी) को नमस्कार करता हूं ॥ १७ ॥

ब्रह्माकरोतु दीर्घायुर्विष्णुः कुर्याच्चसंपदम् ।
हरोरक्षतुगात्राणियस्यैषाजन्मपत्रिका ॥ १८ ॥

जिसकी यह जन्मपत्री है ब्रह्माजी उसकी दीर्घायु करें विष्णु भगवान् संपत्ति देने वाले होवें और शिवजी उसके अंगों की रक्षा करें ॥ १८ ॥

गणाधिपोग्रहाश्चैवगोत्रजामातरोग्रहाः ।
सर्वेकल्याणमिच्छंतुयस्यैषाजन्मपत्रिका ॥ १९ ॥

गणेशजी, समग्र ग्रह और गोत्र ग्रह तथा मातृग्रह ये सब जिसकी ये जन्मपत्री है उस मनुष्य के कल्याण की इच्छा करें ॥ १६ ॥

कल्याणानि दिवामणिःसुललितांकांतिंकलानांनिधिर्लक्ष्मींक्ष्मातनयो
बुधश्चबुधतांजीवश्चिरंजीविताम् । साम्राज्यंभृगुजोऽर्कजोविजयतां
राहुर्बलोत्कर्षतांकेतुर्यच्छतुतस्यवाञ्छितमियंपत्रीयदीयोत्तमा ॥ २०

जिसकी ये जन्मपत्री है उस मनुष्यको सूर्य नारायण कल्याणको, मनोहर कान्ति को चन्द्रमा, धन को मंगल, बुद्धिमानी को बुध, चिरंजीवायु को बृहस्पति, चक्रवर्ती राज्य को शुक्र; विजय को शनि, बलोत्कर्ष को राहु, और उसके वांछित को केतु देने वाला होवे ॥ २० ॥

श्रीजन्मपत्रीशुभदीपकेनव्यक्तंभवेद्धाविफलंसमग्रम् ।
क्षपाप्रदीपेनयथागृहस्थंघटादिजातं प्रकटत्वमेति ॥ २१ ॥

श्रीजन्मपत्री रूप शुभदीपक से होने वाला समग्र फल प्रकट (खुलासा) मालूम होजाता है । जैसे दीपक से घरके भीतर रक्खे सब घट पटादि पदार्थ प्रत्यक्ष दीखने लगते हैं ॥ २१ ॥

येकुर्वंतिशुभाशुभानि जगतांयच्छंतियेसंपदोयेपूजाबलिदानहोमविधिभिर्निघ्नंतिविघ्नानिच ॥ येसंभोगवियोगजीवितकृतःसर्वेश्वराःखेचरास्तेतिग्मांशुपुरोगमाग्रहगणाःशांतिंप्रयच्छंतुवः ॥२२॥

जो ग्रह सब जगत को शुभाशुभ फल देते हैं अनेक संपत्तिओं को देते हैं और जो पूजा बलिदान होम विधि से अनेक विघ्नोंको नाश करते हैं और जो संयोग वियोग और जीवन को करते हैं ऐसे सूर्यादि ग्रहोंके गण तुम्हें शांति देने वाले होवें ॥ २२ ॥

येनोत्पाट्यसमूलमंदरगिरिश्छत्रीकृतो गोकुलेराहुर्येनमहाबलीसुररिपुःकायार्द्धशेषीकृतः ॥ कृत्वात्रीणिपदानियेनवसुधाबद्धोबलिर्लीलयासत्वांपातुयुगेयुगेयुगपतिस्त्रैलोक्यनाथोहरिः ॥ २३ ॥

जिसने गोकुलमें जड से उखाड कर गोवर्धन पर्वत को छत्रकी तरह धारण किया जिसने बडे बली देव शत्रु राहुका शिर काटकर एक को दो कर दिया और जिसने वामन रूप धारण कर तीन पग भूमि के देने के निमित्त से लीला कर बलि राजाको बांध लिया वह युगों का पति तीनों लोकों का नाथ भगवान् युग २ में तुह्मारा पालन करे ॥ २३ ॥

पूषापुष्टिंदिशतुसततंसंततिंशीतरोचिर्भौमोभाग्यंसितकरसुतः शांतिमांगल्यनित्यम् ॥ जीवोराज्यंचिरसुभगतांभार्गवोभूमिपात्रंराहुःसौख्यंशिखिनइतितेकीर्तिमभ्रंलिहांच ॥ २४ ॥

सूर्य तुझको पुष्टि देवें चन्द्रमा तुझको निरंतर सन्तान देवें मंगल देवता भाग्य को देवें बुध नित्य शांति और मंगलको देवें राज्यको बृहस्पति देवें सुभगता (सुन्दरता) को शुक्र देवें सार्वभौम को राहु देवें सुखको और आकाश व्यापिनी कीर्तिको केतु देवें ॥ २४ ॥

ग्रहा राज्यं प्रयच्छंति ग्रहा राज्यं हरंतिच ।
ग्रहैर्व्याप्तमिदं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ २५ ॥

गृह ही तो राज्य देते हैं और ग्रह ही राज्य को हर लेते हैं इससे ये चराचर सब जगत ग्रहों से ही व्याप्त है ॥ २५ ॥

उमागौरी शिवा दुर्गा भद्राभगवती तथा ।
कुलदेव्यथ चामुंडा रक्षंतु बालकं सदा ॥ २६ ॥

पार्वती गौरी शिवा दुर्गा भद्रा और भगवती कुलदेवी तथा चामुण्डा इतनी सब दुर्गा सदा उस बालक की रक्षा करें जिसकी ये जन्मपत्रिका है ॥ २६ ॥

अविरलमदजलनिवहं भ्रमरकुलानीकसेवितकपोलम् ।
अभिमतफलदातारंकामेशंगणपतिंवंदे ॥ २७ ॥

जिसके निरन्तर मदजल वहने वाले कपालमें हजारों भौंरे झूमराट खाते हैं ऐसे मनोवांछित फलों को देने वाले श्रीगणपति को मैं प्रणाम करता हूं ॥२७॥

इति जैन वैष्णवी प्रशस्तिः ॥

अथ यावनी प्रशस्तिः ।

यःपश्चिमाभिमुखसंस्थितविद्यमानोह्यव्यक्तमूर्तिपरिवर्तितविश्वभोगः ॥ दुर्लक्ष्यविक्रमगतिः कृतकर्मलक्ष्यो राज्याश्रियंदिशतुवोरहमाणएषः ॥ १ ॥

जो पश्चिम दिशाकी तरफ मुख करके खडे होकर उपासना करने वाले मनुष्यों को प्रत्यक्षमूर्ति से विद्यमान दीखता है और जिसने अपनी अव्यक्त (गुप्त) मूर्तिसे विश्वके भोगों को परिवर्तन कर रक्खा है जिसके पुरुषार्थ की गति लखने में नहीं आती है और किये हुए सब कर्मों को देखता है वह रहमाण अर्थात् भगवान् मुझे राज्य और लक्ष्मी को देवे ॥ १ ॥ इतियावनीप्रशस्तिः ॥

१ वस्तुतस्तु एतच्छ्लोकस्थ रहमाणशब्देन ज्ञायते यदयं ज्योतिर्विद ग्रंथकर्त्ता यवनसाम्राज्यकालेऽभूदितिततस्तत्रतत्सत्ताकाले लोके तन्मान्यत्वेन तदीयं देवमपि स्तौतीति ।

अथाग्रेपद्धतिः प्रारभ्यते ।

अथश्रीमन्नृपविक्रमार्कराज्यादमुकसंवत्सरे ऽमुकशाकेऽकरणगताऽदाधिकमासावमदिनाहर्गणामुकायनामुकगोलगतेश्रीसूर्ये ऽमुकऋतावमुकमासे ऽमुकपक्षेऽमुकतिथावमुकवासरे घटीपलामुकनक्षत्रेघटीपलामुकयोगे घटीपलामुककरणेऽत्रदिनेसूर्योदयाद्दिनगतघटीपलामुकराशिस्थितेश्रीसूर्ये अमुकराशिस्थितेचंद्रे अमुकराशिस्थिते भौमेबुधेगुरौशुक्रेशनौराहौ केतौवा अमुकराशिनवांशेऽमुकलग्नाधिपतावमुकराश्यधिपतौएवं पुण्यतिथौपंचांगशुद्धौ शुभग्रहनिरीक्षितकल्याणवत्यांवेलायांतात्कालिकामुकलग्नोदयेसंक्रांतिगतांशघटीपलायनांशाः घटीपल मिश्रप्रमाणघटीपलदिनार्द्धप्रमाणघटीपलाक्षर निशार्द्धप्रमाण घटीपलाक्षरदिनप्रमाणघटीपलरात्रिप्रमाणघटीपलसंमीलनेऽहोरात्रिप्रमाणघटीपलरविभोग्यलंकोदयाद्गतघटीपले 'उन्नतघटीपलसूर्य पुरुषाकारनक्षत्रं अमुकस्थाने पतितंतत्रकैलासगिरिशिखरे' उमामहेश्वरसंवादे विंशोत्तरीदशाप्रमाणेनादावमुकदशामध्ये जन्मामुकसंध्यायां, अमुकयामकेषु वंशोद्भवगंगानीरपवित्रोपमामुकान्वयेऽमुकगोत्रेऽमुकपुत्रे, अमुकगृहेभार्या ऽमुकनाम्नीपुत्ररत्नमजीजनत् ॥ अत्रहोराशास्त्रप्रमाणेनामुकनक्षत्रेऽमुकचरणे ऽमुकाक्षरेऽमुकस्वरेऽमुकयोनावमुकनाड्यामसुकगणेऽमुकवर्णेऽमुकवर्गेऽमुकयुंजायां तस्यचिरंजीवामुकनामप्रतिष्ठितं सचजिनप्रसादाद्दीर्घायुर्भवतु ॥

अब अगाड़ी जन्मपत्री लिखने की रीति लिखते हैं कि जन्मपत्री लिखने बनाने वाले पंडित को अथ श्रीमन्नृपविक्रमार्क राज्यात्० यहां से लेकर० दीर्घायुर्भवतु यहां तक जो मूलमें लिखा है सो ऐसे का ऐसा लिख देना चाहिये ॥

अथ जन्मकुण्डली रीति ।

संवत्सरफलायनफलगोलफलऋतुफलमासफल पक्षफलतिथिफल वारफलदिनजातफलरात्रिजातफल योगफलकरणफलगणफलम् योनिफलवारायुर्लग्नफलांशफलानामग्रेचंद्रकुंडलिकाचक्रंचंद्रकुंडली-फलम् ॥ चंद्रात्फलराश्यायुर्भावसाधनार्थंसूर्यादिकमध्यम सूर्यादिकस्पष्टसूर्यादिकतात्कालिकभावचक्रविधिफलम्सूर्यादीनां भावविश्वोपकभावोक्तफल द्वादशभवनेनवग्रहाणां द्वादशभवन निरीक्षणविधिः द्वादशभवनेनवग्रहाणांफलंद्वादशभवनेशफलम् द्वादशभवनेद्वादशलग्नफलंद्वादशलग्नानांस्वामिफलंषड्वर्गमैत्रीम् चक्रंषड्वर्गकुंडलीचक्रं पंचमहापुरुषयोगफलंसुनफाऽनफादुरधरा-केमद्रुमवोसिवेस्युभयचरीयोगिनफलराजयोग द्वादशायुरगति गतिनवग्रहचक्र नवग्रहफलदीप्तस्वस्थनवप्रकार ग्रहफलम् ॥ अरिष्टभंगराजयोगगजचक्रम् ॥ अश्वचक्रम् ॥ शतपदचक्रम् ॥ सूर्यकालानलचंद्रकालानल यमदंष्ट्रात्रिनाडीयंत्रसर्वतोभद्रचक्रम् चंद्रावस्थाचक्रंरश्मिचक्रं रश्मिफलं चौवीसबलाष्टवर्गाष्टवर्गफलं सर्वाष्टकवर्गचक्रम्॥ मैत्रीचक्रंमहादशाफलंविंशोत्तर्यष्टोत्तरीसंध्या-पाचकचक्रमन्तर्दशाचक्रमंतर्दशाफलमुपदशाचक्रमुपदशाफलम्॥

जन्मपत्री बनाते समय पंडित को जन्मपत्री में इतना विषय लिखना चाहिये सम्वत्सर अयन गोल ऋतु मास पक्ष तिथि वार दिन जन्म रात्रिजन्म योग करण गण योनि वारायु लग्न अंश इन सवों के क्रमसे पृथक् पृथक् फल लिखने चाहिये तदनन्तर चन्द्रकुण्डली चक्र चंद्रकुण्डली फल चन्द्रमा से फल राश्यायुः भाव साधन के अर्थ सूर्यादिक ग्रह मध्यम सूर्यादिक स्पष्ट सूर्यादिक तात्कालिक भाव चक्रविधि सूर्यादिकों के भाव विश्वोपक बारह स्थानों में स्थित ग्रह इन सवों के

पृथक् २ फल बारहों घरों के स्वामिओं के फल बारहों घरों में स्थित बारहों लग्नों के फल बारहों लग्नों के स्वामिओं के फल फिर षड्वर्गमैत्रीचक्र पंचमहापुरुष योग इनका लेखन तथा फल तदनंतर सुनफा अनफा दुर्धरा केमद्रुम योसि बेसि उभयचरी योगिनी इन सब योगों के लक्षण तथा फल तदनंतर राजयोग द्वादशायु अगतिगति नवग्रहचक्र नवग्रहों की दीप्तस्वस्थादि नौ प्रकारों के लक्षण तथा फल तदनंतर अरिष्टभंग राजयोग फिर गजचक्र अश्वचक्र शतपद चक्र सूर्य कालानलचक्र चन्द्रकालानल चक्र यमदंष्ट्राचक्र त्रिनाड़ीयन्त्रचक्र सर्वतोभद्रचक्र चंद्रावस्थाचक्र रश्मिचक्र रश्मिफल चौबीशप्रकारबल अष्टवर्गफलचक्र मैत्रीचक्र महादशा विंशोत्तरी अष्टोत्तरी दशाओं के चक्र संध्यापाचक चक्र अंतर्दशाचक्र उपदशाचक्र इन सबों की लिखने की विधि और फल इतनी सब बातें जन्मपत्र में लिखनी मुख्य होती हैं जन्मपत्री बनाने वाले को जन्मपत्री में ये सब बातें लिखनी चाहिये ॥

॥ इति जन्मपत्री विधिः ॥

तत्रप्रथमंखंडखाद्योक्तंशकानयनम् ।

बिक्रमादित्यराज्यस्थपंचत्रिंशोत्तरंशतम् ।
पातयित्वाभवेच्छाकंचैत्राद्यात्तिथयःस्मृताः ॥ १ ॥

विक्रमादित्य के राज्यकाल १८६० में से एकशतक और पैंतीश १३५ घटाने से शाका निकलता है वह चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से गिनना चाहिये ॥

* उदाहरण *

जैसे सम्वत् १९९० का समय है उसमें १३५ घटाये तो शेष १८५५ हुये बस यही शालिवाहन शक हुआ ।

१—सम्वत्सर में १३५ इस लिये घटाया जाता है कि विक्रमादित्य राजा से शालिवाहन राजा १३५ वर्ष पीछे हुआ था । यदि शकसे सम्वत् बनाना है तो शकमें १३५ जोड़दो तो सम्वत् होजायगा ।

अथअब्दाधिकमासादिज्ञानम् ।

तदनंतरंकरणगताब्दाधिकमासाऽवमासाऽहर्गणाद्याय-स्मिन्ग्रंथमतेज्ञायंतेतास्मिन्नेवग्रंथेविलोक्यलेख्याः ॥

तदनंतर करणगत वर्ष अधिक मास अवम (न्यून) मास अहर्गणादि जिस ग्रन्थ के मत से मालूम होसकें उसी ग्रन्थमें देखकर लिखने चाहिये ॥

अथ युगानयनम् ।

द्वात्रिंशच्चसहस्राणिकलौलक्षचतुष्टयम् ।
वेदा ४ ग्नि ३ नेत्रै २ र्गुण्यंहिकृतंत्रेताचेद्वापरम् ॥

बत्तीस हजार और चार लक्ष ४३२००० का जो कलियुग का प्रमाण है इसी अंक को चार ४ से गुणा करने में सतयुग और तीन से गुणा करने से त्रेतायुग और दो से गुणा करने से द्वापर युग होता है ॥ जैसे कलियुग भोग्य काल उक्त अंक को जब चतुर्गुण किया तब १७२८००० अंक हुआ और उक्त काल को तिगुना किया तब १२९६००० अंक हुआ और उक्तकाल को द्विगुण (दूना) किया तब ८६४००० अंक सिद्ध हुआ ये ही क्रमसे सतयुग त्रेतायुग द्वापरयुगका भोगकाल समझना चाहिये जैसे सतयुग १७२८००० त्रेतायुग १२९६००० द्वापरयुग ८६४००० का प्रमाण है ॥ इति युगानयनम् ॥ २

१—तदनंतरमिति—इस जगह अधिक मास निकालने की रीति नहीं बताई है अतः और ग्रन्थों के मतानुसार प्रसंगवश से संक्षेप में कुछ रीति दिखलाते हैं। कि जिसचांद्र मासमें सूर्य की संक्राति नहीं होय वह अधिक मास होता है और जिस चान्द्र मास में सूर्य की संक्रान्ति दो हों उसको न्यून मास (क्षय) कहते हैं यह कभी कभी होता है, किंतु कार्त्तिक, मार्गशिर, पौष इन्हीं मासों का क्षय होता है, और मासों का कभी नहीं होता है। किंतु कार्त्तिकादि ३ मास कभी अधिक भी नहीं हो सकते, इतना और भी विशेष है कि जिस वर्ष में क्षय मास होता है उसमें २ अधिक मास अवश्य ही होंगे एकतो क्षय मासके ३ मास पूर्व और दूसरा ३ मास बादमें होता है, शुक्ल प्रतिपदासे कृष्ण ३० तक चान्द्र मास होता है यह अधिक मास और क्षय मास शुभ कर्मों में नेष्ट फल दायक होता है।

" २— भरौ नतौच" इति पिंगल सूत्रादयुजि (१—३) पादे यदा चतुर्था-दक्षरात्परतो यकारं वाधित्वा भगणरगणनगणतगणाः स्युर्विकल्पेन तदिदं

तत्रकलियुगफलम् ।

पापात्मादुःखसंयुक्तोधनहीनोऽयशानरः ।
दुष्टबुद्धिर्दुराचारोजायतेचकलौयुगे ॥

जो मनुष्य कलियुग में जन्म लेता है वो बड़ा पापी अनेक दुःखों से व्याप्त धनसे हीन यशहीन दुष्ट जिसकी बुद्धि और दुराचार करने वाला होता है ॥

* इति कलियुग जातं फलम् *

अथप्रभवादिषाष्टिसंवत्सर नाम तथा लानेकी विधि

तत्रादौनामानि ।

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोथ प्रजापतिः ।
अंगिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च ॥१॥
ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः ।
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवोऽव्यय ॥२॥
सर्वजित् सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः ।
नंदनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौः ॥३॥
हेमलंबी बिलंबीच बिकारी शार्वरी प्लवः ।
शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ ॥ ४ ॥
प्लवंगः कीलकः सौम्यः साधारणो विरोधकृत् ।
परिधावी प्रमादी च आनंदो राक्षसो नलः ॥५॥

बिपुलानामच्छंदःकिन्त्वत्र तद्वैपरीत्यं युजिपादे चतुर्थे चरणे पञ्चमो वर्णश्चकारो गुरुर्दृश्यतेऽतो विद्वद्भिश्चिन्त्यम् । छन्दस्त्विदं पद्यंनाम तदत्रच्छंदोभंगदोषः समायाति सुधीरधीभिस्तत्कथञ्चित् समाधेयमिति ॥

३—इन्हीं वर्षों के प्रणाए को जोड़ने से चतुर्युगात्म नामका महायुग होता है जैसे–४३२०००+८६४०००+१२९६०००+१७२८००० इनको जोड़ातो ४३२०००० ये महायुगकी वर्ष होती हैं ॥

पिंगलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्र दुर्मती ।
दुंदुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः ॥६॥

प्रभव १ विभव २ शुक्ल ३ प्रमोद ४ प्रजापति ५ अंगिरा ६ श्रीमुख ७ भाव ८ युवा ९ धाता १० ईश्वर ११ बहुधान्य १२ प्रमाथी १३ विक्रम १४ वृष १५ चित्रभानु १६ सुभानु १७ तारण १८ पार्थिव १९ व्यय २० सर्वजित २१ सर्वधारी २२ विरोधी २३ विकृति २४ खर २५ नन्दन २६ विजय २७ जय २८ मन्मथ २९ दुर्मुख ३० हेमलम्बी ३१ विलम्बी ३२ विकारी ३३ शार्वरी ३४ प्लव ३५ शुभकृत ३६ शोभन ३७ क्रोधी ३८ विश्वावसु ३९ पराभव ४० प्लवंग ४१ कीलक ४२ सौम्य ४३ साधारण ४४ विरोधकृत ४५ परिधावी ४६ प्रमादी ४७ आनंद ४८ राक्षस ४९ नल ५० पिंगल ५१ कालयुक्त ५२ सिद्धार्थी ५३ रौद्र ५४ दुर्मति ५५ दुंदुभी ५६ रुधिरोद्गारी ५७ रक्ताक्षी ५८ क्रोधन ५९ और क्षय ६० ॥ इति षष्टिसंवत्सरनामानि ॥

संवत्सर लाने की रीति ।

शाकेंद्रकालःपृथगाकृतिघ्नः २२शशांकनंदाश्वियुगैः४२९१समेतः।
शराद्रिवस्विंदु १८७५ हतःसलब्धःषष्ट्याप्तशेषेप्रभादयोऽष्टौ ॥१॥

प्रभवादि सम्वत्सर लाने की रीति—शालिवाहन शकको पृथक् २ दो स्थानों में स्थापित करे, पहिले एक जगह शक को २२ से गुणा कर ४२९१ को जोड़ देना चाहिये, फिर १८७५ का भाग देकर लब्धि को दूसरी जगह स्थापित शक में जोड़ दे, अगर ६० से अधिक हो तो ६० का भाग देकर प्रभ--

१–भगण सब ग्रहों के होते हैं जैसे सूर्यसिद्धान्त मतानुसार सूर्य, बुध, शुक्र के मध्य के और मंगल, शनि, गुरु के मध्य शीघ्र पूर्व को चलने वाले भगण ४३२०००० हैं, चन्द्रमा के ५७७५३३३६ मङ्गल के २२९६८३२ बुधके १७९३७०६०२ गुरु के ३६४२२० शुक्र के ७०२२३७६ शनि के १४६५६८ ये भगण होते हैं चंद्रोच्चक के भगण ४८८२०३ चन्द्र पात के वाईं ओर चलने वाले २३२२३८ ये भगण हैं नक्षत्रों के १५८२२३७८२८ भगण हैं नक्षत्रों के भगणों में से ग्रहों के भगण घटाने पर युग में अपने २ उदय की संख्या निकलती है ।

चादि सम्वत्सरों के भगण निकाले शेष को गत संवत्सर जानना चाहिये उसमें १ जोड़ने से वर्तमान सम्वत्सर होगा ॥

उदाहरण ।

जैसे शक १८५५ है उसमें २२ से गुणा किया तो ४०८१० हुए इनमें ४२६१ जोड़ दिये तो ४५१०१ यह हुए इनमें १८७५ का भाग दिया तो लब्धि २४ आई इनको शक १८५५ में जोड़ा तो १८७९ हुए ६० का भाग दिया तो लब्धि ३१ हुई और शेष १९ बचे ये गत सम्वत्सर हुए १ और जोड़ा तो २० यह व्यय नाम का सम्वत्सर हुआ बस इसी रीतिसे सम्वत्सर निकलता है ॥ अब गतमासादि लाने की रीति लिखते हैं— पूर्व गत शेष १०१ को १२ से गुणा किया तो १२१२ हुए इनमें १८७५ का भाग दिया तो लब्धि ० आई ये गत मास हुए शेष १२१२ को ३० से गुणा किया तो ३६३६० हुए इसमें १८७५ से भाग देने पर १९ लब्धि आई बस ये गत दिन हुए शेष ७३५ को फिर ६० से गुणा किया तो ४३१०० आये फिर इनको १८७५ से भाग दिया तो लब्धि २२ आई बस ये घड़ी होगई शेष १८५० को ६० से गुणा किया तो १११ ००० आये इनमें १८७५ काभाग दिया तो लब्धि ५९ ये पल हुए, बस यही गतमास लाने की रीति है ।

मासादि लाने का न्यास—

१०१×१२
―――――
१२१२　यह गुणन फल हुआ

भाजक भाज्य लब्धि

१८७५) १२१२ (० यहां १२१२ में १८७५ भाग नहीं जाता है अतः शेष १२१२ में　शून्य आई बसये गतमास हुए

३०×गुणाकिया
―――――
१८७५) ३६३६० (१९　यह गत दिन हुए
१८७५
―――――
१७६१०
१६८७५
―――――
शेष७३५

फिर ७३५ को
६०× से गुणा किया
―――――
१८७५) ४३१०० (२२　यह गत घड़ी हुई
३७५०
―――――
५६००
३७५०
―――――
शेष१८५०

पिछले पेज के शेष १८५० को
६० × से गुणा किया

१८७५)१११००० (५६ यह गत पल हुए
९३७५
१७२५०
१६८७५
शेष ३७५ बस शेष को छोड दो

अब क्रम से व्यय नाम सम्वत्सर के मासादिकों का मान हुआ = ०–१६–२२–५६ इनको १२ में से घटाने से ११–१०–३७–१ वर्तमान सम्वत्सरके मासादि वर्तमान हुए ॥

पुनः संवत्सरलानेकी सुगम रीति ।

शाकंरामाक्षि २३ संयोज्यंषष्ठिभागेनहर्यते ।
शेषंसंवत्सरंज्ञेयंलब्धंतत्परिवर्तकम् ॥ १ ॥

इस श्लोक में दूसरी तरह से सम्वत्सरायनयन निकालने की रीति बताई है यथा–शालिवाहन शकको २३ से जोडने से जो अंक सिद्ध हो उसमें ६० का भाग देने से जो शेष रहे उसको सम्वत्सर जानना चाहिये और उसमें १ युक्त करने से वर्तमान सम्वत् होगा और जो लब्धि है उसे परिवर्तक कहते हैं ॥

उदाहरण ।

जैसे शालिवाहन शक १८५५ है उसमें २३ जोडे तो १८७८ ये हुए अब ६० से भाग किया तो १८ बचे यह गत सम्वत्सर हुआ इसमें एक और जोड दिया तो १९ हुए बस प्रभवादिकों में १९ वां पार्थिव नाम का संवत्सर हुआ ॥

इसका न्यास ।

शक १८५५ में
२३ जोड़े
१८७८ यह युगफल हुआ
इसमें

भाजक भाज्य लब्धि
६०) १८७८ (३१
१८०
७८

६०
शेष १८
१ और जोड़ा
१६

अथ संवत्सर फलम् ।

जातिस्वकुलधर्मात्मा विद्यावांश्च महाबलः ।
क्रूरश्च कृतविद्यश्च जायते प्रभवोदयः ॥ १ ॥

प्रभवनाम संवत्सर में पैदा हुआ मनुष्य जाति और अपने कुल में बड़ा धर्मात्मा बड़ा विद्वान् बड़ा बलवान् क्रूर स्वभाव वाला और विद्याओं को जानने वाला होता है ॥ १ ॥

स्त्रीस्वभावश्च चपल स्तस्करःसधनी तथा ।
परोपकारी पुरुषो जायते विभवोदयः ॥ २ ॥

और विभव नामक संवत्सर में पैदा हुआ मनुष्य स्त्री के समान स्वभाव वाला अति चञ्चल चोरी करने वाला धनवान् और परोपकार करने वाला होताहै ॥ २ ॥

शुद्धःशांतःसुशीलश्च परदाराभिलाषुकः ।
परोपकारकर्मा च निर्द्धनी स हि शुक्लजः ॥ ३ ॥

और शुक्लनामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला पुरुष शुद्धि पूर्वक रहने वाला बड़ा शान्त सुशील पर स्त्रियों में इच्छा रखने वाला परोपकार करने वाला और निर्धन होता है ॥ ३ ॥

क्वचिल्लक्ष्मीः क्वचिद्भार्या बंधुमित्रारिविग्रहः ।
राजपूज्यःप्रधानश्च प्रमोदादिभवोनरः ॥ ४ ॥

और प्रमोदनामक संवत्सर में पैदा हुआ मनुष्य कभी लक्ष्मी और कभी भार्या से युक्त होता है और बन्धुओं से शत्रुता रखने वाला मित्रों से लड़ाई रखने वाला राजकुलमें पूज्य और राज मंत्री होता है ॥ ४ ॥

प्रजापालनसंतुष्टो दाता भोक्ता बहुप्रजः ।
विदेशेषु समाख्यातो वित्तहेतोःप्रजापतिः ॥ ५ ॥

और जो पुरुष प्रजापति नामक संवत्सरमें जन्म लेता है वह मनुष्य प्रजा के पालन करने से प्रसन्न रहने वाला दान करने वाला भोगों के भोगने वाला बहुत सन्तान वाला और धन के कारण देशों में विख्यात होता है ॥ ५ ॥

क्रियाद्याचारसंपन्नो धर्मशास्त्रागमादिषु ।
अतिथ्यामित्रभक्तोऽयमंगिरोजातउच्यते ॥ ६ ॥

और जो पुरुष अंगिरा नामक सम्वत्सर में जन्म लेता है वह क्रियादि आचारों को करने वाला धर्मशास्त्र मंत्रशास्त्र आदि शास्त्रों में प्रवीण और अतिथि तथा मित्रों में भक्ति रखने वाला होता है ॥ ६ ॥

धनवान्देवभक्तश्च धातुवादादिरेवच ।
पाखंडकृतकर्माच श्रीमुखे तु भवेन्नरः ॥ ७ ॥

श्रीमुख नाम संवत्सर में पैदा हुआ पुरुष धन सम्पन्न देवताओं का भक्त धातुवाद करने वाला और पाखण्ड कर्मों को करने वाला होता है ॥ ७ ॥

भावनां कुरुते नित्यं कर्मकर्तापुमान्भवेत् ।
मत्स्यमांसप्रियश्चैव जायते भाववत्सरे ॥ ८ ॥

और भावनामक सम्वत्सरमें जन्म लेने वाला पुरुष विचार करने में कुशल नित्य कर्मों को करने वाला और मछली के मांस में प्रीति रखने वाला होता है ॥ ८ ॥

१—इस प्रजापति नामक संवत्सर में होने वाला पुरुष प्रजायाः पतिः प्रजापतिः नरेश इत्यर्थः इस अन्वर्थ होने से राजयोगक होता है किन्तु यहां "नह्येक श्चणको भ्राष्ट्रं भंक्तुं शक्तः" इस न्यायानुसार एक योग को ही देखकर फल न कहदेना चाहिये किन्तु सभी योग मिलाने चाहिये ।

भार्यातों जलभीतश्च व्याधिदुःखादिपीडितः ।
सर्वदाप्रीतिसंयुक्तो युवसंवत्सरेफलम् ॥ ९ ॥

और युव सम्बतसर में जन्म लेने वाला मनुष्य स्त्रीं के निमित्त दुःखी जलसे भय रखने वाला व्याधि आदि दुःखों से पीडित और सर्वदा सब से प्रीति रखने वाला होता है ॥ ९ ॥

[1]धनवान्शुभगः साधुर्द्धर्मात्मादीनवत्सलः ।
सुशीलः सत्स्वरूपश्च धातरिप्रभवः सदा ॥ १० ॥

धाता नामक सम्वत्सर में उत्पन्न हुआ मनुष्य धनवान्, सुन्दर, सज्जन दीनों की रक्षा करने वाला, नम्र स्वभाव वाला और सरूपवान् होता है ।

धनी भोगी तथा कामी पशुपालप्रियो भवेत् ।
अर्थधर्मसमायुक्तो नर ईश्वरसंभवः ॥ ११ ॥

और जो पुरुष ईश्वर नामक संवत्सर में जन्म लेता है वह पुरुष बडा धनवान् अनेक भोगों को भोगने वाला बडा कामी पशु पालन करने वाला और अर्थ तथा धर्म से युक्त होता है ॥ ११ ॥

वेदशास्त्ररतो नित्यं कलागंधर्वगायनः ।
नातिगर्वी सुरापश्च जायते बहुधान्यके ॥ १२ ॥

और बहुधान्य नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला पुरुष वेद शास्त्रों में प्रीति रखने वाला कला गन्धर्व विद्या में कुशल अहङ्कार रहित और मद्य पीने वाला होता है ॥ १२ ॥

१—यह पाठ प्राचीन पुस्तकों का है आधुनिक मुद्रित पुस्तकों में तो—
"सर्वलोकगुणगौरवयुक्तः सुन्दरोऽप्यतितरां गुरुभक्तः
शिल्पशास्त्रकुशलश्च सुशीलो धातृवत्सरभवोहि नरः स्यात्"-
ऐसा पाठ है किन्तु अर्थमें कोई विशेष वैपरीत्य नहीं है इसी लिये प्राचीन-पाठ को सुरक्षित रक्खा है परिवर्तन नहीं किया है ।

परदाराभिलाषी च परद्रव्यरतो नरः ।
व्यसनी दूतवादी च प्रमाथिनि भवेन्नरः ॥ १३ ॥

और प्रमाथि नामक संवत्सरमें पैदा हुआ पुरुष पर स्त्रियों में अभिलाषा रखने वाला पर धन में प्रेम करने वाला अनेक व्यसन युक्त और दूतकर्म को करने वाला होता है ॥ १३ ॥

संतुष्टो व्यसने सक्तःसप्रतापो जितेंद्रियः ।
शूरश्च कृतविद्यश्च विक्रमे जायते नरः ॥ १४ ॥

और जो मनुष्य विक्रम नाम संवत्सर में जन्म लेता है वह सदा सन्तोषी व्यसन में आसक्त बडा प्रतापी इन्द्रियों को जीतने वाला बडा शूरवीर और अनेक विद्याओं में कुशल होता है ॥ १४ ॥

स्थूलोदरःस्थूलगुल्फोऽल्पपाणिःकुलापवादी कुलसेवकश्च ।
धर्मार्थयुक्तो बहुवित्तहारी वृषे प्रजातश्च भवेन्मनुष्यः॥१५॥

और जो वृषनाम संवत्सर में जन्म लेता है वह मनुष्य मोटे पेट वाला स्थूल टकने वाला छोटे हाथ वाला कुल का निंदक कुल की सेवा करने वाला धर्म अर्थ से संयुक्त बहुतों से धनका लेने वाला होता है ॥ १५ ॥

तेजस्वी चातिगर्वी च हीनकर्मा कृतस्थितिः ।
देवपूजाप्रियो नित्यं चित्रभानौ भवेन्नरः ॥ १६ ॥

और चित्रभानु नाम संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य बडा तेजस्वी बडा घमण्डी हीन कर्मों को करने वाला बडा दृढ देव पूजा में प्रीति रखने वाला होता है ॥ १६ ॥

१—अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः ।
एवं किलान्यास्वपि मिश्रितासु वदन्ति जातिष्विदमेव नाम ॥ १ ॥

इस छन्दः शास्त्रानुसार यह वृत्त "उपजाति होता है उपर्युक्तलक्षणानुकूल इसका प्रथमपाद "स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौगः" ऽऽ। ऽऽ।। ऽ। ऽऽ एतल्लक्षण युक्त होना चाहिये किन्तु इस पद्यमें दो तगणके वाद भी जगणकेस्थानपर तगणही देदिया गया है किन्तु तोभी विद्वानों को यथाकृथञ्चित् समाधान कर लेना चाहिये ।

सर्वाणि शुभकार्याणि मित्रामित्रफलं लभेत् ।
सर्वसंग्रहकर्ता च सुभानौ जायते नरः ॥ १७ ॥

और जो पुरुष सुभानु नाम सम्वत्सर में जन्म लेता है वह सब शुभ कार्यों का करने वाला शत्रु और मित्र दोनों की तरफ से फल पाने वाला और सब वस्तुओं का संग्रह करने वाला होता है ॥ १७ ॥

सर्वलोकप्रियो नित्यं सर्वधर्मबहिष्कृतः ।
राजपूजाप्तवित्तश्च तारणे जायते नरः ॥ १८ ॥

और जो तारणनाम सम्वत्सर में जन्म लेता है वह पुरुष सब लोक को प्रिय और सब धर्मों से बहिष्कृति और राजद्वार से धन पाने वाला होता है ॥ १८ ॥

शिवब्रह्मविकर्मा च शुभसौख्यप्रदायकः ।
भव्ययुक्तश्चधर्मात्मा पार्थिवे जायते नरः ॥ १९ ॥

और जो पुरुष पार्थिवनाम संवत्सर में जन्म लेता है वह मनुष्य शिव ब्रह्म अनेक कर्म करने वाला शुभ सौख्य को देने वाला स्वरूपवान और बड़ा धर्मात्मा होता है । १६ ।

दाताभोक्ताप्रधानत्वंजन्मकर्मणिसौख्यकम् ।
बहुधामित्रलाभश्चजायतेऽव्ययवत्सरे ॥ २० ॥

और व्ययनाम संवत्सर में पैदा हुआ पुरुष दान देने वाला भोगों का भोगने वाला सबों में प्रधान जन्म भर कर्म करने में सुख पाने वाला तथा अनेक मित्रों के लाभ से युक्त होता है । २० ।

जित्वा च सकलाँल्लोकान्विष्णुधर्मपरायणः ।
पुण्यानि सर्वकर्माणि सर्वजिज्जो भवेन्नरः ॥ २१ ॥

और सर्वजित नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला पुरुष सब लोगों को जीत कर विष्णु धर्मों में तत्पर और समग्र पुण्य कर्म करने वाला होता है ॥ २१ ॥

पितृमातृप्रियो नित्यं गुरुभक्तो भवेन्नरः ।
शूरःशांतःप्रतापी च सर्वधारीभवो नरः ॥ २२ ॥

और जो मनुष्य सर्वधारी नामक संवत्सर में जन्म लेता है वह मनुष्य माता पिता को प्रिय गुरुओं में भक्ति करने वाला बड़ा शूरवीर शांत प्रकृति और बड़ा प्रतापी होता है ॥ २२ ॥

विरोधिकर्मशार्दूलो मत्स्यमांसकृतादरः ।
धर्मबुद्धिरतो नित्यं प्रशस्तो लोकपूजितः ॥ २३ ॥

विरोधी नाम संवत्सर में जन्म लेने वाला पुरुष कर्म करने में सिंहके समान, मछली और मांस का खाने वाला नित्य प्रति धर्म में बुद्धि रखने वाला बड़ाई करने योग्य और लोक में पूजित होता है ॥ २३ ॥

चित्रवादी च नृत्यज्ञो गांधर्वो भिन्नसंशयः ।
दाता मानी तथा भोगीविकृतौ जायते नरः ॥ २४ ॥

और विकृतिनामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला पुरुष विचित्र वचनों का कहने वाला नृत्यको जानने वाला गाने में कुशल संदेहों से रहित दान देने वाला तथा अभिमानी और भोगों का भोगने वाला होता है । २४ ।

परहिंसापरो मैत्र्या परद्रव्यरतो भवेत् ।
कुटुंबभारकोत्साही जायते खरवत्सरे ॥ २५ ॥

और जो खरनाम संवत्सर में जन्म लेता है वह पुरुष परहिंसा में तत्पर मैत्री रहित पर द्रव्य में इच्छा करने वाला कुटुम्ब के बोझ को उठाने में उत्साह रखने वाला होता है ॥ २५ ॥

१–परद्रव्यरतः अतएव मैत्र्या "युक्तः" इत्यध्याहार्यम् यहां मैत्र्या यह पद तृतीयान्त है इससे युक्त पद अध्याहृत होगा अर्थात् पराये धन में रत होने के कारण मैत्री युक्त होना ठीक ही है बिना मैत्री के परद्रव्याप्ति होना कठिन है ।

सर्वदा प्रीतिसंयुक्तो गृहे कल्याणकारकः ।
राजमान्योपि पुरुषो नंदने जायते नरः ॥ २६ ॥

और जो मनुष्य नन्दननाम्न सम्वत्सर में जन्म लेता है वह मनुष्य सब समय सबों से प्रीति रखने वाला घर में कल्याण कर्म का करने वाला और राजा से प्रतिष्ठा पाने वाला होता है ॥ २६ ॥

कीर्तिरायुर्यशःसौख्यं सर्वकर्मशुभान्वितः ।
युद्धेशूरोऽरिणासक्तो विजये वत्सरे फलम् ॥ २७ ॥

और जो विजयनाम सम्वत्सर में जन्म लेता है वह पुरुष कीर्ति आयुः यश सुख इनसे सम्पन्न सम्पूर्ण शुभकर्म करने वाला युद्ध में शूर और वैरियों को दमन करने में समर्थ होता है ॥ २७ ॥

जेता युद्धे कलत्राणि मित्रामित्रफलंलभेत् ।
व्यापारकर्मसंयुक्तो जयसंवत्सरेफलम् ॥ २८ ॥

और जो पुरुष जयनाम सम्वत्सर में जन्म लेता है वह पुरुष युद्धमें जय पाने वाला स्त्री मित्र और शत्रुओं से उचित फल पाने वाला व्यापार कर्म को करने वाला होता है ॥ २८ ॥

अतिकामी चातिबुद्धिस्तृष्णावान्बहुधनान्वितःपुरुषः ।
निष्ठुरोप्यतिभोग्यतिबलयुक्तोपि मन्मथे जातः ॥२९॥

और जिसका मन्मथनाम सम्वत्सर में जन्म होता है वह पुरुष अत्यन्त कामी बडा बुद्धिमान लोभ करने वाला और बहुत धनसे युक्त बडा निष्ठुर अनेक भोग भोगने वाला और अत्यन्त वली होता है ॥ २९ ॥

शुचिःशांतःसुदक्षश्च सर्वत्र गुणपूजितः ।
परोपकारी वादी च दुर्मुखे दुर्मुखीप्रियः ॥ ३० ॥

और दुर्मुखनाम सम्वत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य पवित्रता युक्त शांत प्रकृति वाला बडा चतुर सर्वत्र अपने गुणों से पूजा पाने वाला परोपकार करने

वाला सबसे विवाद करने वाला और कुरूपा स्त्रियों से स्नेह करने वाला होता है ॥ ३० ॥

मणिमुक्तास्तथा रत्नमष्टधातुसमन्वितः ।
अदाता कृपणःपूज्यो हेमलंबौ नरो भवेत् ॥ ३१ ॥

और हेमलंबी नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला पुरुष हीरा,मोती, रत्न और सुवर्ण आदि अष्टधातुओं से युक्त कभी दान न करने वाला बडा कृपण परन्तु सर्वत्र पूजा पाने वाला होता है ॥ ३१ ॥

अलसःसततं जातो व्याधिदुःखसमन्वितः ।
कुटुंबधारको वापि विलंबौ जायते नरः ॥ ३२ ॥

और विलंबीनाम सम्वत्सर में जो पुरुष जन्म लेता है वह बडा आलसी, व्याधियों के दुःख से युक्त, कुटुम्ब का पालन करने वाला होता है ॥ ३२ ॥

रक्तवैकारयुक्तश्च रक्ताक्षः पित्तसंभवः ।
वनप्रियो धनैर्हीनो विकारौ तुभवेन्नरः ॥ ३३ ॥

और जो मनुष्य विकारी नाम सम्वत्सर में जन्म लेता है वह रक्त के विकारों से युक्त पित्त प्रकृति लाल नेत्रों वाला वनमें रहने वाला और दरिद्री होताहै।३३।

वेदशास्त्रप्रियो देवब्राह्मणे शुचिभक्तिमान् ।
शर्करारसभोगी च शार्वरौ जायते नरः ॥ ३४ ॥

और जो पुरुष शार्वरीनाम संवत्सर में जन्म लेता है वह मनुष्य वेद शास्त्रों में प्रेम रखने वाला देवता और ब्राह्मणों का भक्त और मिष्टान्नरस खाने वाला होता है ॥ ३४ ॥

सुनिद्रो बहुभोगी च व्यवसायी यशोऽन्वितः ।
पूजितःसर्वलोकानां प्लवसंवत्सरेफलम् ॥ ३५ ॥

और ध्रुवनाम संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य सर्वदा निद्रालु बहुत भोगों को भोगने वाला व्यवसाय करने वाला यश से युक्त और सब लोकों में पूजित होता है ॥ ३५ ॥

कर्मवान्सुयशाःप्रोक्तो धर्मशीलस्तपस्करः ।
प्रजापालःसुनिष्णातःशुभसंवत्सरे फलम् ॥ ३६ ॥

और जो मनुष्य शुभनाम संवत्सरमें जन्म लेताहै वह पुरुष शुभकर्म करने वाला बडा यशस्वी धर्म में स्वभाव रखने वाला, बडा तपस्वी प्रजा का पालन करने वाला और बडा कुशल होता है ॥ ३६ ॥

सुचित्तःशांतचित्तश्च शूरो दाता ह्यनेकधा ।
नातिवृद्धो न पूर्णत्वं शोभने फलमश्नुते ॥ ३७ ॥

और जो पुरुष शोभन नाम सम्वत्सर में जन्म लेता है वह मनुष्य उत्तम और शांत चित्त वाला शूरवीर बडादानी और न अत्यन्त वृद्ध तथा पूर्णता के फल को न पाने वाला होता है ॥ ३७ ॥

अतिक्रोधमतिः शूरो विज्ञानौषधिसंग्रही ।
परापवादी सर्वत्र क्रोधसंवत्सरेफलम् ॥ ३८ ॥

क्रोधनामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य बडा क्रोधी शूरवीर विज्ञान और औषधियों का संग्रह करने वाला अथवा विज्ञानरूप औषधी का जानने वाला और सर्वत्र परापवाद करनेवाला अथवा द्वैतका निषेध करने वाला ज्ञानी होताहै ३८

छत्रदंडपताकादिचामरादिविभूषितः ।
प्रधानपुरुषो जातो विश्वसंवत्सरे फलम् ॥ ३९ ॥

और विश्वनाम सम्वत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य छत्र दंड पताका और चमर आदि से विभूषित मनुष्यों में प्रधान होता है ॥ ३९ ॥

भयार्त्तःशीतभीतिश्च कातरो जायते नरः ।
अधर्मपरघाती च पराभवभवो मतः ॥ ४० ॥

और जो पराभवनाम सम्वत्सर में जन्म लेता है वह मनुष्य सदा भय से युक्त शीत से डरने वाला, अत्यन्त डरपोक, अधर्म करने वाला और जीवों का हिंसक होता है ॥ ४० ॥

रौद्रस्तस्करकर्मा च क्षितिपालो नरेश्वरः ।
योगाभ्यासरतो नित्यं प्लवंगे जायते नरः ॥ ४१ ॥

और प्लवंगनाम सम्वत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य बडा क्रूर चोरी करने वाला पृथ्वी का पालन करने वाला मनुष्यों का स्वामी योगाभ्यास करने में अभ्यास करने वाला होता है ॥ ४१ ॥

चित्रकर्ता समानश्च सुखी स्याद् ब्राह्मणप्रियः ।
पितृमातृषु भक्तश्च जायते कीलकेफलम् ॥ ४२ ॥

और कीलक नाम सम्वत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य चित्र लेखन का काम करने वाला अभिमानी सुख भोगने वाला ब्राह्मण प्रिय और माता पिता में भक्ति रखने वाला होता है ॥ ४२ ॥

शुचिःशीलः समो दक्षःसप्रतापो जितेन्द्रियः ।
अतिव्याकुलभक्तश्च सौम्ये सौम्यफलं भवेत् ॥ ४३ ॥

और सौम्य नाम सम्वत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य पवित्र शीलयुक्त समदृष्टि बडा चतुर प्रतापी इन्द्रियों को जीतने वाला और अत्यन्त व्याकुल मनुष्यों में प्रीति करने वाला होता है ॥ ४३ ॥

व्यवसायी चाल्पतुष्टो धर्मकर्मरतःसदा ।
सिद्धागमोपि तत्रैव फलं साधारणे मतम् ॥ ४४ ॥

और साधारण नामक सम्वत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य दृढ विश्वास करने वाला थोडे में ही सन्तोष करने वाला सदा धर्म कर्म में तत्पर मन्त्र शास्त्र का वेता होता है ॥ ४४ ॥

विरोधकृति यो जातो विरोधी बांधवैःसह ।
क्षणंसौम्यःक्षणंहीनो दुर्वारो जायते नरः ॥ ४५ ॥

और विरोधकृत सम्वत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य बांधवों से विरोध करने वाला क्षण में सौम्य और क्षणभरमें हीन (न्यून) और बड़ा दुर्वार होताहै ।४५।

स्वल्पबुद्धिःक्रियास्वल्पो देशं भ्राम्यति मानवः ।
देवतीर्थप्रियो नित्यं परिधाविनि जायते ॥ ४६ ॥

और परिधावी नामक संवत्सर में जन्मलेने वाला मनुष्य मन्द बुद्धि वाला कर्म करने में आलसी देशों में भ्रमण करने वाला देवता और ब्राह्मणों से स्नेह करने वाला होता है ॥ ४६ ॥

शर्वभक्तिप्रियो नित्यं गंधमाल्यानुलेपनैः ।
शौचक्रियानुरक्तश्च प्रमादिप्रभवो नरः ॥ ४७ ॥

और प्रमादी नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य नित्य प्रति गंधमाल्य कपूर इत्यादि से शिवजी की पूजा करने वाला शौच क्रिया करने में अनुराग रखने वाला होता हैं ॥ ४७ ॥

सर्वदानंदसंयुक्तःसर्वदातिथिपूजकः ।
स्वजनार्थागमो नित्यमानंदे जायते नरः ॥ ४८ ॥

और आनन्दनाम सम्वत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य सदा आनन्द से युक्त और सदा अतिथिओं का सेवक और नित्य प्रति स्वजन समागम युक्त धनवान् होता है ॥ ४८ ॥

मत्स्यमांसप्रियो नित्यं नित्यं लुब्धकवृत्तिमान् ।
सुराहारी बृथापापी जायते राक्षसे नरः ॥ ४९ ॥

और राक्षस नाम संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य नित्य मछलीयों के मांस खाने में रुचि रखने वाला और नित्यही वधिक वृत्ति करने वाला मद्य पीने वाला और निष्प्रयोजन पाप करने वाला होता है ॥ ४९ ॥

बहुपुत्रोऽनंतमित्रो द्रव्यलोभी कलिप्रियः ।
हानिःशोकस्तथादुःखं नले जातो भवेन्नरः ॥ ५० ॥

और नलनाम सम्वत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य अनेक पुत्र वाला अनन्त मित्रों वाला द्रव्य में लोभ करने वाला, कलह जिसको प्रिय, हानि शोक और दुःख का भोगने वाला होता है ॥ ५० ॥

पित्तप्रकोपसर्वात्मा नानाव्याधिरनेकधा ।
वाहनैश्च समायुक्तःपिंगले जायते नरः ॥ ५१ ॥

और पिंगलनाम संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य पित्त कोपसे व्याप्त अंग वाला अनेक प्रकार की व्याधियों से युक्त और अनेक वाहनों का बैठने वाला होता है ॥ ५१ ॥

कृषिवाणिज्यकर्ता च तैलभांडादिसंग्रही ।
क्रयविक्रयकर्ता च कालयुक्ते भवेन्नरः ॥ ५२ ॥

और कालनाम संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य खेती और व्यापार का करने वाला तैलके भांडों का संग्रह करने वाला और बेचने खरीदने के काम को करने वाला होता है ॥ ५२ ॥

वेदशास्त्रप्रभावज्ञः सिद्धिचित्तश्च कोमलः ।
सुकुमारो नृपैःपूज्यःकविःसिद्धार्थिजो नरः ॥ ५३ ॥

और सिद्धार्थी नाम संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य वेद शास्त्र के प्रभावको जानने वाला, सिद्धि, यु क्त चित्त वाला, तथा कोमल चित्त, अत्यन्त सुकुमार, राजाओं से पूज्य और बडा कवि होता है ॥ ५३ ॥

तस्करश्चपलो धृष्टःपरद्रव्यरतःसदा ।
निंद्यानि सर्वकर्माणिं कुरुते रुद्रसंभवः ॥ ५४ ॥

और रुद्रनाम सम्वत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य चोरी करने वाला बडा

चपल ढीट परद्रव्य में अभिलाषा रखने वाला और सब निद्यकर्म करने वाला होता है ॥ ५४ ॥

पापबुद्धिरतो नित्यं पापात्मा पापसंश्रितः ।
बोधकर्मसमायोगो दुर्मतौ जायते नरः ॥ ५५ ॥

और दुर्मतिनाम सम्वत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य बडा पापी पापों से युक्त और अनेक बुद्धिमानी के कर्मों से युक्त होता है ॥ ५५ ॥

गीतवाद्यानि शिल्पानि मंत्रमौषधिमेवच ।
सर्वांगगुणसंपन्नो नरो दुंदुभिसंभवः ॥ ५६ ॥

और दुंदुभी नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य गाने बजाने और अनेक कारीगरी को जानने वाला मन्त्र औषधि आदि अनेक गुण संपन्न होताहै५६

वातशोणितसंयुक्तःकफमारुतमेवच ।
कौटसाक्ष्यरतश्चैव रुधिरोद्गारिसंभवः ॥ ५७ ॥

और रुधिरोद्गारी सम्वत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य वायु और रुधिरके रोगों से युक्त, कफ बातकी प्रकृति वाला, झूठी गवाही देने वाला होता है ॥ ५७ ॥

देशत्यागो धनभ्रंशो हानिःसर्वत्र जायते ।
धृता विवाहिता भार्या रक्ताक्षे यो नरो भवेत् ॥५८॥

और रक्ताक्षनाम सम्वत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य देशका त्याग करने वाला और धन के नाश से युक्त सर्वत्र हानि युक्त विवाह बिना धरी स्त्री को घरमें रखने वाला होता है ॥ ५८ ॥

क्रोधी क्रोधसमुत्पादी सिंहतुल्यपराक्रमः ।
ब्राह्मणःपरजीवी चं क्रोधसंवत्सरे नरः ॥ ५९ ॥

और क्रोधनाम सम्वत्सर में पैदा हुआ मनुष्य बडा क्रोधी क्रोध को उत्पन्न करने वाला, सिंहके समान पराक्रमी दूसरे से जीविका करने वाला ब्राह्मण की तरह होता है ॥ ५६ ॥

कुटुंबकलहो नित्यं मद्यवेश्यारतो नरः ।
धर्माधर्मविचारो नो जायते क्षयवत्सरे ॥ ६० ॥

और क्षयनाम सम्वत्सर में जन्म लेने वाला पुरुष हमेशा कुटुम्ब में कलह युक्त मद्य पान और वैश्या संग करने में तत्पर और धर्म अधर्म के विचार से शून्य होता है ॥ ६० ॥

* इति जातके षष्टि सम्वत्सर फलम् *

अथ युगानयनम् ।

अथ षष्टिसंवत्सरेषु द्वादशयुगानि भवंति । यतः ॥
युगं भवेद्वत्सरपंचकेनयुगानि च द्वादश वर्षषष्ट्याम् ॥

पांच वर्ष का एक युग होता है इस क्रमसे साठ वर्ष के बारह युग होते हैं ।

॥ इति युगानयनं ॥

अथ युगफलम् ।

मद्यमांसप्रियो नित्यं परदाररतःसदा ।
कविःशिल्परतःप्राज्ञो जायते प्रथमे युगे ॥ १ ॥

पहले युगमें पैदा हुआ पुरुष मद्यमांस का खाने वाला नित्य परस्त्रियों के साथ गमन करने वाला बडा कवि और अत्यन्त कारीगर तथा बडा बुद्धिमान होता है ॥ १ ॥

वाणिज्ये व्यवहारी च धर्मिष्ठः सत्यसंगतः ।
द्रव्यं लुभ्यति पापात्मा युगे जातो द्वितीयके ॥ २ ॥

और दूसरे युगमें पैदा हुआ मनुष्य बणिज व्यवहार करने वाला बडा धर्मात्मा सत्यवादी द्रव्य के लिये अत्यन्त लोभ करने वाला और अत्यन्त पापी होता है ।२।

भोक्ता दाता कृतप्रज्ञो ब्राह्मणा देवपूजकः ।
तेजस्वी धनयुक्तश्च तृतीये फलमश्नुते ॥ ३ ॥

और तीसरे युगमें जन्म लेने वाला मनुष्य भोक्ता दानी ब्राह्मण और देवताओं की पूजा करने वाला बडा तेजस्वी और धन से युक्त होता है ॥ ३ ॥

वाटिकाक्षेत्रलोभी स्यादोषधीप्रियमानवः ।
धातुवादे धननाशो जायते च चतुर्युगे ॥ ४ ॥

और चौथे युगमें जन्म लेने वाले मनुष्य के लिये बगीचा या खेतकी अवश्य प्राप्ति होती है, और दवाई सेवन करने का प्रेमी मनुष्यों को प्रिय होता है और धातु विषयक कामों में धनका नाश करने वाला होता है ॥ ४ ॥

पुत्रोत्पत्तिःसदाप्रोक्ताधनवांश्च जितेन्द्रियः ।
पितृमातृप्रियश्चैव जायते पंचमे युगे ॥ ५ ॥

पांचवें युगमें जन्म लेने वाला मनुष्य सदा पुत्र संतति उत्पन्न करने वाला धनवान् इन्द्रियों को जीतने वाला और माता पिता का प्रिय होता है ॥ ५ ॥

सर्वदा शत्रुनीचश्च सर्वदा महिषीप्रियः ।
पट्टघातो भयार्त्तश्च युगे षष्ठे च जायते ॥ ६ ॥

और छटे यु ग में जन्म लेने वाला मनुष्य हमेशा अनेक शत्रु वाला बडा नीच सदा भैंसकी सेवा करने से अपने को प्रसन्न करने वाला पत्थर द्वारा आघात पाने वाला और बडा भयभीत होता है ॥ ६ ॥

बहुमित्रप्रियश्चैव व्यापारे कुटिला गतिः ।
शीघ्रगामी तथा कामी जायते सप्तमे युगे ॥ ७ ॥

और सप्तम युगका जन्म लेने वाला पुरुष अनेक मनुष्यों से मित्रता करने वाला अनेक मनुष्यों का प्यारा व्यापार में कुटिल बुद्धि रखने वाला शीघ्रता से चलने वाला और अत्यन्त कामी होता है ॥ ७ ॥

पापकर्ता च संतुष्टो व्याधिदुःखान्वितस्तथा ।
कर्ता च परहिंसाया जायते त्वष्टमे युगे ॥ ८ ॥

और आठवें युगमें जन्म लेने वाला मनुष्य पाप करने वाला संतोष से युक्त व्याधि और दुःख से युक्त अनेक जीवों की हिंसा करने वाला होता है ॥ ८ ॥

वापीकूपतडागादिदेवदीक्षातिथिप्रियः ।
भूपतिर्वृत्रहातुल्यो जायते नवमे युगे ॥ ९ ॥

और जो पुरुष नवम युगमें जन्म लेता हैं वह मनुष्य बावडी कूआ तालाब बनाने वाला देव और अतिथि इनसे प्रेम करने वाला इन्द्र के समान प्रतापी राजा होता है ॥ ९ ॥

राजाधिराजमंत्री च स्थानप्राप्तिमहासुखः ।
सुवेष रूपदाता च जायते दशमे युगे ॥ १० ॥

राजाधिराजका मन्त्री स्थान प्राप्तिके महा सुखसे संपन्न सुन्दर रूप वाला, तथा सुन्दर वेषको धारण करने वाला, एवं दानी मनुष्य दशम युग में जन्म लेने वाला होता है ॥ १० ॥

बुद्धिमांश्च सुशीलश्च स्थापकश्चासुरद्विषाम् ।
संग्रामे च भवेच्छूरो जात एकादशे युगे ॥ ११ ॥

और ग्यारहवें युग में जन्म लेने वाला मनुष्य बडा बुद्धिमान और बडा सुशील देवताओं में भक्ति करने वाला और युद्ध में बडा शूरवीर होता है ॥ ११ ॥

तेजस्वीच लसन्नात्मा नरमध्ये महाजनः ।
कृषिवाणिज्यकर्ता च जायते द्वादशे युगे ॥ १२ ॥

और जो मनुष्य बारहवें युगमें जन्म लेता है वह मनुष्य बडा प्रतापी सदा प्रसन्न रहने वाला मनुष्यों में श्रेष्ठ खेती और व्यापार का करने वाला होता है।१२

* इति द्वादश युग फलम् *

अथायनानयनप्रकारः ।

मकरादिगते षट्के सूर्यस्यैवोत्तरायणम् ।
कर्कादिषट्कगे सूर्ये दाक्षिणायनमुच्यते ॥ १ ॥

मकर इत्यादि छः राशिओं पर सूर्य रहने से उत्तरायण होता है और कर्क आदि छः राशिओं पर सूर्य के रहने से दक्षिणायन होता है ॥ १ ॥

पुनारत्नमालायां अयनानयनम् ।

शिशिरपूर्वमृतुत्रयमुत्तरं ह्ययनमाहु रहश्च तदामरम् ।
भवतिदक्षिणमन्यदृतुत्रयं निगदिता रजनी मरुतां च सा॥१॥

शिशिर आदि तीन ऋतुमें उत्तर अयन कहते हैं तब देवताओं का दिन होता है शेष तीन ऋतु में दक्षिण अयन कहते हैं वह देवताओं की रात्रि होती है ॥ २ ॥

इत्ययनानयनम् ।

अथायन फलम् ।

उत्तरायणे नरो जातःसर्वशास्त्रविशारदः ।
धर्मार्थकामशीलश्च गुणवांश्च सुरूपवान् ॥ १ ॥

उत्तरायण में जो मनुष्य जन्मलेता है वह मनुष्य सब शास्त्रों में चतुर और धर्मार्थ काम विषय में कुशल अनेक गुण सम्पन्न और बडा रूपवान् होता है ॥ १ ॥

याम्यायने नरो जातःकूटसाक्षी सदानृतः ।
अधर्मी चाथरोगी च बहुव्याधिःसदा भवेत् ॥ २ ॥

और जो मनुष्य दक्षिणायन में जन्म लेता है वह सदा झूंठी गवाही देने वाला झूंठ बोलने वाला बडा अधर्मी रोग युक्त और अनेक प्रकार की व्याधियों से युक्त होता है ॥ २ ॥ इत्ययनफलं ।

अथ गोलस्वरूपम् ।

मेषादिषट्कगे सूर्येउत्तरो गोल उच्यते ।
तुलादिषट्कगे सूर्ये याम्यगोलःसउच्यते ॥ १ ॥

जबसे मेष आदि छः राशिगत सूर्य होता है तब उत्तरगोल कहते हैं और तुला आदि छः राशिगत सूर्य जब होता है तब दक्षिण गोल कहते हैं ॥ १ ॥

इति गोलः ।

अथ गोलफलम् ।

योजातो त्तरगोलेषु धनवान्विद्ययान्वितः ।
पुत्रपौत्रादियुक्तश्च राजमान्यो नरो भवेत् ॥ १ ॥

जो मनुष्य उत्तर गोलमें जन्म लेता है वह मनुष्य धनवान् विद्यावान् और पुत्र पौत्रादिकों से युक्त राजमान्य होता है ॥ १ ॥

याम्यगोलेषु यो जातः सदा स सुखवर्जितः ।
कूटसाक्षी दुराचारो हीनांगश्चापिनिर्धनः ॥ २ ॥

और जो मनुष्य दक्षिण गोलमें जन्म लेता है वह मनुष्य सदा सुखसे रहित झूठी गवाही देने वाला बडा दुराचारी अंगहीन और धनरहित होता है ॥ २ ॥

अथरत्नमालायांऋतोरायनम् ।

मृगादिराशिद्वयभानुभोगा षट्कं ऋतूना शिशिरो वसंतः ।
ग्रीष्मश्च वर्षाशरदश्च तद्वद्धेमंतनामा कथितोऽत्रषष्ठः ॥१॥

मकर आदि दो दो राशिपर सूर्य के भोगने का ऋतु कहते हैं वे ऋतु छः होती हैं शिशिर वसंत ग्रीष्म वर्षा शरद् और हेमन्त उनके क्रमसे नाम होते हैं जैसे कि मकर कुम्भ में शिशिर, मीन मेषमें वसन्त, वृष मिथुन के सूर्य में ग्रीष्म ऋतु, होती है इसी प्रकार और भी जानना ॥ १ ॥ इति ऋतुआनयनम् ।

अथ ऋतुफलम् ।

रूपयौवनसंपन्नो दीर्घसूत्री महोत्कटः ।
साधुयुक्तःकामुकश्चशिशिरेजायतेनरः ॥ १ ॥

शिशिर ऋतुमें पैदा हुआ मनुष्य रूप और यौवन से सम्पन्न बडा आलसी महा उद्दण्ड साधुता युक्त और बडा कामी होता है ॥ १ ॥

महोद्यमी मनस्वी च तेजस्वी बहुकार्यकृत् ।
नानादेशरसाभिज्ञो वसंते जायते नरः ॥ २ ॥

वसन्तऋतु में जन्म लेने वाला मनुष्य बडा परिश्रमी धैर्यवान् बडा तेजस्वी

अनेक कामोंको करने वाला और अनेक देशों के रस का जानने वाला होताहै ॥२॥

वह्वारंभो जितिक्रोधो क्षुधालुःकामुकोनरः ।
दीर्घःशठो बुद्धिमांश्च ग्रीष्मे जातः सदाऽशुचिः ॥३॥

और जो ग्रीष्मऋतु में जन्म लेता है वह मनुष्य अनेक आरम्भोंका करने वाला क्रोधको जीतने वाला सब समय भूखसे युक्त बडा कामी शरीर से लम्बा बड़ा बुद्धिमान् होने पर महा शठ और सब समय अपवित्र रहने वाला होता है ॥ ३ ॥

गुणवान्भोगयुक्तश्च राजपूज्योजितेंद्रियः ।
कुशलोऽर्थानुवादी च वर्षाकाले भवेन्नरः ॥ ४ ॥

और वर्षाऋतु में जन्म लेने वाला मनुष्य बडा गुणी भोगों का भोगने वाला राजासे पूजा पाने वाला इन्द्रियों को वशमें रखने वाला बडा चतुर और मतलबके लिये बात चीत करने वाला होता है ॥ ४ ॥

वाणिज्यकृषिवृत्तिश्च धनधान्यसमृद्धिमान् ।
तेजस्वी बहुमान्यश्च शरज्जातो भवेन्नरः ॥ ५ ॥

और शरद्ऋतु में जन्म लेने वाला मनुष्य वाणिज्य तथा खेती द्वारा जीविका करने वाला धनधान्य की वृद्धि से युक्त बडा प्रतापी और बहुत प्रतिष्ठित होता है ॥ ५ ॥

बहुव्याधिर्हीनतेजाश्वासयुक्त प्रणिष्ठुरः ।
ह्रस्वपीनगलो भीरुर्हेमंते जायते नरः ॥ ६ ॥

और जो हेमन्तऋतु में जन्म लेता है वह मनुष्य अनेक व्याधि से युक्त तेज हीन डरसे युक्त अत्यन्त क्रूर स्वभाव वाला छोटी पुष्ट गर्दन वाला डरपोक होता है ॥ ६ ॥ इति ऋतु फलम् ।

अथ मासफलम् ।

चैत्रे च दृष्टिभाजःस्यात्साहंकारःशुभाकरः ।
रक्तेक्षणःसरोषश्च स्त्रीलोलःस भवेत्सदा ॥ १ ॥

चैत्र मास में पैदा हुआ पुरुष दर्शनीय अहंकारी शुभ गुणों का स्थान लाल नेत्र वाला बड़ा क्रोधी और स्त्रियों में आसक्त होता है ॥ १ ॥

भोगी धनी सुचित्तश्चसक्रोधश्च सुलोचनः ।
सुरूपो वल्लभःस्त्रीणां माधवे जायते नरः ॥ २ ॥

और वैशाख मासमें जन्म लेने वाला पुरुष भोगों का भोगने वाला धनवान् प्रसन्न चित्त वाला, क्रोध युक्त विशाल नेत्र वाला बड़ा स्वरूपवान् और स्त्रियोंका प्रिय होता है ॥ २ ॥

परदेशरतश्चै वशुभचित्तोध नान्वितः ।
दीर्घायुश्च सुबुद्धिश्चजेष्ठेसुष्ठुधनी भवेत् ॥ ३ ॥

और जो पुरुष ज्येष्ठ मास में जन्म लेता है वह परदेश रहने में समय बिताने वाला उदार चित्त युक्त धन सम्पन्न बडी आयु वाला बडा बुद्धिमान और साहूकार होता है ॥ ३ ॥

पुत्रपौत्रान्वितो धर्मी वित्तनाशेन पीडितः ।
सुवर्णश्चाल्पसुखितो ह्याषाढे च भवेन्नरः ॥ ४ ॥

और जो मनुष्य आषाढ मास में जन्म लेता है वह मनुष्य पुत्र तथा पौत्रों से युक्त धर्मात्मा धनके नाश से पीडित सुन्दर वर्ण वाला और थोडा सुख भोगने वाला होता है ॥ ४ ॥

सुखदुःखे तथा हानौ लाभे च समचित्तकः ।
स्थूलदेहःसुरूपश्च श्रावणे जायते नरः ॥ ५ ॥

और श्रावण मासमें जन्म लेने वाला मनुष्य सुख दुःख में और हानि लाभ इत्यादि में समचित्त रखने वाला मोटी देह वाला और सुन्दर स्वरूप वाला होता है ॥ ५ ॥

नित्यप्रमोदी जल्पाकःपुत्रयुक्तःसुखीभवेत् ।
मृदुभाषी सुशीलश्च भाद्रजातो भवेन्नरः ॥ ६ ॥

और भाद्रपद मास में जन्म लेने वाला मनुष्य नित्य प्रसन्न मन रहने वाला

बडा वकवादी पुत्र से युक्त सुखी और कोमल बचन बोलने वाला और बडा सुशील होता है ॥ ६ ॥

सुरूपश्च सुखैर्युक्तः काव्यकर्ता परः शुचिः ।
गुणवान्धनवान्कामी ह्याश्विने जायतेनरः ॥ ७ ॥

और आश्विन मासमें जन्म लेने वाला पुरुष सुन्दर रूप युक्त सर्व सुखों से सम्पन्न काव्य बनाने वाला अत्यन्त पवित्र आचरण वाला गुणवान् धनवान् और बडा कामी होता है ॥ ७ ॥

सुधनी कामुकाबुद्धिर्दुरात्मा क्रयविक्रयी ।
पापीयान्दुष्टचित्तश्च कार्तिके जायते नरः ॥ ८ ॥

और कार्तिक मासमें जन्म लेने वाला मनुष्य उत्तम धन से युक्त कामी दुष्टाचरण करने वाला व्यौपार का काम करने वाला बड़ा पापी और महा दुष्ट चित्त होता है ॥ ८ ॥

मृदुभाषी धनी धर्मी बहुमित्रःपराक्रमी ।
परोपकारी जातश्च मार्गशीर्षे भवेन्नरः ॥ ९ ॥

और जो अगहन मासमें जन्म लेता है वह मनुष्य कोमल बचन बोलने वाला अनेक मित्रों वाला बड़ा पराक्रमी और परोपकार करने वाला होता है ॥ ९ ॥

शूर उग्रप्रतापी च पितृदेवविवर्जितः ।
ऐश्वर्यजन्मकारी च पौषे मासे नरो भवेत् ॥ १० ॥

और पौषमास में जन्म लेने वाला मनुष्य बड़ा शूरवीर बड़ा प्रतापी पितर देवतों की भक्ति से रहित और ऐश्वर्यवान् होता है ॥ १० ॥

मतिमान्धनवांश्चैव शूरो निष्ठुरभाषकः ।
कामुकश्च रणे धीरोमाघे जातोभवेन्नरः ॥ ११ ॥

और जो मनुष्य माघमास में जन्म लेता हैं वह मनुष्य बडा विद्वान् धनवान् शूरवीर क्रूर बचन कहने वाला कामी और रणभूमि में धैर्य रखने वाला होता है।११।

शुक्लःपरोपकारी च धनविद्यासुखान्वितः ।

विदेशे भ्रमते नित्यं फाल्गुने जायतेनरः ॥ १२ ॥

और जो फाल्गुन मासमें जन्म लेता है उस मनुष्य का अंग गोरा परोपकार करने वाला धनी, बड़ा विद्वान नित्य विदेशों में भ्रमण करने वाला होता है ॥१२॥

विषयहीनमतिः सुचरित्रदृग विविधतीर्थकरश्च निरामयः ।
सकलवल्लभ आत्महितंकरः खलु मलिम्लुचमासभवो नरः ॥१३॥

अधिक मास में जन्म लेने वाला मनुष्य सांसारिक विषयों से अलग रहने वाला, मनोहर चरित्र तथा दृष्टि वाला अनेक प्रकार के तीर्थों में यात्रा करने वाला, सदा नीरोग रहने वाला, सबों का प्रिय, और अपना हित करने वाला होता है।१३।

इति मा० जा० फलम् ।

अथ पक्ष फलम् ।

निष्ठुरो दुर्मुख श्चैव स्त्रीद्वेषी मतिहीनकः ।
परप्रेक्षो जनैर्युक्तःकृष्णपक्षे प्रजायते ॥ १ ॥

जो मनुष्य कृष्णपक्ष में जन्म लेता है वह बडा क्रूर दुर्मुख (कुरूप) स्त्री से द्वेष करने वाला हीन बुद्धि और दूसरे मनुष्य की सहायता चाहने वाला होताहै।१।

पूर्णचंद्रनिभःश्रीमान्सोद्यमी बहुशास्त्रवित् ।
कुशलो ज्ञानसंपन्नःशुक्लपक्षे भवेन्नरः ॥ २ ॥

और शुक्लपक्ष में जन्म लेने वाला पुरुष पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान मुख वाला,धनी उद्यमी अनेक शास्त्रों का जानने वाला सब कामों में कुशल और ज्ञानवान् होता है ॥ २ ॥

अथ जन्मतिथि फलम् ।

क्रूरसंगो धनैर्हीनःकुलसंतापकारकः ।
व्यसनासक्तचित्तश्च प्रतिपत्तिथिजोनरः ॥ १ ॥

और जो मनुष्य प्रतिपदा तिथि में जन्म लेता है वह दुष्टों के संगमें रहनेवाला धनहीन कुलको संताप देने वाला और अनेक व्यसनों में आसक्त चित्त होताहै।१।

परदाररतो नित्यं सत्यशौचविवर्जितः ।
तस्करःस्नेहहीनश्च द्वितीयासंभवोनरः ॥ २ ॥

और द्वितीया तिथि में जन्म लेने वाला आदमी परस्त्री गामी सत्य शौच से रहित चोर और स्नेहरहित होता है ॥ २ ॥

अचेतनोऽतिविकलो निर्द्रव्यःपुरुषःसदा ।
परद्वेषरतो नित्यं तृतीयायां भवेन्नरः ॥ ३ ॥

और तृतीया तिथि में जन्म लेने वाला पुरुष चेतनता रहित सदा विकल द्रव्यहीन और नित्य दूसरों से द्वेष करने वाला होता है ॥ ३ ॥

महाभोगी च दाता च मित्रस्नेही विचक्षणः ।
धनसंतानयुक्तश्च चतुर्थ्यां यदि जायते ॥ ४ ॥

और चतुर्थी तिथि में जन्म लेने वाला पुरुष बडा भोगी दाता मित्रों से स्नेह रखने वाला बडा चतुर और धन संतान से युक्त होता है ॥ ४ ॥

व्यवहारी गुणग्राही पितृमात्रोश्च रक्षकः ।
दाता भोक्ता तनुप्रीतःपंचमीसंभवो नरः ॥ ५ ॥

और जो पुरुष पंचमी तिथिमें जन्म लेता है वह मनुष्य व्यवहार में कुशल गुणों का ग्रहण करने वाला माता पिता की रक्षा करने वाला दाता भोक्ता और अल्पप्रीति रखने वाला होता है ॥ ५ ॥

नानादेशाभिगामी च सदा कलहकारकः ।
नित्यं जठरपोषी च षष्ठ्यां जातो भवेन्नरः ॥ ६ ॥

और जो मनुष्य षष्ठी तिथि में जन्म लेता है वह अनेक देशों में घूमने वाला सदा कलह करने वाला और केवल अपने पेटका पोषण करने वाला होताहै ॥ ६ ॥

अल्पतोषी च तेजस्वी सौभाग्यगुणसंयुतः ।
पुत्रवान्धनसंपन्नःसप्तम्यां जायते नरः ॥ ७ ॥

और जो सप्तमी तिथि में जन्म लेता है वह मनुष्य थोडे में ही संतोष रखने वाला बडा तेजस्वी सौभाग्य गुण संपन्न पुत्रवान् और धन सम्पन्न होता है ॥ ७ ॥

धर्मिष्ठःसत्यवादी च दाता भोक्ता च वत्सलः ।
गुणज्ञःसर्वकार्यज्ञो ह्यष्टमीसंभवो नरः ॥ ८ ॥

और अष्टमी तिथिका जन्म लेने वाला पुरुष धर्मात्मा सत्य बोलने वाला दानी भोगों का भोगने वाला प्राणियों पर दया करने वाला गुणों का जानने वाला और सब कामों का जानने वाला होता है ॥ ८ ॥

देवताराधकःपुत्री धनस्त्रीसक्तमानसः ।
शास्त्राभ्यासरतो नित्यं नवम्यां जायते यदि ॥ ९ ॥

और जो नवमी तिथि में जन्म लेता है वह पुरुष देवताओं की पूजा करने वाला; पुत्रवान्, धन और स्त्री में आसक्त मन वाला और नित्य शास्त्राभ्यास करने वाला होता है ॥ ९ ॥

दशम्यां धर्माधर्मज्ञो देवसेवी च याजकः ।
तेजस्वी सौख्यसंयुक्तो जायते मानवः सदा ॥ १० ॥

और दशमी तिथि में जन्म लेने वाला पुरुष धर्म अधर्म का जानने वाला देवताओं का सेवक यज्ञ कराने वाला तेजस्वी और सदा सुखी होता है ॥ १० ॥

अल्पतोषी नरेंद्रस्य गेहगामी शुचिर्भवेत् ।
धनी पुत्री भवेद्धीमानेकादश्यां भवेन्नरः ॥ ११ ॥

और एकादशी तिथिमें जन्म लेने वाला मनुष्य थोडेही में सन्तोषी राजमहल में आने जाने वाला बडा पवित्र धन पुत्र युक्त और बडा बुद्धिमान होता है ॥११॥

चपलश्चपलज्ञानी सदा क्षीणवपुःस्मृतः ।
देशभ्रमणशीलश्च द्वादशीजातको भवेत् ॥ १२ ॥

और द्वादशी तिथि में जो पुरुष जन्म लेता है वह बडा चंचल चपलता का जानने वाला सदा दुर्बल अङ्ग वाला और देशोंमें भ्रमण करने वाला होता है १२

महासिद्धो महाप्राज्ञःशास्त्राभ्यासी जितेंद्रियः ।
परकार्यरतो नित्यं त्रयोदश्यां यदा भवेत् ॥ १३ ॥

और जो त्रयोदशी तिथिमें जन्म लेता है वह पुरुष महासिद्ध बडा बुद्धिमान शास्त्र में अभ्यास रखने वाला जितेंद्रिय और परोपकारी होता है ॥ १३ ॥

धनाढ्यो धर्मशीलश्च शूरःसद्वाक्यपालकः ।
राजमान्यो यशस्वी च चतुर्दश्यां यदा भवेत् ॥१४॥

और जो मनुष्य चतुर्दशी तिथिके दिन जन्म लेता है वह मनुष्य बडा धनाढ्य धर्म करने वाला शूरवीर संतों के वाक्य का पालन करने वाला राजाओं को मान्य और बडा यशस्वी होता है ॥ १४ ॥

श्रीमांश्च मतिमांश्चापि महाभोजनलालसः ।
उद्यतःपरदारेषु ह्यासक्तःपूर्णिमाभवः ॥ १५ ॥

और पौर्णमासी तिथि में जन्म लेनेवाला मनुष्य बडा श्रीमान् बुद्धिमान् भोजन करनेमें अतिलालसा रखनेवाला उत्साही और परस्त्रियोंमें अत्यन्त आसक्त होताहै।

स्थिरारंभपरद्वेषी वक्रो मूर्खःपराक्रमी ।
मूढमंत्री च सज्ञानोप्यमावास्याभवो नरः ॥ १६ ॥

और जो मनुष्य अमावस्या तिथि में जन्म लेता है वह मनुष्य बडा आलसी सबोंसे द्वेष करने वाला क्रोधी अति मूर्ख बडा पराक्रमी और मूर्ख राजा का मंत्री और बडा ज्ञानी होता है ॥ १६ ॥ इति ति० फ० ॥

नन्दादितिथि ज्ञान ॥

नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा च तिथयः क्रमात् ।
वारत्रयं समावर्त्य तिथयः प्रतिपन्मुखाः ॥ १७ ॥

नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता और पूर्णा ये तिथियां पडवाको आदि लेकर तीन वार के फेरसे क्रम पूर्वक होती हैं अर्थात् जैसे १।६।११ नन्दा—२।७।१२ भद्रा—३।८।१३ जया—४।९।१४ रिक्ता ५।१०।१५ वा अमावस्या पूर्णा ॥ १७ ॥ इति

१—इनके जानने की सुगम रीति सब से बढ़िया यह है कि जैसे प्रति उंगली में तीन२ रेखा होती हैं इस तरह चारों उंगलियों में १२ रेखा हुई इन रेखाओं को ही क्रम से प्रतिपदादि तिथि कल्पना करले (प्रथम रेखा को १, द्वि० रे० २, तृ. रे. ३, च. रे. ४, पं. रे. ५, षष्ठ रे. ६, इत्यादि) और नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णा; इसी तरह नन्दा से लेकर पूर्णान्त दो वार फिर आवृत्ति करता जाय और इधर प्रथम रेखा से लेकर द्वितीयादि रेखाओं पर अंगुष्ठ निवेश करता जाय जिस संख्या वाली रेखा पर नन्दा-भद्रादि आकर पडे उसी संख्या वाली रेखा को तत्तिथि समझ लेना चाहिये।

अथ नन्दादि पंचतिथि फलम् ॥

नंदातिथौ नरो जातो महामानी च कोविदः ।
देवताभक्तिनिष्ठश्च ज्ञानी च प्रियवत्सलः ॥ १ ॥

जो नन्दा १।६।११ तिथि में जन्म लेता है वह मनुष्य महामानी बडा पंडित देवताओं की भक्ति में तत्पर बडा ज्ञानी स्नेह रखने वाला होता है ॥ १ ॥

भद्रातिथौ बंधुमान्यो राजसेवी धनान्वितः ।
संसारभयभीतश्च परमार्थमतिर्नरः ॥ २ ॥

और जो मनुष्य भद्रा २।७।१२ तिथि में जन्म लेताहै वह मनुष्य भाई बन्धुओं से मान पाने वाला राज सेवक धनवान् और संसार के भयसे भीत परमार्थ में बुद्धि रखने वाला होता है ॥ २ ॥

जयातिथौ राजपूज्यःपुत्रपौत्रादिसंयुतः ।
शूरःशांतश्च दीर्घायुर्मनोविज्ञश्च जायते ॥ ३ ॥

और जो मनुष्य जया ३।८।१३ तिथि में जन्म लेता है वह मनुष्य राजा से पूजा पाने वाला, पुत्रपौत्रादिकों से युक्त, बडा शूरवीर, शांत प्रकृति वाला, दीर्घ आयु वाला और दूसरे के मनकी बातका जानने वाला होता है ॥ ३ ॥

रिक्तातिथौ वितर्कज्ञःप्रमादी गुरुनिंदकः ।
शास्त्रज्ञो मदहंता च कामुकश्च नरो भवेत् ॥ ४ ॥

और जो मनुष्य रिक्ता ४।९।१४ तिथि में जन्म लेता है वह मनुष्य अनेक तर्कों का जानने वाला बडा प्रमादी गुरुजनों की निंदा करने वाला शास्त्रका ज्ञाता मदका नाश करने वाला, और बडा कामी होता है ॥ ४ ॥

नंदादि तिथि ज्ञानकीस्पष्ट प्रति पत्ति के लिये चक्र ।

१	२	३	४	५
६	७	८	९	१०
११	१२	१३	१४	१५
नंदा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा

पूर्णातिथौ धनैः पूर्णो वेदशास्त्रार्थतत्ववित्।
सत्यवादी शुद्धचेता विज्ञो भवति मानवः ॥ ५ ॥

और जो मनुष्य पूर्णा ५।१०।१५ तिथि में जन्म लेता है वह मनुष्य अनेक प्रकार धनों से पूर्ण वेद शास्त्रार्थके तत्व का जानने वाला सत्य वचन कहने वाला शुद्ध चित्त और बडा पण्डित होता है ॥ ५ ॥

अथ जन्मवार फलम्।

पित्ताधिकोऽतिचतुरः स्तेजस्वी समरप्रियः।
दाता दाने महोत्साही सूर्यवारे भवेन्नरः ॥ १ ॥

रविवार के दिन जिसका जन्म होता है वह मनुष्य पित्त प्रकृति वाला, बडा चतुर तेजस्वी लडनेका प्रिय;दाता और दान करनेमें उत्साह रखने वाला होता है।

मतिमान्प्रियवाक्शांतो नरेंद्राश्रय जीविकः।
समदुःखसुखःश्रीमान्सोमवारे भवेत्पुमान् ॥ २ ॥

और जो मनुष्य सोमवार के दिन जन्म लेता है वह बडा बुद्धिमान् प्रिय वचन बोलने वाला शांत प्रकृति राजा से जीविका पाने वाला दुःख तथा सुख में समान वृत्ति वाला और बडा धनवान् होता है ॥ २ ॥

वक्रबुद्धिर्जराजीवी रणोत्साही महावली।
सेनानीस्तंत्रपालो व धरापुत्रदिनोद्भवः ॥ ३ ॥

और जो मंगलवार के दिन जन्म लेता है वह मनुष्य टेढी बुद्धि वाला, वृद्ध हो कर जीने वाला, रणमें उत्साह रखने वाला, बडा बली सेना के अगाडी चलने वाला और अपने कुटुम्ब का पालन करने वाला होता है ॥ ३ ॥

लिपिलेखनजीवी स्यात्प्रियवाक्पंडितःसुधीः।
रूपसंपत्तिसंयुक्तो बुधवासरसंभवः ॥ ४ ॥

और जो पुरुष बुधवार के दिन जन्म लेता है वह लिखने (पुस्तक इत्यादि लिखने) से जीविका करने वाला) प्रिय वाक्यों का बोलने वाला, बडा पण्डित और रूप तथा संपत्ति से युक्त होता है ॥ ४ ॥

धनविद्यागुणोपेतो विवेकी जनपूजकः ।
आचार्यःसचिवो वा स्याद्गुरुवासरसंभवः ॥ ५ ॥

और वृहस्पतिवार के दिन जन्म लेने वाला मनुष्य धन विद्यादि गुणों से युक्त बडा विवेकी, मनुष्यों का सत्कार करने वाला, आचार्य वृत्ति अथवा मन्त्री की आजीवका करने वाला होता है ॥ ५ ॥

चलचित्तःसुरद्वेषी धनक्रीडारतःसदा ।
बुद्धिमान्सुभगो वाग्मी भृगुवारेभवेन्नरः ॥ ६ ॥

और शुक्रवार के दिन जो जन्म लेता हैं वह मनुष्य चंचल चित्तवाला, देवोंका द्वेषी, धन क्रीडा करने में निरत, बडा बुद्धिमान्, रूपवान्, मनोहर वाणी बोलने वाला होता है ॥ ६ ॥

स्थिरजःस्थिरगीःक्रूरोदुःखचित्तःपराक्रमी ।
अधोदृङ्नचलः केशोवृद्धनारीरतःसदा ॥ ७ ॥

और शनिवार के दिन जो मनुष्य जन्म लेता है वह मनुष्य स्थिर जन्म वाला स्थिरवाणी कहने वाला, बडा क्रूर, दुःख युक्त चित्त वाला; बडा पराक्रमी, नीच दृष्टि और दृढ प्रतिज्ञ, अधिक केश वाला और वृद्ध स्त्री में रमण करने वाला होता है ॥७

अथ जन्म रात्रिदिन फलम् ।

सद्धर्मयुक्तो बहुपुत्रभोगी प्रियान्वितःकामनिपीडिताङ्गः ।
वस्त्रानुयुक्तो मतिमान्सुरूपो भवेन्मनुष्यश्च दिवाप्रसूतः ॥१॥

जो मनुष्य दिन में जन्म लेता है वह सद्धर्म करने वाला, अनेक पुत्र भोगों से युक्त, प्रिय पदार्थों से युक्त, कामदेव से पीडितांग, उत्तम वस्त्र पहरने वाला, बडा बुद्धिमान् सुन्दर जिसका रूप ऐसा होता है ॥ १ ॥

मंदवाग्बहुकामार्तःक्षयरोगी मलीमसः ।
क्रूरात्माच्छन्नपापश्च निशि जातो भवेन्नरः ॥ २ ॥

और जो रात्रि में जन्म लेता है वह मनुष्य मन्दवाक् (तोतला) अत्यन्त

कामार्त क्षयरोग से युक्त अत्यन्त मलीन क्रूर जिसका मन और पापसंयुक्त होता है ॥ २ ॥ इति दिनरात्रि जन्म फलम् ॥

अथ जन्मनक्षत्र फलम् ।

सुरूपःसुभगो दक्षःस्थूलकायो महाधनी ।
अश्विनीसंभवो लोके जायते जनवल्लभः ॥ १ ॥

जो मनुष्य अश्विनी नक्षत्र में जन्म लेताहै वह सुन्दर रूपवान् भाग्यशाली, बडा चतुर, पुष्ट शरीर वाला बडा धनवान् और पुरुषों को प्रिय होता है ॥ १ ॥

अरोगी सत्यवादी च सत्प्राणश्च दृढव्रतः ।
भरण्यां जायते लोकःसुसुखी धनवानपि ॥ २ ॥

और भरणी नाम नक्षत्र में जन्म लेने वाला पुरुष रोगों से रहित, सत्य वाक्य बोलने वाला, सत् मनुष्यों के प्राण रखने वाला, दृढ व्रत वाला; अत्यन्त सुखी और धनवान् होता है ॥ २ ॥

कृपणःपापकर्मा च क्षुधालुर्नित्यपीडितः ।
अकर्म कुरुते नित्यं कृत्तिकासंभवोनरः ॥ ३ ॥

और कृत्तिका नक्षत्र में जिसने जन्म लियाहै वह मनुष्य बडा कृपण, पाप करने वाला, सब समय भूखा, हमेशा पीडा संयुक्त और दुष्कर्म करने वाला होताहै ॥३॥

धनी कृतज्ञो मेधावी नृपमान्यःप्रियंवदः ।
सत्यवादी सुरूपश्च रोहिण्यां जायतेनरः ॥ ४ ॥

और जिसका रोहिणी नक्षत्र में जन्म होता है वह मनुष्य बडा धनवान्, किये हुए उपकार का जानने वाला, बुद्धिमान् राजा से मान पाने वाला, प्रिय सत्य बचन बोलने वाला और सुरूप होता हैं ॥ ४ ॥

चपलश्चतुरो धीरःकूटकर्मस्वकर्मकृत् ।
अहंकारी परद्वेषी मृगे भवति मानवः ॥ ५ ॥

और जो मृगशिर नक्षत्र में जन्म लेता है वह मनुष्य बडा चपल चतुर धीर

कपट कर्म करने वाला, स्वार्थ कामों का करने वाला, बडा अहंकारी औरों से द्वेष करने वाला होता है ॥ ५ ॥

कृतघ्नःगर्वितो हीनो नरःपापरतःशठः ।
आर्द्रानक्षत्रसंभूतो धनधान्यविवर्जितः ॥ ६ ॥

और जो मनुष्य आर्द्रा नक्षत्र में जन्म लेता है वह मनुष्य बडा कृतघ्न;गर्वयुक्त हीनकर्मा; पाप करने में निरत; बडा शठ और धन धान्य से रहित होता है ॥ ६ ॥

शांतःसुखी च संभोगी सुभगो जनवल्लभः ।
पुत्रमित्रादिभिर्युक्तो जायते च पुनर्वसौ ॥ ७ ॥

और पुनर्वसु नक्षत्र में जन्म लेने वाला पुरुष शांत प्रकृति वाला;सुखी भोग का भोगने वाला,बडभागी,सब मनुष्यों को प्रिय और पुत्र मित्रादिकों से युक्त होताहै।७।

देवधर्मधनैर्युक्तःपुत्रयुक्तो विचक्षणः ।
पुष्ये च जायते लोकःशांतात्मा सुभगःसुखी ॥ ८ ॥

और पुष्य नक्षत्र में जन्म लेने वाला पुरुष देवताओं का भक्त धन से युक्त पुत्र वाला बडा चतुर शांत प्रकृति अति सुभग और सुखी होता है ॥ ८ ॥

सर्वभक्षी कृतांतश्च कृतघ्नो वंचकःखलः ।
आश्लेषायां नरो जातःकृतकर्मा हि जायते ॥ ९ ॥

और जिसका आश्लेषा नक्षत्र में जन्म होता है वह मनुष्य भक्ष्याभक्ष्य पदार्थों का भक्षण करने वाला काल समान क्रोधी उपकार को न मानने वाला; ठग विद्या करने वाला बडा खल और सब कामों का करने वाला होता है ॥ ९ ॥

बहुभृत्यो धनी भोगी पितृभक्तो महोद्यमी ।
चमूनाथो राजसेवी मघायां जायते नरः ॥ १० ॥

और जो पुरुष मघा नक्षत्रमें जन्म लेता है वह मनुष्य अनेक भृत्य रखने वाला धनवान, भोगोंका भोगने वाला, पिता का भक्त, बडा उद्यमी, सेनापति और राज सेवा करने वाला होता है ॥ १० ॥

विद्यागोधनसंयुक्तो गंभीरःप्रमदाप्रियः ।

पूर्वाफाल्गुनिकाजातःसुखी पंडितपूजितः ॥ ११ ॥

और पूर्वा फाल्गुनी में जन्म लेने वाला मनुष्य विद्या, गौ, और धनसे युक्त; बडा गंभीर स्वभाव वाला, स्त्रियों को प्रिय, सुखी, और पंडितों से पूजा पाने वाला होता है ॥ ११ ॥

दांतःशूरो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदार्थपंडितः ।
उत्तराफाल्गुनीजातो महायोद्धा जनप्रियः ॥ १२ ॥

और उत्तरा फाल्गुनी में जन्म लेने वाला पुरुष इन्द्रियों को जीतने वाला, शूरवीर मृदु (कोमल) वक्ता धनुर्वेद के अर्थों में बडा प्रवीण; बडा योद्धा और पुरुषों का प्रिय होता है ॥ १२ ॥

असत्यवचनो धृष्टःसुरापी बंधुवर्जितः ।
हस्ते जातो नरश्चौरो जायते पारदारिगः ॥ १३ ॥

और हस्त नक्षत्र में जन्म लेने वाला पुरुष झूठ बोलने वाला बडा ढीट, मद्य पीने वाला, भाई बन्धुओं से रहित, चोर और पर स्त्री गामी होता है ॥ १३ ॥

पुत्रदारयुतस्तुष्टो धनधान्यसमन्वितः ।
देवब्राह्मणभक्तश्च चित्रायां जायते नरः ॥ १४ ॥

और चित्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य पुत्र तथा पत्नी से युक्त सदा प्रसन्न धनधान्य से परिपूर्ण, देवता और ब्राह्मणों का भक्त होता है ॥ १४ ॥

विदग्धो धार्मिकश्चैव कृपणःप्रियवल्लभः ।
सुशीलो देवभक्तश्च स्वातौ जातो भवेन्नरः ॥ १५ ॥

और स्वातिनाम नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य बडा चतुर, धर्माचरण करने वाला, बडा कृपण; पत्नी का प्यारा; सुशील और देवताओं का भक्त होताहै ॥१५॥

अतिलुब्धोतिमानी च निष्ठुरःकलहप्रियः ।
विशाखायां नरो जातो वेश्याजनरतोभवेत् ॥ १६ ॥

और जो पुरुष विशाखा नक्षत्र में जन्म लेता है वह बडा लोभी, अभिमानी, निष्ठुर, कलह में प्रेम करने वाला और वेश्या जनों में स्नेह करने वाला होता है ।

पुरुषार्थप्रवासी च बंधुकार्यै सदोद्यमी ।
अनुराधाभवो लोकःसदा धृष्टश्च जायते ॥ १७ ॥

और अनुराधा नक्षत्र में जन्म लेनेवाला पुरुष अपने पुरुषार्थ से परदेश में रहने वाला, भाई बंदों के काम करने में सदा उद्यत, और सदा ढीट होता है ॥ १७ ॥

बहुमित्रप्रधानश्च कविर्दान्तो विचक्षणः ।
ज्येष्ठाजातो धर्मरतो जायते शूद्रपूजितः ॥ १८ ॥

और ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्म लेने वाला पुरुष बहुत मित्रों वाला सबों में मुख्य बडा कवि, इन्द्रियों का दमन करने वाला, बडा चतुर, धर्म करने में तत्पर और शूद्र जाति से पूजा पाने वाला होता है ॥ १८ ॥

सुखेन युक्तो धनवाहनाढ्यो हिंस्रो बलाढ्यः स्थिरकर्मकर्ता ।
प्रतापितारातिजनो मनुष्यो मूले कृती स्याज्जननं प्रपन्नः ॥१९॥

और मूल नक्षत्र में जो पुरुष जन्म लेता है वह सुखसे युक्त, धन, वाहन घोड़ा हाथी, मोटर इत्यादि से परिपूर्ण हिंसा करने वाला, बडा बलवान्, बिचार पूर्वक कार्य करने वाला अपने प्रतापसे वैरीजनोंको दबाने वाला,और बडा पवित्रहोताहै ।

दृष्टमात्रोपकारी च भाग्यवांश्च जनप्रियः ।
पूर्वाषाढाभवो नूनं सकलार्थविचक्षणः ॥ २० ॥

पूर्वाषाढा नाम नक्षत्रमें जो पुरुष जन्म लेता है वह देखने मात्र से ही उपकार करने वाला, बडा भाग्यवान्, मनुष्यों को प्रिय और सब कामोंमें निपुण होता है ।

बहुमित्रो महाकायो जायते विजयी सुखी ।
उत्तराषाढसंभूतःशूरश्च विनयी भवेत् ॥ २१ ॥

उत्तराषाढा नक्षत्रमें जो जन्म लेता है वह मनुष्य अनेक मित्रों वाला, पुष्ट शरीर वाला, सदा विजयी, सदा सुखी और शूरवीर तथा विनयी होता है ॥ २१ ॥

अतिसुललितकान्तिः सम्मतः सज्जनानाम्-
न नु भवति विनीतश्चारुकीर्तिः सुरूपः ।

द्विजवरसुरभक्तिर्व्यक्तवाङ्मानवः स्या-
दभिजिति यदि सूतिर्भूपतिः स्ववंशे ॥ २२ ॥

अभिजित् नामक नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य मनोहर क्रान्ति वाला, सज्जनों का सम्मत, विनीत, बडा यशस्वी, सुन्दर रूपवाला, ब्राह्मण तथा देवताओं में भक्ति रखने वाला, स्पष्ट (सच्ची) बात कहने वाला तथा अपने कुटुम्ब में राजा बनकर रहता है ॥ २२ ॥

कृतज्ञःसुभगो दाता गुणैः सर्वैश्च संयुतः ।
श्रीमान्बहुलसंतानःश्रवणे जायते नरः ॥ २३ ॥

और जो श्रवण नक्षत्र में जन्म लेता है वह मनुष्य कृतज्ञ, बडा सुन्दर, दाता, सब गुणों से युक्त, लक्ष्मीवान् और बहुत सन्तान वाला होता है ॥ २३ ॥

गीतप्रियो बंधुमान्यो हेमरत्नैरलंकृतः ।
जातो नरो धनिष्ठायां शतैकस्य पतिर्भवेत् ॥ २४ ॥

धनिष्ठा नक्षत्रमें जो मनुष्य जन्म लेता है वह गानेका प्रेमी, भाई बन्दोंमें मान पाने वाला, सुवर्ण मोती इत्यादि भूषणों से शोभायमान, और सैकडों जीवों का पालन करने वाला होता है ॥ २४ ॥

कृपणो धनपूर्णःस्यात्परदारोपसेवकः ।
जातःशतभिषायां च विदेशे कामुको भवेत् ॥ २५ ॥

और शतभिषा नक्षत्रमें जन्म लेने वाला पुरुष बडा कृपण, धनसे पूर्ण; परस्त्री गामी और विदेश में अधिक काम चेष्टा करने वाला होता है ॥ २५ ॥

वक्ता सुखी प्रजायुक्तो बहुनिद्रो निरर्थकः ।
पूर्वाभाद्रपदायां च जातो भवति मानवः ॥ २६ ॥

और जो पूर्वा भाद्रपदा में जन्म लेता है वह मनुष्य अनेक मनुष्यों में बोलने वाला, सदा सुखी; सन्तति से युक्त, बहुत सोने वाला और स्वयं किसी विशेष कार्य को करने योग्य नहीं होता है ॥ २६ ॥

गौरःससत्वो धर्मज्ञःशत्रुघातीपरामरः ।
उत्तराभाद्रपदोद्भूतो नरःसाहसिको भवेत् ॥ २७ ॥

और जो मनुष्य उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र में जन्म लेता है वह गौर वर्ण वाला धैर्यवान, धर्मज्ञ, वैरी जनों को मारने वाला, देवता के समान पूज्य और बडा साहसी होता है ॥ २७ ॥

संपूर्णांगःशुचिर्दक्षःसाधुःशूरो विचक्षणः ।
रेवतीसंभवो लोके धनधान्यैरलंकृतः ॥ २८ ॥

और रेवती नाम नक्षत्रमें जन्म लेने वाला मनुष्य सर्वांगों से युक्त, बडा पवित्र, चतुर, साधु, शूरवीर, विचार करने वाला और अनेक प्रकार के धन धान्यादिकों से परिपूर्ण होता है ॥ २८ ॥ इ० न० फ० ॥

अथ योगजातफलम् ।

विष्कंभजातो मनुजो रूपवान्भाग्यवान्भवेत् ।
नानालंकारसंपूर्णो महाबुद्धिर्विशारदः ॥ १ ॥

विष्कम्भ नामक योग में जन्म लेने वाला मनुष्य रूपवान् भाग्यवान् अनेक अलंकारों से संपूर्ण बडा बुद्धिमान् और बड़ा चतुर होता है ॥ १ ॥

प्रीतियोगे समुत्पन्नो योषितां वल्लभो भवेत् ।
तत्त्वज्ञश्च महोत्साही स्वार्थे नित्यकृतोद्यमः ॥ २ ॥

और प्रीतियोग में जन्म लेने वाला मनुष्य स्त्रियों को प्यारा, तत्त्वका जानने वाला, बडा उत्साही और स्वार्थ के लिये नित्य उद्यम करने वाला होता है ॥ २ ॥

आयुष्मान्नामयोगे च जातो मानी धनी कविः ।
दीर्घायुःसत्त्वसंपन्नो युद्धे चाप्यपराजितः ॥ ३ ॥

आयुष्मान्नामक योगमें जन्म लेने वाला पुरुष बडा मानी, धनवान्, बडा कवि बहुत दिन जीने वाला, अनेक प्रकार के जीवादिकों से युक्त और युद्धमें सदा विजय पाने वाला होता है ॥ ३ ॥

सौभाग्ये च समुत्पन्नो राजमंत्री स जायते ।
निपुणःसर्वकार्येषु वनितानां च वल्लभः ॥ ४ ॥

और सौभाग्य नामक योगमें जन्म लेने वाला पुरुष राजा का मन्त्री,सब कामों में निपुण, और स्त्रियों को प्रिय होता है ॥ ४ ॥

शोभने शोभनो बालो बहुपुत्रकलत्रवान् ।
आतुरःसर्वकार्येषु युद्धभूमौ सदोत्सुकः ॥ ५ ॥

शोभन नामक योग में जन्म लेने वाला पुरुष बहुत सुन्दर; बहुत पुत्रपत्नी से युक्त सब कामों में आतुर और युद्ध भूमि में सम्मिलित होने के लिये सदा उत्कंठित रहता है ॥ ५ ॥

अतिगंडे च यो जातो मातृहंता भवेच्च सः ।
गंडांतेषु च जातस्तु कुलहंता प्रकीर्तितः ॥ ६ ॥

और जो अतिगंड योग में जन्म लेता है वह मनुष्य अपनी माता का मारने वाला होता है और गन्डांतमें जन्म लेने वाला कुल भरको मारने वाला होता है ।

सुकर्म-नामयोगे तु सुकर्मा जायते नरः ।
सर्वैःप्रीतःसुशीलश्च रागी भोगी गुणाधिकः ॥ ७ ॥

सुकर्मा नामक योगमें जन्म लेनेवाला मनुष्य सत्कर्म करने वाला सबों से प्रीति रखने वाला, बडा सुशील, सर्वत्र आसक्ति करने वाला, अनेक भोगों का भोगने वाला, और सब गुणों से सम्पन्न होता है ॥ ७ ॥

धृतिमान् धृतियोगी च कीर्तिपुष्टिधनान्वितः ।
भाग्यवान्सुखसंपन्नो विद्यावान् गुणवान् भवेत् ॥ ८ ॥

धृतिमान् योगका जन्म लेने वाला पुरुष धैर्य धारण करनेवाला, कीर्ति पुष्टि धनसे युक्त; बडा भाग्यवान्, सुखसे संपन्न और गुणवान् विद्यावान् होता है ।

शूले शूलव्यथायुक्तो धार्मिकःशास्त्रपारगः ।
विद्यार्थकुशलो यज्वा जायते मनुजःसदा ॥ ९ ॥

और जो पुरुष शूलनाम योगसें जन्म लेता है वह शूलरोग से युक्त; धर्म का

आचरण करने वाला, शास्त्र में पारंगत, विद्या तथा धनके उपार्जन करने में चतुर तथा यज्ञ करने वाला होता है ॥ ९ ॥

गंडे गंडव्यथायुक्तो बहुक्लेशो महाशिराः ।
ह्रस्वकायो महाशूरो बहुभोगी दृढव्रतः ॥ १० ॥

और गंड नामक योगमें जन्म लेने वाला मनुष्य गलगण्ड रोग से युक्त; बहुत क्लेश भोगने वाला, बडे मस्तक वाला, छोटे शरीर वाला, बडा शूरवीर अनेक भोगों का भोगने वाला, और कही हुई बातको पूर्ण करने वाला होता है ॥ १० ॥

वृद्धियोगे सुरूपश्च बहुपुत्रकलत्रवान् ।
धनवानपि भोक्ता च सत्त्ववानपि जायते ॥ ११ ॥

और वृद्धिनाम योगमें जन्म लेने वाला मनुष्य रूपसे सुन्दर, अनेक पुत्र तथा भार्या रखनेवाला धनवान् और अनेक भोगोंका भोगनेवाला और बडा पराक्रमी होताहै

ध्रुवयोगे च दीर्घायुःसर्वेषां प्रियदर्शनः ।
स्थिरकर्माऽतिशक्तश्च ध्रुवबुद्धिश्च जायते ॥ १२ ॥

ध्रुवयोग में जन्म लेने वाला मनुष्य दीर्घायु, सबों का प्रिय लगने वाला, विचार सहित स्थिर कर्म करने वाला, सब कामों को करने में अत्यन्त आसक्त और स्थिर बुद्धि वाला होता है ॥ १२ ॥

व्याघातयोगजातश्च सर्वज्ञःसर्वपूजितः ।
सर्वकर्मकरो लोके व्याख्यातः सर्वकर्मसु ॥ १३ ॥

और व्याघात योग का जन्म लेने वाला मनुष्य सब बात जानने वाला,सबोंसे पूजा पाने वाला, सबके कामों में चतुर और लोकमें प्रसिद्ध होता है ॥ १३ ॥

हर्षणे जायते लोके महाभाग्यो नृपप्रियः ।
धृष्टःसदा धनैर्युक्तो विद्याशास्त्रविशारदः ॥ १४ ॥

और हर्षण नाम योगमें जन्म लेनेवाला मनुष्य बडा भाग्यशाली, राजाका प्रिय, बडाढीट, अनेक प्रकार धन सम्पन्न और विद्याशास्त्रमें विशारद होता है ॥ १४ ॥

वज्रयोगे वज्रमुष्टिः सर्वविद्यास्त्रपारगः ।
धनधान्यसमायुक्तस्तत्त्वज्ञो बहुविक्रमः ॥ १५ ॥

और वज्रयोग में जो जन्म लेता है वह मनुष्य वज्र के समान कड़ी मुष्टि वाला, सब विद्या और अस्त्र विद्यामें पारंगत, धनधान्य से युक्त; तत्वका जानने वाला और पराक्रमी होता है ॥ १५ ॥

सिद्धियोगे समुत्पन्नःसर्वसिद्धियुतो भवेत् ।
दाता भोक्ता सुखी कांतः शोकी रोगी च मानवः १६

और सिद्धियोग में जन्म लेने वाला मनुष्य सर्व सिद्धियों से युक्त, दाता, भोक्ता, सुखी; सुन्दर शोक करने वाला और रोगी होता हैं ॥ १६ ॥

व्यतीपातेनरो जातो महाकष्टेन जीवति ।
जीवेत्सद्भाग्ययोगेन स भवेदुत्तमो नरः ॥ १७ ॥

और व्यतीपात योगमें जन्म लेने वाला मनुष्य बडी कठिनतासे जीता है यदि वह जी पडे तब भाग्ययोग से उत्तमोत्तम होता है ॥ १७ ॥

वरीयान्नामयोगे च बलिष्ठो जायते नरः ।
शिल्पशास्त्रकथाभिज्ञो गीतनृत्यादिकोविदः ॥ १८ ॥

और वरीयान्नाम योगमें जो जन्म लेता है वह मनुष्य बलवान्, शिल्पशास्त्र तथा कलाओं का जानने वाला और गाने बजाने में कुशल होता है ॥ १८ ॥

परिघे च नरो जातःस्वकुलोन्नतिकारकः ।
शास्त्रज्ञःसुकविर्वाग्मी दाता भोक्ता प्रियंवदः ॥ १९ ॥

और जो मनुष्य परिघनाम योग में जन्म लेता है वह मनुष्य अपने कुलकी उन्नति करने वाला, शास्त्रों का जानने वाला, सत्कविता करने वाला;प्रशस्त वाणी बोलने वाला, दाता, भोक्ता और प्रिय बचन बोलने वाला होता हैं ॥ १९ ॥

शिवयोगे नरो जातो सर्वकल्याणभाजनः ।
महादेवसमो लोके सदा बुद्धियुतो भवेत् ॥ २० ॥

और जो शिवयोग में जन्म लेता है वह मनुष्य सब कल्याणों का पात्र लोक में महादेव के समान और सदा बुद्धि से युक्त होता है ॥ २० ॥

सिद्धियोगे सिद्धिदाता मंत्रसिद्धिप्रवर्तकः ।
दिव्यनारीसमेतश्च सर्वसंपद्युतो भवेत् ॥ २१ ॥

और जो मनुष्य सिद्धियोग में जन्म लेता है वह मनुष्य सिद्धिका देने वाला मन्त्रसिद्धिका करने वाला; दिव्य स्त्रीसे युक्त और सब सम्पत्तियुक्त होता है॥२१॥

साध्ये मानसिकासिद्धिर्यशोऽशेषसुखागमः ।
दीर्घसूत्रःप्रसिद्धश्च जायते सर्वसंमतः ॥ २२ ॥

और साध्यनाम योगमें जो जन्मलेता है वह मनुष्य मानसिक सिद्धिवाला अधिक यशस्वी संपूर्ण सुख प्राप्त करने वाला बडा आलसी जगत् में प्रसिद्ध और सबों का सम्मत होता है ॥ २२

शुभे शुभाननैर्युक्तोःधनवानपि जायते
विज्ञानज्ञानसंपन्नो दाता ब्राह्मणपूजकः ॥ २३ ॥

और जो शुभयोग में जन्म लेता है वह मनुष्य शुभ मुखयुक्त, धनवान्, विज्ञान ज्ञानसे सम्पन्न होता है, दाता ब्राह्मणों का पूजन करने वाला होता है ॥ २३ ॥

शुक्ले सर्वकलायुक्तःसर्वार्थज्ञानवान् भवेत् ।
कविःप्रतापी शूरश्च धनी सर्वजनप्रियः ॥ २४ ।

और जो शुक्ल नाम योग में जन्म लेता है वह मनुष्य सब कला परिपूर्ण सर्वार्थ ज्ञान का जानने वाला, बडा कवि, बडा प्रतापी, शूरवीर, धनवान् और सब जनों को प्रिय होता है ॥ २४ ॥

ब्रह्मयोगे महाविद्वान्वेदशास्त्रपरायणः ।
ब्रह्मज्ञानरतो नित्यं सर्वकार्येषुकोविदः ॥ २५ ॥

और जो ब्रह्मयोग में जन्म लेता है वह मनुष्य महाविद्वान्, वेदशास्त्रमें पारगंव ब्रह्मज्ञान में रत और सब काम करने में कुशल होता है ॥ २५ ॥

ऐंद्रे भूपकुले जातो राजा भवति निश्चयः ।
अल्पायुस्तु सुखी भोगी गुणवानपि जायते ॥ २६ ॥

और जो ऐन्द्र नाम योगमें जन्म लेता है वह मनुष्य राजकुल में जन्म लेने वाला निश्चय राजा होता है अल्प आयु वाला परन्तु सुखी भोगी और गुणवान् होता है ॥ २६ ॥

वैधृतौ जायते यस्तु नित्योत्साही विभूषितः ।
कुर्वाणोपि जनैःप्रीतिं प्रयात्यप्रियतां नरः ॥ २७ ॥

और जो वैधृति नाम योगमें जन्म लेता है वह मनुष्य नित्य उत्साह रखने वाला विभूषणों से विभूषित होता है वह प्रीति करता है तौ भी सबको बुरा लगता है ॥ २७ ॥ इति योग फलम् ।

अथ करणानयनम् ।

कृष्ण पक्षे करण विचार चक्रम्						शुक्लपक्षे करण विचार चक्रम्					
ति.	पूर्वदल	उत्तरदल	ति.	पूर्वदल	उत्तरदल	ति.	पूर्वदल	उत्तरदल	ति.	पूर्वदल	उत्तरदल
१	बालव	कौलव	९	तैतिल	गर	१	किंस्तुघ्न.	वव	९	वालव	कौलव
२	तैतिल	गर	१०	वणिज	भद्रा	२	वालव	कौलव	१०	तैतिल	गर
३	वणिज	भद्रा	११	वव	वालव	३	तैतिल	गर	११	वणिज	भद्रा
४	वव	वालव	१२	कौलव	तैतिल	४	वणिज	भद्रा(विष्टि	१२	वव	वालव
५	कौलव	तैतिल	१३	गर	वणिज	५	वव	बालव	१३	कौलव	तैतिल
६	गर	वणिज	१४	भद्रा	शकुनी	६	कौलव	तैतिल	१४	गर	वणिज
७	भद्रा	कौलव	०	चतुष्पद	नाग	७	गर	वणिज	१५	भद्रा	बव
८	वालव	कौलव				८	भद्रा	वव			

कृष्णपक्षे करणानयनम् ।

कृष्णपक्षे तिथिर्द्विघ्ना मुनिभिर्भागमाहरेत् ।
शेषांकेन बवाद्यं च तिथ्यादौ करणं विदुः ॥ १ ॥

कृष्णपक्ष में जो तिथि हो उसी तिथ्यंकको द्विगुण करले यदि द्विगुण करने पर सात अङ्क से अधिक हों तब सातका भाग देनेके पश्चात् जितनी गिनती का अंक शेष बचे तब उस तिथिमें उस अंककी संख्या का करण बव आदि करण के क्रमसे उस तिथिके अर्ध भागतक रहेगा उससे अगाडी उसी करण के आगे का दूसरा करण आवेगा सो अर्द्ध तिथिके समाप्त होने तक रहेगा सर्वत्र इसी प्रकार हर एक तिथि में करण जानना चाहिये (उदाहरण) जैसे पडवा तिथिको दूना किया तब २ अंक हुआ तब पड़वा के दिन जबसे पडवा प्रवृत्त होगी तबसे दूसरी संख्या का करण बालव है वह अर्ध पडवा के भोग काल तक रहेगा फिर अर्ध पडवा में अगाडी तीसरी संख्या का करण कौलव आवेगा सो पडवा के बीतने तक रहेगा द्वितीय उदा० तिथि१०दूना किया२०भाग ७ दिया तब शेषांक ६ रहा तब कृष्णपक्ष में दशमी तिथि के प्रारम्भ से लेकर आधी दशमी के व्यतीत होने तक छटी संख्या का वणिज नाम करण रहेगा फिर विष्टि नाम करण आवेगा सो दशमी के समाप्ति पर्यंत रहेगा इसी प्रकार कृष्णपक्ष की हरएक तिथि में करणका निश्चय कर लेना ।

अथ शुक्लपक्षे करणानयनम् ।

तिथिर्द्विघ्नो द्विकोना च शुक्लपक्षे सदा बुधैः ।
शेषांके सप्तभिर्भागस्तिथ्यादौ करणं मतम् ॥ १ ॥

१-टि०—"शुक्ले पूर्वार्धेऽष्टमीपञ्चदश्योर्भद्रैकादश्यां चतुर्थ्यां परार्धे"

इत्यादि रामचार्य की कही हुई युक्ति के अनुसार करण निकालने की रीति लिखते हैं जैसेकि पूर्णमाके पूर्वदलमें भद्रा उसके उत्तरदलमें बवकरण होगा" कृष्णपक्ष कौलवकी परिवाके पूर्व दलमें बालव होता है उसके उत्तर दलमें कौलव, द्वितीया के पूर्व दल में तैतिल इसके उत्तर दल में गर नाम का करण होगा, तृतीया के पूर्व दलमें वणिज उसके उत्तरार्ध में विष्टि करण होगा। । इसी तरह चतुर्थी के भी पूर्वदल से लेकर चतुर्दशी के उत्तर दल तक करण जानने चाहिये खुलासा जानने के लिये ऊपर चक्र भी दे दिया है।

जिस तिथि का करण निकालना हो तो उसी वर्तमान तिथि अंक को दूना करे उसमें से दो घटा देवे फिर जो अंक शेष रहे उसमें सात ७ का भाग दे तब जितनी संख्या का अंक शेषरहे वही संख्यांक नामक करण होगा। यहांपर उदाहरण पहिले की तरह समझ लेना चाहिये यहां पर तिथ्यंक दूना करनेके बाद दो घटाना अधिक है शेष सब पहिले की तरह समझ लेना चाहिये ॥ १ ॥ इति करणानयनम् ।

अथ करणफलम् ।

बवाख्ये करणे जातो मानी धर्मरतःसदा ।
शुभमंगलकर्मा च स्थिरकर्मा च जायते ॥ १ ॥

बव नाम करण में जन्म लेने वाला मनुष्य बडा मानी, सर्वदा धर्म करने में निरत, शुभ और मंगल कर्म करने वाला और स्थिर कर्म करने वाला होता है ॥१॥

बालवाख्ये नरो जातस्तीर्थदेवाधिसेवकः ।
विद्यार्थसौख्यसंपन्नो राजमान्यश्च जायते ॥ २ ॥

और बालव नाम करणमें जन्म लेनेवाला मनुष्य तीर्थ तथा देवताओं की सेवा करने वाला, विद्या और धन के सुख से सम्पन्न और राजा का मान्य होता है ॥२॥

कौलवाख्ये तु जातस्य प्रीतिःसर्वजनैःसह ।
संगतिर्मित्रवर्गैश्च मानवांश्च प्रजायते ॥ ३ ॥

कौलव नाम करण में जन्म लेने वाला मनुष्य सब जनोंसे प्रीति करने वाला; मित्र भाव रखने वालों से संगति करने वाला और मानयुक्त होता हैं ॥ ३ ॥

तैतिले करणे जातःसौभाग्यधनसंयुतः ।
स्नेही सर्वजनैःसार्द्धं विचित्राणि गृहाणि च ॥ ४ ॥

(५६ पेजके दूसरे श्लोक की टिप्पणी)

२–टि०—अन्तेकृष्णचतुर्दश्याःशकुनिर्दर्शभागयोः ।
भवेच्चतुःपदंनागंकिंस्तुघ्नंप्रतिपद्दले ॥
ववंच वालवं चैव कौलवं तैतिलं गरम् ।
वणिजं विष्टिमित्याहुः करणानि चराणि तु ॥

इस प्राचीन बचन के अनुसार कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के उत्तरार्द्ध भाग से लेकर शुक्लपक्ष की परिवा के पूर्वार्ध तक शकुनि इत्यादि चार स्थिर करण रहते हैं, इसके बाद परिवाके उत्तरार्ध से ववादिक चऌ करणों की प्रवृत्ति होती है।

और जो तैतिल नाम करण में जन्म लेता है वह मनुष्य सौभाग्य और धन से संयुक्त, सब जनों से स्नेह करनेवाला और चित्रविचित्र घरोंमें रहने वाला होताहै।

गराख्ये कृषिकर्मा च गृहकार्यपरायणः ।
यद्वस्तु वांछितं तच्च लभते च महोद्यमैः ॥ ५ ॥

और गर नाम करणमें जन्म लेने वाला मनुष्य गृह काममें तत्पर रहताहै और जो कुछ वस्तु उसको अभीष्ट होती है वही उद्यम करने से मिल जाती है ॥ ५ ॥

वाणिज्ये करणे जातो वाणिज्येनैव जीवति ।
वांछितं लभते लोके देशांतरगमागमैः ॥ ६ ॥

और जो वाणिज्य नाम करण में जन्म लेताहै वह मनुष्य वाणिज्य(व्यापार) से ही जीविका करने वाला होता है और लोक में देशांतरों के आने जाने से वांछित वस्तु को प्राप्त होता है ॥ ६ ॥

अशुभारंभशीलश्च परदाररतःसदा ।
कुशलो विषकार्येषु विष्टयाख्यकरणेन च ॥ ७ ॥

और जो विष्टि नाम करण में जन्म लेता है वह मनुष्य अशुभ कर्म के आरम्भ करने वाला, पर स्त्री गामी, विषकार्य में सदा कुशल होता है ॥ ७ ॥

शकुनौ करणे जातःपौष्टिकादिक्रियाकृतिः ।
औषधादिषु दक्षश्च भिषग्वृत्तिश्च जायते ॥ ८ ॥

और शकुनि करणमें जन्म लेने वाला मनुष्य पौष्टिकादि क्रियाओं के करने में कुशल, औषध आदिमें प्रवीण और वैद्य विद्या करने वाला होता है ॥ ८ ॥

करणे च चतुष्पादे देवद्विजरतःसदा ।
गोकर्मा गोप्रभुर्लोके चतुष्पदचिकित्सकः ॥ ९ ॥

और चतुष्पाद नाम करण में जन्म लेने वाला मनुष्य देवता ब्राह्मणोंमें प्रीति रखने वाला, गौ की सेवा करने वाला, गौओं का स्वामी और बड़ाई करने लायक और चतुष्पद पशु जीवों की चिकित्सा करने वाला होता है ॥ ९ ॥

नागे च करणे जातो धीवरप्रीतिकारकः ।

कुरुते दारुणं कर्म दुर्भगो लोललोचनः ॥ १० ॥

और नाग करण में जन्म लेने वाला मनुष्य धीवरों से प्रीति करने वाला दारुण कर्म करनेवाला बडा दुर्भाग्य और चंचल लोचन वाला होता है ॥ १० ॥

किंस्तुघ्नकरणे जातःशुभकर्मरतो नरः ।
तुष्टिं पुष्टिं च मांगल्यं सिद्धिं च लभते सदा॥ ११ ॥

और किंस्तुघ्न नामक करण में जन्म लेनेवाला मनुष्य शुभ कर्ममें निरत तुष्टि पुष्टि मंगल और सिद्धिको प्राप्त होता है ॥ ११ ॥ इति करण फलम् ।

गणानयनम् ।

अश्विनी मृगरेवत्यो हस्तः पुष्यः पुनर्वसुः ।
अनुराधा श्रुतिः स्वाती कथ्यते देवतागणः ॥ १ ॥

अश्विनी, मृगशिर, रेवती, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु; अनुराधा, श्रवण तथा स्वाती यह नक्षत्र देवतागण कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में जन्म लेने वाला पुरुष देवगण कहलाता है ॥ १ ॥

तिस्रः पूर्वाश्चोत्तराश्च तिस्रोऽप्यार्द्रा च रोहिणी ।
भरणी च मनुष्याख्यो गणश्च कथितो बुधैः ॥ २ ॥

पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वभाद्र, उत्तराफाल्गुनी,उत्तराषाढ उत्तरा भाद्र,आर्द्रा; रोहिणी तथा भरणी यह सम्पूर्ण नक्षत्र विद्वानों ने मनुष्य गण में कहे हैं ॥ २ ॥

१—सरलतया गणावगमार्थ अत्यन्त उपयुक्त एक पद्य नीचे ग्रन्थान्तर से दिया जाता है वह यह है—

दे म रा मद मं दे दे, रा रा म म म द रा द रा ।
दे रा रा म म दे रा रा, म म दे—त्यश्विभाद्गणाः ॥ १ ॥

इस श्लोक में दकार से देवगण, मकार से मनुष्य गण, और रकार से राक्षसगण जानना चाहिये, अश्विन्यादि २७ नक्षत्रों का और श्लोकस्थ देकारादि२७ अक्षरों का यथा संख्य करले । इस एक पद्य के कण्ठस्थ होने से ३ श्लोक घोकने की अपेक्षा एक श्लोक के घोकनेसे बहुत लाघव होजाता है तथा गण प्रतिपत्त्यर्थ पञ्चांग लिखित चक्रावलोकन की भी शरण नहीं लेनी पड़ती है और बडी सुगमतया गण ज्ञान भी हो जाता है इसी लिये उपयुक्त समझ कर हमने यहां इसे उद्धृत कर दिया है ।

कृत्तिका च मघा ऽऽश्लेषा विशाखा शततारका ।
चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूलं रक्षोगणः स्मृतः ॥ ३ ॥

कृत्तिका, मघा, आश्लेषा; विशाखा, शतभिषा, चित्रा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा और मूल इतने नक्षत्र राक्षसगण कहलाते हैं ॥ ३ ॥

अथ गणफलम् ।

सुंदरो दानशीलश्च मतिमान्सरलःसदा ।
अल्पभोजी महाप्राज्ञो नरो देवगणे भवेत् ॥ १ ॥

जिस पुरुष का देवगण होता है वह पुरुष स्वरूप से सुन्दर, दान करने में स्वभाव रखने वाला, बुद्धिमान्, बडा सरल, अल्प भोजन करने वाला और बडा बुद्धिमान होता है ॥ १ ॥

मानी धनी विशालाक्षो लक्ष्यवेधी धनुर्धरः ।
गौरःपौरजनग्राही जायते मानवे गणे ॥ २ ॥

जिस पुरुषका पुरुषगण होता है वह पुरुष अभिमानी, धनवान्, विशाल नेत्रों वाला, लक्ष्य (निशाना) वेधने वाला, धनुष धारण करने वाला, गौर अंग वाला और पुरवासी पुरुषों के साथ सहानुभूति करने वाला होता है ॥ २ ॥

उन्मादी भीषणाकारःसर्वदा कलिवल्लभः ।
पुरुषो दुःसहं ब्रूते प्रमेही राक्षसे गणे ॥ ३ ॥

जिस पुरुष का राक्षसगण होता है वह पुरुष बडा उन्मादी, भयंकर आकार वाला, सब समय कलहप्रिय; दुर्वाक्य बोलने वाला और प्रमेह के रोग से युक्त होता है ॥ ३ ॥ इति गणफलम् ।

* अथ योनिज्ञानम् *

अश्विनी वारुणश्चाश्वो रेवती भरणी गजः ।
पुष्यश्च कृत्तिका छागो नागश्च रोहिणी मृगः ॥१॥
आर्द्रा मूलमपि श्वा च मूषकः फल्गुनी मघा ।
मार्जारोऽदितिराश्लेषा गोजातिरुत्तराद्वयम् ॥ २ ॥

महिषौ स्वातिहस्तौ च मृगो ज्येष्ठाऽनुराधिका ।
व्याघ्रश्चित्रा विशाखा च श्रुत्याषाढे च मर्कटौ ॥ ३ ॥
वसु भाद्रपदाः सिंहो नकुलश्चाभिजित्स्मृतः ।
योनयः कथिता भानां वैरमैत्रीं विचारयेत् ॥ ४ ॥

अश्विनी और शतभिषा इन नक्षत्रों की अश्वयोनि है, रेवती, भरणी की गज-योनि है, पुष्य, कृत्तिका की छाग, रोहिणी, मृगशिर की सर्प, इत्यादि जानना। स्पष्ट प्रतिपत्ति के लिये नीचे चक्र दिया जाता है उसमें देखकर समझ लेना चाहिये।

स्पष्टज्ञानार्थं चक्रम् ।

अ०	रेव०	पुष्य	रो०	आ०	पू.फा.	पुन०	उ.फा.	स्वा०	ज्ये०	चि०	पू.षा.	ध०	अभि.
श०	भर०	कृ०	मृ०	मू०	म०	ऽश्ले.	उ.भा.	ह०	अनु०	वि०	श्र०	पू.भा.	उ० षा
घो०	ग०	छा०	नाग	श्वा०	मूष०	बिला	गो	भैंस	मृग	व्याघ्र	वा०	सिंह	नकु.

अथ योनिफलम् ।

स्वच्छंदःसद्गुणःशूरस्तेजस्वी घर्घरेश्वरः ।
स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योन्यां जातो भवेन्नरः ॥ १ ॥

जिस पुरुषकी अश्वयोनि होती है वह पुरुष स्वेच्छाचारी, उत्तम गुणोंसे युक्त, शूरवीर, घर्घर स्वर वाला और स्वामी का भक्त होता है ॥ १

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थानविभूषणः ।
आत्मोत्साही नरो जातो गजयोनौ न संशयः ॥ २ ॥

जिस पुरुष की गज (हाथी) योनि होती है वह राजा से मान पाने वाला बलवान्, भोगों का भोगने वाला, राज स्थानका आभूषण और मनमें उत्साह रखने वाला होता है ॥ २ ॥

स्त्रीणां प्रियःसदोत्साही बहुवाक्यविशारदः ।
स्वल्पायुश्च नरोजातःपशुयोनौ न संशयः ॥ ३ ॥

और जिसकी पशु योनि होती हैं वह मनुष्य स्त्रियों का प्रिय सदा उत्साह रखने वाला, अनेक प्रकार के वाक्यों के कहने में कुशल; अल्पायु होता है ॥ ३ ॥

दीर्घरोषःसदा क्रूर उपकारं न गृह्यते[1] ।
चैपलो[2] रसनालौल्यःसर्पयोनौ न संशयः ॥ ४ ॥

और जिसकी सर्पयोनि होती है वह मनुष्य बडा क्रोधी सब समय क्रूरता युक्त, किये हुए उपकार को न मानने वाला, बडा चपल जीभ से लोलता युक्त (हरएक वस्तु पर मन चलाने वाला) होता है ॥ ४ ॥

सोद्यमःसुमहोत्साही शूरःस्वज्ञातिविग्रही ।
मातृपित्रोःसदा भक्तःश्वानयोनौ समुद्भवः[3] ॥ ५ ॥

जिसकी श्व (कुत्ता) योनि होती है वह मनुष्य उद्यम करने वाला बडा उत्साही, शूरबीर, अपनी जाति से विगाड रखने वाला और अपने माता पिता का सदा भक्त होता है ॥ ५ ॥

स्वस्वकार्ये शूरदक्षो मिष्टान्नाहारभोजनः ।
निर्दयो दुष्टसद्भावी नरो मार्जारयोनिजः ॥ ६ ॥

और जिसकी मार्जार(विलाव) योनि होती है वह मनुष्य अपने निज काम में शूरवीर; चतुर, मीठे अन्न का भेजन करने वाला, बडा निर्दयी दुष्टों से सद्भाव (प्रेम) रखने वाला होता है ॥ ६ ॥

महाद्विक्रमयोद्धापि--ईश्वरो विभवेश्वरः ।
परोपकारी नित्यं च मेषयोनौ भवेन्नरः ॥ ७ ॥

१-" उपकारो न गृह्यते " इति पाठः साधुः प्रतिभाति नाम्न्यकर्तरिभावे च घञ जन्तराघाथुचः " इति नियमात् घञन्तत्वेन उपकार शब्दस्य पुंलिङ्गत्वात् गृह्यते इति तिङा च कर्मण उपकारशब्द स्याभिहितत्वा च्चेति ।

२-अत्र बहुत्र पुस्तकेषु " परवेश्मापहारी च ' इति पाठः संदृश्यते ।

३-श्वयोनिप्रसमुद्भवः इति पाठः क्रियेते चेत् साधुः स्यादिति ।

और जिस मनुष्य की मेष योनि होती है वह बडा पराक्रमी सब कार्यों के करने में समर्थ, बहुत धनका स्वामी और नित्य परोपकार करने वाला होता है ॥७॥

बुद्धिमान्वित्तसंपूर्णःस्वकार्यकरणोद्यतः ।
अप्रमत्तोऽप्यविश्वासी नरोमूषकयोनिजः ॥ ८ ॥

और जिसका मूषक योनि में जन्म होता है वह मनुष्य बुद्धिमान् धन सम्पन्न अपने काम करने में सदा उद्यत, सदा सावधान और सब का अविश्वास करने वाला, युद्ध करने वाला होता है ॥ ८ ॥

स्वधर्मे तु सदाचारःसत्क्रियासद्गुणान्वितः ।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्य की सिंह योनि होती है वह अपने धर्म में सच्चा आचार रखने वाला; उत्तम क्रिया तथा उत्तम गुणों से सम्पन्न और कुटुम्ब का उद्धार करने वाला होता है ॥ ९ ॥

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु वहुप्रजः ।
वाताधिको मंदमतिर्नरो महिषयोनिजः ॥ १० ॥

जिसकी महिष योनि होती हैं वह मनुष्य संग्राम में विजय पाने वाला योद्धा, कामी, अनेक संतानों से युक्त, वातप्रकृति वाला और बडा मंदबुद्धि होता है ॥१०॥

स्वच्छन्दोऽर्थरतो ग्राही दीक्षावान्स विभुःसदा ।
आत्मस्तुतिपरोनित्यं व्याघ्रयोनिभवो नरः ॥ ११ ॥

जिसकी व्याघ योनि होती है वह मनुष्य स्वेच्छाचारी, धन के उद्यम में निरत, सदुपदेशों का ग्रहण करने वाला, दीक्षायुक्त सदा समर्थ आत्मस्तुति करने में तत्पर होता है ॥ ११ ॥

स्वच्छंदःशांतसद्वृत्तिःसत्यवान्स्वजनप्रियः ।
धर्मिष्ठो रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः ॥ १२ ॥

और जो मृग योनि वाला मनुष्य होता हैं वह स्वतन्त्रता पूर्वक रहने वाला, शांत प्रकृति, उत्तम वरताव वाला; सत्य वाक्य बोलने वाला; अपने मनुष्यों से स्नेह करने वाला, धर्माचरण करने वाला, युद्ध में शूरवीर होता है ॥ १२ ॥

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः ।
सकामःसत्प्रजःशूरो नरो वानरयोनिजः ॥ १३ ॥

और जिसकी बानर योनि होती है, वह मनुष्य बडा चपल, मीठी चीज खाने वाला; धन का लोभी, कलह प्रिय, काम सहित अच्छी सन्तान वाला और शूरवीर होता है ॥ १३ ॥

परोपकरणे दक्षे वित्तेश्वरविचक्षणः ।
पितृमातृप्रियो नित्यंनरो नकुलयोनिजः ॥ १४ ॥

और जिसकी नकुल योनि होती है वह मनुष्य परोपकार करने में प्रवीण धनियों में प्रधान; बडा चतुर और नित्य माता पितासे स्नेह करने वाला होता है ।

अथ वारायुः

विपदःप्रथमे मासे द्वात्रिंशे च त्रयोदशे ।
षष्ठेपि च ततःसूर्ये जातोजीवति षष्टिकम् ॥ १ ॥

रविवार के दिन जो मनुष्य जन्म लेता है वह प्रथम मास में और बत्तीसवें, तेरहवें और छटे मास में कष्ट पाता है तपश्चात् पूर्ण साठ वर्ष जीता है ॥ १ ॥

एकादशेऽष्टमे मासे चंद्रपीडा च षोडशे ।
सप्तविंशतिवर्षे च चतुर्युक्ताशितौमृतिः ॥ २ ॥

और चन्द्रवार के दिन जन्म लेने वाले मनुष्य को ग्यारहवें और आठवें मास में चन्द्रमा द्वारा कष्ट एवं सोलहवें और सत्ताईसवें वर्ष में पीडा होती है और चौरासी वर्ष बाद मृत्यु होती है ॥ २ ॥

द्वात्रिंशे चं द्वितीये च वर्षे पीडा च मंगले ।
चतुःसप्ततिवर्षाणि सदा रोगी स जीवति ॥ ३ ॥

और मंगलवार के दिन जन्म लेने वाले मनुष्य को बत्तीसवें तथा दूसरे वर्ष में पीडा होती है और सदा रोगी होकर चौहत्तर वर्ष तक जीवन को पाता है ॥३॥

बुधवारेऽष्टमे मासे पीडा वर्षे तथाष्टमे ।
पूर्णे चतुःषष्टिवर्षे ततो मृत्युर्भविष्यति ॥ ४ ॥

और बुधवार के दिन जन्म लेने वाले मनुष्य को आठवें वर्ष तथा आठवें मास में पीडा होती है और पूर्ण चौसठ वर्ष जी कर मृत्यु होती है ॥ ४ ॥

गुरौ च सप्तमे मासे षोडशे च त्रयोदशे ।
पीडा ततश्चतुर्युक्ताशीतिवर्षाणि जीवति ॥ ५ ॥

और जो बृहस्पतिवार के दिन जन्म लेता है उसको सातवें और त्रयोदश तथा षोडश महीने में पीडा होती है फिर चौरासी वर्ष तक जीता है ॥ ५ ॥

शुक्रवारे च जातस्य देहो रोगविवर्जितः ।
षष्टिवर्षेऽथ संपूर्णे म्रियते मानवो ध्रुवम् ॥ ६ ॥

और शुक्रवार के दिन जन्म लेने वाले का शरीर सदा नीरोग रहता है और साठ वर्ष पूर्ण होने पर वह मनुष्य अवश्य मौत पाता है ॥ ६ ॥

शनौ च प्रथमे मासे पीड्यते च त्रयोदशे ।
दृढदेहस्तदा जातःशतवर्षाणि जीवति ॥ ७ ॥

शनिवार के दिन जन्म लेने वाला मनुष्य प्रथम मास और त्रयोदश में पीडा पाताहै और फिर स्वस्थ (तन्दुरुस्त देह) होकर शत वर्ष तक जीता है॥७॥इति वा०॥

अथ लग्न फलम्——

मेषलग्ने समुत्पन्नश्चंडो मानी धनी शुभः ।
क्रोधी स्वजनहंता च विक्रमी परवत्सलः ॥ १ ॥

मेष लग्न में जन्म लेने वाला पुरुष बडा प्रचंड (तेज मिजाज वाला) अभिमानी, धनवान्, शुभ आचरण वाला, बडा क्रोधी, अपने लोगों का मारने वाला, बडा पराक्रमी तथा अन्य पुरुषों से स्नेह करने वाला होता हैं ॥ १ ॥

वृषलग्नभवो लोकगुरुभक्तःप्रियंवदः ।
गुणी कृती धनी लोभी शूरःसर्वजनप्रियः ॥ २ ॥

और वृष लग्न में जो पुरुष जन्म लेता है वह आदमी लोक तथा अपने गुरु जनों का भक्त; प्रिय वाक्य का कहने वाला, गुणवान्; पण्डित, धनवान्, लोभी, शूरवीर तथा सब जनों का प्रिय होता है ॥ २ ॥

मिथुनोदयसंजातो मानी स्वजनवल्लभः ।
त्यागी भोगी धनी कामी दीर्घसूत्रोऽरिमर्दकः ॥ ३ ॥

मिथुन लग्न में जन्म लेने वाला आदमी बडा अभिमानी; अपने बन्धु जनों को प्रिय; त्यागी तथा भोगी; धनवान्, बडा कामी, आलसी (बडी देरी से काम करने वाला) और शत्रु जनों का मारने वाला होता है ॥ ३ ॥

कर्कलग्ने समुत्पन्नो भोगी धर्मजनप्रियः ।
मिष्टान्नपानसंयुक्तःसौभाग्यःसुजनप्रियः ॥ ४ ॥

और जो कर्क लग्न में जन्म लेता है वह मनुष्य भोग भोगने वाला, धर्मात्मा, मनुष्यों को प्रिय, मिष्टान्न पानसे संयुक्त, भाग्यशाली और सज्जनोंको प्रिय होताहै।

सिंहलग्नोदये जातो भोगी शत्रुविमर्दकः ।
स्वल्पोदरोऽल्पपुत्रश्च सोत्साही रणविक्रमी ॥ ५ ॥

और सिंह लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य भोगों का भोगने वाला; शत्रु जनों को मारने वाला, छोटे पेट वाला, कम पुत्र वाला, उत्साह रखने वाला,रणमें पराक्रम करने वाला होता है ॥ ५ ॥

कन्यालग्ने भवेद्बालो नानाशास्त्रविशारदः ।
सौभाग्यगुणसंपन्नःसुंदरःसुरतप्रियः ॥ ६ ॥

और कन्या लग्न में जन्म लेने वाला बालक अनेक शास्त्रोंमें विशारद, कल्याण दायक गुणों से सम्पन्न, सुन्दर और स्त्री संगमें रुचि रखने वाला होता है ॥ ६ ॥

तुलालग्नोदये जातः सुधीःसत्कर्मजीविकः ।
विद्वान्सर्वकलाभिज्ञो धनाढ्यो जनपूजितः ॥ ७ ॥

और जिसका तुला लग्नमें जन्म होता है वह मनुष्य बडा पण्डित, सत्कर्मों से जीविका करने वाला, बडा विद्वान्, सब कला जानने वाला; धनवान् और मनुष्यों से पूजित होता है ॥ ७ ॥

वृश्चिकोदयसंजातःशौर्यवान्धनवान्सुधीः ।
कुलमध्ये प्रधानश्च प्राज्ञःसर्वस्य पोषकः ॥ ८ ॥

और वृश्चिक लग्न में जो मनुष्य जन्म लेता है वह मनुष्य शूरवीर, धनवान् पण्डित, कुल में मुख्य, बडा बुद्धिमान् और सबका पोषण करने वाला होता है ॥८॥

धनलग्नोदये जातो नीतिमान्धर्मवान्सुधीः ।
कुलमध्ये प्रधानश्च प्राज्ञःसर्वस्य पोषकः ॥ ९ ॥

और जिस मनुष्य का धन लग्न में जन्म होता है वह मनुष्य बडा नीतिमान्, धर्मज्ञ, बुद्धिमान्, कुलमें प्रधान, बडा विद्वान् और सब मनुष्य मात्रों का पोषण करने वाला होता है ॥ ९ ॥

मकरोदयसंजातो नीचकर्मा बहुप्रजः ।
लुब्धो विनष्टो ऽलसश्च स्वकार्येषु कृतोद्यमः ॥ १० ॥

और जिस मनुष्यका मकर लग्नमें जन्म होता है वह नीच कर्मों का करने वाला, बहुत संतति वाला, बड़ा लोभी, सर्वनाशी, आलसी और अपने कामों में उद्यम करने वाला होता है ॥ १० ॥

कुंभलग्ने नरो जातोऽचलचित्तो ऽतिसौहृदः ।
परदाररतो नित्यं मृदुकार्यो महासुखी ॥ ११ ॥

और जिसका कुम्भ लग्नमें जन्म होता है वह मनुष्य अटल चित्त वाला; बडे सुहृद भावसे युक्त, नित्य पर स्त्री गामी, धीरे से काम करने वाला और अत्यन्त सुख चाहने वाला होता है ॥ ११ ॥

मीनलग्ने भवेद्बालो रत्नकांचनपूरितः ।
अल्पकामोऽतिकृशश्च दीर्घकालविचिंतकः ॥ १२ ॥

और जिसका मीन लग्न में जन्म होता है वह बालक रत्नों से और सुवर्ण से परिपूर्ण, थोडी काम चेष्टा करनेवाला, अत्यन्त दुबला पतला, और बहुत काल तक विचार के कार्य करने वाला होता है ॥ १२ ॥ इति ॥

अब यहां से आगे नवमांश का फल चलेगा इसलिये उसके पहिले ही प्रसंग वश इस जगह नवमांश निकालने की रीति लिखते हैं—

बृहत् पाराशरी सै—"नवांशे शाश्वरे तस्मात्स्थिरे तन्नवमादितः।

उभये तत्पञ्चमादेरिति चिन्त्यं विचक्षणैः ।
देवा नृराक्षसाश्चैव चरादिषु ग्रहेषु च"॥

अर्थात् जब नवमांश निकालना है तो चर राशि में उसी राशि से गणना करे, और स्थिर राशि में उससे नवम राशि से गणना करे, और द्विस्वभाव में उससे पांचवी राशि से गणना करे । अब नवमांश के स्वामी कहते हैं, चर राशियों के नवमांशों के स्वामी देवता हैं, और स्थिर राशियों के नवमांशों के स्वामी मनुष्य हैं;, द्विस्वभाव राशियों के नवमांशों के स्वामी राक्षस हैं ॥

स्पष्टज्ञानार्थंचक्रमिदम् ।

मे०	वृ०	मि०	कर्क	सिं०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०	अंशाः	
१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	३	२०
२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	६	४०
३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	१०	०
४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	१३	२०
५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	१६	४०
६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	२०	०
७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	२३	२०
८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	२६	४०
९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	३०	०

अब चक्र से नवमांश निकालने की सुगम रीति लिखते हैं ॥

जिस राशिका नवमांश निकालना है उसके जितने अंश गत हुए हों उन्हीं अंशों के सामने और उसी राशि के नीचे वाले कोष्ठक में जो राशि है बस उसी का नवांश जानना चाहिये ॥

उदाहरण ।

जैसे मेषका नवमांश निकालना है तो देखिये कि उसके कितने अंश गत हुए हैं अथवा मेषके १५ अंश गत हुए हैं तो १६—४० के सामने देखिये और मेषके नीचे देखिये तो ५ आया तो सिंह राशि हुई बस यही नवमांश है इसका स्वामी नवमांशेश (सूर्य) होगा ॥

अथ नवांशफलम् ।

पिशुनश्चपलो दुष्टःपापकर्मा निराकृतिः ।
परेषां व्यसने सक्तःप्रथमांशे प्रजायते ॥ १ ॥

अपने जन्म राशि के प्रथम नवांश में जन्म लेने वाला मनुष्य चुगलखोर, बडा चपल, पापकर्म करने वाला, बुरी सूरत वाला, हर एक जीवको दुःखदायी होता है ॥ १ ॥

उत्पन्नविभवो भोक्ता संग्रामे विगतस्पृहः ।
गांधर्वप्रमदासक्तो द्वितीयांशे प्रजायते ॥ २ ॥

और लग्न के दूसरे नवांश में जन्म लेने वाला मनुष्य उत्पन्न हुए बिभवका भोक्ता, लडने में इच्छा रहित, गान विद्या और स्त्रियों में आसक्त होता है ॥ २ ॥

धर्मिष्ठःसंततव्याधिःसर्वसारज्ञ एव च ।
सर्वज्ञो देवताभक्तस्तृतीयांशे प्रजायते ॥ ३ ॥

और जिसका जन्म लग्नके तीसरे नवांशमें होता है वह मनुष्य धर्मात्मा,निरन्तर रोगी, सबों के अभिप्राय का जानने वाला, सर्वज्ञ, और देवतों का भक्त होताहै ॥

चतुर्थांशेऽभिजातस्तु दीक्षितो गुरुभक्तिमान् ।
यत्किंचिद्धरणौ वस्तु तत्सर्वं लभते हि सः ॥ ४ ॥

और जो लग्न के चतुर्थ नवांश में जन्म लेता है वह मनुष्य दीक्षित गुरु जनों में भक्ति रखने वाला और जो कुछ भूमि में वस्तु है उस सबको प्राप्त करने वाला होता है ॥ ४ ॥

सर्वलक्षणसंपन्नो राजा भवति विश्रुतः ।
दीर्घायुर्बहुपुत्रश्च जायते पंचमांशके ॥ ५ ॥

और जो मनुष्य लग्न के पंचम नवांश में जन्म लेता हैं वह सब लक्षणों से संपन्न जगत में विख्यात राजा, दीर्घायु और बहुत पुत्र वाला होता है ॥ ५ ॥

स्त्रीनिर्जितःशुभैर्हीनो बहुमानी नपुंसकः ।
अर्थध्वंसी प्रमाथी च षष्ठांशे जायते नरः ॥ ६ ॥

और जिसका लग्न के छटे नवमांश में जन्म होता है वह मनुष्य स्त्री से मैथुन में हारने वाला, शुभ से वर्जित, बहुत अभिमानी, नपुंसक, धनका नाश करने वाला और प्रमाथी होता है ॥ ६ ॥

विक्रांतो मतिमाञ्छूरःसंग्रामेष्वपराजितः ।
महोत्साही च संतोषी जायते सप्तमांशके ॥ ७ ॥

और लग्न के सप्तम अंशका जन्म लेने वाला पुरुष बडा पराक्रमी, बुद्धिमान्, शूरवीर संग्राम में न हारने वाला, बडा उत्साही और संतोषी होता है ॥ ७ ॥

कृतघ्नो मत्सरी क्रूरःक्लेशभागी बहुप्रजः ।
फलकाले परित्यागी जायते चाष्टमांशके ॥ ८ ॥

और लग्न के अष्टम नवमांश का जन्म लेने वाला मनुष्य बडा कृतघ्न, मत्सरता करने वाला, बडा क्रूर क्लेशका भोगने वाला, बहुत सन्तान वाला और फल के समय त्याग करने वाला होता हैं ॥ ८ ॥

क्रियासु कुशलो दक्षःसुप्रतापी जितेंद्रियः ।
भृत्यैश्च वेष्टितो नित्यंजायतेऽथ नवांशके ॥ ९ ॥

और लग्न के नवें नवमांश में जन्म लेने वाला मनुष्य अनेक क्रियाओं में कुशल, बडा चतुर, बडा प्रतापी, इन्द्रियों का जीतने वाला और अनेक भृत्य रखने वाला होता हैं । ९ ।

इति राशिनवमांशक फलम् ।

अथ चन्द्रकुण्डलिका बिचार ।

लग्नं देहो वर्गषट्कोडुकानि प्राणश्चंद्रो धातवोऽन्ये ग्रहेंद्राः ।
प्राणेनष्टे देहधात्वंगनाशो यस्मात्तस्माच्चंद्रवीर्यप्रधानः ॥१॥

लग्न को देह कहते हैं षड्वर्ग तारागण हैं चन्द्रमा प्राण हैं और आठ ग्रह धातुहैं जब प्राण नष्ट होजाते हैं तब देह धातु और अंग सभी नष्ट होजाते हैं इस से चन्द्रवीर्य को मुख्य समझना । १ ।

लग्नमात्मा मनश्चंद्रस्तदात्मा जीवयोगवान् ।
लग्नांशाद्द्वाशशांशाद्वा ग्रहाणां फलमादिशेत् ॥२॥

लग्न को आत्मा और चन्द्रमा को मन जानना चाहिये चन्द्रमा से ही आत्मा

जीव योग पाता है इस कारण से लग्नांश से द्वादशांश से और चन्द्रमा से ग्रहों के फलको कहै ॥ २ ॥

इंदुःसर्वत्र बीजांभोलग्नंचकुसुमप्रभम् ।
फलेन सदृशोंऽशश्च भावःस्वादुरसःस्मृतः ॥ ३ ॥

इस देह वृक्षका बीज और जल स्थानी चन्द्रमा है; लग्न पुष्प तुल्य है, नवमांश फल है और भाव जो है वह स्वाद और रस है ॥ ३ ॥

अथ चन्द्रराशिफलम् ।

लोलनेत्रःसदा रोगी धर्मार्थकृतनिश्चयः ।
पृथुजंघःकृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः ॥ १ ॥
कामिनीहृदयानंदो दाता भीतो जलादपि ।
चंडकर्मा मृदुश्चांते मेषराशौ भवेन्नरः ॥ २ ॥

जिसकी मेष राशि होती है वह मनुष्य चंचल नेत्रों वाला, सदा रोगी, धर्म अर्थ में निश्चय रखने वाला, पुष्ट जंघावाला, कृतघ्नी, पापों से रहित, राजा से पूजा पाने वाला ॥ १ ॥

कामिनी स्त्रियों के हृदय में आनन्द देने वाला, दाता, जलसे डरने वाला, प्रचंड कर्म करता हुआ अन्त में वृद्धावस्था में शान्त होता है ॥ २ ॥

भोगीदाता शुचिर्दक्षो महासत्वो महाबलः ।
धनी बिलासी तेजस्वी सुमित्रश्च बृषे भवेत् ॥ ३ ॥

और जिसकी जन्म समय में वृष राशि होती है वह मनुष्य भोगों का भोगने वाला, दानका देने वाला, बडा पवित्र, बडा चतुर, धैर्यवान; बलवान, धनवान, क्रीडा करने वाला, बडा तेजस्वी और अच्छे २ मित्र वाला होता है ॥ ३ ॥

मिष्टवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालुर्मैथुनप्रियः ।
गांधर्ववित्कंठरोगी कीर्तिभागी धनी गुणी ॥ ४ ॥
गौरो दीर्घःपटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः ।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने नरः ॥ ५ ॥

और जिसकी जन्म समय में मिथुन राशि होती है वह मनुष्य मीठे वाक्य कहने वाला, चंचल दृष्टि वाला, वडा दयालु, मैथुन (विषय) प्रिय; गान विद्या जानने वाला, कण्ठ में जिसके रोग, कीर्ति का भागी, धनवान्, गुणवान् ॥ ४ ॥

गौर अंग वाला शरीर का लम्बा, वडा चतुर, वक्ता; बुद्धिमान्; दृढ संकल्प करने वाला सब काम करने में समर्थ और न्याय वाक्य का कहने वाला होता है।

कार्यकारी धनी शूरो धर्मिष्ठो गुरुवत्सलः ।
शिरोरोगी महाबुद्धिःकृशांगःकृत्यवित्तमः ॥ ६ ॥
प्रवासशीलःकोपांधोऽबलो दुःखी सुमित्रकः ।
अनासक्तो गृहे बक्रःकर्कराशौ भवेन्नरः ॥ ७ ॥

और जिसकी जन्म समय में कर्क राशि होती है वह मनुष्य कामों का करने वाला; धनवान्, शूरवीर, धर्मात्मा, गुरुजनों का वत्सल, शिरका रोगी;वडा बुद्धिमान् दुर्बलांग, कृत्य जानने वालों में शिरोमणि ॥ ६ ॥

परदेश में रहने वाला सब समय क्रोधांध, बलसे हीन, दुःख भोगने वाला, उत्तम जिसके मित्र घरमें आसक्ति रहित और बडा टेढा होता है ॥ ७ ॥

क्षमायुक्तःक्रियासक्तो मद्यमांसरतःसदा ।
देशभ्रमणशीलश्च शीतभीतःसुमित्रकः ॥ ८ ॥
विनयी शीघ्रकोपी च जननीपितृवल्लभः ।
व्यसनी प्रकटो लोके सिंहराशौ भवेन्नरः ॥ ९ ॥

जिसके जन्म समय में सिंह राशि होती है वह मनुष्य क्षमावान्; क्रिया करने में आसक्त; सदा मद्य मांस खाने में निरत, देशों में भ्रमण करने वाला, शीत से डरने वाला; सत्पात्र मित्रों वाला ॥ ८ ॥

विनय के स्वभाव वाला, शीघ्रही कोप करने वाला, माता पिता का स्नेही, अनेक व्यसनों से युक्त और जगत् में विख्यात होता है ॥ ९ ॥

बिलासी सुजनाह्लादी सुभगो धर्मपूरितः ।
दाता दक्षःकविर्वृद्धो वेदमार्गपरायणः ॥ १० ॥

सर्वलोकप्रियो नाट्यगांधर्वव्यसने रतः ।
प्रवासशीलःस्त्रीदुःखी कन्याजातो भवेन्नरः ॥ ११ ॥

और कन्या राशि वाला मनुष्य सब समय विलास करने वाला, सज्जनों को आनन्द देने वाला, बडा सुन्दर धर्मात्मा; दाता, चतुर, कवि; वृद्धि अवस्था में वेद मार्ग में परायण ॥ १० ॥

सब लोक को प्रिय, नृत्य गानका व्यसनी, प्रदेश का रहने वाला और स्त्री निमित्त से दुःखी होता है ॥ ११ ॥

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः ।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येऽतिविक्रमः ॥ १२ ॥
वाणिज्यदक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः ।
प्रवासी सुहृदामिष्टस्तुलाजातो भवेन्नरः ॥ १३ ॥

और जिसकी तुला राशि होती है वह मनुष्य असमय में क्रोध करने वाला, दुःख युक्त, कोमल वचन बोलने वाला, दयालु; चंचल नेत्र वाला, चंचल लक्ष्मी वाला, गृह में पराक्रमी ॥ १२ ॥

व्यापार में कुशल, देवताओं का पूजक, मित्रों से स्नेह रखने वाला, परदेश में रहने वाला और स्वजनों को इष्ट (प्रिय) होता है ॥ १३ ॥

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरःपिंगललोचनः ।
परदाररतो मानी निष्ठुरःस्वजने भवेत् ॥ १४ ॥
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्टधीः ।
धूर्तश्चोरकलारंभी वृश्चिके जायते नरः ॥ १५ ॥

और जिसकी वृश्चिक राशि होती है वह मनुष्य बालकपने से ही परदेश में रहने वाला; क्रूर अन्तःकरण वाला, शूरवीर, पीले नेत्रों वाला, परस्त्रियों से संग करने वाला; बडा मानी स्वजनों में निठुरता युक्त ॥ १४ ॥

साहस से लक्ष्मी पाने वाला, अपनी माता में दुष्ट बुद्धि रखने वाला, बडा धूर्त और चोरी की कलाओं को सीखने वाला होता है ॥ १५ ॥

शूरःसत्यधिया युक्तःसात्विको जननंदनः ।
शिल्पविज्ञानसंपन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः ॥ १६ ॥
मानी चरित्रसंपन्नो ललिताक्षरभाषकः ।
तेजस्वी स्थूलदेहश्च धनुर्जातः कुलांतकः ॥ १७ ॥

और जिसकी जन्म समय में धनु राशि होती है वह मनुष्य शूरवीर, सत्य बुद्धि-से युक्त; सात्विक प्रकृति वाला; मनुष्यों का आनन्द देने वाला, शिल्प विद्या का जानने वाला, धन संपन्न, दिव्य जिसकी भार्या ॥ १६ ॥

बडा मानी, चरित्रों से सम्पन्न, ललित अक्षरों को कहने वाला और बडा तेजस्वी, पुष्ट जिसका देह तथा अपने कुलका नाश करने वाला होता है ॥ १७ ॥

कुले नष्टो वशःस्त्रीणां पंडितःपरिवादकः ।
गीतज्ञो ललिताग्राह्यः पुत्राढ्यो मातृवत्सलः ॥ १८ ॥
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबांधवः ।
परचिंतितसौख्यश्च मकरे जायते नरः ॥ १९ ॥

और जो मनुष्य मकर राशि वाला होता है वह अपने कुलमें सबसे हीन,स्त्रियों के वश में रहने वाला, पण्डित,बुराई करने वाला, गान विद्या जानने वाला, सुन्दर स्त्रियों से स्वीकृत, पुत्रवान्, माता की सेवा करने वाला ॥ १८ ॥

धनवान्, त्यागी, उत्तम जिसके भृत्य, बडा दयालु, अनेक भाई बन्धु वाला और अन्यों के सुखका चिंतवन करने वाला होता है ॥ १९ ॥

दातालसःकृतज्ञश्च गजवाजिधनेश्वरः ।
शुभदृष्टिःसदा सौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः ॥ २० ॥
पुण्याढ्यःस्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तितः ।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतःकुंभे जातो भवेन्नरः ॥ २१ ॥

और जिसके जन्म समय में कुम्भ राशि होती है वह मनुष्य दान देने वाला, महा आलसी, किये हुए उपकार का जानने वाला, हाथी घोडे तथा धनका स्वामी शुभ जिसकी दृष्टि, सदा सौम्य, धन और विद्या के अर्थ उद्यम करने वाला ॥२०॥

पुण्यवान्, स्नेह कीर्तियुक्त, धन भोगने वाला, सामर्थ्यवान्, मंडूक समान कुख वाला और निर्भय रहने वाला होता है ॥ २१ ॥

गंभीरचेष्टितःशूरःपटुवाक्यो नरोत्तमः ।
कोपनःकृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठःकुलप्रियः ॥ २२॥
नित्यसेवी शीघ्रगामी गंधर्वकुशलःशुभः ।
मीनराशौ समुत्पन्नो जायते बंधुवत्सलः ॥ २३ ॥

और जिसके जन्म समय में मीन राशि होतीहै वह मनुष्य गम्भीर चेष्टा करने वाला, शूरवीर, चतुराई के वाक्यों का कहने वाला, मनुष्यों में उत्तम, क्रोधी, कृपण, ज्ञानवान, गुणों में श्रेष्ठ, कुलमें प्रिय ॥ २२ ॥

नित्य सेवा करने वाला, शीघ्रता से चलने वाला, गान विद्या में कुशल, शुभ आचरण वाला और भाई बन्धुओं से स्नेह रखने वाला होता है ॥ २३ ॥ इति ॥

अथाग्रे राशिभावाध्यायप्रकारः ।

चन्द्रात्प्रथमगो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
विदेशगामी भोगी च कलहे कृतवासनः ॥ १ ॥

जिसकी कुण्डली में चन्द्रमा और सूर्य दोनों एक ही घरमें बैठे हों वह मनुष्य परदेश में जाने वाला, भोगों का भोगने वाला और कलह करने में मन रखने वाला होता है ॥ १ ॥

जन्मकाले यदा भानुर्द्वितीयो यदि चंद्रतः ।
बहुभृत्ययशाश्चैव राजमान्यो भवेन्नरः ॥ २ ॥

यदि जन्म के समय चन्द्रमा से द्वितीय घरमें सूर्य बैठा हो तब वह मनुष्य अनेक भृत्यों का रखने वाला बडा यशस्वी और राजमान्य होता है ॥ २ ॥

चन्द्राद्भानुस्तृतीयश्च जन्मकाले यदा भवेत् ।
स्वर्णार्थी शोशुचिश्चैव राजतुल्यो भवेन्नरः ॥ ३ ॥

और जिसकी कुंडली में चन्द्रमा से तीसरे घरमें सूर्य हो वह मनुष्य सुवर्ण की चाहना करने वाला, बहुत सोच करने वाला तथा उसी के कारण राजा के तुल्य अधिक जनों का स्वामी होता है ॥ ३ ॥

चंद्राच्चतुर्थगो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
गणकाःकथयंत्येव मातृहास्ते न भक्तिमान् ॥ ४ ॥

और जिसकी कुंडली में चन्द्रमा से चतुर्थ स्थानमें सूर्य होता है तब ज्योतिषी लोग ऐसा कहते हैं कि वह मनुष्य अपनी माता का मारने वाला होता है, उसकी भक्ति करने वाला नहीं ॥ ४ ॥

चंद्रात्पंचमगो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
सुताभिश्चासुखी चैव बहुपुत्री भविष्यति ॥ ५ ॥

और जिसकी कुंडली में चन्द्रमा से पंचम घरमें सूर्य बैठा हो तब वह मनुष्य कन्याओं के निमित्त से दुःख पाने वाला तथा बहुत पुत्रों से युक्त होता है ॥ ५ ॥

चंद्रात्षष्ठगतो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
शत्रूणां विजयी शूरःक्षत्रकर्मरतःसदा ॥ ६ ॥

जिसकी कुण्डली में चन्द्रमा से छटे घरमें सूर्य बैठा हो तब वह मनुष्य शत्रु जनों का जीतने वाला, शूरवीर और सदा क्षत्रियों के कर्म में निरत होताहै ॥ ६ ॥

जन्मकाले यदा भानुश्चंद्रात्सप्तमगो भवेत् ।
सुखी सुशीलचारी च राजमान्यो महातपाः ॥७ ॥

और जिसकी कुंडली में चन्द्रमा से सप्तम घरमें सूर्य बैठा हो तब वह मनुष्य सुन्दर भार्या वाला, सुशील आचरण करने वाला, राजा से सत्कार पाने वाला, और महा तपस्वी होता हैं ॥ ७ ॥

चंद्रादष्टमगो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
सर्वदा क्लेशकारी च ह्यतिरोगात्प्रपीडितः ॥ ८ ॥

और जिसकी कुंडली में चन्द्रमा से अष्टम घरमें सूर्य बैठा हो तब वह मनुष्य सदा क्लेश करने वाला और अत्यन्त रोगों से पीडित होता है ॥ ८ ॥

चंद्रान्नवमगो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
धर्मात्मा सत्यवादी च बंधुक्लेशी सदा भवेत् ॥ ९॥

और जिसकी कुंडली में जन्म समय में चन्द्रमा से नवें घरमें सूर्य बैठाहो तब वह मनुष्य धर्म करने वाला और सत्य बोलने वाला सदा भाई बन्धु से द्वेष करने वाला होता है ॥ ९ ॥

चन्द्राद्दशमगो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
तस्य द्वारेषु तिष्ठंति धनवंतो न संशयः ॥ १० ॥

और जिसकी कुंडली में चन्द्रमा से दशम घरमें सूर्य हो तब उस मनुष्य के द्वार पर बडे धनवान् खडे रहते हैं इसमें संदेह नहीं ॥ १० ॥

चंद्रादेकादशो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
राजगर्व्यतिवेत्ता च प्रसिद्धःकुलनायकः ॥ ११ ॥

जिसकी कुंडली में चन्द्रमासे ग्यारहवें घरमें सूर्य बैठा हो वह मनुष्य राजगर्व वाला, बहुज्ञ, सर्वत्र प्रसिद्ध, और कुलका स्वामी होता हैं ॥ ११ ॥

चंद्राद्द्वादशगो भानुर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
लग्नद्वादशगेअंधश्चंद्रात्काणोऽयमुच्यते ॥ १२ ॥

और जिसकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा से बारहवें घरमें सूर्य बैठा हो वह मनुष्य काणा होता हैं क्यों कि ऐसा लिखा है कि लग्न से बारहवें घर में सूर्य हो तब वह मनुष्य अंधा और चन्द्रमासे बारहवें घरमें सूर्य बैठे तब वह मनुष्य काणा होता हैं ॥ १२ ॥ इति चं० जा० क० सू० ध्यायः ।

अथ भौमभावाध्यायः ।

चंद्रात्प्रथमगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
रक्ताक्षी रुधिरस्रावी रक्तवर्णो भवेन्नरः ॥ १ ॥

जिसकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा के संग मंगल बैठाहो तब वह मनुष्य लाल नेत्र वाला, रुधिर स्राव विकार से युक्त और रक्त वर्ण होता है ॥ १ ॥

चंद्राद्द्वितीयगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
धराधीशो भवेत्पुत्रःकृषिकर्ता न संशयः ॥ २ ॥

और जिसकी कुण्डली में चन्द्रमा से दूसरे घरमें मंगल होता है वह मनुष्य भूमिका पति होता है परन्तु उसका पुत्र खेती करने वाला होता हैं ॥ २ ॥

चंद्रात्तृतीयगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
चतुर्भ्रातृसमायुक्तःसुशीलःसर्वदा सुखी ॥ ३ ॥

और जिसकी कुंडली में चन्द्रमा से तीसरे घरमें मंगल बैठाहो तब वह मनुष्य चार भाई वाला बडा सुशील और सदा सुखी होता है ॥ ३ ॥

चंद्राच्चतुर्थगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
सुखभंगो दरिद्री स्यात्पुंसःस्त्री म्रियते ध्रुवम् ॥ ४ ॥

और जिसके जन्म समय में चन्द्रमासे चतुर्थ घरमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य सुखसे रहित, महा दरिद्री और उस पुरुष की स्त्री अवश्य ही मरजाती है ॥ ४ ॥

चंद्रात्पचमगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत ।
पुत्रहीनो नरःस्त्रीणां लग्ने पतति निश्चितम् ॥ ५ ॥

और जिसके जन्म कालमें चन्द्रमा से पंचम घरमें मंगल बैठा हो तब वह मनुष्य पुत्रहीन होता है और यदि येही योग स्त्री के होवे तब तो अवश्यही संतति का अभाव करता है ॥ ५ ॥

चंद्राच्च षष्ठगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
अधर्मे शत्रुता चैव रोगेण पीडितःसदा ॥ ६ ॥

और जिसके जन्म समय कुंडली में चन्द्रमा से छटे घर में मंगल बैठा हो तब वह मनुष्य अधर्म के जंजाल में फंस कर मनुष्योंसे शत्रुता करने वाला और निरन्तर रोगों से पीडित होता है ॥ ६ ॥

चंद्रात्सप्तमगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
स्त्री कुशीला भवेत्तस्य सदा चाप्रियवादिनी ॥ ७ ॥

और जिसके जन्म समय में चन्द्रमा से सप्तम घरमें मंगल बैठा हो उसकी भार्या दुःशीला (दुष्ट स्वभाव की) "शीलं स्वभावे सद्वृत्ते" इत्यमरः" और सदा दुर्वाक्य कहने वाली होती है ॥ ७ ॥

चंद्रादष्टमगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
जीवहंता महापापी शीलसत्वविवर्जितः ॥ ८ ॥

और जिसके जन्म समय में चन्द्रमा से अष्टम घरमें मंगल बैठा हो वह मनुष्य जीवोंको मारने वाला महापाप करने वाला और शील एवम् सत्यसे रहित होता है।

चंद्रान्नवमगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
लक्ष्मीवांश्च भवेत्पुत्रो वृद्धकाले न संशयः ॥ ९ ॥

और जिसके जन्म काल में चन्द्रमा से नवम घरमें मंगल बैठा हो वह आदमी धनी तथा वृद्धावस्था में पुत्रवाला होता है ॥ ९ ॥

चंद्राद्दशमगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
तस्य द्वारेषु तिष्ठंति गजा वाजी न संशयः ॥ १० ॥

और जिस मनुष्य की कुण्डली में चन्द्रमा से दशम घरमें मंगल बैठा हो उस मनुष्य के द्वार पर हाथी घोडों की भीड सदा रहती है इसमें संशय नहीं।१०।

चंद्रादेकादशे भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
राजद्वारे प्रसिद्धःस्याद्यशोरूपसमन्वितः ॥ ११ ॥

और जिस मनुष्य की जन्मकुंडली में चन्द्रमा से ग्यारहवें घरमें मंगल हो वह आदमी राजद्वार में प्रसिद्ध और यश तथा रूपसे संपन्न होता है ॥ ११ ॥

चंद्राद्द्वादशगो भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
मातुश्चासुखकारी च सदा कष्टस्य दायकः ॥ १२ ॥

और जिसकी जन्म कुंडली में चन्द्रमा से बारहवें घरमें मंगल हो तब वह आदमी माता को दुःख दायक और सदा केवल कष्ट देने वाला होता है ॥ १२ ॥

इति बृहज्जातके द्वितीयप्रकरणे भौमाध्यायः ।

अथ बुधभावाध्यायः ।

चंद्रात्प्रथमगःसौम्यःसुखरूपं विना नरः ।
दुष्टभाषी मतिभ्रंशी स्थानभ्रष्टो दिने दिने ॥ १ ॥

१—सर्वदाकष्टदायकः—इत्यपि पाठः साधुरेव ।

जिसके जन्म कुंडलीमें चन्द्रमा बुध दोनों एक घरमें ही स्थितहों तो वह मनुष्य सुख और रूपसे हीन, दुष्ट वाक्य बोलने वाला, बुद्धि जिसको भ्रष्ट हो जाय और प्रति दिन अपने स्थान से भ्रष्ट होने वाला होता है ॥ १ ॥

चंद्राद्द्वितीयगःसौम्यो धन धान्यसमाकुलः ।
गृहबंधुधनप्राप्तिःशीतरोगैर्विनश्यति ॥ २ ॥

और जिसके जन्म समय में चन्द्रमा से दूसरे घरमें बुध बैठाहो तो वह मनुष्य धन धान्यों से युक्त और घर बन्धु तथा धनकी प्राप्ति करने वाला तथा शीतजन्य रोगों से मरता है ॥ २ ॥

चंद्रात् सहजगःसौम्यःकुरुते चार्थसंपदः ।
राज्यलाभो भवेत्तस्य महतां संगमो ध्रुवम् ॥ ३ ॥

और जिसके जन्म समय में चन्द्रमा से तृतीय घरमें बुध होता है वह मनुष्य अर्थ संपत्ति का करने वाला होता है और उसको राज्य तथा सत्सङ्ग का अवश्य ही लाभ होता है ॥ ३ ॥

चंद्राच्चतुर्थगःसौम्यःसर्वदा सुखकारकः ।
मातृपक्षे महालाभःसुखं जीवति मानवः ॥ ४ ॥

और जिसके चन्द्रमा से चतुर्थ घरमें बुध बैठता है तब वह सदा सुखका पाने वाला और मातृपक्ष से महालाभ करने वाला होता है और वह मनुष्य सुख सहित जीने वाला होता है ॥ ४ ॥

चंद्रात्पंचमगःसौम्यो बुद्धिमांश्च विचक्षणः ।
रूपवांश्च महाकामी कुवाक्यं धारयेन्नरः ॥ ५ ॥

२—समन्वितः इतिभावः युक्त इतियावत् ।

३—ध्रुवं निश्चयेन सद्भिः सह तस्य सम्पर्को भवेन्नतु दुर्जनैरितिभावः ।

४—मातृपक्षान्महालाभः" इतिपाठःपठ्येत चेत्साधु भवेत् ।

५—सुखं यथा स्यात्तथा इति क्रियाविशेषणम् अर्थात् सुख पूर्वक मित्यर्थःकिञ्च "त्रिषुद्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि चेतिनामलिङ्गानुशासनप्रामाण्या द्रव्ये वर्तमानं सत्सुखं त्रिषु, अद्रव्ये वर्तमानं सत्तु क्लीबं भवत्येवेति ध्येयम् ।

और जिसकी कुण्डली में चन्द्रमा से पंचम घरमें बुध बैठा होता है तब वह मनुष्य बडा बुद्धिमान्, चतुर, रूपवान्, बडा कामी और कुवाक्य का बोलने वाला होता है ॥ ५ ॥

चंद्रात्षष्ठगतःसौम्यःकृपणःकातरो भवेत् ।
विवादे च महाभीरू रोमेशो दीर्घलोचनः ॥ ६ ॥

और जिसके जन्म समय में चन्द्रमा से छटे घरमें बुध बैठा होताहै वह कृपण, बडा कायर, विवाद से अत्यन्त डरने वाला, शरीर में रोंगटे जिसके अत्यन्त खडेहों और विशाल नेत्र वाला होता है ॥ ६ ॥

चंद्रात्सप्तमगःसौम्यःस्त्रीणां च वशगो नरः ।
कृपणश्च धनाढ्यश्च बह्वायुश्च भविष्यति ॥ ७ ॥

और जिसके जन्म समय में चन्द्रमा से सप्तम घरमें बुध बैठा होता है वह आदमी स्त्रियोंके वशमें रहने वाला, बडा कृपण, परन्तु धनाढ्य और दीर्घायु होताहै ।

चंद्रादष्टमगे सौम्ये देहे शीतो भविष्यति ।
राजमध्ये प्रसिद्धश्च शत्रूणां च भयंकरः ॥ ८ ॥

और जिसकी कुण्डली में चन्द्रमा से अष्टम घरमें बुध बैठता है वह मनुष्य देहमें शीत प्रकृति वाला, राजाओं के बीच में प्रसिद्ध तथा शत्रुजनों को भय देने वाला होता ॥ ४ ॥

चंद्रान्नवमगःसौम्यःस्वधर्मस्य विरोधकः ।
अन्यधर्मरतःपुंसो बिरोधी दारुणो भवेत् ॥ ९ ॥

और जिसकी कुण्डली में चन्द्रमासे नवे घरमें बुध बैठाहो वह मनुष्य अपने धर्मका विरोधी, अन्य धर्म में निरत; पुरुषों का विरोधी और महा दारुण होता है ॥ ६ ॥

चंद्राद्दशमगःसौम्यो राजयोगी नरःसदा ।
कर्मराशौ यदा चंद्रःकुटुंबे नायको भवेत् ॥ १० ॥

१-रोमाणि सन्त्यस्य सः "लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यःशनेलचः (५ । २ । १००) इति सूत्रेण रोमन्शब्दस्यं लोमादित्वात्-शप्रत्ययः । तनूरुहं रोम लोम"-इति रोमलोम-शब्दयोःपर्यायत्वात् ।

और जिसकी कुण्डली में चन्द्रमा से दशम घरमें बुध बैठा हो वह मनुष्य राज योग वाला और जब कि चन्द्रमा कर्म राशि (दशमभाव) में स्थित हो तब वह मनुष्य अपने कुटुम्ब का स्वामी होता है ॥ १० ॥

चंद्रादेकादशे सौम्यो लाभकारी पदे पदे ।
वर्षे एकादशे पुंसःपाणिग्राहो भविष्यति ॥ ११॥

और जिसकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा से ग्यारहवें घरमें बुध बैठा हो वह मनुष्य को क्षण क्षण में लाभ कराने वाला होता है और उस मनुष्यका ग्यारहवें वर्ष में पाणिग्रहण (विवाह) हो जाता है ॥ ११ ॥

चंद्राद्द्वादशगःसौम्यःसर्वदा कृपणो भवेत् ।
तत्सुतस्य जयो नास्ति पराजयं लभेद्दिने ॥ १२ ॥

और जिसके जन्म समय में चन्द्रमा से बारहवें घरमें बुध बैठा होता है वह आदमी सदा कृपण होता है और उसके पुत्रकी कभी जीत नहीं होती है और दिन दिन पराजय होती है ॥ १२ ॥ इ० च० बु० फलम् ।

अथ चन्द्राद्गुरुभाव फलम् ।

चन्द्रात्प्रथमगो जीवो जीवयोग्यो भवेन्नरः ।
व्याधिना रहितःशूरो निर्धनो न कदाचन ॥ १ ॥

जिस आदमी के जन्म समय में चन्द्रमा और बृहस्पति एकही घर में बैठे होते हैं वह आदमी जीने के योग्य, अनेक व्याधि रहित, बडा शूरबीर और सदा धन सम्पन्न होता है ॥ १ ॥

चंद्राद्द्वितीयगो जीवो राजमान्यः शतायुषी ।
अत्युग्रश्च प्रतापी च धर्मिष्ठःपापवर्जितः ॥ २ ॥

और जिस आदमी की जन्म कुण्डली में चन्द्रमा से बृहस्पति दूसरे घर में बैठा हो वह राजा से मान पाने वाला, पूर्ण शतवर्ष की आयुयुक्त, बडा उग्र,बडा प्रतापी, धर्मात्मा और पाप से बर्जित होता है ॥ २ ॥

चंद्रात्तृतीयगे जीवे नारीणां वल्लभो भवेत् ।
धनवृद्धिःपितुर्गेहे वर्षे सप्तदशे तथा ॥ ३ ॥

और जिसकी जन्मकुंडली में चंद्रमासे तीसरे घरमें बृहस्पति बैठा हो वह आदमी स्त्रियों का प्रिय होता है और उसके पिता के घरमें सप्तदश वर्ष में धनकी वृद्धि होती है ॥ ३ ॥

चन्द्राच्चतुर्थगो जीवःसुखैश्चैव विवर्जितः ।
मातृपक्षे महाकष्टी परेषां गृहकर्मकृत् ॥ ४ ॥

और जिसकी जन्म कुंडली में चन्द्रमा से चतुर्थ घर में बृहस्पति बैठा हो तब वह मनुष्य सुख मात्र से रहित, मातृ पक्षसे महा कष्ट भोगने वाला और अन्य मनुष्यों के घर का काम करने वाला (भृत्य) होता है ॥ ४ ॥

चंद्रात्पंचमगो जीवो दिव्यदृष्टिर्भवेन्नरः ।
तेजस्वी पुत्रदा नारी ह्युत्युग्रश्च महाधनी ॥ ५ ॥

और जिसकी कुंडली में चन्द्रमा से पंचम स्थान में बृहस्पति बैठा हो तो वह मनुष्य दिव्य दृष्टि वाला, तेजस्वी और उसकी स्त्री पुत्रों को उत्पन्न करने वाली; तथा स्वयं महा उग्र, और बडा धनवान् होता है ॥ ५ ॥

चंद्राच्च षष्ठगो जीवो ह्युदासी गृहवर्जितः ।
आयुर्वाह्यं भवेत्पुसांभिक्षाभोक्ताऽव्यवस्थितः ॥ ६ ॥

और जिसकी जन्म कुणडली में चन्द्रमा से छटे स्थान में बृहस्पति हो तो वह मनुष्य उदासीन रहने वाला, घर से हीन, देशान्तर में आयु बिताने वाला और खर्च के अधिक होने से मनुष्यों में भिक्षा करके खाने वाला व्यवस्था रहित होता है

चंद्रात्सप्तमगो जीवो बहुजीवी व्ययं विना ।
स्थूलदेहीक्लीवपांडुर्गृहमध्ये च नायकः ॥ ७ ॥

और जिसके जन्म समय में चन्द्रमा से सप्तम घर में बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य बहुत काल तक जीने वाला, खरच करने से रहित, पुष्ट देह वाला; नपुंसक, पांडुरोग से युक्त और अपने घर का स्वामी होता है ॥ ७ ॥

चंद्रादष्टमगो जीवो देहरोगी सदा नरः ।
सुतातोपि महाक्लेशी सुखं स्वप्ने न दृश्यते ॥ ८ ॥

और जिसकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा से अष्टम घर में बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य सब समय देह में रोग युक्त; अच्छे पिता वाला, महा क्लेश पाने वाला, स्वप्न में भी सुख न पाने वाला होता है ॥ ८ ॥

चंद्रान्नवमगो जीवो धर्मिष्ठो धनपूरितः ।
सुमार्गे सुगतश्चैव देवगुर्वोश्च सेवकः ॥ ९ ॥

और जिसकी कुण्डली में चन्द्रमा से नवे घर में बृहस्पति होता है वह मनुष्य बडा धर्मात्मा, धन से पूर्ण, सुमार्ग में अच्छी तरह चलने वाला और गुरु तथा देवताओं का सेवक होता है ॥ ९ ॥

चंद्राद्दशमगो जीवो जन्मकाले यदा भवेत् ।
पुत्रदारपरित्यागी तपस्वी च भवेन्नरः ॥ १० ॥

और चन्द्रमा से दशम स्थान में बृहस्पति बैठा हो तब वह मनुष्य पुत्र स्त्री का त्यागने वाला तपस्वी होता है ॥ १० ॥

चंद्रादेकादशे जीवो जन्मकाले यदा भवेत् ॥
अश्वारूढो भवेत्पुत्रो राजतुल्यो भवेन्नरः ॥ ११ ॥

और जिसके चन्द्रमा से ग्यारहवें स्थान में बृहस्पति बैठा हो उस मनुष्य का पुत्र राजा के समान, घोडों पर बैठने वाला होता है ॥ ११ ॥

चंद्राद्द्वादशगो जीवो जन्मकाले यदा भवेत् ।
स्यात्कुटुंबविरोधी च सुखं शत्रोर्दशाग्रहे ॥ १२ ॥

और जिसकी कुण्डली में चन्द्रमा से बारहवें घर में बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य कुटुम्ब से विरोध करने वाला होता है तथा लग्न से छटे स्थान के स्वामी की दशा में उस मनुष्य को सुख होता है ॥ १२ ॥ इति ब्र० द्वि० प्र० गु० फ० ।

अथ शुक्रभावफलम् ।

चंद्रात्तु प्रथमे शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
जले मृत्युर्भवेत्तस्य सन्निपातो हि हिंसया ॥ १ ॥

जिसकी कुण्डली में चन्द्रमा शुक्र एकही घर में बैठे हों वह मनुष्य जल में डूब

कर मृत्यु पाने वाला और सन्निपात रोग वाला, तथा हिंसा से मृत्यु प्राप्त करने वाला होता है ॥ १ ॥

चंद्राद् द्वितीयगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
महाधनी महाज्ञानी राजतुल्यो न संशयः ॥ २ ॥

जिसकी कुंडली में चन्द्रमा से दूसरे घर में शुक्र हो तो वह मनुष्य महा धनवान् बडा ज्ञानी, और राजा के तुल्य होता है इसमें कुछ संदेह नहीं है ॥ २ ॥

चंद्रात्सहजगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
धर्मिष्ठो बुद्धिमांश्चैव म्लेच्छतो लाभदायकः ॥ ३ ॥

और जन्म समय में चन्द्रमा से तीसरे घर में शुक्र होता हैं तो वह मनुष्य बडा धर्मात्मा, बुद्धिमान् और किसी म्लेच्छ जाति से धन लाभ करने वाला होता है ।३।

चंद्राच्चतुर्थगःशुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
कफाधिको महाक्षामो वार्द्धक्ये धनवर्जितः ॥ ४ ॥

और जिसकी जन्म कुंडली में चन्द्रमा से चतुर्थ घर में शुक्र हो वह मनुष्य कफाधिक, अति दुर्वलांग, और बृद्धपन में धन हीन होता है ॥ ४ ॥

चंद्रात्पंचमगःशुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
बहुकन्या भविष्यंति धनाढ्यो यशवर्जितः[१] ॥ ५ ॥

जिसके जन्म कुंडली में चन्द्रमा से पंचम घर में शुक्र बैठा हो वह मनुष्य बहुत कन्या संतति वाला, धनाढ्य और यश से हीन होता हैं ॥ ५ ॥

चंद्राच्च षष्ठगःशुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
दुर्व्ययाद्भयकारी च संग्रामे च पराजितः ॥ ६ ॥

और जिसके चन्द्रमा से छटे घर में शुक्र होता है वह मनुष्य खोटे खर्च से भय करने वाला और संग्राम में हारने वाला होता है ॥ ६ ॥

१—यशश् शब्दस्य सकारान्तत्वात् यशसा वर्जितः यशोवर्जितः इति पाठेन भाव्यम् न तु यशवर्जित इति, अतो "धनाढ्यः कीर्तिवर्जितः" इति पाठो विधीयेत चेत्साधुः श्च्युतसंस्कृतिदोषरहितश्च स्यात् ।

चंद्रात्सप्तमगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
पुरुषार्थहीनोऽकुशलः शंकितश्च पदे पदे ॥ ७ ॥

और जिसकी कुंडली में चन्द्रमा से सप्तम घर में शुक्र होता है वह मनुष्य हीन पुरुषार्थ वाला और क्षण क्षण में शंका युक्त होता हैं ॥ ७ ॥

चंद्रादष्टमगःशुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
प्रसिद्धो हि महायोद्धा दाता भोक्ता महाधनी ॥ ८ ॥

और जिसके जन्म समय में चन्द्रमा से अष्टम घर में शुक्र बैठा हो वह मनुष्य सर्वत्र प्रसिद्ध, महायोद्धा, दाता, भोक्ता और महा धनवान् होता है ॥ ८ ॥

चंद्रान्नवमगःशुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
बहुभ्राता तथा मित्रभगिनीबहुलो भवेत् ॥ ९ ॥

और जिसके जन्म समय में चन्द्रमा से नवम घर में शुक्र बैठा हो तो वह मनुष्य बहुत भाई वाला और मित्रयुक्त तथा बहुत भगिनी वाला होता हैं ॥ ९ ॥

चंद्राच्च दशमे शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
मातापित्रोःसुखप्राप्तिर्जीवितं तु बृहद्भवेत् ॥ १० ॥

और जिसके चन्द्रमा से दशम घर में शुक्र हो तो वह मनुष्य माता पिता को सुख दिलाने वाला, और दीर्घायु होता है ॥ १० ॥

चंद्रादेकादशे शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
बह्वायुश्च भवेत्पुंसो रिपुरोगविवर्जितः ॥ ११ ॥

और जिसके जन्म समय में चन्द्रमा से ग्यारहवें घर में शुक्र बैठा हो वह मनुष्य दीर्घायु और शत्रु तथा रोग से रहित होता हैं ॥ ११ ॥

चंद्राद्द्वादशगःशुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
परदाररतो नित्यं लंपटो ज्ञानहीनकः ॥ १२ ॥

और जिसकी कुंडली में चंद्रमा से बारहवें घर में शुक्र बैठा हो वह मनुष्य परस्त्री गामी, अत्यन्त लंपट, और ज्ञान से हीन होता है ॥ १२ ॥

अथ शनिभावाध्यायः

चंद्राच्च प्रथमे सौरिर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
प्राणनाशोऽर्थनाशश्च बंधुनाशस्तथापरे ॥ १ ॥

जिस मनुष्य की कुंडली में चन्द्रमा के संग एकही घर में शनि बैठा हो उस मनुष्य को प्राणांत दुःख, धन का नाश और बन्धु नाश होता है ॥ १ ॥

चंद्राद्द्वितीयगो मंदो जन्मकाले यदा भवेत् ।
मातुश्च कष्टकारी च अजाक्षीरेण जीवति ॥ २ ॥

और जिस मनुष्य के जन्म समय में चन्द्रमा से दूसरे घर में शनि बैठा हो वह माता को कष्ट देने वाला होकर बकरी का दूध पीकर जीता है ॥ २ ॥

चंद्रात्सहजगःशौरिर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
बहुकन्याभवेत्पुंस उत्पद्य म्रियते ध्रुवम् ॥ ३ ॥

और जिसके जन्म समय में चन्द्रमा से तीसरे घरमें शुक्र बैठा हो उस मनुष्य के बहुत कन्या संतति होकर अवश्य मर जाती हैं ॥ ३॥

चंद्राच्चतुर्थगो नूनं शनिर्जन्मनि संभवेत् ।
महापौरुषकारी च शत्रुहंता न संशयः ॥ ४ ॥

और जिसके जन्म समय में चन्द्रमा से चतुर्थ घर में शनि होता हैं वह बडा पुरुषार्थी और बैरिओं का मारने वाला होता है ॥ ४ ॥

चंद्रात्पंचमगःसौरिर्जन्मकाले यदा भवेत् ॥
स्त्री स्याच्छ्यामलवर्णा च ह्यथवा प्रियवादिनी ॥ ५ ॥

और जिसके जन्म समय में चंद्रमा से पंचम घर में शनि होता है उस मनुष्य को श्याम रंग की (काली) और प्रिय वाक्य कहने वाली भार्या मिलती है ।५।

रविजःषष्ठगश्चंद्राज्जन्मकाले यदा भवेत् ।
महाक्लेशी च कष्टी च आयुर्हीनो भवेन्नरः ॥ ६ ॥

और जिसके जन्म समय में चन्द्रमा से छटे घर में शनि होता है वह महा क्लेश पाने वाला, कष्ट पाने वाला और अल्पायु होता है ॥ ६ ॥

चंद्राच्च सप्तमे स्थाने यदा च रविनंदनः ।
महाधर्मी च दाता च स्त्रीणां बहुकर ग्रहः ॥ ७ ॥

और जिसके जन्म समय में चन्द्रमा से सप्तम घर में शनि हो तो वह मनुष्य बडो धर्मात्मा; दान देने वाला और बहुत स्त्रियों का पाणिग्रहण करनेवाला होता है।

रविजो ह्यष्टमे स्थाने चंद्रतो जन्मसंभवः ।
पितुश्च कष्टकारी च बहुदाने शुभं भवेत् ॥ ८ ॥

और जिसके जन्म समय में चन्द्रमा से अष्टम घर में शनि हो वह मनुष्य अपने पिता को कष्ट देने वाला होता है और बहुत दान करने से शुभ होता है।

चंद्रान्नवमगः सौरिर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
यदा मुग्धदशाप्राप्तिर्धनहानिर्भविष्यति ॥ ९ ॥

और जिसके जन्म समय में चन्द्रमा से नवम घर में शनि हो तव उस मनुष्य को जब शनि की मुग्ध दशा आती है तब धन का नाश ,करता है ॥ ९ ॥

चंद्राद्दशमगःसौरिर्जन्मकाले यदा भवेत् ।
नृप तुल्यो भवेद्देही कृपणो धनपूरितः ॥ १० ॥

और जिसके जन्म समय में चंद्रमा से दशम घर में शनि बैठा हो तब वह मनुष्य राजों के तुल्य, अत्यन्त कृपण, और धन से परिपूर्ण रहता है ॥ १० ॥

चंद्रादेकादशे सौरिर्जन्मलग्ने भवेद्यदि ।
देहक्लेशी महाकष्टी ह्यधर्मी च न संशयः ॥ ११ ॥

और जिसके जन्म समय में चन्द्रमा से ग्यारहवें घर में शनि होता है वह मनुष्य देह में दुःख पाने वाला, महा कष्ट भोगने वाला; और निःस्संदेह अधर्मी होताहै

द्वादशे भुवने सौरिश्चंद्राच्चपतितो यदि ।
निर्धनी भिक्षुकश्चैव धर्मेणैव विवर्जितः ॥ १५ ॥

और जिस मनुष्य की जन्म कुंडली में चंद्रमा से बारहवें घर में शनि बैठा होता है वह धन हीन, भीख मांगने वाला, और धर्म से रहित होता है ॥ १२ ॥

इति बृहज्जातके द्वितीय प्रकरणे चं० श० फलम् ।

अथ चन्द्राद्राहुफलम् ।

जन्मकर्मे शुभे धर्मे चंद्राद्यदि पतेत्तमः ।
जन्मकाले भूपतिश्च वृद्धकाले महाधनी ॥ १ ॥

जिस मनुष्यकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमासे दशम या नवम घरमें अथवा चन्द्रमाके साथ राहु बैठा हो तब मनुष्य वृद्धावस्थामें राजाके बराबर धनवान् होताहै

षष्ठे च द्वादशे राहुश्चंद्राच्च पतितो यदि ।
स राजा राजमंत्री च धनधान्यसमाकुलः ॥ २ ॥

और जिसके जन्म समयमें चन्द्रमासे छटे घरमें या बारहवें घरमें राहुहो वह मनुष्य राजा या राजा का मंत्री तथा धनधान्यों से परि पूर्ण रहता है ॥ २ ॥

चतुर्थे सप्तमे राहुश्चंद्राच्च यदि जायते ।
माता पिता महाकष्टी सदा ह्यसुखदायकः ॥ ३ ॥

और जिसके जन्म समय में चन्द्रमासे चतुर्थ या सप्तम घरमें राहु होता है उस मनुष्य के माता पिताको अत्यन्त कष्ट होता है और सदा स्वयं दुःखदायी होता है ॥ ३ ॥

धने एकादशे स्थाने चंद्राद्राहुः प्रजायते ।
धनमानवसंयुक्तःसुखं स्वप्ने न दृश्यते ॥ ४ ॥

और जिसके जन्म समयमें चन्द्रमासे दूसरे या ग्यारहवें घरमें राहु बैठाहो तब वह मनुष्य धन और मनुष्यों से युक्त होने पर भी स्वप्नमेंभी सुखको नहीं देखता है॥४॥

पंचमे च यदा राहुश्चंद्राज्जलजसंभवम् ।
निधनं चापि सिद्धं च आपदश्च पदे पदे ॥ ५ ॥

और जिसके जन्म समयमें चंद्रमा से पंचम घरमें राहु बैठाहो तब उस मनुष्य को क्षण २ में आपत्ति प्राप्त होतीहै और जलके निमित्त से मृत्यु का भय होताहै ॥

इतिवृ. जा. प्रकीर्णे राहुफलम् ।

अथ राश्यायुविचारः ।

अश्विनीभरणीकृत्तिकापादे मेषराशिःभौमक्षेत्रे जन्मतो नवपादफलम् ॥ प्रथमे राजवंत १ धनवंत २ विद्यावंत ३ देवगुरुभक्त ४ पंचमे चोर ५ कालाभाषाहीन ६ सप्तमे योगींद्र ७ निर्धन ८ शुभलक्षण ९ । मास १ कष्ट अल्पमृत्युः वर्ष १ वर्ष १३ जलघातवर्ष १८ घात बर्ष ६४ अंगरोग वर्ष ५० चोरलोहपीडा उपघात यदा शुभग्रहो निरीक्षते सूतदा जीवति बर्ष ७५ मास २ घटी १५ पल १५ मृत्युः कार्तिकमासे तिथिचौथ वार मंगल भरणीनक्षत्रे देहं त्यजति ॥ १ ॥

१ अश्विनी नक्षत्रके ४ पाद और भरणी नक्षत्रके ४ पाद कृत्तिका नक्षत्रके १ पाद तक मेष राशि होती है; वह मङ्गलका क्षेत्रहै इन नव पादों में जन्म लेनेका पाद पादका पृथक् पृथक् फल कहते हैं प्रथम पादमें जन्महो तब राज्ययुक्त, दूसरे पादमें जन्महो तब धनवान्; तीसरे पादमें जन्म लेने से विद्यावान्, चौथे पादमें जन्म लेनेसे देव गुरु भक्त, पंचम पादमें जन्म लेनेसे चोर, छटे पादमें जन्म लेनेसे काल भाषाहीन, सप्तम पादमें जन्म लेनेसे योगींद्र, अष्टम पादमें जन्म लेनेसे निर्धन और नवें पादमें जन्म लेनेसे शुभ लक्षण युक्त होता है और मेष राशिमें जन्म लेने वाले पुरुषको प्रथम मासमें कष्ट तथा अल्प मृत्यु, भय फिर प्रथमवर्ष और तेरहवें वर्ष में जलघात भय । फिर बर्ष १८ में घात भय । फिर वर्ष ६४ में अंगरोग और बर्ष ५० में लोहसे घात ये सब होते हैं । और यदि उस राशिको कोई शुभ ग्रह देखता हो तब वह मनुष्य वर्ष ७५ मास २ घडी १५ पल ५ तक जीताहै तदनन्तर कार्तिकमास तिथि ४ वार मंगल नक्षत्र भरणी में देह त्यागता है १ इतिमेषराशिफलम्

१ अतः परं मीनराशिफलपर्यन्तं सर्वं गद्यजातमशुद्धप्रायं किन्तु सर्वत्र प्राचीनपुस्तकेषु एवमेव लिखितं दृश्यतेऽत एतद्गद्यकदम्बकं मयाप्येवमेवारक्षि न तु पर्यवर्त्ति सर्वैं विचक्षणैश्चेत्थमेव समादृतम् तत्वान्वेषणपरप्रज्ञा विलक्षणविचक्षणास्सदयहृदयास्तु तत्वावलोकने एव दत्तचित्ता भवन्ति न तु शुद्धयशुद्धिविचारचर्चायाम् स्ववैदुष्यद्रव्यं व्यययन्ते ।

वालानांस्पष्टप्रतिपत्त्यर्थं राशिचक्रम् ।

राशि	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
	चू	इ	क	ही	म	टो	रा	तो	ये	भो	गू	दी
	चे	उ	की	हू	मी	प	री	न	यो	ज	गे	दू
	चो	ए	कु	है	मू	पी	रू	नी	भ	जी	गो	थ
	ला	ओ	घ	हो	मे	पू	रे	नू	भी	खी	सा	झ
	ली	वा	ङ	डा	मो	ष	रो	नो	भू	खू	सी	ञ
	लू	वी	छ	डी	टा	ण	ता	ने	ध	खे	सू	दे
	ले	वु	के	डू	टी	ठ	ती	या	फ	खो	से	दो
	लो	वे	को	डे	टू	पे	तू	यी	ढ	ग	सो	च
	अ	वो	ह	डो	टे	पो	ते	यू	भे	गी	द	चो
वर्ण	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि
स्वामी	भौ	शु	बु	चं	सू	बु	शु	भौ	गु	श	श	गु

सुविधार्थ वर्ण और स्वामी भी चक्र में लगा दिये हैं। हर एक नक्षत्र के चार २ चरण होते हैं और नक्षत्रों के ही चरणों से १२ राशि बनती हैं; प्रत्येक राशि नौ नौ अक्षरों की होती है।

सपादनक्षत्रद्वयतोराशिक्रमप्रमाणम्—

सप्तविंशतिभानाञ्च, नवभिर्नवभिः पदैः।
अश्विनीप्रमुखानाञ्च, मेषाद्या राशयः स्मृताः ॥

राशियों के वर्ण जानने की सुगम रीति यह है कि क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, विप्र इनको तीन बार आवृत्ति करते जाओ अर्थात् मेषादि राशियों का और इनका क्रम से यथा संख्या करलो, चार वार आवृत्ति करने से वह १२ होते हैं उधर १२ ही राशि हैं।

अथ वृषराशिविचारः ।

कृत्तिकायास्त्रयःपादा रोहिणी मृगशिरोर्द्धं वृषराशिःशुक्रक्षेत्रे जन्मतो नवपादफलम् ॥ प्रथमेयशवंत १ सुतवंत २ रणवंत ३ शुभलक्षण ४ विद्यावंत ५ सौभाग्यवंत ६ कुलमंडन ७ धनधान्यसमर्थ ८ परदारचोर ९ । वर्ष ३।६।८।३३।४६। ५२।६३ अग्निलोहसांडसर्प्पकष्टदेवदोषघाता एते अल्प—

मृत्यवो यदा व्यतिक्रामंति तदा वर्ष ८५ मास ६ दिन ७ माघमासे शुक्लपक्षे तिथौ ९ शुक्रदिने रोहिणीनक्षत्रे अर्ध-रात्रे देहं त्यजति ॥ २ ॥

कृत्तिका नक्षत्र के तीन पाद, रोहिणी के चार पाद और मृगशिर के दो पाद तक वृषराशि होती है। वह शुक्र का क्षेत्र है। इस राशि में जन्म लेने वाले मनुष्य को नव पादों का पृथक् पृथक् फल कहते हैं, प्रथम पाद में जन्म लेने से यशवान्; दूसरे पाद में जन्म लेने से पुत्रवान्, तीसरे पाद में जन्म लेने से उत्तम कुलोत्पन्न और युद्ध में प्रवीण, चतुर्थ पाद में जन्म लेने से शुभ लक्षण, पंचम पाद में जन्म लेने से विद्यावान्, छटे पाद में जन्म लेने से सौभाग्य युक्त, सप्तम पाद में जन्म लेने से कुल मंडन (भूषण) अष्टम पाद में जन्म लेने से धनधान्य में समर्थ, नवम पाद में जन्म लेने से दूसरे की स्त्री का चोर पुरुष होता है। और वर्ष ३ वर्ष ६। वर्ष ८ वर्ष ३३ वर्ष ४६ वर्ष ५२ और वर्ष ६३ इन वर्षों में क्रम से अग्नि भय, लोह भय, सांड से भय, सर्प से भय, कष्ट, देवदोष और घात यह सब अल्पमृत्यु होती हैं। यदि इन अल्पमृत्युओं से बच जाय तब वर्ष ८५ मास ६ दिन ७ माघ मास शुक्लपक्ष नवमी तिथि शुक्रवार के दिन रोहिणी नक्षत्र में अर्द्ध रात्रि के समय देह त्याग करता है ॥ २ ॥ इति वृषभ राशि फलम् ॥

अथ मिथुनराशिफलम्।

मृगशिरोर्द्धं आर्द्रा पुनर्वसुपादत्रयं मिथुनराशिः बुधक्षेत्रे जन्मतो नवपादफलम् ॥ प्रथमे भाग्यवंत १ निर्धन २ कुत्सित-भाषी ३ धनेश्वर ४ भाग्यवंत ५ धनधान्यभोगी ६ चोर ७ महात्मसिद्ध ८ देवगुरुमाननीक ९ कष्ट मास ६ वर्ष ६ अंगरोग वर्ष १० चक्षुः पीडा ११ वर्ष १८ घातवर्ष २४।५३।६३ अल्प मृत्युः यदाशुभग्रहनिरीक्षितो भवति तदा जीवतिवर्ष ८५ पौषमासे कृष्णपक्षे अष्टमी दिने बुधवारे आर्द्रानक्षत्रे प्रथमप्रहरे देहं त्यजति ॥ ३ ॥

मृगशिर का अर्द्ध; आर्द्रा के पाद ४ और पुनर्वसु नक्षत्रके ३ पाद तक मिथुन राशि होती है वह बुध का क्षेत्र है इस मिथुन राशि में जन्म लेने वाले मनुष्य को नव पादों का पृथक् २ फल कहते हैं। प्रथम पाद में जन्म लेने से भाग्यवान्, दूसरे पाद में जन्म लेने से निर्धन, तीसरे पाद में जन्म लेने से कुत्सितभाषी (बुरबोला) चतुर्थ पाद में जन्म लेने से धनेश्वर, पंचम पाद में जन्म लेने से भाग्यवान्; छटे पाद में जन्म लेने से धनधान्य भोगी; सप्तम पाद में जन्म लेने से चोर, अष्टम पाद में जन्म लेने से महा तपःसिद्ध और नवम् पाद में जन्म लेने वाला देवता और गुरु जनों का मान करने वाला मनुष्य होता है। और उसको मास ६ वर्ष ६ में कष्ट अङ्ग रोग वर्ष १० में नेत्र पीडा, वर्ष ११ वर्ष १८ में घात और वर्ष २४ । ५३ । ६३ में अल्प मृत्यु का संभव होता है। यदि कोई शुभ ग्रह उक्त राशि को देखता है तब वह पुरुष वर्ष ८५ पर्यंत जीकर पौषमास कृष्णपक्ष अष्टमी तिथि बुधवार के दिन आर्द्रा नक्षत्र में प्रथम प्रहर में देह त्याग करता है।

इति मिथुन राशि फलम्।

अथ कर्कराशि फलम्।

पुनर्वसुपादमेकं पुष्यआश्लेषांतं कर्कराशिः चंद्रक्षेत्रेज० प्रथमे धनवंत १ महीपतिः २ [1]मुनीश्वर ३ विद्यावंत ४ धर्मवंत ५ चोर ६ निर्धन ७ देशपति ८ कुलमंडन ९। अल्पमृत्युदिन ११ कष्टमास ९ वर्ष १ रोगवर्ष ७ जलघात वर्ष ९ अंगरोग वर्ष १२ जलघात वर्ष १६ अंगरोग वर्ष २० लोहघात वर्ष २७। ३५ अल्पमृत्युदोष वर्ष ४५ देवदोष वर्ष ५५। ६१ अल्प मृत्यु राजकष्ट असाध्यरोग अग्निसर्प्पजलघातसांडवाघघातं शुभग्रहनिरीक्षितस्तदा वर्ष ७० मास ५ दिन ३ फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे ४ प्रहरे गोधूलिकवेलायां देहं त्यजति ॥ ४ ॥

१--स्वांगमुनीश्वरः" इति प्राचीनः पाठो लिखिता दृश्यत सुष्ठु शासनप्रकारकाणि आसमन्तादङ्गानि तपस्यावयवाःयस्य सः, यद्वा सुष्ठु सुन्दराण्यासमन्ता दङ्गानि शरीरावयवाः करचरणादयः यस्य स स चाऽसौमुनीश्वरश्चेति विग्रहो वोध्यः तत्र दिव्यवपुरित्यर्थः कर्तव्यः "अङ्गंगात्रे प्रतीकोपाययोरिति मेदिनी" इत्थं कथमपि समादधतु विद्वांसः।

पुनर्वसु नक्षत्र का एक पाद पुष्यके ४ पाद आश्लेषा नक्षत्रकी समाप्ति पर्यंत कर्क राशि होती है। वह कर्क चन्द्रमा का क्षेत्र है। इसके जन्म लेनेके पृथक् २ नव पादों का फल कहते हैं, प्रथम पादमें जन्म लेनेसे धनसंपन्न, दूसरे पादमें जन्म लेने से भूमिका पति,तीसरे पादमें जन्म लेनेसे मुनीश्वर,चौथे पादमें जन्म लेनेसे विद्यावान् पंचम पादमें जन्म लेनेसे धर्मात्मा, छटे पादमें जन्म लेनेसे चोर, सप्तम पादमें जन्म लेने से निर्धन, अष्टम पादमें जन्म लेने से देशपति, और नवम पादमें जन्म लेने से कुलका भूषण वह मनुष्य होता है। जन्म के ११ वें दिन अल्प मृत्यु, नवम मास में कष्ट, प्रथम वर्षमें रोग, फिर वर्ष ७ में जलघात, वर्ष ९ में अंग रोग, वर्ष १२ में जलघात, वर्ष १६ में अंगरोग,वर्ष २० में लोहघात, वर्ष २७ | ३५ में अल्प मृत्यु से दोष, फिर वर्ष ४५ में देवदोष, वर्ष ५५ | ६१ में अल्प मृत्यु;राजकष्ट,असाध्य रोग, अग्निघात, सर्पघात, जलघात,सांडसे और व्याघ्रसे भय होते हैं यदि वह कर्क लग्न शुभ ग्रह दृष्ट हो तौ वर्ष ७० मास ५ दिन ३ मास फाल्गुन शुक्ल पक्ष चतुर्थ प्रहरमें गोधूलि समय में वह पुरुष देह त्याग करताहै ॥ ४ ॥ इति कर्क राशि फलम्

अथ सिंहराशिफलम् ।

मघा च पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनीपादे सिंहराशिःसूर्यक्षेत्र ज० प्रथमे राजमान्य १ धनेश्वर २ तीर्थवासी ३ पुत्रवंत ४ स्वपक्षहीन ५ मातापितातारक ६ राजमान्य ७ धनधान्यसमर्थ ८ निर्धन ९ । चोरिमास ८ तथावर्ष १ कष्टवर्ष १०।१५ अंगरोगवर्ष २५ वर्ष ४५ देवदोषसान्निपात वर्ष ५१ वर्ष ६१ घात अल्पमृत्युर्यदा व्यतिक्रामति तदा जीवति वर्ष ६५ श्रावणमासे शुक्लपक्षे १० दिने पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रे रविवारे प्रथमप्रहरे देहं त्यजति ।

मघा के ४ पाद पूर्वाफाल्गुनी के ४ पाद और फाल्गुनी के १ पाद पर्यंत सिंह राशि होती है यह राशि सिंह सूर्यका क्षेत्रहै इसके जन्म लेनेका पृथक् २ नव पादों का फल कहते हैं, प्रथम पादमें जन्म लेनेसे राजमान्य, द्वितीय पादमें जन्म लेने से धनेश्वर; तृतीय पादमें जन्म लेने से तीर्थ वासी, चतुर्थ पादमें जन्म लेने से पुत्रवान्,

पंचम पादमें जन्म लेनेसे स्वपक्ष से रहित, छटे पादमें जन्म लेने से माता पिता का उद्धार करने वाला, सप्तम पादमें जन्म लेनेसे राजाओं से मान्य, अष्टम पादमें जन्म लेनेसे धन धान्य से पूर्ण, और नवम पादमें जन्म लेनेसे पुरुष निर्धन होताहै। तदनंतर मास, आठ वर्ष १ में कष्ट फिर वर्ष १०।१५ में अंगरोग। फिर वर्ष २५।४५ में देव दोषसे सन्निपात फिर वर्ष ५१ वर्ष ६१ में घात होता है जब इन सम्पूर्ण अल्प मृत्यु ओं से बच जाय तब वह मनुष्य पूर्ण ६५वर्ष जीता है तदनन्तर श्रावण सुदी १० रविवार के दिन पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र प्रथम प्रहर में देह छोडताहै। इ.सिं.फ.

अथ कन्याराशिफलम्।

उत्तरायास्त्रयःपादा हस्तः चित्रार्द्धं कन्याराशिःबुधक्षेत्रे जन्म० प्रथमे निर्द्धन १ पुत्रहीन २ शत्रुमरण ३ धनवान् ४ भोगी ५ पुत्रवंत ६ राजमान्य ७ सर्वसमर्थ ८ पराक्रमी ९। मातापिता गुरुभक्त १० मास ३ वर्ष ३ अंगरोग वर्ष १ वर्ष १३ चक्षुः पीडा जलघात वर्ष २६ अंगरोगदेवपीडा वर्ष ३३ लोहघातवर्ष ४३ अंगरोग एतानि वर्षाणि अल्पमृत्युःयदाशुभग्रहनिरीक्षितो भवति तदा जीवति वर्ष ८४ भाद्रपद मासे शुक्लपक्षे ९ दिने बुधवारे हस्तनक्षत्रे गोधूलिकवेलायां देहं त्यजति।

उत्तरा के तीन पाद और हस्त के चार पाद चित्राके दो पादतक कन्या राशि होती है वह बुधका क्षेत्र है उसमें पृथक् २ नव पादोंमें जन्म लेनेका फल कहतेहैं। प्रथम पादमें जन्म लेनेसे निर्धन, दूसरे पादमें जन्म लेनेसे पुत्रसे हीन, तृतीय पादमें जन्म लेनेसे शत्रु मरण, चतुर्थ पादमें जन्म लेनेसे धनवान; पंचमपादमें जन्म लेनेसे भोगी; छटे पादमें जन्म लेनेसे पुत्रवान्, सप्तम पादमें जन्म लेनेसे राजमान्य, अष्टम पाद में जन्म लेने से सर्व प्रकार समर्थ, और नवें पादमें जन्म लेनेसे पराक्रमी, माता पिता तथा गुरू जनों का भक्त होता है, और १० मास ३ वर्ष ३ में अंगरोग, वर्ष १ वर्ष १३ चक्षुःपीडा और जलघात, वर्ष २६ में अंगरोग देवनिमित्तसे पीडा,वर्ष ३३ में लोहघात, वर्ष ४३ में अंगरोग होते हैं। इन वर्षों में अल्पमृत्यु सम्भव है

यदि उक्तराशि शुभग्रहावलोकित हो तब पूर्ण ८४ वर्ष जीकर भाद्रपद मास शुक्ल पक्ष नवमी तिथिको बुधवार हस्त नक्षत्र गोधूलि के समय देह त्याग करता है।।इति।।

अथ तुलाराशि जातकफलम् ।

चित्रार्द्धं स्वाती विशाखापादत्रयं तुलाराशिः शुक्रक्षेत्रे जन्मतो नवपादफलम् । प्रथमे धनभोगी १ धनेश्वर २ निर्धन ३ भाषाहीन ४ ज्ञातकर्मा ५ परदारंचोर ६ मातापितातारक ७ राजमान्य ८ भाग्यवंत ९ । मास ४ कष्टमास १६ अंगरोग वर्ष ४ कष्टवर्ष १६ जलघातवर्ष २१ । ३३ अंगरोग ४१ अंगवृद्धि वर्ष ५१ देवदोषवर्ष ६१ अल्पमृत्युः । यदाशुभग्रह निरीक्षितो भवति तदा जीवति वर्ष ८५ वैशाखमासे शुक्ले पक्षे तिथि १३ शुक्रवारे शतभिषानक्षत्रे मध्याह्नवेलायां देहं त्यजति

चित्रा नक्षत्र आधा, स्वाती नक्षत्र के ४ पाद और विशाखा के तीन पाद इन ९ पादों की तुला राशि शुक्र का क्षेत्रहै इसमें जन्म लेने वाले पुरुषके प्रत्येक पादके जन्म फलको पृथक् २ कहते हैं प्रथम पादमें जन्म लेनेसे भोगी, द्वितीय पादमें जन्म लेनेसे धनेश्वर, तृतीय पादमें जन्म लेनेसे निर्धन, चतुर्थ पादमें जन्म लेनेसे तेजरहित पंचम पादमें जन्म लेने से कर्मोका जानने वाला,छटे पादमें जन्म लेनेसे पर स्त्री चोर सप्तम पादमें जन्म लेने वाला माता पिता का उद्धार करने वाला,अष्टम पादमें जन्म लेने से राजमान्य और नवम पादमें जन्म लेने से अत्यन्त भाग्यवान् पुरुष होताहै । और जन्म दिनसे लेकर मास ४ में कष्ट, मास १६ में अंगरोग,फिर वर्ष ४ में कष्ट वर्ष १६ में जलघात भय, वर्ष २१ में और ३३ में अंग रोग, वर्ष ४१ में अंगवृद्धि

१ दारयन्ति भ्रातॄनितिविग्रहे णिजन्ताद् 'दॄ विदारणे' इत्यस्माद्धातोः'अकर्तरि कारके" इत्यधिकारात् 'ऋदोरप्"इत्यस्य घञपवादत्वाच्च कर्तरि घञ्विधानार्थकेन दारजारौ कर्तरि णिलुक् च इति वार्तिकेन चाद्धञि णेलु कि च विहिते निष्पन्नः

"क्रोडा हारा तथा दारा त्रय एते यथाक्रमम् ।
क्रोडे हारे च दारेषु शब्दाः प्रोक्ता मनीषिभिः ॥"

इति व्याडिशुभाङ्कोक्ते दारशब्दो ऽकारान्तः परिणीत स्त्र्यर्थकः पुलिङ्गो बहुबचनान्त एव प्रयुज्यते तदत्र परेषां दाराणां चोर इतिविग्रहो बोध्यः । इह"परदाराचोर" इति पूर्वः पाठोऽवलोकितः तस्याऽपिदाराशब्दस्यटाबन्तत्वात्साधुत्वम् ।

(शरीर का मोटा ताजा पन) वर्ष ५१ में देवदोष, वर्ष ६१ में अल्पमृत्यु होती है। यदि उक्तराशि शुभग्रहावलोकित हो तब पूर्ण ८५ वर्ष जीकर मास वैशाख शुक्लपक्ष त्रयोदशी तिथि शुक्रवार के दिन शतभिषा नाम नक्षत्र में मध्यान्ह के समय देह त्याग करता है ॥ इति तुला राशिफलम् ॥

अथ वृश्चिकराशिफलम्।

विशाखापादमेकं अनुराधा ज्येष्ठांतं वृश्चिकराशिः। भौमक्षेत्रे ज० प्रथमेधनेश्वर १ यशवंत २ आगमवंत ३ महांतिक ४ भाषाहीन ४ कुलमंडन ५ धनधान्यसमर्थ ६ विद्यावंत ७ राजमान्य ८ यशवंत ९ मास २ कष्टवर्ष ३ कष्टवर्ष ७ अंगरोग वर्ष ८ जलघातवर्ष १३ वृक्षघातवर्ष ३२।३५ अंगरोगलोहघातबर्ष ४५ अंगरोगवर्ष ६३ अल्पमृत्युः यदा शुभग्रहनिरीक्षितस्तदा जीवतिवर्ष ७५ मास २ दिन ७ ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे तिथौ ११ मंगलवारे अनुराधानक्षत्रे प्रथमप्रहरे देहं त्यजति ॥

विशाखा पाद एक अनुराधा पाद ४ और ज्येष्ठा के ४ पाद समाप्ति पर्यन्त वृश्चिक राशि मंगल का क्षेत्र है। इस राशिमें नव पादोंके पृथक् पृथक् फल कहते हैं। प्रथम पादमें जन्म लेनेसे धनेश्वर, द्वितीय पादमें जन्म लेने से यशवान्, तृतीय पाद में जन्म लेने से आगमशास्त्र में प्रवीण, चतुर्थ पादमें जन्म लेने से तेज रहित, पंचम पादमें जन्म लेने से कुलाभरण (भूषण) छटे पादमें जन्म लेने से धनधान्य में समर्थ, सप्तम पादमें जन्म लेनेसे विद्यावान्, अष्टम पादमें जन्म लेने से राजमान्य, और नवम पादमें जन्म लेनेसे यशवान् होता है और मास २ में कष्ट, वर्ष ७ में अंगरोग, वर्ष ८ में जलघात भय, वर्ष १३में वृक्षघात, वर्ष ३२।३५ में अंगरोग, लोहघात, वर्ष ४५ में अंगरोग वर्ष ६३ में अल्प मृत्यु योग होताहै। यदि राशि शुभावलोकित हो तब वह पुरुष पूर्ण७५ वर्षमास २ दिन ७ जीकर मास ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष एकादशी तिथि मंगलवार के दिन प्रथम प्रहर में देह त्याग करता है ॥ ४ ॥

इति वृश्चिकराशिपादादिजन्मफलम्।

अथ धनराशि जन्मफलम् ।

मूलं च पूर्वाषाढा उत्तराषाढापादे धनराशिः गुरुक्षेत्रे ज०प्रथमे ज्ञानवंत १ निर्धन २ नीचकर्मकारक ३ राजमान्य ४ क्रोधी ५ पुत्रवंत ६ कामलंपट ७ धनेश्वर ८ रुधिरविकारी ९ । मास ५ वर्ष ३ कष्टवर्ष ९ अंगरोगवर्ष ११ चक्षुः पीडावर्ष १६ जलघातवर्ष २४ वर्ष ३६ अंगरोगवर्ष ४७।५७।६७ तठई सर्पजलघात अल्पमृत्युः । यदा शुभग्रहनिरीक्षितस्तदा जीवतिवर्ष ८५ आषाढमासे शुक्लपक्षे तिथि १ गुरुवारे हस्तनक्षत्रे गोधूलिवेलायां देहं त्यजति ॥

मूल नक्षत्रके ४ पाद पूर्वाषाढा पाद और उत्तराषाढाका पाद १ पर्यंत पाद ९ की धनराशि बृहस्पतिका क्षेत्रहै तिसके पाद पादके जन्मलेनेका पृथक्२फल कहते हैं । प्रथम पादमें जन्म लेनेसे ज्ञानवान्, द्वितीय पादमें जन्म लेने से निर्धन; तृतीय पाद में जन्म लेनेसे नीच कर्म करने वाला; चतुर्थ पाद में जन्म लेने से राजमान्य, पंचम पादमें जन्म लेनेसे क्रोधी, छटे पादमें जन्म लेनेसे पुत्रवान्,सप्तम पादमें जन्म लेनेसे काम लंपट, अष्टम पादमें जन्म लेनेसे धनेश्वर,नवम पादमें जन्म लेनेसे रुधिर विकार युक्त होता है । तदनंतर जन्म समय से मास ५ में और वर्ष ३ में कष्ट, वर्ष ९ में अंगरोग, वर्ष ११ में नेत्र पीडा, वर्ष १६ में जलघात; वर्ष २४ वर्ष ३६ में अंगरोग, वर्ष ४७ वर्ष ५७ वर्ष ६७ में क्रमसे सर्प जलघात अल्प मृत्यु होती है । यदि वह राशि शुभग्रहावलोकित हो तब पूर्ण वर्ष ८५ जीकर तदनंतर आषाढ मास शुक्लपक्ष प्रतिपदा तिथि गुरुवार के दिन हस्त नक्षत्र में गोधूलि के समय देह त्याग करता है ॥ इति धनराशिप्रतिपादजन्मादिफलम् ।

अथ मकरराशि जन्मफलम् ।

उत्तरात्रयःपादाःश्रवणधनिष्ठार्द्धं मकरराशिः । शनिक्षेत्रेज० प्रथमे अंगहीन १ गुरुभक्त २ परदाररत ३ शुभलक्षण ४ देवांशि ५ पुत्रवंत ६ उत्तम ७ महीपति ८ उभयपक्ष-

तारक ९ धनेश्वर ९। मास ३ कष्टमास १ देवदोषपीडावर्ष ३ अंगरोगवर्ष ५७ देवदोषवर्ष १० अंगरोगअग्निपीडावर्ष ३२ लोहघातवर्ष ३३ कष्टवर्ष ४३ तथा ५१ अल्पमृत्युः। यदा शुभग्रहनिरीक्षितो भवति तदा जीवति वर्ष ६१ कार्तिके मासे देवदोष अनंतरअल्पमृत्युर्यदाव्यतिक्रामति तदा जीवतिवर्ष ८१ शुक्लपक्षे तिथि ५ शुक्रवारे श्रवण-नक्षत्रे देहं त्यजति ॥

उत्तराषाढा के तीन पाद श्रवण के पाद ४ और धनिष्ठा नक्षत्र के पाद २ तक मकर राशि शनिको क्षेत्र होती है उसके नव पादोंका पृथक् २ फल कहतेहैं। प्रथम पादके जन्म लेनेसे अंगहीन; द्वितीय पादमें जन्म लेनेसे गुरुभक्त,तृतीय पादमें जन्म लेनेसे परस्त्रीगामी, चतुर्थ पादमें जन्म लेने से शुभ लक्षणयुक्त, पंचम पादमें जन्म लेनेसे देवताओं का अंश, छटे पादमें जन्म लेनेसे पुत्रवान्, सप्तम पादमें जन्म लेने से उत्तम, अष्टम पादमें जन्म लेने से महीपति और नवम पादमें जन्म लेने से उभय कुलोद्धारक होता है। जन्मानंतर मास३ कष्ट,मास १ में देवदोष से पीडा, वर्ष ३ में अंगरोग, वर्ष ५७ में देवदोष,वर्ष १० में अंगरोग अग्निपीडा,वर्ष ३२ में लोहघात, वर्ष ३३ में कष्ट, वर्ष ४३ में और वर्ष ५३ में अल्प मृत्यु होती है। यदि राशि शुभावलोकित हो तब वर्ष ६१ में मास कार्तिक में देवदोष से अनेक अल्प मृत्यु होती हैं यदि उनसे बचजाय तब वह मनुष्य वर्ष ८१ जीकर शुक्लपक्ष तिथि पंचमी शुक्रवार के दिन श्रवण नक्षत्र में देह त्याग करता है॥ १०॥ इति मकरराशि॥

अथ कुम्भराशिफलम्।

धनिष्ठार्द्धं शततारकाः पूर्वाभाद्रपदात्रयःकुंभराशिःशनि-क्षेत्रेज०॥ प्रथमेमध्यम १ श्रीमंत २ कष्टभाषाहीन ३ पुत्रवंत ४ राजमान्य ५ पापकर्महीन ६ योगींद्र ७ अंगहीन ८ शुभलक्षण ९ दिनकष्ट तथा दिन ७ अल्पमृत्यु १८ वर्षे ३२ शुभग्रहनिरीक्षितो भवति तदा जीवतिवर्ष ६१ माघ-

मासे शुक्लपक्षे तिथि २ गुरुवासरे उत्तराभाद्रपदा नक्षत्रे मृत्युर्भवति ॥

धनिष्ठा पाद २ शतभिषा पाद ४ और पूर्वा भाद्रपदा के पाद ३ तक कुम्भराशि शनिका क्षेत्र होता है तिसके नव पादोंमें जन्म का फल पृथक् २ कहते हैं। प्रथम पादमें जन्म लेने से मध्यम फल, द्वितीय पादमें जन्म लेनेसे लक्ष्मीवान् तृतीय पाद में जन्म लेनेसे कष्ट युक्त तथा तेजहीन; चतुर्थ पादमें जन्म लेने से पुत्रवान्, पंचम पादमें जन्म लेनेसे राजमान्य, छटे पादमें जन्म लेनेसे पाप कर्म करनेसे हीन, सप्तम पादमें जन्म लेनेसे योगीन्द्र, अष्टम पादमें जन्म लेनेसे अंगहीन और नवम पादमें जन्म लेने से शुभ लक्षण युक्त होता है। तदनंतर जन्म दिन से दिन ७ में कष्ट युक्त, और वर्ष १८।३२ में अल्पमृत्यु भय होताहै। यदि राशि शुभ ग्रहावलोकित हो तो पूर्ण ६१ वर्ष जीकर मास माघ में शुक्लपक्ष तिथि २ में गुरुवारके दिन उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्रमें मृत्यु होती है ॥ १ ॥ इति कुम्भराशिपाद जन्मफलम् ।

अथ मीनराशिफलम् ।

पूर्वाभाद्रपदापादमेकं उत्तराभाद्रपदरेवत्यंतं मीनराशिः ॥ जीवक्षेत्रे ज० प्रथमेधनवंत १ कालहीन २ लंपट ३ धनवंत ४ चोर ५ कपटी ६ निर्धन ७ भाग्यवंत ८ नवमेअपक्लेश ९। वर्ष १८।३३ शुभग्रहनिरीक्षितस्तदा जीवतिवर्ष ६१ माघमासशुक्लपक्षातिथि १२ उत्तराभाद्रपदानक्षत्रे गुरुवारे प्रातःकाले देहं त्यजति ॥

पूर्वा भाद्रपदा पाद १ उत्तरा भाद्रपदा पाद ४ और रेवती नक्षत्रके पाद ४ तक मीन राशि बृहस्पति का क्षेत्रहै तिसमें जन्म लेनेसे नव पादों का फल पृथक् पृथक् कहते हैं प्रथम पाद में जन्म लेने से धनवान्, द्वितीय पाद में जन्म लेने से काल हीन, तृतीय पाद में जन्म लेने से लंपट, (कामी) चतुर्थ पाद में जन्म लेने से धनवान्, पंचम पाद में जन्म लेने से चोर, छटे पाद में जन्म लेने से कपटी, सप्तम पाद में जन्म लेने से निर्धन, अष्टम पाद में जन्म लेने से भाग्यवान्, और नवम पाद में जन्म लेने से आपद और क्लेशयुक्त होता है। तदनन्तर जन्म दिन से वर्ष

१८ । ३३ में क्लेश होता हैं । यदि शुभग्रहावलोकित राशि हो तब पूर्ण वर्ष ६१ जीकर माघ शुक्ल द्वादशी गुरुवार उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र में प्रातःकाल देह त्याग करता हैं ॥ १२ ॥ इति मीनजात फलम् ॥

अथ राशिध्रुवाङ्काः ।

दिक् १० काल ६ नख २० बाणे ५ भ ८ इन्दु २ नखाः २० समयो ६ दिशः १० ॥ मनवो १४ राम ३ वेदा ४ श्चमेषाद्यष्टोत्तरंशतम् ॥ १ ॥

१० । ६ । २० । ५ । ८ । २ । २० । ६ । १० । १४ । ३ और ४ ये अंक मेष आदि राशिओं के क्रम से अष्टोत्तर शत ध्रुवांक होते हैं । जैसे मेष राशि के ध्रुवांक १० वृषराशि के ध्रुवांक ६ मिथुन राशि के ध्रुवांक २० कर्क के ५ सिंह के ८ कन्या के २ तुला के २० वृश्चिक के ६ धन के १० मकर के १४ कुंभ के ३ और मीन राशि के ४ ध्रुवांक होतेहैं । ये ध्रुवांक समग्र एकत्र करनेसे १०८ होते हैं

ध्रुवांकानां फलम् ।

जन्मपत्र्यां यत्र स्थाने ग्रहो भवति तत्र तेषां लग्नानां ध्रुवांकाः संमेल्य तदेवायुर्ज्ञेयम् ॥

इति श्री जन्मपत्री पद्धतौ पञ्चाङ्ग फलानयनं नाम प्रथमोऽध्यायः समाप्तः ।
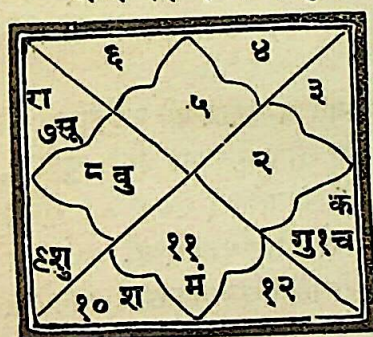
जन्म पत्र में जन्म कुण्डली में जिस स्थान में ग्रह हो तब उन लग्नों के ध्रुवांकों को एकत्र करे तब जो अंक सिद्ध हो उसी संख्यांक वर्ष की उस पुरुष की परायु कहनी । जैसे लग्न सिंह की इस कुंडली में तुला वृश्चिक धन मकर कुंभ और मेष में ही समग्र ग्रह है इनके २० । ६ । १० । १४ । ३ और १० ध्रुवांक हुए इनको एकत्र किया तब ६३ अंक सिद्ध हुआ तब ये सिद्ध हुआ कि इस कुण्डली वाले मनुष्य की इस रीति से वर्ष ६३ आयु सिद्ध हुई इसी प्रकार से और भी समझ लेना ॥ इति लग्नायुः ॥

इति तेजाढ्यान्तमथुरास्थ शास्त्रि परमानंद शर्म्म मिश्रत्रिगुणायकविरचितायाम् 'शंकरमन्दाकिन्याख्यायां' मानसागरीपद्धतिहिंदीभाषाटीकायाम् पंचांगफल कथनं नाम प्रथमोऽध्यायः समाप्तः ।

अथ द्वितीयोऽध्यायः प्रारभ्यते ।

गतकलेरानयनम् ।

[१]स्पष्टैर्ग्रहैर्विना किंचिद् ये गदंति कुबुद्धयः ।
ते दशांतर्दशादीनां फलंयान्त्युपहास्यताम्॥ १ ॥

स्पष्ट ग्रहों के बिना जो कुछ फल कहते हैं वे मनुष्य कुबुद्धि हैं और स्पष्ट ग्रहों के बिना अंतर्दशादिकों का जो कुछ फल कहता है वह उपहास को पाता है।

गतकलेरानयनम् ।

वेदवारिधिखाग्न्यङ्कैः ३०४४ [२]युतेविक्रमवत्सरे ।
भवेदयनवल्ली सा तस्या गतकलिस्तथा ॥ २ ॥

विक्रम संवत्सर के अंक को तीन हजार चौवालीस से युक्त करे तब जो अंक सिद्ध हो उस अंक को अयन वल्ली कहते हैं और इसी को गतकलि कहते हैं।

१—इह प्राचीन पुस्तकेषु पूर्वपाठः 'दशाचान्तर्दशादीनाम्' इति स्थितो दृश्यते ऽस्माभिस्तु 'ये गदन्ति कुबुद्धयः 'ते दशान्तर्दशादीनाम्' एवं परिवर्त्त्य संशोधितः तदन्वयस्तु ये कुबुद्धयः स्पष्टग्रहैर्विना दशान्तर्दशादीनां किंचित् फलं गदन्ति ते (स्पष्ट-ग्रहैर्विना दशान्तर्दशादिफलकथयितारो मन्दमतयो जनाः) उपहास्यतां यान्तीति (यत्तदो र्नित्यमभिसंवन्धात् ' यत्तच्छब्दावुपस्थापितौ ।

२—यह कथन ग्रंथकार का युक्ति युक्त है इस वैवस्वत मन्वन्तर की २७ चतुर्युगी बीत चुकी है २८ वीं चतुर्युगी के सत्ययुग, त्रेता, द्वापर यह तीन युग भी बीत चुके हैं, अब यह वर्तमान कलियुग चौथा है १९९० वैक्रमाब्द की मेषसंक्रान्ति (चै० कृ० ३ गुरु) के दिन इस कलियुग के भी ५०३४ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं अब यह ५०३५ वां वर्ष चल रहा है परन्तु भारतवर्ष में गत कलि लिखने की प्रथा है इसी लिये पञ्चाङ्गकर्ता अपने २ पञ्चाङ्गों में ऐसा लिखते हैं, अब भोग्यकलि ४२६९६६ इतना रहा है कलियुग के ३०४४ वर्ष व्यतीत होने के बाद विक्रमाब्द का प्रारम्भ हुआ है, अब जब गतकलिमान करना हो अर्थात् कलियुग के अब तक कितने वर्ष व्यतीत हो चुके हैं यह जानना हो तो गत-कल्यब्दमान को स्वाभीष्ट विक्रम संवत्सर में जोड़दे तो कलियुग के आदि से लेकर अब तक कलियुग के इतने वर्ष व्यतीत हो चुके हैं यह मालूम पड़ जायगा। उदाहरणादि सब मूल में स्पष्ट कर दिया है।

उदाहरण जैसे विक्रम संवत् वर्षाङ्क १९९० है; इस में ३०४४ मिलाने से ५०३४ अंक सिद्ध हुआ इसी अंक को अयनवल्ली कहते हैं और गतकलि की संख्या भी यही है ॥ २ ॥

अथ पलभा चरदलानयनम्।

मेषादिगे सायन भागसूर्ये ।
दिनार्द्धजा भा पलभा भवेत्सा ॥
त्रि ३ स्था हताः स्युर्दशभि १० र्भुजंगै ८ र्दिग्भि १० ।
श्चरार्द्धानि गुणोद्धृतान्त्या ॥

आगे ग्रन्थकर्ता अयनांश की रीति दिखावेंगे, बस उसी ग्रन्थकर्ता की बताई हुई अयनांश की रीति से अयनांश बनावे फिर उस बनाये हुएअयनांश को स्पष्ट सूर्य में जोड़ देने से सायन सूर्य हो जाता है। वह सायन (अयनांश युक्त) सूर्य जिस दिन मेष राशि में राशि, अंश, कला, विकला, से शून्य होय उस दिन मध्यान्ह काल के समय एकसी भूमिपर बारह अंगुल का शंकु[2] खड़ा करे उसके खड़ा करने पर जो छाया पडे उसको अंगुलों से नाप करना चाहिये बस वह ही पलभा होती है ; उस पलभा को तीन स्थानों पर स्थापन करे, पुनः क्रमसे तीनों जगह १०-८-१० से गुणा करे (अर्थात् पहिले को १० से और दूसरी जगह

---

१ यह पद्य गणेश दैवज्ञका है।

अयनलवदिनैः प्राङ्मेषसंक्रान्तिकालाद् ।
भवति दिवस मध्ये या प्रभात्प्रभा सा ॥ १ ॥
दश १० गज ८ दश १० निघ्नी सात्भान्त्यात्रि ३ भक्ता।
प्रतिगृह चरखंडा न्यायनांशाढ्य भानोः ॥ २ ॥

आयनांशाढ्यभानोः अयनस्येमे आयनाः आयनाश्चतेंऽशास्तैराढ्यःसचाऽसौ भानुश्च तस्य इति सिं० चिं०।

इस वाक्य की परिपुष्टि बृहत्पाराशरसे भी होती है तद्यथा।

मेषे रविरयनांशयुतो भवति यद्दिने ।
शङ्कु च्छाया दिनार्धेतु पलभेत्युच्यते बुधैः॥

स्थानत्रये च सा स्थाप्या गुण्यादिग् १० वसु ८ पालकैः १०।
अंते गुणो ३ द्धृते (भक्ते) सद्भिश्चरखंडः प्रकीर्तितः।

पलभा को ८ से एवं तीसरी जगह पुनः १० से गुणा करे) फिर अन्त के तीसरे गुणनफलमें ३ का भाग देकर लब्धि ग्रहण करे बस यही क्रमशः तीनों चर खंड होते हैं ।

उदाहरण ।

जैसे मथुरा का पलभा ६ अंगुल सुनिश्चित है अब इसको तीन जगह स्थापन किया तो यथा ६, ६, ६ अब प्रथम स्थान पर १० से गुणा किया तो ६० यह प्रथम चर खंड हुआ । पुनः दूसरी जगह ८ से गुणा किया तो ४८ यह दूसरा चरखंड हुआ इसी तरह तृतीय स्थानको १० ले गुणाकिया तो ६० इसमें ३ का भाग दिया तो लब्धि २० यह चरखंड हुआ बस यह ही क्रमसे ६०, ४८, २०; चरखंड होते हैं । यदि जिस जगह सावयव पलभा होतो उस जगह गुणन फलके अग्रिम अवयव में ६० का भाग देना चाहिये ॥

अथ भुजकोटया नयनम् ।

न्यूनंभुजः स्यात्त्र्यधिकेनहीनम् ।
भार्धं च भार्द्धादधिकं वि भार्द्धम् ॥
नवाधिकेनोनित कर्मभं च ।

२-(शंकु) शंकुबारह अंगुल लम्बा और छः अंगुल चौडा होना चाहिये उसी से छाया नापी जाती है उसी से घटी पलादि समय का ज्ञान किया जाता है जैसा कि शंकु का लक्षण नारदजी बतलाते हैं ।

द्वादशांगुल मुत्सेधं परिणाहं षडङ्गुलम् ।
एवं लक्षणसंयुक्तं कल्पयेत् कालसाधने ॥

कश्यपजी भी ऐसा ही कहते हैं—

"अथवा साधयेत्कालं द्वादशांगुलशंकुना" अथवासे यहां यह अर्थ निकलताहै कि ताम्रघटिका के अभाव में अर्थात् ताम्रघटिका से काल साधन करे अथवा ताम्रघटिका नहीं होवे तो शंकु से करना चाहिये, ताम्रघटिका से भी काल साधन ग्रंथान्तरों में दिया है और उस ताम्रघटिका का निर्माण प्रकार भी यत्र तत्र ग्रन्थों में दिया है किंतु विस्तार भय से तल्लक्षण नहीं लिखा जा सक्ता ।

शंकु किन २ वृक्षों के काष्ठों का होना चाहिये इस पर भी नारदजी कहते हैं कि—

" न्यग्रोधखदिरा श्वत्थ रक्त चन्दन वृक्षजम् ।
श्रीखण्डागरुवृक्षस्य मंजुशकुमकल्मषम् ॥

भास्कराचार्यजी ने भी निज निर्मित " करण कुतूहल " ग्रंथमें शंकुसे घटीपलादिका ज्ञान करना कहा है ।

" चरपल युत हीना नाडिकाः पंच चन्द्रा १५ इत्यादि पद्यों से ।

भवेच्च कोटि स्त्रिगृहं भुजोनम् ॥

भुज तथा कोटि जानने के लिये सुगम रीति यह है कि किसी ग्रहका भुज लाना है तो देखिये कि उस ग्रह की राश्यादि तीन राशि से थोडी होय तो वह ही भुज होगा, यदि तीन राशि से ज्यादा होय तो ६ राशि में से घटावे शेष को भुज जानना चाहिये, अथवा ६ राशि से अधिक होय तो उसी में ६ राशि घटा देने से शेष भुज होगा, इसी तरह नौ राशि से यदि ग्रहकी राश्यादि अधिक होंय तो १२ में से घटाने से शेष भुज होगा, ऐसा समझना चाहिये अब इसी तरह भुजको तीन राशि में घटाने से शेष की कोटि संज्ञा होती है।

उदाहरण।

जैसे सूर्य मंदकेंद्र १-२-४-२५ राश्यादि हैं तो इसके तीन राशि से कम होने के कारण यह ही भुज हुआ। अब इसको तीन राशि में से घटाया यथा-३-०-०-०।१-२-४ २५-शेष १-२७-५५-३५ यह ही कोटि हुई।

अथायनांशकथनम्।

अथ शराब्धियुगै ४४५ रहितःशको।
व्यपहृतः खरसै ६० रयनांशकाः ॥
मधुसितादिकमासगतं प्रति।
शरपलैः ५ सहितं कुरु सर्वदा ॥

वर्तमान शालिवाहन शक में ४४५ घटाना चाहिये फिर घटाने पर जो शेष रहे उसमें ६० का भाग दे जो लब्धि आवें उनको अंश माने और ६० का भाग देने पर जो शेष रहे उसको कला माने इस तरह अयनांश के अंश कला होते हैं। और तात्कालिक अयनांश करने के लिये चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से लेकर जितने मास व्यतीत हुये हों उनकी गणना करे अब इस गणना की संख्या को ५ से गुणित करे फिर इस पंच गुणित फलको अयनांश में युक्त कर देय तो तात्कालिक अयनांश होगा।

१ टि०-यह अयनांश ग्रहलाघवीय है अतः सिद्धान्तवेत्ता भी प्रायः इसीको ग्रहण करते हैं। किन्तु एतद्देशीय पण्डित गण निम्न लिखित श्लोक के अनुसार अयनांश निकालते हैं।

यथा—भूनेत्रवेदोनशक स्त्रिनिघ्नो व्योमाभ्रनेत्रै र्विहृतोऽयनांशाः।

उदाहरण ।

जैसे वर्तमान शक १८५५ के मार्गशीर्ष कृष्णा ३० शुक्रवार का अयनांश निकालना है तो शक १८५५ में से ४४५ को घटाया तो १४१० शेष रहा अब इसके ऊपर ६० का भाग देने के लिये न्यास लिखते हैं ।

१८५५
४४५
शेष १४१०

इसी शेष में ६० का भाग दिया यथा-

६०)१४१०(२३ लब्धि अंश
१२०
२१०
१८०
३० शेष कला अर्थात् अयनांश २३-३० अब तात्कालिक अयनांश लाने के लिये चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से मार्गशीर्ष कृष्णा ३० तक गिना तो पूर्व गतमास पूरे ८ हुए इनको ५ से गुणा किया तो ८×५=४० यह विकला हुई इनको अयनांश में युक्त किया तो २३-३०-४० यह तात्कालिक अयनांश हुआ। प्रसंगवश उदाहरण दिखाने के लिये किसी का जन्म समय यहां लिखते हैं।

स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम् ।
वासरमणिरिव तमसां राशिं नाशयतु विघ्नानाम् ॥

विघ्नोऽर्कराशिः स्वदलेन युक्ता तावन्मिता स्याद्विकलाभिराढ्या ॥

इष्ट शाके में ४२१ घटावे फिर घटाने पर जो शेष रहे उस अंक को ३० से गुणा कर २०० का भाग देना चाहिये पुनः जो भाग देने पर लब्धांक आवे उसको अंश कहते हैं अब जो शेष बचा है उसको ६० से गुणाकर २०० का भाग देकर जो लब्धि मिले उसको कला कहते हैं। पुनः शेष को ६० से गुणाकर २०० का भाग देकर लब्धि लेनी चाहिये इस लब्धि को विकला कहते हैं, यह अयनांश हुआ, यदि तात्कालिक अयनांश लाना हो तो उसी महीना की सूर्यराशि को तिगुना करके उसका आधा जोड़कर विकला जानना और अयनांश विकलात्मक में युक्त करदे तो तात्कालिक अयनांश होते हैं।

२ टि०-अयनांश निकालने की पूर्वोक्ति क्रिया ही मुख्य है किन्तु इस मानसागरी पद्धति में कहीं २ अपनी नवीन संस्कृति रक्खी है और ग्रह लाघव तथा हायन रत्नादि ग्रन्थ में अयनांश निकालने की रीति निम्न लिखित है।

यथा-"वेदाब्ध्यब्ध्यून ४४४ खरस ६० हृतः शकोयनांशः

अर्थात् वर्तमान शक में ४४४ घटाने चाहिये शेष क्रिया पूर्ववत ही है और बृहत्पाराशरी तथा नीलकण्ठ दैवज्ञ का भी ४४४ घटाने का मत है।

ब्रह्मा करोतु दीर्घायुर्विष्णुः करोतु सम्पदः ।
हरो हरतु पापानि यस्यैषा जन्मपत्रिका ॥
आदित्यादिग्रहाः सर्वे सनक्षत्राः सराशयः ।
दीर्घमायुः प्रयच्छन्तु यस्यैषा जन्मपत्रिका ॥

श्री शुभ सम्वत् विक्रमीय १९९० तत्र श्रीमच्छालिवाहन भूभर्तुः शके १८५५ तत्र दक्षिणायने भास्करे महामांगल्यप्रदे मासे मार्गशीर्ष मासे शुभे कृष्णपक्षे शुभपुण्यतिथौ ३० भृगुवासरे घट्यादि ३८-४९ विशाखानक्षत्रे घ० ४१-३९ शोभनयोगे चरकरणे घट्यादि ११-१४ तत्र दिन प्रमाणं २६-४२ भयातम् १५-९ भभोगं ५६-४८ एवंविधे शुभे पञ्चाङ्गोदये श्रीसूर्योदयादिष्टं घ ०-० सच द्विजदेवप्रसादाद्दीर्घायुः भवतु-शुभमस्तु ॥

तात्कालिकग्रहाःस्पष्टाः ।

ग्र०	सूर्य	भौ०	बुध	गुरु	शुक्र	श०	राहु	के०
रा०	७	८	६	५	८	२	१०	४
अं०	१	३	२६	२२	१९	१३	०	०
क०	८	२८	५	१२	१४	१७	२४	२४
वि	४३	४८	५१	२७	२८	२३	५२	५२
ग०	६०	४४	३०	११	६३	१	३	३
वि०	४२	४४	२०	२८	३१	५७	११	११
मा० व०	मा०	मा०	व०	मा०	मा०	मा०	व०	व०

अथ दिनमानमिश्रमानानयनम् ।

स्पष्टार्कायनभागयुक्तभुजवद् भुक्तर्क्षतस्तच्चरम् ।
धृत्वा भोग्यचरघ्नवाहुलब्धतः खाग्न्यु३० द्धृतैस्तैर्युतः ॥
मेषात्खं शरवारिधी ४५ ऋणमथो कुर्यात्तुलादौ स्फुटम् ।
तन्मिश्रं द्विगुणं द्युमानमुदितं रात्रेस्तु षष्ट्य ६० न्तरम् ॥

स्पष्ट सूर्य में अयनांश जोडे तत्पश्चात् सायनसूर्य की भुज लाने की रीति से भुज लावे वह भुज अगर राशि शून्य होय तो राशि को छोडकर केवल अंशादि मात्र को स्वदेशीय प्रथम चरखण्ड से गुणा करे और यदि भुज में एक राशि होय तो राशि को छोडकर अंशादि को द्वितीय चरखण्ड से गुणा करे, और यदि भुज

में दो राशि होंय तो राशि को छोडकर केवल अंशादिमात्र को तृतीय चरखण्ड से गुणा करे अब जो गुणनफल होय उसमें ३० का भाग देय जो लब्धांक होय उसमें जिस चरखण्ड से गुणा किया होय उससे पहिला चरखण्ड जोड देय तब वह चर संज्ञक होता है। यदि सायनसूर्य मेषादि ६ राशि के भीतर होय तो ४५ घटी में चर के घटीपलादि जोड देय, और तुलादि ६ राशि के भीतर होय तो घटाने से स्पष्ट मिश्रमान के घटीपलादि होते हैं। मिश्रमान में से ३० घटावे शेष को दूना करे अथवा मिश्रमान को दूना करके ६० को हीन करदेय तो दिनमान होता है। इसी तरह ६० में से मिश्रमान घटावे अथवा मिश्रमान में दिनमान घटावे शेष को दूना करे तो रात्रिमान होता है।

उदाहरण।

जैसे शक १८५५ मार्गशीर्ष कृष्णा ३० शुक्रवार को सूर्य स्पष्ट ७-१८-३२ है इसमें अयनांश २३-३० जोडने पर ७-२४-३८-४३ यह सायन सूर्य हुआ,, अब स्पष्ट सूर्यकी राशि ६ से अधिक है अतः इसमें से ६ राशि घटाई तो शेष १-२४-३८-४३ यह ही भुज हुआ। पुनः इसके अंशादि को दूसरे चर खंडमे गुणा किया तो गुणनफल ४८-११५२ १८२४-२०६४ यह घट्यादि हुआ इसमें ३० का भाग दिया तो लब्धि ३८-६१-६९ इनमें पूर्व चर खंडों का योग ६०+३८ तो ९८ इसमें ६० से भाग दिया तो लब्धि १ शेष ३८ अवलब्धि और शेषको ४५ में से घटानेसे शेषको ४३-२२ यह मिश्रमान हुआ। अत्र मिश्र-मानमें ३० घटाया तो शेष १३ इसको दूना किया तो २६-२२ यह दिनमान हुआ इसको ६० में से घटाने से ३३-३८ यह रात्रिमान हुआ॥

अपररीत्या दिन मानानयनम्।

अयनादिकवासररामहता गगनानलवाणशशांकयुताः।
परिभाजितशून्यरसैर्घटिका मकरादिदिनं कर्कादिनिशा॥

जिस दिन तथा जिस महीने में मकर तथा कर्क का अयन प्रवेश हो (अर्थात् संक्रांति प्रविष्ट भई हो) उस दिनसे वर्तमान दिन तक गिनना चाहिये अर्थात् मकर से मिथुन तक हो तो मकर से गिने अथवा कर्क से ६ राशि धन तक हो तो कर्क से गणना करे फिर जितनी गतमासों की संख्या हो उसको ३० से गुणा कर दिन बनावे फिर इन्हीं दिनों को ३ से गुणा करे, फिर वर्त्तमान मास के वर्त्तमान दिन तक जितने दिन हों उनको जोड देय पुनः १५३० और युक्त करे फिर ६० का भाग दे तो लब्धांक घडीपलादि दिनमान अथवा रात्रिमान होगा (अर्थात् मकरादि में दिनमान और कर्कादि में रात्रिमान होगा) और ६० में दिनमान या रात्रिमान

हीन करे तो क्रम से शेष रात्रिमान तथा दिनमान होता है अर्थात् ६० में दिनमान को हीन करने से रात्रिमान और रात्रिमान को हीन करने से दिनमान होगा।

उदाहरण।

जैसे कर्क की संक्रान्ति श्रावण कृष्णा ६ रविवार की है और दिनमान मार्गशीर्ष कृष्णा ३० शुक्रवार का निकालना है तो गत मास ४ हुए इनको ३० से गुणा किया तो १२० यह दिन हुए इनको पुनः ३ से गुणा किया तो ३६० हुए अब इसमें वर्तमान दिन ६ और युक्त किये (क्योंकि श्रा० कृ० ६ रविवार से मार्गशीर्ष कृ० ६ तक ही ४ मास होते हैं और दिनमान मार्ग० कृ० ३० का निकालना है अतः ६ मी से उपरांत ६ दिन ही शेष रहते हैं) तो ३६६ अब इनमें १५३० और जोडे तो १८९६ यह हुए इनमें ६० का भाग दिया तो लब्धि ३१-और शेष ३६-यह रात्रिमान हुआ इसको ६० में से हीन किया तो २८-२४ यह दिनमान हुआ इसमें रात्र्यर्ध १५-४८ को जोडा तो ४४-१२ हुआ यह मिश्र-मान हुआ। यह उपाय स्थूल है और इस देश के लिये उपयोगी भी नहीं है अतः पहिले ही प्रकार से साधन करना अच्छा होगा।

अथ तात्कालिक ग्रह साधनम्।

मिश्रेष्टांतरगुणितायुक्तैर्दिवसेनिशादलेप्रथमे।
रात्र्यर्धभीष्टां तरहतापरेत्वष्टमिश्रयोगेन ॥ ९ ॥

मिश्रमानमें से इष्ट काले घटाओ शेष कालको ऋणचालक समझो यदि मिश्रमान में से इष्टकाल न घटे तब शेष धन चालक जानों इस चालकको स्पष्ट ग्रहों की गति से गुणाकरो पीछे अंतिम में ६० का भाग देकर दूसरे फलमें पूर्व की लब्धि जोडो फिर उस कोष्टमें की ऊपर वाली संख्या दूसरे कोष्टमें के नीचे की संख्या में जोडो उत्तरोत्तर ६० का भाग देते जाओ इसको गोमूत्रिका गुणन कहते हैं। और जो शेष बचते जांय उन्हें क्रम से प्रतिविकला कला समझो।

अथ तात्कालिक ग्रहानयनम्।

गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निघ्नी खषड्हता।
लब्धमंशादिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टो भवेद्ग्रहः ॥

१—ग्रन्थस्थास्य संग्रहात्मकत्वेतु नास्ति केषामपि कापि विप्रतिपत्तिः परं तथापि ईदृशान्यपि बहुशःपद्यान्यत्रोपलभ्यन्ते यानि ग्रन्थकारविनिर्मितान्येवातोऽवगम्यते तदिदमप्येत न्निर्मितमेव, दृश्यते चापि प्राचीनमुद्रितपुस्तकेषूदङ्कितम् ततोऽर्वाचीनैष्टीकाकर्तृभिर्मूलान्निस्सारित मासी दस्माभिस्तु प्रस्तुतविषय प्रबोधनोपयोगित्वाद् ग्रन्थकार विनिर्मितपद्यगोपनस्यानौचित्याच्चमूले एव सार्थोदाहरणं सम्प्रदर्शितम्। "गतैष्यदिवसाद्येन" इत्यादि श्लोकस्तु नीलकण्ठीस्थः परिज्ञेयः।

अब पूर्वोक्त चालक[१] को गोमूत्रिका क्रम में रखकर जोनसा ग्रह स्पष्ट करना हो उसकी गति को तीन स्थान (अर्थात् जैसा कि नीचे उदाहरण में है) पर गोमूत्रिकां में गुणकर ६० का भाग देकर तीन अंक करे (वार, घटी, पल) यदि इनमें कोई अंक ६० से ज्यादा होवे तो ६० का भाग देकर ऊपर की तरफ लेना चाहिये यही तीन अंक अंश, कला, विकला होते हैं, यद्यपि गति गुणने पर दोही अंक निकलते हैं किन्तु प्रथमांक में ६० का भाग देकर ३ अंक कर लेते हैं; यदि प्रथमांक में ६० का भाग नहीं लग सके तो शून्य ही रखलेना चाहिये। अब इसको पंचाग स्थित ग्रह में हीन या युक्त करे अर्थात् चालक ऋण संज्ञक होय तो घटावे और धन संज्ञक में युक्त करे तो वह तात्कालिक ग्रह स्पष्ट होता है।

उदाहरण।

जैसे किसी का जन्म समय मार्गशीर्ष कृष्ण ३० शुक्रवार को मध्याह्न के १२ बजे का है तो इष्ट घट्यादि १३-२३ है अब इसके पूर्व चतुर्दशी गुरुवार में मिश्रमान १५-१५ कालिक ग्रह पंचाङ्ग में बने हुये हैं कि जिसे प्रस्तार तथा पंक्ति भी कहते हैं अब उसीसे इष्ट दिन में चालन देकर ग्रहोंका आनयन अपेक्षित है। मानों कि सूर्य पँक्ति में ७-०-४६-११ हैं और उसकी गति ६०-४२ है अब इष्ट के वारादि ६ १३-२३ से पँक्ति के वारादि ५-१५-१५ हैं अतः इष्ट से पँक्ति पहिली है अब इन दोनों का अन्तर ६-१३ २३ में से ५-१५-१५ को घटाया तो यहां यदि वियोज्य से वियोजक अल्प हो तो वारों में

१—यद्यपि चालनांकवनाने की रीति मानसागरी में दी है तथापि खुलासा जानने के लिये ग्रन्थान्तर से चालनांक बनाने की रीति लिखते हैं।

प्रस्तारस्तु यदाग्रे स्यादिष्टं संशोधयेद्दणम्।
इष्टकालं यदाग्रे स्यात्प्रस्तारं शोधयेद्धनम्॥
अथवा—स्वेष्टादग्रे भवेत्पंक्तिः पंक्तौ स्वेष्टं विशोधयेत्।
स्वेष्टात्पृष्ठे भवेत्पंक्तिः स्वेष्टे पंक्ति विशोधयेत्॥
ऋणं धनं तथाज्ञेयं चालने विधि रेवहि॥

पञ्चाङ्ग में जो आठ २ दिनके सूर्यादि ग्रहस्पष्ट किये होते हैं उसको प्रस्तार तथा पंक्ति कहते हैं-यदि वह प्रस्तार इष्ट काल से आगे होवे तो प्रस्तार के वार घटी पल में से इष्टकाल के वार घटी पल घटाने चाहिये, जो शेष रहे वही वारादि ऋण चालन होगा तथा जो इष्टकाल आगे होवे और प्रस्तार पीछे होवे तो इष्टकाल के वार घटी पल में प्रस्तार का वार घटी पल घटाने चाहिये, जो शेष अंक आवे वही वारादि धन चालन होगा। इस प्रकार ऋण धन चालन का प्रकार जानना. इसका प्रयोजन ऊपर मूलमें दिया है।

* इति नीलकण्ठ दैवज्ञः *

७ और जोड देने चाहिये, किन्तु इस जगह तो घट जाता है अतः इनमें जोडने की कोई आवश्यकता नहीं हैं। शेष ०-५८-८ यह गत दिवसादि हुये और यह चालन धन संज्ञा वाला हुआ क्योंकि, पँक्ति स्वेष्टाद्धवेदग्रे पँक्त्यामिष्टं विशोधयेत् । तच्चालन मृणं ज्ञेयं धनं ज्ञेयं तदन्यथा ” ॥ इसके अनुसार चालक धनही सावित होता है । अब इसको सूर्य की गति ६०-४३ से गुणने के लिये गोमूत्रिका क्रम दिखाते हैं।

गोमूत्रिका ।

गत दिवसादि के वार	घटी	पल	धन चालक
० ×	५८ ×	८ ×	गुणकाः
६०	६०	६०	
४३	४३	४३	गुण्याः
०	३४८०	४८०	गुणनफलानि
०	२४८४	३५४	

६० का भाग देने के लिये न्यास।

६०)३५४(५
३००
५४ शेष का त्याग
२४८४
४८० इनका योग
५
६०)२९६९(४९
२४०
५६९
५४०
२९ शेष का त्याग
३४८०
४९
६०)३५२९(५८ लब्धि
३००

पिछले पेज का शेष

५२९

४८०

४९ शेष

अब लब्धि तथा शेष ५८-४९ इसमें ६० का भाग नहीं जा सकता अतः इसके आगे शून्य स्थापित किया तो ०-५८-४९ अब इस जगह चालक धनहै इस लिये पंक्तिस्थ सूर्य की राश्यादि में जोडा तो सूर्य ७-०-४६-११ में ०-५८-४९ युक्त किया योग फल ७-१-४५-० बस यह ही तात्कालिक स्पष्ट सूर्य हुआ। इसी क्रमसे भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु आदि ग्रहों तात्कालिक करना चाहिये किन्तु यहां वक्रगति वाला ग्रह और राहु केतु इन सब ग्रहों का चालन मार्गी ग्रहों से बिपरीत जानना अर्थात् धन चालन में ऋण चालन और ऋण चालन में धन चालन करना चाहिये।

तात्कालिक सूर्योदयः स्पष्टाः समजवाः—

ग्र०	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	रा०	के०
०	७	६	८	६	५	८	९	१	४
अं०	१	२६	३	२५	२२	१९	१३	०	०
क०	४२	४१	५०	५०	१९	४६	४९	२३	२३
वि०	२०	५२	८	४२	५२	८	६	१७	१७
गति	६०	१४५	४४	३०	११	६३	१	३	३
०	४२	४	४४	२०	२८	३१	५७	११	११
मान्यं	मा०	मा०	मा०	वा०	मा०	मा०	मा०	व०	व०

गोचरग्रहा।

मं ९शु
बु ७ चं
१०
श
८
सू.
गु.६
रा.११
के. ५
१२
४
२
१
३

अथ चन्द्र स्पष्टी करणम् ।

खषड्घ्नं भयातं भभोगोद्धृतं तत् ।
खतर्कघ्नधिष्ण्येषु युक्तं द्विनिघ्नम् ॥
नवाप्तं शशी भागपूर्वस्तु भुक्तिः ।
खखाभ्राष्टवेदा भभोगेन भक्ताः ॥

भयात (गतर्क्ष) की घटीनको ६० से गुणाकर पल जोडे पुनः ६०से गुणा करके एकत्र स्थापन करो, इसको भाज्य कहते हैं । पुनः भभोग की घटीन ,को ६० से गुणा करके पल जोडे इसी सिद्ध अंक को भाजक कहते हैं भाजक का भाज्य में

टि०—१—गतर्क्षं षष्टिगुणितं भभोगेन च भाजितम् ।
दस्रादिषष्टिगुणितैर्लब्धं तत्र सुयोजयेत् ।
तच्चापि द्विगुणं कृत्वा ह्यंकेन विभजेत्पुनः ॥
मृगांकलब्ध मंशादीन्सुस्पष्टयद्विजोत्तम ।
खखशून्याष्टवेदांकागति र्भभोगभाजिताः ॥
एवं चन्द्रस्य विज्ञेया रीतिः स्पष्टतरा बुधैः ॥
इति बृहत्पाराशरे
गतर्क्ष तथा सर्वर्क्ष ज्ञानम्

२—गतर्क्षनाड्यःखरसेषु शुद्धा सूर्योदयादिष्टघटीषु युक्ता ।
भयातसंज्ञा भवतीह तस्य निजर्क्षनाड्या सहितो भभोगः ॥
चेत्स्वेष्टकालात्प्रागेव ऋक्षं यदि समाप्यते ।
तदेष्टकालतो ऋक्षनाड्याः शोध्या गतर्क्षकम् ॥
भभोगा पूर्ववत्कार्या ततः साध्यस्तु चन्द्रमाः ।

गत नक्षत्र की घडियों को ६० में घटा देवे जो घड़ी पल शेष रहें उनको सूर्योदय से इष्ट घटियों में जोड देवे, जोडने से उसकी भयात संज्ञा होती है । और अपने नक्षत्र की घडियों को ६० से घटाई हुई नाड़ियों से जोड़ देने से भभोग होता है । जो इष्टकाल से पहिले ही नक्षत्र समाप्त हो जावे तो इष्टकाल घड़ियों में नक्षत्र घटीपल घटा देने से भयात होता है अर्थात् (गतर्क्ष) होता है । और गत नक्षत्रकी नाड़ियों को ६० में घटाकर उसी में पर दिन वाले नक्षत्रकी नाड़ियों के जोड़ देने से भभोग (सर्वर्क्ष होजाता है) इसी प्रकार भयात तथा भभोग बनाकर तत्काल चन्द्रमा का साधन करना चाहिये । यह सर्वर्क्ष तथा गतर्क्ष, मानसागरी पद्धति के मूल में नहीं है अतः आवश्यकता के लिये टिप्पणी में दिया है ।

भाग देकर लब्धि को एक-स्थान पर रक्खो पुनः शेषको ६० से गुणा कर भाजक का भाग देकर द्वितीय अंक लेलो पुनः शेषको ६० से गुणा करके भाजक का भाग देकर तृतीय अंक लेलो बस इन तीनों अंकों को बराबर २ रखकर देखो कि अश्विनी नक्षत्र से इष्ट तक कितने नक्षत्र गत हुए हैं उनकी संख्या को ६० से गुणा करके प्रथम अंक में युक्त करो इस गणना में वर्तमान नक्षत्र नहीं लेना पुनः तीनों अंक को दूना करो यदि तीसरा अङ्क ६० से ज्यादा हो तो ६० का भाग देकर द्वितीय में लेना, इसी प्रकार द्वितीय में ६० का भाग देकर प्रथम में लेना चाहिये, इसी प्रकार प्रथम अंक में ९ का भाग देकर जो लब्धि मिले उसे एकत्र रक्खो शेषको ६० से गुणाकर दूसरा अंक जोडकर ९ के भागसे दूसरा अंक लेना एवं शेष का ६० से गुणा करके तृतीय अङ्क जोड़ कर ९ का भाग देकर तीसरा अंक लेना चाहिये। यहीही स्पष्ट चन्द्र के क्रम से अंश कला विकला होते हैं अब अंशों में ३० का भाग देकर राशि करनी चाहिये।

उदाहरण।

जैसे मार्ग शीर्ष कृष्णा ३० को चन्द्र स्पष्ट करनाहै तो भयात विपलात्मक १०२७२० और भभोग पलात्मक ३४०८ है भयात में भभोग का भाग दिया।

इसका न्यास।

भाजक भाज्य लब्धि

३४०८)१०२७२०(३०

१०२२४

इसमें ४८०×६० से गुणा

३४०८)२८८००(८

२७२६४

१५३६×६०

३४०८)९२१६०(२७

६८१६

२४०००

२३८५६

१४४

अब यहां क्रमसे यह लब्धिआर्यौ—३०-८-२७

अब अश्विनी से गतनक्षत्र स्वाति तक १५ हुये इनको ६० से गुणा तो ९०० यह अब इनको प्रथमांक में युक्त किया तो ९३० हुए अब क्रमसे तीनों अंकों को दूना किया तो १८६०-१६-५४ प्रथमांक में ९ का भाग दिया इसका न्यास—

न्यास—

९)१८६०(२०६ अंश
१८
———
६०
५४
———
६
६० × से गुणा
———
३६०
१६ युक्त
———
९)३७६(४१ कला
३६
———
१६
९
———
७ × ६०
———
४२०
५४
———
९)४७४(५२ बिकला
४५
———
२४
१८
———
६

यह क्रमसे २०६ अंश ४१ कला ५२ बिकला हुए अंशों में ३० का भाग दिया तो लब्धि ६ यहराशि और शेष२६अंशहुए अब गति निकालनेकी सुगमरीति-यथा२८८०००० में उसी पूर्वोक्त भाजक का भाग दिया तो लब्धि ८४५ शेष २४० यह स्पष्टचन्द्र की गति हुई। अब शेष २४० में ६० से गुणा किया तो लब्धि ४ यह विगति हुई।

इसके करने का न्यास ।

भाजक　भाज्य　लब्धि

```
३४०८)२८८०००० (८४५
     २७२६४
     -------
      १५३६०
      १३६३२
      -------
       १७२८०
       १७०४०
       -------
         २४०
          ६० ×
       -------
३४०८)१४४०० (४
     १३६३२
     -------
       ७६८
```

अब स्पष्ट चन्द्रमा के राश्यादि ६-२६-४१-५२-८४५-४ यह क्रमसे राश्यादि हैं ॥

श्रीपतिकृतपद्धत्यनुसारेण भावचक्रानयनम् ।

नत्वा तां गुरुदेवतां त्रिसमयज्ञानोद्गतेः कारणम्
तत्पादाम्बुरुहप्रकाशनिकसद्बोधो बुधः श्रीपतिः ।
शिष्यप्रार्थनया विचार्य सकलान् होरागमार्थान् मुहु-
र्वक्ष्ये जातककर्म्मपद्धतिमहं होराविदां प्रीयते ॥ १ ॥

तीनों समय (भूतभ विष्यद्वर्तमान) की उत्पत्ति के कारण ऐसे श्री गुरुदेव को प्रणाम करके गुरुदेव के चरण कमलों के प्रकाश से प्राप्त हुए बोधवाला मैं विद्वान् श्रीपति शिष्यों की प्रार्थना से बार २ समग्र होरा शास्त्रों के अर्थों का विचार कर होरावेत्ताओं की प्रसन्नता के लिये जातक कर्म पद्धति को कहता हूं ॥ १ ॥

ज्ञेयोऽत्र प्रथमं हि जन्मसमयः कार्यादियन्त्रैः स्फुटम्
तत्कालप्रभवा विलग्नसहिताः कार्यास्ततश्च ग्रहाः ।

सिद्धान्तोक्तपरिस्फुटोपकरणैः स्वैर्वासक्तकर्मणा
भावाः खेटदृशो बलानि च ततस्तेषां विचिन्त्यानि षट् ॥२॥

पहिले शंकुयन्त्र, आतपयन्त्र आदि किसी यन्त्र द्वारा जन्म समय का ठीक २ ज्ञान करके फिर सिद्धान्त या सूक्ष्म करण के अनुसार लग्नादि द्वादश भाव, स्पष्टग्रह तथा ग्रहदृष्टि बल, स्थानबल, उच्चबल, आदि षड्वर्गों को स्पष्टतया जान कर फलाफल विचार के लिये उद्यत होना चाहिये ॥ २ ॥

वदंति भावैक्यदलं हि संधिस्तत्र स्थितःस्यादबलो ग्रहेंद्रः ।
ऊने तु संधेर्गतभावजातमागामिजं चाप्यधिके करोति ॥ ३ ॥

दोनों भावों का योगार्द्ध संधि कहाता है इस संधि में पड़ा हुआ ग्रह निर्बल तथा बलहीन होता है संधि से ग्रह हीन हो तो पूर्व भाव का फल एवं अधिक होने से आगामि भावका फल करता है ॥ ३ ॥

भावांशतुल्यं खलु वर्तमानो भावो हि संपूर्णफलं बिधत्ते ।
भावोनके चाप्यधिके च खेटे त्रिराशिकेनात्र फलं प्रकल्प्यम् ॥

भावेश तुल्य वर्तमान भावही अपना पूर्ण फल देता है भाव से ऊन अथवा अधिक ग्रहके होनेसे फलकी न्यूनाधिकता होती है (वह अगाड़ी कहेगे) त्रैराशिक (अनुपात) से जानना चाहिये ॥ ४ ॥

भावप्रवृत्ता हि फलप्रवृत्तिः पूर्णं फलं भावसमांशकेषु ।
ह्रासःक्रमाद्भावविरामकाले फलस्य नाशःकथितो मुनींद्रैः॥५॥

ग्रहों के भावकी प्रवृत्ति से ही फल की निष्पत्ति होती है और भाव के समान होने से सम्पूर्ण फल होता है; भावके विराम (अन्त्य) में होनेसे फल की क्रमशः क्षीणता होती जाती है संधिमें फलका नाश होता है ऐसा ऋषियों ने कहा है ॥५॥

जन्मप्रयाणे ब्रतवंधचौलनृपाभिषेकादिकरग्रहेषु ।
एवं हि भावाःपरिकल्पनीयास्तैरेव योगोत्थफलानि यस्मात् ॥

एवं जन्म समय में यात्रा; ब्रतबन्ध (यज्ञोपवीत) चौल (मुंडन) राज्याभिषेक और विवाहादिकों में भी इसी प्रकार१२भावों को कल्पना करै (साधै) क्यों कि उसी परसे ग्रहका योग फलादि होता है ॥ ६ ॥ इति भावचक्राध्यायः समाप्तः ॥

भावसाधनार्थं स्वदेशोदय तथा लंकोदय ज्ञानम् ।

लंकोदया नागतुरंगदस्रा गोंकाऽश्विनो रामरदा विनाङ्यः ।
क्रमोत्क्रमस्थैश्चरखण्डकैःस्वैः क्रमोत्क्रमस्थाश्च विहीनयुक्ताः ॥

लंका में मेष राशि का उदय २७८ वृष राशिका २९९ पल मिथुन का ३२३ कर्क का ३२३ सिंहका २९९ कन्या का २७८ पल उदय रहता है और लंका में तुला राशि से मीन राशि तक उदय के पल और कन्या राशिसे उलटा मेष राशि तक लिखा है सो जानना । जिस देशका उदय लाना हो उस देशका चरखंड लेकर क्रम से मेष वृष मिथुन के उदय पलों में कम करना और वही चरखखड उलटा कर्क, सिंह, कन्या के पलात्मक उदय में क्रमसे युक्त करना तो स्वदेश का पलात्मक उदय मेष से कन्या तक होता है और वही उदय उलटा तुलासे मीन तक होता है ।

उदाहरण—

जैसे लंका में मेष वृष मिथुन इनके क्रम से उदयमान है यथा २७८-२९९-३२३ इसमें अलग २ मथुरा का चरखंड ६०-४८-२० घटाया तो २१८ मेष २५१ वृष ३०३ मिथुन का उदयमान हुआ तथा कर्कादि के लिये विलोम रीति चरखंड २०-४८-६० सहित किया तब ३४३-३४७-३३८ यह क्रम से कर्क, सिंह, कन्या का हुआ और यही उत्क्रम से तुलादि का उदयमान होता है स्पष्टता के लिये सबों का उदयमान पृथक् २ दिखलाते हैं ।

लंकोदय			स्वदेशोदय		
मेष	२७८	मीन	मेष	२१८	मीन
वृष	२९९	कुम्भ	वृष	२५१	कुम्भ
मिथुन	३२३	मकर	मिथुन	३०३	मकर
कर्क	३२३	धन	कर्क	३४३	धन
सिंह	२९९	वृश्चिक	सिंह	३४७	वृश्चिक
कन्या	२७८	तुला	कन्या	३३८	तुला

१—वसुसागरनेत्राणि पलानि लंकोदयं मेषराशौ ।
अंकोंकनेत्रे वृषभे मिथुनेऽग्नियुग्माग्निसंख्यातम् ॥
विपर्ययमग्रिमत्रितये षड्लग्नेष्वेवमेवनिर्दिष्टम् ।
हीनं खंडत्रितयं युक्तं स्वदेश लग्नाख्यम् ॥

इति ग्रन्थान्तरम्

स्वदेशोदय ज्ञानार्थं पद्यमेकम् ।

अष्टेन्दुपक्षाः (२१८) शशिबाणपक्षा (२५१)
गुणाभ्ररामा (३०३) गुणवेदरामा (३४३)
शैलाब्धिरामा (३४७) वसुरामरामाः (३३८)
क्रमोत्क्रमान्मेषतुलादिमानम् ॥

अथ लग्न साधनम् ।

तात्कालार्कः सायनः स्वोदयघ्ना भोग्यांशाःखत्र्युद्धृता भोग्यकालः।
एवं यातांशै र्भवेद्यातकालो भोग्यः शोध्योऽभीष्टनाडीपलेभ्यः॥
तदनुजहीहि गृहोदयांश्च शेषं गगनगुणघ्नमशुद्धहृल्लवाद्यम् ।
सहितमजादिगृहैरशुद्धपूर्वै र्भवति विलग्नमदोऽयनांशहीनम् ॥

प्रथम इष्टकाल पर सूर्य स्पष्ट करो पुनः स्पष्ट सूर्य में अयनांश युक्त करो फिर राशिका त्याग करो । जो शेष अंशादि हैं उन्हें ३० में हीन करो फिर जो अंशादि होवें उन्हें सूर्य की लग्न अर्थात् जिस राशिका प्रथम त्याग कर दिया है उसका जो स्वदेशीय पलों का प्रमाण है उनसे तीसमें घटाये हुए अंशादि की तीनों

२—यस्मिन्काले लग्नं साध्यं च यदा तदा भवेद्द्विजैः ।
तात्कालिक सूर्यो वै युक्तः कार्योऽथ सायनंशेन ॥
तद्राशेर्यस्स्वदेश्य उदयस्तेनाथ भोग्यांशाः ।
निघ्नाश्च भागा स्त्रिंशच्च्युता स्तथा भुक्त भागाश्च गुण्याः ॥
भागाःखाग्न्युद्धृतस्ते च ह्यभ्राग्निभाजिता यदि ।
भोग्यकालोऽय द्युमणेर्विज्ञे श्च द्विजोत्तमः ॥
इति सायनयातांशै र्भुक्तकालो विधीयते ।
इष्टघटचाःपले शोध्यो भोग्यकाल इतिस्थितः ॥
हातः परराश्युदयकालास्तावंतः शुध्यन्ति यावन्तः ।
यच्छेषं खगुणघ्नं तद्धृतमशुद्धोदयेनाथ ॥
यल्लब्धं च लवाद्यं चायनांश हीनैर्लग्नं स्यात् ।
जानीहि द्विजसत्तम नतोन्नत प्रकारमेवैतत् ॥
इति बृहत्पाराशरे

स्थानों पर गुणा करो यदि तृतीय अंक ६० से ज्यादा हो तो ६० का भोग देकर द्वितीय अंकमें लेलो यदि दूसरा अंक ६० से ज्यादा हो तो ६० का भाग देकर प्रथम अंक में लेलो पुनः प्रथम अंक में ३० का भाग देकर लब्धि को १ स्थान पर रखना चाहिये, शेषको ६० से गुणा करके दूसरा अंक जोडदो पुनः ३० का भाग देकर लब्धि को द्वितीय स्थान पर रक्खो, पुनः इसी तरह तृतीय अंक निकालो। इन्हीं तीनों अंकों को भोग्य काल कहते हैं। अब इष्टकाल के पल करके इनमें प्रथम आये भोग्य काल के पलों को हीन करो; शेष में सायन सूर्य की राशि छोड कर जितनी लग्नों के प्रमाण हीन होसकें हीनकरो जितनी घट जावें उन्हें शुद्ध लग्न कहते हैं, जोनसी नहीं घटसके उसको अशुद्ध कहते हैं। घटाते घटाते जो शेष रहा है उस को ३० से गुणा करदो पुनः अशुद्ध लग्न का भाग देकर अंशादि तीन अंक लेलो अब अंशोंके रखने का यह क्रम है। मेष राशि से जो लग्न घट चुकी है वहां तक गणना करो जितनी संख्या हो उसीको पेश्तर लिखदो अब इस राश्यादिमें अयनांश (अंशों के नीचे से रखकर) घटादो बस यहही स्पष्ट लग्न के राश्यादि होतेहैं ॥

उदाहरण।

जैसे उसी समय सूर्य स्पष्ट ०-१-३४-५९ और अयनांश २३-३०-४० है और इष्ट पलात्मक ८०३ अब लग्न निकालने की क्रिया कहते हैं। प्रथम अयनांश सूर्य में जोड़ा तो सायन सूर्य २५-१५-३९ हुआ इसको भुक्तांश कहते हैं, अब भुक्तांश को ३० में से हीन किया तो भोग्यांश ४-४४-२१ हुआ उसको बृश्चिक लग्नमान ३४७ से गुणा किया तो गुणन फल १३८८। १५२६८। ७२८७ इसको ६० से शुद्ध किया तो १६४४-२९-२७ अब इस १६ ४४ में ३० का भाग दिया तो लब्धि ५४ शेष २४ को ६० से गुणा किया तो १४४० इसमें २९ और जोड़े तो १४६९ हुए ३० से भाग दिया तो लब्धि ४८ शेष २९ को ६० से गुणा किया तो १७४० हुए २७ और युक्त किये तो १७६७ इसमें ३० का भाग दिया तो लब्धि ५८ यह तीनों भोग्यांश हुए, यथा ५४-४८-५८ इसको इष्ट पलों में से घटाया तो ८०३। ५४। ४८ शेष ७४८ इसमें से धनके मानको घटाया ता ७४८-३४३ शेष ४०५ पुनः मकर को घटाया तो ४०५।-।३०३ शेष १०२ इसको ३० से गुणा किया तो ३०६० अब अशुद्ध लग्न कुम्भ २५१ का भाग देकर लब्धि क्रम से ३ निकाली १२-११-२८ अब शुद्ध लग्न मकर को इसके पहिले स्थापित किया तो (१०-१२-११-२८) इसमें से अयनांश घटाया तो ९-१८ ४०-४८ यहही तत्कालिक लग्न स्पष्ट हुआ।

भोग्यादिष्टे ऽल्पेसति लग्न साधनम्।

भोग्याल्पकालात्खत्रिघ्नात्स्वोदयाप्तलवादियुक्।
रविरेव भवेल्लग्नं सषड्भार्कोन्निशातनुः॥

पूर्वोक्त रीति से लग्नानयन दिखलाया है उसकी रीति से स्पष्ट मालूम होता है कि लग्न और सूर्य एक राशि में नहीं हैं किन्तु निम्न लिखित रीति में सूर्य और लग्न को एक ही राशि में रखना चाहिये अर्थात् भोग्यकाल से इष्टकाल कम हो तो उस समय पूर्वोक्त "तत्कालार्कः सायनः" इस श्लोक की रीति का त्याग करो, अर्थात् जब सूर्य का भुक्त तथा भोग्य काल इष्ट घटी पलों में से नहीं घट सके तो इष्ट घटी पल को ३० से गुणा करे; तदनन्तर सायन सूर्य के राश्युदय से भाग लेवे भाग लेने से जो अंशादिक लब्ध होवें उनको सूर्य में घटा देवे वा जोड देवे अर्थात् जब सूर्य का भुक्त आया होय तो लब्ध हुये अंशादिक को सूर्य में घटा देवे और जब सूर्य का भोग्य आया हो तब लब्ध हुये अंशादिकों को सूर्य के मध्य में जोड देना चाहिये घटाने व जोड देने से ही लग्न होती है यदि रात्रि में लग्न साधन करना होय तो छः (६) राशि को सूर्य में जोड देना चाहिये, जोड कर भुक्त व भोग्य काल से लग्न की संज्ञा साधन करे। और ऐसे ही रात्रि के विषे दशम लग्न के साधन में भी छः राशियों को सूर्य में जोड़कर भुक्तकाल भोग्य काल का साधन करे अन्य सम्पूर्ण क्रिया पूर्वोक्त प्रकार करनेसे दशम लग्न सिद्ध होतीहै।

उदाहरण।

जैसे कि पूर्वोक्त भोग्यकाल तो इष्टकाल में से घट जाता है किन्तु उदाहरण के लिये दूसरा इष्ट कल्पना करते हैं। यथा इष्ट पल ४५ है और भोग्य पल ५८ अर्थात् इष्ट से भोग्य पल आगे है इस लिये इष्टपल ४५ में नहीं घट सकता इस अवसर पर इष्टपल ४५ को ३० से गुणा दिया तो १३५० इसमें वृश्चिकोदय ३४७ का भाग दिया तो लब्ध अंशादिक ३-५२-५५ इसीको स्पष्ट सूर्य ७-१-४४-५६ में युक्त किया तो ७-५-३७-५४ यही लग्न स्पष्ट हुआ।

१—भोग्यादिष्टे ऽल्पे सति लग्नसाधनं ग्रन्थान्तरे
भोग्यतोल्पेष्ट, कालात्खरामाहतात्स्वोदयाप्तांशयुग्भास्करः स्यात्तनुः॥
* इति बृ० पाराशरे, ग्रहलाघवेच *
भोग्याल्पकाले ख गुणा ३० हतोऽर्कः स्वीयोदयाप्तांशयुतो विलग्नम्॥इतिसि०चिं०
भुक्तं भोग्यं स्वेष्टकालान्न शुद्ध्ये त्रिंशन्निघ्नात्स्वोदयाप्तं लवाद्यम्।
दीन युक्तं भास्करे तत्तनुः स्याद्रात्रौ लग्नं भार्ध युक्ताद्रवेस्तु॥इतिनीलकण्ठदैवज्ञः

दशमसाधनार्थंनतानयनम् ।

रात्रेशेषगते वापि दिनार्धमयुतं दिनम् ।
दिनार्धं दिनजातेन तत्पूर्वमपरं परम् ॥
अर्धरात्रिपरं यावद्दिनमध्यान्नतं भवेत् ।
रवेःपूर्वकपालं च तदूर्ध्वं पश्चिमं नतम् ॥
प्राग्लंकोदयतः साध्या उक्ताश्च घटिका रवेः ।
प्राक्कपाल ऋणं कुर्याद्धनमन्यकपालयोः ॥

मध्यान्ह तक दिन गत, उपरि दिन शेष जानना; इसी प्रकार अर्द्धरात्रि पर्यन्त गतरात्रि, उपरान्त शेष रात्रि जानना। यदि अर्द्ध रात्रि पर्यन्त इष्टकाल है तो जितनी घटी रात्रि गत होय उसमें दिनार्द्ध जोडने पर रात्रिका पश्चिमनत होताहै। यदि निशीथ (अर्द्धरात्रि) से ऊपर इष्ट है तो इष्टकालसे जितनी घटी रात्रि शेष है उसमें दिनार्द्ध युक करने से रात्रिका पूर्वनत होगा, मध्यान्ह के प्रथम इष्टकाल है तब जितनी घटी दिन चढा है उसको दिनार्द्ध (आधा दिन) में हीन करने से दिवा पूर्वनत होगा। यदि मध्यान्ह के बाद सायंकाल तक इष्ट होय तब जितनी घटी दिन शेष (बाकी) है उसको दिनार्द्ध में हीन करने से दिनका पश्चिम नत होता है। यदि उक्त नतकी घटी पलों को ३० घटी में से हीन किया जाय तब शेष घटयादि की उन्नत संज्ञा होती है।

अथ दशमसाधनम् ।

ततो लंकोदयैर्भुक्तं भोग्यं शोध्यं पलीकृतात् ।
पूर्वपश्चान्नतादन्यत् प्राग्वत्तद्दशमं भवेत् ॥
सषड्भलग्नखे जायातुर्यौ भावाबुदाहृतौ ।

अब दशम भाव साधनार्थ पूर्व आये भये नतको इष्टमान कर लंकोदय के द्वारा तात्कालिक स्पष्ट सूर्य से (तात्कालार्कःसायनः) इत्यादि विधिके अनुसार पूर्ववत् जो लग्न आवेगा वह ही दशम लग्न होगा। इतना अन्तर अवश्य है कि लग्न निकालने में स्वदेशोदय काम आता है और दशम भाव साधन में लंकोदय लेना।

चाहिये, और इष्टकी जगह नत से काम लेना चाहिये। यदि पूर्वनत हो तो ऋण क्रिया अगर पश्चिम नत हो तो धन क्रिया से दशम लग्न आसकेगा ॥

उदाहरण।

जैसे पूर्वोक्त इष्ट से (अर्थात् जिससे पहिले लग्नादि साधे हैं) उससे तो नत तथा दशम भाव साधन करने के लिये "रात्रिशेषगतेऽपि,, यह श्लोक और "एवं लंकोदयै र्युक्तमिति,, यह श्लोक नहीं घटसकै है किन्तु उदाहरण देने के लिये इसी श्लोक के ऊपर दूसरा इष्ट कल्पना करते हैं। यथा किसी दिन दिनमान २६-४६ है और इष्ट घडीपल २०-५० है इस पर प्रथम नत साधन किया अर्थात् दिनार्ध १३-२३ है इसको इष्ट घटी पल में २०-५० में से घटाया तो ७-२७ यह दिन का परनत हुआ इसको इष्ट मान कर दशम साधन करते हैं। यहां सूर्य के भोग्यकाल की क्रिया से दशम साधन करते हैं। इसी समय लग्न स्पष्ट ११-१७-५-६ है अब इसी लग्न का दशम भाव साधन करना है तो सूर्यस्पष्ट ७-१-२६-५० में अयनांश २३-२८-४० युक्त किया तो सायन सूर्य २५-८-३० यह हुआ इसको ३० में से घटाया तो ४-५१-३० यह भोग्यकाल हुआ इसको वृश्चिकोदय २९६ से गुणा किया तो ११९६-१७६४१-८९७० अब इसमें ३० से भाग दिया तो लब्धि ५९-२४-०-० इसको इष्टपल ४४७ में से घटाया तो शेष ३८८ इसमें धनमान ३२३ को घटाया तो शेष ६५ इसी शेष को ३० गुणा किया तो १९५० हुआ इसमें अशुद्ध लग्न मकर का भाग दिया क्योंकि इसमें पहिले धन तक घटी हैं मकर नहीं इसलिये मकर ही अशुद्ध लग्न है मकर मान ३२३ का भाग दिया तो लब्धि ५-४६-५५ अब शुद्ध लग्न धन इसके आगे स्थापित करी-९-५-४६-५५ इसमें से अयनांश घटाया तो ८-१२-१९-१५ बस यहही स्पष्ट दशम लग्न हुआ। इसी में ६ जोडने से चतुर्थ लग्न २-१२-१९-१५ यह हुआ। यह कल्पना किये हुये द्वितीय इष्टका उदाहरण है किन्तु पूर्वोक्त इष्टसे दशम साधन तो "मध्यान्हेचार्धरात्रेवा" श्लोक के अनुसार है।

भुक्तांशतो दशमसाधन प्रकारः।

यद्यपि दशम भाव साधन का उदाहरण इसी इष्ट २०-५० तथा नत घटी पल ७-२७ से दिखा चुके हैं किन्तु वह उदाहरण भोग्यांश (भोग्यकाल) से दिखाया है इसी लिये यहां भुक्तांश (भुक्तकाल) की क्रिया से उसी इष्ट तथा नत घटीपल ७-२७ से और दिखाते हैं। उदाहरण--जैसे भुक्तांश पहिला ही २५-०-३० इसको वृश्चिकोदय २९६ से गुणा किया तो ७४७५-०-८९७० यह हुआ इसको ६० से शुद्ध किया तो ७४७७-२७ ५० इसमें ३० से भाग दिया तो लब्धि २४९-१४-५६ इसको इष्टपलात्मक (नतपलात्मक) ४४७ में से घटाया तो शेष १९८ अब इसमें धन के प्रमाण ३२३ को घटाया तो यह नहीं घट सकता अतः यह ही अशुद्ध लग्न हुआ इसको ३० से गुणाकर अशुद्ध लग्न धनमान ३२३ से भाग दिया तो लब्धि अंशादि १८-११-२२ यह हुआ अब इसको अशुद्ध लग्न ९ में से घटाया तो शेष ८-११-४८-३८ यह ही दशम लग्न स्पष्ट हुआ। ध्यान रहे कि दशम के साधन में इष्ट की जगह नत लेना चाहिये और स्वदेशोदय

की जगह लंकोदय लेना चाहिये शेष क्रिया लग्न की तरह है किन्तु ठीक मध्यान्ह (दिनार्धं) तथा ठीक अर्धरात्रि के समय नत भाव होता है अर्थात् उस समय नत नहीं होता है किन्तु उस समय तात्कालिक स्पष्ट सूर्य ही दशम लग्न होता है सो लिखा भी है "मध्यान्हे चार्धरात्रेवा" इति ॥

मध्यान्ह या मध्यरात्रि के विन्दु से पूर्व वा परके नीचे के भाव का नाम नत है।

दिनार्ध तथा रात्र्यर्ध निकालने की रीति तथाहि—

करणकुतूहले भास्कराचार्यः।

चरपलयुतहीनानाडिकाः पंचचन्द्रा १५ ।
द्युदलमथ निशार्धं याम्यगोले विलोमम् ॥
द्युदलगतघटीनामन्तरं तन्नतं स्या-
न्नतरहितदिनार्धश्चोन्नतं जायतेऽत्र ॥

मेष आदि छः राशियों में ग्रह स्थित होवे तो उत्तर गोलका ग्रह होता है और तुला आदि छः राशियों में ग्रह स्थित होते तो दक्षिण गोलका ग्रह होता है; उसी प्रकार मकर आदि छः राशियों में उत्तरायण और कर्क आदि छः राशियों में दक्षिणायन ग्रह होता है। और उत्तर गोल में सायन सूर्य हो तो पन्द्रह (१५) घडियों में चरपलों को युक्त कर देय, और दक्षिण गोल में सायन सूर्य होय तो पन्द्रह (१५) घडियों में चरपल को ऊन करे ऐसे करने से दिनार्ध अर्थात् दिन का आधा भाग होता है उस दिनार्ध को ३० में घटाने से रात्र्यर्ध अर्थात् रात्रिका आधा भाग होता है दिनार्ध को दूना करने से दिनमान और रात्र्यर्ध को द्विगुणा करने से रात्रिमान होता है दिनार्ध और इष्टकाल इनका जो अन्तर वह नत होता है जो दिवस के इष्टकाल तक के घटी पलादि दिनार्ध से अधिक हों तो उन घटी पलों में दिनार्ध घटाने से जो शेष बचे वह पूर्व नत होता है और इष्टकालके घटी पलों से दिनार्ध अधिक हो तो दिनार्ध में उन घटी पलों को घटाने जो शेष बचे वह पश्चिम नत होता है आये हुये इस नतको दिनार्ध में घटाने से जो शेष होय वह उन्नत होता है।

उदाहरण।

जैसे चर पलात्मक १२० है अर्थात् २-० है और यहां सायनसूर्य दक्षिण गोल में है इसलिये १५ घडियों में चरपल को हीन किया तो १५-२।० शेष १३ रहे इसीको दिनार्ध कहते हैं इसको दुगना करने से दिनमान २६-० हुआ फिर दिनार्ध को ३०में

घटाने से रात्र्यर्ध अर्थात् रात्रिका आधा भाग १७-० हुआ इसको दूना करने से रात्रि मान ३४ हुआ।

दशम लग्न साधनेविशेष।

मध्यान्हेचार्धरात्रे वा स्वेष्टकालोयदा भवेत्।
तदातात्कालिकःसूर्योभवेल्लग्नं खतुर्यकम्॥

यदि इष्ट घटी पल दिनार्ध के बराबर हो तो तत्कालीन स्पष्ट रवि ही दशम लग्न होता है। इसी तरह इष्ट घटी पल रात्र्यर्ध के बराबर होने से स्पष्ट रवि चतुर्थ लग्न होता है।

उदाहरण।

जैसे किसी के जन्म समय का इष्ट १३-२३ है और उस समय दिनमान २६-४६ है अब इस दिन मान का आधा किया तो १३-२३ हुआ यह दिनार्ध और इष्ट बराबर होने से तात्कालिक स्पष्टसूर्य ७-१-४४-५६ ही दशम भाव हुआ। इसमें ६ राशि जोडी तो १-१-४४-२६ यह चतुर्थ भाव हुआ।

धनादिभावसाधनम्।

लग्नं चतुर्थात्संशोध्य शेषं षड्भिर्विभाजितम्।
राश्यादि योजयेल्लग्ने सन्धिः स्याल्लग्नवित्तयोः॥
सन्धिःषडंशसंयुक्तो धनभावो भवेत्स्फुटः।
धनभावःषडंशाढ्यःसन्धिर्धनतृतीययोः॥
षडंशसंयुतःसन्धिस्तृतीयो भावउच्यते।
षडंशाढ्यस्तृतीयःस्यात्सन्धिर्भ्रातृचतुर्थयोः॥
तृतीयसन्धिरेकाढ्यस्तुर्यःसन्धिर्भवेदिह।
द्व्याढ्यस्तृतीयभावोऽपि पुत्रभावो भवेत्स्फुटः॥
त्र्याढ्यो द्वितीयसन्धिःस्यात्संधिःपंचमभावजः।
धनभावो वेदयुतो रिपुभावःप्रजायते॥
लग्नसन्धिःपंचयुतःसन्धिःस्याद्रिपुभावजः।
लग्नाद्याःसन्धिसहिता भावाःषड्राशिसंयुताः॥
सप्तमाद्या भवन्तीह भावाःसर्वे ससन्धयः।

प्रथम लग्न को चतुर्थ लग्न में घटा कर शेषको ६ से भागदे लब्धि (राश्यादि) प्रथम लग्न में जोड देनेसे प्रथम और द्वितीय की सन्धि होती है। अब इसमें वही प्रथम चतुर्थ लग्नांतर षष्ठांश जोडने से धन भाव, (दूसरा) इसमें षष्ठांश जोडने से दूसरे और तृतीय भावों की सन्धि, इस सन्धि में वही षष्ठांश जोडने से तृतीय भाव, इसमें षष्ठांश सहित करने से तृतीय चतुर्थ भावों की सन्धि, इसमें एक मिलाने से चतुर्थ भाव की सन्धि, तृतीय भाव में २ युक्त करने से पंचम भाव, द्वितीय सन्धि में तीन मिलाने से पंचम भावकी सन्धि, धन भाव में चार युत करने से षष्ठ भाव होता है। प्रथम सन्धि में पांच जोडने से छटे भाव की सन्धि होगी, इसी तरह प्रथमादि छः भावों में तथा सन्धियों में छः राशि और मिलादें तो सप्तम आदि छः भाव ससन्धि हो जांयगे।

उदाहरण।

शेष धनादि भाव साधने की क्रिया। जैसे प्रथम लग्न ९-१८-४०-४८ को चतुर्थ लग्न में हीन किया तो। १।१।४४।५६ शेष ३-१३-४-११- इसमें ६ से भाग दिया तो लब्धि-०-१७-१०-४१ यही षष्ठांश होता है, इसको प्रथम लग्न में जोडा तो १०-५-५१-२६ यह प्रथम की सन्धि हुई, इसको षष्ठांश में जोडा तो १०-२३-२-१० यह द्वितीय भाव हुआ, पुनः इसमें षष्टांश को युक्त किया तो ११-१०-१२-५१ यह द्वितीय की सन्धि हुई इसमें वहही षष्टांश जोड़ा तो ११-२७-२३-३२ यह तृतीय भाव हुआ, इसमें षष्ठांश जोड़ने से ०-१४-३४-१३-यह तृतीय की सन्धि हुई; इस सन्धि में षष्ठांश जोडने पर चतुर्थ भाव होगा, (किन्तु यहां कुछ अन्तर मालूम पड़ता है इसका कारण यह है कि प्रथम चतुर्थ

तन्वादि-द्वादश भाव चक्रम्।

भा०	१	सं०	२	सं०	३	सं०	४	सं०	५	सं०	६	सं०
रा०	९	१०	१०	११	११	०	१	१	१	२	२	३
अं०	१८	५	२३	१०	२७	१४	१	१४	२७	१०	२३	५
क०	४०	५१	२	१२	२३	३४	४४	३४	२३	१२	५२	५१
वि०	४८	२६	१०	५१	३२	१३	५९	१३	३२	५१	१०	२९
भा०	७	सं०	९	सं०	९	सं०	०	सं०	११	सं०	१२	सं०
रा०	३	४	४	५	५	६	७	७	७	८	८	९
अं०	१८	५	२३	१०	२७	१४	१	१४	२७	१०	२३	५
क०	४०	५१	२	१२	२३	३४	४४	३४	२३	१२	५२	५१
वि०	४८	२६	१०	५१	३२	१३	५६	१३	३२	५१	१०	२६

लग्नांतर के छटे हिस्से के आगे के अवयव छोड दिये हैं) अब तृतीय की सन्धि में १ और जोडा तो १-१४-३४-१३ यह चतुर्थ की सन्धि है और तृतीय में २ जोडे तो १-२७-२३ ३२ यह पञ्चम भाव हुआ अब द्वितीय की सन्धि में ३ जोडे तो २-१०-१२-५१ यह पञ्चम की सन्धि हुई। द्वितीय में ४ जोडे तो २-२३-२-१० यह षष्ठभाव हुआ प्रथम की सन्धि में ५ जोडे तो ३-५-५१-२९ यह षष्ठ की विराम सन्धि हुई अब इन्हीं भावों में ६-६ राशि प्रथक् २ जोडने से सप्तमादि ६ भाव सन्धि सहित स्पष्ट होते हैं।

अथ विंशोपकानयनम्।

संन्धिखेटान्तरं कार्यं यच्छेषं नखताडितम्।
भावसन्ध्यन्तरेणाप्तं तत्र विंशोपकाः फलम्॥

सन्धि ग्रह इनमें जो अधिक होय उसमें कमती को हीन करके दोनों के अन्तर को २० से गुणदेय तथा भाव एवं सन्धि के अन्तर से भाग देय तो लब्धि ग्रहका विंशोपक फल होगा अर्थात् इस ग्रह का इतने विश्वाफल होगा।

उदाहरण।

जैसे सूर्य७-१-४४-५९ (दशम स्थान में) और उसी की सन्धि ७-१४-३४-१३अतः उक्त श्लोक के अनुसार दोनों का अन्तर ०-१२-४९-१४ है इसको २० से खण्ड गुणा किया तो ४-१६-२४-४० हुआ इसको भाज्य मानो अब इसमें दशम (कर्म) भाव ७-१-४४-५९ और उसी की सन्धि ७-१४-३४-१३ इनका अन्तर ०-१२-४९-१४ है इसको ६० से गुणा किया तो ४-१६-२४-४० × ६० गुणनफल ९२३०८० यह भाज्य हुआ और ०-१२-४९ १४ × ६० गुणनफल ४६१४० है यह भाजक हुआ इससे भाग लिया।

१—खेटे सन्धिद्वयान्तस्थे फलं तद्भावजं भवेत्।
हीने ऽधिके द्विसन्धिभ्यां भावे पूर्वापरे फलम्॥

इस नील कण्ठोक्ति के अनुसार जो ग्रह भाव में रहता है वह पूर्ण फल देता है अर्थात् उसी भाव में स्थित ग्रह उसी भावका पूर्ण फल कारक होता है, जब सन्धि में जाता है तब न्यून फल देता है जब वह ग्रह राश्यादि बिल्कुल सावयव मिल जाय तब फल रहित होजाता है सन्धि से न्यून रहने से पूर्व भाव का और अधिक रहने से अपर भाव का फल देता है।

" खेट भाव समे पूर्णं फलं सन्धिसमे तु खम्" इति च।

इस विषय पर मूल में पहिले " वदन्ति भावे क्यदलं हि सन्धिः॥

इस श्लोक पर ग्रन्थकार भी खुद कह चुका है और वास्तव में है भी ठीक क्योंकि आरम्भ सन्धि से अल्प राश्यादि ग्रह पूर्व भाव में होवेगा तो फल भी पूर्व भाव का ही देगा और इसी तरह विराम सन्धि से ग्रह अधिक होगा तो उसका फल भी अग्रिमभाव का होगा दोनों की सन्धियों के बीच में अगर ग्रह पड़ जायगा तो फल भी उस ग्रहका दोनों सन्धियों का होना चाहिये।

भाजक　भाज्य　लब्धि
४६१४०)९२३०८०(२०
　　　९२२८०
　　　　　२८०
　　　　　६०×
　　　　१६८००

इस जगह भाग नहीं लग सकता अतः शून्य ही आया इस लिये। यह ही लब्धि २०-० सूर्य का विंशोपक आया इसी प्रकार और ग्रहों का भी लाना चाहिये विस्तार के भय से शेष ग्रहों का नहीं दिखलाया है।

अथ द्वादशभावनिरीक्षणविधिः ।

तन्वादयो भावबलं वदंति तत्स्वामिसंपूर्णबलैःसमेतः ।
युक्तेऽथ दृष्टे शुभदृग्युते च क्रमेण तद्भावविवृद्धिकारी ॥

लग्न आदि १२ भाव होते हैं यदि उन भावों के स्वामी संपूर्ण बलसे युक्त हों तो उस भावको बलवान् कहते हैं, और बलवान् भावेश से युक्त या दृष्ट हो अथवा किसी शुभ ग्रहसे दृष्ट या युक्त हो तब क्रमसे उसी भावकी वृद्धि करने वाला होताहै

रूपं तथा वर्णविनिर्णयश्च चिन्हानि जातिर्वयसःप्रमाणम् ।
सुखानि दुःखान्यपि साहसं च लग्ने विलोक्यं खलु सर्वमेतत ॥

रूप, वर्णका निर्णय, अङ्गचिन्ह; जाति, आयुका प्रमाण, सुख दुःख, और साहस, यह सब लग्न से देखने योग्य हैं ॥ २ ॥

---

१ तथाच भट्टोत्पलः—

"यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा स्यात्तस्य तस्यास्ति वृद्धिः
पापैरेवं तस्य भावस्य हानिर्निर्देष्टव्या:पृच्छतां जन्मतो वा" ॥

जो २ भाव स्वामी से देखा जाता है ("त्र्याशं त्रिकोणं चतुरस्रमस्तं" इत्यादिक से ग्रंथान्तरों में ग्रहदृष्टि बतलाई है आगे इसमें भी चतुर्थाध्याय में "ज्ञार्केन्दु शुक्रास्त्रि-दशं त्रिकोणम्" इत्यादिक से कहेंगे) अथवा स्वामी से युक्त हो, अथवा सौम्य ग्रहों से देखा जाय या युक्त होय तो उस भाव, की खूब वृद्धि होती है जैसे किसी मनुष्य की जन्म कुण्डली में सप्तम (जाया) भाव अपने स्वामी या सौम्य ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तो समझ लो कि इस मनुष्य को स्त्री का सुख पूर्ण रहेगा। इसी प्रकार जो जो भाव पाप ग्रहों से देखा जाता हो या युक्त होवे तो उस भाव की हानि कहनी चाहिये, यह जन्म लग्न और प्रश्न लग्न दोनों से ही देखा जाता है।

स्वर्णादिधातुक्रयविक्रयश्च रत्नानि कोषोऽपि च संग्रहश्च ।
एतत्समस्तं परिचिंतनीयं धनाभिधाने भवने सुधीभिः ॥ ३ ॥

सुवर्ण आदि धातु बेचना, खरीदना, रत्न, खजाना और संग्रह,यह सब पंडितों को धन भावसे विचार करना चाहिये ॥ ३ ॥

सहोदराणामथ किंकराणां पराक्रमाणामुपजीविनां च ।
बिचारणा जातकशास्त्रविद्भिस्तृतीयभावे विनयेन कार्या ॥४॥

सहोदर भाई; सेवक, पराक्रम, और नौकर इन सबों का विचार जातक शास्त्र जानने वाले पंडितों को तीसरे घरसे करना चाहिये ॥ ४ ॥

सुहृद्गृहग्रामचतुष्पदो वा क्षेत्राद्यमालोकनकं चतुर्थे ।
दृष्टे शुभानां शुभयोगतो वा भवेत्प्रवृद्धिर्नियमेन तेषाम् ॥५॥

और सुहृद, गृह; ग्राम, चतुष्पद,क्षेत्रादि इन सबोंका विचार जातक शास्त्र जानने वाले पंडितों को चतुर्थ भवन से करना चाहिये यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या युक्त हो तब उन्हीं की निश्चय वृद्धि होती है ॥ ५ ॥

बुद्धिप्रबंधात्मजमंत्रविद्याविनेयगर्भस्थितिनीतिसंस्थाः ।
सुताभिधाने भवने नराणां होरागमज्ञैःपरिचिंतनीयम् ॥ ६ ॥

और अच्छी बुद्धि बनाना, पुत्र, मन्त्र विद्या, दूत, गर्भस्थिति और नीतिसंस्था, मनुष्यों की इतनी चीजों का विचार ज्योतिर्विदों को पंचम घरसे देखना चाहिये।६।

वैरिव्रातं क्रूरकर्मामयानां चिंता शंका मातुलानां विचारः ।
होरापारावारपारंप्रयातैरेतत्सर्वं शत्रुभावे विचिंत्यम् ॥ ७ ॥

और शत्रु घाव (फोड़ा, फुन्सी) क्रूर कर्म, रोग, चिन्ता, शंका और मातुल (मामा) के विषय में विचार इन सबोंका बिचार ज्योतिःशास्त्र वेत्ताओं को छटे घरसे करना चाहिये ॥ ७ ॥

रणांगणं चापि वणिक्क्रिया च जायाबिचारो गमनप्रमाणम् ।
शास्त्रप्रवीणेन विचारणीयं कलत्रभावे किल सर्वमेतत् ॥ ८ ॥

और संग्राम, व्यापार, भार्या का विचार करना और यात्रा इन सबों का विचार ज्योतिर्विदों को सप्तम भवन से करना चाहिये ॥ ८ ॥

नद्युत्तारात्पथवैषम्यदुर्गं शस्त्रं चायुःसंकटेतेति सर्वम् ।
रंध्रस्थाने सर्वथा कल्पनीयं प्राचीनानामाज्ञया जातकज्ञैः ॥९॥

और नदी उतरना, मार्गवैषम्य, दुर्गप्राप्ति, शस्त्र घात, आयुः संकट, इन सबों का विचार ज्योतिर्विदों को अष्टम भवन से करना ॥ ९ ॥

धर्मक्रियायां हि मनःप्रवृत्तिर्भोग्योपपत्तिर्विमलं च शीलम् ।
तीर्थप्रयाणं प्रणयःपुराणैःपुण्यालये सर्वमिदं प्रदिष्टम् ॥१०॥

धर्म कार्य में मनकी प्रवृत्ति, भोगों की प्राप्ति, निर्मल शील, तीर्थ यात्रा और नम्रता इन सबोंका निर्णय पंडितों को नवम भवनसे करना चाहिये ॥ १० ॥

व्यापारमुद्रानृपमानराज्यं प्रयोजनं चापि पितुस्तथैव ।
महत्फलाप्तिःखलु सर्वमेतद्राज्याभिधाने भवने विचार्यम् ॥११॥

और व्यापार, रुपया, राजा से मान प्राप्ति, राज्य, पिताके सम्बन्ध में विचार करना और अकस्मात् महत फलाप्ति, इन सबों का विचार दशम भवन से करना चाहिये ॥ ११ ॥

गजाश्वहेमांबरछत्रजातमांदोलिकामंगलमंगलानि ।
लाभः किलैषामखिलं विचार्यमेतत्तु लाभस्य गृहे गृहज्ञैः ॥१२॥

हाथी, घोडे, हेम, (सुवर्ण) वस्त्र, छत्र, हिंडोला आदि अनेक मंगल कारक वस्तुओं का विचार, विद्वान् पुरुषों को ग्यारहवें भवन से करना चाहिये ॥ १२ ॥

हानिर्दानं व्ययश्चापि दंडो निर्बंध एव च ।
सर्वमेतद्व्ययस्थाने चिंतनीयं प्रयत्नतः ॥ १३ ॥

नुकसान, दान, खर्च करना, दंड, हठ, इन सबों का विचार यत्नपूर्वक बारहवें स्थान से करना चाहिये ॥ १३ ॥ इति १२ भावनिरीक्षणविधिः ।

अथ ग्रहाणां फलानि ।

मूर्त्यादयःपदार्था ज्ञायंते येन जंतूनाम् ।
तदिदमधुना प्रवक्ष्ये भावाध्यायं विशेषेण ॥ १ ॥

जिससे मनुष्यों को मूर्ति आदि शारीरिक पदार्थों का अच्छी तरह से ज्ञान हो उस भावाध्याय को अब मैं विशेष करके कहूंगा ॥ १ ॥

तत्र प्रथमं सूर्यफलम् ।

सवितरि तनुसंस्थे शैशवे व्याधियुक्तो नयनगदसुदुःखी नीचसेवानुरक्तः । न भवति गृहमेधी दैवयुक्तो मनुष्यो भ्रमति विकलमूर्तिः पुत्रपौत्रैर्विहीनः ॥ १ ॥

जिस मनुष्य की कुंडली में लग्न स्थान में सूर्य बैठा हो वह बाल्यावस्था में रोगी, नेत्रोंके रोगसे अत्यन्त दुःखी, नीचों की सेवामें अनुराग रखने वाला, प्रारब्ध से गृहस्थ सुख से हीन, विकल रूप होकर पुत्र पौत्रों से रहित हुआ मनुष्य सर्वत्र भ्रमण करने वाला होता है ॥ १ ॥

धनगतादिननाथे पुत्रदारैर्विहीनः कृशतनुरतिदीनो रक्तनेत्रः कुकेशः । भवति च धनयुक्तो लोहताम्रेण सत्यं न भवति गृह-मेधी मानवो दुःखभागी ॥ २ ॥

और जिसके द्वितीय स्थान में सूर्य बैठा हो वह मनुष्य पुत्र तथा स्त्री से हीन, दुर्बलांग, अत्यन्त दीन, रक्त नेत्रों से युक्त, बुरे केशों वाला और लोह तथा तांबे के व्यापार से धनवान् तथा दुःखों का भोगने वाला और वह मनुष्य कभी भी गृहस्थ सुखका भागी नहीं होता है ॥ २ ॥

सहजभुवनसंस्थे भास्करे भ्रातृनाशः प्रियजनहितकारी पुत्रदाराभियुक्तः । भवति च धनयुक्तो धैर्ययुक्तः सहिष्णुर्विपुल धनविहारी नागरीप्रीतिकारी ॥ ३ ॥

और जिसकी कुण्डली में लग्न से तृतीय घरमें सूर्य स्थित होता है वह मनुष्य भाई से रहित, प्रियजनों का हित करने वाला, पुत्र तथा पत्नी से युक्त, धनवान्, धैर्यवान्; सहनशील, अनेक प्रकारके धनसे बिहार करने वाला और अत्युत्तम नागरिक स्त्रियों से प्रीति करने वाला होता है ॥ ३ ॥

विविधजनविहारी बंधुसंस्थो दिनेशो भवति च मृदुवेत्ता

गीतवाद्यानुरक्तः । समरशिरसि युद्धे नास्ति भंगःकदाचित्प्रचुर-धनकलत्री पार्थिवानां प्रियश्च ॥ ४ ॥

और जिसकी कुण्डली में लग्न से चतुर्थ घर में सूर्य बैठा हो वह मनुष्य अनेक मनुष्यों के साथ विहार करने वाला, कोमल वाणी बोलने वाला, गाने बजाने में अनुराग रखने वाला; संग्राम में जय पाने वाला, धन और कलत्र से संपन्न और राजाओं को प्रिय होता है ॥ ४ ॥

तनयगतदिनेशे शैशवे दुःखभागी न भवति धनभागी यौवने व्याधियुक्तः। जनयति सुतमेकं चान्यगेहश्च शूरश्चपल-मतिविलासी क्रूरकर्मा कुचेताः ॥ ५ ॥

और जिसकी कुण्डली में लग्न से पंचम घर में सूर्य बैठा हो वह मनुष्य बालकपन में दुःख भोगने वाला; धन हीन और युवावस्था (जवानी) में व्याधि युक्त, एक पुत्र उत्पन्न करने वाला; अन्य पुरुषों के घरों में रहने वाला, शूरवीर, चपल बुद्धि वाला, विलासी क्रूर कर्म करने वाला और दुष्ट मन वाला होता है ॥५॥

अरिगृहगतभानौ योगशीलो मतिस्थो निजजनहितकारी ज्ञातिवर्गप्रमोदी । कृशतनुग्रहमेधी चारुमूर्तिर्विलासी भवति चरिपुजेता कर्मपूज्यो दृढांगः ॥ ६ ॥

और जिसकी जन्मकुण्डली में लग्न से छटे घर में सूर्य होवे वह मनुष्य योगाभ्यास करने वाला; बुद्धिमान्, स्वजनों का हित करने वाला; ज्ञाति के मनुष्यों को आनंददायक, दुर्बल अंग वाला, गृहस्थधर्म पालन करने वाला, सुन्दर स्वरूप वाला, क्रीडा करने वाला, शत्रुजनों को जीतने वाला, शुभ कर्म करने के निमित्त पूजा पाने वाला और दृढांग होता है ॥ ६ ॥

युवतिभवनसंस्थे भास्करे स्त्रीविलासी न भवति सुखभागी चंचलः पापशीलः । उदरसमशरीरो नातिदीर्घो न ह्रस्वो कपिलनयनरूपः पिंगकेशः कुमूर्तिः ॥ ७ ॥

और जिसकी कुण्डली में लग्न से सप्तम घर में सूर्य बैठा हो वह मनुष्य स्त्रियों

के साथ विहार करने वाला, अन्य सुख से हीन; बडा चंचल, पाप कर्म करने में प्रवृत; उदरवत् फूले हुए शरीर वाला, न अति लंबा न अत्यन्त छोटा; कपिल नेत्र वाला; सुरूप, पीले रंग के केश वाला; और कुरूप होता है ॥ ७ ॥

निधनगतदिनेशे चंचलस्त्यागशीलःकिल बुधगणसेवी सर्वदा रोगयुक्तः । वितथबहुलभाषी भाग्यहीनो विशीलो रतिविहित-कुचैलो नीचसेवी प्रवासी ॥ ८ ॥

और जिसकी कुण्डली में लग्न से अष्टम भवन में सूर्य बैठा होवे वह मनुष्य अति चंचल, त्यागी, निश्चय बुद्धिमान् मनुष्यों की सेवा करने वाला, सदा रोगों से युक्त, मिथ्या अनर्थक बकवाद करने वाला, भाग्यहीन, शील से रहित, रति की अधिकता से मलिन वस्त्र पहरने वाला, नीचों की सेवा करने वाला और सदा प्रदेश में रहने वाला होता है ॥ ८ ॥

भ्रहगतदिननाथे सत्यवादी सुकेशी कुलजनहितकारी देवविप्रा-नुरक्तः । प्रथमवयसि रोगी यौवने स्थैर्ययुक्तो बहुतरधनयुक्तो दीर्घजीवी सुमूर्तिः ॥ ९ ॥

और जिसकी कुंडलीमें लग्नसे नवम घरमें सूर्य हो वह मनुष्य सत्यवक्ता सुन्दर केशों से युक्त, कुटुम्ब के जनोंका हित करने वाला, देवता और ब्राह्मणों में अनुराग रखने वाला, पहली अवस्था में रोगी, युवापन में स्थिरता युक्त, बडा धन-वान्, बहुत काल तक जीने वाला और दिव्य स्वरूप वाला होता है ॥ ९ ॥

दशमभवनसंस्थे तीव्रभानौ मनुष्यो गुणगणसुखभागी दान-शीलोऽभिमानी । मृदुलघुशुचियुक्तो नृत्यगीतानुरागी नरपति-शतिपूज्यःशेषकाले च रोगी ॥ १० ॥

और जिसकी कुंडली में लग्नसे दशम घरमें सूर्य स्थित हो वह अनेक गुणोंकी युक्तासे सुखका भागी, दान करने वाला, बडा अभिमानी, कोमल चीज में रुचि रखने वाला नृत्यगीत (नाचने गाने) में अनुराग रखने वाला, अत्यन्त पूज्य, राजा होता है इससे अतिरिक्त काल में रोग भोगने वाला होता है ॥ १० ॥

बहुतरधनभागी चायसंस्थे दिनेशे नरपतिगृहसेवी भोगहीनो गुणज्ञः । कृशतनुधनयुक्तःकामिनीचित्तहारी भवति चपलमूर्तिर्ज्ञातिवर्गप्रमोदी ॥ ११ ॥

और जिसकी कुंडली में लग्न से ग्यारहवें स्थान में सूर्य स्थित हो वह मनुष्य अत्यन्त धनका भागी, राजगृह की सेवा करने वाला, भोगोंके भोगनेसे हीन, गुणका जानने वाला,दुर्बल अंग युक्त, धनसे संपन्न, कामिनी स्त्रियोंके चित्तको हरने वाला, चंचल मूर्तिवाला और अपने ज्ञाति जनों को आनन्द बढाने वाला होता है ॥११॥

जडमतिरतिकामी चान्ययोषिद्विलासी विहगगणविघाती दुष्टचेताः कुमूर्तिः । नरपतिधनयुक्तो द्वादशस्थे दिनेशे कथकजनविरोधी जंघरोगी कृशांगः ॥ १२ ॥

और जिसकी जन्मकुंडली में लग्न से बारहवें घरमें सूर्य स्थितहो वह मनुष्य बुद्धिका जड (मूर्ख) अत्यन्त कामी, पर स्त्रियों से विलास करने वाला, पक्षिओं का मारने वाला, दुष्ट चित्तवाला, अत्यन्त कुरूप. राजा से प्राप्त हुए धनसे युक्त, कथा बांचने वाले मनुष्यों का विरोधी, जंघामें रोग युक्त और अत्यन्त दुर्बल अंग वाला होता है ॥ १२ ॥ ॥ इति रविभावफलम् ॥

अथ चन्द्रफलम् ।

तनुगतकुमुदेशे वित्तपूर्णःसुखी स्याद्बहुतरधनभोगी वीर्ययुक्तः सुदेही । भवति च यदि नीचश्चंद्रमाः पापगो वा जडमतिरतिदीनः स्यात्तदा वित्तहीनः ॥ १ ॥

और जिस मनुष्य की कुण्डली में लग्नमें चन्द्रमा हो वह धन से संपन्न, सुख भोगने वाला, अत्यन्त धनका भोगने वाला, बलवान्, सुन्दर देहवाला होताहै और यदि चन्द्रमा नीच घर में स्थित हो अथवा पाप ग्रह से युक्तहो तो वह मनुष्य जड बुद्धि अत्यन्त दीन और धन से हीन होता है ॥ १ ॥

धनगतहरिणांके त्यागशीलो मतिज्ञो निधिरिव धनपूर्णो चंचलात्मा सुदुष्टः । जनयति बहुसौख्यं कीर्तिशाली सहिष्णुर्मुखकमलविशाली चन्द्रतुल्यस्वरूपः ॥ २ ॥

और जिसके लग्न से द्वितीय घरमें चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य बडा त्यागी, बुद्धिमान, कोपके समान धनसे पूर्ण, चञ्चल मन वाला, अत्यन्त दुष्ट,कीर्ति वाला, सुख भोगने वाला, यशस्वी सहनशील, कमलवत् मुख वाला और चन्द्र समान रूप युक्त होता है ॥ २ ॥

शशिनि सहजसंस्थे पापगेहे च नित्यं न भवति बहुभाषी भ्रातृहर्तारिमूर्तिः । भवति च सुखभोगी सौख्यगे रात्रिनाथे सकलधनविधानं शास्त्रकाव्यप्रमोदी ॥ ३ ॥

और जिसकी कुण्डली में लग्न से तीसरे घर में या पाप ग्रह के घरमें चन्द्रमा स्थित हो वह मनुष्य बहुत भाषण न करने वाला, भाई का मारने वाला, शत्रु सदृश मूर्ति वाला तथा सुख भोगने वाला होता हैं और यदि शुभ स्थान में हो तो सकल धन संयुक्त और शास्त्र काव्य से आनन्द पाने वाला होता है ॥३॥

बहुतरवसुपुर्णो रात्रिनाथे चतुर्थे प्रियजनहितकारी योषितां प्रीतिकारी । सततमिह स रोगी मांसमत्स्यादिभोगी गजतुरग-समेतः क्रीडते हर्म्यपृष्ठे ॥ ४ ॥

और जिसकी कुंडलीमें लग्न से चतुर्थ भवनमें चन्द्रमा हो वह मनुष्य अनेक प्रकारके धनोंसे पूर्ण, प्रिय जनों का हित करने वाला, स्त्रियों में प्रेम करने वाला, निरन्तर रोगी, मांस मछली इत्यादि का खाने पीने वाला, और हाथी घोडों से युक्त तथा महलों में क्रीडा करने वाला होताहै ॥ ४ ॥

तनयगतशशांके वित्तपूर्णःसुखी स्याद्बहुतरसुतयुक्तो वश्यनारी-समेतः । यदि भवति शशांके क्षीणपापारिगेहे युवति सुख-समूहं पुत्रपौत्रैर्विहीनः ॥ ५ ॥

और जिसकी कुंडलीमें लग्नसे पंचम चन्द्रमा होता है वह मनुष्य धनसे पूर्ण, सुख भोगने वाला, अनेक पुत्रोंसे युक्त, वश्य स्त्री सहित होता है यदि वह चन्द्रमा क्षीणहो कर पाप ग्रह के घरका हो अथवा शत्रु क्षेत्रीहो तब वह मनुष्य स्त्री सुख समूह तथापुत्र पौत्रों के सुखसे रहित होता है ॥ ५ ॥

रिपुग्रहगशशांके क्षीणतानाशकारी न भवति बहुभोगी व्याधि-दुःखस्य दाता । यदि ग्रहमथ तुंगःपूर्णदेहःशशांको बहुतर-सुखदाता स्यात्तदा मानवानाम् ॥ ६ ॥

और जिस मनुष्यके लग्नसे छठे घरमें चन्द्रमा स्थित हो वह क्षीणता से नाश होने वाला, भोगोंका न भोगने वाला, अनेक व्याधि तथा दुःखों का देने वाला होता है यदि परिपूर्ण चन्द्रमा उच्चका हो अथवा स्वगृही का होवे तो वह जातक मनुष्यको और अनेक सुख देने वाला होताहै ॥ ६ ॥

विमलवपुषि चंद्रे सप्तमस्थे मनुष्यो रुचिरयुवतिनाथःकांचनाढ्यः सुदेही । शशिनि कृशशरीरे पापगे पापदृष्टे न भवति सुख-भागी रोगिपत्नीपतिःस्यात् ॥ ७ ॥

। जिसके लग्नसे सप्तम घरमें पूर्ण चन्द्रमा हो तब वह मनुष्य उत्तम स्त्रियोंका स्वामी; सुवर्ण से आढ्य (सम्पन्न) सुन्दर देहवाला होता है यदि, वह चन्द्रमा क्षीणहो अथवा पापी के घरका हो वा पापग्रह देखा जाता हो तब वह मनुष्य सुखका भागी नहीं होता और रोगिणी पत्नी का पति होता है ॥ ७ ॥

निधनभवनसंस्थे शीतरश्मौ नराणां निधनमचिरकाले पापगेहे ददाति । निजभृगुगुरुगेही सौम्यगेही च पूर्णो जनयति बहु-दुःखं श्वासकासादिरोगैः ॥ ८ ॥

और जिस मनुष्यकी कुंडलीमें लग्न से अष्टम घरमें पापगृही चन्द्रमा होता है वह थोडी आयु में ही यमपुर जाने वाला होता है । और यदि वह चंन्द्रमा स्वक्षेत्री हो अथवा शुक्रके (२।७) घरका या बृहस्पति के घर (६।१२) का होकर बैठाहो या सौम्य ग्रहके घरका होकर पूर्ण चन्द्रमा अष्टम घरमें बैठा हो तब उस मनुष्य को कास श्वास आदि रोगों से अत्यन्त दुःख देने वाला होता है ॥ ८ ॥

नवमभवनसंस्थे शीतरश्मौ प्रपूर्णे बहुतरसुखभुक्त्या कामिनी-प्रीतिकारी । न भवति धनभागी क्षीणगे नीचगे वा विमल-पथविरोधी निर्गुणो मूढचेताः ॥ ९ ॥

जिसकी कुंडली में लग्नसे नवम घरमें पूर्ण चन्द्रमा हो वह मनुष्य अनेक प्रकार के सुख भोगों से युक्त कामिनी स्त्रियोंसे प्रेम करने वाला होताहै, यदि वह चंद्रमा क्षीण हो या नीचका हो तो वह मनुष्य निर्मल (शुद्ध) धर्ममार्ग का विरोधी गुणों से रहित और मूढ चित्तवाला होता है ॥ ९ ॥

बहुतरधनभागी कर्मसंस्थे हिमांशौ विविधधननिधानं पुत्रदारादिपूर्णः॥ रिपुकुटिलगृहस्थे कासरोगी कृशांगःपितृयुवति-धनाढ्यः कर्महीनो मनुष्यः ॥ १० ॥

और जिसकी कुंडली में लग्न से दशम घरमें चंद्रमा हो वह मनुष्य अनेक प्रकार धनसंपन्न, तथा पुत्रदारादिकों से युक्त होता है और यदि चन्द्रमा शत्रुक्षेत्री हो या पाप गृहका होवे तब वह मनुष्य कासरोग से युक्त, दुर्बलांग, माता से संपन्न तथा कर्म से हीन होता है ॥ १० ॥

बहुतरधनभोगी चायसंस्थे शशांके प्रचुरसुखसमेतो दारभृत्यादियुक्तः ॥ शशिनि कृशशरीरे नीचपापारिगेहे न भवति सुखभागी व्याधितो मूढचेताः ॥ ११ ॥

और जिसकी कुंडली में लग्न से एकादश घरमें चन्द्रमा स्थित होता है वह मनुष्य बहुत से धनों का भोगनेवाला बहुत सुख से युक्त, पत्नी तथा भृत्यवाला होता है यदि चन्द्रमा क्षीण हो या नीचका हो या पापक्षेत्री शत्रुक्षेत्री हो तब वह मनुष्य अतिरोग ग्रस्त होनेसे सुख रहित और मूढचित्तवाला होता है ॥ ११ ॥

व्ययनिलयनिवेशे रात्रिनाथे कृशांगःसततहिमसरोगी क्रोधनो निर्धनश्च ॥ निजबुधगुरुगेहे दांतिकस्त्यागशीलः कृशतनुसुख भोगी नीचसंगी सदैव ॥ १२ ॥ इति चंद्रफलम् ।

और जिसके लग्न से बारहवें घर में चंद्रमा बैठा हो वह मनुष्य दुर्बलांग, निरंतर कफरोग युक्त, क्रोधी और धनरहित होता है यदि स्वक्षेत्री या गुरुक्षेत्री चन्द्रमा व्यय में हो तो वह मनुष्य इन्द्रियों का दमन करने वाला अथवा बडे दांतों वाला, त्यागी, दुर्बलांग सुख भोगने वाला और सदा नीचों के संग रहने वाला होता है॥ १२ ॥ इति चंद्रभाव फलम् ॥

अथ भौमफलम्

उदरदशनरोगी शैशवे लग्नभौमे पिशुनमतिकृशांगःपापवित्कृष्णरूपः । भवति चपलचित्तो नीचसेवी कुचैली सकलसुखविहीनःसर्वदा पापशीलः ॥ १ ॥

जिस मनुष्य के लग्न में मंगल होवे वह मनुष्य बाल्यावस्था में पेट तथा दांतों के रोगों से युक्त, चुगली करने वाला, कृश अंगवाला पापों को जानने वाला शरीर से श्याम वर्णवाला चपल चित्त, नीचों की सेवा करनेवाला, मलिन वस्त्र पहननेवाला, सब सुखों से रहित, और सदा पाप करने में स्वभाववाला होता है ॥ १ ॥

धनगतपृथिवीजे धातुवादी प्रवासी ऋणधनकृतचित्तो द्यूतकर्त्ता सहिष्णुः ॥ कृषिकरणसमर्थो विक्रमे लग्नचित्तःकृशतनुसुखभागी मानवःसर्वदैव ॥ २ ॥

और जिसकी कुण्डली में लग्न से दूसरे घरमें मंगल होता है वह मनुष्य धातुवाद करनेवाला, परदेश में रहनेवाला, कर्ज तथा धन में प्रीति रखनेवाला, जूआ खेलनेवाला, सहनशील, खेती करने में समर्थ, पराक्रम में प्रेम करनेवाला, दुर्बल शरीर वाला, और सदा सुख भोगनेवाला, होता है ॥ २ ॥

सहजभवनसंस्थे भूमिजे भ्रातृहर्त्ता कृशतनुसुखभागी तुंगभौमो विलासी॥ धनसुखनरहीनो नीचशत्रूच्चगेहेवसतिसकलपूर्णो मंदिरे कुत्सिते च ॥ ३ ॥

और जिसके लग्न से तीसरे घर में मंगल हो वह मनुष्य भाई का मारनेवाला, दुर्बल शरीरवाला, सुखका भागी होता है यदि मंगल उच्च का हो तो विलास करने वाला होता है यदि नीचराशि का हो॰ या पापग्रह या शत्रुग्रह के घर होतो धन सुख, और मनुष्यों से हीन होता है और सम्पूर्ण पदार्थों से युक्त होता हुआ भी कुत्सित (टूटे फूटे) घरमें रहता है ॥ ३ ॥

जडमतिरतिदीनो बंधुसंस्थे च भौमे न भवति कुलमार्ये

बंधुदीनो न दुःखी । भ्रमति सकलदेशे नीचसेवानुरक्तः परवश-परदारेलुब्धचित्तःसदैव ॥ ४ ॥

और जिसके लग्न से चतुर्थ घर में मंगल हो वह मनुष्य जड बुद्धिवाला, अत्यंत दीन, श्रेष्ठकुल से हीन, बंधु निमित्त से दुखी, बडा दीन, अत्यन्त दुखी, सब देशों में भ्रमण करनेवाला, नीचों की सेवा में तत्पर पराये वशमें रहनेवाला, और सदैव पर स्त्री में लुब्ध चित्तवाला होता है ॥ ४ ॥

तनयभवनसंस्थे भूमिपुत्रेमनुष्यो भवति तनयहीनःपाप-शीलोऽतिदुःखी।यदि निजगृहतुंगे वर्तते भूमिपुत्रःकृशमलयुतगात्रं पुत्रमेकं ददाति ॥ ५ ॥

और जिसके लग्न से पंचम घरमें मंगल हो वह मनुष्य पुत्र रहित, पाप में मन रखनेवाला, अत्यन्त दुःखी, यदि निज क्षेत्र में हो अथवा उच्चका होवे तो उसके कृश तथा मलिन शरीर वाला एक पुत्रको देता है ॥ ५ ॥

रिपुगृहगतभौमे संगरे मृत्युभागी सुतधनपरिपूर्णस्तुंगगे सौख्यभागी ॥ रिपुगणपरिदृष्टे नीचगे क्षोणिपुत्रे भवति विकल-मूर्तिःकुत्सितःक्रूरकर्मा ॥ ६ ॥

और जिसके लग्न से छटे घर में मंगल होता है वह मनुष्य संग्राम में मृत्यु पानेवाला और वह मंगल अपनेउच्चका हो तो पुत्र धनसे परिपूर्ण सुख भोगनेवाला होता है। और यदि मंगल शत्रु दृष्ट हो या नीच का हो तब वह विकलमूर्ति, अति निंदित और क्रूर कर्म करनेवाला होता है ॥ ६ ॥

सुनिगृहगतभौमे नीचसंस्थेऽरिगेहे युवतिमरणदुःखं जायते मानवानाम् । मकरगृहनिजस्थे नान्यपत्नीश्च धत्ते चपलमति-विशालां दुष्टचित्तां विरूपाम् ॥ ७ ॥

और जिसके लग्न से सप्तम घर में नीच का या शत्रु क्षेत्री मंगल होतो उस मनुष्य को स्त्री के मरण का दुःख होता है और मंगल मकर राशि का या अपनी राशि का होतो वह मनुष्य दूसरी स्त्रीको नहीं विवाहता है अर्थात् एक ही

पहिली विवाहिता स्त्री जिंदी रहती है। और चपल बुद्धिवाली विशाला (लम्बी) दुष्ट चित वाली और कुरूपा पत्नी को प्राप्त करता है ॥ ७ ॥

प्रलयभवनसंस्थे मंगले क्षीणनीचे व्रजति निधनभावं नीरमध्ये मनुष्यः । धनकिरणचरार्कः सर्वदा चैवभोगी करपदगसुनीलो मृत्युलोकं प्रयाति ॥ ८ ॥

और जिसकी लग्न से अष्टम घर में क्षीण या नीचका होकर मंगल बैठा हो तब वह मनुष्य जल में डूब कर मरता है यदि धन और मीन का रवि हो तो नित्य भोग करने वाला, नीले हाथ पाँवों वाला, अनेक भोगों को भोग कर यमपुरी को जाता है ॥ ८ ॥

नवमभवनसंस्थे क्षोणिपुत्रेऽतिरोगी नयनकरशरीरः पिंगलः सर्वदैव । बहुजनपरिपूर्णो भाग्यहीनः कुचैलो बिकलजनसुवेषी शीलविद्यानुरक्तः ॥ ९ ॥

और जिसके लग्न से नवम घर में मंगल बैठा हो वह मनुष्य अत्यन्त रोगी, नेत्र हाथ और शरीर से पीला, वहुत मनुष्यों से परिपूर्ण, भाग्य से हीन, फटे जीर्ण, वस्त्र पहरने वाला, विकल जनों का सा भेष धारण करने वाला और शीलवान् तथा विद्या में अनुराग रखने वाला होता है ९ ॥

दशमगतमहीजे दांतिकःकोशहीनो निजकुलजयकारी कामिनीचित्तहारी । जठरसमशरीरो भूमिजीवोपकोपी द्विजगुरुजन भक्तो नातिनीचो न ह्रस्वः ॥ १० ॥

और जिसके लग्न से दशम घर में मंगल बैठा हो वह मनुष्य इन्द्रियों का दमन करने वाला, खजाने से रहित, अपने कुलकी जय करने बाला, स्त्रियों के चित्त का चुराने वाला, उदर के समान शरीर वाला; धरती की जीविका करने वाला, बड़ा क्रोधी; ब्राह्मण गुरुजनों का भक्त; न अत्यन्त छोटे कद वाला, तथा न अत्यन्त बडे कद वाला होता है ॥ १० ॥

सुरजनहितकारी चायसंस्थे च भौमे नृपइव गृहमेधी पीडितः

कोपपूर्णः । भवति च यदि तुंगे लोकसौभाग्ययुक्तो धन-किरष्णनियुक्तः पुण्यकामार्थलोभी ।। ११ ।।

और जिसके लग्न से ग्यारहवें घर में मंगल बैठा होवे वह मनुष्य देवताओं का हित करने वाला, राजा के समान, स्त्री वाला, पीडित, क्रोध से पूर्ण होता है यदि उच्चका होकर बैठा हो तब लोक सौभाग्य से युक्त, धनवान्, तेज युक्त और पुण्य कर्म करने वाला और धन का लोभी होता है ।। ११ ।।

परधनहरणेच्छुःसर्वदा चंचलाक्षश्चपलमतिविहारी हास्ययुक्तः प्रचंडः । भवति च सुखभागी द्वादशस्थे च भौमे परयुवति-विलासी साक्षिकःकर्मपूरः ।। १२ ।। इति मंगलफलम् ।

और जिसकी कुंडली में लग्न से बारहवें घर में मंगल होता है वह औरों के धन के लेने की इच्छा करने वाला, सब समय चंचल नेत्र वाला, चपल बुद्धि, विहार करने वाला, हास्य करने वाला, बडा प्रचंड, सुख का भागी, परस्त्री गामी, गवाही देने वाला और कर्मों में परिपूर्ण होता है ।। १२ ।। इति भौमभाव फलम् ।

अथ बुधभावफलम् ।

तनुगतशशिपुत्रे कांतिमांश्चातिहृष्टो विमलमतिविशालः पंडितस्त्यागशीलः। मितमृदुशुचिभोगी सत्यवादी विलासी बहुतरसुखभागी सर्वकालप्रवासी ।। १ ।।

जिस पुरुषके लग्न में बुध होता है वह मनुष्यसुन्दर स्वरूप वाला; अति प्रसन्न, बुद्धिमान; लंबा, पंडित, त्यागी, थोरा कोमल पवित्र भोजन करने वाला, सत्यवक्ता, विलास करने वाला, अत्यन्त सुख का भागी और सब समय परदेश में रहने वाला होता है ।। १ ।।

भवति च पितृभक्तःसुस्थितः पापभीरुर्मृदुतनुखररोमा दीर्घके-शोऽतिगौरः । धनगतशशि सूनौ सत्यवादी विहारी बहुतर-वसुभागी सर्वकालप्रवासी ।। २ ।।

और जिसके लग्न से दूसरे घर में बुध होता है वह मनुष्य पिता का भक्त,

अतिस्थिर, पाप से डरने वाला, कोमल शरीरवाला, कठोर रोम वाला, लंबेकेश वाला अत्यन्त गौर, सत्य बोलने वाला, विहार करने वाला, अत्यन्त रत्नादिकों का भागी, और सदा परदेश में रहने वाला होता है ॥ २ ॥

साहसी निजजनैः परियुक्तश्चित्तशुद्धिरहितो हतसौख्यः ।
मानवःकुशलतेप्सितकर्ता शीतभानुतनयेऽनुजसंस्थे ॥३ ॥

और जिसके लग्न से तीसरे बुध हो वह मनुष्य साहस कर्म करने वाला, अपने मनुष्यों से युक्त, मलिन मन वाला, सुख से हीन, और अपने कल्याण की इच्छासे शुभकर्मों को करने वाला होता है ॥ ३ ॥

बहुतरधनपूर्णो भ्रातृहर्ता च पापे बहुतरबहुपत्नी पूर्णगेहे स्वतुंगे ।
तरलमतिरलज्जःक्षीणजंघःकृशांगःशिशुवयसि च रोगी बंधुसंस्थे कुमारे ॥ ४ ॥

और जिसकी कुंडली में लग्न से चतुर्थ घर में पापाक्रान्त बुध बैठा हो वह मनुष्य अत्यन्त धन से पूर्ण, भाई का मारने वाला होता है यदि बुध अच्छे घर में या उच्च में हो तो अनेक पत्नीओं से पूर्ण, बुद्धि से युक्त, निर्लज्ज, क्षीण; जंघा वाला, दुर्बलांग और बालकपन में रोगी होता है ॥ ४ ॥

तनयमंदिरगे शशिनंदने सुतकलत्रयुतः सुखभाजनम् ।
विकचपंकजचारुमुखःसुखी सुरगुरुद्विजभक्तियुतः शुचिः ॥ ५ ॥

और जिसके लग्न से पंचम घर में बुध बैठा हो वह मनुष्य पुत्र तथा कलत्र से युक्त, सुख का पात्र, खिले हुए कमल के समान मुख वाला, सदा सुखी, बडा पवित्र और गुरु देवता तथा ब्राह्मणों का भक्त होता है ॥ ५ ॥

अरिनिकेतनवर्तिशशांकजो रिपुकुलाद्भयदो यदि वक्रगः ।
यदि च पुण्यगृहे शुभवीक्षितो रिपुकुलं विनिहंति शुभप्रदः ॥६॥

और यदि वक्री होकर या शत्रु क्षेत्री होकर बुध लग्न से छटे घर में बैठा हो तब वह मनुष्य रिपु कुल से भय पाने वाला, और यदि बुध शुभ ग्रह के स्थान में हो या शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तब शत्रुओं का नाश करने वाला तथा शुभप्रद होता है

तुरगभावगते हरिणांकजे भवति चंचलमध्यनिरीक्षितः ।

विपुलवशभवप्रमदापतिःस च भवेच्छुभगे शशिवंशजे ॥ ७ ॥

और जिसके लग्न से सप्तम घर में बुध हो वह मनुष्य चंचल तथा मध्यम दृष्टि वाला होता है, यदि शुभग्रह की राशि का बुध हो तो वह मनुष्य उत्तम कुल में जन्म लेने वाली स्त्री का पति होता है ॥ ७ ॥

निधनवेश्मनि सत्ययुतःशुभोज निधनदोऽतिथिमंडन एव च ।
यदि च पापयुते रिपुगेहगे मदनकाम्यजवेन पतत्यधः ॥ ८॥

और जिस मनुष्य के लग्न से अष्टम घर में बुध बैठा हो वह मनुष्य सत्य बोलने वाला, सुन्दर मूर्ति वाला. शत्रुजनों को मारने वाला, अतिथि जनों का सत्कार करने वाला होता है यदि वह ही बुध पाप ग्रह युक्त हो या शत्रु के घर में हो तो वह मनुष्य कामदेव के वेग से अप्रतिष्ठा पाने वाला होता है ॥ ८ ॥

नवमसौम्यगृहे शशिनंदने धनकलत्रसुतेन समन्वितः ।
भवति पापयुते विपथस्थितः श्रुतिविमंदकरः शशिजोद्यमी॥९॥

और जिसके लग्न से नवम शुभ ग्रह की राशिका होकर बुध बैठा हो तो उस मनुष्य को धन तथा स्त्री पुत्र से युक्त करता है, यदि पाप ग्रह युक्त हो तो वह मनुष्य कुमार्गगामी, वेद मार्ग की निन्दा करने वाला और बडा उद्यमी होता है ॥ ९ ॥

गुरुजनेन हिते निरतो जनो बहुधनो दशमे शशिनंदने ।
निजभुजार्जितवित्ततुरंगमो बहुधनैर्नियतो मितभाषणः ॥ १०॥

और जिसके लग्न से दशम घर में बुध बैठा हो वह मनुष्य गुरु जनों के साथ अपने हित का करने वाला बहु धन युक्त, अपने कमाये धन से घोडों का खरीदने वाला, धनों से सावधान और थोडा बोलने वाला होता है ॥ १० ॥

श्रुतमतिर्निजवंशहितः कृशो बहुधनप्रमदाजनवल्लभः ।
रुचिरनीलवपुःशुभलोचनो भवति चायगते शशिजे नरः॥११॥

और जिसके लग्न से ग्यारहवें घर में बुध बैठा हो वह मनुष्य शास्त्र में बुद्धि रखने वाला अपने कुल का हितैषी, कृश, बहुत धनवान् और स्त्री जनों को प्यारा, मनोहर श्याम मूर्ति वाला और शुभ नेत्र वाला होता है ॥ ११ ॥

भवति च व्ययगे शशिनंदने विकलमूर्तिधरो धनवर्जितः ।

परकलत्रधने धनचित्तवान्व्यसनदूररतः कृतकःसदा ॥ १२ ॥

और जिसके लग्न से बारहवें घर में बुध होता है वह मनुष्य विकल शरीर वाला,(लूला लंगडा) धनसे रहित (दरिद्री) दूसरे के धन और स्त्री में खूब घना मन रखने वाला, व्यसनों से अलग रहने वाला और सदा उपकार करने वाला होता है ॥ १२ ॥ इति बुध फलम् ।

अथ गुरु फलम् ।

विविधवस्त्रविपूर्णकलेवरः कनकरत्नधनःप्रियदर्शनः ।
नृपतिवंशजनस्य च वल्लभो भवति देवगुरौ तनुगे नरः ॥ १॥

जिसके लग्न में बृहस्पति होता है वह मनुष्य अनेक प्रकार के वस्त्रों से पूर्ण देह वाला, सुवर्ण रत्न इत्यादि बहुमूल्य धनों से पूर्ण,देखने में सुन्दर,राजाके कुल के जनों का प्यारा होता है ॥ १ ॥

सुरगुरौ धनमंदिरसंश्रिते प्रमुदितो रुचिरप्रमदापतिः ।
भवति मानधनो बहुमौक्तिकागतवसुर्भविता प्रसवान्हिके ॥२॥

और जिसके लग्न से दूसरे घर में बृहस्पति होता है वह मनुष्य सदा प्रसन्न रहने वाला, मनोहर स्त्री वाला, मान ही जिसका धन (अहंकारी) मोतियों के व्यापार से धन संपादन करने वाला और जन्म काल में अति दुःखी होकर पीछे सुखी होता है ॥ २ ॥

सहजमंदिरगे च बृहस्पतौ भवति बंधुगतार्थसमन्वितः ।
कृपणतामपि गच्छति कुत्सिते धनयुतोऽपि सदा धनहानिमान्

और जिसके लग्न से तृतीय घरमें बृहस्पति होता है वह मनुष्य भाई बंदों के हाथ गये धन से युक्त होता है. यदि स्वाधीन धन हो तब भी धनहानि से युक्त होवे निंदित कार्यमें कृपणपनको प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

सन्माननानाधनवाहनाद्यैःसंजातहर्षःपुरुषःसदैव ।

१—बहूनि च तानि मौक्तिकानि बहुमौक्तिकानि बहुमौक्तिकैः (मुक्ताफलव्यापारैः आगतं वसु धनं यस्य स इत्यर्थः कुत्रचित् "बहुमौक्तिकै गंतवसुः इतिपाठो दृश्यते तदस्मिन् सुधियः प्रमाणं ।

नृपानुकम्पासमुपात्तसंपद्‌भोलिमृन्मंत्रिणि भूतलस्थे ॥ ४ ॥

और जिस मनुष्य की जन्म कुण्डली में लग्न से चतुर्थ घरमें बृहस्पति होवे वह पुरुष सदा सन्मान पानेवाला. नानाप्रकार के धन और सवारी आदिकों से हर्षित होता है और राजाकी कृपा से अधिक संपत्प्राप्त करने वाला होता है ॥ ४ ॥

सुहृदता च सुहृज्जनवंदितः सुरगुरौ सुतगेहगते नरः ।
विपुलशास्त्रमतिः सुखभाजनं भवति सर्वजनप्रियदर्शनः ॥५॥

और जिसके लग्न से पंचम घर में बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य सबका सुहृद और सुहृज्जनों में श्रेष्ठ अनेक शास्त्र में बुद्धि रखनेवाला. सुख का पात्र और सब जनों को प्रिय लगने वाला होता है ॥ ५ ॥

करिहयैश्च कृशांगतनुर्भवेज्जयति शत्रुकुलं रिपुगे गुरौ ।
रिपुगृहे यदि वक्रगते गुरौ रिपुकुलाद्भयमातनुते विभुः ॥ ६ ॥

और जिसके लग्न से छठे घर में बृहस्पति होवे वह मनुष्य हाथी घोडों से युक्त, अंग का दुवला, शत्रुओं के कुल को जीतने वाला होता है। और जो कहीं वही बृहस्पति वक्री होकर छठे घरमें बैठा हो तब शत्रुकुल से भय करानेवाला होता है ॥ ६ ॥

युवतिमंदिरगे सुरयाजके नयति भूपतितुल्यसुखं जनः ।
अमृतराशिसमानवचाः सुधीर्भवति चारुवपुःप्रियदर्शनः ॥७॥

और जिस मनुष्य के जन्म समय में लग्न से सप्तम भाव में बृहस्पति होवे तब बृहस्पति उसको राजा के समान सुखी. अमृत तुल्य मधुर वचन कहनेवाला. उत्तम बुद्धि से युक्त करता है और वह मनुष्य दिव्य मूर्ति, प्यारा जिसका दर्शन. ऐसा होता है॥ ७ ॥

विमलतीर्थकरश्च बृहस्पतौ निधनगे न मनःस्थिरता यदा ।
धनकलत्रविहीनकृशःसदा भवति योगपथे निरतःपरम् ॥ ८ ॥

और जिस मनुष्य की कुंडली में लग्न से अष्टम घरमें बृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य उत्तम मथुरा काशी गोवर्धन आदि तीर्थों के जाने में मन रखनें वाला.

मनमें स्थिरता रहित, धन और स्त्री से हीन, शरीरका दुःखी, और सदा योगाभ्यास करने में निरत होता है ॥ ८ ॥

सुरगुरौ नवमे मनुजोत्तमो भवति भूपतितुल्यधनी शुचिः ।
कृपणबुद्धिरतःकृपणःसुखी बहुधनप्रमदाजनवल्लभः ॥ ९ ॥

और जिसके लग्न से नवम घर में बृहस्पति बैठता है वह जातक मनुष्यों में श्रेष्ठ, राजा के समान धनवान्; पवित्रता से रहने वाला; कृपणता युक्त बुद्धि वाला, स्वयं भी बडा कृपण (कंजूस) सुख भोगने वाला, और अत्यन्त धनवान्; स्त्रियों को प्रिय होता है ॥ ९ ॥

दशममंदिरगे च बृहस्पतौ तुरगरत्नविभूषितमंदिरः ।
भवति नीतिगुणैर्बुधसंमतःपरधरांगनवर्जितधार्मिकः ॥ १० ॥

और जिसके लग्न से दशम स्थान स्थित बृहस्पति होता है वह मनुष्य अश्व रत्नों से विभूषित घर वाला, नीति गुणों से बुद्धिमान्, मनुष्यों को संमत और दूसरे मनुष्य की भूमि और स्त्री से रहित, बडा धर्मात्मा होता है ॥ १० ॥

व्रजति भूमिपतेःसमतां धनैर्निजकुलस्य विकारकरः सदा ।
सकलधर्मरतोऽर्थसमन्वितो भवति चायगते सुरयाजके ॥ ११ ॥

और जिसके जन्म समय में लग्न से ग्यारहवें घर में बृहस्पति होता है वह मनुष्य राजा के समान धनवान्, अपने कुल को सदा विकार युक्त करने वाला (किसी तरह का दाग लगाने वाला) सब धर्मों में निरत और धनवान् होता है।

शिशुदशाभवने हृदि रोगवानुचितदानपराङ्मुख एव च ।
कुलधनेन सदा कुलदांभिको भवति पापगृहे च बृहस्पतौ ॥ १२ ॥

और जिसके लग्न से बारहवें घर में बृहस्पति होता है वह मनुष्य बालक अवस्था में हृदय में रोग वाला, उचित दान करने से बहिर्मुख, कुल और धन से युक्त, और अगर पाप स्थान में स्थित बृहस्पति होजाय तो वह मनुष्य बडा दंभी (पाखण्डी) होता है ॥ १२ ॥

अथ शुक्रभावफलम् ।

जनुषि वै तनुगे भृगुनंदने भवति कार्य्यरतःपरपंडितः ।

विमलशल्यगृही रुदने रतो भवति कौतुकहा विधिचेष्टितः॥१॥

जिस पुरुष के जन्म समय में लग्नमें शुक्र होता है वह मनुष्य कार्य करने में तत्पर रहता है। अत्यन्त पंडित, अनेक कलाओं में कुशल, गृह में आसक्त खेलका बिगाड़ने वाला और भाग्यको प्रधान मानने वाला होता है॥ १॥

परधनेन धनी धनगे भृगौ भवति योषिति वित्तपरो नरः।
रजतसीसधनी गुणशैशवःकृशतनुःसुवचा बहुबालकः॥ २॥

और जिसके लग्नसे द्वितीय घरमें शुक्र बैठाहो वह मनुष्य दूसरों के धनसे धनवान्, स्त्रीको स्वतन्त्र धन देने में तत्पर, चांदी शीसेका व्यवहार करने वाला, बालकों के समान गुणों से युक्त, पतली देहवाला, मीठे वाक्य कहने वाला और अनेक बालकों से युक्त होता है॥ २॥

सहजमंदिरवर्तिनि भार्गवे प्रचुरमोहयुतो भगिनीसुते।
भवति लोचनरोगसमन्वितो धनयुतःप्रियवाक्च सदंबरः॥३॥

और जिसके लग्न से तीसरे घरमें शुक्र होता है वह मनुष्य भानजे में मोह करने वाला, नेत्रों का रोगी, धन संपन्न, प्रिय बचन कहने वाला, और उत्तम बस्त्रों का पहरने वाला होता॥ ३॥

भवति बंधुगते भृगुजे नरो बहुकलत्रसुतेन समावृतः।
सुरमते सुखमध्यवरे गृहे वसनपानविलाससमावृतः॥ ४॥

और जिसके लग्न से चतुर्थ घरमें शुक्र होता है वह मनुष्य बहुत स्त्री और पुत्रों से युक्त, अत्यन्त सुन्दर राज महल के समान घरमें रमण करने वाला, और बस्त्र तथा खाने पीने के विलास से युक्त रहता है॥ ४॥

तनयमंदिरगे भृगुनंदने बहुसुतो दुहितुर्वरपूजितः।
बहुधनो गुणवान् वरनायको भवति चापि विलासवतीप्रियः॥

और जिसके लग्न से पंचम घरमें शुक्र होता है वह मनुष्य बहुत पुत्र तथा पुत्रियों से युक्त, जामाता से पूजा पाने वाला, बड़ा धनवान्, गुणों से युक्त, नगर के नेताओं में श्रेष्ठ, और विलासशीला स्त्रियों को प्रिय होता है॥ ५॥

भवति वै कुशलोद्भवपंडितो रिपुगृहे भृगुजेऽस्तगते नरः।

जयति वैरिबलं निजतुंगगेभृगुसुते सुखदे किल षष्ठगे ॥ ६ ॥

और जिसके लग्नसे छटे घरमें शुक्र अस्त होकर बैठा हो तो वह मनुष्य दुष्ट कुल में जन्म लेकर बड़ा पंडित होता है और जिस मनुष्य के छठे घरमें उच्चका होकर शुक्र बैठा हो वह अपने शत्रु कुलका जीतने वाला और सुख पाने वाला होता है ॥ ६ ॥

युवतिमंदिरगे वसते नरो वहुसुतेन धनेन समन्वितः ।
विमलवंशभवप्रमदापतिर्भवति चारुवपुर्मुदितःसुखी ॥ ७ ॥

और जिसके लग्न से सप्तम घरमें शुक्र हो वह मनुष्य बहुत पुत्र तथा धनसे संपन्न, निर्मल कुलमें जन्म लेने वाली स्त्री का पति, उत्तम शरीर वाला और सदा प्रसन्न तथा सुख युक्त होता है ॥ ७ ॥

निधनसद्मगते भृगुजे जनो विमलधर्मरतो नृपसेवकः ।
भवति मांसप्रियःपृथुलोचनो निधनमेति चतुर्थवयस्यपि ॥८॥

और जिसके लग्न से अष्टम घरमें शुक्र होता है वह मनुष्य निर्मल धर्ममें तत्पर, राजा का सेवक, मांस खाने का प्रेमी, विशाल नेत्रवाला और चौथी अवस्था में मृत्यु पाने वाला होता है ॥ ८ ॥

विमलतीर्थपरोऽक्षतनुःसुखी सुरवरद्विजवर्णरतःशुचिः ।
निजभुजार्जितभाग्यमहोत्सवो भवति धर्मगते भृगुजे नरः।९

और जिसके लग्न से नवम घरमें शुक्र होता है वह मनुष्य उत्तम तीर्थों में स्नान करने वाला, सुन्दर शरीर वाला ,सदा सुख भोगने वाला, देवता तथा ब्राह्मणों में भक्ति रखने वाला, बडा पवित्र, अपनी भुजाओं से संचित किये धनके आनन्द से युक्त होता है ॥ ९ ॥

दशममंदिरगे भृगुवंशजे बधिरवंधुयुतःस च भोगवान् ।
वनगतोऽपि च राज्यफलं लभेत्समरसुन्दरवेषसमन्वितः ।१०।

और जिसके लग्न से दशम घर में शुक्र हो तो उस मनुष्य का भाई बेहरा होता है और स्वयं भोगों का भोगने वाला होता है और वह मनुष्य यदि बनवासी

भी होजाय तो भी राज्य फल पाने वाला और युद्ध के योग्य पुष्ट तथा सुन्दर शरीर वाला होता है ॥ १० ॥

लभनभावगते भृगुनंदने वरगुणावहितोऽप्यनलव्रतः ।
मदनतुल्यवपुःसुखभाजनं भवति हास्यरतिःप्रियदर्शनः॥११॥

और जिसके ग्यारहवें घरमें शुक्र होता है वह मनुष्य बड़ा गुणी, अग्निव्रतका धारण करने वाला (अग्नि होत्री) काम देवके समान दिव्य रूपवाला, सुखका पात्र, हास्यमें प्रीति रखने वाला और देखने में सुन्दर होता है ॥ ११ ॥

निजमितेव्ययवर्तिनि भार्गवे भवति रोगयुतःप्रथमं नरः ।
तदनु दंभपरायणचेतनःकृशबलो मलिनःसहितःसदाः ॥१२॥

और जिसके लग्नसे बारहवें घरमें शुक्र होता है वह मनुष्य प्रथम रोगसे युक्त रहता है उसके पीछे कपट करने में तत्पर चित्त वाला हीनबल और सदा मलिन रहने वाला होता है ॥ १२ ॥ इति शुक्रफलम् ॥

अथ शनिभाव फलम् ।

सततमल्पगतिर्मदपीडितस्तपनजे तनुगे खलु चाधमः ।
भवति हीनकचःकृशविग्रहो निजसुहृद्रिपुसद्मनि मानवः ॥१॥

जिस मनुष्य के लग्न में शनि होता है वह सदा धीरे २ चलने वाला अर्थात् अति दीर्घ स्त्री मद से पीडित, महा अधम, मस्तक के बालों से रहित, दुर्बल अंग और यदि शनैश्चर शत्रु के घर में हो तो अपने कुटुम्बियों में प्रेम रखने वाला होता है ॥ १ ॥

धननिकेतनवर्त्तिनि भानुजे भवति वाक्यसहःस धनान्वितः ।
चपललोचनसंचयने रतो भवति चौरपरो नियतं सदा॥ २ ॥

और जिसके लग्न से दूसरे घर में शनि होता है वह मनुष्य दूसरों के वाक्यों का सहने वाला, धनसे युक्त, चंचल नेत्र वाला और चोर होता है ॥ २ ॥

सहजमंदिरगे तपनात्मजे भवति सर्वसहोदर नाशकः ।
तदनुकूलनृपेण समो नरःस्वसुतपुत्रकलत्रसमन्वितः ॥ ३ ॥

और जिसके लग्न से तीसरे घर में शनि होता है वह मनुष्य अपने सब सहोदर भाइयों का नाश करने वाला होता है और कुल के राजा के समान पुत्र तथा कलत्र से युक्त रहता है ॥ ३ ॥

वंधुस्थितो भानुसुतो नराणां करोति बंधोर्निधनं च रोगी ।
स्त्रीपुत्रभृत्येन विनाकृतश्च ग्रामांतरे चासुखदःस वक्री ॥ ४ ॥

और जिसके चौथे घर में शनि बैठा हो तो उसके बन्धुओं को मारने वाला होता है और वह मनुष्य स्वयं सदा रोगी, स्त्री पुत्र और भृत्यों से अनादर पाने वाला होता है और यदि वक्री होकर चतुर्थ भवन में शनि बैठा हो तब ग्रामांतर में दुःख देने वाला होता है ॥ ४ ॥

शनैश्चरे पंचमशत्रुगेहे पुत्रार्थहीनो भवतीह दुःखम् ।
तुंगे निजे मित्रगृहे च पंगौ पुत्रैकभागी भवतीति कश्चित् ।५।

और जिसके लग्न से पंचम घर में शनि होता है वह मनुष्य पुत्र से हीन, धन से हीन, दुःख देने वाला होता है यदि वही शनि उच्चका हो या मित्र के घर का हो तो स्वयं लंगडा होकर एक पुत्र वाला होता है ऐसा किसी आचार्य का मत है

नीचे रिपोर्नीचकुलक्षयं च षष्ठं शनिर्गच्छति मानवानाम् ।
अन्यत्र शत्रून्विनिहंति तुंगी पूर्णार्थकामार्ज्जनतां ददाति ।६।

और जिसके लग्न से छटे घर में नीच का १ होकर या शत्रुक्षेत्री ५ होकर शनि बैठता है तब कुल का क्षय करने वाला होता है और यदि शनि उच्च का होकर या मित्रक्षेत्री, स्वक्षेत्री होकर छटे घर में बैठा हो तो वह मनुष्य शत्रुओं को मारने वाला तथा धन और कामनाओंकी सिद्धिको प्राप्त करने वाला होताहै । अर्थ कामों से पूर्ण करता है ॥ ६॥

विश्रामभूतां विनिहंति जायां सूर्यात्मजःसप्तमगश्च रोगान् ।
धत्तेपुनर्दंभधरांगहीनं मित्रस्य वंशाद्रहितासुहृच्च ॥ ७ ॥

और जिस के लग्न से सप्तम घर में शनि बैठा हो तो उस मनुष्य की विश्राम रूप स्त्री को मार डालता है और अनेक रोगों को उत्पत्ति करता है और वह मनुष्य

बडा अभिमानी, अंग हीन, मित्र के वंश की कन्या के साथ मित्रता करने वाला होता है ॥ ७ ॥

शनैश्चरे चाष्टमगे मनुष्यो देशांतरे तिष्ठति दुःखभागी।
चौर्यापराधेन च नीचहस्ते पंचत्वमाप्नोत्यथ नेत्ररोगी ८ ॥

और जिस के लग्न से अष्टम घर में शनि होता है वह मनुष्य दुःख भागी होकर देशांतर में रहने वाला होता है और चोरी के अपराध से नीच के हाथ से मृत्यु पाने वाला और सदा नेत्र रोगी रहता हैं ॥ ८ ॥

धर्मस्य पंशुर्बहु दंभकारी धर्मार्थहीनः पितृवंचकश्च ।
मदानुरक्तो निधनी च रोगी पापिष्ठभार्यापरहीनवीर्यः ॥ ९॥

और जिस के लग्न से नवम घर में शनि बैठा होता है वह मनुष्य धर्म विषय में पाखण्ड करने वाला धर्म तथा अर्थ से हीन, पिता के साथ कपट करने वाला, मद से युक्त, धन रहित, रोगी, पापिनी स्त्री में तत्पर, और हीन वीर्य होता है ।

शनैश्चरे कर्म गृह स्थितेऽपि महाधनी नृत्यजनानुरक्तः ।
प्राप्तप्रवासे नृपसद्मवासी न शत्रुवर्गाद्भयमेतिमानी ॥ १० ॥

और जिस के लग्न से दशम घर में शनि होता है वह मनुष्य बडा धनवान्; नृत्य करने वाले जनों में अनुराग करने वाला; परदेश में जाकर राजा के घर का रहने वाला, बडा अभिमानी और शत्रुवर्ग से कभी भय नहीं पाता है ॥ १० ॥

सूर्यात्मजे चायगते मनुष्योधनी विमृश्यो बहुभोग्य भागी ।
शीतानुरागी मुदितःसुशीलःस बालभावे भवतीति रोगी॥ ११॥

और जिस के लग्न से ग्यारहवें घर में शनि होता है वह मनुष्य धनवान्, विचार पूर्वक काम करने वाला, अनेक भोगों का भागी, शीत प्रकृति वाला, सदा प्रसन्न, बडा सुशील, और बालकपन में रोगी होता है । ११ ॥

व्यये शनौ पंचगणाधिनाथो गदान्वितो हीनवपुःसुदुःखी ।
जंघाव्रणी क्रूरमतिः कृशांगो वधे रतः पक्षिगणस्य नित्यम् ॥१२॥

और जिसके लग्न से बारहवें घर में शनि होता है वह मनुष्य पंचायत का

बालिक (सरपंच) होता है रोगी, हीनांग अत्यन्त दुःखी, जांघ में घाव से युक्त, बडा क्रूर बुद्धि, दुर्बल अंग वाला और नित्य पक्षियों का मारने वाला होता है।

इति शनि फलम्।

अथ राहुफलम्।

रोगी सदा दैवरिपौ तनुस्थे कुले च धारी बहुजल्पशीलः।
रक्तेक्षणःपापरतः कुकर्मरतः सदा साहसकर्मदक्षः ॥ १ ॥

जिस मनुष्य के लग्न में राहु होता है वह मनुष्य सदा रोगी; कुलका धारण करने वाला; बडा बकबादी, लाल नेत्र वाला, अत्यन्त पापी, चोरी आदि बुरे कामों को करने वाला, साहस कर्म करने में हर समय तत्पर और बड़ा चतुर होताहै॥

राहौ धनस्थे कृतचौरवृत्तिः सदाविलिप्तौ बहुदुःखभागी।
मत्स्येन मांसेन सदा धनी च सदा वसेन्नीचगृहे मनुष्यः।२।

और जिसके लग्न से द्वितीय घरमें राहु होता है वह मनुष्य चोरी करने वाला, सदा विलाप करने वाला, बहुत दुःखों का भोगने वाला, मत्स्य मांससे धन संपादन करने वाला, और सदा नीचों के घरमें रहने वाला होता है॥ २॥

भ्रातुर्विनाशं प्रददाति राहुस्तृतीयगेहे मनुजस्य देही।
सौख्यं धनं पुत्रकलत्रमित्रं ददाति तुंगी गजवाजिभृत्यान्।३।

और जिसके लग्न से तीसरे घरमें राह हो तो उस मनुष्य के भाई का मारने वाला होता है सुख भोगने वाला,धन पुत्र कलत्र मित्र इन से युक्त रहता है और यदि राहु अपने उच्च स्थान में हो तो हाथी घोडे तथा नौकरों को देने वाला होता है॥ ३॥

राहौ चतुर्थे धनबंधुहीनो ग्रामैकदेशे वसति प्रकृष्टः।
नीचानुरक्तः पिशुनश्च पापी पुत्रैकभागी कृशयोषिदासाम् ४

और जिसके लग्न से चतुर्थ घरमें राह होता है वह मनुष्य धन और बन्धु से रहित, गाम के एक किनारे पर घर बनाकर रहने वाला, नीच मनुष्यों से स्नेह करने वाला, अत्यन्त चुगलखोर, बड़ा पापी, एक कन्या वाला; दुर्बल स्त्री वाला होता है॥ ४॥

राहुःसुतस्थःशशिनानुगो हि पुत्रस्य हर्ता कुपितः सदैव ।
गेहांतरे सोपि सुतैकमात्रं दत्ते प्रमाणं मलिन कुचैलं ॥ ५ ॥

और जिसके लग्न से पंचम घरमें राहु चन्द्रमा से युक्त हो तो पुत्रका नाश करने वाला है और सदा क्रोध युक्त रहता है यदि चन्द्र युक्त राहु किसी अन्य स्थान में हो तो भी एकही पुत्रसे युक्त करता है सो भी वह पुत्र अत्यन्त मलिन और फटे हुए कपडे पहरने वाला होता है ॥ ५ ॥

षष्ठे स्थितःशत्रुविनाशकारी ददाति पुत्रं च धनानि भोगान् ।
स्वर्भानुरुच्चैरखिलाननर्थान्हंत्यन्ययोषिद्गमनं करोति ॥ ६ ॥

और जिसकी कुण्डली में छठे घरमें राहु बैठा हो तो वह शत्रुओं का नाश करने वाला और धन, पुत्र तथा भोगों का देने वाला होता है और यदि वही राहु उच्चका होकर बैठा हो तो अनेक अनर्थों का नाश करने वाला होता है और वह पुरुष पर स्त्री से अवश्य गमन करता है ॥ ६ ॥

जायास्थराहुर्धनहानिजायां ददाति नार्यो विविधांश्च भोगान् ।
पापानुरक्तां कुटिलां कुशीलां ददाति शेषैर्बहुभिर्युतश्च ॥ ७ ॥

और जिसके सप्तम घर में राहु होता है तो वह धनकी हानि से युक्त स्त्री प्राप्त करने वाला, तथा अनेक भोगों का देने वाला होता है और यदि अनेक ग्रहों के साथ राहु सप्तम घरमें हो तो वह महा पापिनी, कुटिला और कुशीला भार्या का देने वाला होता है ॥ ७ ॥

राहुःसदा चाष्टममंदिरस्थो रोगान्वितं पापरतं प्रगल्भम् ।
चौरं कृशं कापुरुषं धनाढ्यं मायामतीतं पुरुषं करोति ॥ ८ ॥

और यदि राहु लग्न से अष्टम घरमें स्थित हो तो उस मनुष्यको सदा रोगी पाप में निरत, बडा धृष्ट, चोरी करने वाला, अंगसे दुर्बल, महा कायर, धनसे सम्पन्न और बडा मायावी करता है ॥ ८ ॥

धर्मस्थिते चंद्ररिपौ मनुष्यश्चांडालकर्मा पिशुनः कुचैलः ।
ज्ञातिप्रमोदे निरतश्च दीनःशत्रोःकुलाद्भीतिमुपैति नित्यम् ॥९॥

जिसकेलग्न से नवम घर में राहु होता है वह मनुष्य चाण्डाल के समान कर्म करने वाला, अत्यन्त चुगलखोर, जीर्ण फटे कपडे पहरने वाला, ज्ञाति जनोंकी प्रसन्नता करने वाला और बड़ा दीन होता है और वह शत्रु कुलसे नित्य भय भीत रहता है ॥ ९ ॥

कामातुरःकर्मगते चराहौपरार्थलोभी मुखरश्च दीनः ।
म्लानो विरक्तःसुखवर्जितश्च विहारशीलश्चपलोऽतिदुष्टः॥१०॥

और जिसके लग्न से दशम घरमें राहु बैठता है वह मनुष्य कामदेव से आतुर दूसरे के धनसें इच्छा रखने वाला, सब कामोंमें अग्रणी (मुखञ्चर) अत्यन्त दीन, मलिन, वैराग्य युक्त, सुखसे रहित, खेलने में मन रखने वाला बड़ा चपल, और बडा दुष्ट होता है ॥ १० ॥

आयस्थिते सोमरिपौ मनुष्यो दांतो भवेन्नीलवपुःसुमूर्तिः ।
वाचाल्पयुक्तःपरदेशवासी शास्त्रार्थवेत्ता चपलो निलज्जः॥११॥

जिसके लग्नसे ग्यारहवें घरमें राहु हो वह मनुष्य इन्द्रियों का जीतने वाला, श्याम अंग वाला, देखने में सुन्दर, थोड़ा बोलने वाला, परदेश का निवासी, शास्त्रों के अर्थों का जानने वाला, बड़ा चपल और बडा निर्लज्ज होता है ॥ ११ ॥

व्यये स्थिते सोमरिपौ नराणां धर्मार्थहीनो बहुदुःखतप्तः ।
कांताविमुक्तश्च विदेशवासी सुखैश्च हीनःकुनखी कुवेषः॥१२॥

और जिसके लग्न से बारहवें घरमें राहु होता है तब वह मनुष्य धर्म अर्थ से रहित, अनेक दुःखों का भोगने वाला, स्त्रीसे रहित, परदेश का रहने वाला, सुखोंसे हीन, खराव नख वाला, और बुरे वेषसे रहने वाला होताहै ॥१२॥ इति राहुफलम्॥

अथ केतुभावफलम् ।

तनुस्थः शिखी बान्धवक्लेशकर्ता तथा दुर्जनेभ्यो भयं व्याकुलत्वम् । कलत्रादिचिन्ता सदो द्वेगिता च शरीरे व्यथा नैकधा मारुती स्यात् ॥ १ ॥

यदि किसी की कुंडली के लग्न में केतु विद्यमान हो तो वह मनुष्य वान्धवों

को कष्ट देने वाला होता है तथा दुर्जनों से भय और मन में व्याकुलता रहती है, स्त्री पुत्र आदि के विषय में चिंता और सर्वदा कार्यों में घबडाहट होती है और शरीर में पीडा युक्त तथा वात रोगों से आक्रान्त रहता है ॥ १ ॥

धने केतुरव्यग्रता किंनरेशाद्धने धान्यनाशो मुखे रोगकृच्च । कुटुम्बाद्विरोधो वचः सत्कृतं वा भवेत्स्वे गृहे सौम्यगेहेऽतिसौख्यम् ॥ २ ॥

जिसके जन्म समय में केतु दूसरे भाव में हो तो वह सर्वदा व्यग्रता रहित होता है तथा किसी दुष्ट राजा के द्वारा धन में से धान्य के नाश से युक्त, मुख में रोग युक्त, और अपने कुटुम्ब से विरोध करने वाला तथा वार्तालाप में सत्कार पाने वाला होता है यह फल केतु के स्वगृह में होने पर होता है यदि केतु सौम्य गृह के घर में हो तो अत्यन्त सुखदायक होता है ॥ २ ॥

शिखी विक्रमे शत्रुनाशं विवादं धनं भोगमैश्वर्यतेजोऽधिकं च । सुहृद्वर्गनाशं सदा बाहुपीड़ा भयोद्वेगचिन्ताकुलत्वं विधत्ते ॥ ३ ॥

यदि किसी की कुंडली में तीसरे घर में केतु हो तो उसके शत्रुओं का नाश तथा विवाद (झगडा) करने वाला होता है, धनवान्, अनेक भोग विलास करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा बडा तेजस्वी होता है, मित्रों का नाश हो और हमेशा बांह में पीडा युक्त रहे तथा डर के कारण उद्वेग चिंता से व्याकुल रहता है ।

चतुर्थे न मातुः सुखं नो कदाचित् सुहृद्वर्गतः पैतृकं नाशमेति । शिखी बन्धुवर्गात्सुखं स्वोच्चगेहे चिरं नो वसेत्स्वे गृहे व्यग्रता चेत् ॥ ४ ॥

जिसके चतुर्थ घर में केतु होता है उसको कभी माता का सुख नहीं मिलता अर्थात् उसकी माता बाल्यावस्था में ही मरजाती है, मित्र वर्गों के सुख से हीन तथा पिता द्वारा कमाये हुए धन से हीन रहता है । यदि वही केतु अपने उच्च घर में स्थित हुआ चतुर्थ घर में हो तो अपने बान्धवों से सुख पावे और अधिक समय तक परदेश में रहता हुआ सदा व्यग्रता से युक्त रहता है ॥ ४ ॥

यदा पंचमे राहुपुच्छं प्रयाति तदा सोदरे घातवातादिकष्टम् । स्वबुद्धिर्व्यथा संततं स्वल्पपुत्रः सदासो भवेद्वीर्ययुक्तो नरोऽपि ॥ ५ ॥

यदि किसी की जन्म कुंडली में केतु पंचम भाव गत हो तो वह मनुष्य सहोदर भाइयों में परस्पर लडाई के कारण तथा वायु के अति प्रकोप के कारण कष्ट युक्त हो अपनी बुद्धि के कारण व्यथा युक्त हो थोडे पुत्र वाला, नौकरों से युक्त तथा अनेक प्रकार के बल से पूर्ण होता है ॥ ५ ॥

तमः षष्ठभावे गते षष्ठभावे भवेन्मातुलान्मानभङ्गोरिपूणाम् । विनाश श्चतुष्पात्सुखं तुच्छचित्तं शरीरे सदानामयं व्याधि-नाशः ॥ ६ ॥

यदि किसी की जन्मकुंडली में छटे घर में केतु हो तो अपने मामा द्वारा मानहानि (अनादर) हो, वैरियों का नाश हो, चौपायों के कारण सदा सुखी रहे, नीच प्रकृति वाला; शरीर में किसी विकार से युक्त हो, तथा उसकी सब व्याधियों का नाश होजाता है ॥ ६ ॥

शिखी सप्तमे भूयसी मार्गचिन्ता निवृत्तःस्वनाशोऽथवा वारिभीतीः । भवेत्कीटगःसर्वदा लाभकारी कलत्रादिपीडा व्ययो व्यग्रता च ॥ ७ ॥

जिसकी जन्म कुंडली में सप्तम भावस्थ केतु होता है उसको मार्ग चलने की अधिक चिंता रहती है, यदि जाना बन्द होजाय तो अपने धन का नाश हो या जल से भय हो। यदि वही केतु वृश्चिक राशि पर बैठा हुआ सप्तम भाव गत हो तो सर्वदा लाभ करने वाला, स्त्री पुत्र आदि को पीडा करने वाला, अधिक खर्च करने वाला तथा व्यग्रता करने वाला होता है ॥ ७ ॥

गुदं पीड्यतेऽर्शादिरोगैरवश्यं भयं वाहनादेः स्वद्रव्यस्य रोधः । भवेदष्टमे राहुपुच्छेऽर्थलाभः सदा कीटकन्याज-गोयुग्मकेतुः ॥ ८ ॥

यदि किसी की जन्मकुंडली में केतु अष्टम घर में हो तो वह मनुष्य बवासीर भगन्दर आदि रोगों से पीडित गुदा वाला, हाथी घोडे आदि सवारी से गिरने का डर रहे; और अपने धन की रुकावट से युक्त रहता है। यदि वही केतु मेष, वृष, मिथुन, कन्या तथा वृश्चिक इन में से किसी राशि में स्थित होता हुआ अष्टम भाव में हो तो सर्वदा धन का लाभ हुआ करता है ॥ ८ ॥

शिखी धर्मभावे यदा क्लेशनाशःसुतार्थी भवेन्म्लेच्छतो भाग्यवृद्धिः। सहोत्थव्यथां वाहुरोगं विधत्ते तपोदानतो हास्य-वृद्धिं तदानीम् ॥ ९ ॥

जिसके जन्म काल में केतु नवम भाव गत हो तो वह मनुष्य दुःखों से हीन हो, पुत्र की इच्छा किया करे, नीच जातियों के पुरुषों द्वारा भाग्य की वृद्धि हो, अपने सगे भाई बहन के न होने से कष्ट युक्त हो, बांह में किसी प्रकार के रोग से युक्त हो और इन कुचेष्टाओं को सुधारने के निमित्त दान-नियमादि करने पर उपहास को प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य केतुस्तदा दुर्भगं कष्टभाजं करोति। तदा वाहने पीडितं जातु जन्म वृषाजालिकन्यासु चेच्छत्रु-नाशम् ॥ १० ॥

जिसकी जन्मकुंडली में केतु दशमभाव गत हो तो उस बालक को पिता द्वारा सुख नहीं मिलता, स्वयं कुरूप और अनेक कष्टों का पात्र होता है तथा सवारी के कारण दुःख पाने वाला होता है। यदि वही केतु मेष, वृष, कन्या और वृश्चिक इनमें से किसीमें स्थित हुआ दशम भावगत हो तो शत्रुओं का नाश करताहै

सुभाग्यःसुविद्याधिको दर्शनीयः सुगात्रः सुवस्त्रः सुतेजाश्च तस्य। दरैः पीड्यते सन्ततिर्दुर्भगा च शिखी लाभगः सर्वलाभं करोति ॥ ११ ॥

जिस की जन्मकुंडली में ग्यारहवें स्थान में केतु होता है वह भाग्यशाली, अधिक विद्याओं का जानने वाला, दर्शनीय, सुन्दर शरीर वाला, शाल, दुशाले आदि सुन्दर वस्त्रों से पूर्ण तथा बडा प्रतापी होता है। स्वयं डर से व्याकुल रहे

तथा उसकी सन्तान भाग्यहीन हो और उसको संपूर्ण वस्तुओं का लाभ करता है ॥

शिखी रिष्फगो वस्तिगुह्यांघ्रिकोपी रुजा पीडनं मातुलान्नैव शर्म । सदा राजतुल्यं नरं सद्व्ययं तद्रिपूणां विनाशं-रणेऽसौ करोति ॥ १२ ॥

जिसकी जन्म कुण्डली में केतु द्वादश स्थान में हो तो उसके पेड़ू, गुदा, लिंग चरणों में पीड़ा हुआ करती है और किसी रोग से उसका शरीर पीडित रहता है, मामा से किसी वस्तु की प्राप्ति नहीं होती, तथा वह राजा के समान भाग्यशाली होता है और अच्छे कार्यों में व्यय करने वाला तथा युद्धभूमि में शत्रुओं का नाश करने वाला होता है ॥ १२ ॥

अथ द्विग्रही योग फलम् ।

स्त्रीवशः कूटकर्मा च दुर्विनीतः क्रियादृढः ।
विक्रमी लघुचेताश्च चंद्रसूर्यसमागमे ॥ १ ॥

जिस पुरुषकी जन्म कुंडली में सूर्य और चन्द्रमा दोनों एक घरमें बैठे हों वह मनुष्य स्त्रीके वशमें रहे, कपट कर्म करने वाला, बडा अनम्र, काम करने में बडा दृढ, बड़ा पराक्रमी और अल्प मन वाला होता है ॥ १ ॥

सूर्यमंगलसंयोगे तेजस्वी पापमानसः ।
मिथ्यावादी च मूर्खश्च बंधुनिष्ठो बली नरः ॥ २ ॥

और जिसकी कुण्डली में सूर्य, मंगल दोनों एक घरमें होते हैं वह मनुष्य बडा तेजस्वी, पाप में मन रखने वाला, मिथ्या बोलने वाला, बड़ा मूर्ख, भाई बन्दों में प्रेम करने वाला और बड़ा बलवान् होता है ॥ २ ॥

विद्वानार्यो राजमान्यः सेवाशीलः प्रियंवदः ।
यशस्वी च स्थिरद्रव्यो बुधसूर्यसमागमे ॥ ३ ॥

और जिसकी कुण्डली में सूर्य और बुध दोनों एक घरमें बैठे हों वह मनुष्य बडा विद्वान्, राजाओं से मान पाने वाला, देवता और ब्राह्मणों की सेवा करने में मन रखने वाला, प्रिय वचन कहने वाला, बडा यशस्वी और स्थिर धनसे युक्त होता है ॥ ३ ॥

नृपमान्यो धर्मनिष्ठो मित्रवानर्थवानपि ।
उपाध्यायोऽतिविख्यातो योगे जीवार्कयोर्भवेत् ॥ ४ ॥

और जिसकी कुंडली में सूर्य और गुरु दोनों एक घरमें बैठे हों वह मनुष्य राजाओं से सत्कार पाने वाला, स्वधर्म में निष्ठा रखने वाला, मित्रवान्, धनवान्, विद्या पढाने वाला, और सर्वत्र विख्यात होता है ॥ ४ ॥

शस्त्रप्रहारो बन्धश्च रंगज्ञो नेत्रदुर्लभः ।
स्त्रीसंगलब्धद्रव्यश्च सक्तः शुक्रार्कसंगमे ॥ ५ ॥

और जिसकी जन्मकुंडली में सूर्य और शुक्र दोनों एक घरमें बैठे हों वह मनुष्य शस्त्र से प्रहार पाने वाला, जेलमें बन्धन पाने वाला, नाट्यशाला की रहस्य भरी बातों के जानने वाला, कमजोर आंखों वाला, पर स्त्रियों के साथ संगम करने से द्रव्य प्राप्ति करने वाला, अतएव परस्त्रियों में फंसा हुआ रहे ॥ ५ ॥

विद्वानपि क्रियानिष्ठो धातुज्ञो वृद्धचेष्टितः ।
प्रणष्टसुतदारश्च शनिसूर्यसमागमे ॥ ६ ॥

और जिसकी जन्मकुंडली में सूर्य और शनि दोनों एक राशि में बैठेहों वह मनुष्य विद्वान् हो तब भी क्रिया में निष्ठा रखने वाला, धातुका जानने वाला, वृद्ध पुरुषों की तरह बरताव करने वाला और स्त्री तथा पुत्र से रहित होता है ॥ ६ ॥

चंद्रमंगलसंयोगे रक्तपीडातुरो भवेत् ।
मृच्चर्मधातुशिल्पी च धनी शूरो रणे भवेत् ॥ ७ ॥

और जिसकी जन्मकुंडली में चन्द्रमा और मंगल दोनों एक घरमें बैठे हों वह मनुष्य रक्त की पीडा से व्याकुल मृत्तिका धातु तथा चमडे की कारीगरी जानने वाला, धनवान् और रणमें शूरवीर होता है ॥ ७ ॥

स्त्रीसंसक्तः सुरूपश्च काव्ये च निपुणोनरः ।
धनी गुणी हास्यवक्त्रो बुधेन्द्वो र्धार्मिकोऽन्वये ॥ ८ ॥

और जिसकी कुंडली में चंद्रमा और बुध दोनों एक घरमें बैठे हों वह मनुष्य स्त्रीमें अति प्रसक्त, रूपसे सुन्दर, कविता करनेमें बडा निपुण (चतुर) धनवान्, गुणवान्, सदा हंसमुख, बडा विद्वान् और अपने कुलमें धर्मात्मा होता है ॥ ८ ॥

देवद्विजार्चासक्तश्च बंधुमान्यकरो धनी ।
दृढप्रीतिःसुशीलश्च जीवचंद्रसमागमे ॥ ९ ॥

और जिसकी जन्मकुंडली में चंद्रमा और बृहस्पति दोनों एकघरमें स्थित होतेहैं वह मनुष्य देवता और ब्राह्मणों की पूजा करनेमें मन रखने वाला बन्धु जनोंके मान करने वाला, धनवान्, दृढ प्रीति करने वाला और बडा (सुशील अच्छे स्वभाव वाला) होता है ॥ ९ ॥

कुशलो विक्रयादौ च बृषलःकलहप्रियः ।
अल्पवस्त्रादिसंयुक्तः शशिभार्गवसंगमे ॥ १० ॥

और जिसकी कुंडली में चंद्रमा और शुक्र दोनों एक घरमें हों वह मनुष्य चीजों के बेचने खरीदनेमें होशियार, शूद्र वृत्तिवाला, कलह (लड़ाई झगड़ा) करने वाला तथा अल्पवस्त्रादिकों से युक्त होता हैं ॥ १० ॥

गजाश्वपालो दुःशीलो वृद्धस्त्रीरमणो नरः ।
वेश्याधनोऽल्पपुत्रश्च शनिचंद्रसमागमे ॥ ११ ॥

और जिसकी कुंडली में चंद्रमा और शनि दोनों एक घरमें होते हैं वह मनुष्य हाथी घोड़ों का पालन करने वाला, खोटे स्वभाव वाला, वृद्धा स्त्रीसे संग करने वाला, वैश्या से धन पाने वाला और अल्पपुत्रवाला होता है ॥ ११ ॥

भूपुत्रबुधसंयोगे निर्धनो विधवा पतिः ।
स्त्रीदुर्भगःकणप्रीतः स्वर्णलोहप्रकीर्णकः ॥ १२ ॥

और जिस जातक की कुंडली में मंगल बुध दोनों एक घरमें बैठे हों वह मनुष्य निर्धन (कंगाल) विधवा का पति, दुर्भगा स्त्री वाला कणवृत्ति, करने वाला और सोने लोहे की जीविका करने वाला होता है ॥ १२ ॥

मेधावी शिल्पशास्त्रज्ञःश्रुतज्ञो वाग्विशारदः ।
अश्वप्रियःप्रधानश्च जीवमंगलसंगमे ॥ १३ ॥ मं. बृ. ॥

और जिसकी कुंडली में मंगल, गुरु दोनों ग्रह एकही घरमें बैठे होते हैं वह वह मनुष्य बडा बुद्धिमान्, शिल्पशास्त्र का जानने वाला, श्रवण मात्र से ही बातको याद रखने वाला; वाक्य कहने में चतुर घोडों से प्यार करने वाला; और सबों में प्रधान होता है ॥ १३ ॥

गुणप्रधानो गणको द्यूतानृतरतःशठः ।
परदाररतो मान्यः शुक्रमंगलसंगमे ॥ १४ ॥ मं. शु. ॥

और जिसकी कुंडली में शुक्र तथा मंगल दोनों एक स्थान में बैठते हैं वह मनुष्य गुणों द्वारा पुरुषों में प्रधान ज्योतिषी, जूआ खेलने में और झूंठ बोलने में निरत, बडा शठ, परस्त्रियों में आसक्त और सबों में मान्य होता है ॥ १४ ॥

वाग्मींद्रजालदक्षश्च विधर्मी कलहप्रियः ।
विषमद्यप्रपञ्चाढ्यो मंदमंगलसंगमे ॥ १५ ॥ मं. श. ॥

और जिसकी कुंडली में मंगल और शनि एक घरमें बैठे होते हैं वह मनुष्य प्रशस्तवाणी कहने वाला, इन्द्रजाल विद्याका जानने वाला, अपने धर्म को छोडकर अन्य धर्म को मानने वाला; कलह का प्रिय, विश्वासघात करने वाला, विष तथा शराब के झगडों में रहने वाला होता है ॥ १५ ॥

बुधस्य गुरुणा योगे नृत्यवाद्यविचक्षणः ।
धैर्ययुक्तःपंडितश्च सुखी भवति मानवः ॥ १६ ॥ बु. बृ. ॥

और जिसकी कुंडली में बुध तथा बृहस्पति दोनों एक ही घरमें बैठे हों तो वह मनुष्य नाचने गानेमें कुशल, धैर्यवान्,पंडित और सदा सुखी होता है ॥ १६ ॥

बुधभार्गवयोर्योगे नयज्ञो बहुशिल्पवित् ।
धनी सुवाक्यो वेदज्ञो गीतज्ञो हास्यलालसः ॥ २० ॥ बु. शु.

और जिसकी कुंडली में बुध और शुक्र दोनों एक घरमें बैठे हों तो वह मनुष्य नीति शास्त्र जानने वाला अनेक प्रकारकी कारीगरी में कुशल, धनवान्, सुन्दर वाक्य बोलने वाला, वेदका जानने वाला, गीतका जानने वाला और हंसी में लालसा रखने वाला होता है ॥ १७ ॥

क्षीणो गमनशीलश्च निरुपायो जगत्कलिः ।
शुभवाक्यःकार्यदक्षो भानुसूनुबुधान्वये ॥ १८ ॥ बु. श. ॥

और जिसकी कुंडली में बुध और शनि दोनों एक घरमें बैठे हों तो वह मनुष्य दुर्बलांग, चलने के स्वभाव वाला; उपाय रहित, सब से कलह करने वाला, सुन्दर वाक्य कहने वाला तथा काम करने में चतुर होता है ॥ १८ ॥

गुरुभार्गवसंयोगे दिव्यदारो महाधनी ।
धर्मास्तिकप्रमाणज्ञो विद्याजीवी च जायते ॥ १९ ॥ बृ. शु.॥

और जिसकी कुण्डली में बृहस्पति और शुक्र दोनों एकत्र बैठे हों तो वह मनुष्य सुन्दर स्त्री वाला, धनवान्, धर्म में आस्तिक, प्रमाण जानने वाला और विद्या से जीविका करने वाला होता है ॥ १९ ॥

वृत्तिसिद्धिश्च शूरश्च यशस्वी नगराधिपः ।
श्रेणीसेनाभिमुख्यश्च गुरुमंदान्वये नरः ॥ २० ॥ बृ. शु ॥

और जिसकी कुंडली में बृहस्पति और शनि दोनों एक घर में बैठते हैं वह मनुष्य जीविका प्राप्ति से युक्त, बडा शूरवीर, बडा यशस्वी, नगर का स्वामी, नगर के जनों में और सेना के मनुष्यों में मुख्य होता है ॥ २० ॥

शुक्रेण च शनेर्योगे मत्तःपशुपतिर्नरः ।
दारुदारणदक्षश्च क्षाराम्लादिक शिल्पवित् ॥ २१ ॥

और जिसकी कुंडली में शुक्र शनि दोनों एकत्र घर में बैठे होते हैं वह मनुष्य सदा मतवाला, पशु पालन करने वाला, बढ़ई के कामों में चतुर, खारी तथा खट्टे पदार्थों का प्रेमी तथा कारीगरी जानने वाला होता है ॥ २१ ॥ इति ॥

अथ त्रिग्रहयोगफलम् ।

यंत्राश्वकूटकुशलोऽसृग्वेदनापीडितोऽतिशूरश्च ।
आदित्यचंद्रभौमैरेकस्थैर्जायते सुततो विहीनः ॥ १ ॥ सू. चं. मं.

जिसकी कुंडली में सूर्य, चंद्र, मंगल एकत्र बैठते हों वह मनुष्य यंत्र विद्या और अस्त्र विद्या में कुशल, रुधिर की वेदना से पीडित, बडा शूरवीर और पुत्र रहित होता है ॥ १ ॥

विद्याधनरूपयुतःकाव्यकथाकविसभाप्रियःसधनः ।
नृपसेवकःप्रियवागेकस्थे सूर्यचंद्रबुधे ॥ २ ॥ सू. चं. बु. ॥

और सूर्य, चंद्रमा, बुध यह तीनों ग्रह जिसकी कुण्डली में एकत्र बैठे हों वह मनुष्य विद्या धन तथा रूप से युक्त, काव्य करने कथा सुनने में कवि, सभा को प्रिय, धनवान्, राजा का सेवक, और प्रिय वाक्य कहने वाला होता है ॥ २ ॥

धर्मपरो नृपसचिवो दृढमेधा मानकृच्च बंधूनाम् ।
देवद्विजार्चनतो रविशशिजीवैः सहैकस्थैः ॥ ३ ॥ सू. चं. वृ. ॥

और चन्द्रमा सूर्य गुरु जिसके एकत्र बैठे होते हैं वह मनुष्य धर्म में तत्पर, राजाका मंत्री, दृढबुद्धि वाला, भाई बन्दों का मान करने वाला और देवता तथा ब्राह्मणों की पूजा करने वाला होता है ॥ ३ ॥

सुवपुः क्षिप्तसपत्नो नरपतिसुभगः सदा प्रवरतेजाः ।
रविशशिशुक्रैः सहितैर्भवति नरो दंतविकृतश्च ॥ ४ ॥

और जिसकी कुण्डली में सूर्य चन्द्रमा शुक्र एकत्र होकर बैठते हैं वह मनुष्य सुन्दर शरीरवाला; शत्रुजनों का मारने वाला, राजा के समान सुन्दर, बड़ा तेजस्वी, और दांतों में विकार युक्त होता है ॥ ४ ॥

धर्मपरो विगतधनो गजाश्वपरिपालकः सुकर्मरतः ।
रविरवितनयशशांकैरेकस्थैर्विगतशीलश्च ॥ ५ ॥

और जिसके रवि, शनि; चन्द्र यह तीनों ग्रह एकत्र बैठे हों तो वह मनुष्य धर्म में तत्पर, दरिद्र, हाथी घोडों का पालन करने वाला; सत्कर्म करने वाला, और शील रहित होता है ॥ ५ ॥

भानुभौमबुधैर्योगे ख्यातः साहसिको नरः ।
निष्ठुरो गतलज्जश्च धनस्त्रीपुत्रमंडितः ॥ ६ ॥

और जिसके सूर्य, मंगल और बुध तीनों एकत्र होते हैं वह मनुष्य सर्वत्र विख्यात; बडा साहसी निष्ठुर, निर्लज्ज, तथा धन और पुत्रोंसे सुशोभित होताहै ॥

जीवसूर्यकुजैर्योगे प्रचंडः सत्यभाषणः ।
राजमंत्री नरश्चापि सुवाक्यो निपुणो भवेत् ॥ ७ ॥

और जिसकी कुंडली में गुरु सूर्य मंगल तीनों एकत्र होते हैं वह मनुष्य बडा भारी मूर्ख; सत्यवक्ता, राजा का मंत्री मीठे वाक्य बोलने वाला, और बडा निपुण होता है ॥ ७ ॥

शुक्रभौमार्कसंयोगे सुभगो नयनातुरः ।

कुशीलो वत्सलो दक्षो विषयासक्तमानसः ॥ ८ ॥

और शुक्र मंगल सूर्य जिसकी कुंडली में एक घर में बैठे होते हैं वह मनुष्य स्वरूपवान्, नेत्रों का रोगी, दुष्ट स्वभाव वाला, वत्सल चतुर और अत्यन्त विषयी मन वाला होता है ॥ ८ ॥

शनिसूर्यकुजैर्योगे मूर्खो गोधनवर्जितः ।
रोगार्तःस्वजनैर्हीनो विकलःकलहाकुलः ॥ ९ ॥

और शनि सूर्य मंगल एकत्र होकर जिसकी कुंडली में बैठते हैं, वह मनुष्य मूर्ख, गौ धन से हीन, रोग से आर्त, स्वजनों से रहित, विकल और कलह से व्याकुल होता है ॥ ९ ॥

बुधजीवार्कसंयोगे नेत्ररोगी महाधनी ।
शास्त्रशस्त्रकलाभिज्ञो लिपिकर्ता भवेन्नरः ॥ १० ॥

और बुध बृहस्पति रवि एकत्र होकर जिसकी कुंडली में बैठते हैं वह मनुष्य नेत्रोंका रोगी,बड़ा धनवान्,शास्त्र तथा शस्त्रकलाका जाननेवाला और लेखक होताहै ॥

शुक्रसूर्यबुधैर्योगे गुरुवर्गैर्निराकृतः ।
अभिशप्तो दिशो याति स्त्रीहेतोस्तप्तमानसः ॥ ११ ॥

और सूर्य, शुक्र, बुध तीनों एकत्र होकर जिसकी कुंडलीमें बैठते हैं वह मनुष्य माता पिता आदि गुरु जनों से तिरस्कार पाने वाला, माता पिता द्वारा शाप पाकर दिशाओं में घूमने वाला, और स्त्री निमित्त से दुःखी चित्तवाला होता है ॥ ११ ॥

शनिसूर्यबुधैर्योगे दुराचारः पराजितः ।
बंधुभिश्च परित्यक्तो विद्वेषी जायते नरः ॥ १२ ॥

और सूर्य शनि, बुध तीनों एकत्र होकर जिसकी कुंडली में बैठते हैं वह मनुष्य दुराचार करने वाला, शत्रुओं से हार पाने वाला; भाई बन्दों से त्यक, और सब से शत्रुता करने वाला होता है ॥ १२ ॥

मंदजीवार्कसंयोगे पुत्रमित्रकलत्रवान् ।
निर्भयो नृपतिद्वेष्टा स्वेष्टबंधुर्भवेन्नरः ॥ १३ ॥

और जिसकी कुंडली में शनि, गुरु, सूर्य तीनों का योग होता है वह मनुष्य पुत्र; मित्र तथा कलत्र से युक्त, भय रहित; राजा से द्वेष करने वाला, और अपनी इच्छा से मित्रता करने वाला होता है ॥ १३ ॥

चंद्रचांद्रिकुजैर्योगे नीचाचारश्च पापकृत् ।
आजीवितहतो लोके बंधुहीनश्च जायते ॥ १४ ॥

और चन्द्रमा, बुध, मंगल तीनों ग्रह जिसके एकत्र होते हैं वह मनुष्य नीचों के समान आचार करने वाला, बड़ा पापी जीविका से हीन और लोक में बन्धु हीन होता है ॥ १४ ॥

चंद्रजीवकुजैर्योगे स्त्रीलोलो वर्णसंयुतः ।
कांतश्च संगतः स्त्रीणां चंद्रतुल्यसुखो भवेत् ॥ १५ ॥

और जिसकी कुंडली में चन्द्रमा बृहस्पति मंगल तीनों एक घरमें होते हैं वह मनुष्य बडा कामी, वर्ण से युक्त, सबको प्रिय, स्त्रीजनों के साथ रहने वाला और चंद्रमा के समान सुन्दर मुखवाला होता है ॥ १५ ॥

चंद्रशुक्रकुजैर्योगे दुःशीलायाः पतिः सुतः ॥
सदा भ्रमणशीलश्च शीतभीतोऽपि जायते ॥ १६ ॥

और जिसकी कुंडली में चन्द्रमा, शुक्र और मंगल इन तीनों ग्रहों का योग होता है वह मनुष्य दुष्ट स्वभाव वाली स्त्री, तथा माता से युक्त, सर्वदा भ्रमण करने वाला और शीत से डरने वाला होता है ॥ १६ ॥

शनिचंद्रकुजैर्योगे बाल्ये स्यान् मृतमातृकः ।
क्षुद्रावलोकविद्विष्टो विषमो जायते नरः ॥ १७ ॥

और शनि, चन्द्र, मंगल जिसकी कुंडली में एक घर में बैठे होते हैं उस मनुष्य की बालकपन में ही माता मरजाती है, दुष्ट मनुष्यों को देखने मात्र से ही द्वेषी होने वाला और विषमतायुक्त होता है ॥ १७ ॥

जीवचंद्रबुधैर्योगे तेजस्वी धनवानपि ।
पुत्रमित्रादिसंयुक्तो वाग्मी ख्यातश्च कीर्तिमान् ॥ १८ ॥

और जिसके वृहस्पति, चन्द्रमा और बुध का योग होता है वह मनुष्य बडा तेजस्वी, धनवान्; पुत्र तथा मित्र से युक्त, प्रशस्तवाणी कहने वाला, जगत में विख्यात और कीर्तिमान होता है ॥ १८ ॥

बुधेंदुभार्गवैर्योगे विद्ययालंकृतो नरः ।
सेर्ष्यो धनातिलोभी च नीचाचारश्च जायते ॥ १९ ॥

और यदि बुध, शुक्र, चन्द्र तीनों एकत्र होते हैं तो वह मनुष्य विद्या से भूषित ईर्ष्या करने वाला, धन का अत्यन्त लोभी दुष्टाचरण करने वाला होता है ॥१९॥

बुधेंदुमंदसंयोगे प्राज्ञो भूपतिपूजितः ।
अत्युच्चो विपुलांगश्च वाग्मी भवति मानवः ॥ २० ॥

और बुध, चंद्र, शनि ये तीनों जिसकी कुंडली में एक घर में होते हैं वह मनुष्य बडा बुद्धिमान्, राजा से पूजा पाने वाला, बडा लंबा, बडा पुष्ट और प्रशस्त वाणी बोलने वाला होता हैं ॥ २० ॥

शुक्रजीवेंदुसंयोगे साध्वीपुत्रश्च पंडितः ।
साधुःसर्वकलाभिज्ञः सुभगो जायते नरः ॥ २१ ॥

और शुक्र, गुरु, चंद्रमा तीनों एक घर में बैठे होते हैं वह मनुष्य पतिव्रता माता का पुत्र, बडा पंडित साधु, सब कलाओं का जानने वाला; और अत्यन्त सुन्दर होता हैं ॥ २१ ॥

जीवेंदुमंदसंयोगे नीरोगःस्त्रीगतो नरः ।
शास्त्रार्थविज्ञःसर्वज्ञो ग्रामपत्तनपालकः ॥ २२ ॥

और वृहस्पति, चन्द्रमा, शनि तीनों जिसकी कुंडली में एकत्र होकर बैठते हैं वह मनुष्य रोग से रहित, स्त्री संग करने वाला, शास्त्रार्थ जानने वाला; सर्वज्ञ और ग्राम के नगर का पालन करने वाला होता हैं ॥ २२ ॥

शनिशुक्रेंदुसंयोगे लिपिकर्ता च वेदवित् ।
पुरोहितकुलोत्पन्नो भवेत्पुस्तकवाचकः ॥ २३ ॥

और जिसकी कुण्डली में शनि, शुक्र, चन्द्रमा तीनों एकत्र होकर बैठे होते हैं

वह मनुष्य लेखक का काम करने वाला, वेद का वेचा, पुरोहित के कुल में जन्म लेने वाला और भागवतादि की कथाओं को कहने वाला होता है ॥ २३ ॥

जीवभौमबुधैर्योगे सुकविर्युवतिप्रियः ।
परोपकारकृत् तीक्ष्णो गांधर्वकुशलो भवेत् ॥ २४ ॥

और जिसकी कुंडली में बृहस्पति; बुध, मंगल तीनों एक घर में बैठे हों तो वह मनुष्य बडा सत्कवि, स्त्रियों को प्रिय, परोपकार करने वाला, बडा उत्साही और गान विद्या में कुशल होता है ॥ २४ ॥

भृगुभौमबुधैर्योगे विकलांगश्च चंचलः ।
अकुलीनःसदोत्साही तृप्तश्च मुखरो नरः ॥ २५ ॥

और जिसकी कुण्डली में शुक्र, मंगल; बुध तीनों एक घर में बैठते हैं वह मनुष्य किसी अंग से हीन, बडा चंचल, हीन कुल में जन्म लेने वाला, सदा उत्साह युक्त, तृप्त और चुगलखोर होता है ॥ २५ ॥

बुधमंदकुजैर्योगे प्रवासी नेत्ररोगवान् ।
प्रेष्योवदनरोगी च हास्यलुब्धो भवेन्नरः ॥ २६ ॥

और जिसके बुध, शनि, मंगल तीनों एक ही घर में होते हैं वह मनुष्य परदेश में रहने वाला, नेत्रों का रोगी; दूत का काम करने वाला, मुख का रोगी और हांसी करने वाला होता है ॥ २६ ॥

जीवकाव्यकुजैर्योगे दिव्यनारीयुतःसुखी ।
सर्वानंदकरो लोके जायते नृपतिप्रियः ॥ २७ ॥

और जिसकी कुण्डली में बृहस्पति, शुक्र, मंगल तीनों एक घर में बैठते हैं वह मनुष्य सुन्दर स्त्रियों से युक्त, सदा सुखी, सबों को आनन्द करने वाला और राजा को प्रिय होता है ॥ २७ ॥

जीवमंदकुजैर्योगे कुष्ठांगो राजपूजितः ।
नीचाचारो निर्धनश्च भवेन्मित्रै र्विगर्हितः ॥ २८ ॥

और जिसकी कुण्डली में बृहस्पति, शनि, मंगल तीनों ग्रह एक घर में होते हैं वह मनुष्य कुष्ठ युक्त शरीर वाला, राजा से पूजा पाने वाला, नीचों के समान आचार वाला, निर्धन और मित्रों से निंदित होता है ॥ २८ ॥

भृगुमंदकुजैर्योगे दुःशीलायाःपतिःशुभः ।
प्रवासशीलो दुःखी च जातको जायते सदा ॥ २९ ॥

और जिसके शुक्र; शनि. मंगल तीनों एक ही घरमें स्थित होतेहैं वह मनुष्य दुष्ट स्वभाव वाली स्त्री का पति, परदेश का रहने वाला और सदा दुःखी रहता है ॥

बुधेज्यभृगुसंयोगे सुतनुर्नृपपूजितः ।
जितारिर्दीर्घकीर्तिश्च सत्यवादी भवेन्नरः ॥ ३० ॥

और जिसकी कुंडली में बुध, बृहस्पति, शुक्र तीनों एक घर में बैठे होते हैं वह मनुष्य सुन्दर शरीर वाला. राजाओं से पूजा पाने वाला, शत्रु जनों का जीतने वाला, बड़ा यशस्वी और सत्यवादी होता है ॥ ३० ॥

बुधार्किजीवसंयोगे सुदारो बहुभाग्यवान् ।
धनैश्वर्ययुतःप्राज्ञः सुखधैर्ययुतो भवेत् ॥ ३१ ॥

और बुध, शनि, गुरु, तीनों एक घर में बैठे होतेहैं वह मनुष्य उत्तम आचार वाला, अनेक भोग भोगने वाला, धन ऐश्वर्य से युक्त, बुद्धिमान्. और सुखसे धैर्य से युक्त होता है ॥ ३१ ॥

मंदशुक्रबुधैर्योगे मुखरः पारदारिकः ।
असङ्गतिः कलाभिज्ञः स्वदेशनिरतो भवेत् ॥ ३२ ॥

और शनि. शुक्र. बुध तीनों एकही घरमें स्थित होतेहैं वह मनुष्य बडा मुखर (चुगल). पर स्त्री गामी. दुष्टजनों की सोहबत करने वाला कलाओं का जानने वाला और स्वदेश में सदा रहने वाला होता है ॥ ३२ ॥

मंदेज्यशुक्रसंयोगे राजा भवति कीर्तिमान् ।
नीचवंशोपि संभूतःशीलयुक्तो नृपो भवेत् ॥ ३३ ॥

और यदि शनि बृहस्पति, शुक्र तीनों एक घरमें होते हैं तो वह मनुष्य राजा होता है; यशस्वी तथा नीच कुलोत्पन्न होते हुए भी शील स्वभावसे युक्त राजा होता है ॥ ॥ ३३ ॥

शुक्रजीवार्कसंयोगे राजमन्त्री च निर्धनः ।

दुष्टचक्षुश्च शूरश्च प्राज्ञश्च परकर्मकृत् ॥ ३४ ॥

जिस पुरुषकी जन्मकुंडली में शुक्र, बृहस्पति, और सूर्य ये तीनों एक राशि में स्थित हों वह पुरुष राजाका मंत्री, दरिद्र, खराब नेत्र वाला, शूरवीर; बुद्धिमान् और परोपकार करने वाला होता है ॥ ३४ ॥

शनिशुक्रार्कसंयोगे कलामानविवर्जितः ।
कुष्ठी शत्रुभयोद्विग्नो दुष्टाचारी नरो भवेत् ॥ ३५ ॥

जिसकी कुंडली में शनि शुक्र और सूर्य एक राशि में स्थित हों तो वह कारीगरी तथा मान से रहित, कुष्ठी, शत्रुओं के कारण सर्वदा भय भीत रहने वाला, और दुष्टों के समान आचरण करने वाला होता है ॥ ३५ ॥

प्रायःपापैर्युते चन्द्रे मातुर्नाशो रवौ पितुः ।
शुभग्रहैःशुभं वाच्यं मिश्रितैर्मिश्रितं फलम् ॥ ३६ ॥

जिसके पाप ग्रहों से युक्त चन्द्रमा होता है तब माता का और सूर्य पापग्रहों से युक्त हो तो पिताका नाश करता है, चन्द्रमा, सूर्य शुभ ग्रहों से युक्त हों तब शुभफल देने वाले और शुभाशुभ ग्रहों से युक्त सूर्य चन्द्रमा हो तब शुभाशुभ मिला फल होता है ॥ ३६ ॥

शुभास्त्रयो ग्रहा युक्ताःकुर्वंति सुखिनं नरम् ।
पापास्त्रयो दुःखितं च दुर्विनीतं विगर्हितम् ॥ ३७ ॥

और जिसके तीन ग्रह शुभ एकत्र बैठे हों तब उस मनुष्य को सुखी और जिसके पाप ग्रह तीन युक्त होकर एक घरमें बैठे हों तब उस मनुष्यको सदा दुःखी अनम्र और निंदित करते हैं ॥ ३७ ॥ इति त्रिग्रही योगफलम् ।

अथ चतुर्ग्रहयोगफलम् ।

चंद्रचांद्रिकुजार्काणां योगे लिपिकरो नरः ।
तस्करो सुखरो वाग्मी मायावी कुशलो भवेत ॥ १ ॥ र. चं. मं. बु ॥

चंद्र, बुध, मंगल, सूर्य चारों ग्रह जिसकी कुंडली एकही घरमें बैठे होते हैं वह मनुष्य लिखने से जीविका करने वाला; चोर, चुगलखोर (मुखर, अगुआ) बडा मायावी, प्रशस्त वाणी बोलने वाला और बडा कुशल होता है ॥ १ ॥

भौमभास्करचंन्द्रेज्यसंयोगे निपुणो धनी ।
तेजस्वी गतशोकश्च नीतिज्ञश्च भवेन्नरः ॥ २ ॥ र. चं. मं. बृ.॥

और मंगल, सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति चारों एक ही घरमें बैठे हों तो वह मनुष्य बडा निपुण, धनवान्, तेजस्वी, शोक रहित और नीति का जानने वाला होता है।

सूर्येंदुभौमशुक्राणां योगे विद्यार्थसंग्रही ।
सुखी पुत्री कलत्री च वाग्वृत्तिर्मनुजो भवेत् ॥ ३ ॥

और सूर्य, चंद्रमा, मंगल, शुक्र इन चारोंका एक स्थानमें योग जिसके होताहै वह मनुष्य विद्या तथा धन का संग्रह करने वाला, सदा सुखी, पुत्र तथा कलत्र से युक्त, और वाणी (व्याख्यान उपदेशादि) से वृत्ति करने वाला होता है ॥ ३ ॥

अर्कार्किशशिभौमानां योगे मूर्खश्च निर्धनः ।
ह्रस्वो विषमदेहश्च भिक्षावृत्तिर्भवेन्नरः ॥ ४ ॥ र. चं. मं. शं.॥

और सूर्य, शनि, चन्द्र, मंगल ये चारों ग्रह जिसकी कुण्डली में एक घर में होते हैं वह मनुष्य मूर्ख, धन से रहित, ठंगना (बौना) विषम देह वाला और भिक्षा से जीविका करने वाला होता है ॥ ४ ॥

सोमसौम्यार्कजीवानां योगे शिल्पकरो धनी ।
सौवर्णिकाप्लुताक्षश्च रोगहीनश्च जायते ॥ ५ ॥ र चं बु बृ. ॥

और चन्द्र, बुध, सूर्य, गुरु चारों जिसकी कुंडली में एक ही घर में बैठे होते हैं वह मनुष्य कारीगरी जानने वाला, धनवान्, सुन्दर रंग रूप वाला, सुन्दर आंख वाला और रोग रहित होता है ॥ ५ ॥

चंद्रार्कबुधशुक्राणां संयोगे सुभगो नरः ।
ह्रस्वश्च राजमान्यश्च वाग्मी च विकलो भवेत् ॥ ६ ॥

और जिसकी कुंडली में चन्द्रमा, बुध, सूर्य, शुक्र ये चारों ग्रह एक घर में होतेहैं वह मनुष्य बडा सुन्दर, शरीर से बौना (ठंगना).राजाओं का माननीय प्रशस्त वाक्य बोलने वाला और विकल होता है ॥ ६ ॥

अर्कार्किचांद्रिचंद्राणां योगे भिक्षाशनो नरः ।
नियुक्तःपितृमातृभ्यां विकलाक्षश्च निर्धनः ॥ ७ ॥

और जिसकी कुंडली में सूर्य, शनि, चन्द्र, बुध, चारों ग्रह एक घरमें होते हैं वह मनुष्य भिक्षा मांगकर भोजन करने वाला, माता पिता से नियुक्त हुआ नेत्रों से विकल और निर्धन होता है ॥ ७ ॥

सूर्यचन्द्रेज्यशुक्राणां संबंधे राजपूजितः ।
जलारण्य मृगस्वामी नरःस्यान्निपुणःसुखी ॥८॥ र. चं. वृ. शु॥

और सूर्य चंद्र, गुरु शुक्र चारों ग्रह जिसकी कुंडली में एकही घरमें बैठे होतेहैं वह मनुष्य राजा से पूजा पाने वाला तालाव आदि जंगल तथा मृगों का स्वामी बड़ा निपुण और सदा सुखी होता है ॥ ८ ॥

सूर्यचंद्रार्किजीवानां मान्यश्च वनिताप्रियः ।
बहुवित्तसुतःक्षीणःसमाक्षश्च प्रजायते ॥ ९ ॥ र. चं. वृ. श.

और सूर्य, चंद्रमा, शनि, गुरु, ये चारों ग्रह जिसकी कुंडली में एक घरमें बैठे हों वह मनुष्यों में माननीय, स्त्री का प्रेमी, बड़ा धनवान्, पुत्रवान्, क्षीणदेह, और समान एवं सुन्दर नेत्र वाला होता है ॥ ९ ॥

सितार्कजरवींदूनां योगे चात्यंतदुर्बलः ।
वनितासदृशाचारी भीरुरग्रेसरो नरः ॥१०॥ चं. र. शु. श.॥

और जिसकी कुंडली में शुक्र, शनि, सूर्य, चन्द्र ये चारों एक घरमें होते हैं वह मनुष्य अत्यन्त दुवला, स्त्रीके समान आचरण करने वाला और डरपोक तथा अग्रगामी(अगुआ) होता है ॥ १० ॥

बुधार्ककुजजीवानां योगे सूत्रकरो नरः ।
परदाररतःशूरो दुःखी चक्रधरो भवेत् ॥ ११ ॥ बु. र. मं. बृ.

बुध, सूर्य, मंगल, गुरु ये चारों ग्रह जिसकी कुंडली में एक स्थान में स्थित हों वह मनुष्य सूत्र करने वाला, परस्त्रीरत; शूरवीर, सदा दुःखी और चक्रका धारण करने वाला होता है ॥ ११ ॥

रविशुक्रकुजेंदूनामन्वये पारदारिकः ।
निर्लज्जो दुर्जनश्चौरो विषमांगो नरो भवे ॥१२॥ र. चं. मं. शु

और सूर्य, शुक्र, मंगल, चंद्रमा ये चारों जिसकी कुंडली में एकही स्थान में स्थितहों वह मनुष्य पर स्त्री गामी, बड़ा निर्लज्ज, दुर्जन, चोर और विषमांग होताहै ॥

अर्कार्किबुधभौमानां योगे योद्धा कविर्जनः ।
मंत्री च भूपतिस्तीक्ष्णो नीचाचारोपि जायते ॥ १३ ॥

और सूर्य, शनि; बुध; मंगल ये चारों ग्रह जिसकी कुंडली में एक स्थान में स्थितहों वह मनुष्य युद्ध करने वाला, कविराज, राजमन्त्री बड़ा तीक्ष्ण और नीचोंके समान आचार करने वाला होता है ॥ १३ ॥

भौमार्कबुधशुक्राणां योगे पूज्यो धनी मतः ।
सुभगो नृपमान्यश्च नरो भवति नीतिमान् ॥ १४ ॥

और जिसकी कुंडली में मंगल सूर्य, बुध, शुक्र, चारों ग्रह एक घरमें बैठे होते हैंवह मनुष्य पूज्य,धनवान्, सुन्दर, राजासे मान पाने वाला और नीतिमान् होताहै॥

भान्वार्किभौमजीवानामैक्ये च गणनायकः ।
सोन्मादो नृपमान्यश्च सिद्धार्थो जायते नरः ॥ १५ ॥

और जिसकी कुण्डलीमें सूर्य, शनि, मंगल, गुरु, चारों ग्रह एक स्थानमें स्थित हों वह मनुष्य समूह का मुखिया उन्माद युक्त; राजमान्य और भाग्यशाली होताहै ॥

मंदमार्तंडशुक्रारैः संयुक्तैर्जायते नरः ।
लोकद्विष्टः समाख्यातो नीचाचारो जडाकृतिः ॥ १६ ॥

और जिसकी कुण्डली में शनि, सूर्य, शुक्र, मंगल चारों ग्रह एकत्र स्थित हों वह मनुष्य लोकभर का द्वेषी, नीचों के समान आचार करने वाला और मूर्खकीसी आकृति वाला होता है ॥ १६ ॥

जीवशुक्रबुधार्काणां योगे बहुमतिर्नरः ॥
धनी सुखी च सिद्धार्थः सुहृष्टश्च प्रजायते ॥ १७ ॥

और जिसकी कुण्डली में बृहस्पति, शुक्र, बुध, सूर्य, चारों ग्रह एक स्थान में स्थित हों वह मनुष्य बहु बुद्धि, धनी, सुखी सिद्धार्थ और प्रसन्न रहने वाला होताहै॥

अर्कार्किबुधदेवेज्यैरेकराशिस्थितैर्नरः ।

भ्रातृमान् कलही मानी क्लीबाचारी निरुद्यमः॥ १८ ॥

और जिसकी कुण्डली में सूर्य, शनि, बुध, बृहस्पति एकही घरमें बैठे हों वह मनुष्य भाइयों से युक्त, झगडालू हिजरा मनुष्यों के समान आचार वाला और उद्यम रहित होता है ॥ १८ ॥

शुक्रसौरिबुधार्काणां योगे मित्रयुतःशुचिः॥
मुखरः सुभगः प्राज्ञो जायते च सुखी नरः ॥ १९ ॥

और जिसकी कुण्डली में शुक्र, शनि, बुध, सूर्य चारों ग्रह एक ही घर में बैठे हों वह मनुष्य मित्रों से युक्त, पवित्र, चुगलखोर (अगुआ, सुखव्वर) सुभग, बड़ा बुद्धिमान और सदा सुखी होता है ॥ १९ ॥

सूर्यसौरिसितेज्यानां संबंधे लोभवान्सुखी ॥
कविःकारुकनाथश्च राजप्रीतो भवेन्नरः ॥ २० ॥

और जिसकी कुंडली में सूर्य, शनि, शुक्र, गुरु ये चारों एक घर में होते हैं वह मनुष्य बड़ा लोभी, सुखी, कवि, कारीगरों का स्वामी और राजाका प्रिय होताहै

चन्द्रचान्द्रिकुजेज्यानां योगे शास्त्रविचक्षणः ।
नरेंद्रश्च महामान्यो महाबुद्धिर्नरो भवेत् ॥ २१ ॥

और जिसकी कुण्डली में चन्द्र, बुध, मंगल, गुरु चारों ग्रह एक घर में बैठे हों वह मनुष्य शास्त्र में कुशल, राजा और महा बुद्धिमान राजाका मंत्री होता है।

भौमेंदुबुधशुक्राणामन्वये बंधकीपतिः ।
निद्रालुःकलही नीचौ बंधुद्वेषी जनो भवेत् ॥ २२ ॥

और जिसकी कुंडली में मंगल, चन्द्रमा, बुध और शुक्र, चारों ग्रह एक घर में स्थित हों वह मनुष्य वन्ध्या (बांझ) स्त्री का पति, सब समय सोने वाला, कलह (लडाई झगडा) करने वाला, नीचोंके समान आचरण करने वाला और भाईबन्दों से द्वेष करने वाला होता है ॥ २२ ॥

भौमेंदुबुधसौराणां योगे शूरकुलोद्भवः ।
पुत्रमित्रकलत्री च द्विमातृपितृको जनः ॥ २३ ॥

और यदि मंगल, चन्द्रमा, बुध, शनि ये चारों ग्रह एक जगह स्थित होते हैं तो वह मनुष्य शूरवीरों के कुल में जन्म लेने वाला, पुत्र मित्र तथा स्त्री से युक्त और दो माता पिता का होता है ॥ २३ ॥

चंद्रारगुरुशुक्राणां योगे साहसिको भवेत् ।
विकलांगो धनी पुत्री मानी प्राज्ञोऽपिजायते ॥ २४ ॥

और चन्द्रमा, मंगल, गुरु, शुक्र ये चारों ग्रह जिसकी कुंडली में एकत्र होते हैं वह मनुष्य साहस करने वाला, अंग से हीन (लूला लंगड़ा आदि) धनवान्, पुत्रवान्. अभिमानी और बडा विद्वान् होता है ॥ २४ ॥

भौमेंदुमंदजीवानामन्वये बधिरो धनी ।
सोन्मादःस्थिरवाक्यश्च शूरो विज्ञो भवेन्नरः ॥ २५ ॥

और मंगल, चन्द्रमा, शनि, बृहस्पति ये चारों ग्रह जिसकी कुण्डली में एक ही घर में बैठे हों वह मनुष्य कानों से बहरा; धनवान्. पागल, दृढ प्रतिज्ञ, शूरवीर और बडा विद्वान् होता है ॥ २५ ॥

चंद्रारशुक्रमंदानां मलिनः कुलटापतिः ।
सोद्वेगःसर्पतुल्याक्षःप्रगल्भो जातको भवेत् ॥ २६ ॥

और जिसकी कुण्डली में चंद्रमा, मंगल, शुक्र और शनि इन चारों का योग होता है वह बडा मलिन, कुलटा स्त्री का पति, सदा घबड़ाहट युक्त सर्पके समान नेत्र वाला और बडा प्रगल्भ (ढीठ) होता है ॥ २६ ॥

जीवशुक्रबुधेंदूनामन्वये सुभगो धनी ।
विमातृपितृकःप्राज्ञो गतारिर्जायते नरः ॥ २७ ॥

और जिसके बृहस्पति, शुक्र.बुध; चन्द्रमा ये चारों ग्रह कुंडली में एकत्र बैठे होते हैं वह मनुष्य सुभग, धनवान्, माता पिता से रहित और बडा विद्वान्. तथा शत्रु जनों से हीन होता है ॥ २७ ॥

मंदेज्यचन्द्रचांद्रीणां योगे बंधुप्रियःकविः ।
तेजस्वी राजमंत्री च यशोधर्मयुतो नरः ॥ २८ ॥

और शनि, गुरु, चन्द्र, बुध चारों ग्रह एक स्थानस्थ हों तो वह मनुष्य बन्धु जनों को प्रिय, बडा कवि, तेजस्वी और राजाका मंत्री, यश तथा धर्म से युक्त होताहै

चन्द्रविच्छुक्रसौरीणां संयोगे नृपपूजितः ।
नेत्ररोगी पुराधीशो वहुदारयुतो धनी ॥ २९ ॥

जिसकी कुण्डली में चन्द्रमा, बुध शुक्र, तथा शनैश्चर ये चारों ग्रह एक राशि में स्थित हों तो राजाओं से पूजा पाने वाला, नेत्र रोगी, अपने शहर का स्वामी अनेक स्त्रियों से युक्त और धनवान् होता है ॥ २९ ॥

चन्द्रेज्यसितसौरीणामन्वये पारदारिकः ।
प्राज्ञो निर्द्रव्यबंधूनां स्थूलभार्योनरोत्तमः ॥ ३० ॥

और जिसके चन्द्रमा, गुरु, शुक्र, शनि एकत्र होकर वैठे हों वह मनुष्य परस्त्री-गामी बुद्धिमान्, दरिद्र भाई वाला और मोटी स्त्री वाला तथा पुरुषोंमें श्रेष्ठ होता है॥

बुधारभृगुजीवानां योगे स्त्रीकलहप्रियः ।
धनी सुशीलो नीरोगो लोकपूज्यो नरो भवेत् ॥ ३१ ॥

और जिस की कुंडली में बुध मंगल शुक्र गुरु ये चारों एकत्र बैठे हों वह मनुष्य अपनी स्त्री से कलह करने वाला, धनवान्, सुशील, रोग रहित और लोक में पूज्य होता है ॥ ३१ ॥

भौमेज्यसौम्यसौरीणां योगे शूरश्च निर्द्धनः ।
सत्यशौचव्रते विद्वानुदीनो वाग्मी नरो भवेत् ॥ ३२ ॥

और जिसकी कुंडली में मंगल, गुरु, बुध शनि ये चारों एकत्र बैठे हों वह मनुष्य शूरवीर, निर्धन, सत्य और शौच व्रतादि का विचार करने वाला, दीन और प्रशस्त वाणी कहने वाला होता है ॥ ३२ ॥

मल्लोयोऽन्यपुष्टियोद्धा च बुधारयमभार्गवैः ।
ख्यातो लोके दृढांगश्च सारमेयरुचिर्भवेत् ॥ ३३ ॥

और जिसकी कुण्डली में बुध; मंगल,शुक्र, शनि; ये चारों ग्रह एकत्र बैठेहों वह मनुष्य दूसरों से पाला हुआ, पहलवान युद्ध करने वाला, लोकमें विख्यात, दृढ अंगवाला और कुत्ते पालने वाला होता है ॥ ३३ ॥

भौमेज्यशनिशुक्राणां योगे स्याद्वासनातुरः ।
परदाररतो मानी कितवो जायते नरः ॥ ३४ ॥

और जिसकी कुण्डली में मंगल- गुरु- शनि- शुक्र- चारों ग्रह एकत्र स्थित हों वह मनुष्य काम वासनाओं में आसक्त- परस्त्रीगामी- बडा मानी और कपटी होताहै ॥

मेधावी शास्त्रनिरतःकामे सक्तो विधेयसत्यश्च ।
बुधजीवशुक्रसौरैःसह स्थितैस्तीव्रसंयोगे ॥ ३५ ॥

और जिसकी कुण्डली में बुध- गुरु- शुक्र- शनि- ये चारों ग्रह एकत्र बैठे हों वह मनुष्य बुद्धिमान् शास्त्रों में चतुर- काम में आसक्त, सत्यवक्ता और तीव्र बुद्धि वाला होता है ॥ ३५ ॥ इतिचतुर्ग्रहीफलम् ॥

अथ पंचग्रहीफलम् ।

वहुप्रपंची दुःखी च जायाविरहतापितः ।
सूर्याद्यैर्जीवपर्यंतैर्नरःस्यात्पंचभिर्ग्रहैः ॥ १ ॥

जिसकी कुंडली में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति ये पांचों ग्रह एक घरमें बैठे हों वह मनुष्य बड़ा प्रपंची, दुःखी और स्त्रीका विरही होता है ॥ १ ॥

गतसत्यो बंधुहीनःपरकर्मरतो नरः ।
क्लीबस्य च सखा सूर्यभौमेंदुबुधभार्गवैः ॥ २ ॥

और जिसकी कुण्डली में सूर्य चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र पांचों ग्रह एक घर में बैठे हों वह मनुष्य सत्य और भाई बन्दों से रहित; दूसरे का काम करने वाला और नपुंसकका मित्र होता है ॥ २ ॥

स्यादल्पायुश्च विकलो दुःखी सुतविवर्जितः ।
अर्कार्किबुधचंद्रारयोगे बंधनभागपि ॥ ३ ॥

और सूर्य, शनि, बुध, चन्द्र, मंगल, पांचों ग्रह जिसकी कुण्डली में एक घरमें हों वह मनुष्य अल्पायु, विकल, दुख, भोगने वाला, पुत्ररहित और बन्धन का भागी होता है ॥ ३ ॥

जात्यंधो बहुदुःखी च पितृमातृविवर्जितः ।

नागप्रीतो नरो भौमभानुचंद्रेज्यभार्गवैः ॥ ४ ॥

और जिसकी कुण्डलीमें मंगल, सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र, पांचों ग्रह ऐकत्र बैठे हों वह मनुष्य जन्म से अन्धा, महा दुःखी, माता पिता से रहित, और हाथी से प्रीति करने वाला होता है ॥ ४ ॥

परद्रव्यहरो योद्धा परतापकरःखलः ।
समर्थो जायते मंदचंद्रजीवार्कभूसुतैः ॥ ५ ॥

और जिसकी कुण्डली में बृहस्पति, शनि, चंद्र, सूर्य, मंगल पांचों ग्रह एक स्थान में स्थितहों वह मनुष्य पर द्रव्य हरने वाला, योद्धा, दूसरेको दुःख देनेवाला, बडा खल, और समर्थ होता है ॥ ५ ॥

मानाचारधनैर्हीनःपरदाररतो नरः ।
एकस्थैर्जायते भानुभौमेंदुशनिभार्गवैः ॥ ६ ॥

और जिसकी कुण्डली में सूर्य, मंगल; चन्द्र, शनि, शुक्र, पांचों ग्रह एक घर में बैठे हों वह मनुष्य प्रतिष्ठा, आचार और धनसे रहित और परस्त्रीमें रत होताहै ॥

राजमंत्री भूरिवित्तो यंत्रज्ञो दंडनायकः ।
ख्यातो जने यशस्वी च जीवार्केंदुज्ञभार्गवैः ॥ ७ ॥

और जिसकी कुण्डलीमें बृहस्पति, सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र, पांचों ग्रह एक घरमें बैठे हों वह मनुष्य राजाका मन्त्री, बडा धनवान्, यंत्र (जहाज, मोटर आदि) विद्या जानने वाला, दण्ड देने वाला, सर्वत्र विख्यात और बडा यशस्वी होता है॥

परान्नभोजी सोन्मादःप्रियतप्तश्च वंचकः ।
उग्रोभीरुर्नरःसूर्यशनिचन्द्रेज्यचंद्रजैः ॥ ८ ॥

और जिसकी कुण्डली में सूर्य, शनि, चन्द्र, गुरु बुध ये पांचों ग्रह एक घरमें स्थित हों वह मनुष्य दूसरे का अन्न खाने वाला, उन्माद युक्त, अपने प्रिय पुरुषों के निमित्त से व्याकुल; ठगिया, बड़ा उग्र और बड़ा डरपोक होता है ॥ ८ ॥

धनपुत्रसुखैर्हीनो मृत्यूत्साही च लोमशः ।
दीर्घो भवति चंद्रार्कबुधशुक्रशनैश्चरैः ॥ ९ ॥

और जिसकी कुण्डली में चन्द्र, सूर्य, बुध; शुक्र शनि पांचों ग्रह एकही घरमें बैठे हों वह मनुष्य धन पुत्र तथा सुख से हीन मरने में उत्साह रखने वाला. अधिक रोमयुक्त देहवाला, और शरीर से लम्बा होता है ॥ ९ ॥

इंद्रजालरतो वाग्मी चलचित्तोऽगनाप्रियः ।
प्राज्ञश्च दक्षो निर्भीतःशुक्रेज्यार्केंदुसूर्यजैः ॥ १० ॥

और जिसकी कुण्डली में शुक्र, गुरु, सूर्य, चन्द्र, शनि पांचों ग्रह एक घरमें बैठे हों वह मनुष्य इन्द्रजाल विद्या जानने वाला, प्रशस्त वाणी बोलने वाला,चंचल चित्त वाला स्त्रीको प्रिय, बडा चतुर; बुद्धिमान्, और भयसे रहित होता है ॥१०॥

स्फीतो बहुहयःकामी नरः शोकी चमूपतिः ।
बुधार्ककुजशुक्रेज्यैः सुभगो भूपतेःप्रियः ॥ ११ ॥

और जिसकी कुण्डली में बृहस्पति, सूर्य, मंगल; शुक्र; बुध पांचों ग्रह ऐकही घरमें बैठे हों वह मनुष्य प्रसन्न चित्तवाला, बहुत घोड़ों का रखने वाला, बड़ा कामी शोक करने वाला, सेना का मालिक, सुन्दर, राजा का प्रियहोता है ॥ ११ ॥

भिक्षाभोगी च रोगी च नित्योद्विग्नो मलीमसः ।
जीर्णो नरो भानुभौमशनिजीवबुधैर्भवेत् ॥ १२ ॥

और रवि, मंगल, बुध, बृहस्पति शनि ये पांचों ग्रह जिसकी कुण्डली में एक ही घरमें स्थित होते हैं वह मनुष्य भिक्षान्नका खाने वाला, सदा रोगी, नित्य उद्वेग युक्त मन वाला, अत्यन्त मलिन और वृद्धके समान होता है ॥ १२ ॥

बहुबंधनभोगार्त्तो विद्वाँल्लोकेषु पूजितो भवति ।
श्रोत्रविकलशरीरःकुजशुक्रबुधशशिमंदैःस्यात् ॥ १३ ॥

और जिसकी कुण्डली में मंगल, शुक्र; बुध, चन्द्र, शनि पांचों ग्रह एक घरमें स्थित हों वह मनुष्य बहुत बन्धन के निमित्त भोग से आर्त, बड़ा विद्वान्, लोकों में पूजित, कर्णेन्द्रिय से रहित (बहिरा) होता है ॥ १३ ॥

व्याधिभिःशत्रुभिर्ग्रस्तः स्थानभ्रष्टो बुभुक्षितः ।
नरःस्याद्विकलः शुक्रमंदार्कबुधभूसुतैः ॥ १४ ॥

शुक्र; शनि; सूर्य, बुध मंगल ये पांचों ग्रह जिसकी कुंडली में एक स्थान में स्थित होतेहैं वह मनुष्य व्याधि तथा शत्रुओंसे युक्त, अपने स्थान से भ्रष्ट, भूखा रहने वाला और विकल होता है ॥ १४ ॥

विज्ञो विचारदेहश्च धातुयंत्ररसायनैः ।
नरःप्रसिद्धो भूपुत्ररविजीवसितासितैः ॥ १५ ॥

और मंगल सूर्य, गुरु, शुक्र, शनि इन पांचों ग्रहों का योग जिसकी कुंडली में होता है वह मनुष्य बडा विद्वान् विचार पूर्वक काम करने वाला, धातु, (लोह, पीतल आदि) यन्त्र (मोटर आदि) विद्या में और रसायनके काममें प्रसिद्ध होताहै॥

साधुकल्याणहीनश्च धनविद्यासुखान्वितः ।
बहुपुत्रो नरो जीवभौमेंदुबुधभार्गवैः ॥ १६ ॥

और बृहस्पति, मंगल, चंद्र; बुध शुक्र ये पांचों ग्रह जिसकी कुंडली में एक ही घरमें स्थित हों वह मनुष्य साधुता तथा कल्याणसे हीन, धन तथा विद्याके सुख से युक्त, और बहुत पुत्र वाला होता है ॥ १६ ॥

परान्नयाचको विप्रो मलिनस्तिमिरामयी ।
नरो भवति भौमेंदुजीवशुक्रशनैश्चरैः ॥ १७ ॥

और जिसकी कुंडली में मंगल, चंद्र; बृहस्पति शुक्र, शनि; इन पांचों ग्रहोंका योग होता है वह मनुष्य परान्न (भिक्षा) मागने वाला, ब्राह्मण, अति मलिन, तिमिर (रतोंध) रोगवाला होता है ॥ १७ ॥

दुर्भगो मलिनो मूर्खःप्रेष्यःक्लीबश्च निर्धनः ।
नरो भवति चंद्रेज्यशुक्रसौरिमहीसुतैः ॥ १८ ॥

और चन्द्र, गुरु; शुक्र शनि, मंगल इनका योग जिसकी कुंडली में होता है वह मनुष्य कुरूप, मलिन मूर्ख. दूत. (चिट्ठीरसा) नपुंसक और निर्धन होता है ॥

बहुमित्रारिपक्षश्च दुःशीलःपरपीडकः ।
मानी नरःसोमजीवशुक्रमंदधरासुतैः ॥ १९ ॥

और जिसके चन्द्र, गुरु शुक्र, शनि, मंगल, ये पांचों ग्रह एकत्र होवे हैं वह

मनुष्य बहुत मित्रों वाला और शत्रु का पक्षपाती, अति दुष्ट स्वभाव वाला दूसरों को पीड़ा देने वाला और बड़ा मानी होता है ॥ १९ ॥

राजमंत्री राजतुल्यो लोकपूज्यो गुणाधिकः ।
चंद्रचंद्रजमंदेज्यभृगुपुत्रैर्नरो भवेत् ॥ २० ॥

और जिसकी कुंडली में चन्द्र, बुध, शनि गुरु, शुक्र, इन पांचों ग्रहों का योग एक ही घरमें होता है वह मनुष्य राजा के तुल्य अथवा राजा का मन्त्री, लोक में पूजनीय, और अत्यन्त गुणवान् होता है ॥ २० ॥

अलसस्तामसो नित्यं सोन्मादो राजवल्लभः ।
निद्रातुरो नरो भौमबुधजीवार्कि भार्गवैः ॥ २१ ॥

और मंगल, बुध, बृहस्पति, शनि, शुक्र ये पांचों ग्रह जिसकी कुण्डली में एक घरमेंबैठे होते हैं वह मनुष्य आलसी; तमोगुणी, पागल, राजाका प्रिय औरनिद्रा से आतुर (अधिक सोने वाला) होता है ॥ २१ ॥ इति पंचगृहफलम् ॥

अथ षड्गृही फलम् ।

विद्याधर्मधनैर्युक्तो बहुभोगी च भाग्यवान् ।
सूर्याद्यैःशुक्रपर्यंतैःख्यातो भवति षड्ग्रही ॥ १ ॥

सूर्य से आदि लेकर शुक्रतक छहों ग्रह (सू, चं, मं, बृ, बु, शु,) जिसकी कुण्डलीमें एक घरमें बैठेहों वह मनुष्य विद्या, धर्म धनसे युक्त, बडा भोगी, भाग्यवान और सर्वत्र विख्यात होता है ॥ १ ॥

परकार्यकरो दाता शुद्धात्मा चंचलाकृतिः ।
षड्भिर्ग्रहैर्विना शुक्रं रमते विजयी जनः ॥ २ ॥

और जिसकी कुंडलीमें शुक्र के अतिरिक्त छहों ग्रह (र, चं, मं, बु, बृ, श,) एक स्थान में स्थितहों वह मनुष्य दूसरों का कार्य करने वाला; दान देने वाला, शुद्धांतःकरण; चंचलाकृति और सर्वत्र विजय करके आनन्द करनेवाला होताहै ॥२॥

संशयी सुभगो मानी ख्यातो युद्धेऽरिमर्दकः ।
विना जीवं ग्रहैःषड्भिर्विवादेरमते जनः ॥ ३ ॥

और जिसकी कुंडली में (रवि चन्द्र मंगल बुध शुक्र शनि) येछहों गृह एकही घरमें

बैठेहों वह मनुष्य संशय करने वाला, बडा भाग्यशाली, बडा, मानी, विख्यात, युद्धमें शत्रुको मारने वाला और झगडे में मन रखने वाला होता है ॥ ३ ॥

भार्याप्रियो रणोत्साही विभ्रमःक्रोधलोभवान् ।
अर्कार्किचंद्रभौमेज्यभार्गवैः सुभगो नरः ॥ ४ ॥

और रवि शनि चन्द मङ्गल वृहस्पति शुक्र ये छहों ग्रह जिसकी कुण्डली में एकत्र होकर बैठे होते हैं वह मनुष्य अपनी स्त्री के साथ प्रेम करने वाला, संग्राम में उत्साहयुक्त, वहमी, क्रोध तथा लोभसे युक्त और सुन्दर होता है ॥ ४ ॥

कलत्रहीनो निर्द्रव्यो राजमंत्री क्षमायुतः ।
रवींदुबुधजीवार्किभृगुभिः सुभगो नरः ॥ ५ ॥

और रवि चन्द्र बुध वृहस्पति शनि शुक्र ये छहों गृह जिसकी कुंडली में एक घरमें बैठे होते हैं वह मनुष्य स्त्री से हीन, द्रव्य रहित, राजा का मन्त्री, क्षमा,युक्त और सुन्दर होता है ॥ ५ ॥

धनदारसुतैर्हीनस्तीर्थगामी वनाश्रितः ।
सूर्यारसौम्यजीवार्किभृगुपुत्रैर्भवेन्नरः ॥ ६ ॥

यदि किसी की कुंडली में सूर्य, मंगल, बुध, वृहस्पति शुक्र एवम् शनि ये सब गृह एक जगह स्थित हों तो वह मनुष्य द्रव्य, स्त्री तथा पुत्रों से हीन, तीर्थ (मथुरा; वृन्दावन, काशी) आदि तीर्थों को जाने वाला, जंगल में रहने वाला होता है ॥ ६ ॥

धनी मंत्री शुचिस्तंद्री वहुभार्यो नृपप्रियः ।
विना सूर्यं ग्रहैः षड्भिःप्रतापी जायते नरः ॥ ७ ॥

और सूर्य बिना छहों गृह (चन्द्र मंगल बुध वृहस्पति शुक्र शनि) जिसके घरमें बैठेहों वह मनुष्य धनवान् राजा का मन्त्री; बडा पवित्र आलसी बहुत भार्या वाला राजा का प्रिय और प्रतापी होता है ॥ ७ ॥

प्रायो दरिद्रो मूर्खश्च षड्भिर्वा पञ्चभिर्ग्रहैः ।
अन्योन्यदर्शनात्तेषां फलमेतत्प्रकीर्तितम् ।

और जिसकी कुंडली में पांच या छः गृह एक घरमें बैठे होते हैं वह मनुष्य

प्राय: दरिद्र या मूर्ख होता है और उन ग्रहों के परस्पर देखने से भी यह फल कहा है ॥ ८ ॥

सप्तग्रहयोग ।

दिवाकरनिभस्तेजा भूपमान्यः शिवप्रियः ।
सूर्याद्यैः शनिपर्यन्तैर्योगे दानी धनान्वितः ॥ १ ॥

और जिसके जन्म समय में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि ये सातों ग्रह एक स्थान में हों तो वह पुरुष सूर्य के समान तेज युक्त, राजाओं से आदर पाने वाला, महादेवजी का भक्त दाता तथा बडा धनी होता है ॥ १ ॥

अथकेंद्रायुः ।

केन्द्रांशसंख्यां त्रिगुणां विधाय राह्वारशन्यंककृतो विहीनम् ॥
आयुःप्रमाणं कथितं मुनींद्रैश्चिरंतनै ज्यौंतिषिकैःस्मृतञ्च ॥ १ ॥

केंद्रस्थानस्थितानंकांस्त्रिगुणीकृत्य यावान्पिडस्तावद्वर्षसंख्यायुः। यदि केंद्रमध्ये राहुशनिमंगलाःभवंति तत्केन्द्राकान्संमील्य शेषं त्रिगुणं कार्यम् ।

इति श्री जन्मपत्रीपद्धतौ भावचक्रानयनभावाध्यायद्वित्रिचतुः-
पञ्चग्रहीषड्ग्रहीसप्तग्रहीफलाध्यायः द्वितीयः समाप्तः ।

अब अगाडी केंद्र निर्णीत आयुको कहतेहैं कि जिस मनुष्यकी आयुका निश्चय करना है, तब इस प्रकार केंद्र रीति से आयुका निर्णय करै, उसकी रीति यह है कि जिस किसी पुरुषकी आयुका निश्चय करना हो कि यह कितने वर्ष जियेगा तब उसी पुरुष की जन्मकुंडली लेकर उसमें केंद्र स्थान १।४।७।१० स्थित जो जो अंक हों उनकीसंख्या का जोड लगाकर एक पिंड बनाकर जो अंक सिद्धहो उस अंकको तिगुना करै फिर केन्द्र स्थानमें राहु शनि और मंगल इनमें से जो कोई बैठे हों उन २ स्थानों के वर्तमान अंकों को त्रिगुणित करके उस पूर्व त्रिगुणित पिंडांक की संख्या में सेघटावे फिर जो अंक शेष रहै उस अंकके प्रमाण की आयु जानना चाहिये । और कोई ऐसा कहते हैं कि केंद्र स्थित अंकोंके पिंडित अंकको तिगुने किये अंकके तुल्यही आयु होती है और इस मतसे ऐसा विचार है कि यदि केंद्रमें जिस २ भावमें राहु शनि मंगल हों उन पिंडितांकों को छोडकर शेष अंकों के पिंडितांक को तगुने करने पर जो सिद्धांक हो उस अंकके तुल्य उस मनुष्य की आयु होगी ॥इति केंद्रायुः ॥

उदाहरण।

रा ११ | शु.६मं. | सू.८
१२ | श.१० | बु.७चं.
१ | ४ | गु०६
२ | ३ | ५के०

जैसे किसी मनुष्य का निम्न लिखित जन्मांग है इसके केन्द्र में (अर्थात्, प्रथम, चतुर्थ, सप्तम; और दशम में) स्थित अंक १०-१-४-७ है इनको एकत्रित किया तो २२-हुए इनको ३ से गुणा किया तो ६६ हुए अब इस जगह शनिगत अंक १० को ३ से गुणा किया तो ३० हुआ अब इसी अंक ३० को ६६ में से घटाया तो शेष ३६ रहे इसी शेष से यह प्रमाणित होता है कि इस जन्म कुण्डली वाले मनुष्य की ३६ वर्ष की आयुः होगी, इस प्रकार सब जगह आयु का प्रमाण निश्चय करना चाहिये। *
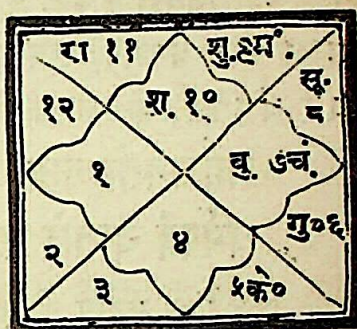
अथ तृतीयोऽध्यायः।

प्रणिपत्य परं ज्योतिःसर्वं च जगतीतलम्।
तमः प्रशमनं वक्ष्ये जन्मशास्त्रप्रदीपकम् ॥ १ ॥

पर ज्योतिरूप भगवान् को प्रणाम करके सकल भूमंडल के अंधकार के नाश करने वाले जन्म शास्त्र दीपक को कहूंगा ॥ १ ॥

लग्नाधिपतिर्लग्ने नीरोगं दीर्घजीविनं कुरुते।
अतिबलमवनीशं वा भूलाभसमन्वितं जातम् ॥ २ ॥

जिसकी कुंडली में लग्नेश लग्नमें स्थितहों तो उस मनुष्य को दीर्घायु अत्यंत बली बहुत जमीन का स्वामी और भूमि लाभसे युक्त करता है ॥ २ ॥

लग्नपतिर्धनभवने धनवंतं विपुलजीविनं स्थूलम्।
अतिबलमवनीशं वा भूलाभं वा सुधर्मरतं कुरुते ॥ ३ ॥

---

* यह प्राचीन ऋषि मुनियोंके आज्ञानुसार ज्योतिषियों ने कहा है। यह सामान्य रीति से आयुः प्रमाण कहा गया है किन्तु निश्चित रूपसे आयुके निकालने के लिये केन्द्रस्थ ग्रहों का उच्च, नीच; सम, शत्रु, मित्र, ग्रह, शुभ दृष्टि अथवा पाप दृष्टि इत्यादि की भी अच्छी तरह देख भाल कर लेनी चाहिये ॥

टि० १-मेष बृश्चिकयो भौंमस्तुलावृषभयो भृगुः।
कन्यामिथुनयोर्ज्ञः स्याद्धनुर्मीनाधिपो गुरुः ॥
शनिर्हि नक्रघटयोः कुलीरस्य चन्द्रमाः।
सिंहस्याधिपतिः सूर्यो राशीनामंधिपा मताः॥ इतिबृहत्पाराशरः।

और जिसकी कुंडली में लग्नेश लग्न से दूसरे घरमें स्थित होता है तो वह मनुष्य मोटा धनवान्, दीर्घायु, बडा बलवान्, राजा वा भूमि लाभ करने वाला और श्रेष्ठ धर्म की रक्षा करने में लग्न रहता है ॥ ३ ॥

सहजगतो लग्नपतिःसद्बंधुप्रवरमित्रपरिकलितम् ।
धर्मरतं दातारं शूरं सबलं करोति नरम् ॥ ४ ॥

और जिस मनुष्य की कुंडली में लग्न से तीसरे घरमें लग्नेश बैठा होता है तो वह मनुष्य सद्बंधुजनों और उत्तम मित्रोंसे युक्त, धर्म करने में तत्पर, दान देने वाला, शूरवीर और बलवान् होता है ॥ ४ ॥

लग्नेशे तुर्यगते नृपप्रियं प्रचुरजीवितं कुरुते ।
संलब्धपितरं पित्रोर्भक्तमबहुभोजनं कुरुते ॥ ५ ॥

और जिसकी कुंडली में लग्नसे चतुर्थ घर में लग्नेश बैठा हो तो वह मनुष्य राजा का प्रेमी, बडी भारी जीविका करने वाला पिता से लाभपाने वाला, माता पिता का भक्त और अल्प भोजन करने वाला होता है ॥ ५ ॥

पंचमगे लग्नपतौसु सुतं सत्यागमी श्वरं विदितम् ।
बहुजीविनं सुगीतं सुकर्मनिरतं जनं कुरुते ॥ ६ ॥

और जिसके लग्न से पंचम घरमें लग्नेश बैठा होता है तो उस मनुष्य के देवपितरों को मानने वाला सुन्दर पुत्र होता है और अपुन खुद दानशील,धनवान्. संसार में प्रसिद्ध, दीर्घायु वाला सारे संसार में गान करने योग्य और अच्छे कर्मों के करने वाला है ॥ ६ ॥

रिपुभवने लग्नेशे नीरोगं भूमिलाभं च ।
सबलं कृपणं धनिनमरिघ्नं सुकर्मपक्षान्वितम् कुरुते ॥ ७॥

और जिसकी जन्म कुंडली में लग्न से छठे घरमें लग्नेश स्थित होता है तो वह मनुष्य रोगों से रहित. भूमिलाभ से युक्त, बलवान् बडा कृपण धनाढ्य, शत्रुजनों का नाशक और अच्छे कर्मों के साथ सदाचारी होता है ॥ ७ ॥

प्रथमपतौ सप्तमगे तेजस्वी शोकवान्भवेत्पुरुषः ।

तद्भार्यापि सुशीला तेजः कलिता सुरूपा च ॥ ८ ॥

और जिसकी कुण्डली में लग्न से सप्तम घर में लग्नेश स्थित होता है वह मनुष्य बडा तेजस्वी और शोक करने वाला होता है और उसकी स्त्री बडी शीलवती अति प्रज्वलित तेज वाली, तथा रूपवती होती है ॥ ८ ॥

लग्नपतावष्टमगे कृपणो धनसंचयी तु दीर्घायुः ।
क्रूरे तु खचरे काणः सौम्यैः पुरुषो भवेत्सौम्यः ॥ ९ ॥

और जिसकी कुण्डली में लग्न से अष्टम घरमें लग्नेश होताहै वह मनुष्य बडा कृपण, धन संचय करने वाला, और दीर्घायु होताहै और यदि वही लग्नेश पाप ग्रह में हो तो उसको काणा और यदि सौम्यग्रह लग्नेश अष्टम होवे तब उस मनुष्य को सुन्दर रूप वाला करता है ॥ ९ ॥

मूर्तिपतिर्यदि नवमे तदा भवति प्रचुरबांधवःसुकृती ।
समभित्रस्तु सुशीलःसुकृती ख्यातःसुतेजस्वी ॥ १० ॥

और यदि लग्नेश लग्नसे नवम घरमें स्थितहो तो वह मनुष्य बहुत भाई बन्दों वाला, पुण्य करने वाला; सबों से मित्रता रखने वाला, बडा सुशील, पण्डित,जगत में विख्यात और बडा तेजस्वी होता है ॥ १० ॥

प्रथमेशो दशमस्थो नृपलाभी पंडितःसुशीलश्च ।
गुरुमातृपूजनमतिर्नृपप्रसिद्धः पुमान् भवति ॥ ११ ॥

और जिसकी कुण्डली में लग्न से दशम घरमें लग्नेश बैठा हो वह मनुष्य राजा से लाभ पाने वाला, बडा पण्डित, और सुशील गुरू माता पिता आदि की पूजा करने वाला एवं राजाओं में प्रसिद्ध होता है ॥ ११ ॥

एकादशस्थतनुपःसुजीवितं सुतसमन्वितं विदितम् ।
तेजःकलितं कुरुते पुरुषं वलिनं वाहनसंयुक्तम् ॥ १२ ॥

और जिसके लग्न से ग्यारहवें घरमें लग्नेश स्थित हो तो वह पुरुष सुख पूर्वक जीवन बिताने वाला, पुत्र से युक्त, संसार में विख्यात और तेज से युक्त, वलवान्, तथा घोडा, हाथी; अनेक वाहनों से युक्त होता है ॥ १२ ॥

२४

द्वादशगे मूर्तिपतौ कटुकवत्कर्मपरोऽशुभो नीचः ।
मानी सहगोत्रीभिर्विदेशगो दत्तभक्तनरः ॥ १३ ॥

यदि किसी मनुष्य का लग्नेश लग्न से बारहवें घरमें हो तो वह मनुष्य दुष्कर्म करने वाला, महापापी, नीच, अपने सहगोत्री पुरुषों के साथ मान करने वाला, विदेश में रहने वाला तथा कंगाल मनुष्यों को भात देने वाला होता है ॥ १३ ॥

॥ इति लग्नेशफलम् ॥

अथ द्वादशभावस्थधनेशफलम् ।

द्रव्यपतिर्लग्नगतः कृपणं व्यवसायिनं सुकर्माणम् ।
धनिनं श्रीपतिविदितं करोति नरमतुलभोगभुजम् ॥ १ ॥

और द्वितीय घरका स्वामी जिसके लग्न में स्थित होता है वह मनुष्य बडा कृपण, व्यवसाय करने वाला, सत्कर्म करने वाला, धनवान्, धनी होनेसे लोगों में प्रसिद्ध, असंख्य भोगों का भोगने वाला होता है ॥ १ ॥

व्यवसायी च सुलाभी ह्युत्पन्नभुगलीककारको नीचः ।
आलिकक्कद्विदितोऽपि च पूर्णोद्वेगी धनपतौ धनगे ॥ २ ॥

और जिसका धनेश धन भवनमें ही स्थित होता है वह मनुष्य व्यवसाय करने वाला, उत्तम लाभ युक्त, अपने यहां उत्पन्न वस्तुओं को भोगने वाला, प्रासंगिक बातको सत्य करने वाला, बडा नीच, सत्यवादी, प्रसिद्ध तथा बडा उद्वेगी होता है।

धनपे सहजगते बंधोर्भेदनावर्जिते क्रूरे ।
सौम्ये राजविरोधो भूतनये तस्करःपुरुषः ॥ ३ ॥

और जिसका द्वितीय भवनेश क्रूरग्रह लग्न से तृतीय घरमें स्थित होता है वह मनुष्य भाई बन्दों से भेद भाव न करने वाला होता है और यदि शुभग्रह हो तो राजासे बैमनस्य हो, अगर वही धनेश मंगल हो तो वह मनुष्य अवश्य चोर होता है।

तुर्यगते द्रविणपतौ पितृलाभपरःसत्यदयायुक्तः ।
दीर्घायुः क्रूरखगे पुनरथवा मरणं विनिर्देश्यम् ॥ ४ ॥

१—मानी सहगोत्रीभिः इत्यत्र गोत्रिञ्छब्दस्येन्नन्तत्वाद् भिसि दीर्घत्वमसाधु नलोपे कृते ह्रस्वत्वेनैव भाव्यम् अतः सहगोत्रीयै रितिपाठो विधीयेत चेत् साधुः स्यात्।

और जिसके धनेश लग्न से चतुर्थ स्थानमें स्थित होवें तो उसको पिता द्वारा पूर्ण लाभ करने वाला, सत्यवक्ता, प्राणियों पर दयाभाव रखने वाला, दीर्घायु होता है और यदि धनेश क्रूर (पापी) होकर चतुर्थ में स्थित हो तो वह मृत्यु देने वाला होता है ॥ ४ ॥

तनयकमलविलासी कष्टतरे कर्माणि प्रसिद्धं च ।
कृपणं दुःखनिधानं तनयगतो धनपतिःकुरुते ॥ ५ ॥

और जिसके धनेश पंचम स्थान में स्थित हों तो उस मनुष्य का पुत्र कमल की तरह प्रफुल्लित, कठिन से कठिन कार्य्य करनेमें प्रसिद्ध; अति कृपण और दुःखों का भोगने वाला होता है ॥ ५ ॥

षष्ठगतो द्रविणपतिर्धनसंग्रहतत्परं रिपुघ्नं च ।
भूलाभिनं सुखचरैःपापैर्धनवार्जितं पुरुषम् ॥ ६ ॥

यदि धनेश किसी की कुण्डलीमें छटे घरमें बैठा होताहै तो उस पुरुष को धनके संग्रह करने में तत्पर, शत्रुजनों का मारने वाला और यदि धनेश शुभग्रह हो तो भूमिका लाभ करने वाला होता है और यदि पाप ग्रहों के साथ द्वितीयेश छटे घरमें स्थित हो तो उस पुरुष को धन हीन करता है ॥ ६ ॥

धनपेऽपि[1] च सप्तमगे श्रेष्ठगचिन्ताविलासभोगवती ।
धनसंग्रहणी भार्या क्रूरे खचरे भवेद्वंध्याः ॥ ७ ॥

और जिस मनुष्य के द्वितीयेश (धनेश) सप्तम घर (जायाभाव) में स्थित होता है तब उस मनुष्य को बडे गौरवयुक्त किसी कार्य की चिन्ता रहे और श्रेष्ठ गुणवती, धन संग्रह करने वाली; क्रीडा करने वाली, भार्या प्राप्त होवे और यदि वही धनेश क्रूर ग्रहहो तब उसकी भार्या वन्ध्या (बांझ) होती है ॥ ७ ॥

धनपेऽष्टमभवनस्थे अष्टकपाली चात्मघातकःपुरुषः ।
उत्पन्नभुग्विलासी परधनहिंसी भवति दैवपर ॥ ८ ॥

और जिसके धनेश अष्टम घरमें स्थित होते हैं वह मनुष्य अष्टकपाली (मुर्दे की

१—अत्र पूर्वपाठः "धनपेन च सप्तमगे" इति सच विशेष्य विशेषणयोर्वैयधिकरण्यान्न साधुः प्रतिभाति ।

खोपडी लेकर भिक्षा मांगने वाला) आत्मघात करने वाला,यदृच्छा प्राप्त वस्तुओंको भोगने वाला तथा विलास करने वाला, दूसरे के धनको चुराने वाला, तथा हिंसा करने वाला और भविष्य को मुख्य मानने वाला होता है ॥ ८ ॥

धनपे धर्मगृहस्थे सौम्ये दानप्रसिद्धवाग्भवति ।
क्रूरे दरिद्रभिक्षुर्विडम्बवृत्तिस्तथा मनुजः ॥ ९ ॥

और जिसका द्वितीयेश शुभग्रह होता हुआ नवम घरमें स्थित होता है तो वह मनुष्य दान करने से प्रसिद्ध होता है यदि वह क्रूर ग्रह हो तो वह मनुष्य दरिद्री भिक्षुक और प्रत्येक कार्य में उपहास (फजीता) प्राप्त करने वाला होता है ॥९॥

दशमगृहस्थे धनपे नरेंद्रमान्यो भवेन्नृपाल्लक्ष्मीः ।
सौम्यगृहगे च मातुर्मनुजः पितृपालको भवति ॥ १० ॥

और जिसके धनेश दशम घरमें स्थित हो तो वह मनुष्य राजाओं का मान्य तथा राजा से लक्ष्मी प्राप्त करने वाला होता है और यदि द्वितीयेश शुभग्रह के घरका होकर दशम घरमें बैठा हो तो वह मनुष्य माता पिता का पालन करने वाला होता है ॥ १० ॥

एकादशगःखेचरव्यवहारे श्रीपतिः ख्यातः ।
लोकौघप्रतिपालनरतं ख्यातं च नरं भवेज्जातम् ॥ ११ ॥

और यदि धनेश ग्यारहवें घरमें स्थित हो तो वह मनुष्य ग्रहों को जानने या पक्षिओं के व्यवहार में प्रसिद्ध, लक्ष्मी का पति, लोक समूह के पालन करने में सदा तत्पर तथा नामवर होता है ॥ ११ ॥

द्रविणपतौ व्ययलीने पुरुषं कृपणं धनबर्जितं क्रूरे ।
सौम्ये लाभालाभं ख्यातं नरं भवेज्जातम् ॥ १२ ॥

और जिसका धनेश क्रूर बारहवें घरमें स्थित होता है वह मनुष्य महा कृपण और धन हीन होता है और शुभग्रह द्वितीयेश व्यय घरमें स्थित हो तो कहीं लाभ और कहीं हानि करने वाला होता है ॥ १२ ॥

॥ इति द्वितीयेशफलम् ॥

* अथ द्वादशभवनस्थतृतीयभवनेश फलम् *

सहजपतिर्लग्नगतो वाग्वादी लंपटः स्वजनभेदी ।
सेवापरःकुमित्रःकूटकरःप्रोच्यते पूरुषः ॥ १ ॥

जिसके सहजभाव का स्वामी लग्न में स्थित होता है तो वह मनुष्य प्रत्येक के साथ बात चीत करने से झगडा करने वाला, बडा कामी, अपने जनों में भेद कराने-वाला, सेवा करने वाला, दुष्ट मित्र वाला और फूट कराने वाला होताहै॥१॥

धनगृहगे सहजेशे भिक्षुर्निर्धनोऽल्पजीवितो मनुजः ।
बंधुविरोधी क्रूरे सौम्यैःपुनरीश्वरःखचरैः ॥ २ ॥

यदि किसी के जन्म समय में सहजेश पापी होकर द्वितीय स्थान में विद्यमान हों तो वह पुरुष भीख मांगने वाला, दरिद्र; थोडे काल तक जीने वाला,और अपने कुटुम्बियों के साथ विरोध करने वाला होताहै यदि वही सहजेश शुभग्रह हो तो बालक धनाढ्य होता है ॥ २ ॥

सहजगतःसहजपतिःसमसत्वं सुसुहृदं शुभस्वजनम् ।
देवगुरुपूजनरतं नृपलाभपरं नरं कुरुते ॥ ३ ॥

यदि सहजेश सहज भाव में ही स्थित हो तो वह बालक सतोगुणी, अच्छे मित्र वाला, श्रेष्ठ कुटुम्बिजनों वाला, और देवता, गुरु जनों की सेवा में तत्पर और राजा से लाभ कराने वाला होता है ॥ ३ ॥

भ्रातृपतौ मातृगते पितृबंधुसहोदरेषु सुखभोगी ।
मात्रा सह वैरकरःपितृवित्तस्य भक्षकःपुरुषः ॥ ४ ॥

और जिसका पराक्रमेश चतुर्थ स्थान में बैठा हो तो वह मनुष्य पिता तथा भाई बंदों के सुखका भोगने वाला, माता के साथ बैर करने वाला और पिता के धनका नाश करने वाला होता है ॥ ४ ॥

दुश्चिक्यपतौसुतगे सुतबांधवसुतसहोदरैःपाल्यः ।
दीर्घायुर्भवति नरःपरोपकारैकनिरतमतिश्च ॥ ५ ॥

और जिसका पराक्रमेश पंचम घरमें स्थित होता है वह मनुष्य पुत्र भाई बंधुओं के पुत्र और सहोदरों द्वारा पालन करने लायक; दीर्घायु और परोपकार करने में बुद्धि रखने वाला होता है ॥ ५ ॥

षष्ठगते सहजपतौ बंधुविरोधी च नयनरोगी च ।
भूलाभो भवति भृशं कदाचिदपि रोगसंकलितः ॥ ६ ॥

और जिसका पराक्रमेश छठे घरमें स्थित होता है वह मनुष्य भाई बंधुओं का विरोधी तथा नेत्रों का रोगी होता है और उसको अकस्मात् भूमि लाभ होता है और वह मनुष्य रोग व्याप्त होता है ॥ ६ ॥

सप्तमगे सहजेशे नरस्य भार्या भवेत्सुशीला च ।
सौभाग्यवती युवतिः क्रूरे देवरगृहं याति ॥ ७ ॥

और जिसके तृतीयेश सप्तम घरमें स्थित होता है उस मनुष्यकी सुशीला एवं सौभाग्यवती भार्या होती है यदि तृतीयेश क्रूर हो तो उस पुरुष की भार्या देवरके घरमें रहने वाली होती है ॥ ७ ॥

भ्रातृपतिरष्टमगः सहजं मृतसोदरं नरं कुरुते ।
क्रूरे वाहुव्यंगिनमपि जीवति यद्यष्टवर्षाणि ॥ ८ ॥

और जिसका तृतीयेश अष्टम घरमें हो तो उस मनुष्य का भाई मर जाता है और यदि पराक्रमेश पापी होकर अष्टम घरमें स्थित हो तो वह बांहकी पीड़ासे आर्त रहता है और वह आठ वर्ष तक ही जीता रहता है ॥ ८ ॥

धर्मगते सहजपतौ क्रूरे बंधूज्झितस्तथा सौम्ये ।
सद्बांधवश्च सुकृती सोदरभक्तो भवेन्मनुजः ॥ ९ ॥

और जिसके पराक्रमेश क्रूर ग्रह नवम घरमें स्थित हों तो वह मनुष्य भाई बन्दों से हीन होता है । यदि शुभग्रह हो तो उसके बान्धव जन सज्जन होतेहैं, स्वयं विद्वान् और सहोदर भाइयों का भक्त होता है; (पुण्यवान् और सगे भाई से स्नेह रखने वाला होता है) ॥ ९ ॥

दुश्चिक्येशे दशमगते नृपपूज्यो मातृबंधुपितृभक्तः ।
उत्तमबोधोबन्धुषुविनिश्चितो जायते जातः ॥ १० ॥

और जिसका पराक्रमेश दशम घरमें स्थित होता है वह मनुष्य राजाओं का पूज्य, माता, पिता, भाई बंधुओंका भक्त, उत्तम बुद्धिवाला और भाई बन्दोंके साथ मेल रखने वाला होता है ॥ १० ॥

लाभस्थःसहजेशःसुबांधवं राजशालिनं कुरुते ।
कुरुते बंधुषु सेवाविधायिनं भोगनिरतं च ॥ ११ ॥

और जिसका पराक्रमेश ग्यारहवें घरमें स्थित होता है वह मनुष्य सत्पात्र; बांधव से युक्त, किसी राजा के द्वारा शोभा पाने वाला, और भाई वंदोंका सेवक तथा भोग विलास करने वाला होता है ॥ ११ ॥

व्ययगे दुश्चिक्येशे मित्रविरोधोऽतिवंधुसंतापी ॥
दूरे वासितवंधुर्विदेशगामी नरो भवेज्जातः ॥१२

और जिसकी कुण्डलीमें, पराक्रमेश बारहवें घरमें स्थित होता है तो वह मनुष्य मित्रों से विरोध करने वाला, भाई बन्धुओं को संताप देने वाला और भाई बंधुओं से दूर भगाने पर बहुत काल तक परदेश में रहने वाला होता है ॥ १० ॥

॥ इति द्वादशभवनेशतृतीयेश फलम् ॥

अथ द्वादशभवनस्थचतुर्थभवनेशफलम् ।

तुर्यपतिर्लग्नगतःपितृपुत्रयोःस्नेहं मिथःकुरुते ।
उत्तमे पितृपक्षे वैरीकालितं पितृनाम्ना प्रसिद्धं च ॥ १ ॥

जिस पुरुषका चतुर्थेश लग्नमें स्थित होता है उसके पिता, पुत्रमें परस्पर स्नेह रहता है और पितृपक्ष वालों से बैर करने वाला, सुन्दर और पिता के नामसे सुप्रसिद्ध होता है ॥ १ ॥

पातालपे धनस्थे क्रूरखगे पितृविरोधकृच्छुभं कुरुते ।
पितृपालकःप्रसिद्धःपिता भुनक्तीह तल्लक्ष्मीम् ॥ २ ॥

और जिसका चतुर्थेश पापी होकर धनस्थ होवे तो वह मनुष्य पिता से विरोध करने वाला होता है और यदि वह शुभ ग्रह हो तो पिता का पालन करने वाला, सर्वत्र प्रसिद्ध, एवं उसके कमाये हुए धन को भोग पिता भी करता रहता है ॥ २॥

तुर्येशे सहजस्थे पितृमातृवेदकं नर कुरुते ।
पित्रा सह कलहकरं पितृबांधवघातकं कुरुते ॥ ३ ॥

और जिस पुरुष का चतुर्थेश तृतीय घरमें स्थित होताहै वह मनुष्य माता,पिता

को तकलीफ देने वाला होता है और पिता के साथ कलह करने वाला तथा पिता एवं भाई बन्धुओं का मारने वाला होता है ॥ ३ ॥

तुर्यगते तुर्यपतौ पितरि क्षितिपप्राप्तबहुमानः[१] ।
विदितःपितृलाभकरो भवति सुधर्मा सुखी धनपः ॥ ४ ॥

और जिसका चतुर्थेश चतुर्थ घरमें ही होता है तो उस मनुष्य के पिता को राजासे मान कराने वाला, जगत में विदित, पिता द्वारा धनका लाभ करने वाला, सुधर्म करने वाला, सुखी एवं धनवान् होता है ॥ ४ ॥

सुतगे तुर्यगृहेशे पितृसंलाभवांश्च दीर्घायुः ।
भवति कृतिप्रसिद्धःससुतःसुतपालकश्चैव ॥ ५ ॥

और जिसका चतुर्थेश पंचम घरमें होतो वह मनुष्य पितासे लाभ पाने वाला, दीर्घायु, कृतों द्वारा प्रसिद्ध और पुत्रवान् तथा पुत्रोंका पालन करने वाला होताहै ॥

हिबुकपतौ सुतसंस्थे मात्रर्थ विनाशकःशिशुर्जातः ।
पितृदोषरतः क्रूरे सौम्ये धनसंचयी तनयः ॥ ६ ॥

और जिसका चतुर्थेश पाप ग्रह होकर षष्ठ स्थान में स्थित होता है वह मनुष्य माता के धनका नाश करने वाला होता है और पिता के दोषों को करनेमें रत यदि सौम्य ग्रह होतो धनका संचय करने वाला होता है ॥ ६ ॥

अंबुपतौ सप्तमगे क्रूरे श्वशुरं स्नुषान पालयति ।
सौम्ये पालयति पुनःकुलवतीं कुजकवी कुरुतः ॥ ७ ॥

और जिसका चतुर्थेश पापी होकर सप्तम घरमें बैठा हो तो उस मनुष्य की स्त्री अपने श्वसुर की सेवा नहीं करती है यदि वह सौम्य ग्रह हो तो पालन करने वाली होती है और जिसके चतुर्थेश मंगल या शुक्र होते हैं तो उस मनुष्यकी स्त्री कुलवती होती है ॥ ७ ॥

छिद्रगतस्तुर्यपतिःक्रूरं रोगान्वितंदरिद्रं वा ।
दुष्कर्मपरं मृत्यु प्रियमथवामानवं कुरुते ॥ ८ ॥

१—अत्र पूर्वपाठः क्षितिपाधिपनाथमानकरः” इति लिखितो दृश्यते अधिपनाथशब्दस्यसमानार्थक त्वात्पुनरुक्ति दोषता स्फुटैव अर्थसंगतिश्चापि स्पष्टतया न संघटते ।

और जो चतुर्थेश अष्टम घरमें स्थित हो तो वह मनुष्य क्रूर स्वभाव वाला, रोगों से युक्त, या दरिद्र होता है, दुष्कर्म करने वाला अथवा इन्हीं सब कारणों से उस मनुष्यको अपना मरना अच्छा लगता है ॥ ८ ॥

सुकृते तुर्यपतौ पितर्यसंगी समस्तविद्यावान् ।
पितृधर्मसंग्रहपरः पितृनिरपेक्षो भवेन्मनुजः ॥ ९ ॥

और जिसका चतुर्थेश नवम घरमें स्थित होता है वह मनुष्य पिता से पृथक् रहने वाला, समस्त विद्याओं का ज्ञाता पितृधर्मके संग्रह करने वाला और पिता के व्यवहार से पृथक् रहता हैं ॥ ९ ॥

पातालपेऽवरगते पापे सुतमातरं त्यजेज्जनकः ।
सृजते त्वन्यां दयितां सौम्ये पुनरन्यसेवाकृत्पुरुषः ॥ १० ॥

यदि पापग्रह चतुर्थेश पाप ग्रह होकर दशम घरमें बैठा हो तो उस बालक को एवं उसकी माता को पिता छोड़ देता है और दूसरी कन्या से विवाह कर लेता है । और शुभ ग्रह चतुर्थेश दशम स्थान में स्थित होवे तो वह मनुष्य अन्य विवाह न करने वाला एवं दूसरी स्त्री के साथ रहने वाला होता है ॥ १० ॥

एकादशे तुर्यपतौ धर्मी पितृपालकः सुकर्मा च ।
पितृभक्तो भवति पुनःप्रचुरायुर्व्याधिरहितश्च ॥ ११ ॥

और यदि किसी के जन्म काल में चतुर्थेश ग्यारहवें घरमें बैठा होता है तो वह मनुष्य धर्म करने वाला, पिता का पालन करने वाला, सत्कर्म करने वाला, पिताका भक्त, दीर्घायु और व्याधि रहित होता है ॥ ११ ॥

द्वादशगे तुर्यपतौ मृत पितृको वा विदेशगो वाच्यः ।
पुत्रस्य पापखेटे चान्यपितुर्जन्म निर्देश्यम् ॥ १२ ॥

जिसकी कुंडली में चतुर्थेश लग्न से बारहवें घरमें स्थित होता है उस बालक का पिता शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है अथवा परदेश में ही रहा करता है । यदि पाप ग्रह चतुर्थेश व्यय स्थान में बैठा हो तो वह बालक दूसरे से जन्मा हुआ होता है ॥ १२ ॥

॥ इति चतुर्थेशफलम् ॥

अथ द्वादशभवनस्थपंचमभवनेशफलम् ।

लग्नगते पंचमपे प्रसिद्धस्तोकतनयपरिकलितम् ।
शास्त्रविदं वेदविदं सुकर्मनिरतं तथा कुरुते ॥ १ ॥

जिसके पंचमेश लग्नमें स्थित हो तो वह मनुष्य संसारमें प्रसिद्धिको प्राप्त हुए कम संख्याके पुत्रों से युक्त, शास्त्र जानने वाला, वेदवेत्ता और सत्कर्ममें निरत होताहै ।

पंचमपतिर्धनस्थः क्रूरे खेटेधनोज्झितंकुरुते ।
गीतादिकलाकलितं कष्टभुजं स्थानक प्रचुरम् ॥ २ ॥

क्रूरग्रह होकर पंचमेश द्वितीय स्थान में बैठा हो तो वह मनुष्य दरिद्र शुभग्रह होतो गाने बजाने आदि कलाओं का जानने वाला नौकरी आदि के वास्ते अच्छी जगह होने पर भी बड़ी कठिनता से भोजन चलाने वाला होता है ॥ २ ॥

तनयपतिः सहजगतः सुमधुरवाक्यं बंधुजनेषु विदितम् ।
कुरुते सुतास्तदीयाःपरिपालयन्ति तद्बन्धून् ॥ ३ ॥

यदि पंचमेश सहज (तृतीय) स्थान में हो तो वह पुरुष मनोहर एवं मीठी बातें कहने वाला तथा स्वबन्धुजनों में प्रसिद्ध होता है और उसके पुत्र सारे कुटुम्ब का पालन पोषण किया करते हैं ॥ ३ ॥

सुतपःपातालगतः पितृकर्मरतं प्रपालितं पित्रा ।
जननीभक्तं कुरुते क्रूरेतु विरोधिनं पितृभिः ॥ ४ ॥

और जिसका पंचमेश चतुर्थ घरमें स्थित होता है तो वह मनुष्य पिता के साथ कर्मों को करने में उद्यत रहे, पिता द्वारा अधिक समय पाला जाय और माता की सेवा करने वाला होता है यदि क्रूर ग्रह पंचमेश होकर चतुर्थ स्थान में स्थित होवे तो वह मनुष्य पिता से विरोध करने वाला होता ॥ ४ ॥

तनयगतस्तनयपतिर्मतिमंतं मानिनं जनं कुरुते ।
सुतकलितं प्रकटजनविख्यातं मानवं कुरुते ॥ ५ ॥

और जिसका पंचमेश पंचम स्थान में स्थित हो तो वह मनुष्य बुद्धिमान, मनुष्यों में माननीय, पुत्रों से युक्त, एवं प्रसिद्ध मनुष्योंमें भी अतीव प्रसिद्ध होताहै ॥

पंचमपतिश्च षष्ठे शत्रुयुतं मानहीनं च ।

रोगयुतं धनरहितं क्रूरःखचरः करोति नरम् ॥ ६ ॥

और जिसका पंचमेश क्रूर ग्रह षष्ठ स्थान में स्थित होता है तो उस मनुष्य को सर्बदा शत्रुओं से आक्रान्त, मान से हीन, रोगी तथा धन से रहित करता है ॥६॥

तनयपतौ सप्तमगे स्वसुताःसुभगाश्च देवगुरुभक्ताः ।
प्रियवादिनी सुशीला नरस्य ननु जायते दयिता ॥ ७ ॥

और जिस मनुष्य का पंचमेश सप्तम घर में स्थित होता है वह मनुष्य सुन्दर और देवता एवं गुरुजनों की भक्ति करने वाले पुत्रों से युक्त होता है और उसकी स्त्री भी प्रिय वचन बोलने वाली एवं बड़ी सुशीला होती है ॥ ७ ॥

सुतपे निधनगृहस्थे कटुवाङ्निःस्त्रियो यदा भवति ।
चंडा शब्दा व्यंगी सहजास्तनया भवंतितथा ॥ ८ ॥

और जिसका पंचमेश अष्टम घर में स्थित होता है तो वह मनुष्य दुर्वाक्य कहने वाला तथा स्त्रीसे रहित होता है और उसके भाई तथा पुत्र असह्य बातें कहतेहैं

सुकृतगतस्तनयपतिः सुबोधविद्यं कविं सुगीतिज्ञम् ।
नृपपूजितं सुरूपं नाटकरसिकं नरं कुरुते ॥ ९

और जिसका पंचमेश नवम घर में स्थित होता है वह मनुष्य विद्या में सुबोध बड़ा कवि, गान विद्या का जानने वाला, राजाओं से पूजित, रूपवान् और नाटक विद्या का अत्यन्त प्रेमी होता है ॥ ६ ॥

सुतपतिरंबरलीनो नृपकर्माणं नृपात् कलितभावम् ।
सत्कर्मरतं प्रवरं जननीसुखकृत्सुतं कुरुते ॥ १० ॥

और जिसका पंचमेश दशम घर में स्थित होता है वह मनुष्य राजा के समान कर्मों का करने वाला, राजाओं के समान विचार करने वाला, सत्कर्म करने में निरत, सबों में उत्तम और माता को आनन्द देने वाला होता है ॥ १० ॥

सुतनाथे लाभस्थे शूरः सुतवान्सत्यकृतासंगी ।
गीतादिसुकलाकलितो नृपभोगी जायते जातः ॥ ११ ॥

और जिसका पंचमेश ग्यारहवें घर में स्थित होता है वह मनुष्य शूरवीर,

पुत्रवान्, सत्य बोलने वाला, गाने बजाने आदि कलाओं को जानने वाला और राजा के समान भोग करने वाला होता है ॥ ११ ॥

पंचमपे द्वादशगे क्रूरे सुतरहितः शुभे सुसुतः ।
सुतसंतापपरः स्याद्विदेशगामी भवेन्मनुजः ॥ १२ ॥

और जिसका पंचमेश क्रूर ग्रह लग्न से बारहवें घर में स्थित होता है तो वह मनुष्य पुत्र से हीन होता है तथा सर्वदा पुत्रों के दुःख से संताप युक्त और परदेश का रहने वाला होता है यदि शुभ ग्रह हो तो सुन्दर पुत्र होता है ॥ १२ ॥ इति ॥

अथ षष्ठेशफलम् ।

षष्ठेशो लग्नगतो नीरुक्सबलः कुटुंबकष्टकरः ।
बहुपक्षो रिपुहंता भवति नरः स्वैरबचनधनः ॥ १ ॥

और जिसका षष्ठेश लग्न में स्थित होता है वह मनुष्य रोग रहित; बलवान्, कुटुम्ब को कष्ट करने वाला, आत्मपक्षीय अधिक जनों से युक्त, शत्रुजनों का मारने वाला और स्वच्छन्द रहने वाला ऐवं इच्छानुसार धन एकत्रित करने वाला होताहै

शत्रुपतौ द्रविणस्थे दुष्टश्चतुरो हि संग्रहपरेष्टः ।
स्थानप्रवरो विदितो व्याधिततनुः सुहृद्वित्तघ्नः ॥ २ ॥

और जिसका षष्ठेश द्वितीय घर में स्थित होता है वह मनुष्य बड़ा दुष्ट, प्रत्येक कार्य में चतुर, धन तथा प्रतिष्ठा बढाने में तत्पर, अच्छी जगह रहने वाला, सर्वत्र विख्यात, व्याधित शरीर वाला और मित्रों के धन का नाश करने वाला होता है ।

षष्ठपतिः सहजस्थः कुरुते स लोककष्टकरः ।
निजजनमारणनिपुणं कष्टं संग्रामतस्तस्य ॥ ३ ॥

जिसका षष्ठेश तृतीय घर में स्थित होता है वह मनुष्य लोगों को कष्ट देने वाला, अपने कुटुम्बियों को मारने में चतुर और उस मनुष्य को संग्राम में शत्रुओं से कष्ट होता है ॥ ३ ॥

षष्ठाधिपतिस्तुर्ये पितृतनयौ वैरिणौ मिथःकुरुते ।
सरुक्पिता सोऽथ सुता लक्ष्मीं लभते नरःसुचिरम् ॥ ४ ॥

१—इह प्राचीन पुस्तकस्थः पाठः—"निजजनक मारणम्" ।

और जिसका षष्ठेश चतुर्थ घर में स्थित हो तो पुत्र और पिता को परस्पर वैमनस्य युक्त करता है और उसका पिता रोगी होता है और वह मनुष्य तथा उस के लड़के बहुत समय पर्यंत लक्ष्मी को प्राप्त होते हैं ॥ ४ ॥

रिपुभवनपतौ सुतगे पितृतनयौ वैरिणौ मृतिःसुततः ।
क्रूरे शुभे च विधनः[१] पदवीदुष्टश्च तत्कपटी ॥ ५ ॥

और जिसका षष्ठेश क्रूर ग्रह पंचम घर में स्थित होता है वह पिता और पुत्र वैर युक्त होते हैं और अपने पुत्र के कारण मरण पाने वाला होता है यदि शुभग्रह षष्ठेश पंचम हों तो वह पुरुष निर्धन और पदवी पाकर दुष्ट स्वभाव वाला और सभी के साथ कपट करने वाला होता है ॥ ५ ॥

रिपुसदनेश रिपुस्थो[२] नीरुग्वैरी सुखी कृपणः ।
नहि जन्मतोऽपि सीदति स्थानकुवासी च भवति नरः ॥ ६ ॥

और जिसके षष्ठेश षष्ठ स्थान में ही स्थित हो वह मनुष्य रोग रहित, बहुतोंका वैरी, सुखी, बड़ा कृपण, जन्म से लेकर सुख युक्त और खराब स्थान में रहने वाला होता है ॥ ६ ॥

अहितपतौ सप्तमगे क्रूरे भार्या विरोधिनी चण्डी ।
संतापकरी त्वथ सौम्ये वंध्या वा गर्भनाशपरा ॥ ७ ॥

और जिसका षष्ठेश क्रूर ग्रह सप्तम घर में स्थित होता है वह मनुष्य विरोध करने वाली अत्यन्त क्रोध वाली एवं संताप करने वाली भार्या का पति होता है और जो शुभ ग्रह षष्ठेश सप्तमस्थ हो तो उसकी पत्नी वंध्या अथवा गर्भपात करने में प्रवृत्त रहती है ॥ ७ ॥

१—क्रूरेशुभे च निर्द्धनः इति पूर्वपाठस्तत्र "यस्याः प्रथमे पादे द्वादशमात्रा स्तथा तृतीयेऽपि, अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पंचदश सार्या" इत्युक्तलक्षणात्तृतीयपादे द्वादश मात्रा नैव जायन्ते इति च्छन्दोभङ्गदोषः समायाति पद्यमिदमार्या ततो निर्द्धन स्थाने विधन इति पाठ करणे तु सर्वं सूपपन्नम् ।

२—पूर्वपाठः—रिपुभवने रिपुस्थे, पद्यमिदम्—"आर्या परार्द्धतुल्ये दलद्वये प्राहुरुपगीतिम्" इति लक्षणलक्षितत्वादुपगीतिच्छंदः ।

शनेर्ग्रहणिकारुजो विषधराद्धरानंदनाद्
बुधश्चविषदोषतः सपदि मृत्युरेणांकतः ।
रवेर्मृगपतेर्वधात्मकटमष्टमात्षष्ठपाद्
गुरोरपि च दुष्टधीर्नयनदोषवाञ्छुक्रतः ॥ ८ ॥

और जिसके षष्ठेश शनि अष्टम बैठा हो तो वह मनुष्य संग्रहणी रोग से, मंगल षष्ठेश अष्टम स्थान में हो तो सर्प से, बुध षष्ठेश होकर अष्टम हो तो विष दोष से, चन्द्रमा षष्ठेश होकर अष्टम हो तो तत्काल मृत्यु हो, सूर्य षष्ठेश होकर अष्टम हो तो सिंह से, बृहस्पति षष्ठेश होकर अष्टम स्थान में स्थित हो तो बुद्धि खराब (पागल) से, और यदि शुक्र षष्ठेश होकर अष्टम घर में स्थित हो तो वह मनुष्य नेत्र रोग से मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

शत्रुपतिर्यदि नवमःक्रूरःखचरस्तदा भवेत् खंजः ।
बंधुविरोधी शास्त्रं न मन्यते याचकः पुरुषः ॥ ९ ॥

और जिसके क्रूर ग्रह षष्ठेश नवम स्थान में हो वह मनुष्य खंज (लंगड़ा) भाई बन्धुओं से विरोध करने वाला, शास्त्र का नहीं मानने वाला और भिक्षुक पुरुष होता है ॥ ९ ॥

१- षष्ठाष्टमादिस्थान चन्द्रदोषविचारो विस्तृतरूपेण वराहमिहिर कृत "लघुजातक" ग्रन्थेऽवलोकनीयः तत्र हि अरिष्टाध्याये ।

"षष्ठाष्टमेऽपि चन्द्रःसद्यो मरणाय पापसंदृष्टः ।
अष्टाभिः शुभदृष्टो वर्षैर्मिश्रैस्तदर्धेन" ॥

एतत्पद्यादारभ्य "योगे स्थानम् गतवति वलिनश्चन्द्रे स्वं वा तनुगृहमथवा" इत्यादि श्लोकपर्यन्तमेकादशभिः श्लोकैर्वर्णितः । भट्टोत्पलेन सुस्पष्टीकृतश्च विशदरूपेण । प्रायेणैतन्निवारका योगा अपि बहुषु जन्माङ्केषु दृश्यन्तेऽतः सर्वथा पर्यालोच्यैव दोषाविष्करणम् विधेयम् एतद्विषयेऽपि पूर्ण प्रतियत्यर्थं लघुजातकऽस्थोरिष्ट भङ्गाध्याय एव परिशीलनीयस्तत्र च " सर्वानिमानतिवलः स्फुरदंशुजातो लग्नस्थितः प्रशमयेत्सुरराजमंत्री" इत्यादित आरभ्य तत्काले यदि विजयी शुभग्रहः शुभनिरीक्षितो-ऽवश्यम् । नाशयति सर्वारिष्टं मारुत इव पादपान्प्रबलः" एतत्पद्यं यावदुक्तम् तत्सर्वं विविच्यैव फलम् वक्तव्यम् ।

अरिपे दशमगृहस्थे क्रूरे मातू रिपुस्तदा दुष्टः ।
धर्मसुतपालनमतिर्मातुर्दोषीभवेद्वैरी ॥ १० ॥

और जिसका क्रूर ग्रह षष्ठेश दशम स्थान में स्थित होता है वह मनुष्य माता से वैर करने वाला अत्यन्त दुष्ट स्वभाव वाला, धर्म और पुत्र के पालने में बुद्धि रखने वाला, एवं माता के दोषसे उसका वैरी बना रहता है ॥ १० ॥

वैरिपतौ लाभगते क्रूरे मरणं विपक्षतो भवति ।
वैरी तस्करहानिश्चतुष्पदाल्लाभवान्मनुजः ॥ ११ ॥

और जिसका क्रूर षष्ठेश ग्यारहवें घरमें स्थित होता है वह मनुष्य शत्रु के द्वारा मृत्यु पाने वाला, सबका वैरी, चोरों के द्वारा हानि युक्त और घोड़ा, भैंस इत्यादि चतुष्पदों के निमित्त से लाभ युक्त होता है ॥ ११ ॥

षष्ठपतौ द्वादशगे चतुष्पदाद्द्रव्यहानिकरः ॥
गमनागमनाल्लक्ष्मीहा दैवपरः केवलं भवति ॥ १२ ॥

और जिसका षष्ठेश बारहवें घरमें बैठाहो वह मनुष्य चौपायों के व्यापार में द्रव्यकी हानि करने वाला, विदेश इत्यादि में जाने आने से धनका नुकसान करने वाला और भाग्यानुसार ही सब होता है ऐसा मानने वाला होता है ॥

* इति षष्ठेश फलम् *

अथ द्वादशभवनस्थसप्तमेशफलम् ।

दयितेशो लग्नगतःस्तोकःस्नेोहनिमन्य भार्यास् ।
भोगभुजं रूपयुतं जनयति दयितादलितचित्तम् ॥ १ ॥

जिसका सप्तमेश लग्नमें स्थित होता है वह मनुष्य पराई स्त्रियों से प्रीति न करने वाला अनेक भोगों का भोगने वाला रूपवान्, और अपनी स्त्री में चित्त को रखने वाला होता है ॥ १ ॥

जायापतौ धनस्थे दुष्टा दयिता सुतेप्सिता भवति ।
वित्तं च कलत्रकृतं सततं निवसति विसंगश्च ॥ २ ॥

और जिसका सप्तमेश द्वितीय स्थान में स्थित हो उस पुरुष की भार्या दुष्ट

एवं, पुत्रोंकी इच्छा करने वाली, होती है स्त्रीके द्वारा धन प्राप्ति करने वाला और आपभी स्त्रीके संग से हीन होकर रहता है ॥ २ ॥

सप्तमपे सहजगते आत्मबलो वंधुवत्सलो दुःखी ।
देवररता सुरूपा गृहिणी क्रूरे सुहृद्गृहगा ॥ ३ ॥

और जिसका सप्तमेश तृतीय घरमें स्थितहो वह मनुष्य अपने बलसे युक्त बांधवोंसे स्नेह करने वाला बड़ा दुःखी होता है यदि सप्तमेश पाप ग्रह हो तो उस मनुष्य की स्त्री देवर के साथ रहने वाली, रूपवती, और मित्रों के घरमें रहने वाली होती है ॥ ३ ॥

जायेशे तुर्यस्थे लोलःपितृवैरसाधकस्नेही ।
अस्य पिता दुर्वाक्यस्तद्भार्यां पालयेज्जनकः ॥ ४ ॥

और लग्न से जिसका सप्तमेश (सप्तम स्थानका अधिपति) चतुर्थ (सुखभाव) स्थान में स्थित हो वह मनुष्य चंचल स्वभाव वाला; पिता के साथ वैर करने के छिद्रों में लीन रहे, और उसका बाप भी उससे बहुत खोटे २ वाक्य कहता रहे, एवं उसकी भार्या का पालन पोषण पिता करता है अर्थात् अपने पीहर में जाकर अपना जीवन निर्वाह करती है ॥ ४ ॥

सप्तमपतौ सुतस्थे सौभाग्ययुतः सुतान्वितः पुरुषः ।
प्रियसाहसो दुष्टमतिस्तत्तनयःपालयेद्दायिताम् ॥ ५ ॥

और जिसके जन्माङ्गमें लग्नसे सप्तमेश पंचम घरमें स्थित होता है वह मनुष्य सौभाग्य युक्त, पुत्रवान्, साहस प्रिय, दुष्ट बुद्धिवाला होता है और उसकी स्त्री को पुत्र पालन करता है ॥ ५ ॥

रिपुगृहगःकांतेशःप्रियया सह वैरिणं सरुग् भार्यम् ।
दयितासंगक्षयिणं क्रूरःकुरुते च मृत्युपदम् ॥ ६ ॥

और लग्न से जिसके सप्तमेश छठे घरमें स्थित हो तो वह मनुष्य स्त्रीसे वैर करने वाला, रोगिणी भार्या से युक्त होता है, और यदि सप्तमेश पाप ग्रह हो तो स्त्री के साथ अधिक सम्भोग करने के कारण क्षयरोगसे युक्त होता है और वह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त करने वाला होता है ॥ ६ ॥

सप्तमपे सप्तमगे परमायुःप्रीतिवत्सलःपुरुषः ।
निर्मलशीलसमेतस्तेजस्वी जायते जातः ॥ ७ ॥

और जिसकी जन्म कुण्डली में लग्न से सप्तमेश सप्तम घर में स्थित होता है वह मनुष्य दीर्घायु वाला, सत्रों के साथ प्रीति करने वाला, अच्छे स्वभाव वाला और तेजस्वी होता है ॥ ७ ॥

सप्तमपतिर्निधनगतो गणिकासु रतःक्रूरग्रहरहितः ।
नित्यं चिंतायुक्तो मनुजःकिल जायते दुःखी ॥ ८ ॥

और जिसके लग्नसे सप्तमेश अष्टम घरमें स्थित हो वह मनुष्य वेश्यागामी, क्रूर ग्रहण (विवाह) से रहित नित्य चिंतायुक्त और बड़ा दुःखी होता है ॥ ८ ॥

सुकृतगते सप्तमपे तेजोवाग्छीलवान्प्रियाप्येवम् ।
क्रूरे षंढविरूपो लग्नेशो वीक्षते नये प्रबलः ॥ ९ ॥

और जिसके लग्नसे सप्तमेश नवम घरमें स्थित होता है वह मनुष्य बड़ा तेजस्वी और शीलवान् और उसकी स्त्री भी सुशीला एवं तेज से युक्त होती है। यदि सप्तमेश क्रूर ग्रह नवम घरमें स्थित हो तो वह मनुष्य नपुंसक तथा कुरूप होता है यदि उसे लग्नेश देखता हो तो वह पुरुष नीति शास्त्र जाननेमें बड़ा प्रवीण होता है ॥ ९ ॥

सप्तमपे दशमस्थे नृपदोषी लंपटःकपटचित्तः ।
क्रूरे दुःखार्त्तःस्याच्छत्रोर्वशगो भवेत्पुरुषः ॥ १० ॥

और जिसके लग्न से सप्तमेश दशम घरसें स्थितहो वह मनुष्य राजा के दोष युक्त, अति कामी, कपट चित्तवाला होता है; यदि सप्तमेश क्रूर ग्रह हो तो अत्यन्त दुःखी और शत्रु के अधीन रहने वाला होता है ॥ १० ॥

लाभस्थे जायेशे भक्ता रूपान्विता सुशीला च ।
दयिता परिणीता स्यान्नरस्य तनु जायते सततम् ।

और जिसके लग्नसे सप्तमेश ग्यारहवें घरमें स्थित हो तो वह पुरुष बडी पति भक्ता रूपवती बडी सुशीला स्त्री के साथ पाणि ग्रहण (विवाह) करने वाला होता है और उस मनुष्य का दुर्बलांग होता है ॥ ११ ॥

सप्तमपे द्वादशगे गृहबंधुरतो नवा भवेद्भार्या ।
सा लोला दुष्टयुता दूराच्चलति च तस्य पुरुषस्य ॥ १२ ॥

और जिसका सप्तमेश बारहवें घरमें स्थित होता है वह मनुष्य घरके तथा कुटुम्ब के काम काजोंमें लगा रहता है और उसकी स्त्री बडी नवीन चंचला, दुष्टोंके साथ रहने वाली एवं अपने पति को छोडकर उससे दूर रहने वाली वैश्या सदृश होती है ॥ १२ ॥ ॥ इति सप्तमभवनेशफलम् ॥

अथ द्वादशभवनस्थाष्टमेशफलम् ।

अष्टमपे लग्नगते बहुविघ्नो दीर्घरोगभृत्स्तेनः ।
नेष्टा[1]नुवादनिरतो लक्ष्मीं लभते नृपतिवचसा ॥ १ ॥

जिस मनुष्य का अष्टमेश लग्न में स्थित हो वह मनुष्य प्रत्येक कार्य में अनेक विघ्नों से युक्त, बहुत काल तक रोगी रहने वाला, चोर; तथा निन्दनीय कार्य में लगा रहे और किसी राजाकी आज्ञा से लक्ष्मी प्राप्ति करने वाला होता है ॥

निधनपतौ धनसंस्थेऽल्पजीवीवैरिवान्नरश्चौरः ।
क्रूरे सौम्येऽतिशुभं किमु क्षितिपालतो मरणम् ॥ २ ॥

और जिसका अष्टमेश क्रूर द्वितीय घर में स्थित होता है वह मनुष्य थोड़े दिनों तक जीने वाला; शत्रुओं से युक्त और चोर होता है और यदि अष्टमेश शुभ ग्रह हो तो अति शुभ कारक होता है किन्तु किसी राजा द्वारा मृत्यु को प्राप्त होता है ।

अष्टमपतौ तृतीये बंधुविरोधी सुहृद्विरोधी च ।
व्यंगो दुर्वाग् लोलः सोदररहितो भवत्यथवा ॥ ३ ॥

और जिसका अष्टमेश तीसरे घर में बैठा हो तो वह मनुष्य वन्धुजनों से विरोध करने वाला, और सुहृज्जनों का विरोधी, अंग हीन, दुर्वाक्य कहने वाला, बड़ा चंचल, और सहोदर भाई से रहित होता है ॥ ३ ॥

निधनेशे तुर्यगते पितृरिपुःपितृतो नयेल् लक्ष्मीम् ।

१—इह प्राचीनपुस्तकोल्लिखितः "नष्टोरुवाद निरतः" इति पाठः तदर्थस्तु "नष्टस्यातीतस्य कार्यस्योरुवादोऽतिशयवाद स्तस्मिन्निरतः" इति कर्तव्यः ।

पितृपुत्रयोश्चयुद्धं जनको रोगान्वितो भवति ॥ ४ ॥

और जिसका अष्टमेश चतुर्थ घर में स्थित होवे वह मनुष्य पिता के साथ बैर रखने वाला, पिता से धन पाने वाला तथा पिता से लड़ने वाला होता है और उसका पिता रोग युक्त होता है ॥ ४ ॥

छिद्रपतौ तनयस्थे क्रूर सुतविरहितःशुभे तु शुभः ।
जातोऽपि नैव जीवति जीवेदथ कितवकर्मरतः ॥ ५ ॥

और जिसका अष्टमेश क्रूर ग्रह पंचम घर में हो वह मनुष्य पुत्र रहित होता है यदि अष्टमेश शुभ हो तो शुभफल होता है तथा जातक अधिक नहीं जीता है यदि शान्ति इत्यादि करनेसे जीपडे भी तो कपट कर्म करने में तत्पर होता है ॥५॥

छिद्रेशे रिपुसंगते दिनकरे भूभृद्विरोधी गुरौ
त्वंगे सीदति दृष्टिरोगकलितःशुक्रे सरोगी विधौ ।
भौमे कोपयुतो बुधे हि भयभृत्तडार्तिभूतः शनौ
कष्टंचैवदधाति तत्र शशभृत्सौम्येक्षितेनैव किम् ॥ ६ ॥

और जिसका अष्टमेश, सूर्य छठे घरमें स्थित हो वह मनुष्य राजा से विरोध करने वाला हो, यदि वृहस्पति अष्टमेश छठे होवे तब अंगमें खेद पानेवाला हो, शुक्र अष्टमेश षष्ठहो तब नेत्रों के रोगों से युक्त, चन्द्रमा अष्टमेश छठे घर में स्थित हो तो रोग युक्त, मंगल अष्टमेश छठे घरमें स्थितहो तो कोप से युक्त, बुध अष्टमेश छटेघर में होवे तब अत्यन्त डरपोक, और शनि अष्टमेश छठे घरमें हो तो वह मनुष्य मुखमें कष्टयुक्त होता है; और यदि चन्द्रमा, या सौम्य ग्रह उसे देखते हों तो अनेक अनिष्ट होते हैं ॥ ६ ॥

मृत्युपतौ सप्तमगे दुरुदररुक्कुशीलवल्लभो दुष्टः ।
क्रूरे भार्याद्वेषी कलत्रदोषान्मृतिं लभते ॥ ७ ॥

और जिसका अष्टमेश सप्तम घरमें स्थित होता है वह मनुष्य उदरमें दुष्ट रोग युक्त, दुष्टों से स्नेह करने वाला और बडा दुष्ट होता है यदि अष्टमेश पाप ग्रह हो तो भार्या से द्वेष करने वाला, और स्त्री के दोष से मृत्यु पाने वाला होता है ॥७॥

निधनपतौ निधनगते व्यवसायी व्याधिवर्जितो नीरुक् ।

कितवकलाकलितवपुः कितबकुले जायते विदितः ॥ ८ ॥

और जिसका अष्टमेश अष्टम घरमें स्थित होता है वह मनुष्य व्यवसाय करने वाला रोगों से रहित; तन्दुरुस्त; कपटी मनुष्यों की विद्या जानने वाला और कपटी मनुष्यों के कुलमें जन्म लेने वाला तथा प्रसिद्ध होता है ॥ ८ ॥

मृतिनाथे धर्मस्थे निःसंगी जीवघातकः पापी ।
निर्बंधुर्निःस्नेही पूज्यो विमुखे सुखे व्यंगः ॥ ९ ॥

और जिसका अष्टमेश नवम घरमें स्थित हो वह मनुष्य पुरुषों के संग से रहित, जीवोंका मारने वाला, बडा पापी; बन्धु रहित स्नेह रहित, शत्रु पक्षमें पूजनीय, और मुखमें व्यंग (झाईं) से युक्त होता है ॥ ९ ॥

कर्मगते निधनेशे नृपकर्मा नीचकर्मनिरतश्च ।
अलसःक्रूरे खचरे तनयो वा न जीवति माता ॥ १० ॥

और जिसका अष्टमेश दशम घरमें स्थित होता है वह मनुष्य राजा लोगों के कर्मों को करने वाला, और नीच कर्मों को करने वाला होता है, और जो क्रूर ग्रह अष्टमेश दशम घरमें स्थित हो तो आलसी होता है तथा उस मनुष्य के पुत्र या माता नहीं जीती है ॥ १० ॥

लाभस्थे मृत्युपतौ बाल्ये दुःखी सुखी भवति पश्चात् ।
दीर्घायुः सौम्यखगे पापेऽल्पायुर्नरो भवति ॥ ११ ॥

और जिसका अष्टमेश शुभ ग्रह ग्यारहवें घरमें स्थितहो तो वह मनुष्य बालक पन में दुःखी तत्पश्चात् सुख पाने वाला और दीर्घायु होता है और अष्टमेश पाप ग्रह होकर ग्यारहवें घरमें स्थित हो तो वह मनुष्य अल्पायु होता है ॥ ११ ॥

व्ययसंस्थितेऽष्टमेशे क्रूरवाक्तस्करःशठो निर्घृणः ।
आत्मगतिर्व्यंगवपुर्मृतस्तु काकादिभिर्भक्ष्यः ॥ १२ ॥

और जिसका अष्टमेश व्यय घर १२ में स्थित होवे वह पुरुष क्रूर वाक्य कहने वाला, चोर, शठ, निर्दयी, सब जगह स्वतन्त्र रहने वाला अंगहीन और काक गीध आदिकों का भक्ष्य होता है ॥ १२ ॥ इति अष्टमभावेशफलम् ॥

अथ द्वादशभावस्थनवमेशफलम् ।

लग्नगते नवमपतौ देवान्गुरून्मन्यते महाशूरः ।
कृपणःक्षितिपतिकर्मा स्वल्पग्रासी भवति मतिमान् ॥ १ ॥

और जिसका नवमेश लग्नमें होवे वह मनुष्य देवता तथा गुरुजनोंका मान्य करने वाला, बडा शूरवीर, कृपण, राजा के समान कर्म करने वाला और अल्पाहारी तथा विद्वान् होता है ॥ १ ॥

नवमेशे धनसंस्थे वृषतो विदितः सुशीलवात्सल्यः ।
सुकृती वदनव्यंगश्चतुष्पदोत्पन्नपीडितो मनुजः ॥ २ ॥

और जिसका नवमेश द्वितीय स्थान में स्थित होता है वह मनुष्य बैल के निमित्त से विख्यात, उत्तम स्वभाव वाला सब से प्रेम करने वाला, सुकृत करने वाला, मुखमें व्यंग (झाईं) से युक्त और चौपाये पशु से पीडा पाने वाला होता है ॥ २ ॥

सहजगते सुकृतपतौरूपस्त्री बन्धुवत्सलः पुरुषः ।
बंधुस्त्रीरक्षणकृद्यदि जीवति बंधुभिःसदा सहितः ॥ ३ ॥

और जिसका नवमेश तृतीय घरमें स्थित होता है वह मनुष्य रूपवती स्त्री तथा बान्धवों से प्रेम करने वाला, एवं बन्धु वर्ग और स्त्रीकी रक्षा करने वाला होता है यदि जीता रहे तो वह मनुष्य सदा भाई बन्धु समेत रहने वाला होता है ॥ ३ ॥

सुकृतेशे हिबुक[1]स्थे पितृभक्तः पितृयात्रादिके विदितः ।
विदितःसुकृती पुरुषःपितृकर्मरतमतिर्भवति ॥ ४ ॥

और जिसका नवमेश चतुर्थ घरमें स्थित होता है वह मनुष्य पिताका भक्त, पितृ यात्रादिक में विख्यात, सुकृत करने वाला और पितृकर्मों में बुद्धि रखने वाला होता है ॥ ४ ॥

सुकृतगृहपे सुतस्थे सुकृती देवगुरु पूजने निरतः ।
वपुषा सुन्दरमूर्तिः सुकृतसमेताःसुता बहवः ॥ ५ ॥

१--हिबुकं नाम चतुर्थस्थानम् तदाह--वराहमिहिरः--"पातालं हिबुक वेश्म सुखबंधुसंज्ञा श्चतुर्थभावस्य । नवमपंचमे त्रिकोणे नवमर्क्षं त्रित्रिकोणञ्च" इति

और जिस मनुष्य का नवमेश पंचम घरमें स्थित होता है वह मनुष्य सुकृत करने वाला, देवता, तथा गुरु के पूजन में निरत, शरीर से सुन्दर मूर्तिवाला होता है, और उसके धर्मनिष्ठ अनेक पुत्र होते हैं ॥ ५ ॥

शत्रुप्रणतिपरायणधर्मप्रसितं कलाविकलकार्यम् ।
दर्शननिंदानिरतम् सुकृतपतिःषष्ठगः कुरुते ॥ ६ ॥

और जिसका नवमेश छठे घरमें स्थित होता है वह मनुष्य वैरी मनुष्यों को प्रणति करने में परायण, धर्म करने वाला, किंचित् न्यून कार्य करने वाला और दर्शन की निंदा करने वाला होता है ॥ ६ ॥

नवमपतौ सप्तमगे सत्यवती सुवदना सुरूपा च ।
शीलश्रीयुतदयिता सुकृतयुता जायते नियतम् ॥ ७ ॥

और जिसका नवमेश सप्तम घरमें स्थित होता है उस मनुष्यको सत्य बोलने वाली सुमुखी, सुरूपा; शील तथा लक्ष्मी से युक्ता; पुण्यवती भार्या मिलतीहै ॥७॥

दुष्टो जंतुविघाती गृहबंधुविवर्जितःसुकृतरहितः ।
नवमेशे निधनगते क्रूरे षंढःस विज्ञेयः ॥ ८ ॥

और जिसका नवमेश अष्टम स्थान में होता है वह मनुष्य बडा दुष्ट, जीवों का मारने वाला घर तथा भाइयों से विवर्जित पुण्यहीन होता है यदि क्रूर ग्रह नवमेश अष्टम हो तब वह मनुष्य नपुंसक होता है ॥ ८ ॥

सुकृतगतः सुकृतपतिः स्वबंधुभिःप्रीतिमतुलितसमत्वम् ।
दातारं देवगुरुस्वजनकलत्रादिसंसक्तम् ॥ ९ ॥

और जिसका नवमेश नवम घर में बैठा हो वह मनुष्य सुकृत पति अपने भाई बांधवों से प्रीति रखने वाला, सभीके साथ समता रखने वाला दान देने वाला और देव गुरु स्वजन कलत्रादिकों में आसक्ति रखने वाला होता है ॥ ९ ॥

नृपकर्माणं शूरं मातापित्रोश्च पूजकं पुरुषम् ।
धर्मख्यातं कुरुते सुकृतपतिर्गगनगृहशीलः ॥ १० ॥

और जिसकी कुण्डली में लग्न से नवमेश दशम घर में स्थित होता है वह

मनुष्य राजाओं के कर्म करने वाला, बडा शूर; माता पिता का पूजक, धर्म से विख्यात तथा भाग्यशाली होता है ॥ १० ॥

दीर्घायुर्धर्मपरो धनेश्वरः स्नेहलो नृपतिलाभी ।
सुकृतख्याती सुसुतःसुकृतविभौ लाभभवनस्थे ॥ ११ ॥

और जिसके लग्न से नवमेश ग्यारहवें घर में बैठा होता है वह मनुष्य दीर्घायु धर्म करने वाला; धन का स्वामी, सब से स्नेह करने वाला, राजा से लाभ पाने वाला, पुण्य करने में विख्यात, सत्पात्र पुत्र वाला होता है ॥ ११ ॥

द्वादशगे सुकृतेशे मानी देशांतरे सुरूपश्च ।
विद्यावाञ्छुभखेटे क्रूरे च भवेद्गतिधूर्तः ॥ १२ ॥

और जिसका नवमेश द्वादश घर में स्थित हो तो वह मनुष्य बडा मानी, देशांतर में रहने वाला, सुरूप; विद्यावान् होता है, वह नवमेश शुभ ग्रह होवे तो, और यदि वह पापग्रह होय तब वह मनुष्य अत्यन्त धूर्त होता है ॥ १२ ॥ इति ॥

अथ द्वादशभावस्थ दशमभवनेशफलम् ।

दशमपतौ लग्नगते मातरि वैरी पितुर्भक्तः ।
मृत्युंगते च ताते खलु परपुरुषरता भवति माता ॥ १ ॥

जिसके दशम स्थान का स्वामी ग्रह लग्न में स्थित होता है वह मनुष्य माता सें बैर भाव रखने वाला, पिता का भक्त होता है और पिता की मृत्यु के बाद उस पुरुष की माता अवश्य परपुरुष के साथ संग करने वाली होती है ॥ १ ॥

वित्तस्थे गगनपतौ मात्रा पालितः सुतो भवति लोभी ।
मातरि दुष्टो नितरां स्वल्पग्रासी श्रुतसुकर्मा च ॥ २ ॥

और जिसका दशमेश लग्न से द्वितीय घर में बैठा हो वह मनुष्य बड़ी उम्र तक भी माता से पालन किया जाय, बडा लोभी, माता में ही दोष देखने वाला, अल्प भोजन करने वाला, शास्त्रानुकूल सत्कर्म करने वाला होता है ॥ २ ॥

मातृस्वजनविरोधी सेवानिरतो न कर्मणि समर्थः ।
मातुलपरिपालितःस्याद्दशमपतौ सहजभवनस्थे ॥ ३ ॥

और जिसका दशमेश लग्न से तृतीय घर में स्थित होता है वह मनुष्य माता तथा स्वजनों से विरोध करने वाला, सेवा करने में निरत, किसी कर्म में समर्थ नहीं और मामा से पालन किया होता हैं ॥ ३ ॥

व्योमपतौ तुर्यगते सुखे तु निरतःसदाचारः ।
भक्तश्च पितरि मातरि नृपमानी जायते पुरुषः ॥४ ॥

और जिसका दशमेश लग्न से चतुर्थ घर में स्थित होता है वह मनुष्य सुख भोगने में निरत, सदाचारी, माता पिता में भक्ति रखने वाला और राजमानी होताहै

शुभकर्मको विडंबी नृपलाभी गीतवाद्यनिरतः स्यात् ।
गगनपतौ तनयगते पालयति च तं सुतं माता ॥ ५ ॥

और जिसका दशमेश लग्न से पंचम घर (सुतभाव) में स्थित होता है वह मनुष्य शुभ कर्म करने का विडंबन करने वाला, राजा से लाभ युक्त, गाने बजाने में निरत होता है और उस पुत्र की पालन करने वाली माता ही होती है ॥ ५ ॥

अंबरपे रिपुसंस्थे शत्रुभयात्कातरः कलहशीलः ।
कृपणःकृपया हीनो नरो न रोगी भवति लोके ६ ॥

और जिसका दशमेश छटे घर में स्थित होता है वह मनुष्य शत्रु के भय से कायर, कलह करने वाला, कृपण (कंजूस) निर्दयी, और रोगों से रहित होता है

सुतवती शुभरूपसमन्विता निजपतिप्रतिपालनलालसा ।
भवति तस्य शुभं कुरुते सदा प्रियतमांऽवरपे दयितां गते ॥७॥

और जिसका दशमेश लग्न से सप्तम घर में बैठा हो तो उस मनुष्य की स्त्री पुत्रवती शुभ रूप युक्त अपने पतिव्रत धर्म पालन करने में लालसा रखने वाली, अत्यन्त पति को प्यारी और सदा पति के शुभ करने वाली भार्या होती है ॥ ७ ॥

पुष्करपतिरष्टमगःक्रूरं शूरं मृषान्वितं दुष्टम् ।
मातरि संतापकरं जनयति तनुजीवितं कितवम् ॥ ८ ॥

और जिसका दशमेश अष्टम घर में स्थित होता है उस मनुष्य को बडा क्रूर, शूरवीर, मिथ्या वचन कहने वाला, बडा दुष्ट; माता को संताप करने वाला, अल्पायु और कपटी करता है ॥ ८ ॥

शुभशीलः सद्बंधुः सन्मित्रो दशमपे नवमलीने ।
तन्माताऽपि सुशीला सुकृतवती सत्यवचनरता ॥ ९ ॥

और जिसका दशमेश नवम घर में होता है वह मनुष्य शुभ स्वभाव संपन्न, उत्तम बंधु युक्त, सत्पात्र मित्रों से युक्त, और अति सुशीला, पुराय करने वाली और सत्य बोलने वाली माता वाला होता हैं ॥ ९ ॥

गगनपतिर्गगनगतो कुरुते जननीसुखप्रदं पुरुषम् ।
जननीकुलविपुलसुखं प्रकथनघटनापटीयांसम् ॥ १० ॥

और जिसका दशमेश दशम घर में स्थित होता है वह मनुष्य सदा माता को सुख देने वाला, नाना के कुल से आनन्द पाने वाला, और सामयिक बात चीत करने में बडा चतुर होता है ॥ १० ॥

मानोर्जिताऽर्थसहितो माता च रक्षिणी भवेत्सुखिनी ।
दीर्घायुर्मातृसुखी पुरुषो लाभस्थितेंऽबरपे ॥ ११ ॥

और जिसका दशमेश ग्यारहवें घर में स्थित होता है वह पुरुष सत्कार पूर्वक धन पैदा करने वाला, धनाढ्य हो, माता द्वारा रक्षित तथा माता भी स्वयं सुख प्राप्त करने वाली होती है दीर्घायु, और स्वयं मातासे सुख पाने वाला होता है ॥

मात्रोज्झितो निजवलः शुभकर्मा नृपतिकर्मरतचेताः ।
व्योमपतौ व्ययसंस्थे देशांतरगतश्च पापखगे ॥ १२ ॥

और जिसका दशमेश बारहवें घर में स्थित होता है वह मनुष्य माता से रहित अपने बल से युक्त, शुभ कर्म करने वाला, तथा राजकार्य में निरत चित्त वाला होता है यदि पाप ग्रह दशमेश स्थित हो तो वह मनुष्य देशांतर में गमन करने वाला होता है ॥ १२ ॥ इति द्वादशभवनस्थै दशमभावेशफलम् ।

अथ द्वादशभवनस्थौ कादशेशफलम् ।

अल्पायुर्बलकलितः शूरो दाता जनप्रियःसुभगः ।
लाभपतौ लग्नगते तृष्णा दोषान्मृतिं लभते ॥ १ ॥

जिसका लाभेश लग्नमें स्थित होता है वह मनुष्य अल्प आयुवाला, बलसे

युक, शूरवीर, दान देने वाला, मनुष्यों को प्रिय, सुन्दरता युक (खूबसूरत) होता है परन्तु वह अधिक तृष्णा के दोष से मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ १ ॥

वित्तगते लाभपतावुत्पन्नभुगल्पभोजनोऽल्पायुः ।
अष्टकपाली रोगी क्रूरे सौम्ये च धनकलितः ॥ २ ॥

और जिसका लाभेश पाप ग्रह होता हुआ लग्न से द्वितीय स्थान में स्थित होवे वह मनुष्य उत्पन्न वस्तुओं का भोगने वाला; अल्प भोजन करने वाला, अल्प आयु वाला, अष्ट कपाली से रोगवान्, और यदि लाभेश शुभग्रह हो तब वह मनुष्य धनसे परिपूर्ण होता है ॥ २ ॥

बंधुस्त्रीपालनकःसुबांधवो बंधुवत्सलःसुभगः ।
लाभेशे सहजगते बंधूनां रिपुकुलोच्छेत्ता ॥ ३ ॥

और जिसका लाभेश लग्नसे तृतीय घर में स्थित हो तब वह मनुष्य भाई बंधु तथा स्त्री का पालन करने वाला, सत्पात्र बांधवों वाला, बन्धु जनों का वत्सल, सुभग (सुन्दर) और भाई बांधवों के शत्रुकुलका उच्छिन्न करने वाला होता है।३।

तुर्यस्थे लाभेशे दीर्घायुःपितरि भक्तिभाग्भवति ।
समयैककर्मनिरतः स्वधर्मनिरतश्च लाभवान्मनुजः ॥ ४ ॥

और जिसका लाभेश चतुर्थ स्थान में स्थित होता है वह मनुष्य दीर्घायु पिता में भक्ति युक्त, समयोचित कर्म करने में प्रवीण, स्वधर्म करनेमें रत और लाभ से युक्त होता है ॥ ४ ॥

लाभपतिःपुत्रगतःपितृपुत्रस्नेहलं मिथः कुरुते ।
तुल्यगुणं च परस्पर मल्पायुर्जायते पुरुषः ॥ ५ ॥

और जिसका लाभेश पंचम घरमें स्थित होता है वह मनुष्यका पिता पुत्रमें परस्पर स्नेह कराता है और वे पिता पुत्र समान गुण वाले होते हैं परन्तु वह पुरुष स्वल्पायु होता है ॥ ५ ॥

षष्ठगते लाभपतौ सुदीर्घरोगी सुवैरिकलितश्च ।
तस्करहस्तान्मृत्युः क्रूरे देशांतरगतस्य ॥ ६ ॥

और जिसका लाभेश छठे घरमें स्थित होताहै वह मनुष्य राजयक्ष्मादि अधिक

काल तक रहने वाले रोग से युक्त तथा प्रबल वैरी जनों से युक्त होता है और यदि क्रूर ग्रह लाभेश छठे घरमें स्थित हावे तब परदेश में चोर के हाथ से मृत्य पाने वाला होता है ॥ ६ ॥

सप्तमगे लाभेशे तेजस्वी शीलसंपदःपदवान् ।
दीर्घायुर्भवतिनर स्तथैकदयितापतिर्नित्यम् ॥ ७ ॥

और जिसका लाभेश सप्तम घरमें बैठा होता है वह मनुष्य बड़ा तेजस्वी, शील संपत्ति से युक्त, उत्तमाधिकारी, दीर्घायु और एकही पत्नी का पति होता है ॥ ७ ॥

एकादशपेऽष्टमगेऽल्पायुर्भवति स जातकः सुरोगी ।
जीवन्मृत्युश्च दुःखी भवति नरः सौम्यगगनचरे ॥ ८ ॥

और जिसका लाभेश पापी होकर अष्टम स्थान में स्थित होता है वह मनुष्य अल्पायु राजरोग से युक्त, तथा रोग के कारण जीवित रहता हुआ भी मृतप्रायः ही होता है । और यदि सौम्य ग्रह लाभेश अष्टम हो तब वह सर्वदा दुःखी रहताहै ॥

एकादशेशे सुकृतालयस्थे बहुश्रुतः शास्त्रविशारदश्च ।
धर्मप्रसिद्धो गुरुदेवभक्तः क्रूरे च बंधुव्रतवार्जितश्च ॥ ९ ॥

और जिसका लाभेश सौम्य ग्रह नवम घरमें स्थित होताहै वह मनुष्य बहुश्रुत, शास्त्रमें विशारद, धर्म से प्रसिद्ध, गुरुजन और देवताओं का भक्त होता है यदि पाप ग्रह लाभेश नवम स्थान में बैठा हो तब वह मनुष्य बन्धु तथा व्रत से हीन होता है अर्थात् उसके कोई बन्धु नहीं होता है ॥ ९ ॥

मातरिभक्तः सुकृती पितरि द्वेषी सुदीर्घतरजीवी ।
धनवाञ्जननीपालननिरतो लाभाधिके खगते ॥ १० ॥

और जिसका लाभेश दशम घर में बैठा होता है वह मनुष्य माता का भक्त; सुकृतकर्म करने वाला, पिता से द्वेष रखने वाला, दीर्घायु, धनवान्, और माता के पालन करने में निरत होता है ॥ १० ॥

लाभाधिपो लाभगतः करोति दीर्घायुषं पुष्कलपुत्रपौत्रम् ।
सुकर्मकं रूपतरं सुशीलं जनप्रधानं विपुलं मनोज्ञम् ॥ ११ ॥

और जिसका लाभेश लग्न सेलाभ ११ में ही स्थित होता है वह मनुष्य दीर्घायु, बहुत पुत्र पौत्र वाला, सत्कर्म करने वाला, रूपवान्, बडा सुशील, मनुष्यों में मुख्य, मोटी देह वाला और सबको मनोज्ञ (प्रिय) होता है ॥ ११ ॥

द्वादशगे लाभेशे सूत्पन्नभुक् स्थिरो भवति रोगी ।
उत्पातरतो मानी दाता च सुखी सदा पुरुषः ॥ १२ ॥

और जिसके लाभेश लग्न से बारहवें घर में स्थित होता है वह मनुष्य दैवेच्छा से प्राप्त हुई चीजको भोगने वाला, स्थिर प्रकृति, रोग से युक्त, उत्पात में रत, बडा मानी, दाता और सदा सुखी होता है ॥ १२ । इति एकादशेशफलम् ॥

अथ द्वादशभवनस्थ द्वादशेशफलम् ।

व्ययपे लग्नं प्राप्ते विदेशगः सुवचनः सुरूपश्च ।
अपसंगवाददोषी भवति कुमारोऽथ वा षंढः ॥ १ ॥

जिसका व्ययेश लग्न में हो वह मनुष्य विदेश गमन करने वाला, सुवचन कहने वाला, सुरूप, दुःसंग के निमित्त से दोष युक्त, आजन्म अविवाहित (क्वांरा) अथवा षंढ (नपुंसक) होता है ॥ १ ॥

द्वादशपे वित्तगते कृपणः कटुवाग् विनष्टलाभलयः ।
सौम्ये तु निधनं गच्छति नृपतस्करवन्हितोऽतिभयम् ॥२॥

और जिसका व्ययेश लग्न से द्वितीय घर में स्थित होता है वह मनुष्य महा कृपण सब से कटु वचन कहने वाला, लाभ रहित होता है यदि सौम्य ग्रह व्ययेश द्वितीय घर में स्थित होवे तब वह मनुष्य राज भय से या चौरजन्य भय से अथवा अग्निजन्य भय से मृत्यु पाने वाला होता है ॥ २ ॥

सहजगते द्वादशपे क्रूरे गतबांधवः शुभे च धनी ॥
तनुसोदरःसुकृपणो बंधुषु दूरे सदा भवति ॥ ३ ॥

और जिसका क्रूर ग्रह व्ययेश लग्न से तृतीय घर में होवे तब वह मनुष्य भाई बन्दों से रहित होता है और यदि शुभ ग्रह व्ययेश होकर तृतीय घर में स्थित होवे तब वह मनुष्य धनवान्, थोड़े भाई वाला, बडा कृपण और सदा भाईबन्दों से दूर रहने वाला होता है ॥ ३ ॥

तुर्यगते व्ययनाथे कृपणो रोगी सुकर्मा च ।
मृतिमाप्नोति सुतेभ्यः सततं मनुजो महादुःखी ॥ ४ ॥

और जिसका व्ययेश लग्न से चतुर्थ घर में स्थित होता है वह मनुष्य बडा कृपण, रोगी, सत्कर्म करने वाला, अपने लड़के से मृत्यु पाने वाला और निरंतर बडा दुःखी रहता है ॥ ४ ॥

द्वादशपतौ सुतस्थे क्रूरे सुतविवर्जितःशुभे ससुतः ।
जनककमलाविलासी समर्थताविरहितः पुरुषः ॥ ५ ॥

और जिसका व्ययेश लग्न से पंचम घर में पाप ग्रह होकर बैठा हो वह पुरुष पुत्र से रहित होता है यदि शुभ ग्रह व्ययेश पंचम घर में स्थित होवे तब वह पुरुष पुत्रों से युक्त, पिता के धन का भोगने वाला और अपनी सामर्थ्य से रहित होता है

षष्ठगते व्ययनाथे क्रूरे कृपणोऽक्षिदूषणः पुरुषः ।
लभते मृतिं नितांतं भृगुतनये नेत्रहीनः स्यात् ॥ ६ ॥

और जिसका क्रूर ग्रह व्ययेश लग्न से छठे घर में बैठा होता है वह मनुष्य कृपण, नेत्र में दूषण युक्त (काणा या भेंडा) और मरने योग्य होता है, यदि व्ययेश होकर शुक्र छठे घर में बैठा हो तब वह मनुष्य नेत्रों से हीन (अन्धा) होता है ॥ ६ ॥

द्वादशपे सप्तमगे दुष्टो दुश्चरितभृत्पटुवचनः ।
क्रूरे स्वस्त्रीतः स्यात्सौम्ये क्षयमेति गणिकातः ॥ ७ ॥

और जिसका द्वादशेश क्रूर ग्रह लग्न से सप्तम घर में स्थित होता है वह मनुष्य दुःशील, तथा दुष्ट कर्मों का करने वाला, उत्तम चतुराई के वचन कहने वाला, अपनी ही पत्नी से मृत्यु पाने वाला, अगर सौम्य ग्रह व्ययेश होवे तब वह मनुष्य वेश्या के निमित्त से मृत्यु पाने वाला होता है ॥ ७ ॥

व्ययनाथे निधनगतेऽष्टकपाली कार्यसाधनै रहितः ॥
द्रोहमतिः सौम्यखगे धनसंग्रहपरो नरो भवति ॥ ८ ॥

जिसका व्ययेश लग्न से अष्टम घर में स्थित हो वह मनुष्य अष्टकपाली, कार्य साधन से रहित, सभी से द्रोह करने में मन रखने वाला होता है । और यदि सौम्य ग्रह व्ययेश आठवें घर में स्थित हो वह मनुष्य धन संग्रह करने में तत्पर होता है ।

व्ययनाथे सुकृतगते तीर्थालोकाटनं वृत्तिः ।
क्रूरे खगे च पापैर्निरर्थकं याति तद्द्रव्यम् ॥ ९

और जिसका व्ययेश नवम घर में स्थित होता है वह मनुष्य तीर्थों के दर्शनार्थ परिभ्रमण वृत्ति वाला यदि क्रूर ग्रह व्ययेश नवम घर में स्थित होवे तब उस पुरुष का द्रव्य निरर्थक पापी पुरुषों करके खराब होता है ॥ ९ ॥

व्ययपे गगनगृहस्थे पररमणीपराङ्मुखःपवित्रांगः ।
सुतधनसंग्रहनिरतो दुर्वचनपरा भवति तन्माता ॥ १० ॥

और जिसका व्ययेश लग्न से दशम घरमें स्थित हो वह मनुष्य परस्त्री से पराङ्मुख, पवित्र शरीर वाला, और अपने पुत्रोंके लिये धन संग्रह करने में तत्पर; और उस मनुष्य की माता दुर्वाक्य कहने वाली होती है ॥ १० ॥

द्वादशपे लाभस्थे द्रविणपतिर्दीर्घजीवितो भवति ।
स्थानप्रवरो दाता विख्यातःसत्यवचनपरः ॥ ११

और जिसका व्ययेश लाभ स्थान ११ में स्थित होता है वह मनुष्य धनका पालन करने वाला, दीर्घायु, अपने स्थान में सब से श्रेष्ठ, दान देने वाला सर्वत्र विख्यात, सत्य बचन बोलने वाला होता है ॥ ११ ॥

विभूतिमान् ग्रामनिवासचित्तःकार्पण्यबुद्धिःपशुसंग्रही च ।
चेज्जीवति ग्रामयुतःसदा स्याद्व्ययाधिनाथे व्ययगेहलीने॥ १२॥

और जिसके जन्मांगमें व्ययेश व्यय भाव में ही स्थितहो वह मनुष्य ऐश्वर्य युक्त, ग्रामके रहने में मन रखने वाला कृपणता युक्त बुद्धिवाला, पशुका संग्रह करने वाला होता है किन्तु अल्पायु होवे, यदि जीवे तो अवश्यही ग्रामाधीश (बहुत बड़ा जिमीदार) होता है ॥ १२ ॥ ॥ इति द्वादशभवनेशफलम् ॥

अथ जातकेनीचग्रहफलम् ।

निष्ठुरदंतावदनःसमांत्रस्थूलजंघकरपादः ।

स्त्रीविवाहार्जितचित्तो भानुर्नीचस्थितः कुरुते ॥ १ ॥

जिस मनुष्यकी कुंडलीमें सूर्य नीच (तुला) का, होकर बैठा होता है वह निकले हुये बुरे दांतों वाला, फटे हुए मुख वाला (चौडे मुंह का, मुंह फट्ट) समान आंत वाला, और स्थूल जिसके जंघा और हाथ पांव होवें, स्त्रियों में और विवाह में मनका रखने वाला होता है ॥ १ ॥

नृत्यकवादकजल्पकधूर्तजनैश्चापि संगतिःसहसा ।
कुमतिःसंशयनिरतो नीचस्थो हिमकरःकुरुते ॥ २ ॥

और जिसकी कुंडली में चन्द्रमा नीचका ८ होकर बैठा होता है वह मनुष्य नृत्य करने वालों, वाजे बजाने वालों, बडे बकवादी, धूर्तता करने वालों के साथ, सोहबत करने वाला खोटी मतिवाला, और सदा संदिग्ध मनवाला होता है ॥ २ ॥

लक्ष्मी ह्यत्युग्रबला स्थिरविभवो बुद्धिमान्गुणज्ञश्च ।

१—"अजवृषभमृगाङ्गनाकुलीरा झषवणिजौ च दिवाकरादितुङ्गाः ।
दशशिखिमनुयुक् तिथीन्द्रियांशैस्त्रिनवकविंशतिभिश्चतेऽस्तनीचाः ॥

मेष, वृष, मकर, कन्या, कर्क, मीन, तुला, ये क्रम से सूर्यादिग्रहों के उच्चस्थान [राशि] हैं, जैसे सूर्य मेश राशिका उच्चका, चन्द्रमा वृष राशिका, मंगल मकर राशि का उच्च कहाता है, इत्यादि क्रमसे जान लेना चाहिये, अब यदि अपनी २ उच्चराशि ग्रहों के वक्ष्यमाण अंश होवेंतो ग्रह परमोच्चका होता है; जैसे सूर्य के १० अंश, चन्द्र के ३ अंश, भौम २८, बु, १५, गुरु ५, शु, २७, शनि तुलाके २० अंश पर परम उच्चका होता है अपनी उच्चराशि से सप्तम राशिपर ग्रह नीच का होता है और वही उच्च वाले अंश होवें तो ग्रह परम नीच होता है। (व० मि०)

॥ स्पष्टाववोधार्थं चक्रम् ॥

ग्रहाः	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध.	गुरु	शुक्र	शनि.
उच्चराशि.	मेष.	वृष,	मकर	कन्या	कर्क	मीन.	तुला
परमोच्चांशाः	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
नीच राशिः	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर.	कन्या.	मेष.
परम नीचांशाः	१०	३	२८	१५	५	२७	२०

रात्रिंचरोऽतिचौरो दुष्टात्मा भूसुतःकुरुते ॥ ३ ॥

और जिसकी कुंडली में मंगल नीचका होकर बैठता है वह मनुष्य अत्यन्त लक्ष्मीवाला, स्थिर वैभव युक्त, बुद्धिमान् गुणज्ञ रात्रिमें विचरने वाला बडा चोर और बड़ा दुष्ट होता है ॥ ३ ॥

शुभमतिर्वरयुवतिःशुभशीला भर्तृवचन अनुमुदिता ।
संततिपुत्रविहीनो नीचस्थश्चंद्रजःकुरुते ॥ ४ ॥

और जिसकी कुंडली में बुध नीचका १२ होकर बैठा होता है वह मनुष्य शुभ मतिवाला शुभ शील युक्त, भर्ता के बचनों की अनुमोदन करने वाली उत्तम स्त्री से युक्त और पुत्र संतति से रहित होता है ॥ ४ ॥

दिव्यस्त्रीवरकांचनपुष्पफलप्रकरपूजितःपुरुषः ।
भर्त्ता देशांतरस्थो नीचस्थः सुरगुरुःकुरुते ॥ ५ ॥

और जिसकी कुंडली में बृहस्पति नीच मकरका होकर बैठा होता है वह मनुष्य दिव्य स्त्री, उत्तम सुवर्ण पुष्प फल आदि प्रशंसनीय वस्तुओं के समूह से पूर्ण आनन्द पाने वाला सर्वत्र पूजा पाने वाला, बहुतसे जीवोंका पोषण करने वाला, देशान्तर में रहने वाला होता है ॥ ५ ॥

अतिकौतुकी विनोदी सभासु सुवाक्सदा प्राज्ञः ।
राज्यकलामणिमंडितो नीचस्थो भार्गवःकुरुते ॥ ६ ॥

और जिसकी कुण्डलीमें शुक्र नीच कन्या का बैठा हो वह मनुष्य बड़ा कौतुकी विनोद करने वाला, सभामें उत्तम वाक्यों का बोलने वाला, सब समय बुद्धिसे युक्त, राज्यकला और मणि से भूषित होता है ॥ ६ ॥

शत्रूणां क्षयकारको दृढवपुर्दीप्ताग्निकांतिश्चलो
देशग्रामपुरादिपत्तनबली साम्राज्यराज्याधिपः ।
स्वेच्छाचारविचारदक्षसुभगः स्त्रीसौख्ययुक्तःसदा
ज्ञातिभ्रातृ जनान्वितं च कुरुते नीचास्थितार्किःसदा ॥ ७ ॥

और जिसकी कुंडली में शनि नीच (मेष) का होता है वह पुरुष शत्रुजनों

का मारने वाला, दृढ अंगवाला, दीप्त अग्निसमान कांतिवाला, चञ्चल, देश ग्राम पुर नगर में बली; चक्रवर्ती राज्य करने वाला, अपनी इच्छा से रहने वाला, विचार करनेमें कुशल, अति सुन्दर, स्त्री सुख भोगनेमें और ज्ञाति भाई जनोंसे युक्त होताहै

दुर्भगश्च खलो दुष्टः पापात्मा दुष्टबुद्धिकृद्बहुलः ।
स्वकुटुंबपक्षहीनो नीचस्थो राहुरिति कुरुते ॥ ८ ॥

और जिसकी कुण्डली में राहु नीचका होकर स्थित हो वह मनुष्य कुरूप, बड़ा खल, दुष्ट, पापी, दुष्ट बुद्धि करने वाला और निज कुटुम्ब पक्ष से हीन होता है ।८।

कुशीलोपि तथा काणःस्त्रींविरही: दुःखकामिनो विरुचः ।
आतिपक्षदक्षकुशलो नीचस्थः केतुरपि कुरुते ॥ ९ ॥

और जिसकी कुंडली में केतु नीचका होकर बैठा हो वह मनुष्य दुष्ट स्वभाव वाला, नेत्र से काना, स्त्रीका वियोगी, शरीरके दुःख से कांति रहित और शत्रुजनोंके मारने में कुशल होता है ॥ ९ ॥ इति नीचस्थ ग्रहणां फलम् ॥

अथ उच्चस्थग्रहफलम् ।

धीरःप्रचंडःकुशलो गौरःशूरःकलानिधिश्चतुरः ।
दंडपातिर्धनयुक्त उच्चस्थो भास्करः कुरुते ॥ १ ॥

जिसकी कुण्डली में सूर्य उच्चका हो वह आदमी बडा धीर, तेज स्वभाव वाला, चतुर, गौरांग; बडा शूरवीर, अनेक कला जानने वाला और दंड देने के अधिकार से युक्त तथा धनवान् होता है ॥ १ ॥

विज्ञानधनसमेतः पात्रपवित्रं च कामिनी विरही ।
बहुजनताजनवल्लभ उच्चस्थो हिमकरः कुरुते ॥ २ ॥

और जिसकी कुंडली में चन्द्रमा उच्चका हो वह आदमी विज्ञान, तथा धन से युक्त, बडा पवित्र तथा सत्पात्र स्त्री का वियोगी, और सब आदमियोको प्रिय होताहै

उग्रदृढप्रहारं क्रूरं शस्त्रं वचनबहुविदितम् ।
नृपकुलवल्लभशूरं ह्युच्चस्थो भूसुतःकुरुते ॥ ३ ॥

और जिसकी कुण्डली में मंगल उच्चका हो वह आदमी उग्र, दृढ प्रहार करने वाला, क्रूर, तीक्ष्ण शस्त्र धारण करने वाला, बात चीतों के कारण लोक में प्रसिद्ध राजकुल को प्रिय और बडा शूरवीर होता है ॥ ३ ॥

चित्तबुद्धिबलिष्ठो मंत्रारक्षःक्रियालसःसौरः ।
अतिमतिविभवो बालःपापविमुक्तोःनिजोच्चगःशशिजः ॥४॥

और जिसकी कुंडली में बुध उच्चका होकर बैठा हो वह आदमी उदार तथा पूर्ण बुद्धिमान्, मंत्रोंसे सर्वथा रक्षित,पूर्ण क्रिया करनेमें आलस्य युक्त, सूर्योपासक, अत्यन्त बुद्धिमान्, धनाढ्य और पापों से रहित होता है ॥ ४ ॥

स्वाचारःशुभयुक्तःसुंदरवदनश्च मांडलो मुदितः ।
बहुभृत्यश्च सुराज्ञां मन्त्री गुरुरुच्चगो यस्य ॥ ५ ॥

और जिसकी कुंडली में बृहस्पति उच्चका होकर बैठा हो वह आदमी उत्तम आचरण युक्त, शुभ कर्म करने वाला, सुन्दर स्वरूप युक्त, मांडलिक राजा, सदा प्रसन्न रहने वाला, और अनेक भृत्य वाला तथा राजाओंका मंत्री होता है ॥ ५ ॥

दैवज्ञाने कुशलो यंत्री तंत्री च गायकः कविषः ।
कमलाविलासलापी दैत्यगुरुःप्रोच्चगःकुरुते ॥ ६ ॥

और जिसकी कुण्डली में शुक्र उच्चका होकर बैठा हो वह आदमी दैवज्ञान में कुशल, तंत्र तथा यंत्रों का जानने वाला, गान विद्या में प्रवीण, बड़ा कवि और लक्ष्मीवान् तथा भाग्यशाली होता है ॥ ६ ॥

सुस्रकार्मुकवृत्तिर्विख्यातः सकलवाहनाधीशः ।
मैत्रीसाहसधौर्त्यो मायावी सौरिःरुच्चगोः भवति ॥ ७ ॥

और जिसकी कुण्डली में शनि उच्चका हो वह आदमी उत्तम माला बनाने तथा शस्त्र धनुष आदि के कारण जीविका करने वाला, सर्वत्र विख्यात; सब वाहनों का स्वामी, मित्रता युक्त, साहसी, अत्यन्त धूर्त और बड़ा मायावी होता है।

क्रूरो दुष्टबलिष्ठःसाहसनिरतश्च मंत्रिणां सुमुरः ।
राज्यकलामणिमंडितःस्वर्भानुरुच्चगःकुरुते ॥ ८ ॥

और जिसकी कुंडली में राहु उच्चका होकर बैठा हो वह आदमी बड़ा क्रूर

१—सूर स्यायं भक्तः सौरः इति सौर शब्दस्य सूर्योपासक इत्यर्थः समायाति; एष एवार्थोऽति प्राचीनेन केनचिट्टीकाकर्त्रा कृतः किन्त्वाधुनिक टीकासु सौर इत्यस्य रणशूर इत्यर्थो लिखितो दृश्यतेऽस्माकन्तु अस्यार्थः सूर्योपासक इत्येव संमतः।

दुष्ट, बलवान्, साहस कर्म करने वाला, मंत्रिजनों में विख्यात और राज्य संबन्धी कलाओं में मणि की तरह भूषित होता है ॥ ८ ॥

स्थविरो नीचचारो मिथ्याभाषी भवेद्भ्रमणशीलः ।
परकर्मलिप्तचेता निजोच्चगे जायते शिखिनि ।

और जिसकी कुण्डली में केतु उच्चका हो वह आदमी वृद्धों में वृद्ध, नीचों के समान आचार करने वाला; झूंठ बोलने वाला, भ्रमण करने वाला और अन्य आदमियों के कर्म करने में निरत होता है ॥९॥ इति उच्चगतग्रहाणांफलम् ।

अथ मूलत्रिकोण फलम् ।

धनी सुखी कार्यविज्ञस्त्रिकोणस्थे दिवाकरे ।

॥ मूल त्रिकोण ज्ञानार्थं पद्यमेकम् ॥

सिंहो वृषः प्रथमषष्ठहयांगतौलिकुम्भास्त्रिकोणभवनानि भवन्ति सूर्यात् ।

सूर्य का सिंह; चन्द्रका वृष, भौमका मेष, बुध का कन्या, गुरु का धन, शुक्र का तुला, शनिका कुम्भ. त्रिकोण भवन होताहै । और प्रायः त्रिकोण स्थान पर ग्रह बलवान् होता है, मूल त्रिकोण भी इसी की संज्ञा है ।

अब यहां पर यह शङ्का होती है कि सिंह का स्वामी भी सूर्य है और सूर्य का मूलत्रिकोण भी सिंह ही है, और कन्या का स्वामी बुध है और बुधका मूलत्रिकोण भी कन्या और कन्या राशिका ही बुध उच्चका है । अब किसी को बुधकी दशाका फल कहना है तो उस अवसर पर बुध मूल त्रिकोण या बुध स्वक्षेत्री का फल कहना चाहिये अथवा बुध उच्च का मानकर फल कहना चाहिये । इसका निर्णय लिखते हैं ॥

विंशतिरंशाः सिंहे त्रिकोणमपरे स्वभवनमर्कस्य ।
उच्चं भागत्रितयं वृषं, इन्दोः स्यात्त्रिकोणमपरे स्युः ॥
द्वादश भागा मेषे त्रिकोणमपरे स्वभंतुभौमस्य ।
उच्चफलं कन्यायां बुधस्य तुङ्गां शकैःसदा चिन्त्यम् ॥
परतस्त्रिकोणजातं पंचभिरंशैःस्वराशिजं परतः ।
दशभिर्भागैश्चापे त्रिकोणमपरे स्वभं तु देवगुरोः॥
शुक्रस्यांशास्तिथय स्त्रिकोणमपरे स्वभं तु तुलायां च ।
कुम्भे त्रिकोण निजभे रविजस्य रवेर्यथा सिंहे ॥　　[इति सारावली]

सूर्य सिंह राशि में २० अंशतक त्रिकोण शेष अपना स्थान, वृषमें ३ अंशतक चंद्रका उच्च, शेषत्रिकोण, मेष में भौमका १२ अंश तक त्रिकोण, बाकी भौम का स्वक्षेत्र, बुधका कन्या में १५ अंश तक उच्च, पुनः ५ अंश [२० अंशतक] त्रिकोण, शेष अंशों में स्वक्षेत्र जानना, गुरुका धन राशि में १० अंश त्रिकोण, शेष स्वक्षेत्र, शुक्र तुला में १५ अंशतक त्रिकोण, शेष स्वक्षेत्र जानना, इसी प्रकार कुंभ राशि में २० अंश तक शनिका त्रिकोण शेष अंशों में स्वक्षेत्र जानना चाहिये ।

चंद्रे धनी च भोक्ता च भौमे शूरोऽदयःखलः ॥ १ ॥

जिसकी कुंडली में सूर्य त्रिकोण में बैठा हो वह आदमी धनवान्, सुख भोगने वाला, कार्य का जानने वाला होता है और यदि चन्द्रमा त्रिकोण में होवे तब वह आदमी धनवान्, भोगों का भोगने वाला होता है यदि मंगल मूलत्रिकोण में हो तो शूरवीर दया से रहित और बडा खल होता है ॥ १ ॥

बुधे त्रिकोणगे विज्ञो विनोदी विजयी नरः ।
गुरौ ग्रामपुरादीनां मठस्याधिपतिःसुधीः ॥ २ ॥

और जिसकी कुंडली में बुध त्रिकोण में होवे वह आदमी बडा विद्वान्, क्रीडा करने वाला; और विजयी होता है और जिसकी कुंडली में गुरु त्रिकोण में स्थित हो वह आदमी ग्राम, पुर और मठ का पति तथा बडा विद्वान् होता है ॥ २ ॥

शुक्रे त्रिकोणगे सुज्ञःसुखयुक्तो महीपतिः ।
मंदे नरो धनैःपूर्णो महाशूरःकुलंधरः ॥ ३ ॥

और जिसकी कुंडली में शुक्र मूलत्रिकोण में होता है वह आदमी बडा पंडित सुख से युक्त और भूमि का पति होता है और जिसके त्रिकोण में शनि बैठा हो वह आदमी धन से पूर्ण, बडा शूर और कुल का धारण करने वाला होता है। इति

अथ स्वगृहस्थग्रहफलम् ।

स्वगृहस्थे रवौ लोके महोग्रश्च सदोधमी ।
चंद्रे कर्मरतःसाधुर्मनस्वी रूपवानपि ॥ १ ॥

जिसकी कुंडली में सूर्य स्वक्षेत्री होता है वह आदमी वडा प्रतापी और सदा उद्यम करने वाला होता है और यदि चन्द्रमा स्वक्षेत्री हो तो वह आदमी कर्म करने में निरत, साधुओं की तरह व्यवहार करने वाला, बडा मनस्वी और रूपवान् होताहै

स्वगृहस्थे कुजे वापि चपलो धनवानपि ।
बुधे नानाकलाभिज्ञः पीडितो धनवानपि ॥ २ ॥

और जिसकी कुंडली में मंगल स्वगृही हो वह मनुष्य बडा चपल और धनवान् होता है और यदि बुध स्वगेही हो तब वह मनुष्य अनेक कलाओं का जानने वाला और धनवान् हो तब भी पीडित रहता है ॥ २ ॥

धनी काव्यश्रुतिज्ञश्च स्वचेष्टःस्वगृहे गुरौ ।
स्फीतः कृषीवलःशुक्रे शनौ मान्यः सुलोचनः ॥ ३ ॥

और जिसकी कुंडली में बृहस्पति स्वगेही हो वह मनुष्य धनवान्; काव्य तथा वेदों का जानने वाला, और सदा अपने कुलानुसार चेष्टा करने वाला होता है। और शुक्र स्वगेही हो तब दिव्य मूर्ति, खेती करने वाला होता है और यदि शनि स्वगेही हो तब वह मनुष्य सबों में मान्य और सुन्दर नेत्र वाला होता है ॥३॥ इति

अथ मित्रगृहस्थग्रहफलम् ।

सूर्ये मित्रगृहे ख्यातःशास्त्रज्ञःसुस्थसौहृदः ।
चंद्रे नरो भाग्ययुक्तश्चतुरो धनवानपि ॥ १ ॥

और जिसकी कुंडली में सूर्य मित्रगेही होता है वह मनुष्य सर्वत्र विख्यात, शास्त्र का जानने वाला; तथा मनुष्यों से चिरकालीन मैत्री करने वाला होता है, और जिसके चन्द्रमा मित्रगेही होता है वह मनुष्य बडा भाग्यवान्, चतुर और धनवान् होता है ॥ १ ॥

भौमे शस्त्रोपजीवी च बुधे रूपधनान्वितः ।
गुरौ मित्रगृहे पूज्यःसतां सत्कर्मसंयुतः ॥ २ ॥

और जिसके मंगल मित्रगेही होता है वह मनुष्य शास्त्र से जीविका करने वाला होता है और यदि बुध मित्रगेही होवे तब रूप तथा धन से युक्त होता है और गुरु मित्रगेही होवे तब सज्जनों से पूज्य और सत्कर्म युक्त होता है ॥ २ ॥

शुक्रे मित्रगृहे लोके धनी बंधुजनप्रियः ।
शनौ रुजाकुलो देहःकुकर्मनिरतो भवेत् ॥ ३ ॥

और शुक्र मित्रगेही होवे तब धनवान् और बन्धुजनों को प्रिय होता है यदि शनि मित्रगेही होवे तो रोगसे व्याप्त शरीर वाला और कुकर्म करनेमें निरत होताहैं

अथ शत्रुगृहस्थग्रहफलम् ।

सूर्ये रिपुगृहे नीचो विषयैःपीडितो नरः ।
चंद्रे हृदयरोगी च भौमे जायाजडोऽधनः ॥ १ ॥

जिसकी कुंडली में सूर्य शत्रुगेही हो तो वह मनुष्य बडा नीच और विषयों से

पीडित होता है और चन्द्रमा शत्रुगेही हो तब हृदय रोगी और मंगल शत्रुगेही हो तब स्त्री के कारण जड और निर्धन होता है ॥ १ ॥

बुधे रिपुगृहे मूर्खो वाग्धनी दुःखपीडितः ।
जीवे च जायते क्लीवो नाशन्नृत्तिर्बुभुक्षितः ॥ २ ॥

और बुध जिसके शत्रुगेही हो वह मनुष्य मूर्ख और वाणी द्वारा धनवान् और दुःख से पीडित होता है और गुरु जिसके शत्रुगेही हो वह मनुष्य नपुंसक, वृत्ति रहित और अति बुभुक्षित होता है ॥ २ ॥

शुक्रे शत्रुगृहे भृत्यःकुबुद्धिर्दुःखितो नरः ।
शनौ व्याध्यर्थशोकेन संतप्तो मलिनो भवेत् ॥ ३ ॥

और जिसके शुक्र शत्रुगेही हो वह मनुष्य भृत्य, कुबुद्धि से युक्त और सदा दुःखी रहने वाला होता है और जिसकी कुंडली में शनि शत्रुगेही हो वह मनुष्य व्याधि और धन के शोक से संतप्त और मलिन रहने वाला होता है ॥ ३ ॥ इति

अथ द्वादशभवनेस्थद्वादशलग्नफलानि ।

मेषोदये रक्ततनुर्मनुष्य श्लेष्माधिकःक्रोधपरः कृतघ्नः ।
सुमंदबुद्धिः स्थिरतासमेतः पराजितः स्त्रीभृतकैःसदैव ॥ १ ॥

जिस मनुष्य की कुंडली में मेष लग्न होता है वह मनुष्य लाल शरीर वाला कफ प्रकृति वाला, अधिक क्रोधी, कृतघ्नी, अत्यन्त मन्दबुद्धि, स्थिरता युक्त और स्त्री तथा नौकरों से सदा पराजित होता है ॥ १ ॥

वृषोदये जन्म यदा भवेच्च स्वचित्तरोगं स्वजनापमानम् ।
इष्टैर्वियोगं कलहं च दुःखं शस्त्राभिघातं चं धनक्षयं च ॥ २ ॥

और जिसका जन्म लग्न वृष होता है वह मनुष्य मानसिक रोग से युक्त, स्वजनों से अपमान पाने वाला, प्रिय पुरुषों से वियोग पाने वाला; कलह युक्त, सदा दुःखी, शस्त्र से अभिघात पाने वाला और धनक्षय से युक्त होता है ॥ २ ॥

तृतीयलग्ने पुरुषोऽतिगौरःस्त्रीरक्तचित्तो नृपपीडितश्च ।
दूतःप्रसन्नःप्रियवाग्विनीतःसमूर्द्धजो गीतविचक्षणश्च ॥ ३ ॥

और जिसका मिथुन लग्न का जन्म होता है वह मनुष्य गौरांग, स्त्रीमें आसक्त रजा से पीडित, दूत का काम करने वाला; सदा प्रसन्न, प्रिय वाणी कहने वाला, बडा नम्र, उत्तम शिर के बालों से युक्त और गान विद्या में प्रवीण होता है ॥ ३ ॥

कर्कोदये गौरवपुर्मनुष्यः पित्ताधिकःकल्पतरुः प्रगल्भः ।
जलावगाहानुरतोऽतिबुद्धिःशुचिःक्षमी धर्मरुचिः सुसेव्यः॥४॥

और जिसका कर्क लग्न का जन्म होता है वह मनुष्य गौर अंग वाला, पित्ताधिक वाला, कल्प वृक्ष के समान पुरुषों की इच्छा पूर्ण करने वाला, बडा ढीठ, नदी आदि में तैरने का प्रेमी, बडा बुद्धिमान्, पवित्र, क्षमावान्, धर्म में रुचि रखने वाला और सेवा करने योग्य होता है ॥ ४ ॥

सिंहोदये पांडुतनुर्मनुष्यःपित्तानिलाभ्यां परिपीडितांगः ।
प्रियामिषो रम्यरसःसुतीक्ष्णःशूरःप्रगल्भःसुतरां चरंतम् ॥ ५ ॥

और जिसका सिंह लग्न का जन्म होता है वह आदमी पाण्डु वर्ण वाला वायु तथा पित्त से पीडित अंग वाला, खाने में मांस जिसको प्यारा लगे, बडा तीक्ष्ण, शूरवीर, बडा ढीठ और निरन्तर भ्रमण करने वाला होता है ॥ ५ ॥

कन्याख्यलग्ने कफपित्तयुक्तो भवेन्मनुष्यःशुभकांतभावनः ।
श्लेष्मीप्रियस्त्रीविजितो नु भीरुर्मायाधिकःकामकदर्थितांगः॥६॥

और जिसका कन्यालग्नका जन्म होता है वह मनुष्य कफ पित्त युक्त, श्लेष्मिणी प्रिय स्त्रीसे पराजित वासनाके डरपोक, बडा मायावी, शुभ कान्ता (स्त्री) की भावना करने वाला और काम दुःखों से पीडितांग होता है ॥ ६ ॥

तुला विलग्ने च भवेन्मनुष्यःश्लेष्मान्वितःसत्यपरःसदैव ।
पराप्रियःपार्थिवमानयुक्तःसुरार्चनेतत्परकल्प एव ॥ ७ ॥

और जिसका तुलालग्न का जन्म होता है वह मनुष्य कफ युक्त, सदा सत्यवक्ता, अन्यों की सुन्दर स्त्रियों से स्नेह करने वाला; राजा से मान पाने वाला, और देव पूजन करने में तत्परसा होता है ॥ ७ ॥

लग्नेष्टके कोपधरो जरावान्भवेन्मनुष्यो नृपपूजितांगः ।
गुणान्वितःशास्त्रकथाऽनुरक्तो प्रमर्दकःशत्रुगणस्य नित्यम् ॥८॥

और जिस मनुष्य का वृश्चिकलग्न का जन्म होता है वह मनुष्य बडा क्रोधी, वृद्धता युक्त, राजा से पीडित, गुणों से युक्त, शास्त्र कथामें अनुरागी और हमेशा शत्रु गणों का मारने वाला होता है ॥ ८ ॥

धनोदये राजयुतो मनुष्यः कार्ये प्रवीणो द्विजदेवरक्तः ।
तुरंगयुक्तः सुहृदि प्रयुक्तस्तुरंगजंघश्च भवेत्सदैव ॥ ९ ॥

और जिसका धनलग्न का जन्म होता है वह मनुष्य राजा से संवन्ध करने वाला, कार्य करने में प्रवीण, ब्राह्मणों और देवताओं में अनुराग रखने वाला, घोड़ों का रखने वाला, अपने सुहृद्‌जनों का काम करने वाला और घोडों के समान जंघा वाला होता है ॥ ६ ॥

मृगोदये तोषरतःसुतीव्रो भीरुःसदा पापरतश्च मूर्तिः ।
श्लेष्मानिलाभ्यां परिपीडितांगःसुदीर्घगात्रःपरवंचकश्च ॥ १० ॥

और जिसका मकरलग्न का जन्म होता है वह मनुष्य संतोषी, बडा तीव्र, डरपोक, सदा पाप करने में निरत, कफ और बायु से पीडित अंग वाला, शरीर से अत्यन्त लंबा और शत्रुजनों से ठग विद्या करने वाला होता है ॥ १० ॥

घटोदये सुस्थिरतासमेतो वाताधिकस्तोयनिषेवणोक्तः ।
सुहृत्स्वगात्रःप्रमदास्वभीष्टः शिष्टानुरक्तो जनवल्लभश्च ॥ ११ ॥

और जिसका कुम्भलग्न का जन्म होता है वह मनुष्य धैर्य से युक्त, वातप्रकृति वाला, अधिक जल सेवन करने वाला, मित्रों के उपकारार्थ शरीर को समर्पण करनें वाला, स्त्रियों के साथ मैथुन करने से प्रसन्न रहने वाला, सज्जनों के साथ अनुराग रखने वाला और सब पुरुषों का प्रेमी होकर रहता है ॥ ११ ॥

मीनोदये तोयरतो मनुष्यो भवेद्विनीतःसुरतानुकूलः ।
सुपंडितःसूक्ष्मतनुःप्रचंडःपित्ताधिकःकीर्तिसमन्वितश्च ॥ १२ ॥

और मीनलग्न में जिसका जन्म होता है वह मनुष्य जलक्रीडा का प्रेमी, बडा विनीत, स्त्री सहवासके वास्ते बडा उत्सुक, बडा पंडित, छोटे शरीर वाला, बडा प्रचण्ड, पित्ताधिक वाला और बडा यशस्वी होता है ॥ १२ ॥ इति ॥

अथ धनभावस्थितमेषादिराशिफलम् ।

मेषे धनस्थे कुरुते मनुष्यो धनंस पुण्यैर्विविधैः प्रभूतैः ।
सुनीतियुक्तं तनयं प्रसूते चतुष्पदाढ्यं बहुपंडितज्ञम् ॥ १ ॥

और जिस मनुष्यके द्वितीय घरमें मेषलग्न होताहै वह अनेकप्रकारकेबहुतसे पुण्यों के करने से धनवान्, सुन्दर नीति से युक्त, चतुष्पदों के पालन करने वाला और अनेक पंडितोंके जानने वाला तथा एक अच्छे पुत्रको उत्पन्न करने वाला होता है ॥ १ ॥

वृषे धनस्थेलभते मनुष्यःकृषिप्रसादेन धनं सदैव ।
अनाभिघातं च चतुष्पदाख्यं तथा हिरण्यं मणिमौक्तिकाद्यं॥२ ॥

और जिसके द्वितीय घरमें वृषलग्न होता है वह मनुष्य खेती करने से सदा धन पाने वाला, चौपायों के अभिघात से रहित, और सुवर्ण, मणि, मोतिओं को पास रखने वाला होता है ॥ २ ॥

तृतीयलग्ने धनगे मनुष्यो धनं लभेत्स्त्रीजनतश्च नित्यम् ।
रौप्यं तथा कांचनजं प्रभूतं हयाधिकं साधुभिरेव सख्यम् ॥३॥

और जिसके द्वितीय घरमें मिथुन लग्न होताहै नित्यही वह मनुष्य स्त्रीजनोंके निमित्त से धन प्राप्त करने वाला, अनेक चांदी और सोनेके आभूषणादिकों से युक्त, बहुत घोडों का रखने वाला और साधुजनों का मित्र होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थराशिर्धनगो मनुष्यो धनंलभेद्वृक्षजमेव नित्यम् ।
जलाद्भयं यद्वनमिष्टभोज्यं नयार्जितं प्रीतिकरं सुतानाम् ॥४॥

और जिसके द्वितीय घरमें कर्क लग्न होता है वह मनुष्य वृक्षों के द्वारा धन संपादन करने वाला; जलके निमित्त से भय पाने वाला, बनमें उत्पन्न हुए कन्द मूलादिकों का भोजन करने वाला; न्याय से धनसंचय करने वाला और पुत्रों में प्रीति रखने वाला होता है ॥ ४ ॥

सिंहे धनस्थे लभते मनुष्यो धनं तपोरऽण्यजनात्तु मानम् ।
सर्वोपकारं प्रवणं प्रभूतं स्वविक्रमोपार्जितमेव नित्यम् ॥ ५ ॥

और जिसके द्वितीय घरमें सिंह लग्न होता है वह मनुष्य धनवान्, तप करने

वाला; बनवासी मनुष्यों से मान पाने वाला,सब प्राणी मात्रका उपकार करने वाला और अपने पुरुषार्थ से धन संचय करने वाला होता है ॥ ५ ॥

कन्योदये वित्तगते मनुष्यो धनं लभेद्भूमिपतेःसकाशात् ।
हिरण्यमुक्तामणिरौप्यजालं गजाश्वनानाविधवित्तजं च ॥ ६॥

और जिसके द्वितीय स्थान में कन्या लग्न होता है वह मनुष्य राजा के द्वारा सुवर्ण;मणि,मोती,चांदी,हाथी,घोड़ा आदि अनेक प्रकारके धनोंकापाने वालाहोताहै ।

तुले धनस्थे बहुपुण्यजातं धनं मनुष्यो लभते प्रभूतम् ।
पाषाणजं मृन्मयमार्तिजातंसस्योद्भवं कर्मजमेव नित्यम् ॥७ ॥

और जिसके द्वितीय भवन में तुलालग्न हो वह मनुष्य पुण्योंके प्रतापसे पाषाण से निकले और मिट्टी के व्यापार से शारीरिक पीडा से तथा खेती द्वारा उत्पन्न धनको एवं कर्म द्वारा उत्पन्न धनको पाने वाला होता है ॥ ७ ॥

धने त्वलिर्यस्य भवेच्च राशिः स्वधर्मशीलं प्रकरोति नित्यम् ।
विलासिनीकामपरं सदैव विचित्रवाक्यं द्विजदेवभक्तम् ॥ ८॥

और जिसके द्वितीय भवन में वृश्चिक लग्न हो वह मनुष्य स्वधर्म पालन करने वाला; स्त्रियों में काम की इच्छा रखने वाला, हमेशा विचित्र वाक्य कहने वाला और ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त होता है ॥ ८ ॥

धर्नुधरे वित्तगते मनुष्यो धनं लभेत्स्थैर्यविधानजातम् ।
चतुष्पदाढ्यं विविधं यशस्वी रसोद्भवं धर्मविधानलुब्धम् ॥९॥

और जिसके द्वितीय घरमें धनलग्न होता है वह मनुष्य स्थिर विधान से उत्पन्न किये धनका पाने वाला, अनेक उत्तम चतुष्पदों का रखने वाला, बडा यशस्वी और रस उत्पन्न वस्तुओं का खाने वाला, धर्म विधान का लोभी होता है ॥ ९ ॥

मृगे धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रपंचैर्विविधैरुपायैः ।
सेवासमुत्थं च सदा नृपाणां कृषिक्रियाभिश्च विदेशसंगात् ।१०

और जिसके द्वितीय भवन में मकर लग्न होता है वह मनुष्य अनेक प्रपंचों से तथा अनेक उपायों से धन प्राप्त करने वाला होता है और राज सेवा द्वारा, खेती करने से और विदेश जाने से धन पाने वाला होता है ॥ १० ॥

घटे धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रभूतं फलपुष्पजातम् ।
जनोद्भवं साधुजनस्य भोज्यं महाजनोत्थं च परोपकारी ॥११॥

और जिसके द्वितीय घरमें कुम्भ लग्न होता है वह मनुष्य फल पुष्पोंके निमित्त से अधिक धन सम्पादन करने वाला, किसी धनिक से मिले हुए धनको साधु जनों के भोजनमें लगावे और परोपकारी होता है ॥ ११ ॥

मत्स्ये धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रभूतैर्नियमोपवासैः ।
विद्याप्रभावान्निधिसंगमाच्च मातापितृभ्यां समुपार्जितंच॥१२

और जिसके द्वितीय घरमें मीन लग्न होता है वह मनुष्य बहुत नियमोपवास करने के निमित्त से, विद्याके प्रभाव से, किसी जगह खजाने के मिल जाने से और माता पिता के संचय किये धनके प्राप्त करने से बडा धनवान् होता है ॥ १२ ॥

॥ इति धनभवनफलम् ॥

अथ तृतीयभवनस्थराशिफलम् ।

तृतीयसंस्थे प्रथमे च राशौ द्विजातिमित्रश्च भवेन्मनुष्यः ।
परोपकारैःश्रवणैःशुचिश्च प्रभूतविद्यो नृपपूजितांगः ॥१॥

जिसके तृतीय घरमें मेष लग्न स्थित हो वह मनुष्य ब्राह्मणों का मित्र, परोपकार करने तथा कथा आदि के श्रवण करने से पवित्र, बडा विद्वान् और राजा से पूजा पाने वाला होता है ॥ १ ॥

वृषे तृतीये लभते मनुष्यो मित्रं नरेंद्रं प्रचुरं प्रतापम् ।
सुवित्तदं भूरियशोनिधानं सूरिं कविं ब्राह्मणरक्तचित्तम् ॥ २ ॥

और जिसके तृतीय घरमें वृषलग्न होता है वह मनुष्य किसी राजा का मित्र, बडा प्रतापी, अतिथि जनों को धन देने वाला; बडा यशस्वी, विद्वान्, कवि और ब्राह्मणों में अनुराग रखने वाला होता है ॥ २ ॥

तृतीयसंस्थे मिथुने च लग्ने करोति मर्त्यं वरयानयुक्तम् ।
स्त्रीवल्लभं सत्यमुदारचेष्टं कुलाधिकं पूज्यतमं नृपाणाम् ॥ ३ ॥

और जिसके तृतीय भवन में मिथुन लग्न होता है वह मनुष्य अनेक श्रेष्ठ सवारियों

से युक्त, स्त्री को अत्यन्त प्रिय लगने वाला, सत्यवक्ता, उदार चित्त युक्त, कुलीन और राजाओं का पूज्य होता है ॥ ३ ॥

कुलीरराशौ सहजं प्रयाते मित्रं लभेद्वैश्यगृहप्रदेशे ।
कृषीवलं धर्मकथानुरक्तं सदा सुशीलं मदसंमतं च ॥ ४ ॥

और जिसके तृतीय घरमें कर्कलग्न होता है वह मनुष्य वैश्य के घर पर मित्र की प्राप्ति करने वाला; खेती करने वाला, धर्म सम्बन्धी कथाओं का अनुरागी और सदा सुशील और अहंकार के साथ रहने वाला होता है ॥ ४ ॥

सिंहे तृतीये कुरुते मनुष्यंशूरं कुमित्रं वरवित्तलुब्धम् ।
वधात्मकं पापकथानुरक्तं प्रचंडवाक्यं नहि गार्वितं च ॥ ५ ॥

और जिसके तृतीय भवन में सिंह लग्न होता है वह मनुष्य शूरवीर, दुष्ट मित्र से युक्त, श्रेष्ठ धनका लोभी, प्राणियों के मारने की चेष्टा करने वाला,पापचर्चा करने वाला, प्रचंड वाक्य बोलने वाला और गर्व से हीन होता है ॥ ५ ॥

तृतीयभावस्थितलग्नकन्या शस्त्रानुरक्तं मनुजं सुशीलम् ।
नानासुहृत्संस्तुतकल्पकोपं प्रियद्विजं देवगुरुप्रभक्तम् ॥ ६ ॥

और जिसके तृतीय घरमें कन्या लग्न होताहै वह मनुष्य शस्त्र विद्यामें अनुराग रखने वाला, बडा सुशील, मित्रों से स्तुति करने लायक, ब्राह्मणों को प्यारा, अधिक जिसका कोप, देवताओं और गुरुजनों का भक्त होता है ॥ ६ ॥

तृतीयसंस्थे तु तुलाभिधाने मैत्री भवेत्पापपरैर्मनुष्यैः ।
लौल्यात्मको लौल्यकथाऽनुरक्तःसार्द्धमनुष्यैःस्वसुताल्पकैश्च॥७॥

और जिसके तृतीय घरमें तुला लग्न होता है वह मनुष्य पापी जनों से मैत्री करने वाला, चंचल स्वभाव वाला, हर समय चपलता की बातें करने वाला और अनेक मनुष्यों से युक्त तथा कम सन्तान वाला होता है ॥ ७ ॥

अलौ तृतीये च भवेन्नरस्य मैत्री सदा पापजनैर्दरिद्रैः ।
कृतघ्नघातैःकलहानुरक्तैर्व्यपेतलक्ष्यैर्जनताविरुद्धैः ॥ ८ ॥

और जिसके तृतीय घरमें वृश्चिक लग्न होता है वह मनुष्य पापी मनुष्यों से, दरिद्रों से, कृतघ्न पुरुषों से कलह करने वाले पुरुषों से अकारण झगडा करने

वालों से तथा सवों के साथ विरुद्धाचरण करने वाले मनुष्यों से मित्रता करने वाला होता है ॥ ८ ॥

चापे तृतीये लभते मनुष्यो मंत्री सुशूरो नृपसेवकश्च ।
चित्तैःस्वरैर्धर्मपदैःप्रसन्नैःकृपानुरक्तै रणकोविदैश्च ॥ ९ ॥

और जिसके तृतीय घरमें धन लग्न हो वह मनुष्य राजाका मन्त्री, शूरवीर, राजा का सेवक और जित चित्त, धर्मात्मा प्रसन्न मूर्ति, दयालु, युद्धकोविद मनुष्यों से धन प्राप्त करने वाला होता है ॥ ९ ॥

नक्रस्तृतीये च नरस्य यस्य करोति सौम्यं सततं सुताढ्यम् ।
नित्यं सुहृद्देवगुरुप्रसक्तं महाधनं पंडितमप्रमेयम् ॥ १० ॥

और जिसके तृतीय घरमें मकर लग्न होता है वह मनुष्य शान्त प्रकृति वाला, हमेशा अनेक पुत्रोंसे युक्त, देवता, गुरु तथा मित्र जनोंमें प्रेम करने वाला, अत्यन्त धनी और वडा विद्वान पण्डित होता है ॥ १० ॥

कुंभे तृतीये लभते मनुष्यो मैत्रीं व्रतज्ञैर्बहुकीर्तियुक्तैः ।
क्षमाधिकैः सत्यपरैःसुशीलैर्गीतप्रियैर्गोपपरैःखलैश्च ॥ ११ ॥

और जिसके तृतीय घरमें कुम्भ लग्न होता है वह मनुष्य व्रत जानने वाले, वडे कीर्ति युक्त, क्षमाशील, सत्यवक्ता, सुशील, गीत प्रिय, अहीरों तथा खल मनुष्यों से मित्रता करने वाला होता है ॥ ११ ॥

तृतीयभावस्थितमीनराशौ नरं प्रसूतं बहुवित्तयुक्तम् ।
पुत्रान्वितं पुण्यधनैरुपेतं प्रियातिथिं सर्वजनाभिरामम् ॥१२॥

और जिसके तृतीय घरमें मीन राशि होती है वह मनुष्य वडा धनवान, अनेक पुत्रों से युक्त, पुण्य तथा धन से सम्पन्न, अतिथि प्रिय और सब मनुष्योंको आनन्द देने वाला होता है ॥ १२ ॥ इति वृद्धयवनेसहज भाव फलम् ॥

अथ चतुर्थभावफलम् ।

मेषे सुखस्थे लभते सुखं च चतुष्पदेभ्योऽथ विलासिनीभ्याम् ।
भोगैर्विचित्रैः प्रचुरान्नपानैः पराक्रमोपार्जितमर्दनैश्च ॥ १ ॥

जिसके जन्म काल में चतुर्थ घरमें मेषलग्न होता है वह मनुष्य चतुष्पदों से स्त्री जनों से अनेक विचित्र भोगों से; प्रचुर अन्नपानों से, और अपने पुरुषार्थों से उपार्जन किये नौकर चाकरों के पैरों के दबवाने आदि से सुख पाने वाला होताहै।

वृषे सुखस्थे लभते सुखानि नरोऽतिमान्यैर्विविधैश्च मान्यैः।
शौर्येण भूपालनिषेवणेन प्रियोपचारैर्नियमैर्व्रतैश्च ॥ २ ॥

और जिस मनुष्यके चतुर्थ घरमें वृष लग्न होता है वह मनुष्य अपने अनेक महामान्य मनुष्यों से, शूरवीरता से, राजाकी सेवा करने से, प्रिय उपचारों से और अनेक नियम व्रत करने से सुख पाने वाला होता है ॥ २ ॥

तृतीयराशौ सुखगे सुखानि लभेन्मनुष्यःप्रमदाकृतानि।
जलावगाहैर्वनसेवया च प्रभूतपुष्पांबरसेवनेन ॥ ३ ॥

और जिसके चतुर्थ घरमें मिथुन लग्न होता है वह मनुष्य स्त्री के किये हुए जलावगाह (स्नान) से वन सेवा के निमित्त से और अत्यन्त पुष्प वस्त्रों के सेवन करने से सुख पाने वाला होता है ॥ ३ ॥

कुलीरराशौ च यदा सुखस्थे नरं सुरूपं सुभगं सुशीलम्।
स्त्रीसंमतं सर्वगुणैः समेतं विद्याविनीतं जनवल्लभं च ॥ ४ ॥

और जिस मनुष्य के चतुर्थ भवन में कर्क लग्न हो वह मनुष्य रूपवान्, सुभग, सुशील, स्त्रियों को संमत, सर्व गुण सम्पन्न, विद्या में प्रवीण और मनुष्यों को प्रिय होता है ॥ ४ ॥

सिंहे सुखस्थे न सुखं मनुष्यः प्राप्नोति जातु प्रचुरप्रकोपात्।
कन्याप्रसूतिं च दरिद्रसंगान्नरो भवेच्छीलविवर्जितश्च ॥ ५ ॥

और जिसके चतुर्थ घरमें सिंहलग्न होता है वह मनुष्य अत्यन्त कोप के निमित्त से कभी भी सुख पाने वाला नहीं होताहै, और कन्या सन्तति को पाने वाला और दरिद्र संग से शील रहित होता है ॥ ५ ॥

कुमित्रसंगी धनसंश्रयाच्च कन्यागृहे बंधुगते मनुष्यः।
पैशुन्यसंघाल्लभतेऽसुखानि चौर्येण शुद्धेन विमोहनेन ॥ ६ ॥

और जिसके चतुर्थ भवन में कन्या लग्न होता है वह मनुष्य बहुत धन होनेके कारण खोटे मित्रों की सोहबत करने वाला, चुगलों के संघ से, चोरीके निमित्त से और मोहनोच्चाटनादि से सुख नहीं पाता है ॥ ६ ॥

तुला सुखस्था च नरस्य यस्य करोति सौम्यं शुभकर्मदक्षम् ।
विद्याविनीतं सततं सुखाढ्यं प्रसन्नचित्तं विभवैः समेतम् ॥७॥

और जिसके चतुर्थ घरमें तुला लग्न होता है वह मनुष्य अति सौम्य, शुभ कर्म करने में कुशल, विद्याके कारण अत्यन्त विनम्र, निरंतर सुखसम्पन्न, सदा प्रसन्न चित्त और अनेक प्रकार धन संपन्न होता है ॥ ७ ॥

अलौचतुर्थेविपदा समेतं नरं सुतीक्ष्णं परभीतचित्तम् ।
प्रभूतसेवं गतवीर्यदर्पं परैःसुदक्षं मतिभृद्विहीनम् ॥ ८ ॥

और जिसके चतुर्थ भवन में वृश्चिक लग्न होता है वह मनुष्य विपत्ति युक्त, बडा तीक्ष्ण, शत्रु से भीत चित्त, बहुतों की सेवा करने वाला, शत्रुओं के दबानेसे पराक्रम के घमंड से रहित, बडा चतुर और बुद्धिमान मनुष्यों से हीन होता है ॥८॥

चापे सुखस्थे लभते मनुष्यः सुखं सदा संगरसेवनेन ।
तत्कीर्तनेनैव हयैर्विचित्रैःसेवासुखं स्वेन निबंधनेन ॥ ९ ॥

और जिसके चतुर्थ घरमें धन लग्न होता है वह मनुष्य सदा संग्राम करने से सुख पाने वाला, संग्राम कीर्तन से, विचित्र घोडों से और अपने उद्यम प्रबन्ध से सेवा सुख पाने वाला होता है ॥ ९ ॥

मृगे सुखस्थे सुखभाग्मनुष्यः सदा भवेत्तोयनिषेवणेन ।
उद्यानवापीतटसंगमेन मित्रोपचारैः सुरतप्रधानैः ॥ १० ॥

और जिसके चतुर्थ घरमें मकर लग्न होता है वह मनुष्य जलके सेवन करने से बाग बावडी के सम्बन्ध से और सुरत प्रधान मित्रों के उपचारों से सुख का भागी होता है ॥ १० ॥

घटे सुखस्थे प्रमदाभिधानात्प्राप्नोति सौख्यं विविधं मनुष्यः ।
मिष्टान्नपानैः फलशाकपत्रैर्विदग्धवाक्यैश्च समुत्सुकत्वैः ॥११॥

और जिसके चतुर्थ घरमें कुम्भ लग्न होता है वह मनुष्य स्त्री के आश्रय से

मिष्टान्न पानसे, फल शाक पत्र से और चतुराई के वचनों से उत्साह करने वाले उत्तम वाक्यों से अनेक प्रकार सुख पाने वाला होता है ॥ ११ ॥

मीन सुखस्थे तु सुखं मनुष्यःप्राप्नोति सौख्यं जलसंश्रयेण ।
शनैश्चरो देवसमुद्भवैश्च स्थाने सुवस्त्रैःसुधनैर्विचित्रैः॥ १२ ॥

और जिसके चतुर्थ घर में मीन लग्न होता है वह मनुष्य जलके आसरे से, देवताओं के निमित्त से, सुन्दर वस्त्रों से, विचित्र सुन्दर धनोंसे और अनेक वस्त्रों से सुख पाने वाला, मन्द गमन करने वाला होता है ॥ १२ ॥इतिवृद्धयवनेसुखभावफलम्

अथ पंचमभवनफलम् ।

मेषे सुतस्थे लभते मनुष्यः प्रियेण पुत्रान्वितचेतसा च ।
सुरात्सुखानीह कृतानि यानि पापानुरक्ताकुलचित्तयुक्तः ॥१॥

जिसके पंचम घरमें मेष लग्न होवे वह मनुष्य प्रिय मित्रके साथ तथा पुत्रों के साथ एक राय होने के कारण एवं देवताओं की पूजा के आश्रय से अनेक आनन्द मिले परन्तु तो भी पापों में फंसने के कारण उसका मन व्याकुल रहे ॥ १ ॥

वृषे सुतस्थे जनिमान् मनुष्यःप्राप्नोति कन्यां सुभगां सुरूपाम् ।
अपत्यहीनां बहुकांतियुक्तां सदानुरक्तां निजभर्तृधर्मे ॥२॥

और जिसके पंचम घरमें वृष लग्न होता है वह जन्मवान् मनुष्य भाग्यवती, रूपवती,संततिरहित, बडी तेजस्विनी और हमेशा अपने पतिव्रत धर्मको पालन करने में अनुरक्त कन्या को पाता है ॥ २ ॥

तृतीयराशौ सुतगे मनुष्यःप्राप्नोत्यपत्यानि मनःसुखानि ।
सुशीलयुक्तानि गुणाधिकानि प्रीत्या समेतानि बलाधिकानि॥३॥

और जिसके पंचम घरमें मिथुन लग्न होता है वह मनुष्य मनके सुख देनेवाले, सुशील युक्त, गुणाधिक परस्पर प्रीति युक्त, विनय करने वाले, महाबली अनेक पुत्रों को प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

कर्के सुतस्थे जनयेन्मनुष्यः पुत्रान्प्रसिद्धान् पितृहर्षकांश्च ।
विस्तीर्णकीर्तींश्च महानुभावान्धनेन युक्तान् विनयेन युक्तान्॥ ४॥

और जिसके पंचम घरमें कर्क लग्न होता है वह मनुष्य बडी कीर्ति युक्त,महानुभाव, धनसे युक्त, विनय युक्त सर्वत्र प्रसिद्ध पिताको खुश करने वाले ऐसे कई एक पुत्रों का पाने वाला होता है ॥ ४ ॥

सिंहे सुतस्थे जनयेन्मनुष्यःक्रूरस्वभावान्नयनेन कांतान् ।
मांसप्रियान् स्त्रीजनकान् सुतीव्रान्विदेशभाजःक्षुधया समेतान् ॥

और जिसके पंचम घरमें सिंह लग्न होता है वह मनुष्य क्रूर जिनके स्वभाव, विशाल नेत्र वाले, मांस जिनको प्रिय, स्त्री संतति के उत्पन्न करने वाले, विदेश के रहने वाले, बडे तीव्र और क्षुधायुक्त पुत्रों को उत्पन्न करता है ॥ ५ ॥

कन्या यदा पंचमगा तदा स्युःकन्या नराणां तनयैर्विहीनाः ।
पतिप्रियाःपुण्यतराःप्रगल्भाःप्रशांतपापाःप्रियभूषणाश्च ॥ ६ ॥

और जिसके पंचम घरमें कन्या लग्न होताहै उस मनुष्यके पुत्र संततिसे रहित, अपने पतिको प्यारी; अत्यन्त पुण्यवती, बडी ढीठ, शांत पापवाली और भूषण (जेवर) जिनको प्रिय ऐसी अनेक कन्या होती हैं ॥ ६ ॥

तुला यदा पंचमगा नराणां तदा सुशीलानि मनोहराणि ।
भवंत्यपत्यानि सरूपकाणि क्रियासमेतानि शुभेक्षणानि॥७॥

और जिसके जन्माङ्ग में लग्न से पंचम घरमें तुला लग्न होवे तब उस मनुष्य के अति सुशील, बडे मनोहर, रूपवान्, क्रिया करने वाले और विशाल नेत्र वाले पुत्र होते हैं ॥ ७ ॥

कीटे सुतस्थे जनयेन्न योनौ पुत्रान्मनुष्यःसुभगान् सुशीलान् ।
अज्ञातदोषान् प्रणयेन युक्तान्निजेऽत्रधर्में सततं मनुष्यः ॥ ८ ॥

और जिसके जन्माङ्गमें लग्नसे पंचम घरमें वृश्चिक लग्न आपडे वह मनुष्य बडे सुन्दर, बडे सुशील, अज्ञात दोष, अपने धर्म में स्नेह रखने वाले पुत्रों को नहीं उत्पन्न करताहै बल्कि उसके दुराचारी पुत्र होवे किन्तु स्वयं अपने धर्ममें तत्पर रहे ॥ ८ ॥

चापे सुतस्थे जनयेन्मनुष्यःसुतान्विचित्रान् हयलुब्धदक्षान् ।
धानुष्कचर्यान् हतशत्रुपक्षान् सेवाप्रियान् पार्थिवमानयुक्तान् ॥

और जिसके लग्न से पंचम घरमें धन लग्न आपडे वह मनुष्य अति विचित्र, घोडों से स्नेह रखने वाले, धनुर्विद्या जानने वाले, शत्रु पक्ष के नाश करने वाले, अपने गुरु वर्गों की सेवा में मन लगाने वाले और राजा से मान पाने वाले पुत्रों को उत्पन्न करता है ॥ ६ ॥

मृगे सुतस्थे जनयेन्मनुष्यःपुत्रान् सदा पापमतीन् कुरूपान् ।
क्लीवान् कुभावान्विगतप्रभावान् सुनिष्ठुरान् प्रेमविवर्जितांश्च॥

और जिसके पंचम घरमें मकर लग्न होताहै वह मनुष्य सदा पापमें बुद्धि रखने वाले, कुरूप, नपुंसक, कुत्सित भावयुक्त; प्रभाव से रहित;अति निष्ठुर और प्रेम रहित पुत्रों को उत्पन्न करता है ॥ १० ॥

कुंभे सुतस्थे स्थिरतासमेतान् गंभीरचेष्टानतिसत्ययुक्तान् ।
पुत्रान् मनुष्यो जनयेत्प्रसिद्धान् कष्टंसहान् पुण्ययशःप्रभूतान्॥

और जिसके पंचम घर में कुंभ लग्न होता है वह मनुष्य स्थिरता युक्त, गंभीर चेष्टा वाले, अत्यन्त सत्यवक्ता; सर्वत्र प्रसिद्ध; कष्टों के सहने वाले और बहुत पुण्य तथा यश से युक्त पुत्रों को उत्पन्न करता है ॥ ११ ॥

मीने सुतस्थे ललितान् सुरक्तान् पुत्रान् मनुष्यो लभते व्यवायात्
रोगैःसमेतांश्च सदा कुरुपान् सहास्यतान् स्त्रीसहितान् सदैव॥

और जिस मनुष्य के पंचम घर में मीन लग्न होवे वह मनुष्य स्त्री संग करनेसे ललित, गोरे रंग वाले, हमेशा रोगोंसे युक्त, अति कुरूप, हास्य युक्त, स्त्रियोंके सहित (अर्थात् कोई क्वारा न रहे सबों का विवाह हो जाय) पुत्रों को उत्पन्न करता है ॥ १२ ॥ ॥ इति पंचमभावफलम् ॥

अथ षष्ठभावफलम् ।

मेषे रिपुस्थे प्रभवेच्च वैरं सदा नराणां वृषभे रिपुस्थे ।
अपत्यमार्गे गतमंगनानां संगोनितांतं निजबंधुवर्गे ॥ १ ॥

जिसके छठे घरमें मेषलग्न होता है उस मनुष्यका सदा मनुष्य मात्रसे बैर होता है और जिस मनुष्य के छटे घर में वृष लग्न होता है उस मनुष्य का अपने नाते में बेटा लगने वाले कुटुम्बियों की स्त्रियों (पुत्रबधुओं) से संभोग करने के कारण अपने भाई वृंदों से निरन्तर बैर होजाता है ॥ १ ॥

तृतीयराशौ रिपुगे नराणां वैरं भवेत्स्त्रीजनितं सदैव ।
तथा नराणां निहितं च पापैर्वणिग्जनैर्नीचजनानुरक्तैः ॥ २ ॥

और जिस मनुष्य के छटे घर में मिथुन लग्न होवे तो वह निरन्तर अपनी स्त्री से वैर करने वाला और पापी मनुष्यों से तथा बनियों से और नीच जनों में अनुराग रखने वाले मनुष्यों से बैर करने वाला होता है ॥ २ ॥

कर्के रिपुस्थे सहसा भयं च भवेन्मनुष्यस्य सुतातुरस्य ।
समं द्विजेन्द्रैश्च नराधिपैश्च महाजनैनैव परानुरोधात् ॥ ३ ॥

और जिस मनुष्य के छटे घर में कर्क लग्न होता है उस मनुष्य को पुत्र निमित्त से आतुर होने के कारण ब्राह्मणों से, राजाओं से, महाजनों से, झगड़ा होजाने से भय प्राप्त होता है पर यह सब केवल दूसरे के अनुरोध से होता है ।

सिंहे रिपुस्थे प्रभवेच्च वैरं पुत्रैःसमं बंधुजनेन नित्यम् ।
धनं क्षणात्तस्य विनिर्जितं च यद्वा मनुष्यस्य वरांगनाभिः॥४॥

और जिस मनुष्य के छटे घर में सिंह लग्न होता है उस मनुष्य का पुत्रों से और भाई बन्दोंसे नित्य ही बैर होता है तथा वैश्याओं के साथ संभोग करनेके कारण उसका सारा धन हाल ही नष्ट होजाता है ॥ ॥ ४ ॥

कन्यास्थिते शत्रुगृहे स्ववैरैरसयुंतिर्निर्धनता नराणाम् ।
दुश्चारिणीभिश्चसुनिम्नगाभिर्वेश्याभिरेवाश्रयवर्जिताभिः ॥ ५ ॥

और जिसके छटे घर में कन्या लग्न होता है उस पुरुष के कोई बैरी न होवे परन्तु दुष्टा व्यभिचारिणी नीच जाति की और निराश्रय रहने वाली अनाथ विधवा तथा वैश्याओं के साथ रहने के कारण उसके कंगाली आजाती है ॥ ५ ॥

तुलाधरे शत्रुगृहे नरस्य निधिस्थितस्य प्रभवेच्च वैरम् ।
कार्ये सुधर्मस्य नरस्य साधोःस्वबंधुवर्गाच्चनिजालयाच्च ॥६॥

और जिसके छटे घर में तुला लग्न होता है उस पुरुष का रक्खे हुए धन के कारण पूर्ण धनी होता हुआ भी धर्म कार्य में साधु मनुष्यों से व अपने बन्धुवर्ग से एवं अपने घरवार से भी बैर होता है ॥ ६ ॥

कौर्पे रिपुस्थे प्रभवेच्च वैरं सार्द्धं द्विजिह्वैश्च सरीसृपैश्च ।
व्यालैर्मृगैश्चौरगणैर्नराणां सर्वैःसुधन्यैश्च विलासिभिश्च ॥७॥

और जिसके छटे घर में वृश्चिक लग्न होता है उस मनुष्य का सर्पों से व चुगलखोरों से बीछी खानखजूरे आदिकों से व्यालगणों से; हरिणों से, चोरगणों से तथा धनिकों से, और विलासी पुरुषों से बैर होता है ॥ ७ ॥

चापे रिपुस्थे च भवेच्च वैरं शरैःसमेतैश्च सरागकैश्च ।
सदा मनुष्यैश्च हयैश्च नागैःपुण्यैस्तथान्यैःपरवंचनाच्च ॥८॥

और जिसके छटे घर में धन लग्न होता है उस मनुष्य का राग में फंसे हुए, बाण धनुष धारण करने वाले पुरुषों से और घोडे हाथियों से और पुण्य करने वाले पुरुषों से तथा अन्य पुरुषों से एवं ठगों से बैर हो जाता है ॥ ८ ॥

मृगे रिपुस्थे च भवेच्च वैरं सदा नराणां धनसंभवं च ।
मित्रैःसमं साधुजने सहाये प्रभूतकालं गृहसंभवं च ॥ ९ ॥

और जिसके छटे घर में मकर लग्न होवे उस मनुष्य का धन संभव (सूद के लेने के कारण) से बैर होता है और साधुजनों के सहायक होने पर भी मित्रों के साथ बैर होता है और किसी समय उस पुरुष को घर की प्राप्ति होती है ॥ ९ ॥

कुंभे रिपुस्थे पुरुषस्य वैरं नराधिपैनैव जलाश्रयैश्च ।
वापीतडागादिभिरेव नित्यं क्षेत्राधिपोच्चैःपुरुषैः प्रवृद्धैः ॥१०॥

और जिसके छटे घर में कुम्भ लग्न होता है उस मनुष्य का राजाओं से व जलाश्रय जीवों से और बापी तालाबके निमित्त बडे जिमींदारों से, और भी बडे २ धनीमान्य बृद्ध आदमियों से बैर होता है ॥ १० ॥

मीने रिपुस्थे च भवेन्नराणां वैरं च नित्यं सुतवस्त्रजातम् ।
स्त्रीहेतुकं स्वीयभवं पराणामपि प्रियाणामितरेतरं च ॥ ११ ॥

और जिसके छटे घर में मीन लग्न होता है उस पुरुष का सदा अपने लड़के व लड़कियों के साथ कलह होता रहता है, स्त्री के निमित्त से बस्त्र जेवर आदि के ऊपर और अपने खुद के कारण से तथा परस्पर प्रिय पुरुषों से बैर होता है ॥११॥

इति रिपुभावफलम् ।

अथ सप्तमभावस्थराशिफलम्—

मेषेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं क्रूरं नराणां च खलस्वभावम् ।
पापानुरक्तं कठिनं नृशंसं वित्तप्रियं साध्यपरं सदैव ॥ १ ॥

जिसके सप्तम घर में मेष लग्न होताहै उस पुरुषकी स्त्री अत्यन्त क्रूर,दुष्ट स्वभाव वाली, पापिनी, बडी कठिना, नृशंसा धन, प्रिया और अत्यंत दुष्टा होती है ॥ १॥

वृषेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं सुरूपकं वाक्प्रणतं प्रशांतम् ।
पतिव्रताचारुगुणेन युक्तं कलाधिकं ब्राह्मणदेवभक्तिम् ॥ २ ॥

और जिसके सप्तम घर में वृषलग्न होता है वह मनुष्य अति सुरूपा,नम्रतापूर्वक वाक्य कहने वाली,सीने पिरोनेमेंमें अत्यंतचतुर शांतप्रकृतिवाली,पतिव्रतारूप मनोहरगुणों से युक्त ब्राह्मण तथा देवताओं में भक्ति रखने वाली भार्या का पति होता है ॥ २ ॥

तृतीयराशौ च भवेत्कलत्रे कलत्रयुक्तं सुधनं सुवृत्तम् ।
रूपान्वितं सर्वगुणोपपन्नं विनीतवेषं गणवर्जितं च ॥ ३ ॥

और जिसके सप्तम घर में मिथुनलग्न होता है वह पुरुष स्त्री युक्त धनवान्, सुन्दर वर्ताव वाला, रूपवान्, सब गुणों से संपन्न, विनीत वेष वाला, संघ से रहित होता है ॥ ३ ॥

कर्केण युक्ते च मनोहराणि सौभाग्ययुक्तानि गुणान्वितानि ।
भवंति सौम्यानि कलत्रकाणि कलंकहीनानि सुसंमतानि ॥ ४ ॥

और जिसके सप्तम घर में कर्कलग्न होवे उस पुरुष की अति मनोहरा, सौभाग्य युक्ता, अनेक गुण संपन्ना, सौम्यरूपा, और कलंक हीना, तथा अत्यन्त प्रिय लगने वाली पत्नी होती हैं ॥ ४ ॥

सिंहेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं तीव्रस्वभावं च खलं च दुष्टम् ।
विहीनवेषं परसद्मयुक्तं वसुप्रियं स्वल्पकृतं कृशं च ॥ ५ ॥

और जिसके सप्तम भवन में सिहलग्न होवे वह मनुष्य अति तीव्र स्वभाव वाली, कर्कशा, अति दुष्टा, श्रृंगार हीना, दूसरे के घर में रहने वाली, धन की इच्छा करनेवाली थोड़ा काम करने वाली और अति दुर्बलांगी भार्याका पति होताहै

कन्येऽस्तसंस्थे च भवेत्सुदाराःसुरूपदेहास्तनयैर्विहीनाः ।

सौभाग्यभोगार्थनयेन युक्ताः प्रियंवदाःसत्यधनाःप्रगल्भाः॥६॥

और जिसके सप्तम घर में कन्या लग्न होवे वह पुरुष सुन्दर रूपवाली, पुत्रोंसे विहीन, सौभाग्य, भोग; धन तथा नीति से युक्त, प्रिय वचन कहने वाली, सत्यवादिनी और दृढ चित्त वाली पत्नी से युक्त होता है ॥ ६ ॥

तुलेऽस्तसंस्थे गुणगर्वितांग्यो भवंति नार्यो विविधप्रकाराः ।
पुण्यप्रिया धर्मपराःसुदांतप्रभूतपुत्राःपृथिवीविनीताः ॥ ७ ॥

और जिसके सप्तम घर में तुलालग्न होता है वह पुरुष गुणों करके गर्व युक्त; अनेक प्रकारकी स्त्रियों को प्राप्त करे तथा पुण्य जिनको प्यारा, धर्म में तत्पर, इन्द्रियोंके दमन करने वाले और पृथिवीकी तरह अति विनीत जिसके अनेक पुत्र होवें।७।

कीटेऽस्तसंस्थे विकलासमेता भवेच्च भार्या कृपणा नराणाम् ।
सुशिक्षिता च प्रणयेन हीना दुर्भाग्यदोषैर्विविधैःसमेता ॥८॥

और जिसके सप्तम घर में वृश्चिकलग्न हो उसपुरुष की स्त्री सुन्दर कलाओं से अनभिज्ञ अति कृपण, सशिक्षित नम्रता से रहित और अनेक दुर्भाग्य सूचक दोषों से संपन्न होती है ॥ ८ ॥

चापेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं नृणां सुदुष्टं विगतस्वभावम् ।
विस्रस्तलज्जं परदोषरक्षं युद्धप्रियं दंभसमन्वितं च ॥ ९ ॥

और जिसके सप्तम घर में धनलग्न होती है वह पुरुष अति दुष्टा, दुष्ट स्वभाव वाली निर्लज्जा, गैरों के दोषों को याद करने वाली, कलह प्रिया और ईर्ष्या युक्त पत्नी वाला होता है ॥ ९ ॥

मकरो यस्य च द्यूने भार्या दम्भान्विताऽधमा ।
निर्लज्जा लोलुपा क्रूरा दुःस्वभावा च दुःखिता ॥ १० ॥

और जिसके सप्तम घर में मकर राशि स्थित हो उसकी स्त्री कपट करने वाली, नीच, लज्जा हीन, अत्यन्त लोभ करने वाली क्रूर, कडे मिजाज वाली, पापिनी तथा अधिक दुःख भोगने वाली होती है ॥ १० ॥

घटेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं नृणां सुदुष्टं विगतस्वभावम् ।
देवाद्विजानां सततं प्रहृष्टं धर्मध्वजं सत्यदयासमेतम् ॥ ११ ॥

जिसके सप्तम घर में कुंभ लग्न होता है उस मनुष्य की स्त्री अति दुष्टा, कठोर स्वभाववाली, किन्तु देवता तथा ब्राह्मणों को ऊपर हमेशा प्रसन्न रहने वाली. धर्म की ध्वजा सत्य तथा दया से युक्त होती है ॥ ११ ॥

मीनेऽस्तसंस्थे च विकारयुक्तं भवेत्कलत्रं कुमतिं कुपुत्रम् ।
स्वधर्मशीलं प्रणयेन हीनं सदा नराणां विकलप्रियं च ॥१२॥

जिसके सप्तम घर में मीनलग्न होताहै उस मनुष्य की स्त्री अनेक विकारों से युक्त. दुष्ट बुद्धि वाली. कपूत पुत्र वाली. स्वधर्म का पालन करने वाली. किसी का विश्वास न करने वाली. तथा विशेष कलाओं से अनभिज्ञ होतीहै॥१२॥ इति ॥

अथाष्टमभावस्थराशिफलम् ।

मेषेऽष्टमस्थे च भवेन्नराणां भवेद्विदेशे तु रुजा स्थितानाम् ।
कथाऽस्मृतेश्चैव विमूर्च्छितानां महाधनानामतिदुःखितानाम् ॥

जिस पुरुष के अष्टम भवनमें मेषलग्न हो वह मनुष्य विदेश में रहता हुआ रोग से युक्त होता है; अनेक आत्म सम्बन्धी बातों को याद करनेके .कारण मूर्छित हो, बडा धनवान तथा अत्यन्त दुःखों से युक्त होता है ॥ १ ॥

वृषेऽष्टमस्थे च भवेन्नराणां मृत्युर्गृहे श्लेष्मकृताद्विकारात् ।
महाशनाद्वाथ चतुष्पदाद्वा रात्रौ तथा दुष्टजनादिसङ्गात् ॥२॥

और जिनकी कुंडली में अष्टम घरमें वृषलग्न हो उन मनुष्यों की कफके विकार से घरमें मृत्यु होती हैं, या अति भोजन (अजीर्ण) से या चौपायों के द्वारा या रात्रि के समय दुष्टजनों के संपर्क से मृत्यु होती है ॥ २ ॥

तृतीयराशौ च भवेन्नराणां मृत्युस्थिते मृत्युरनिष्टसंगात् ।
लाभोद्भवो वा रससंभवो वा गुदप्रकोपादथवा प्रमेहात् ॥३॥

और जिसके अष्टम स्थान में मिथुन लग्न होवे उन मनुष्यों की मृत्यु शत्रुओं के संगसे या लाभ के कारण से या रससंभव वस्तुओंको खानेसे अथवा गुद(भगन्दर, संनिरुद्ध गुद आदि) रोग से या प्रमेह से होती है ॥ ३ ॥

कर्केऽष्टमस्थे च जलोपसर्गात्कीटात्तथा चैव विषभिषणाद्वा ।
भवेद्विनाशःपरहस्ततो वा विदेशसंस्थस्य नरस्य चैव ॥ ४ ॥

और जिसके अष्टम स्थानमें कर्कलग्न हो उस मनुष्यकी जलमें डूबकर या किसी भयंकर कीडाके निमित्तसे अथवा किसी अन्य पुरुषके हाथसे परदेशमें मृत्यु होतीहै।

सिंहेऽष्टमस्थे च सरीसृपाच्च भवेद्विनाशः पुरुषस्य सम्यक्।
व्यालोद्भवो वापि वनाश्रितस्य चौरोद्भवो वाथ चतुष्पदाच्च॥

और जिसके अष्टम स्थान में सिंहलग्न होता है वह मनुष्य किसी सरीसृप (सर्पादि) के निमित्त से या जंगल में रहने से या चोरों के कारण से अथवा किसी चतुष्पद के निमित्त से बन में मृत्यु को प्राप्त होता है॥ ५॥

कन्या यदा चाष्टमगा विलासात्सदा स्वचित्तान्मनुजस्य विधात।
स्त्रीणां हि हिंस्राद्विषमाशनात्स्यात् स्त्रीणां कृते वा स्वगृहाश्रितस्य

और जिसके अष्टम घरसें कन्यालग्न होता है वह मनुष्य अधिक भोग विलास करने से अथवा स्वचित्त की भावना से, स्त्री की हत्या करने से; विशमाशन (बहु-स्तोकमकाले वा तज्ज्ञेयं विषमाशनं) से अथवा परस्त्रियों के निमित्त से अपने घर पर मृत्यु को प्राप्त होता है॥ ६॥

तुलाधरे चाष्टमगे च मृत्युर्भवेन्नराणां द्विपदोत्थ एव।
निशागमे संस्थकृतोपवासाद्विष्टिं च कोपोप्यथवा प्रतापात्॥७

और जिसकी कुंडलीमें अष्टम स्थान में तुलालग्न हो वह मनुष्य किसी द्विपद (मनुष्य) के हाथ से रात्रिके समय में, अधिक उपवास करने से, कोप करनेसे या अतिशय पराक्रम करने से मृत्यु को प्राप्त होता है॥ ७॥

स्थानेऽष्टमस्याष्टमराशिसंगे नृणां विनाशो रुधिरोद्भवेन।
रोगेण वा कीटसमुद्भवेन स्वस्थानसंस्थस्य विषोद्भवो वा।८।

और जिसके अष्टम घर में वृश्चिक राशि हो उस मनुष्य की मृत्यु रुधिर (कुष्ठ आदि) रोग से या पेट में कीडों के पैदा होने से या विष (संखिया आदि) खाने के निमित्त से अपने घर में ही मृत्यु होती है॥ ८॥

चापेऽष्टमस्थे प्रभवेन्नराणां मृत्युःस्वसंस्थे शरताडनेन।
गुह्योद्भवेनापि गदोद्भवेन चतुष्पदोत्थेन जलोद्भवेन॥ ९॥

और जिसके नवम घर में धनलग्न होता है उस मनुष्य की अत्यन्त ताप देने वाले गुह्य (गुद) के रोग से या किसी चतुष्पद (चौपाये) के निमित्त से अथवा शस्त्र से या जल से घर में ही मृत्यु होती है ॥ ९ ॥

मृगेऽष्टमस्थे च नरस्य यस्य विद्यान्वितो मानगुणैरुपेतः ।
कामी स शूरोऽथ विशालवक्षाः शास्त्रार्थवित्सर्वकलासु दक्षः ॥

और जिसके अष्टम स्थान में मकरलग्न हो वह मनुष्य विद्या से युक्त, मान तथा गुणों से संपन्न, अत्यन्त कामी, शूरवीर, विशाल वक्षःस्थल वाला, शास्त्रार्थ जानने वाला और सब कलाओं में प्रवीण होता है ॥ १० ॥

घटेऽष्टमस्थे विभवप्रणाशो वैश्वानरात्सद्मगतात्तु जन्तोः ।
नानाव्रणैर्वायुभवैर्विकारैःश्रमात्तथा गेहविहीनमृत्युः ॥ ११ ॥

और जिसके अष्टम घर में कुंभलग्न हो उस मनुष्यकी घरमें अग्निके लग जाने से सारी संपत्ति नाशको प्राप्त होती है अथवा अनेक घावों से, या वायुजन्य विकारों से या अधिक श्रम से विदेश में ही मृत्यु पाता है ॥ ११ ॥

मीनेऽष्टमस्थे प्रभवेच्च मृत्युर्नृणामतीसारकृतश्च कष्टात् ।
पित्तज्वराद्वा सलिलाश्रयाद्वा रक्तप्रकोपादथवा च शस्त्रात् ॥ १२ ॥

और जिसके अष्टम घर में मीनलग्न होता है वह मनुष्य अतीसार की बीमारी के कारण बडे कष्ट से या पित्तज्वर से या जल के संबन्ध से या रक्तप्रकोप से अथवा शस्त्र से मृत्यु पाता है ॥ १२ ॥   इत्यष्टमस्थानफलम् ।

अथ नवमभावस्थितराशिभावफलम् ।

धर्मस्थिते चैव हि मेषलग्ने चतुष्पदोत्थं प्रकरोति धर्मम् ॥
तेषां प्रदानेन तु पोषणेन दयाविवेकेन सुपालनेन ॥ १ ॥

जिसके नवम घरमें मेषलग्न होवे वह मनुष्य चतुष्पदों (चौपायों) के दान या पोषण तथा दया विवेक द्वारा पालन आदि क्रिया करने से धर्म करने वाला होता है ॥ १ ॥

वृषे च धर्मे प्रगते मनुष्यो धर्मं करोत्येव धनप्रभूतम् ।

विचित्रदानैर्बहुगोप्रदानैर्विभूषणाच्छादनभोजनेन ॥ २ ॥

और जिसके नवम घरमें वृषलग्न हो वह मनुष्य धर्मात्मा होता है विचित्र दानों से, अनेक गोप्रदानों से, आभूषण; वस्त्र, और भोजन दान करने से सुशोभित होता है ॥ २ ॥

तृतीयराशौ प्रकरोति धर्मे धर्मांक्रातिं सौम्यकृतं सदैव ।
अभ्यागतोत्थं द्विजभोजनाद्वा दीनानुकंपाश्रयमानसेवाः ॥३॥

और जिसके नवम घरमें मिथुनलग्न हो वह मनुष्य धर्म-मूर्ति, सरल स्वभाव वाला, अभ्यागतों ब्राह्मणों का भोजन द्वारा सत्कार करने वाला, दीन मनुष्यों के ऊपर दया करने वाला तथा सब समय उन्हें आश्रय और मान देकर पूजा करने वाला होता है ॥ ३ ॥

व्रतोपवासै र्विषमैर्विचित्रै र्धर्मं नरःसंकुरुते सदैव ।
धर्माश्रिते चैव चतुर्थराशौ तीर्थाश्रयाद्वा बनसेवनेन ॥ ४ ॥

और जिसके नवम घरमें कर्क लग्न हो वह मनुष्य अनेक कठिन व्रतोपवास करनेसे या तीर्थ भ्रमण करने से अथवा बन में तपस्या करनेसे सदैव धर्म करता रहताहै ॥

धर्माख्यभावाश्रित सिंहराशौ धर्मं परेषां प्रकरोति मर्त्यः ।
स्वधर्महीनो विक्रियाभिरेव सुतीर्थरूपं विनयेन हीनम् ॥५ ॥

और जिसके नवम घरमें सिंहलग्न होवे वह मनुष्य किसी अन्य धर्मका मानने वाला होता है कुकर्मों द्वारा अपने धर्म से हीन होता है अपुन को तीर्थ-स्वरूप माानने वाला तथा विनय से रहित होता है ॥ ५ ॥

धर्माश्रितःस्याद्यदि षष्ठराशिःस्त्रीधर्मसेवां कुरुते मनुष्यः ।
विहीनभक्तिर्बहुवहुजन्मतश्च पाखंडमाश्रित्य तथान्यपक्षम् ॥६॥

और जिसके नवम घरमें कन्या राशि होता है वह पुरुष स्त्री धर्मका कट्टर पक्षपाती हो; कई जन्म से भक्ति रहित, पाखण्ड का आश्रय करके या किसी अन्य पक्ष का आश्रय करके धर्म करने वाला होता है ॥ ६ ॥

तुलाधरे धर्मगते मनुष्यो धर्मं करोत्येव सदा प्रसिद्धम् ।

देवद्विजानां परितोषणं च जनानुरागेण तथाद्भुतानाम् ॥ ७ ॥

और जिसके नवम् घरमें तुलाराशिहो वह मनुष्य सदा प्रसिद्ध, धर्मात्मा, देवता, तथा ब्राह्मणों की प्रसन्नतारूप और मनुष्यों के अनुराग से अनेक अद्भुत धर्मों को करता है ॥ ७ ॥

धर्माश्रिते चाष्टमगे च राशौ पाखंडधर्मं कुरुते मनुष्यः ।
पीडाकरं चैव तथा जनानां भक्त्या विहीनं परपोषणेन ॥ ८ ॥

और जिसके नवम घरमें वृश्चिकलग्न होवे वह मनुष्य सदा पाखण्ड धर्ममेंलीन, और पुरुषोंको पीड़ा करने वाला, भक्ति से रहितपर पोषण आदि से हीन होता है ॥

चापे तथा धर्मगते मनुष्यःकरोति धर्मं द्विजदेवतर्पणम् ।
स्वेच्छान्वितं शास्त्रविनिर्मितं च प्रभूततोयं प्रथितं त्रिलोके ।९।

और जिसके नवम घरमें धन राशि होता है वह पुरुष सदा धर्म करने वाला ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, ऋषियोंकी इच्छानुसार शास्त्रोक्त त्रिलोकीमें विख्यात धर्म (सनातन) जिसके अनुसार सन्ध्यादि कृत्यों के वास्ते अधिक जलका उपयोग होता हो ऐसे धर्मको करता है ॥ ९ ॥

धर्माश्रिते चेन्मकरे मनुष्यः प्राप्नोत्यधर्मं कुरुते प्रतापम् ।
पश्चाद्विरक्तश्च विडंबनाभिःकौलं समासृत्य सदैव पक्षम् ॥१०॥

और जिसके नवम घरमें मकर लग्न होता है, वह पुरुष अधर्म करने वाला प्रतापशाली; अनेक विडंबनाओं के कारण बैराग्य युक्त तथा अपने कुलके पक्ष का आश्रय करता है ॥ १० ॥

कुंभे च धर्मे प्रगते च धर्मं पुंसां विधत्ते सुरसंघजातम् ।
वृक्षाश्रयोत्थं च तथा शिवं च आरामवापीप्रियता सदैव ॥११॥

और जिसके नवम घरमें कुम्भ लग्नहो वह पुरुष देव समूह निमित्तसे जायमान सुखको पावे और वृक्ष संबन्धी या बगीचा वापी (बावडी) आदि धर्म कार्यों में प्रेम करने वाला होता है ॥ ११ ॥

धर्माश्रिते चैव हि मीनराशौ करोति धर्मं विविधं नृलोके ।
सत्सेवयारामतडागजातं तीर्थाटनेनार्थसुखैर्विचित्रैः ॥ १२ ॥

और जिसके नवम घरमें मीनलग्न होवे वह मनुष्य मर्त्यलोक में अनेक प्रकार का धर्म करे, सत्पुरुषों की सेवा से या बगीचा, तालाव, आदि निर्माण कराने से या तीर्थाटन करनेसे अनेक प्रकारके आर्थिक सुखपावे ॥ इति नवमभावफलम् ॥

अथ दशमभावस्थितराशिफलम्—

कर्माश्रिते मेषसुनामराशौ करोत्यधर्मं प्रवरं सुदुष्टम् ।
पैशुन्यरूपं विनयातिरिक्तं सुनिंदितं साधुजनस्य लोके ॥१॥

जिस मनुष्य के दशम घर में मेष राशि स्थित होवे वह मनुष्य अधर्म करने वाला, बडा दुष्ट, चुगली करने वाला, विनय से रहित तथा लोक में साधुजनों द्वारा निंदित समझा जाता है ॥ १ ॥

वृषेऽबरस्थे प्रकरोति कर्म व्ययात्मकं साधुजनानुकम्पम् ।
द्विजेन्द्रदेवातिथिभिर्विभाजकं ज्ञानात्मकं प्रीतिकरं सतां च ॥२॥

और जिस मनुष्य की कुंडली में लग्न से दशम वृष लग्न हो वह मनुष्य अधिक खर्चा करने वाला, साधुजनों पर अनुकंपा करने वाला, ब्राह्मण, देवता, अतिथिजनों के विभाग के अनुसार सत्कार करने वाला, वड़ा ज्ञानी, सज्जनों के साथ प्रीति करने वाला होता है ॥ २ ॥

युग्मेंऽबरस्थे प्रकरोति मर्त्यं कर्मप्रधानं गुरुभिःप्रदिष्टम् ।
कीर्त्यान्वितं प्रीतिकरं जनानां प्रभासमेतं कृषिजं सदैव ॥ ३ ॥

और जिसके दशम घर में मिथुन लग्न होता है वह कर्म को प्रधान मानने वाला गुरुजनों की आज्ञानुसार आचरण करने वाला, कीर्ति करके युक्त, जनों से प्रीति करने वाला और वडा प्रतापी और खेती से जीविका करने वाला होता है ।

कर्केऽवरस्थे प्रकरोति मर्त्यःकर्म प्रपारामतडागसंज्ञम् ।
विचित्रवापीतटवृंदजं च कूपापरं नित्यमकल्मषं च ॥ ४ ॥

और जिसके दशम घर में कर्कलग्न होता है वह मनुष्य प्रपा (प्याऊ) बगीचा तालाव, विचित्र बावडी आदि संबन्धी कर्मों को करता है और बडा दयालु तथा निष्कल्मष (निष्पाप) होता है ॥ ४ ॥

सिंहेऽबरस्थे कुरुते मनुष्यो रौद्रं सपापं विकृतं च कर्म ।
सपौरुषं प्राणसमं च नित्यं बधात्मकं निंदनमेव नित्यम् ॥५॥

और जिसके दशम भवन में सिंहलग्न होता है वह मनुष्य अति भयंकर पापी तथा अपने बलानुसार प्राणि वध रूप विकृत कर्म करनेसे नित्य जगतमें निंदा पाने वाला होता है ॥ ५ ॥

नभःस्थलस्थे त्वथ षष्ठराशौ करोति कर्माज्ञमितो मनुष्यः ।
स्त्रीराजमानौ भजते विरुद्धं कामाल्पकं निर्धनमंत्रिलोके ॥६॥

और जिसके दशम घर में कन्या लग्न होता है वह मनुष्य कर्म जानने वाला न होवे, स्त्री तथा राजा के मान को विपरीति रीति से करने वाला होवे और अल्प काम तथा किसी राज दरबार में मन्त्री रहकर भी निर्द्धन होता है ॥ ६ ॥

तुलाधरे व्योमगते मनुष्यो वाणिज्यकर्म प्रचुरं करोति ।
धर्मात्मकं चापि नयेन युक्तं सतामभीष्टं पर संपदं च ॥७॥

और जिसके लग्न से दशम घर में तुला लग्न होता है वह मनुष्य वाणिज्य (व्यापार) के कार्य को बहुतायत से करने वाला हो, धर्म रूप, नीति युक्त, सज्जनों को प्रिय और दूसरे की संपत्ति को प्राप्त करता है ॥ ७ ॥

कीटेंबरस्थे प्रकरोति कर्म पुंसामदुष्टं जनसंमतं च ।
व्ययंकरं देवगुरुद्विजानां सुनिर्दयं नीतिविवर्जितं च ॥८॥

और जिसके दशम घरमें वृश्चिक लग्न होता है वह आदमी सबोंको भलाई के लिये कर्म करने वाला होता है तथा सबों का संमत, देव गुरु ब्राह्मणों के अर्थ खूब खर्चा करने वाला परन्तु वह पुरुष अति निर्दय और नीतिविवर्जित होताहै ॥८॥

चापेंबरस्थे च करोति कर्म सर्वात्मकं चाययुतं मनुष्यम् ।
परोपकारात्मकमोचनाद्यं नृपात्मकं भूमियशः समेतम् ॥९॥

और जिसके दशम घरमें धन लग्न होता है वह पुरुष लाभ युक्त संपूर्ण कार्यों को करने वाला होवे, जेल से छुड़ाने आदि परोपकार कर्मको करने वाला राजाकी तरह भूमि तथा यश को प्राप्त करता है ॥ ९ ॥

मृगेंबरस्थे प्रखरप्रतापं कर्मप्रधानं कुरुते मनुष्यम् ।
सुनिर्दयं बंधुजनैः समेतं धर्मेण हीनं खलसंमतं च ॥ १० ॥

और जिसके दशम घरमें मकर लग्न होता है वह पुरुष बड़ा तीव्र प्रतापी, कर्म को प्रधान मानने वाला, दया रहित, भाई बन्दों से युक्त, धर्म रहित, और दुष्ट संमत कर्मों को करता है ॥ १० ॥

घटेंबरस्थे च करोति कर्म प्रधानमर्त्यं परवंचनार्थम् ।
पाखंडधर्मान्वितमिष्टलोभाद्विश्वासहीनं जनताविरुद्धम् ॥११॥

और जिसके दशम घरमें कुंभ लग्न होता हैं वह पुरुष कर्म को प्रधान मानने वाला शत्रु या दूसरों के बंचन (ठगने) के अर्थ पाखंड धर्म से युक्त, इष्ट लोभ से विश्वास रहित और आदमी मात्र के खिलाफ़ कर्म करने वाला होता है ॥ ११॥

मीनेंबरस्थे प्रकरोति कर्म मर्त्यं कुले धर्मगुरुप्रदिष्टम् ।
कीर्त्यान्वितं सुस्थिरमादरेण नानाद्विजाराधनसंस्थिरं च ॥१२॥

और जिसके दशम घरमें मीन लग्न होता है वह मनुष्य अपने कुलमें धार्मिक गुरुजनों के उपदिष्ट कर्मको करने वाला कीर्ति युक्त धैर्यशाली आदर के साथ अनेक ब्राह्मणों की आराधना में तत्पर रहता है ॥ १२ ॥ इतिदशमभावफलम् ॥

अथ एकादशभावफलम् ।

लाभालये मेषगते च राशौ चतुष्पदोत्थं प्रकरोति लाभम् ।
तथा नराणां नृपसेवया च देशांतराराधितसुप्रभूतम् ॥ १ ॥

जिसके लग्नसे ग्यारहवें घरमें मेषलग्न होता है उस मनुष्य को चतुष्पदों (चौपायों) के व्यापार या राज सेवा से या देशांतर सेवन से पूरा २ लाभ होता है ॥ १ ॥

आयस्थिते वै वृषभे प्रलाभो भवेन्मनुष्यस्य विशिष्टजातः ।
स्त्रीभ्यःसकाशादथ सज्जनेभ्यः कृषिलगोधर्मकृतेस्तथैव ॥२॥

और जिसके लाभ स्थान में वृषलग्न होता है उस मनुष्यको सज्जनों से या स्त्रियों से खेती करने से या गाय आदि की अच्छी सेवा रूप धर्म करने से खूब काफी लाभ होता है ॥ २ ॥

तृतीयराशिः कुरुते ऽतिलाभं लाभाश्रितः स्त्रीदयितं सदैव ।
वस्त्वर्थसुख्यासनपानजातं सदा पुमांसं विबुधप्रसिद्धम् ॥३॥

और जिसके लाभ घरमें मिथुनलग्न होता है वह मनुष्य सदा लाभ युक्त, और सदैव स्त्रियों को अत्यन्त प्रिय होता है, और अच्छी २ वस्तु, धन एवं सुन्दर २ सुख्यासन खान पान से अनेक प्रकारका लाभ प्राप्त करता है और पंडितों के बीच में भी खूब प्रसिद्धि प्राप्त करता है ॥ ३ ॥

लाभो भवेल्लाभगते च राशौ सदा चतुर्थे वरजातकानाम् ।
सेवाकृषिभ्यां जनितप्रभूतः शास्त्रेण वा साधुजनैश्च पश्चात् ॥४॥

और जिसके लाभ ११ भवनमें कर्क लग्न होता है उस मनुष्यको सेवा करने से या खेती के निमित्त से या शास्त्रकी वृत्तिसे अथवा साधुजनों के संबंध से प्रभूत (बहुत) लाभ होता है ॥ ४ ॥

लाभाश्रिते पंचमगे च राशौ भवेन्मनुष्यस्य निगर्हणाच्च ।
नानाजनानां वधवंधनैर्वा व्यायामदेशांतरसंश्रयाच्च ॥ ५ ॥

और जिसके ग्यारहवें घरमें सिंहलग्नहो उस मनुष्य को निंदा से अथवा अनेक पुरुषोंके बध बंधन से अथवा देशांतर जाकर नौकरी के संश्रयसे या व्यायाम (कसरत) से भी धनका लाभ पर्याप्त होता है ॥ ५ ॥

कन्यात्मके लाभगते मनुष्यः प्राप्नोति लाभं विविधं सपर्याः ।
शास्त्रागमाभ्यां विनयेन सार्द्धं नित्यं विवेकेन तथाद्भुतेन ॥ ६ ॥

और जिसके लग्न से ग्यारहवें घरमें कन्यालग्नहो वह मनुष्य शास्त्रसे आगम (वेद) से विनय और अद्भुत ज्ञान से अनेक लाभ और पूजा को प्राप्त होताहै ॥६॥

तुलाधरे लाभगते मनुष्यः प्राप्नोति लाभं वणिजे विचित्रे ।
सुसाधुसेवाविनयेन नित्यं सुखं स्तुतं मुख्यतमं प्रभूतम् ॥७॥

और जिसके ग्यारहवें घरमें तुला लग्न होवे वह मनुष्य विचित्र तरीका के व्यापार के करने से पूर्ण धन लाभ प्राप्त करता है और साधु सेवा से, विनय से अत्यन्त मुख्य बडे भारी सुखको नित्य प्राप्त करता है ॥ ७ ॥

लाभाश्रिते चाष्टमगेहराशौ प्राप्नोति लाभं मनुजोऽतिसुख्यम् ।
छलेन पापेन सुभाषणेन परस्य पैशुन्यकृतैर्विकारैः ॥ ८ ॥

और जिसके ग्यारहवें घरमें वृश्चिकलग्न हो वह मनुष्य छल करने से, पापसे, अच्छे बोलने से और दूसरों की चुगली करने आदि अनेक विकारोंसे अत्यन्त मुख्य लाभ पाने वाला होता है ॥ ८ ॥

लाभाश्रिते चैव धनुर्धरे च नृपैर्विलासान् भजते मनुष्यः ।
सत्सेवया वा निजपौरुषेण मुख्यं चराराधनतश्च लाभम् ॥९॥

और जिसके ग्यारहवें घरमें धन लग्न होता है वह मनुष्य राजाओं के आसरे से अनेक प्रकार के भोग विलास करता है और संत पुरुषों की सेवा करने से अथवा अपने ही पुरुषार्थ से और किसी साम्राज्य के मुख्य गुप्तचर (खुफिया) के आराधन करने से पूर्ण धन लाभ प्राप्त करता है ॥ ९ ॥

लाभाश्रिते वै मकरेऽर्थलाभो भवेन्नराणां जनयानयोगात् ।
विदेशवासान्नृपसेवनाद्वा व्ययात्मकं भूरितरं सदैव ॥१०॥

और जिसके ग्यारहवें घरमें मकर लग्न होता है उस मनुष्य को जलयान (जहाज के आश्रय से समुद्र यात्रा) के योग से प्रदेश में जाकर किसी के यहां नौकर रहने से और राजसेवा से बहुत धनका लाभ होता है परन्तु वह सब लाभ अत्यन्त व्ययमें ही जाता है ॥ १० ॥

आयुःस्थिते कुंभधरे च लाभो भवेन्मनुष्यस्य कुकर्मजातम् ।
त्यागेन धर्मेण पराक्रमेण विद्याप्रभावात्सुसमागमश्च ॥ ११ ॥

और जिसके ग्यारहवें घरमें कुम्भ लग्न होता है उस मनुष्य को कुकर्म करने से, दान करने से, धर्म करने से, पराक्रम से और विद्या के प्रभाव से खूब धनको लाभ होता है और संतों के समागम का भी पूर्ण लाभ होता है ॥ ११ ॥

लाभाश्रिते चांत्यगमे च राशौ प्राप्नोति लाभं विविधं मनुष्यः ।
मित्रोद्भवं पार्थिवमानजातं विचित्रवाक्यैःप्रणयेन नित्यम् ॥१२॥

और जिसके ग्यारहवें घरमें मीनलग्न होवे वह मनुष्य मित्रों के आश्रय से या राजमान से विचित्र वाक्यों से और स्नेह से नित्य अनेक लाभको पाता है ॥ १२ ॥

इतिलाभफलम् ।

अथ व्ययभावफलम् ।

मेषे व्ययस्थे च भवेन्नराणां व्ययःसुखाच्छादनभोजनेन ।
चतुष्पदानेकविवर्द्धनेन लाभेन नानाविधपौरुषेण ॥ १ ॥

जिसके बारहवें घर में मेष लग्न होता है वह मनुष्य सुख पूर्वक वस्त्र भोजनमें, चौपाये जीवोंकी अधिक संख्या बढाने में और नाना प्रकार के पुरुषार्थ (भविष्यमें धन वृद्धि लाभ के लियेकोई कार्यालय खोलने) में बहुत खर्च करने वाला होता है ॥१॥

वृषे व्ययस्थे व्यय एव पुंसां भवेद्विचित्रांबरयोषितां च ।
लाभेन राज्येन पराक्रमेण सधातुवादैर्विबुधैःसदैव ॥ २ ॥

और जिसके बारहवें घर में वृषलग्न होवे उस मनुष्य को किसी रियासत की प्राप्ति के उद्देश्य से, अपने पराक्रम के जताने से; और अनेक धातुवादों से कई पण्डितों के साथ विवाद होने के कारण मुकद्दमा लग जाने से, विचित्र वस्त्र और स्त्रियों के निमित्त (छिनरापने) से बहुत द्रव्य खरच होता है ॥ २ ॥

तृतीयराशौ व्ययगे नराणां व्ययो भवेत्स्त्रीव्यसनात्मकैश्च ।
भूतोद्भवो वा सततप्रभूतः कुशीलजः पापजनैर्गजैश्च ॥ ३ ॥

और जिसके बारहवें घर में मिथुन लग्न होवे उस मनुष्य का स्त्री निमित्तक व्यसन से; भूतोद्भव दुःख (भूत प्रेत आदि की बाधा के हटाने के अभिप्राय से जप अनुष्ठान कराने) से; खोटे स्वभाव से,पापीमनुष्योंके संग करनेसे और हाथीके खरीदने आदि के निमित्त से बहुत फिजूली खरच होता है ॥ ३ ॥

कर्के व्ययस्थे द्विजदेवतानां व्ययो भवेद्यज्ञसमुद्भवैश्च ।
धर्मक्रियाभिर्विदधाति चैवं प्रशंसिते साधुजनेन लोके ॥ ४ ॥

और जिसके बारहवें घर में कर्क लग्न होवे उस मनुष्य का ब्राह्मण देवताओं के निमित्त से यज्ञ के निमित्त से, धर्म काम करने (पाठशाला मन्दिर आदि के बनवाने) में और संसार में साधुजनों करके प्रशंसा करने लायक कामों में बहुत ज्यादा खरच होता है ॥ ४ ॥

सिंहे व्ययस्थे तु भवेन्नराणामसंशयो भूरितमःसदैव ।
रूपैश्च जातैश्च कुकर्मणा च निंद्यःसतां पार्थिवचौरतो वा॥५॥

और जिसके बारहवें घर में सिंह लग्न होवे वह मनुष्य संशय न करने वाला, हमेशा अत्यन्त क्रोधी, तथा उस मनुष्य का अपने रूप की सजधज बनाने में, दुष्ट कर्म के निमित्त से, सदा राजा या चोर से, पुत्रोत्पत्ति के अवसर पर दष्ठोन आदि के निमित्त से, अति खर्च होता है और सज्जनों में निंद्य होता है ॥ ५ ॥

कन्यात्मके चांत्यगते व्ययी च भवेन्मनुष्यः स हि चांगनोत्सुकः।
विवाहमाङ्गल्यविचित्रमुख्यैः सूत्रप्रभाभिर्बहुसाधुसंगात् ॥६॥

और जिसके बारहवें घर में कन्यालग्न होती है वह मनुष्य स्त्रियों के निमित्त से प्रसन्नता पूर्वक खरच करने वाला होता है और विवाह जनेऊ आदि स्वकीय या जातीय मांगलिक अनेक विचित्र मुख्य कर्मों के निमित्त से और साधुसंग से खरच करने वाला होता है ॥ ६ ॥

तुले व्ययस्थे सुरविप्रबंधुःश्रुतिस्मृतिभ्यश्च कृतो व्ययश्च ।
भवेन्नराणां नियमैर्यमैश्च सुतार्थसेवाजनितं प्रसिद्धम् ॥७॥

और जिसके बारहवें घरमें तुला लग्न होताहै वह मनुष्य देवता ब्राह्मणोंका बंधु (परम सेवक) होताहै और श्रुतिस्मृतिके अनुकूल धर्म करनेमें खरच करने वाला, और अनेक यम नियम व्रतोपवास के निमित्त से, पुत्र के कारण से, और सेवा के कारण अधिक खरच करता है, और उसी के कारण संसार में खूब नामवरी पाता है ॥७॥

अलौ व्ययस्थे च भवेद्व्ययस्तु पुंसां प्रदानेन विडंबनाभिः ।
कुमित्रसेवाजनितःसुनिंद्यःकुबुद्धितश्चैारकृताधिकारात् ॥ ८ ॥

और जिसके बारहवें घर में वृश्चिक लग्न हो उस मनुष्य का दीन दुःखियों को अन्न वस्त्र आदि देने से, अनेक विडंबनाओं से अथवा दुष्ट मित्र की सेवा में या कुबुद्धि के निमित्त से, और चोर मनुष्यों के अधिकार से धन का बहुत खर्च होता है और लोक में वह मनुष्य निंदित समझा जाता है ॥ ८ ॥

चापे व्ययस्थे परवंचनेषु व्ययो भवेत्पापजनप्रसंगात् ।
सेवाकृतो जात्यधिकारिपुंसःकृषिप्रसंगात्परवंचनाद्वा ॥ ९ ॥

और जिसके बारहवें घर में धनलग्न होता है उस मनुष्य का पापीजनों के संग से अन्य मनुष्यों के ठगने से वा खेती के निमित्त से या सेवा करने वाले

जाति के अधिकारी मनुष्य के साथ झगड़ा होजाने के कारण मुकद्दमा लग जाने से अधिक खर्च होता है ॥ ९ ॥

मृगे व्ययस्थे च भवेन्नराणां व्ययैस्तु पापाशनकश्च जातः ।
स्ववर्गपूजानिरतस्तथाल्पकृषिर्विहीनश्च विगर्हितश्च ॥१०॥

और जिसके बारहवें घर में मकरलग्न होता है उस मनुष्य का पापी मनुष्योंके भोजन कराने के निमित्त से खर्च होता है और वह मनुष्य अपने वर्ग के मनुष्यों की पूजा करनेवाला, थोड़ी खेती करनेवाला, अत्यंत हीन और सर्वत्र निंदित होताहै।

घटे व्ययस्थे सुरसिद्धविप्रतपस्विनो वंदिभवो व्ययश्च ।
पुंसां कुपुत्राशनपानजातस्तथा विवादेन विनिर्गतेन ॥ ११ ॥

जिसके लग्न से बारहवें घर में कुम्भलग्न होता है वह मनुष्य देवता, सिद्ध मनुष्य, ब्राह्मण, तपस्वी, वंदि, कपूत पुत्रों के निमित्त से और खाने पीने के निमित्त से और विवाद या यात्रा के निमित्त से खरच करने वाला होता है ॥ ११ ॥

ये स्थानचिंतासु पुराप्रदिष्टा योगा मया तान्परिगृह्य शास्त्रात् ।
योगा विचिंत्याःसुधिया ततस्तुचार्या नराणां हि शुभाशुभैस्ते।१।

यह योग मैंने प्रथम स्थानों के विचार में कहे हैं उन सब योगों को शास्त्र से जानकर बुद्धिमान् मनुष्य को उचित है कि उनको अच्छी तरह विचारे फिर मनुष्यों के शुभाशुभों से उनको देखे ॥ १२ ॥ इति वृद्धयवनेद्वादशलग्नफलम् ।

अथ द्वादशराशिस्थग्रह फलानि लिख्यन्ते ।

तत्रप्रथमं रविफलम् ।

भवति साहसकर्मकरो नरो रुधिरपित्तविकारकलेवरः ।
क्षितिपतिर्मतिमान्हितकृत्सदा सुसहसो महसामधिपे क्रिये ॥१॥

जिसकी कुण्डली में सूर्य मेषराशि को होकर बैठाहो वह पुरुष साहस कर्म करने वाला, रुधिर व पित्त विकृत देहवाला, पृथिवी का स्वामी, बड़ा बुद्धिमान्, सदा पुरुषों का हित करने वाला, बड़ा साहसी होता है ॥ १ ॥

परिमलैर्विमलैःकुसुमासनैःसुवसनैःपशुभिःसुखमद्भुतम् ।

गवि गतो हि रविर्जलभीरुतां विहितमाहितमादिशते नृणाम् ॥

और जिसकी कुण्डलीमें वृषका होकर सूर्य बैठा हो उसको सुशोभित सुगन्धितद्रव्य पुष्प शय्या, सुन्दर वस्त्र और अनेक पशुओं से, अद्भुत सुख मिलताहै और जलसे डरने वाला, और मनुष्यों से मित्रता करने वाला होता है ॥ २ ॥

गणितशास्त्रकलामलशीलतासुललितोऽद्भुतवाक्प्रथितो भवेत् ।
दिनपतौ मिथुने ननु मानवो विनयतानयतातिशयान्वितः ।

और जिसके मिथुन राशिका होकर सूर्य बैठा हो वह मनुष्य गणित शास्त्र का जानने वाला, मनोहर अद्भुत वाणी बोलने वाला,सर्वत्र विख्यात,और विनय तथा नीति में अति प्रवीण होता है ॥ ३ ॥

सुजनतारहितःकलिकालविज्जनकवाक्यविलोपकरो नरः ।
दिनकरे तु कुलीरगते भवेत्सधनताधनतासहितोऽधिकः ॥ ४ ॥

और जिसके कुण्डलीमें कर्क राशिका सूर्य बैठा हो वह मनुष्य सौजन्य भावसे रहित, कलियुग के प्रभाव को जानने वाला, पिता के वाक्यका अनादर करने वाला और धनवानों में अति धनवान् होता है ॥ ४ ॥

स्थिरमतिश्च पराक्रमतोऽधिको विश्रुतयाद्भुतकीर्तिसमन्वितः ।
दिनकरे करिवैरिगते नरो नृपरतः परितोषकरो भवेत् ॥ ५ ॥

और जिसकी कुंडली में सूर्य सिंहका होकर बैठाहो वह पुरुष स्थिर बुद्धिवाला, पराक्रमी, प्रभुता से विचित्र कीर्ति युक्त, राजाका सेवक, और सब मनुष्यों को प्रसन्न करने वाला होता है ॥ ५ ॥

दिनपतौ युवतौ समवस्थिते नरपतेश्च नरो द्रविणं लभेत् ।
मृदुवचाः श्रुतगेयपरायणः समहिमामहिमापहताहितः ॥ ६ ॥

और जिसकी कुण्डली में कन्यालग्न का होकर सूर्य बैठा हो वह मनुष्य राजा से द्रव्य प्राप्त करने वाला और मृदु वाक्य बोलने वाला, अन्य लोगों के गानों को सुनकर स्वयं गान करने में तत्पर, महिमा युक्त और अपनी महिमाके कारण शत्रुओं का नाश करने वाला होता है ॥ ६ ॥

नरपतेरतिभीतिमहर्निशं जनविरोधविधानमघं दिशेत् ।
कलिमनाः परकर्मरतिर्घटे दिनमणिर्नमणिर्द्रविणादिकम् ॥ ७ ॥

और जिसकी कुंडली में तुला राशिका सूर्य बैठाहो वह मनुष्य सर्वदा राजासे भय पाने वाला, पुरुषों से विरोध करने वाला पापी, कलह शील और अन्यकी सेवा करने वाला होता है और वह मनुष्य मणि आदि धनसे रहित होता है ॥ ७ ॥

कृपणतां कलहं च भृशं रुषं विषहुताशनशस्त्रभयं दिशेत् ।
अलिगतःपितृमातृविरोधितां दिनकरो न करोति समुन्नतिम् ॥ ८ ॥

और जिसकी कुंडली में वृश्चिक राशिका होकर सूर्य बैठा हो वह मनुष्य कृपण, कलही, अति क्रोधी और विष, अग्नि, तथा शस्त्र से भय प्राप्त होता है। माता पिता से विरोध करने वाला होता है और उस मनुष्यकी कभी भी उन्नति नहीं होती है ॥ ८ ॥

स्वजनकोपमतीवमहन्मतिं वहुधनं हि धनुर्धरगो रविः ।
स्वजनपूजनमादिशते नृणां सुमतितो मतितोषविवर्द्धनम् ॥ ९ ॥

और जिसकी कुंडली में धन राशिका होकर सूर्य बैठा हो वह मनुष्य स्वजनों से कार्य मात्र में क्रोध करने वाला, बड़ा विद्वान् और धन संपन्न होता है और अपने माता पिता आदि स्वजनों की पूजा करने वाला, और उत्तम बुद्धि से बुद्धि तथा संतोष की वृद्धि से युक्त होता है ॥ ९ ॥

अटनतां निजपक्षविपक्षतः सधनतां कुरुते सततं नृणाम् ।
मकरराशिगतो विगतोत्सवं दिनविभुर्न विभुत्वसुखं दिशेत १०

और जिसकी कुण्डली में सूर्य मकर राशिका होकर बैठा हो वह मनुष्य अपने पक्षके कारण तथा शत्रु पक्षके कारण भ्रमण करने वाला, निरन्तर धनसंपन्न, उत्सव रहित और सदा धनके सुख से रहित रहता है ॥ १० ॥

कलशगामिनि पंकजिनीपतौ शठतरो हितरो गतसौहृदः ।
मलिनताकलितो रहितःसदा करुणयारुणयार्त सुखी भवेत् ॥ ११ ॥

और जिसकी कुंडली में सूर्य कुंभ राशिका होकर बैठताहै वह मनुष्य अत्यन्त शठ, सबके हित कार्य में संयोग देने वाला होकर भी सुहृदभाव से रहित, अत्यन्त मलिनता युक्त औरंकरुणा गुण से रहित होता है ॥ ११ ॥

बहुधनं क्रयविक्रयतःसुखं निजजनादपि गुह्यमहाभयं ।
दिनपतौझषगेऽतिमतिर्भवेद्धिभुतयाद्भुतयायतकीर्तिभाक् ॥ १२ ॥

और जिसकी कुंडली में सूर्य मीनका होकर बैठाहो वह मनुष्य क्रयविक्रय से बहुत धनवान्, अपने जनके द्वारा वाह्य सुख पाने वाला, किन्तु बडे भारी आन्तरंग किसी भय से युक्त होता है और बडा बुद्धिमान्, वैभव और उस ऐश्वर्य के ही कारण विस्तृत अद्भुत और चारों तरफ यश पाने वाला होता है ॥ १२ ॥

इति रविफलम् ।

अथ चन्द्रफलम् ।

स्थिरधनो रहितःसुजनैर्नरःसुतयुतःप्रमदाविजितो भवेत् ।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक् ॥ १ ॥

जिसकी कुंडली में मेषलग्नका होकर चन्द्रमा बैठा होता है वह मनुष्य अधिक स्थिर धन से युक्त, सुजनों से रहित, पुत्रोंसे संपन्न, अपनी स्त्री से पराजित और अद्भुत ऐश्वर्य के कारण सत्कीर्ति से युक्त होता है ॥ १ ॥

स्थिरगतिं सुमतिं कमनीयतां कुशलतां हि नृणामुपभोगताम् ।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत्सुकृतितःकृतितश्च सुखानि च ॥ २ ॥

और जिसकी कुंडली में बृषलग्न का होकर चन्द्रमा बैठाहो वह मनुष्य बड़ा गंभीर विचारवाला तथा उत्तम बुद्धिसे युक्त, अति शोभित शरीरसे युक्त, बडा कुशल, अनेक भोग विलास करने वाला, श्रेष्ठ कर्म तथा काव्य करने वाला, और सुख भोगने वाला होता है ॥ २ ॥

प्रियकरःसुरकर्मयुतो नरःसुरतसौख्यभरो युवतिप्रियः ।
मिथुनराशिगतो हिमगुर्भवेत्सुजनताजनताकृतगौरवः ॥ ३ ॥

और जिसकी कुंडली में मिथुन का होकर चन्द्रमा स्थित हो वह मनुष्य सबका प्रिय करने वाला, देवताओं के कार्य में लीन, रतिके सुख का पूर्ण भोगने वाला स्त्रियोंको प्रिय, और अपने सौजन्य तथा जन संघसे गौरव पाने वाला होता है ॥ ३ ॥

श्रुतकलाबलनिर्मलवृत्तयः कुसुमगंधजलाशयकेलयः ।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमतीप्सितलब्धयः ॥ ४ ॥

और जिसके लग्न कुण्डली में कर्कका होकर चन्द्रमा बैठाहो वह मनुष्य शास्त्र, गान विद्या आदि कला एवं शारिरिक बल (ताकत) से निर्मल वृत्तिवाला, पुष्प गंध युक्त जलाशयों में क्रीडा करने वाला, और पृथिवी तथा सुबुद्धि द्वारा अभीष्ट (चाहे जितना) धन संपादन करने वाला होता है ॥ ४ ॥

अचलकाननयानमनोरथं गृहकलिं विकलोदरपीडनम् ।
द्विजपतिर्मृगराजगतो नृणां वितनुते तनुते यशहीनताम् ॥५॥

और जिसकी कुंडली में सिंह को होकर चन्द्रमा बैठा होवे तब वह मनुष्य पर्वत वन के जाने से मनोरथको सिद्ध करने वाला होवे, घरमें कलहको, विकलता को प्राप्त करे पेट में पीडा और यशकी हीनता को विस्तार करता है ॥ ५ ॥

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिविलासकुतूहलैः ।
विमलशीलसुताजननोत्सवैःसुविधिना विधिना सहितःपुमान्॥६॥

और जिसकी कुंडली में कन्या राशिका होकर चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य कई सुन्दर स्त्री जनोंके संग बहुत ज्यादा क्रीडा करनेके कौतुकसे, निर्मल शील स्वभाव होने के कारण, पुत्र जन्मोत्सवोंमें खूब समारोह के साथ दष्टोन आदि के मनाने से विधि पूर्वक सुख पाने वाला होता है ॥ ६ ॥

वृषतुरंगमविक्रयवान्क्रये द्विजसुरार्चनदानमतिःपुमान् ।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभवसंचितविक्रमः ॥७॥

और जिसकी कुंडली में तुलाका होकर चन्द्रमा होवे वह मनुष्य बैलों तथा घोडों के बेचने खरीदने से जीविका चलाने वाला, देवताओं के पूजनमें और ब्राह्मणों को दान देने में बुद्धि रखने वाला, अनेक स्त्रियों से संगम करने वाला, और अनेक विभवोंके संभवसे लोगों में पराक्रम संचय (उपार्जित) करने वाला होताहै अर्थात् लोगों में जिसके पराक्रम का काफी प्रभाव पडे ॥ ७ ॥

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपद्युरोदरजातधनक्षयः ।
कलिरुचिर्विबलःखलमानसःकृशमनाःशमनापहतो भवेत् ॥८॥

और जिसकी कुंडलीमें वृश्चिक का होकर चन्द्रमा हो वह मनुष्य राज्य से या जूऐ से धनका नाश करने वाला, कलह करने में रुचि रखने वाला, हिम्मत रहित

दुष्ट मन वाला, दुर्बलता युक्त (छोटे ख्यालों वाला) अन्त में यमराज के द्वारा बहुत सताया जाय यानी बहुत बीमारी होवे ॥ ८ ॥

बहुकलाकुशलः किल गीतवान्विमलताकलितः सरलोक्तिभाक् ।
शशिधरे हि धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम् ॥९॥

और जिसकी कुंडली में धनका होकर चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य अनेक कलाओं में कुशल, गान विद्याका ज्ञाता, विमलता युक्त, सरल बचनों का कहने वाला, और पूर्ण धनवान् होकर भी धनका बहुत खरच करने वाला नहीं होता है अर्थात् बहुत ही कृपण होवे ॥ ९ ॥

कलितशीतिभयः किल गीतवित्तनुरुषा सहितो मदनातुरः ।
निजकुलोत्तमवित्तकरः परं हिमकरे मकरे पुरुषो भवेत् ॥१०॥

और जिसके चन्द्रमा मकरका होकर कुंडलीमें बैठताहै वह मनुष्य शीतसे डरपने वाला (शीत प्रकृति) गीत का गाने वाला, किंचित् क्रोध युक्त, अत्यन्त कामी तथा अपने कुलानुसार पूरे२ धन का संपादन करने वाला होता है ।

अलसतासहितोऽन्यसुतप्रियः कुशलताकलितोऽतिविचक्षणः ।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितोऽशमितोरुरिपुव्रजात् ११

और जिसकी कुंडली में कुम्भ का चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य अत्यन्त आलसी दूसरों के पुत्रों में स्नेह रखने वाला, बडा चतुर, अत्यन्त विचक्षण (सर्वज्ञ) और अति प्रचण्ड बहुतसे शत्रु मंडल की जबरदस्त धींगा धींगी और चोटों के कारण इसे शांत होकर रहना पडे, इसकी एक भी ताकत उनके सामने न चले ॥ ११ ॥

शशिनि मीनगते विजितेंद्रियो बहुगुणः कुशलोऽनिललालसः ।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरान्न चलताचलताकलितो नरः ॥१२॥

और जिसकी जन्म कुंडली में मीन का होकर चन्द्रमा बैठा हो वह मनुष्य जितेन्द्रिय, बडा गुणवान्, अति निपुण, हवा खाने में लालसा रखने वाला, निर्मल जिसकी बुद्धि, और शस्त्र कलाके आदर से चलायमान न होने वाला, और चांचलता से युक्त होता है ॥ १२ ॥ इति चन्द्रफलम् ।

अथ भौमफलम्—

क्षितिपतेःक्षितिमानधनागमैःसुवचसा महसा बहुसाहसैः ।
अवनिजःकुरुते सततं शुभं त्वजगतो जगतोऽभिमतं नरम् ॥१॥

जिसकी कुंडलीमें मंगल मेषराशि का होकर बैठाहो वह जातक राजासे प्राप्त हुए जमीन मान धनों से परिपूर्ण, सुन्दर वाणी बोलने वाला, तेज से और अनेक साहसों से युक्त, निरन्तर सब जगत में सब मनुष्यों का प्यारा रहे ॥ १ ॥

गृहधनाल्पसुखं च रिपूदयं परगृहस्थितिमादिशते नृणाम् ।
अवनिजोऽरिरुजो बृषभस्थितःक्षितिसुतोऽतिसुतोद्भवपीडनम्॥ २॥

और जिसकी कुंडली में मंगल बृष राशि का होकर बैठा हो तब वह मंगल उस मनुष्य को गृह और धन के थोडे सुख को, शत्रुजनों की वृद्धि को, दूसरे के घर में निवास को, बैरी के निमित्त से चोट को, और अत्यन्त पुत्रों के होने के कारण कई तरह की पीडा को देता है ॥ २ ॥

बहुकलाकलनाकुलजोत्कलिं प्रचलनप्रियतां च निजस्थलात् ।
ननु नृणां कुरुते मिथुनस्थितःकुतनयस्तनयप्रमुखात्सुखम्॥३॥

और जिसकी कुंडली में मिथुन राशि का होकर मंगल बैठता है वह मनुष्य अनेक कलाओं का ज्ञाता; किन्तु उन सब के संभालने में उसे बड़ी व्याकुलता रहे, अपने घर से परदेश जाने में बहुत मन रखने वाला, और पुत्रों के हेतु से सुख पाने वाला होता है ॥ ३ ॥

परगृहस्थितितांमतिदीनतां विमतितां शमितां च रिपूदयम् ।
हिमकरालयगे किल मंगले प्रबलयाऽबलया कलहं ब्रजेत् ॥४॥

और जिसकी कुंडली में मंगल कर्क राशि का होकर स्थित होता है वह मनुष्य अन्य किसी के घर रहने में स्नेह रखने वाला, अति दीनता युक्त, बडा दुर्बुद्धि और शक्ति के ह्रास होजाने के कारण शान्ति भाव रखने वाला, तथा उसके बैरियों की वृद्धि होवे और किसी खानदान घराने की स्त्री से उसका झगड़ा होजावे ॥४॥

अतितरां सुतदारसुखान्वितो हतरिपुर्विततोद्यमसाहसः ।
अवनि जेमृगराजगते पुमान्सुनयता नयताऽभियुतोभवेत् ॥५॥

और जिसकी कुंडली में मंगल सिंह राशि का होकर बैठता है वह मनुष्य पुत्र और स्त्रियों के सुख से सुसम्पन्न, वैरियों से रहित, अनेक उद्यमों के करने में बडा साहसी; और राजनीति वा धर्मनीति के द्वारा सदा कार्य करनेवाला होताहै

स्वजनपूजनताजनताधिको यजनयाजनकर्मरतो भवेत् ।
क्षितिसुते सति कन्यकयान्विते स्ववनितो वनितोत्सवतः सुखी ॥६॥

और जिसके मंगल कन्या राशि का होकर कुंडली में स्थित हो वह मनुष्य अपने स्वजन मण्डली के भरण पोषण में आकुल रहने वाला, अधिक कुटुम्बी, करने कराने में निरत, स्त्री और जमीन के सुखों से सुख पाने वाला होता हैं ॥ ६ ॥

बहुधनव्ययतांगविहीनतागतगुरुप्रियतापरितापितः ।
वणिजि भूमिसुते विकलः पुमानवनितो वनितोद्भवदुःखभाक् ७

और जिसकी कुंडली में तुला राशि का होकर मंगल बैठा हो वह मनुष्य आमदनी की अपेक्षा बहुत धन खर्च करने वाला, किसी अंग से हीन, माता पिता में स्नेह रहित, सबको दुःख देने वाला; विकल, सदा जमीन एवं स्त्री के निमित्त से दुःख पाने वालो होता है ॥ ७ ॥

विषहुताशनशस्त्रभयान्वितः सुतसुतावनितादिमहासुखः ।
वसुमतीसुतभाजि सरीसृपे नृपरतःपरतश्च जयं व्रजेत् ॥८॥

और जिसकी कुंडली में वृश्चिक राशि का होकर मंगल बैठा हो वह मनुष्य विष, अग्नि और शस्त्र निमित्त भय से युक्त, बेटी बेटा और पत्नी से सुख पाने वाला राजा में स्नेह रखने वाला और शत्रुओं के कुल का जय करने वाला होता है ॥८॥

रथतुरंगमगौरवसंयुतः परमरातिजनैःकृतदुःखितः ।
भवति वाऽवनिजे धनुषि स्थिते सुवनितावनिता भवति प्रिया ॥९

और जिसकी कुंडली में धन राशि का होकर मंगल बैठा हो वह मनुष्य रथ; घोड़ा आदिके गौरव से युक्त, लेकिन शत्रु निमित्त से भय पाने वाला, और पतिव्रता एवं सच्चरित्र स्त्री से युक्त होता है ॥ ९ ॥

रणपराक्रमता वनितासुखं निजजनप्रतिकूलभयाश्रितः ।
विभवता मनुजस्य धरात्मजे मकरगे करगा च रमा भवेत् ॥१०॥

और जिसकी कुंडली में मकर राशि का होकर मंगल बैठा हो वह मनुष्य संग्राम में बडा पराक्रमी, स्त्री सुख पाने वाला, अपने मनुष्योंके प्रतिकूल जनोंसे सदा भयभीत, अनेक प्रकारके वैभव युक्त, और हस्तगत लक्ष्मी वाला होता है ॥ १० ॥

विनयिताराहितं सहितं रुजा निजजनप्रतिकूलमलं खलम् ।
प्रकुरुते मनुजं कलशाश्रयः क्षितिसुतोऽतिसुतोद्भवदुःखितम् ११

और जिसकी कुंडली में मंगल कुम्भ राशि का हो वह मनुष्य विनयता से रहित, रोगों से युक्त; अपने मनुष्यों से प्रतिकूल, बडा दुष्ट और अनेक पुत्र होने के कारण सब समय दुःखी रहता है ॥ ११ ॥

व्यसनतां खलतामदयालुतां विकलतां चलतां च निजालयात् ।
क्षितिसुतस्तिमिना सुसमन्वितो विमतिना मतिनाशनमादिशेत्

और जिसकी कुंडली में मीन राशि में मंगल स्थित हो वह मनुष्य अनेक व्यसनों से युक्त, बडा खल, बडा निर्दयी; सदा विकलता युक्त और अपने घर से अन्यत्र डोलने वाला होता है और किसी निर्बुद्धि मनुष्य के संग से बुद्धि नाश पाने वाला होता है ॥ १२ ॥ इति भौमफलम् ।

अथ बुधफलम्—

खलमतिः किल चंचलमानसो बहुलभुक्कलहाकुलितो नरः ।
अकरुणोऽप्यृणवांश्च बुधे भवेदविगते विगतेप्सितसाधनः ॥१॥

जिसकी कुंडली में मेष राशि का होकर बुध बैठा हो वह मनुष्य खल बुद्धि से युक्त, चंचल मन वाला, बहु भोजी, सब समय कलह करने वाला; बडा निर्दयी, मनुष्यों से कर्ज लेने वाला; और वांछित वस्तुओं से रहित होता है ॥ १ ॥

वितरणप्रयतं गुणिनं दिशेद्बहुकलाकुशलं रतिलालसम् ।
धनिनमिंदुसुतो वृषभस्थितस्तनुजतोऽनुजतोऽतिसुखं नरम् ॥२॥

और जिसकी कुंडली में वृष राशि का बुध होता है वह मनुष्य अनेक वस्तु देने वाला, बडा गुणी, अनेक कलाओं में कुशल, रति करने में अधिक इच्छुक, धनी, पुत्र एवं छोटे भाइयों से सुख पाने वाला होता है ॥ २ ॥

प्रियवचा रचनासु विचक्षणो द्विजननीतनयः शुभवेषभाक् ।
मिथुनगे जनने शशिनंदने सदनतोऽदनतोऽपि सुखी नरः॥३

और जिसकी कुंडली में बुध मिथुन का होवे वह मनुष्य प्रिय वचन बोलने वाला, रचनाओं में कुशल; दो माता वाला, शुभ वेष धारण करने वाला और स्वगृह से तथा भोजनादि द्वारा सर्व प्रकार से सुखी होता है ॥ ३ ॥

कुचरितानि च गीतकथादरो नृपरुचिः परदेशगतिर्नृणाम् ।
किल कुलीरगते शशिभृत्सुते सुरततारतता नितरां भवेत् ॥४॥

और जिस मनुष्य की कुंडली में कर्क राशि का होकर बुध बैठा हो वह मनुष्य दुष्ट आचरण करने वाला; गाने बजाने एवं कथाओं में आदर करने वाला, राजा में रुचि रखने वाला, परदेश में रहने वाला और सुन्दर अंगनाओं के साथ निरंतर विषय करने में निरत होता है ॥ ४ ॥

अनृततासहितं विमतिं परं सहजवैरकरं कुरुते नरम् ।
युवतिहर्षपरं शशिनःसुतो हरिगतोऽरिगतोन्नतिदुःखितम्॥५॥

और जिसकी कुंडली में सिंह राशि का होकर बुध स्थित होवे तब वह मनुष्य मिथ्यावादी अति दुष्ट बुद्धि वाला, सहोदर बंधुओं से बैर करने वाला, अपनी स्त्री को प्रसन्न रखने वाला, और सदा शत्रु के बश में रहने वाला तथा अपनी उन्नति से रहित होता है ॥ ५ ॥

सुवचनानुरतश्चतुरो नरो लिखनकर्मपरो हि वरोन्नतिः ।
शशिसुते युवतिं च गते सुखी सुनयनानयनांचलचेष्टितैः॥६॥

और जिसकी कुंडली में कन्या का होकर बुध स्थित हो वह मनुष्य सुन्दर वचन बोलने वाला, बडा चतुर; लिखाई का काम करने वाला अत्यन्त उन्नति पाने वाला, सुख पाने वाला, और उत्तम नेत्र वाली स्त्रियों के साथ संभोगादि सुखों का प्राप्त करने वाला होता है ॥ ६ ॥

अमृतवाग् व्ययभाक् खलु शिल्पवित्कुचरिताभिरतिर्बहुजल्पकः।
व्यसनयुग्मनुजःसहिते बुधे वितुलयच्चलयान्वसतीयुतः ॥ ७ ॥

और जिसकी कुण्डली में बुध तुला राशिका होकर बैठा हो वह मनुष्य अमृत

समान (मीठी) बातें बोलने वाला खर्च करने में उद्यत, अनेक शिल्प (कारीगरी) जानने वाला, खोटे आचरण वाली स्त्रियों के साथ भोग विलास करने वाला, बड़ा बकवादी और अनेक व्यसनों में आसक्त होता है ॥ ७ ॥

कृपणतातिरतिप्रणयश्रमो विहितकर्मसुखोपहतिर्भवेत् ।
धवलभानुसुतेऽलिगते क्षतिस्त्वलसतो लसतोपि च वस्तुनः ॥८॥

और जिसकी कुंडली में बुध बृश्चिक राशिका होकर बैठा हो वह मनुष्य कृपणस्त्रियों के साथ संभोग करने में अत्यन्त आसक्त,पूर्व विहित कर्मों के सुखसे रहित और अधिक आलस्य के कारण प्राप्त वस्तुसे भी हानि पाने वाला होता है ॥ ८॥

वितरणप्रणयो बहुवैभवः कुलपतिश्च कलाकुशलो भवेत् ।
शशिसुतेऽत्र शरासनसंस्थिते विहितया हितया रमयान्वितः॥९॥

और जिसकी कुंडली में धन राशिका होकर बुध बैठाहो वह मनुष्य दान करने वाला, बड़ा धनी, अनेक कलाओं में कुशल, कुलका पालन करने वाला, और सदा कमाई हुई श्रेष्ठ लक्ष्मी से युक्त तथा भाग्यशाली होता है ॥ ९ ॥

रिपुभयेन युतःकुमतिर्नरःस्मरविहीनतरःपरकर्मकृत् ।
मकरगे सति शीतकरात्मजे व्यसनतःसं नतःपुरुषो भवेत् ॥१०॥

और जिसकी कुंडली में बुध मकर राशिका होकर बैठाहो वह मनुष्य शत्रुओं के भय से युक्त, दुष्ट बुद्धिवाला, काम रहित, दूसरों के कामका करने;वाला(नौकर) और व्यसनी होता हुआ भी नम्र स्वभाव वाला होता है ॥ १० ॥

गृहकलिं कलशे शशिनंदने वितनुते तनुतामनुदीनताम् ।
धनपराक्रमधर्मविहीनतां विमतितामतितापितशत्रुभिः ॥११॥

और जिसके बुध कुंभका होकर कुंडली में स्थित हो उस मनुष्य को घरमें कलह को; दीनता को, हलकापन, (लघुता); धनपराक्रम और धर्म से हीन होने को और दुष्ट बुद्धि को और शत्रु द्वार से तापको देता है ॥ ११ ॥

परधनादिकरक्षणतत्परो द्विजसुरानुचरो हि नरो भवेत् ।
शशिसुते पृथुरोमांसमाश्रिते सुवदनावदनानुविलोकनः ॥१२॥

और जिस मनुष्य की कुंडली में बुध मीन का होकर बैठा हो वह मनुष्य दूसरे के धनादिकी रक्षा करने वाला, देवता तथा ब्राह्मणोंका अनुचर, और सुमुखी स्त्रियों के मुखका दर्शन करने वाला होता है ॥ १२ ॥

अथ गुरुफलम्—

बहुतरां कुरुते समुदारतां सुचरितानि च वैरिसमुन्नतिम् ।
विभवता च मरुत्पतिपूजितःक्रियगतोयगतोऽनुमतिप्रदः ॥१॥

जिसकी जन्म कुंडली में बृहस्पति मेषलग्नमें बैठा हो वह मनुष्य अति उदारता युक्त, उत्तम कर्म करने वाला, अधिक शत्रुओं वाला, अति वैभव युक्त और मति-पूर्वक कार्य करने वाला होता है ॥ १ ॥

द्विजसुरार्चनभक्तिविभूतयो द्रविणवाहनगौरवलब्धयः ।
सुरगुरौ वृषभे बहुवैरिणश्चरणगारणगाढपराक्रमः ॥ २ ॥

और जिसकी कुण्डलीमें गुरु वृष का बैठा हो वह मनुष्य ब्राह्मण और देवताओं की पुजा भक्ति द्वारा ऐश्वर्यशाली, धन, वाहन और गौरव से युक्, अधिक शत्रुओं वालातथा शत्रुओं को पराक्रम द्वारा हराने वाला होता है ॥ २ ॥

कवितयासहितःप्रियवाक् शुचिर्विमलशीलरुचिर्निपुणःपुमान् ।
मिथुनगे सति देवपुरोहिते सहितता हिततासहितैर्भवेत् ॥३ ॥

और जिसकी कुण्डली में मिथुन का होकर गुरु बैठा हो वह मनुष्य कविता करने वाला, प्रिय वचन बोलने वाला, बडा पवित्र, निर्मल स्वभाव में रुचि रखने वाला, बडा निपुण, और अनेक पुरुषोंके से साथ दोस्ती करने वाला होता है ॥३॥

बहुधनागमनो मदनोन्नतिर्विविधशास्त्रकलाकुशलो नरः ।
प्रियवचाश्च कुलीरगते गुरौ चतुरगैस्तुरगैःकरिभिर्युतः ॥४ ॥

और जिसकी कुंडली में गुरु कर्कका बैठाहो वह मनुष्य अनेक प्रकार से धन के समागम से युक्, कामदेव के मदसे मत्त, अनेक शास्त्र तथा कलाओं में कुशल, प्रिय बचन बोलने वाला और चतुर घोड़ा; हाथी आदि से सर्वदा युक्त रहता है ॥

अचलदुर्गवनप्रभुतार्जितो दृढतनुर्ननु दानपरो भवेत् ।
अरिविभूतिहरो हि नरो युतःसुवचसा वचसामधिपे गुरौ ॥५॥

और जिसकी कुण्डली में बृहस्पति सिंहका होकर बैठा होता है वह मनुष्य पहाड; किला और बनमें अपनी प्रभुता के कारण धनादि प्राप्त करने वाला, अति दृढांग, दान करने में तत्पर, शत्रु जनोंकी विभूति हरने वाला और प्रिय बचन बोलने वाला होता है ॥ ५ ॥

कुसुमगंधसदंबरशालिता विमलता धनदानमतिर्भृशम् ।
सुरगुरौ सुतया सति संयुते रुचिरता चिरतापितशत्रुता ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यकी कुंडली में कन्या राशिका होकर गुरु बैठाहो वह मनुष्य पुष्प, गंध तथा उत्तम बस्त्रों का धारण करने वाला, शुद्ध, धनके दान करने में बुद्धि रखने वाला, और सुन्दर स्वरूप वाला, तथा शत्रु जनों को सदैव ताप देने वाला होता है ॥ ६ ॥

सुतनयो जपहोममहोत्सवो द्विजसुरार्चनदानमतिर्भवेत् ।
वणिजजन्मपवित्रशिखंडिजे चतुरतातुरतासहितोऽरिणा[1] ॥७॥

और जिसकी कुंडली में बृहस्पति तुला का होकर स्थित होता है वह मनुष्य उत्तम सत्पात्र अनेक पुत्रों से युक्त, जप, होम यज्ञादि करने में उत्सव मानने वाला, देवता, ब्राह्मणों के पूजनमें और दान करने में बुद्धि रखने वाला, और बडा चतुर घबराहट युक्त और सदा शत्रुओं से व्याप्त रहता है ॥ ७ ॥

धनविनाशनदोषसमुद्भवैः कृशतनुर्बहुदंभपरो नरः ।
अलिगते सति देवपुरोहिते भवनतो वनतोपि च दुःभाक् ।८।

और यदि बृहस्पति बृश्चिक राशिका होकर कुण्डली में जिसके बैठा हो वह मनुष्य धनका नाश होने के कारण दुर्बलांग, बडा दंभी और घरकी तरफ से और बाहर से भी सदा दुःखी होता है ॥ ८ ॥

वितरणप्रणयो बहुवैभवं ननु धनान्यपि वाहनसंचयः ।
धनुषि देवगुरौ हि मतिर्भवेत्सुरुचिरा रुचिराभरणानि च ॥९॥

और जिसके बृहस्पति धन राशिका होकर कुण्डली में स्थित होवे वह मनुष्य

---

१ "सहितोऽरिभि रितिपाठः साधुः प्रतिभाति तथा च तस्मिञ्जातके चतुरता आतुरता च स्यात्, अरिभिःसहितोव्याप्तश्च स्यात् इत्थमर्थकरणमपि सुसंगतं भवितुमर्हति।

अपने धनको दान में लुटाने का प्रेमी, बहुत धनोंका मालिकहोवे, अनेक सवारियों का रखने वाला, तीव्र बुद्धिवाला और दिव्य आभूषणों के धारण से अति रुचिर होता है ॥ ९ ॥

हतमतिःपरकर्मकरो नरःस्मरविहीनतरो भयरोषभाक् ।
सुरगुरौ मकरे विदधाति ना जनमनो न मनोरथसाधनम् ॥१०॥

और जिसके बृहस्पति मकर का होकर कुंडली में होवे वह मनुष्य भ्रष्ट बुद्धि वाला, गैरों के कामों का करने वाला, काम से रहित, भय और क्रोध से युक्त, और व्यर्थ मनोरथों वाला होता है ॥ १० ॥

गदयुतःकुमतिर्द्रविणोज्झितः कृपणतानिरतः कृतकिल्बिषः ।
घटगते सति देवपुरोहिते कदशनो दशनोदरपीडितः ॥११॥

और जिसके बृहस्पति कुंभ राशिका होकर स्थित होवे वह मनुष्य सदा रोगों से युक्त, अति कुबुद्धि, धनसे रहित, अत्यन्त कृपण, पापोंसे युक्त, खरान्न भोजन करने वाला, और दांतों में तथा उदर में पीडा से युक्त होता है ॥ ११ ॥

नृपकृपाप्तधनो वदनोन्नतिः सदनसाधनदानपरो नरः ।
सुरगुरौ तिमिना सहिते सतामनुमतोऽनुमतोत्सवदो भवेत् ॥१२॥

और जिसके मीन राशिका होकर बृहस्पति हो वह मनुष्य राजा के अनुग्रह से धन संपादन करने वाला, सुन्दर मुख युक्त, गृहके साधन और दान करने में तत्पर, सज्जनों को अनुमत और उसी से अपुन को पवित्र मानने वाला होता है ॥ इति ॥

अथ शुक्रफलम् ।

भवनवाहनबृंदपुराधिपः प्रचलनप्रियताविहितादरः ।
यदि च संजनने हि भवेत्कविःकवियुतो वियुतो रिपुभिर्नरः॥१॥

जिसकी कुंडली में शुक्र मेषराशिका होकर बैठा हो वह मनुष्य अनेक गृह सवारियों तथा नगरों का स्वामी, परदेश जाने में मन रखने वाला सर्वत्र आदर पाने वाला कविजनों का सहवासी और शत्रुजनों से रहित होता है ॥ १ ॥

बहुकलत्रसुतोत्सवगौरवं कुसुमगंधिरुचिःकृषिनिर्मितः ।
वृषगते भृगुजे कमला भवेदविरला विरला रिपुमंडली ॥२॥

और जिसके कुंडली में वृषका होकर शुक्र बैठा हो वह मनुष्य अनेक पुत्र तथा कलत्रों के उत्सव से गौरव युक्त, पुष्पादि गंध वस्तु में रुचि रखने वाला, खेती के कामका करने वाला, पूर्ण लक्ष्मी से संपन्न और शत्रुमंडलसे रहित होता होता है ॥ २ ॥

भृगुसुते जनने मिथुने स्थिते सकलशास्त्रकलामलकौशलम् ।
सरलता ललिता किल भारती समधुरा मधुरान्नरुचिर्भवेत् ॥३॥

और जिसके मिथुन राशिका होकर शुक्र बैठाहो वह मनुष्य सम्पूर्ण शास्त्र तथा कलाओं में कुशल, सरल, मनोहर वचन कहने वाला; और मिष्टान्न भोजन में अभिलाषा करने वाला होता है ॥ ३ ॥

द्विजपतेःसदने भृगुनंदने विमलकर्ममतिर्गुणसंयुतः ।
जनमलं सकलं कुरुते वशं सकलया कलयापि गिरा नरः ॥४॥

और जिसके शुक्रकर्क राशिका होकर कुण्डली में बैठा हो वह मनुष्य विमल कर्मों में मन रखने वाला, सकल शुभ गुण संपन्न, और सब मनुष्यों को अनेक कलायुक्त वचनों से वश करने वाला होता है ॥ ४ ॥

हरिगते सुरवैरिपुरोहिते युवतितो धनमानसुखानि च ।
निजजनव्यसनान्यपि मानवस्त्वहिततो हिततोषमनुब्रजेत् ॥५॥

और जिसके शुक्र सिंहराशिका होकर कुंडली में स्थित हो वह मनुष्य स्त्रीके निमित्त से धन मान तथा सुखका पाने वाला, और अपने मनुष्यों से दुःख पाने वाला, और शत्रुओं द्वारा हितचिन्तक पुरुषोंकी तरह लाभ पाने वाला होता है ।५।

भृगुसुते सति कन्यकयान्विते वहुधनं खलु तीर्थमनोरथः ।
कमलया पुरुषोऽपिविभूषितस्त्वमितया मितयापि गिराऽन्वितः६

और जिसके कन्याराशिका होकर शुक्र कुंडली में होवे वह पुरुष अत्यन्त धनवान्, तीर्थों में जाने के लिये मन रखने वाला, और अमित लक्ष्मी वाला, और अल्प बोलने वाला होता है ॥ ६ ॥

कुसुमवस्त्रविचित्रधनान्वितो बहुगमागमनो ननु मानवः ।
जननकालतुलाकलनं यदा सुकविना कविनायकतां ब्रजेत् ॥७॥

और जिसके शुक्र तुला राशिका होकर कुंडली में स्थित हो वह पुरुष पुष्प, और विचित्र वस्त्र एवं धन से संपन्न, देशांतरों में आने जाने वाला, और कविजनों में नायक होता है ॥ ७ ॥

कलहघातमतिं जननिंद्यतां प्रजनतामयतां नियतां नृणाम् ।
व्यसनतां जननेऽलिसमाश्रितःकविरलं विरलं कुरुते धनम् ॥८॥

और जिसके वृश्चिक राशिका होकर कुण्डली में शुक्र बैठाहो वह पुरुष कलह एवं हत्या करने में मन रखने वाला; पुरुषों में निंदा (बदनामी) पाने वाला, विषयेंद्रियमें रोगवाला, नशा करने वाला, और कभी २ धन से युक्त होता है ॥ ८॥

युवतिसूनुधनागमनोत्सवं सचिवतां नियतं शुभशीलताम् ।
धनुषि कार्मुकगःकविनंदनःकविरतिं विरतिं कुरुते नृणाम् ॥९॥

और जिसके धनराशिका होकर कुंडली में शुक्र बैठाहो वह पुरुष पुत्र, कलत्र और धनागमके उत्सव से संपन्न, राजा का मंत्री, शुभ शील से संपन्न, कवि पुरुषों में प्रेम रखने वाला और घरसे विरति (वैराग्य) रखने वाला होता है ॥

अभिरतिस्तु जरांगनया नृणां व्ययभयात्कृशतामतिचिंतया ।
भृगुसुते मृगराशिगते सदा कविजनेविजनेऽपिमतिर्भवेत् ॥१०॥

और जिसके शुक्र मकर राशिका होकर कुंडली में स्थित हो वह पुरुष बड़ा कामी किन्तु अधिकखर्च के कारण वृद्धांगनाओं से संभोग करने वाला, अधिक चिन्ताओं के कारण से दुर्बलांग; और कविजनों के साथ संगति करने वाला, और विजन (जंगल) के रहने में मन रखने वाला होता है ॥ १० ॥

उशनसःकलशे जनुषि स्थितौ वसनभूषणभोगविहीनता ।
विमलकर्ममहालसता नरैरुपगतापगताऽपिरमा भवेत् ॥११॥

और जिसके कुंभराशिका होकर शुक्र बैठा होता है वह पुरुष वस्त्र, भूषण आदि भोगों से विहीन, सत्कर्म करने में आलसयुक्त, और धनी होकर भी निर्धन होजाता है ॥ ११ ॥

भृगुसुते सति मीनसमन्विते नरपतेर्विश्रुता वितता भवेत् ।

रिपुसमाक्रमणद्रविणागमो वितरणे तरणे प्रणयो नृणाम् ॥१२॥

और जिसके शुक्र कुण्डली में मीन का होकर बैठा हो। वह मनुष्य राजा से विभुता (वैभव) संपादन करने वाला, शत्रुजनों पर आक्रमण द्वारा धन पैदा करने वाला, और दीन मनुष्यों को धन देने में मन रखने वाला होता है॥ १२ ॥ इति ॥

अथ शनिफलम्—

धनविहीनतया तनुता तनौ जनविरोधितयेप्सितनाशनम् ।
क्रियगतेऽर्कसुते सुजनैर्नृणां विषमता समताशमनं भवेत् ॥१॥

जिस मनुष्य की कुंडली में मेष का शनि स्थित होता है वह मनुष्य धन के अभाव होने से देह से दुर्बल, और मनुष्यों से विरोध करने के हेतु से अपने मनोरथों का नाश करने वाला, सुजनों से द्वेष रखने वाला, और समता रखने से हीन होता है ॥ १ ॥

युवतिसौख्यविनाशनता भृशं पिशुनसंगरुचिं मतिविच्युतिम् ।
तनुभृतां जनने वृषभस्थितो रविसुतो विसुतोत्सवमादिशेत् ॥२॥

और जिस मनुष्य की कुंडली में शनि वृष राशि में बैंठा हो वह मनुष्य हमेशा स्त्री के सुखसे हीन, चुगल मनुष्योंका संग करने वाला, बुद्धि हीन, और पुत्रोत्सवसे भीं रहित होता है ॥ २ ॥

प्रवलताविमलत्वविहीनता भवनबाह्यविलासकुतूहलात् ।
व्रजति नो मिथुनोपगते सुते दिनविभोर्न विभोर्लभतेसुखम् ॥३॥

और जिसकी कुंडली में मिथुन का होकर शनि बैठा हो वह मनुष्य प्रबलता और निर्मल वेष से रहित, घर को छोड़कर बाहरी भोगों के कुतूहल से हीन होता है, और कभी किसी सज्जन पुरुष से भी आनन्द नहीं पाता है ॥ ३ ॥

शशिनिकेतनगामिनि भानुजे तनुभृतां कृशतां भृशमंबया ।
वरविलासकरा कमला भवेदविरलं विरलं रिपुमंडनम् ॥ ४ ॥

और जिसकी कुंडली में कर्कराशि का होकर शनि बैठा होवे वह मनुष्य तथा उसकी माता शरीर से अति दुर्बल, लक्ष्मी के कारण से उत्तम २ भोग विलास करने वाला और शत्रुओं से हीन होता है ॥ ४ ॥

लिपिकलाकुशलश्च कलिप्रियो विमलशीलविहीनतरो नरः ।
रविसुते रविवेश्मनि संस्थिते हतनयस्तनयःप्रमदार्तिभाक् ॥५॥

और जिसकी कुण्डली में शनि सिंह राशि में स्थित हो वह मनुष्य लिखने की विद्यामें कुशल, कलह करने में मन रखने वाला, उत्तम शील (स्वभाव) से हीन, नीति मार्ग से बहिष्कृत पुत्र से युक्त, और स्त्री से दुःख पाने वाला होताहै ॥५॥

विहितकर्मणि शर्म कदापि नो विनयतोपहतिश्चलसौहृदः ।
रविसुते सति कन्यकयान्विते विबलताबलतासहितो भवेत् ।६।

और जिसकी कुंडली में कन्या राशि का होकर शनि बैठा होता है वह पुरुष विहित कर्म में असफलता पाने वाला, विनय से हीन, चंचल स्नेह वाला, और किसी समय बल से हीन और कभी बल युक्त होता है ॥ ६ ॥

निजकुलेऽवनिपालबलान्वितः स्मरबलाकुलितो बहुदानदः ।
जलजिनीशसुते तुलयान्विते नृपकृतोपकृतो हि नरो भवेत् ।७।

और जिसकी कुंडली में तुला लग्न का होकर शनि बैठा होवे यह मनुष्य अपने कुलमें राजाकी तरह बलसे युक्त,अधिक कामी,दरिद्रोंको बहुतसा दान देनेवाला और राजा के किये उपकार से युक्त होता है ॥ ७ ।

विषहुताशनशस्त्रभयान्वितो धनविनाशनवैरिगदार्दितः ।
विकलिताकलितोऽलिसमन्वितो रविसुतो विसुतोऽप्यसुखो नरः

और जिसकी कुंडली में वृश्चिकराशि का होकर शनि बैठा होवे वह मनुष्य विष (जहर) अग्नि तथा शस्त्र के भय से युक्; धन का नाश करने वाला, सदा शत्रुओं तथा रोगों से पीडित, विकलता से युक्त और पुत्र तथा वांछित सुख से रहित होता है ॥ ८ ॥

रविसुतेन युते सति कार्मुके सुतगणैःपरिपूर्णमनोरथः ।
प्रथितकीर्तिसुवृत्तिपरो नरो विभवतो भवतोषयुतोभवेत्॥ ९ ॥

और जिसकी कुंडली में शनि धन का होकर बैठा हो वह मनुष्य पुत्रोंके गणों से परिपूर्ण मनोरथ वाला, विख्यात कीर्ति वाला, उत्तम वृत्ति (जीविका) का करने वाला, और अनेक विभवों के कारण संसारमें परितोष युक्त होता है ॥ ९ ॥

नरपतौ रतिगौरववतां ब्रजेद्रविसुते मृगराशिगते नरः ।
अगरुणा कुसुमैर्मृगजातया विमलया मलयाचलजैःसुखम् ॥ १० ॥

और जिसकी कुंडली में शनि मकर का होकर बैठता है वह मनुष्य राजा में प्रीति रखने से महत्व पाने वाला, अगरु पुष्प कस्तूरी और उत्तम चन्दनादि तथा उत्तम सुगन्धित द्रव्यों से सुखानुभव करने वाला होता है ॥ १० ॥

ननु जितो रिपुभिर्व्यसनावृतैर्विहितकर्मपराङ्मुखतान्वितः ।
रविसुते कलशेन समन्विते सुसहितःसहितप्रचयैर्नरः ॥ ११ ॥

और जिसकी कुंडली में शनि कुम्भ राशि का होकर बैठता है वह मनुष्य व्यसन करने वाला शत्रुजनों से हार पाने वाला, कर्तव्य कर्म करने से बहिर्मुख रहने वाला, अच्छे मित्रों से युक्त किन्तु शत्रुओं के मर्दन करने के लिये सहायता हीन होता है ॥ ११ ॥

विनयता व्यवहारसुशीलता सकललोकगृहीतगुणो नरः ।
उपकृतौ निपुणस्तिमिसंश्रिते रविभवे विभवेन समन्वितः ॥ १२ ॥

और जिसकी कुंडली में मीन राशि का शनि बैठा हो वह मनुष्य विनय व्यवहार तथा सुशीलता से युक्त, सब मनुष्यों में विख्यात गुण वाला, उपकार करने में निपुण और अनेक वैभवों से युक्त होता है ॥ १२ ॥ इति ॥

अथ मित्रामित्रकथनम्—

विनापि मैत्रीं खलु खेचराणां न ज्ञायते ह्युत्तममध्यहीनता ।
दिशादिकानां विदिशादिकाश्च तस्मात्प्रवक्ष्ये खलु मैत्रिचक्रम् ॥ १ ॥

ग्रहों के मित्र, सम, शत्रु, के जाने विना ग्रहों का उत्तम मध्यम और हीन फलों का ज्ञान नहीं हो सकता है और उन ग्रहों की दशा विदशाओं के फलों का भी यथार्थ ज्ञान नहीं होता है इस लिये अब मैं मैत्री चक्रको कहता हूं ॥ १ ॥

आदौ नैसर्गिकमैत्रीकथनम्—

शत्रू मंदसितौ समश्च शशिजो मित्राणि शेषा रवेस्तीक्ष्णां
शुर्हिमरश्मिजश्च सुहृदौ शेषाःसमाः शीतगोः ।

जीवेंदूष्णकराःकुजस्य सुहृदो ज्ञोऽरिःसितार्कौ समौ ।
मित्रे सूर्यसितौ बुधस्य हिमगु शुत्रः समाश्चापरे ॥ २ ॥
सूरेः सौम्यसितावरी रविसुतो मध्योऽपरेत्वन्यथा
सौम्यार्की सुहृदौ समौ कुजगुरूः शुक्रस्य शेषावरी ।
शुक्रज्ञौ सुहृदौ समः सुरगुरुः सौरस्य चान्येऽरयः--

सूर्य के शुक्र, शनि, शत्रु हैं बुध सम शेषग्रह (बृहस्पति, चन्द्रमा, मंगल) मित्र होते हैं, और चन्द्रमा के सूर्य बुध मित्र, शेष सब ग्रह सम होते हैं और शत्रु कोई नहीं है, मंगल के बृहस्पति, चन्द्रमा, सूर्य, मित्र हैं बुध शत्रु, और शुक्र शनि; दोनों सम होते हैं, और बुधके सूर्य, शुक्र, मित्र, चन्द्रमा शत्रु, शेष सब ग्रह सम होते हैं ॥ २ ॥

बृहस्पतिके बुध, शुक्र, शत्रु, शनि सम, और सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, मित्र होते हैं, और शुक्र के, बुध, शनि, मित्र, मंगल, बृहस्पति सम, और सूर्य, चंद्रमा, शत्रु होते हैं, और शनिके शुक्र, बुध सुहृद, बृहस्पति सम, और रवि चन्द्रमा, मंगल शत्रु होते हैं। ल० जा०

तात्कालिकमैत्रीकथनम्—

तत्काले च दशायबंधुसहजस्वांत्येषु मित्रं स्थितः ॥३॥ व०मि०

और अब तत्काल मित्रामित्र का निर्णय यह है कि दश १० आय ११ बन्धु ४ सहज ३स्व २धन अन्त्य१२ स्थानमें जो ग्रह स्थित होतेहैं वे ग्रह आपसमें तत्काल मित्र होते हैं इन स्थानों से अतिरिक्त स्थानोंमें ग्रह होवे तो शत्रु जानना॥

नैसर्गिकमैत्रीचक्रम् ।

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	रा०	के०	ग्रहाः
बृ० चं० मं०	सू० बु०	बृ० चं० सू०	सू० शु०	र. चं. मं.	बु० रा० श०	बु० शु० रा०	बु०शु० श०	श.बु. शु०	मित्राणि
बु०	बृ० मं० शु० श०	शु० श० रा०	मं० गु० रा० श०	श० रा०	मं० गु०	गु०	गु०	गु०	समाः
शु० श० रा०	०	बु०	चं०	बु० शु०	र० चं०	र० चं० मं०	र. चं. मं.	सू.चं० मं०	शत्रवः

मित्रमुदासीनोऽरि व्याख्याताये निसर्गभावेन ।
तेऽधिसुहृन्मित्रसमास्तत्कालमुपस्थितान्श्रित्या ॥४॥ व० मि०
मूलत्रिकोणषष्ठत्रिकोणानिधनैकराशिसप्तमगाः ।
एकैकस्य यथासंभवंति तात्कालिकारिपवः ॥ ५ ॥ व० मि०

इसी प्रकार नैसर्गिक मित्र सम, शत्रुओं को विचार करके पुनः तत्काल उपस्थित ग्रहों के मित्र, सम, शत्रुओं को चिन्त बन करे ॥ ४ ॥ जो ग्रह किसी के मूल त्रिकोण में पड़ जाय तो वह ग्रह भी मित्र होता है ॥ यदि ९-५-८-६-१-७इनस्थानों में पडा हुआ ग्रह होवे तो तात्कालिक शत्रु होता है ॥ ४ ॥ ५ ॥

तात्कालिक पंचधामैत्री कथनम् ।

तत्कालमित्रं तु निसर्गमित्रं द्वयं भवेत्तत्त्वधिमित्रसंज्ञम् ।
तथैव शत्रोरधिशत्रुसंज्ञमेकत्र शत्रुः समतामुपैति ॥ ६ ॥

यदि जो ग्रह नैसर्गिक मित्र और तत्काल मित्र हो तो वह ग्रह अधि मित्र होता है, और जो ग्रह तत्काल मैत्री में शत्रु हो और नैसर्गिक में भी शत्रु हो वह अधि शत्रु होता है, और जो ग्रह एक स्थान पर मित्र हो और दूसरे स्थान पर शत्रु होय वह ग्रह सम कहलाता है, और यदि ऐक जगह सम और दूसरी जगह शत्रु हो तो वह शत्रु, और मित्र, सम हो तो मित्र होता है ॥ ६ ॥

अथोदाहरणार्थं कस्यचिज्जन्मांग लिख्यते—

सूर्योदयादिष्टं १३-२३ तदा—इस जगह सूर्य का चन्द्रमा नैसर्गिक मित्र है

मकर लग्नोदयः

रा०११　मं०शु०
१२　१०　९
श　८सू०
१　११चं०　७बु०
२　४　६गु
३　५के
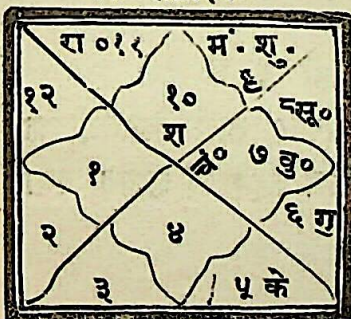
और चक्र में भी सूर्य से चन्द्रमा १२ वें घर में है इस लिये तात्कालिक मित्र है अब दोनों जगह मित्र हैं इस लिये अधि मित्र हुआ, फिर सूर्य का मंगल नैसर्गिक मित्र है और चक्र में भी २ घर में होने से तात्कालिक मित्र है दोनों जगह मित्र होने से यह भी अधिमित्र हुआ, सूर्य का बुध नैसर्गिक सम है और चक्र में सूर्य से १२ में घर में होने से मित्र है इस लिये बुध तात्कालिक मित्र हुआ, सूर्य का गुरु नैसर्गिक मित्र है और चक्र में सूर्य से ११ में घर में होने

से तात्कालिक भी मित्र ही है इस लिये यह भी अधिमित्र हुआ, सूर्य का शुक्र नैसर्गिक शत्रु है और चक्र में सूर्य से २ घर में है तो तात्कालिक मित्र हुआ इस लिये मित्र शत्रु होने से शुक्र सम हुआ, सूर्य का शनि नैसर्गिक शत्रु है और चक्र में सूर्य से ३ घर में है तो तात्कालिक मित्र हुआ इस लिये मित्र शत्रु होने से सम हुआ। इसी तरह शेष ग्रहों को जानना चाहिये।

तात्कालिक पञ्चधामैत्री चक्रम्।

ग्रहाः	सूर्य०	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु०	शुक्र	शनि
अधिमित्र०	गु० चं० मं०	सू०	गु. चं. सू.	शु० सू०	सू०चं०मं०	बु०रा०	बु. शु.
मित्र०	बु०	गु. मं.शु.श	श०	मं० गु० श०	०	गु०	०
सम०	शु० श०	बु०	बु०	०	बु० शु०	सू० चं०	सू. चं. मं०
शत्रु०	०	०	शु०	०	श०	मं०	गु०
अधिशत्रु	०	०	०	चं०	०	०	०

यह चक्र सब जन्मपत्रियों में तत्तदि पर विचार करके लिखा जाता है।

यथा स्वाभाविकीमैत्रीचक्रं यत्र प्रतिष्ठति।
तादृगेव हितत्कालमैत्रीचक्रम् सुसंलिखेत् ॥ १ ॥

स्वाभाविकमैत्रीचक्र जिसतरह स्थित हो उसी प्रकार तात्कालिकमैत्रीचक्र का भी जन्मांग चक्रानुसार स्थापन करै जिससे कि फल कहने में शीघ्रता तथा सुविधा होजाय ॥ १ ॥

अथ षड्वर्गशुद्धिः।

लग्ने देहाचारो होरायामर्थसम्पदो विपदः।
द्रेष्काणे कर्मफलं सप्तांशे बंधुसंख्या च ॥ १ ॥

जातकफलं नवांशे द्वादशभागे विचिन्तयेत्पत्नीम् ।
त्रिंशांशे निधनं वै यवनाचार्यैःसदा ह्युक्तम् ॥ २ ॥

इन दोनों श्लोकों से षड्वर्ग (गृह, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश, त्रिंशांश) में से किसर से कौनसी बातों का विचार करना चाहिये यह बतलाते हैं जैसे लग्नसे देहके सुख दुःखका तथा आचार विचारका ज्ञान करनाचाहिये१, होरासे धन संपत्ति तथा विरक्तिका ज्ञान २, द्रेष्काण से कर्मों के फलका ज्ञान अर्थात् इसके किये हुए कर्मों का फल क्या होगा ३, सप्तमांश से भाइयों की संख्या का ज्ञान ४, नवमांश से जातक के सब फलों का ज्ञान ५, और द्वादशांश से विवाहिता पत्नी का समग्र हाल जाना जाता है ६, इसी प्रकार त्रिंशांश से मृत्यु का हाल जाना जाता है ऐसा यवनाचार्यों ने कहा है ॥ १ ॥ २ ॥

यस्मिन्मित्रगृहे स्वकीयभवने तुंगे त्रिकोणेऽपि वा तत्सर्वं
विदधाति जन्मसमये षड्वर्गशुद्धो ग्रहः ।
एकस्तत्र हि सर्वभूरिनिकरो हस्तेषु कोशान्वितो
द्वाभ्यां किंनरमत्र सिद्धसदृशं कुर्वंति मर्त्यं भुवि ॥ ३ ॥

जिसके जन्म समय कोई ग्रह मित्र स्थान में अथवा अपने घर में वा त्रिकोण (स्वस्थान से पंचम, नवम) में वा उच्च में होय तो वह षड्वर्ग शुद्धग्रह सम्पूर्ण फल को देता है । यदि किसी कुण्डली में षड्वर्ग शुद्धग्रह, एक ही विद्यमान होय तो वह कुण्डली वाला सर्व सम्पत्तियों से युक्त और खजाने का मालिक होता है

१ स्वकीय लग्न, एवं होरा, द्रेष्काण, नवमभाग, द्वादशांश, और त्रिंशद्भावों को "षड्वर्ग" कहते हैं, यद्यपि ऐसा है भी तथापि स्वकीय राश्यादि मेंरहते भी हैं फिर भी वे स्ववर्गस्थ कहे जाते हैं क्यों कि वर्ग शब्द समुदाय वाचक है और ग्रहों के जो राशि हैं उनके स्वामी यदि षड्वर्ग में हों तो वह वर्ग उस स्थान का जानना चाहिये ।

तथा च नारदः—त्रिंशद्भागात्मकं लग्नं होरा तस्यार्धमुच्यते ।
लग्नत्रिभागो द्रेष्काणो नवमांशो नवांशकः ॥ १ ॥
द्वादशांशो द्वादशांश स्त्रिंशांशस्त्रिंशदंशकः ।
षड्वर्गाः कथिता ह्येते तेषामीशा इमे स्मृताः॥ २ ॥

और यदि षड्वर्ग शुद्ध ग्रह दो होंय तो वह मनुष्य पृथिवी में सिद्ध तथा किन्नरों के समान ऐश्वर्य शाली होता है ॥ ३ ॥

अथ होराकरणम्—

ओजे रवीन्द्वोःसम इन्दुरव्योर्होरे ग्रहार्धप्रमिते विचिन्त्ये ॥१॥

हर एक राशि ३० अंश की होती है, (राशेरर्धं भवेद्धोरा)-और राशि का आधा भाग (१५ अंश) तक एक होरा होती है, इसी तरह एक राशि में २ होरा होती हैं विषम राशि (मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुम्भ) में पहिले १ से १५ अंश तक सूर्य की होरा, फिर शेष १६ से ३० तक चन्द्रमा की होरा होती है, और[१] सम राशियों (वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन) में प्रथम १५ अंश तक चन्द्रमा की होरा, शेष १५ अंश में अर्थात् १६ से ३० तक दूसरी सूर्य की होरा होती है । इति ।

होराज्ञानार्थं चक्रम् ।

राशि०	मेष०	वृष०	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
अंश १५	सू० ५	चं. ४	सू० ५	चं. ४	सू० ५	चं०४	सू० ५	च० ४	सू० ५	चं०४	सू० ५	चं०४
अंश ३०	चं० ४	सू० ५	चं०४	सू० ५	चं०४	सू० ५	चं० ४	सू० ५	चं० ४	सू. ५	चं०,४	सू० ५

अथ द्रेष्काणमाह—

राशित्रिभागा द्रेष्काणास्ते च षट्त्रिंशदीरिताः ।
परिवृत्तित्रयं तेषां मेषादेः क्रमशो भवेत् ॥ १ ॥
स्वपञ्चनवपानां च विषमेषु समेषु च ।
नारदागस्तिदुर्वासो द्रेष्काणेशाश्चरादयः ॥ २ ॥बृ. पा.

राशि का तीसरा हिस्सा (१०. अंश का) द्रेष्काण होता है । इसी प्रकार एक राशि में ३ द्रेष्काण होते हैं एवं बारह राशियों में १२×३=३६ होते हैं ।

१— समगृहमध्ये शशि रवि होरा विषमभमध्ये रविशशिनोःसा। इतिरामाचार्यः॥

अथ सम और विषम दोनों तरह की राशियों में प्रथम १० अंश तक उसी के स्वामी का; दूसरा ११ से २० तक उससे पांचवीं राशि के स्वामी का, तीसरा २१ से ३० तक उससे नवमी राशि के स्वामी का द्रेष्काण होगा। सब राशियों में द्रेष्काण निकालने का यह ही नियम जानना चाहिये। चर द्रेष्काणों का स्वामी नारद, स्थिर का अगस्ति, द्विस्वभाव का दुर्वासा स्वामी होता है।

द्रेष्काणज्ञानार्थं चक्रम्।

स्वा०	रा०	मेष	वृष०	मिथु०	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धन	मकर	कुम्भ	मीन
नारद.	१०	१ मेष	२ वृ.	३ मि.	४ कर्क	५सिंह	६ क.	७तुला	८ वृ.	९धन	१० म.	११कु	१२मी.
अग०	२०	५सिं०	६ क०	७तुला	८ वृ.	९ धन	१०म.	११कु	१२मी	१ मेष	२ वृष	३ मि.	४कर्क
दुर्वा०	३०	९ धन	१०म.	११कु	१२मी	१ मेष	२ वृ.	३मि०	४कर्क	५ सिं.	६ क.	७तुला	८ वृ.

उदाहरण।

जैसे किसी के जन्म समय स्पष्ट लग्न ९-१७-४५-३० है अर्थात् २० अंश के भीतर है इससे स्पष्ट मालूम होता है कि दूसरा द्रेष्काण हुआ जो कि पूर्वोक्तानुसार मकर से ५ वीं राशि वृष इसके अधिपति शुक्रका द्रेष्काण हुआ।

अथ सप्तांशानाह—

सप्तांशपास्त्वोजग्रहे गणनीया निजेशतः।
युग्मराशौ तु विज्ञेयाः सप्तमर्क्षादिनायकात्॥ १॥

राशि के सातवें हिस्से को सप्तांश कहते हैं। विषम राशि में प्रथम अपनी ही राशि से गणना करे और सम राशि में अपनी राशि से सातवीं राशि का पहिला सप्तांश होता है जैसे मेष में प्रथम मेष का--इसी तरह मिथुन में पहिला मिथुन का इत्यादि, वृष में वृष से सातवीं राशि वृश्चिक का प्रथम सप्तांश होताहै इसी तरह शेष राशियों के जानने चाहिये।　　इति बृहत्पाराशरः।

अथ नवमांशकानयनम्—

मेषाद्या धनुसिंहश्च मकराद्या बृषकन्ययोः ।
तुलाद्या घटमिथुनश्च वृश्चिकमीनकुलीराद्याः ॥ २ ॥

राशि के नवमे हिस्से को नवांश कहते हैं । मेष, धन और सिंह, इन राशियों में पहिला मेष का नवांश होता है, दूसरा वृष का, तीसरा मिथुन का; इत्यादि । एवं वृष में मकर, कुम्भ, मीन का, मिथुन में-तुला, वृश्चिक, धन आदि का, कर्क में-कर्क, सिंह, कन्या आदि का जानना चाहिये । एक राशि में ९ नवांश होते हैं एक नवांश ३ अंश २० कला का होता है ।

उदाहरण ।

जैसे स्पष्ट लग्न ९-१७-४५-३० है तो पूर्वोक्त नियमानुसार मकर में २०-० तक मिथुन का नवांश हुआ । इसी तरह और स्थानों पर नवांश का निश्चय करें । स्पष्ट जाननेके लिये नवांश चक्र प्रथमाध्यायके पृष्ठ ६८ में दे चुकेहैं सो वहींदेखलेना चाहिये ।

अथ द्वादशांशमाह ।

द्वादशांशस्य गणनां तत्तत्क्षेत्राद्विनिर्दिशेत् ।
तेषामधीशाः क्रमशो गणेशाश्वियमाहयः ॥ १ ॥

एक राशि के १२ में हिस्से को द्वादशांश कहते हैं, एक द्वादशांश २॥ अंश (२ अं० ३० कला) का होता है । जिस राशि में द्वादशांश देखना हो तो उस राशिमें पहला उसीका;दूसरा उससे आगे वाली राशिका,इसी तरह शेष राशियोंका इसी तरह जानना चाहिये । इनके स्वामी क्रमसे गणेश, अश्विनी कुमार, यम, अहि (सर्प) पुनः इसी प्रकार जानना चाहिये । इति वृ० पा०) ॥ १ ॥

उदाहरण ।

जैसे लग्न ९—१७—४५—३२ मकर में १७ अंश के बाद २० अंश के भीतर ७ द्वादशांश बिताकर ८ मे में लग्न है इसी में तुला का द्वादशांश निकल गया अब बृश्चिक का द्वादशांश वर्तमान हैं ।

१-तथाच नवांशविषये—नारदः—

नवमांशा मेषसिंहचापमेषादयः क्रमात् । क्रमाद्गोमृगकन्यासु ज्ञेयाः ;स्युर्मकरादयः॥ १ ॥
तुलामिथुनकुम्भेषु स्युः क्रमेण तुलादयः । अलिकर्कटमीनेषु क्रमात्स्युः कर्कटादयः ॥ २ ॥

अथ द्वादशांश चक्रम् ।

स्वामी	अंशा	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	ध.	म.	कुं.	मीन
गणेश०	२ | ३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अ० कु०	५ | ००	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१
यम०	७ | ३०	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
सर्प०	१० | ००	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३
गणेश	१२ | ३०	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
अ० कु०	१५ | ००	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५
यम०	१७ | ३०	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६
सर्प.	२० | ००	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७
गणेश.	२२ | ३०	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८
अ. कु.	२५ | ००	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९
यम.	२७ | ३०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
सर्प.	३० | ००	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११

अथ त्रिशांशमाह ।

कुजशनिजीवज्ञसिताः पंचेन्द्रियवसुमुनीन्द्रियांशानाम् ।
विषमेषु समर्क्षेषूत्क्रमेण त्रिंशांशकाः कल्प्याः ॥ १ ॥

अथवा-* शरेषु नागाद्रिसमीरणानां भौमार्किजीवज्ञसितास्त्वधीशाः ।
त्रिंशांशकानां विषमे समर्क्षे तूक्ताद्विलोमं खलु जातकज्ञैः ॥

त्रिशांश—विशम राशियों (मेष, मिथुन, सिंह; तुला; धन, कुम्भ) में पहिले ५ अंशतक मंगल का, (अर्थात् मेषका) फिर ५ से १० तक शनि का, उसके बाद १८ अंश तक गुरु का, उसके बाद २५ अंश तक बुधका, उसके बाद ३० अंश तक शुक्रका, त्रिशांश होता है । किन्तु सम राशियों (वृष; कर्क, कन्या, बृश्चिक, मकर, मीन) में इसके विपरीत जानना अर्थात् प्रथम शुक्र का, दूसरा बुधका, तीसरा गुरुका, चौथा शनैश्चर का तथा, पांचवां मंगलका त्रिशांश होता है

त्रिशांश ज्ञानार्थं चक्रम् ।

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धन	मकर	कुम्भ	मीन
५ मं.	५ शु.	५ मंगल	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं	५ शु.	५ मं	५ शु.	५ मं.	५ शु.
१० श.	१२ बुध.	१० श.	१२बु.	१०श.	१२बु	१०श.	१२बु.	१०श.	१२बु.	१०श.	१२ बु.
१८ गु.	२० गुरु.	१८ गुरु.	२०गु.	१८गु.	२०गु.	१८गु.	२०गु.	१८गु.	२०गु.	१८गु.	२० गु.
२५ बु.	२५ श.	२५ बु.	२५श.	२५बु.	२५श.	२५बु.	२५श.	२५बु.	२५श	२५बु.	२५ शनि
३० शु०	३० मं.	३० शु.	३०मं	३०शु	३०मं	३०शु.	३०मं	३०शु.	३०मं	३०श.	३०मंगल

*—इमौ द्वावपि श्लोकावेकार्थकौ केवलं शब्दान्तर निवेश नेनैव भेदं प्राप्नुतः अतः पृथगर्थ करण मनुचितमिति संमेल्यैवार्थो द्वयोर्विहितः न तु पृथक्त्वेन भूयस्त्व भयादिति ।

अथाग्रे षड्वर्गफलम् ।

होरागतोऽर्कस्य करोति चन्द्रो नरं सकामं वनिताऽप्तकष्टम् ।
दोषात्मकं बन्धुजनैर्विमुक्तं सव्याधिदेहं रिपुवर्गगम्यम् ॥ १ ॥

जब सूर्य की होरा में चन्द्रमा होता है तब वह मनुष्य अत्यन्त कामी होता है और पत्नीसे कष्ट बहुत होवे, मनुष्यों से दोषी ठहराया जाय, बन्धुजनों से वियोगी रोगयुक्त देहवाला, और वैरि बर्ग के वशमें रहने वाला होता है ॥ १ ॥

सूर्यस्य होरां प्रगतो हिमांशुर्नरं प्रतापं विविधञ्च सौख्यम् ।
स्वबाहुसंपादितवित्तपुष्टं जायास्वभावस्य मतिं करोति ॥२॥

और सूर्य की होरा में चन्द्र होवे तब वह मनुष्य बडा प्रतापी, अनेक सुखों का भोगने वाला, अपने भुज बलसे संपादित, धन से पुष्ट और स्त्रीके स्वभाव जैसी बुद्धि रखने वाला होता है ॥ २ ॥

धर्मिष्ठः सत्यवक्ता च गुरुदेवप्रपूजकः ।
उपार्जितार्थसंभोगी होरायां सूर्यलक्षणम् ॥ १ ॥

सूर्य की होरा में जन्म लेने वाला मनुष्य धर्मिष्ठ, सत्यवक्ता; गुरु वर्ग और देवताओं का पूजन करने वाला; और अपने उपार्जित धनका भोगने वाला होताहै।

गन्धर्वसिद्धिं राज्यं च लक्ष्मीभोगी सदा सुखी ।
पुत्रपौत्रं च कल्याणं शतवर्षाणि जीवति ॥ २ ॥

गन्धर्व से सिद्धि एवं राज्य प्राप्त होवे लक्ष्मी का भोगने वाला; सदा सुखी पुत्रपौत्र कल्याण युक्त और पूर्ण शतवर्ष की आयुः वाला होता है ॥ २ ॥

क्रूराः सूर्यस्य होरायां धनधान्यविभूतिदाः ।
आचारसत्यशीलाढ्यो रोगाङ्गो नृपवल्लभः ॥ ३ ॥

जो सूर्य की होरा में क्रूर ग्रह होते हैं तो वे उस मनुष्य को धनधान्य और विभूति के देने वाले होते हैं, और वह मनुष्य आचार सत्यशील से युक्त रहे और रोगयुक्त शरीरवाला और राजप्रिय होता है ॥ ३ ॥

शुभा यदीन्दुहोरायाम् कामिनीस्नेहवान्नरः ।

शीघ्रं मैथुनगामी च चिरं सेवेत कामिनीम् ॥ ४ ॥

यदि चन्द्रमा की होरामें शुभ ग्रह स्थित हों तो वह मनुष्य स्त्रियोंसे स्नेह करने वाला होता है । और वह शीघ्र २ मैथुन करने की इच्छा रखने वाला, बहुत काल तक कामिनियों को प्रसन्न करने वाला होता है ॥ ४ ॥

होरायां सूर्यस्य कठिनप्रायश्च संभोगः ।
पापैःसर्वैर्बलवान् जितेंद्रियो मानवो भवति ॥ ५ ॥

और जो सूर्य की होरा में क्रूर ग्रह हों तो उस मनुष्य को स्त्री संभोग बड़ी मुश्किल से प्राप्त होता है और बडा बली, तथा जितेन्द्रिय होता है ॥ ५ ॥

होरायां कर्कटे चंद्रे मृत्युसुंदरमुत्तमम् ।
कामिनीनां प्रियं चैव जनयेत्पुत्रमीदृशम् ॥ ६ ॥

यदि कर्क राशि चन्द्रमा की होरा में जन्म होवे तो मृत्यु लोकमें अति सुन्दर, और कामिनियों के प्यारे पुत्रको उत्पन्न करता है ॥ ६ ॥

बुधःकरोति विख्यातं साध्वीपत्नी पतिं शुभम् ।
जीवःकरोति विधनं तेजास्विनमनिंदितम् ॥ ७ ॥

और जो चन्द्रमा की होरा में बुध हो तो वह मनुष्य सर्वत्र विख्यात, पतिव्रता स्त्री का पति होता है, शुभाचार संपन्न और अगर गुरु, चंद्र होरा में हो तो उस मनुष्य को धन रहित किन्तु अत्यंत तेजस्वी और अनिंदनीय करता है ॥ ७ ॥

भोग्यपत्नी पतिं शुक्रःक्षीणचंद्रोऽपि शुक्रवत् ।
जनयेत् कर्कटे भौमे मृतस्त्रीकं नराधमम् ॥ ८ ॥

और उक्त होरा में यदि शुक्र होवे तब भोगने योग्य पत्नी का पति पुरुषको करता है, और क्षीण चन्द्रमा यदि उक्त होरा में होवे तब भी शुक्र के समान फल करता है; और जो मंगल कर्क राशि चंद्रमा की होरा में होवे तब उस मनुष्यको मृत स्त्री वाला करता है और वह मनुष्य नराधम होता है ॥ ८ ॥

रविर्दुःखितमत्यंतं पीडितं गुह्यपीडितम् ।
शनिर्दासीपतिं कुर्यात्कर्कटस्थो न संशयः ॥ ९ ॥

और जो सूर्य कर्क की होरा में हो तो उस मनुष्य को अत्यन्त दुःखी, और गुह्य स्थान की पीडा से पीडित करता है, और उक्त होरा में शनि होवे तब उस मनुष्यको दासीपति (अर्थात् लालच से औरों को छोड़कर दासी से विवाह करने वाला) करता है इसमें कोई संशय नहीं ॥ ११ ॥

स्वहोरायां रविःकुर्याद्विद्वांसं दृष्टपौरुषम् ।
जितेंद्रियं च शूरं तमुद्यमे धृतमानसम् ॥ १२ ॥

और जो सूर्य अपनी होरा में होवे तो मनुष्य को विद्वान्, और सर्वत्र पुरुषार्थ दिखाने वाला, जितेंद्रिय, शूरवीर और उद्यम में मन रखने वाला करता है ॥१२॥

होरायां च यदा प्राप्ते धीरं सूतं सतां प्रियम् ।
शूरं ख्यातं धनाढ्यं च सन्मित्रं प्राप्तसंपदम् ॥ १३ ॥

और जो सूर्य की होरा में मंगल होवे तो वह मनुष्य बडा धीर, तथा सवारी (रथादि) का चलाने वाला सारथी होवे, सज्जनों को प्रिय, बडा शूरवीर, सर्वत्र विख्यात; धन संपन्न, उत्तम मित्रों से युक्त, और अनेक संपत्तियों से युक्त होता है॥

कंठीरवस्य होरायां चंद्रे नीचमनारतम् ।
बुधे दारिद्र्यपिशुनं जीवे रोगमृतंतकम् ।
शुक्रेऽगम्यामतिं कुर्याद् वृषली चार्यमाश्रितः ॥ १४ ॥

और यदि सूर्य की होरा में चंद्रमा होवे तब वह मनुष्य हमेशा नीच बुद्धि रखने वाला होता है, और यदि बुध होवे तो दरिद्री, और चुगलखोर होता है और गुरु होवे तो रोगके कारण अनवसर मृत्यु पाने वाला होता है और शुक्र होवे तो तब अगम्या स्त्रियोंके साथ रमण करने वाला यदि शनि होवे (अर्यम्णोऽपत्य-मार्यमस्तेनाश्रितः) तो वृषलीपतिहोता है ॥ १४ ॥

अथ द्रेष्काणफलम् ।

यादृग्द्रेष्काणगाःसौम्या उच्चस्था वा स्ववर्गगाः ।
नित्यं भुजंयते लक्ष्मीर्वरदा सत्यवादिनी ॥ १ ॥

जिसके द्रेष्काण में, उच्चके, अथवा अपने वर्गके, सौम्य, ग्रह जैसे बैठे हों वैसे ही वे ग्रह उस मनुष्यको वरकी देनेवाली; सत्यवादिनी लक्ष्मीको भुगवाते हैं ॥

द्रेष्काणमात्मप्रकरोति सौम्यः केंद्रत्रिकोणे सुगते बलिष्ठः ।
द्रव्याधिकं मानगुणैःसमेतं विद्यान्वितं सर्वकलासु दक्षम् ॥२॥

यदि कोई सौम्य ग्रह अपने द्रेष्काण में बैठा हुआ केन्द्र या त्रिकोण में बली होकर पड जाय तो वह मनुष्य बहुत द्रव्य का संचय करने वाला, और मान तथा गुण से युक्त, विद्यावान्; तथा सब कलाओं में चतुर होता है ॥ २ ॥

द्रेष्काणपे सौम्यगते निरीक्षिते शुक्रेक्षिते स्याद्विविधं च सौख्यम्।
आरोग्यतां मानयशोऽभिवृद्धिं स्वदेशकर्मप्रकटं विरुद्धम्॥३॥

और किसी द्रेष्काणका स्वामी शुभ ग्रहकी राशिका होकर बैठाहो या शुभ ग्रहसे दृष्ट हो या उसे शुक्र देखता हो तब उस मनुष्यको अनेक प्रकार सौख्य, आरोग्य, मान, यशकी वृद्धि होवे, और अपने देशके हितके लिये किये हुए कार्योंसे संसारमें बडा विख्यात किन्तु दूसरी संस्थाओं के खिलाफ रहे ॥ ३ ॥

द्रेष्काणनाथे शशिसंयुतेक्षिते वा भौमेक्षिते स्याद् भृगुनंदने वा।
वयःप्रमाणेन फलेच्च कर्म धर्मे धनं स्याद्विविधप्रकारम् ॥ ४ ॥

और यदि द्रेष्काणाधिपति चन्द्रमा से युक्त या दृष्ट हो अथवा मंगल से देखा जाता हो या शुक्र से दृष्ट या युत हो तो उस मनुष्य का आयु के प्रमाणानुसार कर्म फलता है और धर्म के निमित्त अनेक प्रकार से धन होता है ॥ ४ ॥

द्रेष्काणः केंद्रगःकुर्यादुच्चस्थो भूपतिं गृहे ।
स्वक्षेत्रस्य स्वभूतार्थं मैत्रे सन्मानमागमम् ॥ १५ ॥

और जो द्रेष्काणेश अपने उच्च में रहते हुए केंद्र में होवे तब मनुष्य को राजा करता है, अपने क्षेत्र का हो तो पूर्ण धन युक्त करता है, और मित्र के घर में हो तो सन्मान पाने वाला करता है ॥ ५ ॥

तथा पणफरस्थाने स्वमित्रोच्चगृहाश्रयः ।
सन्मित्रं पार्थिवं तद्वद्धनिनं चक्रतानरम् ॥ ६ ॥

और जो द्रेष्काण का स्वामी ग्रह पणफर २।५।८।११ में या अपने मित्र क्षेत्री या उच्चका होकर बैठा हो तब मनुष्य को सन्मित्र युक्त, राजा या राज सदृश धनवान् करता है ॥ ६ ॥

आपोक्लिमे च व्युत्पन्नो मित्रस्वगृहदा च भूः ।
अपत्यं हि सदाचारं कृषितःप्राप्तवित्तकम् ॥ ७ ॥

और जो द्रेष्काण का स्वामी ग्रह आपोक्लिम ३।६।६।१२ में स्थित हो या मित्र के घर में अथवा स्वक्षेत्र में हो तब वह मनुष्य व्युत्पन्न (सुबोध) होवे और उस की संतति सदाचार युक्त होवे, और खेती से धन संपादन करने वाला होता है ॥७॥

शत्रुनीचाश्रिता ये च तेषां तत्तुल्यके तनौ ।
व्रणे घातादिकं चापि वदेत्तदनुपूर्वकम् ॥ ८ ॥

और जो शत्रु के या नीच घर में जितने ग्रह स्थित हों और उन्हीं के तुल्य जन्म लग्न में भी हों तो उन्हीं के अनुसार देह में व्रण या घात का योग होता है

इति द्रेष्काणफलम् ।

अथ सप्तमांशफलम्—

सप्तांशपे चंद्रयुते च दृष्टे सौम्येक्षिते स्यात्स्वसहोदरःस्यात् ।
अत्युग्रताकान्तियशोऽभिवृद्धिर्मित्राधिको मैत्रयुतःप्रगल्भः॥ १॥

जिस के सप्तमांश का स्वामी चन्द्रमा से युक्त या दृष्ट हो अथवा सौम्य ग्रह से दृष्ट हो तब वह मनुष्य सहोदर (मा जाये) भाइयों से युक्त, अत्यन्त उग्रता,

—एतत्संज्ञामाह वराहमिहिरः—

" केन्द्रचतुष्टयकण्टकलग्नाऽस्तदशमचतुर्थानाम् ।
संज्ञा परतः पणफरमापोक्लिमञ्च :तत्परतः ॥ १ ॥ "

" लग्नचतुर्थसप्तमदशमानां चतुर्णां स्थानानां प्रत्येकस्य संज्ञात्रयं केन्द्रचतुष्टय-कण्टकमिति । तस्मात्सर्वस्मात्केन्द्रात्परस्य पणफर मित्याख्या । सर्वस्मात्पणफरात्पर-स्यापोक्लिमसंज्ञा" इति भट्टोत्पलः । अर्थात् १-४-७-१०-केन्द्रसंज्ञकानि, ततः परं २-५-८-११ एतेषां स्थानानां पणफरसंज्ञा, ततः परम् ३-६-९-१२-एषां स्थानानामापोक्लिमसंज्ञा भवतीति भावः ।

कान्ति और यश की वृद्धि से युक्त, उत्तम मित्रों से युक्त और अत्यन्त प्रगल्भ (उद्धत) होता है ॥ १ ॥

सप्तांशके च ये खेटा नीचस्था रविवर्जिताः ।
तेषां बलवतो ज्ञेया बंधूनां चिंतया स्थितिः ॥ २॥

और जिसके सप्तमांश में सूर्य रहित जितने ग्रह नीच स्थान में बैठे हों तो उन में सब से जो बली हो उसी के अनुसार उस मनुष्य की भाइयों के निमित्त से चिन्ता युक्त स्थिति होती है ॥ २ ॥

वर्गेऽतिमांशे ये खेटा उच्चस्था वा स्ववर्गगाः ।
अश्वादिवाहने दक्षःशूरो बंधुविवर्जितः ॥ ३ ॥

और जिस मनुष्य के वर्ग के अन्तिम नवांश में जो ग्रह हों और वे अपने उच्च के या स्ववर्ग के हों वह मनुष्य अश्वादिवाहनों में कुशल शूरवीर और बन्धु विवर्जित होता है ॥ ३ ॥

नृपपूज्यो भवेन्नित्यं सर्वकार्यार्थसंपदा ।
सप्तवर्गग्रहाश्चैव स्तुच्चस्थाःशुभवर्गगाः ॥ ४ ॥

जिसके सप्तवर्ग ग्रह उच्चस्थ हों या शुभ वर्ग में हों तो वह मनुष्य राजा से पूजा पाने वाला और सर्व कार्यों में सफलता पावे और धन से खूब संपन्न होताहै।

नित्यं भुंजयते लक्ष्मीवरदा सत्यवादिनी ।
सप्तांशे भ्रातृभवने रविर्जीवश्च भूमिजः ।
पश्चाज्जाता पितुःपुत्रं शुक्रचंद्रज्ञकन्यकाः ॥ ५ ॥

और जिसके सप्तांश में रवि, गुरु या भौम भ्रातृ भवन ३ (सहज) में हों वह मनुष्य वर देने वाली, सत्य वादिनी; लक्ष्मी का सदा भोगने वाला होता है तथा पिता की मृत्यु के पीछे उसके पुत्र जन्म हो और शुक्र, बुध, चन्द्रमा उक्त लक्षण हों तब उसके कन्या का जन्म होता है ॥ ५ ॥

उच्चस्थक्षेत्रगाःखेटाःसप्तांशे निखिलाः स्थिताः ।
महाधनी च भवति नीचस्थे च दरिद्रकः ॥ ६ ॥

और जिस मनुष्य की जन्म कुण्डली में स्वसप्तांश में सभी ग्रह उच्च राशिस्थित हों तो वह महाधनी होता है और नीच क्षेत्र में स्थित होने से दरिद्री होता है ॥६॥

अथ नवांश फलम्—

गुरोर्नवांशे विचरञ्छशांके नरं प्रसूते बहुवित्तयुक्तम् ।
पुत्रान्वितं पुण्यधनैरुपेतं प्रियातिथिं सर्वजनाभिरामम् ॥ १ ॥

जिस जातक के जन्म समय में बृहस्पति के नवांश में चन्द्रमा होता है तब वह मनुष्य अनेक धन संपन्न, पुत्रों से युक्त, पुण्य धन से युक्त, अतिथि प्रिय, सब को आनन्द देने वाला होता है ॥ १ ॥

सन्मित्रदाराधनमित्रसौख्यं श्रेष्ठप्रतिष्ठाप्तिविराजमानम् ।
नरं प्रकुर्यात्सुरराजमंत्री नवांशके स्वेसुखसंपदाःस्युः ॥ २ ॥

अगर बृहस्पति अपने हीं नवांश में जिसके आ पडे तब वह मनुष्य उत्तम मित्र स्त्री धन से सुखी, श्रेष्ठ प्रतिष्ठा की प्राप्ति से विराजमान और सुख संपत्तिओं से खूब भरा पूरा होता है ॥ २ ॥

नीचस्त्रीकञ्च नीचस्थे भावेशो तुंग उच्चगः ।
कुर्याद्राजा नवांशे तु स्वनवांशे तदाधिपम् ॥ ३ ॥

जो भावेश ग्रह नीच घर में होवे तब नीचस्त्री वाला करता है, और भावेश ग्रह उच्चका होवे तब उस पुरुष को राजा, और अपने नवांश में हो तो कुछ समूहका स्वामी करता है ॥ ३ ॥

सेनानीर्मित्रनवांशे भोगगुणसंयुतश्च ।
शत्रुनवांशे दुःखितमत्यंतमलीमसम् ॥ ४ ॥

जो मित्र के नवांशमें होवे तब सेनापति तथा भोग और गुणोंसे संपन्न करता है और शत्रु के नवांश में होवे तब दुःखित और अत्यन्त मलिन करताहै ॥ ४ ॥

नीचांशे तु भवेद्दास्यं दशां प्राप्ये फलंलभेत् ।
सर्वमेव खगै श्चित्यं फलं वाच्यं विचक्षणैः ॥ ५ ॥

और अगर बृहस्पति नीच के नवांश में वर्तमान हो तो वह मनुष्य सेवा वृत्ति से अपनी आजीविका चलाने वाला होवे, तथा अच्छी दशा को प्राप्त होकर

अच्छा फल होता है इसी प्रकार सब गृहों का फल विद्वान् मनुष्यों को विचार कर कहना चाहिये ॥ ५ ॥ इति नवांशफलम् ।

अथ नवांशकुण्डल्यां पंचमस्थितग्रहफलम्—

एकत्रिपंचपुत्रास्स्युर्धी¹ स्थेतुर्ये कुजे गुरौ ।
द्विचतुःषट्सप्तसंख्यपुत्रदा ज्ञसितौ शनिः ॥ १ ॥

जो नवांश कुंडली में पंचम घर में मंगल, और चतुर्थ घर में गुरु होवे तो उसके एक या तीन या पांच पुत्र होते हैं, और जो नवांश कुंडली में बुध, शुक्र, शनि होवें तो दो, चार, छः या सात पुत्र होते हैं ॥ १ ॥

दुश्चिक्य²सिंहं सुतजीवकेतू षष्ठे शनिः सूर्यकलत्रसंस्थः ।
गर्भे च राहुर्दशमे च भौमे संतानहानिस्तु भवेन्नराणाम् ॥२॥

और जो किसी की नवांश कुंडली में लग्न से तीसरे घर में सिंह राशि हो और पंचम स्थान में गुरु, केतु होवें और लग्न से छठे घर में शनि और सप्तम घर में सूर्य होवे; केन्द्र में राहु, और दशम घर में मंगल होवे तो इन योगोंमें मनुष्य संतान हीन होता है ॥ २ ॥

ग्रहः क्रूरो व्ययाधीशो धर्मारिसहजे व्यये ।
³मृतौ शिखी सुतस्थाने जातं⁴को म्रियते ध्रुवम् ॥ ३ ॥

और जिसकी नवांश कुंडली में व्ययेश ग्रह क्रूर हो और वह नवम, छठे अथवा तृतीय, व्यय घर में हो और अष्टम या पंचममें केतु हो तो उस मनुष्यके पुत्रहो होकर मर जाते हैं ॥ ३ ॥

१—धीर्नाम पञ्चमं स्थानम् तदुक्तं वराहमिहिरेण—
" धीः पञ्चमं तृतीयं दुश्चिक्यं सप्तमं तु यामित्रम् ।
द्यूनं द्युनञ्च तच्छिद्रं मष्टमं द्वादशं रिष्फम् " ॥

२—दुश्चिक्यं नाम तृतीयस्थानमित्युपर्य्येवोदङ्कितम् ।

३—इह " दग्धे चक्री सुतस्थाने " इति पूर्वोल्लिखितः पाठः अस्माभिस्तु " मृतौ शिखी सुतस्थाने " इति परिवर्त्य रचितः ग्रहनामोक्त्यवसरे " शिखी केतुरिति " बृहज्जातकप्रामाण्याच्छिखिशब्दस्य केत्वर्थकत्वे नाऽत्र कापि वाधा वोधपथे संमायाति वालानाम् सुगमार्थकत्वात्, पूर्वपाठेत्वप्रयुक्तत्वरूपदोषाशङ्कापत्तेश्चेति दिक् ।

४—जातापत्यमृतिर्ध्रुवम् ' इति पाठः साधुः प्रतिभाति

यावत्संख्या ग्रहाणां सुतभवनगता पूर्णदृष्टियदावा
यावत्संख्या प्रसूतिर्भवति बलयुताः पुंग्रहाः पुत्रकथ्यम् ।
कन्या चंद्रस्य शुक्रे हिमसुतरविजो गर्भहानिं करोति
केचिच्चंद्राद्विचार्यं मुनिगणकथितं तद्विचिन्त्यं नवांशे ॥ ४॥

जितनी गिनती के पुंग्रह बली होकर नवांश कुंडली में लग्न से पंचम स्थित हों या पंचम गृह को देखते हों तो उतनी ही गिनती के पुत्र होते हैं और चन्द्र, शुक्र तथा बुध से युक्त अथवा दृष्ट पंचम घरके होने से कन्या होती हैं, और पूर्ण बली शनि से युक्त या दृष्ट पंचम भवन के होने से गर्भपात होता है। किन्हीं आचार्यों का मत है कि ये उक्त बात केवल चन्द्रमा के नवांश से ही विचार करनी चाहियें ॥ ४ ॥ इति नवांशचक्रकुंडली फलम् ।

अथ द्वादशांशफलम्—

ग्रहाःस्युर्द्वादशे भागे मित्रोच्चसमवस्थिताः ।
बहुस्त्रीष्वाधिकारी स्यान्नानाऋद्धिसमन्वितः ॥ १ ॥

जो ग्रह मित्र के या उच्च के होकर द्वादशांश में स्थित हो तो जातक अनेक स्त्रियों का अधिकारी तथा अनेक ऋद्धि सिद्धियों से युक्त होता है ॥ १ ॥

राशिद्वादशांशेचक्रफलम्—

अशीतिचतुराशीतिषडतीत्यथ सप्तकम् ।
अष्टौ पंच षष्टिषट्पंचाशच्चैव सप्ततिः ॥ १ ॥
नवत्यंगाधिकाषष्टिषट्पंचाशच्छतं तथा ।
उक्तमायुःप्रमाणेन द्विरसांशैकभेदतः ॥ २ ॥

१—ऋतिपरेऽकां समासासमासयो वैकल्पिकह्रस्वसमुच्चितप्रकृति भावविधायकेन " ऋत्यकः " इत्यनुशासनेन प्रकृतिभावविधानात् नान ऋद्धि समन्वित इति रूपेण भाव्यम् तदभावे गुण विधानात् " नानर्द्धिसमन्वितः " इति सुसंस्कृतेन भाव्यम् न तु नाना ऋद्धि० इति, अतोऽत्र " अनेकर्द्धि समन्वित " इतिपाठकरणान्नात्र पूर्वोक्तच्युतसंस्कृतित्वरूपदोष शङ्कालेशाऽवरोऽपीति ।

मेषादि बारह राशियों के द्वादशांश के होने से निम्न प्रकारसे आयु का प्रमाण कहा है जैसे क्रम से अस्सी, चौरासी; छयासी, सत्तासी, पिच्यासी, साठ, छप्पन, सत्तर, नब्बे, छयासठ, छप्पन और पूर्ण सौ वर्ष प्रमाण की आयु को पुरुष पाता है इसके बाद मृत्यु को पाता है ॥ १ ॥ २ ॥

जलेनाष्टादशे वर्षे सर्पेण नवमे पुनः ।
ज्वरेण दशमे चैवं द्वात्रिंशे राजयक्ष्मणा ॥ ३ ॥

और पूर्वोक्त आयु के बीच में भी मृत्यु भय होता है जैसे प्रथम द्वादशांशवाला जातक अठारहवें वर्ष में जल से, तथा इसी प्रकार क्रम से द्वितीय द्वादशांश वाला नवे वर्ष में सर्प से, दशम वर्ष में घोर ज्वर से; बत्तीसवें वर्ष में राजयक्ष्मा से ॥३॥

विंशे रक्तप्रमाणेन द्वाविंशे वन्हिना तथा ।
अष्टाविंशतमे वर्षे जलोदरभयं तथा ॥ ४ ॥

बीसवें बर्ष में रक्त विकार से, बाईसवें वर्ष में अग्नि से, अट्ठाईसवें वर्ष में जलोदर भय से ॥ ४ ॥

व्यघ्रात्रिंशत्तमे वर्षे शरघातेन दन्तके ।
जलेन बातपीडाभिर्मरणं त्रिंशदऽद्के ॥ ५ ॥

तींसवें वर्ष में व्याघ्र से, बत्तीसवें वर्ष में शर (बाण) के आघात से, तीस वर्ष में जल में डूबने से, तथा वायु के विकार से ॥ ५ ॥

स्त्रीकन्या मरणं विद्यात्रिंशद्वर्षेऽप्सु मज्जनात् ।
चक्रेण मरणं प्राहुरूनत्रिंशे ततो नरः ॥
पूर्वोक्तमायुःप्राप्नोति सत्यमेतन्मयोदितम् ॥ ६ ॥

और इसी प्रकार इकतीसमें वर्ष में भार्या तथा कन्या की मृत्यु के कारण तथा जल के भय से बहुतसे दुःखों का सामना करना पड़े, और उन्तीस वर्ष में चक्र (गाड़ी के पहिया) से दबने का अधिक डर होवे यदि इन सब अल्प मृत्युओं से बचजावे तो वह पूर्ण आयु तक जीता रहता है ये मैंने सब सत्य कहा है ॥ ६ ॥

इति द्वादशांशफलम् ।

अथ द्वादशांशचक्रम् ।

द्वादशांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
आयुः प्रमाण	८०	८४	८६	८७	८५	६०	५६	७०	९०	६६	५६	१००
भय निमित्त	जलात्	सर्पतः	शत्रुतः	क्षुधात्	रक्तविकारतः	अग्नितः	जलोदरतः	व्याघ्रात्	शरात्	जलाद्घातात्	जलतः	चक्रत
भय वर्ष	१८	९	१०	३२	२०	२२	२८	३०	३२	३०	३०	२९

अथ त्रिशांशफलम्—

त्रिंशांशके च ये खेटा मित्रोच्चसमवस्थिताः ॥
सर्वकार्यकृतोत्साही धर्मिष्ठःकृतपूजितः ॥ १ ॥

जिस मनुष्य की त्रिशांश कुंडलीमें मित्रगेही या उच्चके ग्रहहो तेहैं तब वह मनुष्य सबकार्य करनेमें उत्साह रखने वाला,धर्मात्मा तथा सज्जनोंसे पूजा पानेवाला होता है

सत्वंरजस्तमो वा त्रिंशांशे यस्य भास्करस्तादृक् ।
बलिनःसदृशी मूर्तिर्बुद्धा वा जातिकुलदेशान् ॥२ ॥ व० मि

जिस मनुष्य के त्रिशांश में सत्वगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी इन ग्रहों में से जो ग्रह अधिकली प्रकाशवान् होवे उसी ग्रह के समान फला देश करना चाहिये, लेकिन साथ में ही जाति कुल देशों का भी विचार करके स्वरूप, गौर, श्याम, वर्ण आदि को कहे ॥ २ ॥

गुरुरविशशिनःसत्वं रजस्सितज्ञौ तमोऽर्कसुतभौमौ ।
एते त्वात्मसमानाः प्रकृती स्तेभ्यःप्रयच्छंति ॥३॥ व० मि०

गुरु; सूर्य और चन्द्रमा तीनों ग्रह सत्वगुण प्रकृति, शुक्र और बुध रजोगुण

प्रकृति, और शनि मंगल तमोगुण प्रकृति ग्रह होते हैं ये सब ग्रह अपनी अपनी प्रकृति तुल्य अपने त्रिंशांशादि चक्र में स्थित फल देते हैं ॥ ३ ॥

बृहज्जातकेऽप्युक्तम् यथा—

यःसात्विकस्तस्य दयास्थिरत्वं सत्यार्जवंब्राह्मणदेवभक्तिः ।
रजोधिकःकाव्यकरःकुलस्त्रीसमप्रावित्तःपुरुषोऽतिशूरः ॥ १ ॥

यही बात बृहज्जातक में लिखी है कि जिसकी जन्म कुंडली में सात्विक ग्रह बली होकर बैठा है वह जातक दयालु, स्थिरता युक्त, सत्यवक्ता, बड़ा विनीत देव ब्राह्मणों का भक्त होता है अगर रजोगुण प्रकृति वाला ग्रह होवे तो वह मनुष्य काव्य करने वाला, कुल स्त्री में पूर्णतया मन रखने वाला, बड़ा शूरवीर होताहै।१॥

तमोऽधिके वंचयते परेषां मूर्खोऽलसःक्रोधपरोऽतिनिद्रः ।
मिश्रैर्गुणैःसत्वरजस्तमोभिर्मिश्रोच्यते सातुसहस्रभेदा ॥ २ ॥

और यदि जिसके जन्मांग में तमोगुण प्रकृति वाला ग्रह बली होकर बैठता है वह जातक दूसरे मनुष्यों को ठगने वाला, मूर्ख, आलसी, क्रोधी, और अत्यन्त निद्रालु होता है और इन सत्वादिप्रकृतिक ग्रहोंके साम्यसे गुणोंके मिलनेसे फलों के भी सहस्रशः भेद होजाते हैं ॥ २ ॥ इति त्रिंशांशफलम् ।

॥ इति श्री मानसागरी पद्धतौ तृतीयोऽध्यायः ॥

इति तेजाढाना (मथुरा) स्थ पं० चिरंजीलालतनूज
श्रीद्वारकेशसंस्कृतपाठशालाध्यापकमिश्र-
परमानन्दशास्त्रित्रिगुणायकविरचितायाम्
"शङ्करमन्दाकिन्याख्यायाम्"
मानसागरीपद्धतिहिंदीभाषाटीकायां
तृतीयोऽध्यायः समाप्तः

अथ चतुर्थोऽध्यायः ।

अथ पंचमहापुरुषलक्षणानि ।

ये महापुरुषसंज्ञकाः शुभाः पंच पूर्वमुनिभिः प्रकीर्तिता ।
वच्मि तान्सरलैर्निर्मलोक्तिभी राजयोगविधिदर्शनेच्छया ॥१॥

पूर्वाचार्यों ने जो पांच महापुरुष संज्ञक शुभ लक्षण कहे हैं उन्हीं राजयोगों की विधि दिखलाने की इच्छासे अब हम उनको सरल तथा निर्मल रीतिसे कहतेहैं ।१।

रुचकादिपंचयोगाः ।

स्वगेह तुंगाश्रयकेन्द्र संस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः ।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः १

अगर जिसकी जन्म कुण्डली में भौम आदि पांच ग्रह क्रम से स्वगेही उच्चाभिलाषी केन्द्रगत हों अथवा उच्चके हों तब रुचक, भद्र, हंस, मालव्य और शशनामक, क्रमसे पांच योग होते हैं जैसे मंगल स्वगृही (मेष वृश्चिक) उच्च (मकर) का होता हुआ केन्द्र में आपडे तो रुचक योग १, और अगर बुध कन्या मिथुन का केन्द्र में हो तो भद्र २, एवं बृहस्पति धनु मीन उच्च (कर्क) में हो कर केन्द्र में स्थित होजाय तो हंस ३, तथा शुक्र वृष तुला और मीन में रहता हुआ केन्द्र स्थित देखा जाय तो मालव्य ४, और इसी प्रकार शनैश्चर मकर कुम्भ एवं तुलामें रहता हुआ केन्द्रगत होजाय तो शशक नामक योग ५ होता है इस तरह यह पांचों योग देखने चाहिये यह पांचों योग बडे उत्तम तथा श्रेयस्कर होते हैं ॥ २ ॥

तत्रादौ रुचकयोगफलम् ।

दीर्घायुः स्वच्छकान्तिर्बहुरुधिरबलः साहसी चाप्तसिद्धि
श्चारुभ्रूर्नीलकेशःसमकरचरणो मंत्रविच्चारुकीर्तिः ।

रक्तःश्यामोऽतिशूरोरिपुबलमथनःकंबुकंठो महौजाः
क्रूरो भक्तो नराणां द्विजगुरुविनतः क्षामजानूरुजंघः ॥३॥

जिस जातक की कुण्डली में रुचक योग होताहै वह मनुष्य दीर्घ आयु वाला, स्वच्छ जिसकी कांति, रुधिर और बलसे परिपूर्ण, साहस कर्म करने वाला, प्रत्येक कार्य में सिद्धि प्राप्त करने वाला, उत्तम भ्रुकुटि वाला, नील जिसके केश, सम (स्वरूपानुरूप) हाथ पावों से युक्त, मन्त्रज्ञ, पवित्र जिसकी कीर्ति, अरुणता युक्त, श्याम वर्ण वाला, बडा शूरवीर, शत्रु बलका नाशक, शंख समान कंठ वाला, बडा पराक्रमी, बडा क्रूर, मनुष्यों से स्नेह रखने वाला, ब्राह्मणों तथा गुरुजनों के सामने बडे विनय से पेश आने वाला, घोंटू; पींडली और जंघाओं से दुवला होता है ॥ ३ ॥

खट्वाङ्गपाशवृषकार्मुकचक्रवीणा-
विद्मांकहस्त चरणः सरलाङ्गुलिः स्यात् ।
मन्त्राभिचारकुशलस्तुल्येत्सहस्रं-
मध्यं च तस्य गदितं मुखदैर्घ्यतुल्यम् ॥ ४ ॥

और जिसके हाथ पैरमें खट्वांग पाश, वृषधनुष, शर, चक्र वीणा, विद्या, इनके चिन्ह (रेखा) होते हैं. सीधी उंगली वाला, सलाह देने में कुशल, अकेला ही हजारों के तुल्य, और मध्यम (कटिहा) उसका मुखकी लम्बाई जैसा हो ॥ ४ ॥

सह्यस्य विन्ध्यस्य तथोज्जयिन्याः प्रभुःशरत्सप्ततिरायुरस्मात् ।
शस्त्राग्निचिन्हो रुचकाभिधाने देवालयान्ते निधनं करोति ॥५॥

सह्य; विंध्य पर्वत, उज्जयनी देशों का राजा; आयु ७० वर्ष के करीब हो, शस्त्र और अग्नि से चिन्हित होताहै और इस योगके होनेसे वह पुरुष देव मन्दिरके समीप देह त्याग करने वाला होता है ॥ ५ ॥ इति रुचक योग फलम् ॥

अथ भद्रयोगफलम् ।

शार्दूलप्रतिमाननोद्विपगतिः पीनोरुवक्षःस्थलो
रम्या पीनसुवृत्तबाहु युगलस्तत्तुल्यदेहोच्छ्रयः ।
कामी कोमलसूक्ष्मरोमनिचयैः संरुद्धगंडस्थलः
प्राज्ञःपंकजगर्भपाणि चरणःसत्वाधिको योगवित् ॥ १ ॥

और जिसके भद्रनामक योग होता है वह मनुष्य सिंह समान चहरे वाला; मत्त हाथी की सी चाल चलने वाला, पुष्ट, उन्नत वक्ष स्थल वाला, सुन्दर मोटी सुडोल भुजों वाला भुजानुसार ऊँचा, बडा कामी, कोमल (नरम), सूक्ष्म (पतले) रोमों से युक्त कपोल वाला, विद्वान् कमल मध्यवत् कोमल हाथ पैर वाला, सत्वाधिक्ययुक्त, योग मार्ग का जानने वाला ॥ १ ॥

शंखासिकुंजरगदाकुसुमेषुकेतुचक्राब्जलांगलसुचिन्हितपाणिपादः।
यात्रागजेन्द्रमदवारिकृताद्रभूमिःसत्कुंकुमप्रतिमगन्धतनुःसुघोषः२

जिसके हाथ पैरों में शंख, खड्ग, हस्ती; गदा, पुष्प; वाण, ध्वजा, चक्र, कमल हल आदि के चिन्ह, मत्त हाथियों के मद जलसे यात्रा समय में भूमिको गीली करने वाला, उत्तम केशरके समान गंध युक्त अंग वाला; मनोहर शब्द युक्त।

संभ्रूयुगोऽतिमतिमान्खलु शास्त्रवेत्ता-
मानोपभोगसहितोऽपि निगूढगुह्यः।
सत्कुक्षिधर्मनिरतः सुललाटपट्टो-
धीरोभवेदसितकुंचितकेशपाशः ॥ ३ ॥

उत्तम भ्रू युगल युक्त अति बुद्धिमान्; शास्त्र का जानने वाला, मान और भोग से युक्त, जिसके रहस्य कार्य छिपे हुए हों, उत्तम जिसका पेट, धर्म मार्गमें निरत, उत्तम ललाटपट्ट युक्त, बडा धीर, काले घुंघराले केश वाला ॥ ३ ॥

स्वतन्त्रः सर्वकार्येषु स्वजनम् प्रति न क्षमी।
भुज्यते विभवस्तस्य नित्यमर्थिजनैःपरैः ॥ ४ ॥

सब काम करने में स्वतंत्र; स्वजनों पर भी क्षमा न करने वाला, और उसके विभव को दूसरे ही अर्थिजन भोगते हैं ॥ ४ ॥

भारं तुलायां तुलयेत्प्रयत्नैःश्रीकान्यकुब्जाधिपतिर्भवेत्सः।
भद्रोद्भवःपुत्रकलत्रसौख्यो जीवेन्नृपालः शरदामशीतिम् ॥५॥

और प्रयत्न से तुला में सोने चांदी के भारको तोलने वाला अर्थात रुपया मोहरों की गिनने की तो कौन कहै वल्कि तराजू से भी तोलने में वडी मुश्किल से आवें, लाखों मन जिसके सोना चांदी यों ही पड़ा रहै, स्त्री पुत्रों के सुख से युक्त, और ८० वर्ष तक कान्यकुब्ज देशका राज्य भोगने वाला होता है ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ हंसयोगफलम् ।

रक्तास्योन्नतनासिकासुचरणो हंसप्रसंन्नेन्द्रियो-
गौरःपीनकपालरक्तकरजो हंसस्वनः श्लेष्मवान् ।
शंखाब्जांकुशमत्स्यदामयुगकैः खट्वाङ्गमालाघटै-
श्चञ्चत्पादकरस्थलो मधुनिभे नेत्रे सुवृत्तं शिरः ॥ १ ॥

जिसकी कुण्डली में हंसनामक योग होता है वह मनुष्य अरुण मुख वाला, उन्नत जिसकी नासिका, सुन्दर जिसके चरण, हंसाङ्कवत् सुन्दरांग, गौरांग, पुष्ट कपाल वाला, रक्त नख वाला, हंसका सा जिसका स्वन [शब्द], श्लेष्म प्रकृति वाला, शंख, कमल, अंकुश, मत्स्य, माला युग्म, खट्वांग, घट, इन चिन्होंसे युक्त हाथ पावों वाला, मधुरता युक्त नेत्रों वाला, वृत्त (गोल) शिर वाला ॥ १ ॥

जलाशयप्रीतिरतीव कामी न याति तृप्तिं वनितासु नूनम् ।
उच्चःषडष्टाङ्गुलमानयुक्तो देहस्तथास्यायुरिहास्ति षष्टिः ॥२॥

जलाशयों में प्रीति रखने वाला, अत्यन्त कामी, स्त्रियोंसे कभी भी नहीं तृप्ति पाने वाला, साठ अंगुल ऊंची देह वाला; षष्टि वर्षा वधि आयु वाला ॥ २ ॥

वाह्लीकदेशादरशूरसेनगंधर्वगंगायमुनान्तरालान् ।
भुक्त्वा वनान्ते निधनं प्रयाति हंसोऽयमुक्तो मुनिभिःप्रमाणैः ३

वाह्लीक देश,शूरसेन; गंधर्व, गंगा, यमुनाके बीचके देशोंपर्यंत भूमिको भोग कर वन प्रदेश में देह त्याग करने वाला होता है, प्राचीन ऋषि मुनियों ने यह हंसयोग का फल कहा है ॥ ३ ॥ इति हंसयोगः ॥

अथ मालव्ययोग फलम् ।

अस्थूलोष्ठोऽप्यविषमवपुर्नैव रक्ताङ्गसंधि-
र्मध्येक्षामः शशिधररुचिर्हस्तिनासः सुगंडः ।

सद्दीप्ताक्षःसमितिशितरहो जानुदेशाप्तपाणि-
र्मालव्योऽयं विलसति नृपः सप्ततिर्वत्सराणाम् ॥ १ ॥

जिसकी कुंडली में मालव्य योग हो वह मनुष्य पतले होठों वाला, समान अंग वाला, पतली कमर, वा रक्त [लाल] अंग संधि रहित, चन्द्र समान कान्ति, हस्ति समान लम्बी नासिका वाला, सुन्दर जिसके कपोल; उत्तम प्रकाश युक्त नेत्रों वाला; संग्राम में विख्यात पराक्रम; आजानु जिसके भुजः सत्तर ७० वर्ष पर्यंत राज्य करने वाला ।। १ ॥

वक्त्रंत्रयोदशमितांगुलमस्यदीर्घं तिर्यग्दशांगुलमितंश्रवणांतरालं
मालव्यसंज्ञनृपतिः ससुतो भुनक्ति लाटांश्च मालवससिंधु-
सुपारियात्रान् ॥ २ ॥

तेरह अंगुल लम्बा मुंह और दोनों कानों का अंतराल दश अंगुल चौड़ा और अपने श्रेष्ठ पुत्र के साथ लाट नामक देश मालव देश, सिंधु नाम देश परियात्र पर्वत पर्यंत राज्य का भोगने वाला होता है ॥ २ ॥ इति मालव्यः ॥

अथ शशकयोग फलम् ।

लघुर्द्विजाऽस्योऽद्रिगतः सकोपःशठोऽतिशूरो विजनप्रचारः ।
वनाद्रिदुर्गेषु नदीषु सक्तःप्रियातिथिर्नातिलघुःप्रसिद्धः ॥ १ ॥

जिसकी कुंडली में शशक नामक होता है वह मनुष्य छोटे दांत और मुख वाला, चिरकाल तक किसी पहाड पर घूमने वाला; क्रोधसे युक्त, बडा शठ, बडा शूरवार विजन (निर्जन) स्थानमें घूमने वाला, वन, पर्वत आदि दुर्गम स्थानों के तथा नदी तट पर रहने में प्रीति रखने वाला, अतिथि जनों में प्यार रखने वाला, सर्वत्र प्रसिद्ध न अत्यन्त लघु न अत्यन्त लम्बा ॥ १ ॥

नानासेनानिचयनिरतो दंतुरश्चापि किंचि-
द्धातोर्वादेभवति कुलशश्चञ्चलो लोलनेत्रः ।
स्त्रीसंसक्तःपरधनहरो मातृभक्तःसुजंघो-
मध्ये क्षामःसुललितमती रन्ध्रवेदी परेषाम् ॥ २ ॥

अनेक प्रकार की सेना का रखने वाला उन्नत दन्त वाला, धातुवाद में कुछ चतुर, चंचल चपल जिसके नेत्र स्त्रियों में आसक्ति रखने वाला, दूसरों का धन के हरने वाला, अपनी माता में भक्ति रखने वाला उत्तम जिसकी जंघा पतली जिसकी कमर, उत्तम जिसकी बुद्धि दूसरे के छिद्रों को देखने वाला ॥ २ ॥

पर्यङ्कशंखशरशस्त्रमृदंगमालावीणोपमःखलु करे चरणे च रेखाः ।
वर्षाणि सप्तति मितानि करोति राज्यं-
प्राप्तम् शशाख्यनृपतिः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ ३ ॥

हाथों में और पामों में पलंग, शंख, बाण, शस्त्र, मृदंग, माला, वीणा आदि रेखा हों और सत्तर वर्ष पर्यंत राज्य करने वाला होता है, इस योग में उत्पन्न मनुष्य शशक नामका राजा कहलाता है यह मुनीन्द्रों की कहन है ॥ ३ ॥ इति ॥

अथ पञ्चमहापुरुष भंगयोगः—

केंद्रोच्चगा यद्यपि भूसुताद्या मार्तण्डशीतांशुवशा भवंति ।
कुर्वंति नोर्वीपतिमात्मपाके यच्छंति ते केवलसत्फलानि ॥४॥

मंगल से आदि ५ ग्रह बेशक उच्चके होकर केंद्रमें बैठे हों परन्तु यदि सूर्य के या चन्द्रमा के वशगत (सहित) होजांयतो वे अपनी दशामें जातक को राजा नहीं कर सके सिर्फ अच्छा फल देते रहते हैं यह राजयोग भंगकारक योग है इस लिये सूर्य चन्द्रकी स्थिति देख कर रुचिकादि ५ राजयोगों का निश्चय करे ॥ ४ ॥इति॥

अथ सुनफादियोगोत्पत्तिर्लघुजातकात्—

रविवर्जं द्वादशगैरनफा चंद्राद्द्वितीयगैः सुनफा ।
उभयस्थितैर्दुरुधरा केमद्रुमसंज्ञको योऽन्यः ॥ १ ॥

अब सुनफादि योगों की उत्पत्ति बतलाते हैं कि जैसे किसी मनुष्य की जन्म कुण्डली में चन्द्रमा से सूर्य वर्जित कोई ग्रह दूसरे स्थान में होवे तो सुनफा योग होता है, तथा सूर्य को छोडकर चन्द्रमा से बारहवें स्थान पर कोई ग्रह पड जाय तो अनफा नामक योग होता है और अगर चन्द्रमा से दोनों (१२, २) स्थानों में ग्रह स्थित हों तो दुरुधरा, एवं चन्द्रमा से (१२–२) ये दोनों ही स्थान ग्रहों से

रहित हों तो केमद्रुम जानना, इस तरह १ अनफा, २ सुनफा,३ दुरुधरा,४ केमद्रुम, ये चारों योग चन्द्रमा की स्थिति से उत्पन्न होते हैं ॥ १ ॥

अथ सुनफायोग फलम् ।

भौमादीनां फलं यत्स्याज्ज्ञात्वा त्वविकलं बुधः ।
प्राज्ञाय प्रवदेत्सम्यक् सुनफादिकृतं फलम् ॥ १ ॥

मंगल आदि ग्रहों का जो फल रुचकादि योगों में कहाहै उसे अच्छी प्रकार जानकर विद्वान् मनुष्य को सुनफा अनफा आदि योगोंका फल कहना चाहिये॥१॥

विक्रमवित्तप्रायो निष्ठुरवचनश्च भूपतिश्चंद्रे ।
हिंस्रो नित्यविरोधी सुनफायां भौमसंयोगे ॥ २ ॥

जिसकी कुण्डली में चन्द्रमा से दूसरे स्थान में मंगल का योग होता है वह सुनफा योग कहलाता है उसमें जातक मनुष्य पराक्रमी धनवान्,निष्ठुर बचन बोलने वाला, हिंसा करने वाला, सबसे नित्य विरोध करने वाला राजा होता है ॥ २ ॥

श्रुतिशास्त्रगेयःकुशलो धर्मरतःकाव्यकृन्मनस्वी च ।
सर्वहितो रुचिरतनुःसुनफायां सोमजो भवति ॥ ३ ॥

और जिसके जन्मांगमें सुनफा योग में चन्द्रमा से दूसरे स्थान में बुध होता है वह मनुष्य वेद तथा अन्यान्य शास्त्र के जानने में अति कुशल, धर्म मार्ग में निरत, काव्य करने में कुशल, बडा मनस्वी, सबका हित करने वाला; मनोहर शरीर वाला होता है ॥ ३ ॥

नानाविद्याचार्यं ख्यातिं नृपतिं बृषप्रियं चापि ।
सकुटुम्बधनसमृद्धं सुनफायां सुरगुरुः कुरुते ॥ ४ ॥

और जिसकी कुण्डली में चन्द्रमा से दूसरी जगह बृहस्पति सुनफा में होवे वह मनुष्य अनेक विद्याओं का आचार्य (पढाने वाला) सर्वत्र विख्यात राज करने वाला, बैलों में स्नेह रखने वाला और कुटुम्ब तथा धनसे समृद्ध होता है ॥ ४ ॥

स्त्रीक्षेत्रगृहपश्चतुष्पदाढ्यः सुविक्रमो भवति ।
नृपसत्कृतःसुवेषो दक्षःशुक्रेण सुनफायाम् ॥ ५ ॥

और जिसकी कुंडली में शुक्र चन्द्रमा से दूसरे स्थान में दीख पडे तो सुनफा

योग हो जाता है तब वह मनुष्य स्त्री क्षेत्र, गृहका पालक, चौपाये पशुओं का रखने वाला, बडा पराक्रमी किसी राजा से सत्कार पाने वाला, सुन्दर वस्त्राभूषणों से श्रेष्ठ बेष धारण करने वाला और बडा चतुर होता है ॥ ५ ॥

निपुणमतिर्ग्रामपुरैर्नित्यं संपूजितो धनसमृद्धः ।
सुनफायां रवितनये क्रियासु गुप्तो भवेन्मलिनः ॥ ६ ॥

और जिसकी कुंडली में शनि को चन्द्रमा से द्वितीय स्थानगत होनेपर सुनफा योग होजाय तो वह मनुष्य बडा बुद्धिमान्, ग्राम तथा नगर के लोगों से पूजा पाने वाला, धनसे सदा समृद्ध, कामों को गुप्त रीति से करने वाला और सब समय मलिन रहने वाला होता है ॥ ६ ॥ इति सुनफायोग फलम् ॥

अथ अनफायोग फलम् ।

चौरःस्वामी दृप्तःस्ववशो मानी रणोत्कंठः ।
क्रोधात्संपत्साध्यःसुतनुःकुजेऽनफायां प्रगल्भश्च ॥ १ ॥

अगर जिसकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा से बारहवीं जगह पर मंगल के रहने पर अनफा योग होजाय तो वह मनुष्य चोर, एक ग्रोह का स्वामी, घमंडी, अपने बशमें रहने वाला, बडा मानी, रणमें उत्कंठा रखने वाला, क्रोध से संपत्तियों को सिद्ध करने वाला ईर्ष्यावान् और सुन्दर शरीर वाला तथा बडा ढीट होता है ॥ १ ॥

गंधर्वो लेखपटु :कविःप्रवक्ता नृपाप्तसत्कारः ।
रुचिरःसुभगश्च बुधे प्रसिद्धकर्माऽनफायां स्यात् ॥ २ ॥

और जिसकी कुण्डली में चन्द्रमासे बारहवेंस्थान पर बुध होने पर अनफा योग होजाय तो वह मनुष्य सौन्दर्य तथा गान विद्या में गंधर्वके तुल्य, लिखनेमें चतुर; बडा वक्ता, कविता करने में चतुर, राजाके द्वारा सत्कार पाने वाला, अत्यन्त सुन्दर, सौभाग्य युक्त और अपने काम को अत्यन्त प्रसिद्ध करने वाला होता है ॥ २ ॥

गम्भीरःसन्मेधासंयुक्तो बुद्धिमान्नृपाप्तयशाः ।
अनफायां त्रिदशगुरौ संजातःसत्कविर्भवति ॥ ३ ॥

और जिसकी कुंडली में चन्द्रमासे द्वादश स्थानगत बृहस्पति के होनेपर अनफा योग पड जाता है तब वह मनुष्य बडा गम्भीर; उत्तम बुद्धि से युक्त, राजाके आश्रय से यश पाने वाला और कविता करने में समर्थ होता है ॥ ३ ॥

युवतीनामतिसुभगःप्रणयी क्षितपस्य गोपतिः कांतः ।
कनक समृद्धश्च पुमाननफायां भार्गवे भवति ॥ ४ ॥

और जिसकी कुण्डली में शुक्र को चन्द्रमा से बारहवीं जगह पर स्थित होने से अनफा योग हो जाता है तब वह मनुष्य स्त्रियों को अति प्रिय, किसी राजा का स्नेह पात्र, गायों का पालक, अत्यन्त सुन्दर और सुवर्णादिक धनसे समृद्ध होताहै ।

विस्तीर्णभुजःसुभगो गृहीतवाक्यश्चतुष्पदसमृद्धः ।
दुर्बनितागणभोक्ता गुणसहितः पुत्रवान् रविजे ॥ ५ ॥

और जिसके जन्मांग में चन्द्रमा से बारहवें स्थान पर शनि होवे तो अनफा योग हो जाता है तब वह मनुष्य बडी बांहवाला, अत्यन्त सुन्दर, वाक्य को ग्रहण करने वाला, चौपायों से युक्त, दुष्ट स्त्रियों के समूह का भोक्ता गुणवान्, और पुत्रवान् होता है ॥ ५ ॥ इति अनफाफलम् ॥

अथ दुर्धरायोगफलम्—

अनृतवचा बहुवित्तो निपुणोऽतिशठो गुणाधिको लुब्धः ।
वृद्धस्त्रीषु प्रसक्तःकुलाग्रणीःशशिनि भौमबुधमध्ये ॥ १ ॥

जिसकी कुण्डलीमें चन्द्रमा मंगल और बुधके बीचमें बैठा हो तो दुरुधरायोग होजाता है उसमें उत्पन्न हुआ मनुष्य झूंठ बोलने वाला, अत्यन्त धनवान्, बडा चतुर, अत्यन्त शठ, अनेक गुण संपन्न, बडा लोभी, वृद्ध स्त्री में आसक्त और अपने कुल में अग्रगण्य होता है ॥ १ ॥

ख्यातःकर्मसु कितवो बहुधनवैरस्त्वमर्षणो धृष्टः ।
आरक्षःकुजगुर्वोर्मध्यगते शशिनि संग्राही ॥ २ ॥

और जिसकी कुंडली में चन्द्रमा, भौम और बृहस्पति के मध्यमें बैठा होवे तो दुरुधरा योग होता हैं उसमें वह मनुष्य अपने कर्मों में सर्वत्र विख्यात, कपटी, अनेक धन के निमित्त वैर युक्त, बडा क्रोधी, अत्यन्त ढीट, रक्षा करने में तत्पर, और संग्रह करने वाला होता हैं ॥ २ ॥

उत्तमरामः सुभगो बिषादशीलोऽस्त्रविद्भवेच्छुरः ।
व्यायामी रणशीलः सितारयोर्मध्यगे चंद्रे ॥ ३ ॥

अगर किसी को जन्म कुण्डली में शुक्र मंगल के बीच में चन्द्रमा आ पड़े तो इस दुरुधरा योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य उत्तम स्त्री वाला, (उत्तमा रामायस्य सः) अत्यन्त सुन्दर, हर एक कार्य में खेद करने वाला, अस्त्रों का वेत्ता; शूरवीर, कसरत करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में अत्यन्त उत्साह के साथ लड़ने वाला होता है।

उत्तमसुरतो बहुधनसंचयकारी व्यसनसक्तश्च ।
क्रोधी पिशुनो रिपुमान् यमारयोःस्याद्दुरुधरायाम् ॥४॥

इस दुर्द्धरा में यानी जिसके जन्मांग में शनि मंगल के मध्य में चन्द्रमा हो तब वह मनुष्य उत्तम रति करने वाला, बहु धन संचय करने वाला, अनेक (भांग अफीम तमाखू आदि) व्यसनों में आसक्त, क्रोधी, चुगल और शत्रु से युक्त होता है ॥ ४ ॥

धर्मरतःशास्त्रज्ञो वाचि पटुःसर्ववर्द्धनसमृद्धः ।
त्यागयुतो विख्यातो गुरुबुधमध्यस्थिते चन्द्रे ॥ ५ ॥

और जिसकी कुंडली में बुध और बृहस्पति के मध्य में चन्द्रमा स्थित होवे तो एतद्दुरुधरायोगोत्पन्न मनुष्य धर्म में निरत, शास्त्र का जानने वाला, वाक्य कहने में बडा चतुर, सबों का बढाने वाला, आप भी खुद सब तरह से समृद्ध, दान देने से जगत में विख्यात होता है ॥ ५ ॥

देशे देशे गच्छति वित्तवशो नास्ति विद्यया सहितः ।
चंद्रेऽन्येषां पूज्यः स्वजनविरोधी ज्ञमंदयोर्मध्ये ॥ ६ ॥

जिसके बुध और शनि के मध्य में चन्द्रमा स्थित होवे तब दुरुधरा योग हो जाता है इसमें वह मनुष्य अनेक देशों में गमन करने वाला, धन के वश में न रहने वाला, सर्वोत्तम विद्या को जानने वाला, अन्य मनुष्यों का पूज्य और स्वजनों से विरोध करने वाला होता है ॥ ६ ॥

प्रियवाक् सुभगःकांतःप्रवृत्तगो यदि सुकृतवान्नृपतिः ।
सौख्यं शूरो मंत्री बुधसितयोर्मध्यगे च हिमकिरणे ॥ ७ ॥

और जिसकी कुण्डली में बुध और शुक्र के मध्य में चन्द्रमा बैठा हो तब एतद्-दुरुधरा योगोत्पन्न मनुष्य प्रिय वाक्य कहने वाला, अति सुन्दर, सबको प्रिय, प्रवृत्ति

मार्ग में प्रवृत्त, सुकृत करने वाला, सुख से पूर्ण, बडा शूर, मंत्र देने में चतुर, और राज्य करने वाला होता है ॥ ७ ॥

धृतिमेधःस्थैर्ययुतो नीतिज्ञः कनकरत्नपरिपूर्णः ।
ख्यातो नृपकृत्यकरो गुरुसितयोर्दुरुधरायोगे ॥ ८ ॥

और जिसके जन्मांग में गुरु शुक्र के बीचमें चन्द्रमा बैठा हो ऐसे दुर्धरा योगमें वह मनुष्य धैर्य तथा बुद्धिका धारण करने वाळा, स्थिरतासे युक्त. नीतिका जानने वाला सुवर्णरत्नों से परिपूर्ण, जगत् में विख्यात, राजकृत्यों का करने वाला होता है ॥८॥

सुखनयविज्ञानयुतःप्रियवाग् विद्वान् धुरंधरो मर्त्यः ।
ससुतो धनी सुरूपश्चंद्रो गुरुभार्गवान्तरगे ॥ ९ ॥

और जिसकी कुंडलीमें बृहस्पति शुक्रके बीचमें चन्द्रमा हो तो इस दुरुधरा योग में वह मनुष्य सुख नीति विज्ञान से युक्त, प्रिय वचन कहने वाला, बडा विद्वान्, हर एक कार्य भार को उठाने वाला, पुत्रवान्, धनवान् सुरूप होता है ॥ ९ ॥

वृद्धवनितं कुलाढयं निपुणं स्त्रीवल्लभं धनसमृद्धं ।
नृपसत्कृतं बहुज्ञं कुरुते चंद्रःशनिशुक्रयोः ॥ १० ॥

और जिसकी कुंडली में शनि शुक्र के बीच में चन्द्रमा हो तो एतद् दुरुधरा योग जातक अपुन से उम्र में वडी कन्या के साथ विवाह करने वाला, कुलाचार से युक्त, चतुर, स्त्रियां को प्रिय, धन समृद्ध, राजा से सत्कार पाने वाला और बहुज्ञ होता है ॥ १० ॥　　इति दुर्धरायोगफलम् ।

अथ केमद्रुमयोगफलम्—

केमद्रुमे भवति पुत्रकलत्रहीनो देशांतरे व्रजति दुःखसमाभितप्तः।
ज्ञातिप्रमोदनिरतो मुखरःकुचैलो नीचः सदा भवति भीति-
युतश्चिरायुः ॥ १ ॥

और जिसकी कुंडली में केमद्रुम योग होवे वह मनुष्य पुत्र कलत्र से रहित, सदा दुःखतप्त होकर देशांतरों में घूमने वाला, ज्ञातिजनों के सुख में निरत, कई कार्यों में मुखब्बर बने; कुत्सित वस्त्रों का पहरने वाला, नीच प्रकृति और चिरायु सदा भयभीत रहने वाला होता है ॥ १ ॥

उत्पन्नभोगसुखभुग् धनवाहनाढ्य-
स्त्यागान्वितो दुरुधराप्रभवः सुभृत्यः ॥
केमद्रुमे मलिनदुःखितनीचनिःस्व ः ।
प्रेष्यश्च तत्र नृपतेरपि वंशजातः ॥ २ ॥

जिसकी जन्म कुंडली में दुरुधरा योग पड़ जाय वह मनुष्य उत्पन्न हुए भोगों के भोगने से सुखी, धन तथा घोड़ा आदि वाहनों से युक्त; दानी, अच्छे नौकर चाकरों वाला होता है और इसी प्रकार जिसके जन्मांग में केमद्रुम नाम का योग दीख पड़े वह जातक मलिन, दुःखी, नीचाचारी, निर्धन तथा दूतकर्म करने वाला होवे, इस योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य राजवंश का भी क्यों न हो तब भी ऐसा ही होता है ॥ २ ॥

कथितयोगोक्तिपूर्वंकेमद्रुमभंगमाह—

हित्वाऽर्कं सुनफाऽनफा दुरुधरा स्वान्त्योभयस्थैर्ग्रहैः ।
शीतांशोः कथितोऽन्यथा तु बहुभिःकेमद्रुमोऽन्यैस्त्वसौ
केंद्रे शीतकरेऽथवा ग्रहयुते केमद्रुमो नेष्यते ।
केचित्केन्द्रनवांशकेष्विति वदन्त्युक्तिःप्रसिद्धा न ते ॥ ३॥

सूर्य को छोड़कर चन्द्रमा से दूसरे स्थान पर किसी भी ग्रह के होने पर सुनफा तथा बारहवें स्थान पर रहने पर अनफा, एवं दूसरे बारहवें इन दोनों स्थानों पर रहने से दुरुधरा नामक योग, इसी प्रकार चन्द्रमा से (२, १२) ये दोनों स्थान ग्रहों से रिक्त हों तो (चेद्विसव्ययगा न चेद्दिविचराः केमद्रुमःस्यात्तदा) केमद्रुम योग, ये चारों योग इस प्रकार प्राचीन मुनियों ने कहे हैं किन्तु यदि चन्द्रमा केंद्र में स्थित होजाय और कोई ग्रह उसी में आ पड़े तब केमद्रुम योग नहीं होता है, इसमें कई आचार्य यह भी मानते हैं कि यदि चन्द्रमा केन्द्रीय राशियों के नवांश

१-उत्पन्नेत्यादिकं हित्वार्के त्यादिकञ्च पद्यद्वयं प्राचीन पुस्तके "यथा रत्नकोशे उक्तम्" इति शीर्षकं दत्त्वालिखितमासीत् तदतीवाशुद्धमिति निरस्य तत्स्थाने वृहज्जातकादुद्धृत्य रचितम्।

में भी स्थित होजाय तब भी केमद्रुम योग भंग होजाता है और वह योग शुभ फल दायक होता है, लेकिन इन आचार्यों की उक्ति प्रसिद्ध नहीं है अतः यह नवांश वाली बात माननीय नहीं है चन्द्रमा के केन्द्र स्थित होने पर जो भंग कहा गया है वह सर्व मान्य है।

पुनः केमद्रुमभंगः—

कुमुदगहनबंधुर्वीक्ष्यमाणःसमस्तैर्गगनग्रहनिवासैर्दीर्घजीवी मनुष्यः फलमशुभसमुत्थं यच्च केमद्रुमोक्तं स भवति नरनाथस्सार्वभौमो-जितारिः ॥ १ ॥

जिसकी कुंडली में केमद्रुम योग भी होवे परन्तु चन्द्रमाको सब ग्रह देखते होवें तो वह मनुष्य दीर्घायु होता है और जोकि केमद्रुम योग का कहा हुआ अशुभ फल है वह भी नहीं होता है और वह वैरि जनों का जीतने वाला सार्वभौम (चक्रवर्ती) राजा होता है ॥ १ ॥

पुनः केमद्रुमभंगः—

पूर्णः शशी यदि भवेच्छुभसंस्थितो वा सौम्या-
मरेज्यभृगुनंदनसंयुतश्च, पुत्रार्थसौख्यजनकःकथितो
मुनींद्रैःकेमद्रुमे भवति मंगलसुप्रसिद्धिः ॥ २ ॥

यदि जिसके पूर्ण बली होकर चन्द्रमा बुध या बृहस्पति अथवा शुक्र के संग होकर शुभ स्थान (वृष, कर्क, कन्या; वृश्चिक, मकर, मीन) में स्थित होवे तो केमद्रुम योग में भी उस जातक को पुत्र धन के सुख का देने वाला और सब मांगलिक कार्यों का देने वाला तथा प्रसिद्ध करने वालो होता है ॥ २ ॥

अथ सूर्योद्वे शिवोशियोगावाह—

सूर्याद्व्ययगे वोशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशिः ।
उभयास्थितैर्ग्रहगणैरुभयचरीनामतः प्रोक्तः ॥ १ ॥

जैसे सुनफादि योग चन्द्रमा से देखे जाते हैं उसी तरह ये योग सूर्य से देखे जाते हैं जैसे किसी की कुण्डली में सूर्य से चन्द्रमा के बिना कोई ग्रह बारहवें स्थान में स्थित हों तो वोशि नामक योग; और सूर्य से दूसरे ग्रह में चन्द्रमा को

छोड़कर कोई भी ग्रह बैठा हो तो वेशिनामक योग, और सूर्य के दोनों तरफ चंद्रमा को छोड़कर कोई भी ग्रह बैठे हों तो उभयचारी नामक योग होता है ॥ १ ॥

अथ वेशिवोशियोगफलम्—

मंददृशं स्थिरवचनं परिश्रूरिश्रमं नतोर्द्धतनुम् ।
कथयति गणिताधिपतिर्वेशिसमुत्थं त्वधोदृष्टिम् ॥ २ ॥

जिसकी कुंडली में वेशिनाम योग होता है वह मनुष्य मंद दृष्टि; स्थिर वचन कहने वाला, बडा परिश्रमी, ऊपर से नवे हुए शरीर वाला, और अधो दृष्टि वाला होता है ऐसा ज्योतिर्विदों में मुख्य विद्वान् कहते हैं ॥ २ ॥

बहुसंचयी दिनसदृश वोशौ पुरुषो भवेद्गुरोर्जातः ।
भीरुःकामविलग्नो लघुचेष्टो भृगुसुते पराधीनः॥ ३ ॥

और जिसकी कुंडली में यदि सूर्य से बारहवें स्थान पर गुरु के स्थित होने से उत्पन्न हुआ वोशियोग होवे तब वह मनुष्य बहुत धनोंका संचय करनेवाला दिनवत् प्रकाशवान् होता है और यदि शुक्रसे वोशि योग हुआ हो तब वह पुरुष बडा भीरु (डरपोक) और अधिक कामी, तथा अल्प चेष्टा करने वाला, और पराधीन होता है।

परतर्कितो दरिद्रो मृदुर्विनीतो बुधो विगतलज्जः ।
मातृघ्नःक्षितिपुत्रो परोपकारी नरो वोशौ ॥ ४ ॥

और यदि बुधसे जिसके वोशि योग होवे वह मनुष्य दूसरोंसे अत्यन्त तर्कित (छेड़ाजाव) दरिद्री, बडा मृदु, नम्र, निर्लज्ज, माता का मारने वाला होता है और जिसके मंगलकी स्थिति से वोशि योग हो तब वह मनुष्य परोपकार करने वाला होता है ॥ ४ ॥

परदाररतस्तन्द्री वृद्धाकारो घृणी भवेन्मनुजः ।
जातःपुमानिह स्याद् वोशो योगे शनैश्चरेण संयुक्ते ॥ ५ ॥

और शनि से यदि वोशि होवे तब वह मनुष्य पर स्त्री गामी, बहुत समय तक तन्द्रा (झपनी) मेंमग्न रहनेवाला वृद्धकासा जिसका आकार, और दयालु होताहै।

अथ वेशियोग फलम् ।

उच्चेष्टवचाः स्मृतिमान् भोगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।

पूर्वशरीरे पृथुलस्तुच्छगतिः सात्विको वेशौ ॥ १ ॥

जिसकी कुंडली में वेशिनामक योग होता है वह मनुष्य उत्तम इष्ट वाक्य कहने वाला स्मरण शक्ति युक्त; भोगों का भोगने वाला, तिरछा २ देखने वाला; शरीर का पहिला हिस्सा पुष्ट, मन्द गति वाला;और सात्विक प्रकृति वाला होताहै।

धृतिसत्यबुद्धियुक्तो भवति गुरुर्वेशिगो रणे शूरः ॥
ख्यातो गुणवानार्यःशूरोवै भार्गवे पुरुषः ॥ २ ॥

और जिसके गुरुसे वेशि योग होवे वह मनुष्य धैर्य सत्य तथा बुद्धि से युक्त, और युद्ध में शूर, और जिसके शुक्रसे वेशि होवे वह मनुष्य जगत् में विख्यात, बडा गुणी, आर्य और बडा शूरवीर होता है ॥ २ ॥

प्रियभाषी रुचिरतनुर्वेशौ स्याद्वा बुधे पराङ्कृत् पुरुषः ।
संग्रामे विख्यातो भूमिसुते सूतगुणवानपि ख्यातः ॥ ३ ॥

और जिसकी कुण्डली में बुधसे वेशियोग होवे वह मनुष्य प्रियवाणी बोलने वाला, मनोहर जिसका शरीर और दूसरेको हंसी दिल्लगी द्वारा बेवकूफ बनानेवाला, और जिसके मंगल के साथ वेशि योग होवे वह मनुष्य संग्राम में विख्यात, रथ हांकने की विद्या में गुणवान्, और सर्वत्र विख्यात होता है ॥ ३ ॥

वणिक्कलास्वभावःस्यात् परद्रव्यापहारकः ।
गुरुद्वेषी शनिःसूर्यः सोमे वेशिःशनैश्चरे ॥ ४ ॥

और जिसके शनि से वेशि होता है वह मनुष्य वणिक्कलाओंमें स्वभाव रखने वाला, परद्रव्य का हरने वाला, और गुरुजनों से द्वेष रखने वाला होता है ॥ ४ ॥

* इति वेशिफलम् *

अथोभयचरीयोगफलम्—

सर्वसहःसुसमदृक्समकायःसुस्थितो निपुणसत्वः ।
नात्युच्चःपरिपूर्णग्रीवो भवेदुभयचर्यायाम् ॥ १ ॥

जिसकी कुंडली में उभयचरी योग हो (शशांकोज्झितै र्भानोस्तूभयगैस्तदोभयचरीयोगः स्मृतः प्राक्तनैः) वह मनुष्य सब सहने वाला सब को सम दृष्टि से देखने

वाला; समान शरीर वाला, बडा स्थिर, सत्वाधिक्य संपन्न, निपुण; अत्यन्त ऊंचा नहीं, परिपुष्ट ग्रीवा वाला होता है ॥ १ ॥

सुभगो बहुभृत्यजनो बंधूनामाश्रयो नृपतितुल्यः ।
नित्योत्साही हृष्टो भुनक्ति भोगानुभयचर्यायाम् ॥ २ ॥

बडा सुभग, अनेक भृत्यों का रखने वाला, भाई बन्दों का आश्रय (रक्षक) राजा के तुल्य, नित्य उत्साह रखने वाला, सदा प्रसन्न और नित्य अनेक भोगों का भोगने वाला होता है ॥ २ ॥ इति उभयचरी फलम् ॥

अथान्ये योगाः प्रदर्श्यन्ते तत्रादौसिंहासनयोगः—

षष्ठाष्टमे द्वादशे च द्वितीये च यदा ग्रहाः ।
सिंहासनाख्ययोगोऽयं राजासिंहासनं विशेत् ॥ १ ॥

जिसकी कुंडली में लग्नसे छटे आठवें और दूसरे बारहवें इन्हीं चारौं घरों में सब ग्रह हों तब इसे सिंहासन योग कहते हैं इस योग से राज्य सिंहासन प्राप्त होता है ॥ १ ॥ इति सिंहासनयोगः ॥

अथध्वजयोगः तत्फलञ्च—

अष्टमस्था यदा क्रूराः सौम्या लग्ने स्थिता ग्रहाः ।
ध्वजयोगोऽत्र जातस्तु स पुमान्नायको भवेत् ॥ २ ॥

जिसकी कुंडली में लग्न से अष्टम घरमें सब क्रूर ग्रह हों और सब शुभग्रह लग्न में स्थित हों तो इस योग को ध्वज योग कहते हैं इस योग में जन्म लेने वाला पुरुष नायक (स्वामी) होता है ॥ २ ॥ इतिध्वजः ॥

अथ हंसयोगः फलञ्च—

त्रिकोणे सप्तमे लग्ने भवन्ति च यदा ग्रहाः ।
हंसयोगं विजानीयात्स्ववंशस्यैव पालकः ॥ ३ ॥

यदि जिसके जन्मांग में लग्नसे नवम पंचम तथा सप्तम घरमें और लग्न में इन्हीं घरों में सब (शुभ, पाप) ग्रहहों तब उसे हंसयोग कहते हैं जिसके यह योग हो वह मनुष्य अपने वंशका पालन करने वाला होता है ॥ ३ ॥

अथ कारिकायोगः फलञ्च—

एकादशे यदा सर्वे ग्रहाःस्युर्दशमेऽपि च ।
लग्नस्य संमुखे वापि कारिका परिकीर्तिता ॥१ ॥
उत्पन्नःकारिकायोगे नीचोऽपि नृपतिर्भवेत् ।
राजवंशसमुत्पन्नो राजा तत्र न संशयः ॥ २ ॥

और जिसकी जन्मकुण्डली में लग्न से ग्यारहवें दशमें तथा लग्न के सन्मुख अर्थात् लग्नसे सप्तम घरमें इन घरों में ही सब ग्रहहों तब इसे कारिका योग कहते हैं और उस कारिका योगमें जन्म लेने वाला मनुष्य यदि नीच भी हो तो भी राजा होता है और फिर राजकुल में जन्म लेने वाला मनुष्य हो वह राजा होने तब इसमें संदेह ही क्या है ॥ १-२ ॥

एकावलीयोगः फलंच ।

लग्नतश्चान्यतो वापि क्रमेण पतिता ग्रहाः ।
एकावली समाख्याता महाराजो भवेन्नरः ॥ ३ ॥

और जिसकी कुंडली में लग्नसे लेकर या किसी भी घर से लेकर क्रम से एक तरफ ही सब ग्रह एक २ करके होवें तब उसे एकावली योग कहतेहैं और इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य महाराज होता है ॥ ३ ॥ इति एकावली ॥

अथ चतुःसागरयोगः फलञ्च—

चतुर्थकेन्द्रसंज्ञेषु सौम्यपापग्रहाःस्थिताः ।
चतुःसागरयोगोऽयं राज्यदो धनदो भवेत् ॥ १ ॥

अगर जिसकी जन्म कुंडली में चारों केंद्रों १।४।७।१० में ही सब पापग्रह और शुभ ग्रहहों उसे चतुः सागर योग कहते हैं; यह योग राज्य और धन का देने वाला होता है ॥ १ ॥

अन्यः प्रकारः फलञ्च -

कर्कटे मकरे मेषे तुलायाञ्च ग्रहाःस्थिताः ।
चतुःसागरयोगःस्यात्सर्वारिष्टनिषूदनः ॥ १ ॥

जिसकी कुंडली में कर्क मकर मेष और तुला इनी राशियों में सब शुभ पाप

ग्रह बैठे हों तब भी चतुःसागरयोग कहलाता है यह योगसर्व अरिष्टों का नाशकरने वाला होता है ॥ १ ॥

चतुःसिंधौ नरो जातो बहुरत्नसमान्वितः ।
गजबाजिधनैःपूर्णो धरणीशो भवेन्नरः ॥ २ ॥

जो मनुष्य चतुः सागर नामक योग में जन्म लेता है वह अनेक रत्नों से युक्त, गजबाजि और धनों से परिपूर्ण और पृथ्वी का पति होता है ॥ २ ॥ इति ॥

अथ अमरयोगः फलंच ।

चतुर्ष्वपि च केन्द्रेषु क्रूराःसौम्या यदा ग्रहाः ।
क्रूरैःपृथ्वीपतिर्विद्यात्सौम्यैर्लक्ष्मीपतिर्भवेत् ॥ १ ॥

यदि किसी के जन्म काल में सभी पापग्रह या सभी शुभ ग्रह चारों केंद्रों में दृष्टिगोचर हों तो वह अमर नामक योग कहलाता है यदि सब क्रूर ग्रह हों तो वह मनुष्य पृथ्वीपति होता है और यदि चारों केंद्रों में शुभ ग्रह हों तो वह मनुष्य लक्ष्मीपति होता है ॥ १ ॥

अजमृगपतिलग्ने भानुकेन्द्रे त्रिकोणे व्ययनिधनसुसंस्थे चन्द्रकर्के वृषे वा
यदितदुभयमेनं पश्यतो जीवशुक्रौतदमरवरयोगे सर्वरिष्टस्य नाशः२

जिसकी कुंडली में मेष सिंह तथा जन्म लग्नमें स्थित सूर्य केंद्र या त्रिकोण ६।५ में आ पडे, और कर्क का या वृषका होता हुआ चन्द्रमा बारहवें या आठवें स्थान में पड जाय, तथा इन दोनों को शुक्र और बृहस्पति देखते हों तो इसे अमर योग कहते हैं यह योग सर्वारिष्टनाशक होता है ॥ २ ॥

अथ चापयोगः फलंच ।

शुक्रे घटे कुजे मेषे स्वस्थो देवगुरौहितः ।
तदा राजा भवेन्नूनं चापः सौध्यातिदिङ्मुखः ॥ १ ॥

यदि किसी के जन्म समय में कुंभका शुक्र हो, मंगल मेष का हो और बृहस्पति अपनी राशिका हो तब वह मनुष्य निःसन्देह राजा होता है इसे चापयोग कहते हैं ॥ १ ॥

अथ दंडयोगः फलंच—

कर्कटे मिथुने मीने कन्यायां चापगे ग्रहे ।
दण्डयोगःसमाख्यातो राज्ञामास्पदकारकः ॥ १ ॥

जिसकी कुंडलीमें कर्क, मिथुन, मीन, कन्या और धनु इनमें ही सब पाप शुभ ग्रह स्थित हों तब दंडयोग होता है यह योग राज पद को प्राप्त कराता है ॥ १ ॥

दंडे च जातःपृथुपुण्यभागी एकातपत्री भवति क्षितीशः ।
तेजोमयःसिंहपराक्रमश्च संसेव्यमानो गुरुपात्रवृंदैः ॥ २ ॥

जिसका दंडयोग में जन्म होता है वह मनुष्य अत्यन्त पुण्यभागी, एक छत्र धारण करने वाला राजा; बडा तेजस्वी, सिंह समान पराक्रमी और बडे २ तगडे धनपात्र मनुष्यों से सेवित होता है ॥ २ ॥

अथान्यप्रकारेणहंसयोगः—

मेषे घटे चापतुलामृगालौ सर्वग्रहे हंस इति प्रसिद्धः ।
सर्वैश्च पूर्णो नृपतेश्च पूज्यो हंसोद्भवो राजसमो मनुष्यः ॥१॥

जिसकी कुण्डली में मेष कुम्भ धन तुला सिंह और वृश्चिक इन्हीं स्थानों में सब ग्रह हों तब भी हंस योग होता है इस योग के होने से ऐश्वर्यों से परिपूर्ण; राजपूज्य और राजा के तुल्य होता है ॥ १ ॥ इति जातकचन्द्रिकामतेन हंसयोगः।

अथ वापीयोगःफलश्च—

धनलग्नव्ययांस्त्यक्त्वा शेषस्थानेषु संस्थिताः ।
वापीयोगो भवेदेवमुदितः पूर्वसूरिभिः ॥ १ ॥

१—वापीयोगोत्पत्तिबोधकमिदम् पद्यं जातकाभरणगतं, किन्त्वत्र प्रथमपादे किञ्चिद्वैपरीत्यं कृतं ग्रन्थकृता, तत्रहि "त्यक्त्वा केन्द्राणि चेत्खेटाः"—एतत्प्रकारकः पठितः प्रथमः पादो लिखितो विद्यते इह ग्रन्थे तु प्राचीनपुस्तकेषु "धने व्यये तथा लग्ने" इति स्थित आसीत्, अस्माभिस्तु "धनलग्नव्ययांस्त्यक्त्वा"—इत्येवं तदनुकूलमेव संशोध्य रचितः अन्यत्पादत्रयं तूभयत्र सममेव, एतद्विषये वराहमिहिरोऽपि "च्युतैर्वापी" (एवम् केन्द्रच्युतैः सर्वैरेव ग्रहै र्वापीयोगः इति हितायां भट्टोत्पलः) इत्युक्त्या ढुण्ढिराजोक्तिमेव समर्थयति तदत्र ग्रन्थद्वयविरोधः स्पष्ट एव प्रतीपते ग्रन्थोऽप्ययम् संग्रहरूपात्मक इति नास्त्यविदितं ज्योतिर्विद्याविवरणवरीयसां विपश्चितां परं तथापि ग्रन्थकर्त्रा यत्र, तत्र स्वस्वतन्त्रविचारपुरस्सरम् नवीनसंस्कृतिरप्युद्घाटिते-त्यलं विस्तरेण ।

जिसकी कुंडली में लग्न दूसरे तथा बारहवें इन तीन घरों को छोड़कर शेष घरों में ही सब ग्रह हों उसे वापी योग कहते हैं ऐसा पूर्वाचार्यों ने कहा है ॥ १ ॥

दीर्घायुःस्यादात्मवंशप्रधानःसौख्योपेतोऽत्यन्तधीरो नरो हि ।
चञ्चद्वाक्यस्तन्मनाःपुण्यवापी वापीयोगे यः प्रसूतःप्रतापी॥२॥

जिसकी कुण्डली में वापी नामक योग होता है वह मनुष्य दीर्घायु, अपने वंश में प्रधान, अनेक सुखों से संपन्न, अत्यन्त धीर, प्रिय वाक्य कहने वाला, पुण्य करने में मन रखने वाला और बड़ा प्रतापी होता है ॥ २ ॥ इति ॥

अथ यूप-शर–शक्तिदंडयोगाः—

लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतःखमध्याच्चतुर्गृहस्थैर्गगनेचरेन्द्रैः ।
क्रमेण यूपश्च शरश्च शक्तिर्दंडः प्रदिष्टःखलुजातकज्ञैः ॥१॥

किसी मनुष्य की जन्म कुंडली में लग्न के क्रमसे केन्द्र स्थानोंसे लेकर चार २ स्थानों के बीच में यदि सभी ग्रह आपड़ें तब क्रम से यूप, शर, शक्ति, और दंड ये चार योग होते हैं, ये जातक शास्त्र वेत्ताओं ने कहा है, जैसे लग्न से चतुर्थ गृह पर्यंत सब ग्रहों के रहने से यूप योग, एवं चौथे घर से लेकर सप्तम गृहपर्यन्त हो तो बाण योग, तथा सप्तम घरसे लेकर ७-८-९-१० दशम गृह पर्यंत सब ग्रह हों तो शक्ति, दशम से १०–११–१२–१ लग्न पर्यंत सब ग्रह हों तो दंड योग होता है ।

तत्रादौ यूपयोग फलम् ।

धीरोदारो यज्ञकर्मानुसारो नानाविद्यासद्विचारो नरोच्चः ।
यस्योत्पत्तौ वर्तते यूपयोगोयोगो लक्ष्म्या जायते तस्यनित्यम् ॥२

जिस के यूप नामक योग होता है वह मनुष्य बडा धीर, उदार, यज्ञकर्म करने वाला अनेक विद्या और सद्विचारों से युक्त, और आदमियों में ऊंचे दर्जा वाला तथा सदा लक्ष्मी संपन्न होने के कारण यज्ञ करने वाला होता है ॥ २ ॥

अथ शरयोगफलम् ।

हिंस्रोऽत्यन्तं तुल्यदुःखैःप्रतप्तःप्राप्तानंदःकाननांते शरज्ञः ।
मर्त्योयोगे यःशरे जातजन्मा स्त्री रंभाख्या तस्य न कापिसौख्यम् ३

जिसकी कुंडली में बाण नामक योग होता है वह मनुष्य हिंसा करने वाला,

दुःखों से अत्यन्त प्रतप्त, बन में अत्यन्त आनन्द पाने वाला, बाणा विद्या जानने वाला और रंभा अप्सरा समान स्त्री को प्राप्त होकर भी सुख से हीन होता है ॥३॥

अथ शक्तियोगफलम् ।

नीचैरुच्चैः प्रीतिकृत्सालसश्च सौख्यैरर्थैर्वर्जितो दुर्बलश्च ।
वादे युद्धे तस्य बुद्धिर्विशाला शाला सौख्यस्याल्पता शक्तियोगे

जिसके शक्ति नामक योग होता है वह मनुष्य नीच पुरुषों से अति प्रीतिशाला बडा आलसी, सुख और धन से हीन, अत्यन्त दुर्बल, वाद और युद्ध करने में तीव्र बुद्धि रखने वाला, और शालासख का अल्प भोगने वाला होता है ॥ ४ ॥

अथ दंडयोगफलम् ।

दीनो हीनोन्मत्तसंजातसौख्यो द्वेष्योद्वेगी गोत्रजैर्जातवैरः ।
कान्तापुत्रैरर्थमित्रैर्विहीनो हीनो बुद्ध्या दण्डयोगप्रजमन्मा ।५।

जिस मनुष्य का दंडयोग में जन्म होता है वह मनुष्य दीन, हीन, उन्मत्त जनों के संग में सुख पाने वाला; द्वेष्य मनुष्यों से उद्वेग युक्त, गोत्र के मनुष्योंसे द्वेष करने वाला, स्त्री पुत्र मित्र धन और बुद्धि से हीन होता है ॥ ६५ ॥

नौका–कूट–छत्र–चाप–अर्द्धचन्द्रयोगाः ।

लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतःखमध्यात्सप्तर्क्षगैर्नौरथकूटसंज्ञः ।
छत्रं धनुश्चान्यगृहप्रवृत्तैर्नौपूर्वको योग इहार्द्धचंद्रः ॥ १ ॥

पूर्वोक्त यूपादि योगवत् लग्नादि केन्द्रों (१–४–७–१०) से सात २ राशि के भीतर ही उत्तरोत्तर सभी शुभ पाप ग्रहों के स्थित होजाने से नौ, कूट, छत्र, धनु, ये चार योग क्रम से जानिये, जैसे लग्नसे सप्तम गृह पर्यन्त सब ग्रहों के होने से नौका योग, चतुर्थ से १० पर्यन्त सब ग्रहों के होने से कूट योग, सप्तम से लग्न पर्यन्त सब ग्रह हों तो छत्र, दशमें से चौथे गृह पर्यन्त सब ग्रह आपडें तो धनु, और अगर सब ग्रह उक्त क्रमानुसार स्थित न होवें तो अर्धचन्द्र योग कहते हैं ॥१॥

तत्रादौ नौकायोगफलम् ।

ख्यातो लुब्धो भोगसौख्यैर्विहीनःस्यान्नौयोगे लब्धजन्मामनुष्यः
क्लेशी शश्वच्चञ्चलस्वान्तवृत्तिस्तोयोद्भूतेनार्थधान्येन तस्य ॥ २ ॥

जिस पुरुषकी कुंडली में नौका नामक योग होताहै वह मनुष्य सर्वत्र विख्यात बडा लोभी, भोगों से और सुखसे विवर्जित, क्लेशों का भोगने वाला, निरन्तर चंचल अंतःकरण की वृत्तिवाला और नहर आदिके जलसे उत्पन्न हुए धनधान्य से परिपूर्ण होता है ॥ २ ॥

अथ कूटयोगफलम्–

दुर्गारण्यावासशीलश्च मल्लो भिल्लप्रीतिर्निर्धनो निन्द्यकर्मा ।
धर्माधर्मज्ञानहीनश्च दुष्टः कूटप्राप्तोत्पत्तिरेवं मनुष्यः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्य के जन्म समय में कूटनाम योग होता है वह पुरुष दुर्ग (कठिन) वनमें निवास करने वाला, शरीर का मल्ल, भीलों से प्रीति रखने वाला; निर्धन, निंदित कर्मों का करने वाला, धर्म अधर्म के ज्ञानसे रहित, और बडा दुष्ट होता है ।

अथ छत्रयोगफलम्–

प्राज्ञो राज्ञां कार्यकर्ता दयालुः पूर्वे श्चाश्चात्सर्वसौख्यैरुपेतः ।
यस्योत्पत्तौ छत्रयोगोपलब्धिर्लब्धिः स्याच्चेच्छत्रसच्चामराद्यैः ॥ ४ ॥

जिस पुरुषका छत्र नामक योग में जन्म होता है वह मनुष्य बडा बुद्धिमान्, कई राजाओं के कार्य का करने वाला, बडा दयालु, बालावस्थामें तथा वृद्धावस्था में सब सुखों से परिपूर्ण, और छत्रचमर आदि से युक्त होता है ॥ ४ ॥

अथ जातकाभरणोक्तकार्मुकफलम्–

आद्ये भागे चान्तिमे जीवितस्य सौख्योपेतः काननाद्रिप्रचारः ।
योगे जातः कार्मुके सोऽतिदुष्टो गर्वोन्मत्तोत्पत्तिकृत्कार्मुकास्त्रः ।५।

जिस पुरुष का कार्मुक नामक योगमें जन्महो वह मनुष्य आयुके आदिमें तथा अन्त में सब सुखों का भोगने वाला; जंगले तथा पहाडों में भ्रमण करने वाला, अत्यन्त दुष्ट, गर्व से उन्मत्त रहने वाला तथा धनुष बाण हाथमें लिये अहेरिया की की तरह इधर उधर घूमता रहे ॥ ५ ॥

अथार्धचन्द्रयोगफलम्—

भूमीपालप्राप्तचञ्चत्प्रतिष्ठः श्रेष्ठः सेनाभूषणार्थाम्बराद्यैः ।
चेदुत्पत्तौ यस्य योगोऽर्द्धचन्द्रश्चन्द्रः सस्याद्रुत्सवार्थं जनानाम् ६

जिसका अर्धचन्द्र नामक योगमें जन्म होता है वह मनुष्य किसी बडे राजा से महती प्रतिष्ठा पाने वाला, सेना भूषण धन और वस्त्रादि के सुख से परिपूर्ण और चन्द्रमा के समान जनों को आनन्द देने वाला होता है ॥ ७१ ॥

अथ चक्रसमुद्रयोगयोरुत्पत्तिः—

तनोर्द्धनाच्चैकगृहान्तरेण स्युःस्थानषट्के गगनेचरेन्द्राः ॥
चक्राभिधानश्च समुद्रनामा योगावितीहाकृतिजाश्च विंशत् ॥७२॥

जिसकी कुंडली में जन्म लग्नसे लेकर एक २ राशि छोड छः ग्रहों (१–३–५–७–९–११) में यदि सब ग्रह होवें तो चक्र नामका योग जानना तथा द्वितीय गृह से लेकर एक २ राशि छोड कर छः स्थानों में (२–४–६–८–१०–१२] में सब ग्रह पड जांय तो समुद्र नाम का योग होता है यह आकृतिसे२०होतेहैं॥ ७२ ॥

तत्रादौ चक्रयोगफलम्—

श्रीमद्रूपोऽत्यन्तजातप्रतापो भूपो भूपोपायनैरार्चितःस्यात् ।
योगे जातःपूरुषो यस्तु चक्रे चक्रे पृथ्व्याःशालिनी तस्य कीर्तिः७३

जिसकी कुंडली में चक्र नामक योग होता है वह पुरुष लक्ष्मीवान्, रूपवान्, अत्यन्त प्रतापी, राजाओं की दी हुई भेटों से पूजित, और भूमंडल में विख्यात कीर्ति, ऐसा राजा होता है ॥ ७३ ॥

अथ समुद्रयोगफलम्—

दाता धीरश्चारुशीलो दयालुःपृथ्वीपालप्राप्तसाम्यःप्रकामम् ।
योगे जातो यःसमुद्रे स धन्यो धन्यो वंशस्तेन नूनं नरेण॥७४॥

जिसके जन्म समय में समुद्र योग होता है वह मनुष्य दानी, बड़ा धीरज वाला उत्तम स्वभाव वाला, बड़ा दयालु, राजा की समता पाने वाला; बडा धन्य और अपने कुल भर को धन्य करने वाला होता है ॥ ७४ ॥

अथ गोलादियोगफलम्—

येयोगाःकथिताःपुरा बहुतरास्तेषामभावे भवे—
द्गोलश्चैकगतैर्युगं द्विगृहगैःशूलास्त्रिगेहोपगैः ।

केदारश्च चतुर्षु सर्वखचरैःपाशस्तु पञ्चस्थितैः ।
षट्स्थैर्दामनिका च सप्तगृहगैर्वीणेतिसंख्या इमे ॥ ७५ ॥

मुनियों ने जो राजयोग पहिले बहुत से कहे हैं इनके अभावमें और भी अनेक योग होते हैं जैसे यदि एक ही स्थान में सब ग्रह हों तब गोल योग, दो घरों में सब ग्रह होने से युग, तीन घरों में ही सब ग्रहों के होने से शूल, चार घरों में ही सब ग्रहों के होने से केदार, पांच घरों में सब ग्रहों के होने से पाश, और छः घरों में सब ग्रहों के होने से दामिनी, और सात घरों में ग्रहों के होने से वीणा नामयोग होता है इस प्रकार ये सात योग होते हैं ॥ ७५ ॥

तत्र गोलयोगफलम्---

विद्यासत्त्वौदार्यसामर्थ्यहीना नानायासा नित्यजातप्रयासाः ।
येषां योगःसम्भवेद्गोलनामा नामासत्यप्रीतयोऽनीतयस्ते ॥७६॥

जिसकी कुण्डली में गोल नामक योग होता है वह मनुष्य विद्या सामर्थ्य और उदारता से सदा हीन; अनेक नित्य नवीन परिश्रम करने वाला, और झूंठ और अनीति में प्रीति रखने वाला होता है ॥ ७६ ॥

अथ युगयोगफलम्—

पाखण्डेनाखण्डितप्रीतिभाजो निर्लज्जाःस्युर्धर्मकर्मप्रयुक्ताः ॥
पुत्रैरर्थैःसर्वथा ते वियुक्ता युक्तायुक्तज्ञानशून्या युगाख्ये ॥७७॥

जिनकी जन्म कुंडली में युग नामक योग होता है वे मनुष्य पाखण्डी मनुष्यों से अखंड प्रीति करने वाले, बडे निर्लज्ज; धर्मके कामकरने में प्रयुक्त, पुत्र तथा धन से रहित और योग्य अयोग्य के ज्ञान से विवर्जित होते हैं ॥ ७७ ॥

अथ शूलयोगफलम्—

युद्धे वादे तत्पराःक्रूरचेष्टाःक्रूराःस्वान्ते निष्ठुरा निर्द्धनाश्च ।
योगो येषां सूतिकाले हि शूलःशूलप्रायास्ते जनानां भवन्ति।७८।

जिन मनुष्यों का शूल योग में जन्म होता है वे मनुष्य युद्ध और वादविवाद करने में तत्पर, क्रूर जिनकी चेष्टा; अंतःकरण से क्रूर, अति निष्ठुर; धन से हीन और मनुष्यों को शूल के समान खटकते रहते हैं ॥ ७८ ॥

अथ केदारयोगफलम्—

सत्योपेताश्चार्थवन्तो विनीताः कृष्यौत्सुक्याश्चोपकारादराश्च ।
योगे केदारे नरास्तेऽपिधीरा धीराचाराश्चापि तेषां विशेषात् ७९

जिसकी कुंडली में केदार नामक योग होता है वह मनुष्य सत्य से युक्त, धनवान् अति नम्र, खेती में उत्कण्ठा रखने वाला, उपकार करने में आदर रखने वाला, धैर्यवान् और विशेषतया धीर मनुष्यों के से आचार वाला होता है ॥७९॥

अथ पाशयोगफलम्—

दीनाकारास्तत्पराश्चापकारे बन्धेनार्त्ता भूरिजल्पाःसदंभाः ।
नानानर्थाःपाशयोगप्रजाता जातारण्यप्रीतयःस्युर्मनुष्याः ॥८०॥

जिनके जन्म समय में पाश नामक योग होता है वे मनुष्य दीन जैसे आकार वाले, सबों की बुराई करने में तत्पर, बंधन से पीडित; बहुत बकवाद करने वाले; दंभ के करने वाले अनेक अनर्थों से युक्त और बनके रहनेमें प्रीति रखनेवाले होते हैं

अथ दामिनीयोगफलम्—

जातानंदोनन्दनाढ्यःसुधीरो विद्वान्भूपःकोपसंजाततोषः ।
चञ्चच्छीलौदार्यबुद्धिःप्रशस्तःशस्तःसूतौ दामिनी यस्य योगः

जिस मनुष्य की कुंडली में दामिनी नामक योग होता है वह मनुष्य सदा आनन्द युक्त, पुत्रवान्, वडा धीर, विद्वान्, राजा और कोप से संतोष करने वाला, उत्तम शील औदार्य तथा बुद्धि से युक्त, सर्वत्र वडाई पाने वाला होता है ॥ ८१ ॥

अथ वीणायोगफलम्—

अर्थोपेताःशास्त्रपारङ्गताश्च संगीतज्ञाःपोषकाःस्युर्बहूनाम् ।
नानासौख्यैरन्वितास्तु प्रवीणा वीणायोगे प्राणिनां जन्म येषाम्

जिनकी कुंडली में वीणा नामक योग होता है वे मनुष्य धन संपन्न, शास्त्र में पारङ्गत, संगीत के जानने वाले, बहुतों का पोषण करने वाले; नाना सुखों से समन्वित और अत्यन्त प्रवीण होते हैं ॥ ८२ ॥ इ० जा० आ० ॥

प्रोक्तैरेतैर्नाभसाख्यैश्च योगैः स्यात्सर्वेषां प्राणिनां जन्मकामम् ।
तस्मादेतेऽत्यंतयत्नादपूर्वाःपूर्वाचार्यैर्जातके संप्रदिष्टाः ॥८३॥

कहे जो ये नाभसयोग हैं ये यदि जिस मनुष्य के जन्मकाल में होवें तब ये योग सुख देने वाले होते हैं इसी से पूर्वाचार्यों ने अत्यन्त यत्न से कहे हैं ॥८३॥

चन्द्रयोगफलम्—

उत्पातके कृशतनुर्निशि वाथ दृश्येदृश्यदिवासिरिसगर्भयशोदकश्च ।
एवं स्थितः समफलःपृथिवीपतित्वं जातोनयाय कुरुते परिपूर्णमूर्तिः

उत्पात समय में चन्द्रमा की स्थिति होने से जातक की देह पतली २ होवे, यदि रात्रि में या दिन के समय अथवा अनुत्पात युक्त चन्द्र दृश्य हो तब मनुष्य अति यशस्वी होवे अगर परिपूर्ण बली चन्द्रमा हो तो वह जातक सच्चा न्यायकारी राजा होता है ॥ ८४ ॥

अथ दरिद्रयोगः—

वामवामे ग्रहाःसर्वे सूर्यादीनां मुनिप्रभाः ।
दरिद्रयोगं जानीयान्नात्र कार्या विचारणा ॥ ८५ ॥

जिस मनुष्य की जन्म कुंडली में सूर्यादि सब ग्रह बांई तरफ को वामावर्त के ही क्रम से सात स्थान में ही स्थित हों तब उसको दरिद्र विधायक योग जानो इस में किसी अन्य बात का विचार न करना चाहिये ॥ ८५ ॥

करसम्पुटयोगः—

रेतऋत्वोश्च संपर्काज्जायते विषमा गतिः ।
करसंपुटमादाय वंध्या भवति निश्चितम् ॥ ८६ ॥

जिन ग्रहों की ऋतु और रेत संज्ञा कही है उनके मिलने से विषम गति होती है इसे करसंपुट योग कहते हैं इस योग के होने से पुरुष की स्त्री वंध्या होती है ।

अथ कारकयोगाजातकाभरणात्—

मूलत्रिकोणस्वगृहोच्चसंस्था नभश्चराःकेंद्रगता मिथःस्युः ।
ते कारकाख्याःकथिता मुनीन्द्रैर्विज्ञाय चाज्ञाभवने विशेषात्॥८७॥

जो ग्रह अपने मूल त्रिकोणी अथवा स्वगेही या उच्चके होकर केन्द्र १।४।७।१० में बैठे हुये परस्पर सम्बन्ध करते हों तब वे ग्रह कारक संज्ञक होते हैं ऐसा मुनींद्रोंने कहा है, केन्द्र स्थानों में भी अन्य स्थानों की अपेक्षा दशम विशेष श्रेयस्कर समझना अतः दशममें उक्त ग्रह पडें तो विशेष कारक संज्ञक होते हैं ॥ ८७ ॥

प्रालेयरश्मिर्यदि मूर्तिवर्ती स्वमंदिरस्थो निजतुङ्गजातः ।
कुजार्कजार्कामरराजपूज्याःकेंद्रस्थिताःकारकसंज्ञिताश्च ॥८८॥

चन्द्रमा स्वगेही होकर अथवा अपने उच्चका होकर लग्न में स्थितहो और मंगल सूर्य शनि और बृहस्पति यह चारों भी ग्रह केन्द्रस्थित हों तब यह सब ग्रह कारक संज्ञक कहलाते हैं ॥ ८८ ॥

शुभग्रहे लग्नगतेऽम्बराम्बुस्थितो ग्रहःकारकसंज्ञकःस्यात् ।
तुङ्गत्रिकोणस्वगृहांशयातास्तेऽपीह माने तपनो विशेषात्॥८९॥

जिसकी कुंडली में शुभ ग्रह लग्न में स्थित हो तथा कोई भी ग्रह दशम या चतुर्थ में बैठा हो तो कारक संज्ञक हो जाता है तथा जो ग्रह उचके या त्रिकोण या स्वगेही के होकर या अपने नवांश के होकर बैठे हों तो विशेष कारक संज्ञक होजाते हैं उसमें भी सूर्य को विशेष कर यह कहा जाता है ॥ ८९ ॥

नीचान्वये यद्यपि जातजन्मा मंत्री भवेत्कारकखेचराद्यैः ।
राजान्वये तस्य यदि प्रसूतिर्भूमीपतित्वं स कथं न याति॥९०॥

जिसकी कुंडली में यह कारक ग्रह योग होवे वह मनुष्य यद्यपि नीच कुल का जन्मा होवे तब भी इन कारक ग्रहोंके बलसे राजा का मंत्री होता है और जो राजकुलमें उसने जन्म लिया है तब तो उसके राजा होने में संदेह ही क्या है ॥ ९० ॥

वेशिस्थितो यस्य शुभो नभोगो जन्माख्यलग्ने च लवे स्वकीये।
केंद्राणि सर्वाणि च सद्ग्रहाणि तस्यालये श्रीःकुरुते विलासम् १००

और जिसकी कुंडली में कोई भी एक शुभ ग्रह सूर्य से द्वितीय स्थानमें होवे, और जन्म लग्न अपने नवांश में होवे और शुभग्रह सम्पूर्ण केन्द्र में ही स्थित हों तो इस योग के होने से उस मनुष्य के घरमें लक्ष्मी सदा निवास करती है अर्थात् कई पुश्तों तक द्रव्य का अभाव नहीं होता है ॥ ९० ॥

केंद्रस्थिता गुरुविलग्नपचंद्रमेशा—
मध्ये च यस्य नितरां वितरंति भाग्यम् ।
शीर्षोदयाभ्युदयभेषु गता भवेयु----
रारंभमध्यमविरामफलप्रदास्ते ॥ १०१ ॥

जिसके जन्मांग में बृहस्पति, लग्नेश एवं चन्द्र राशि का स्वामी केन्द्रस्थ होवे तो उस मनुष्य का भाग्य जवानी में उदय होता है अगर शीर्षोदय राशिगत होवें तो क्रमसे गुरुसे बालक पनमें, लग्नेश से मध्यमावस्था में, चन्द्रराशीशसे बुढापे में भाग्योदय जानना ॥ ९१ ॥

अथ शकटयोगः फलंच—

संस्था विलग्नेऽप्यथ सप्तमे च पतंगमुख्यास्तु ग्रहा नितांतम् ।
वदंति योगं शकटाभिधं तं जातो नरःस्याच्छकटोपजीवी ।९२।

जिसकी जन्म कुंडलीमें लग्न में और सप्तम घर में ही सूर्यादि समग्र ग्रह स्थित हों तब इसे शकट योग कहते हैं इस योगके होने से मनुष्य गडीकी जीविका करने वाला होता है ॥ ९२ ॥ इति शकट फलम् ॥

अथ नन्दानामयोगः फलंच—

युग्मयुग्मग्रहास्त्रिष्ठा ह्येकैकं च त्रिषु स्थितम् ।
नंदायोगःस विज्ञेयश्चिरायुस्सुखभाग् भवेत् ॥९३॥

जिसकी कुंडली में दो दो ग्रह तो तीन घरों में हों और तीन घरोंमें एक एक ग्रह हो इसको नन्दा नाम योग जानना इस योगके होनेसे मनुष्य दीर्घायु और सुख भोगने वाला होता है ॥ ९३ ॥ इति नन्दानाम योगफलम् ॥

अथ दातानाम योगः फलंच—

लग्ने च जीवो युगगो भृगुश्च द्यूने च सौम्यो दशमे महीजः।
केंद्रेत्वमी चारुफलप्रदाःस्युःसर्वार्थदातार इति प्रसिद्धाः ॥ ९४ ॥

जिसकी कुंडली में लग्न में बृहस्पति; चौथे में शुक्र, सप्तम में बुध और दशम में मंगल हो इस प्रकार ये चारों ग्रह चारों केंद्रों में स्थित हों तब यह दाता नाम योग होता है इस योगके होने से अत्युत्तम फल होता है ॥ ९४ ॥

अथ राजहंसयोगः फलंच—

घटे मेषे नरे चापे तुलायां सिंहगे ग्रहे ।
राजहंसो भवेद्योगो राज्यास्पदसुखप्रदः ॥ ९५ ॥

जिसकी कुंडली में कुम्भ मेष मिथुन धन तुला और सिंह इन्हीं राशियोंमें सब ग्रह स्थित हों तब इसे राज हंस योग कहते हैं इस योग के होनेसे पुरुष राजगद्दी के सुखका भोगने वाला होता है ॥ ९५ ॥ इति राजहंसयोगफलम् ॥

अथ चिल्हिपुच्छनामयोगःफलंच—

सिंहासने च हंसे च दण्डे योगे मरुद्ध्वजे ।
चतुःसागरयोगे च चिह्लीपुच्छो महाफलः ॥ ९६ ॥

जिस मनुष्य की जन्म कुंडली में सिंहासन, हंस, दंड, मरुध्वज, और चतुः सागर योगमें चिल्हि पुच्छ नामक योग होतो यह योग जातक को महा फल का देने वाला होता है ॥ ९६ ॥

तुलामकरमेषाद्यलग्ने वैं ह्यथवा क्वचित् ।
सिंहासने च डमरौ चिह्लीपुच्छःस शस्यते ॥९७॥

यदि किसी के तुला मकर मेष या जन्म लग्न में अथवा कहीं अन्यत्र सिंहासन और डमरु योग पडजाने से भी चिल्हि पुच्छ नामक योग हो जाता है और वह अति प्रसंशनीय होता है ॥ ९७ ॥

मृगे कर्के च पुच्छःस्याद्राजहंसः सुखप्रदः ।
कुंभे च मन्मथे चैव चिह्लीपुच्छोऽमिधीयते ॥ ९८ ॥

अगर मकर कर्क कुम्भ तथा मन्मथ (सप्तमराशि) लग्न होवे और राज हंसयोग की प्राप्ति होवे तो वह जातक को सुखप्रद चिल्हिपुच्छ योग होता है ॥ ९८ ॥

मृगे कर्के ध्वजे पुच्छःकन्यालौ वृषभे झषे ।
चिह्लीपुच्छो भवेद्योगश्चतुः सागरगोचरे ॥ ९९ ॥

मकर कर्क लग्नमें यदि ध्वज योग होजाय और कन्या वृश्चिक वृष मीन लग्नमें चतुःसागर योग हो तब भी चिल्हिपुच्छ नामक योग होता है ॥ ९९ ॥

योगोदितफलं पुच्छःकरोति द्विगुणं फलम् ।
तेन योगाधियोगोऽयं लग्नेऽपि कस्यचिन्मते ॥१००॥

पुच्छ योग के संबन्ध से पूर्वोक्त योगों का द्विगुण फल होजाता है इसी हेतु से यह योग योगावियोग होजाता है और किसीका मत हैकि यह लग्नमें भी होजाताहै

घटशून्ये नृपसचिवो गोमहिषीहयगजैर्युक्तः ।
नीतिज्ञो बहुपुत्रो लग्नेऽपि च सम्मताः केचित् ॥१०१॥

यदि कुम्भ को छोड़कर किसी अन्य लग्न में यह योग पडजाय तो वह मनुष्य राजा का मंत्री गौ भैंस घोड़े हाथी से युक्त, नीति जानने वाला, अनेक पुत्रों से युक्त होता है ऐसा किसी आचार्य का मत है ॥ १०१ ॥

लालाटिकयोगः—

चंद्रोऽष्टमेविधोर्गेहेऽर्कार्किशुक्रग्रहाः स्थिताः ।
केमद्रुमे च संपूर्णे योगो लालाटिको मतः ॥ १०२ ॥

जिसकी कुंडली में अष्टम स्थान में चन्द्रमा बैठा हो और चन्द्रमा के घर (कर्क) में सूर्य शनि और शुक्र बैठे हों तब पूर्णतया केमद्रुम योग हो तभी लालाटिक योग होता है ॥ १०२ ॥

आजन्मतो भवति कारखगैःप्रसिद्धः
शिल्पादिकर्मकुशलो मुशलाकृतिश्च ।
भूर्यात्मजोऽपि लभते विविधामलक्ष्मीं-
जन्मांतरेऽपि न जहाति ललाटयोगे ॥ १०३ ॥

जिसकी जन्म कुंडलीमें कारक ग्रह हों और लालाटिक योग आ पडे तो वह मनुष्य खूब प्रसिद्धि पाने वाला, शिल्प आदि कर्म के करने में कुशल; मुशल की आकृति के समान आकृति वाला, अनेक पुत्र संतान वाला; अनेक प्रकार लक्ष्मी युक्त होता है जिसे वह लक्ष्मी जन्मांतर में नहीं छोड़ती है ॥ १०३ ॥ इति ॥

महापातकयोगः—

राहुणा सहितश्चंद्रःसपापगुरुवीक्षितः ।
महापातकयोगोऽयं यदि शक्रसमो भवेत् ॥ १०४ ॥

और जिसकी कुंडली में राहु से युक्त चन्द्रमा हो और उसे पाप ग्रह युक्त गुरु देखता हो तो महापातक नामक योग होता है इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य यदि इन्द्रके समान भी हो तब भी महापातक करने वाला होता है ॥ १०४ ॥

अथ बलीवर्दहंतायोगः—

भौमो न वीक्षते लग्नं लग्नं पश्यति भास्करः ।
गुरुशुक्रौ न वीक्षेते बलीवर्देन हन्यते ॥ १०५ ॥

जिसके लग्नको मंगल न देखता हो और सूर्य लग्न को देखता हो और गुरु शुक्रभी लग्न को न देखते हों जिसके यह योग होता है वह मनुष्य बैल के हेतु से मृत्यु पाता है ॥ १०५ ॥

अथ हठहंतायोगः—

आयस्थानगते चन्द्रे चन्द्रस्थानगते रवौ ।
हठेन नाशो विज्ञेयःपञ्चरात्रौ विशेषतः ॥ १०६ ॥

चन्द्रमा लग्न से ग्यारहवें स्थान में बैठा हो और चन्द्रमाके स्थान (कर्क) में सूर्य बैठा हो उस मनुष्य का हठ से नाश (मरण) होता है इसमें पंचरात्रि अवधि विशेष करके समझना ॥ १०६ ॥

अथवृक्षहंता योगः—

मदनो नाम योगश्चेल्लग्नं स्याद्राहु वीक्षितम् ।
वृक्षस्थं मरणं तस्य यदि शक्रसमो भवेत् ॥ १०७ ॥

और जिसकी कुंडली में मदन नाम का योग होवे और लग्न को राहु देखता होवे तब वह मनुष्य इन्द्र की बराबर होता है तब भी वृक्ष से गिरकर मरता है ।

अथ नासाछेदयोगः—

षष्ठस्थानगते शुक्रे तनुस्थानगते कुजे ।
नासाच्छेदकरो योगो वदन्तिमुनिसत्तमाः ॥ १०८ ॥

जिसके लग्न से छटे घर में शुक्र हो और लग्न में मंगल हो वह मनुष्य नासिका का छेदन पाता है ये मुनि मुख्यों ने कहा है ॥ १०८ ॥

अथ कर्णछेदयोगः—

मंदेन दृश्यते चन्द्रो लग्ने च रविभार्गवौ ।
शुभग्रहा न पश्यन्ति कर्णच्छेदो न संशयः ॥ १०९ ॥

जिसके लग्नमें शुक्र सूर्य बैठे हों, और शनि चन्द्रमा को देखता हो, और शुभ ग्रह कोई चंद्रमाको देखते न हों तब अवश्य उसपुरुषके कर्णच्छेदन (कनकट)योग होताहै

अथ पादखंजयोगः—

कविना सहितो मंदो गुरुणा सहितःकविः ।
शुभग्रहा न पश्यंति पादखंजो भवेन्नरः ॥ ११० ॥

जिसकी कुंडलीमें शुक्र सहित शनि एक स्थान में बैठे हों, या शुक्र बृहस्पति दोनों एकत्र बैठे हों और शुभ ग्रह कोई उन्हें देखता न हो, तब वह मनुष्य पैर से लंगड़ा होता है ॥ ११० ॥

अथ सर्पहंतायोगः—

लग्नाच्च सप्तमस्थाने शन्यर्कौ राहुसंयुतौ ।
सर्पेण वाधा तस्योक्ता शय्याया स्वपतोऽपि च ॥ १११ ॥

जिसके लग्न से सप्तम घर में शनि सूर्य और राहु तीनों बैठे हों उस को शय्या पर सोते को सर्प काटता है इसी हेतु से मरता है ॥ १११ ॥

अथ व्याघ्रहंतायोगः—

गुरुस्थानगते सौम्ये शनिस्थानगते कुजे ।
पंचविंशतिवर्षे च वने व्याघ्रेण हन्यते ॥ ११२ ॥

जिसके बुध तो गुरु स्थान ९।१२ में बैठा हो और शनि के स्थान १०।११ में मंगल बैठा हो वह मनुष्य जंगल (घोरडांग) में पचीसवें वर्षमें व्याघ्रसे मृत्यु पाताहै

अथ असिघातयोगः—

शुक्रस्थानगते चंद्रे चंद्रस्थानगते शनौ ।
अष्टाविंशतिवर्षे च ह्यसिघातेन मृत्युदः ॥ ११३ ॥

जिसकी जन्म कुंडली में शुक्र के घर २।७ में चन्द्रमा हो तथा चन्द्रमाके स्थान (कर्क) में शनि हो वह मनुष्य अट्ठाईसवें वर्ष में तलवार लगनेसे मृत्यु पाता है

अथ शरहंतायोगः—

धर्मस्थानगते भौमे शन्यर्कौ राहुसंयुतौ ।

शुभग्रहा न पश्यंति शरक्षेपेण हन्यते ॥ ११४ ॥

शनि और सूर्य राहु युक्त होवें, और मंगल नवम स्थान में स्थित हो, और शुभ ग्रह कोई देखता न हो तब वह मनुष्य तीर के लगने से मृत्यु पाता है ॥ ११४ ॥

अथ ब्रह्महायोगः–

रविणा सहितो भौमःशनिर्वा जीवसंयुतः ।
अष्टाविंशतिवर्षे च ब्रह्मघाती न संशयः ॥ ११५ ॥

जिसकी कुंडली में सूर्य के साथ मंगल बैठा हो, या बृहस्पति के साथ शनि बैठा हो वह मनुष्य अट्ठाईसमें वर्ष में ब्राह्मण का मारने वाला होता है ॥११५॥

अथ पंचापत्यनाशकयोगः–

रविस्थानगते चंद्रे गुरुःस्वस्थानसंस्थितः ।
सागरे च स्थिते लग्ने पंचापत्यविनाशकृत् ॥ ११६ ॥

सूर्य के स्थान ५ सिंहमें चन्द्रमा बैठा हो, और गुरुके स्वस्थान(धनु मीन) में ही वर्तमान हो, तथा लग्न के विचार से चतुः सागर योग भी हो तब यह योग पंच अपत्य [संतान] नाश करने वाला होता है ॥ ११६ ॥

अथ दोलायोगः–

मीने मेषे च चापे च स्थिताःस्थानत्रये ग्रहाः ।
दोलासंज्ञकयोगः स्याद्राज्यदोऽयमुदाहृतः ॥ ११७ ॥

जिसकी कुंडली में समग्र ग्रह मीन मेष और धनु इन्हीं तीन घरों में बैठे हों तब यह दोला नामक योग होता है यह योग राज्य देने वाला बतलाया है ॥११७॥

अथ केन्द्रस्थगुरु फलम्–

सन्मानदानगुणपात्रपरीक्षितो वा कलानिधिःकौशलगीतनृत्यः ।
मंत्रीश्वरो राजसभाविवेकी केंद्रस्थिते पापविवर्जिते गुरौ॥११८॥

जिसकी जन्म कुंडली में केन्द्र स्थानों में कोई भी पाप ग्रह स्थित न हो, केवल बृहस्पति ही किसी केन्द्र स्थान में आ पड़े, तो वह मनुष्य सन्मान पाने वाला, दान तथा गुणपात्रों से परीक्षित, कलाओं का स्थान, गाने नाचने में कुशल, मंत्रियों का स्वामी, राजसभा के विचारों का जानने वाला होता है ॥ ११८ ॥

अथ पदकविच्छेदयोगः—

लग्नस्थानगतो भौमोराहुशन्यर्कवीक्षितः ।
योगःपदकविच्छेदो यदि शक्रसमो भवेत् ॥ ११९ ॥

जिसके लग्न में मंगल बैठा हो और शनि सूर्य राहु उसे देखते हों तब इसे पदकविच्छेद योग कहते हैं और एतद्योगक मनुष्य इन्द्र के समान भी क्यों न हो तब भी वह प्राप्त हुए किसी ऊंचें अधिकार के पदसे च्युत होजाता है ॥११९॥

अथेच्छातो मृत्युयोगः—

केंद्रस्थानगते भौमे सैंहिकेये च सप्तमे ।
तदा नित्यं विजानीयादिच्छामृत्युस्तदा भवेत् ॥१२०॥

जिसके जन्माङ्ग में केंद्रमें मंगल बैठा हो और सप्तम घरमें राहू हो तब उस मनुष्य की इच्छा से मृत्यु होती है ॥ १२० ॥

अथ अल्पमृत्युयोगः—

लग्नात्सप्तमशीतांशुः पापाष्टशुभलग्नगः ।
लग्नस्थितो यदा भानुःसमान्ते म्रियते शिशुः ॥१२१॥

जिसके लग्नसे सप्तम स्थान में चन्द्रमा स्थित हो और पाप ग्रह अष्टम घरमें स्थित हो तथा शुभ ग्रह लग्न में बैठे हों और लग्न में सूर्य हो वह बालक ऐक वर्ष के अन्त में मर जाता है ॥ १२१ ॥

अथ राजयोगप्रकरणं लिख्यते—

लग्ने लग्नपतिर्बलान्वितवपुःकेंद्रे त्रिकोणेशिवम्
पृच्छाजन्मविवाहमानतिलके कुर्यान्नृपं तं ध्रुवम् ।
सच्छीलं विभवान्वितं गजयुतं मुक्तातपत्रान्वितम्
जातं निम्नकुले विभूतिपुरुषं शंसंति गर्गादयः ॥ १ ॥

अब राजयोग प्रकरण वर्णन करते हैं कि जिस मनुष्य की जन्म कुंडली में लग्नेश बली होकर लग्नमें या केंद्र१।४।७।१०में या त्रिकोण ९।१२ में या ग्यारहवें घरमें बैठा हो तब वह जातक राजा होता है और उत्तम शीलवान्, अनेक वैभवोंसे

युक्त, बहुत से हाथी, घोडे, मोती छत्र आदि से सम्पन्न होवे और अगर नीच कुल में भी जन्म लिया होवे तबभी विभूति युक्त होता है ऐसा गर्गादि ऋषियों ने कहा है तथा इस योग का विचार विद्वानों को प्रश्न समय, विवाह, यात्रा राज तिलक आदि अवसरों पर भी करना चाहिये ॥ १ ॥

एकःशुक्रो जननसमये लाभसंस्थे च केंद्रे—
जातोवै जन्मराशौ यदि सहजगते प्राप्यते वा त्रिकोणे ।
विद्याविज्ञानयुक्तो भवति नरपति विश्वविख्यातकीर्ति-
र्दानी मानी च शूरो हयगुणसहितःसद्गजैःसेव्यमानः॥२॥

जिसकी जन्म कुंडली में अकेला शुक्र लाभ स्थान ११ में या केंद्र १।४।७।१० में जन्मराशि में या तीसरे स्थान में अथवा त्रिकोण ९।५ में बैठा हो तब वह मनुष्य विद्या और विज्ञान से युक्त, विश्व में विख्यात जिसकी कीर्तिः दान करने वाला राजा; बडा मानी, शूरवीर, हयगुण (अश्वविद्या) जानने वाला और हस्तीओं से सेव्यमान होता है ॥ २ ॥

दशमभवननाथे केंद्रकोणे धनस्थे ऽवनिपतिवलयाने
शस्तसिंहासनस्थे । स भवति नरनाथो विश्वविख्यातकीर्ति--
र्मदगलितकपोलैःसद्गजैःसेव्यमानः ॥ ३॥

और दशम घरका स्वामी ग्रह केंद्र १।४।७।१० या त्रिकोण ९।५ में या धन २ में स्थित होवे तब वह मनुष्य राज सिंहासन का बैठने वाला, जगत में विख्यात जिसकी कीर्ति, और मदमत्त हाथियों से परिपूर्ण रहता है ॥ ३ ॥

एकोऽपि केंद्रभवने नवपंचमे वा भास्वन्मयूखविमलीकृतदिग्विभागः।
निःशेषदोषमपहृत्य शुभप्रसूतं दीर्घायुषं विगतरोगभयंकरोति ४

जिसके जन्म समय में कोई एक भी शुभ ग्रह पूर्ण बली होकर१।४।७।१०में या नवम पंचम घरमें चमकती हुई अपनी किरणों से दिशाओंको प्रकाशित करता हुआ (उदित होकर) स्थित हो, तब वह जातक के अनेक दोषों को दूर करके शुभ को करता है और उसको दीर्घायु, और रोगों के भयसे रहित करता है ॥ ४ ॥

चंद्रःपश्येद्यदादित्यं बुधः पश्येन्निशापतिम् ।
अस्मिन्योगे तु यो जातःस भवेद्वसुधाधिपः ॥ ४ ॥

और जिसकी कुंडली में चन्द्रमा सूर्यको देखता हो, और बुध सूर्य चन्द्रमा को देखता हो, इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य पृथ्वी का पति राजा होताहै ॥५॥

यदि भवति च केंद्री यामिनीनाथ एवम्-
प्रवितरति सुभार्यां पुत्रिणीं वा सुरूपाम् ।
धनकनकसमृद्धिं माणिकं हीररत्ने-
रचयतिमृगनाभि द्रव्य वर्यैः शरीरम् ॥ ६ ॥

और जिसके चन्द्रमा केन्द्र में बैठा हो तब उस पुरुष को अत्यन्त रूपवती, प्यारी; भार्या मिलती है और धन सुवर्ण की समृद्धिसे युक्त, माणिक हीरा रत्नोंसे युक्त, और कस्तूरी युत चन्दन का लगाने वाला होता है ॥ ६ ॥

शुक्रो यस्य बुधो यस्य यस्य केंद्रे बृहस्पतिः ।
दशमोऽगारको यस्य स जातःकुलदीपकः ॥ ७ ॥

और जिसकी कुंडली में शुक्र बुध बृहस्पति तीनों ग्रह केंद्र में १।४।७।१० और मंगल दशम स्थान में बैठे हों वह मनुष्य अपने कुलका दीपक (उन्नति करने वाला, होता है ॥ ७ ॥

हयरथनरनागोद्यानरत्नैःप्रपूर्णोःजलधितटनिवासीरत्नतुल्यंचधान्यम्
बहुजनकुलमित्रैःसत्यवादी प्रसूतो भवति यदि च केंद्री दैत्यपूज्यो-
बुधश्च ॥ ८ ॥

और जिसकी कुंडली में शुक्र बुध केन्द्रस्थित हों वह मनुष्य घोडा रथ नौकर बगीचा हाथी रत्नों से परिपूर्ण, समुद्र तटका रहने वाला, धान्य, उसके राज्य में सुन्दर होते रहें, मनुष्यों को प्रिय सत्य बोलने वाला होता है ॥ ८ ॥

किंकुर्वंति ग्रहाःसर्वे यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः ।
मत्तमातंगयूथानां भिनत्त्येकोऽपि केसरी ॥ ९ ॥

और जिसके केंद्र १।४।७।१० में बृहस्पति बैठा हो उस मनुष्य के यदि अनेक

कुयोग हों तब भी उन अनेक कुयोगों को अकेला ही बृहस्पति दूर करता है जैसे मत्तमातंग यूथों को अकेला ही सिंह नाश करता है ॥ ९ ॥

एक एव सुरराजपुरोधाःकेंद्रगोऽथ नवपंचमगो वा ।
लाभगो भवति यत्र विलग्ने तत्र शेषखचरैरबलैःकिम् ॥१०॥

अकेला ही बृहस्पति यदि केन्द्र १।४।७।१० में या नवम पंचम घर में बैठा हो या लग्न में या ग्यारहवें घरमें स्थित हो तब निर्बल और अनेक ग्रहों से क्या प्रयोजन है ॥ १० ॥

भवति मदनमूर्तिर्वल्लभःकामिनीनां-
सकलजनसमर्थो दीर्घजन्मा विधेयः ।
गजविषयगुणज्ञो द्रव्यमुख्यः प्रधानः
सधनकनकपूर्णो दैत्यपो यस्य केंद्रे ॥ ११ ॥

और जिसकी कुंडली में शुक्र यदि केंद्र १।४।७।१० में स्थितहो तब वह मनुष्य कामदेव के समान सुन्दर स्वरूप, कामिनीयों को प्रिय, दीर्घायु, सब मनुष्यों में समर्थ गज विषय गुणों का जानने वाला, द्रव्य में मुख्य, सबों में प्रधान, धन सुवर्ण से परिपूर्ण होता है ॥ ११ ॥

धनवान्प्राज्ञःशूरो मंत्री वा दंडनायकः पुरुषः ।
दशमस्थे रवितनये बृन्दपुरग्रामनेता वा ॥ १२ ॥

और जिसके कुंडली में लग्न से दशम घरमें शनि बैठा होता है तब वह मनुष्य धनवान्, बुद्धिमान्, शूरवीर, राजा का मन्त्री, दंड देने वाला और समुदाय तथा पुर ग्रामका नेता (स्वामी) होता है ॥ १२ ॥

तुलाकोदण्डमीनस्थो लग्नस्थोऽपि शनैश्चरः ।
करोति भूपतेर्जन्मवंशे च नृपतिर्भवेत् ॥ १३ ॥

और जिसकी कुंडली में तुला धन मीनका होकर लग्न में शनि बैठा हो वह मनुष्य राजकुल में जन्म लेकर स्वयंभी राजा ही होता है ॥ १३ ॥

दिव्यस्त्रीवरकांचनाम्बरयुतःसाधारलक्ष्मीमयः—

शास्त्रंकौतुकगीतनृत्यरसिकव्यापारदीक्षागुरुः ।
पुत्रभ्रातृजनान्वितः स्थिरमतिः कर्ताऽतिप्रीत्यान्वितो–
जीवः केंद्रगतो यदा भवेन्निजसुखी सत्कर्मकारी नरः ॥१४॥

जिसकी कुंडली में केन्द्र १।४।७।१० में बृहस्पति होता है वह मनुष्य दिव्य स्त्री सुवर्ण वस्त्र तथासाधारण संपत्ति से युक्त, शास्त्र अनेक कौतुक गीत नृत्यादि व्यापार दीक्षा में गुरु; पुत्र, भाई बन्धु से युक्त, स्थिर बुद्धि वाला, और प्रीति से सब कामों का करने वाला, अपने सुखसे सुखी और सत्कर्म करने वालो होता है ॥ १४ ॥

आकाशमंदिरगतस्तनुपः स्वगेहे कुर्यान्नयं नृपतिचक्रवरैः सुसेव्यः ।
सैन्यप्रतापदहनाहतशत्रुपक्षं शक्रो यथा सुरगणैश्च विराजमानः ॥

और जिसकी कुंडली में लग्नेश स्वक्षेत्री होकर दशम स्थान में बैठा हो तब उस मनुष्य को राज मंडलसे सेवित करता है और शत्रुमण्डल पराजय करने वाली सेनासे युक्त, देवताओं से सुशोभित इन्द्र के समान होता है ॥ १५ ॥

उपचयगृहसंस्थो जन्मिनो यस्य चंद्रः—
स्वगृहमथ न वांशे केंद्रजाताश्च सौम्याः ।
सकलबलवियुक्ता श्चैव पापाभिधानाः स—
भवति नरनाथः शक्रतुल्यो बलेन ॥ १६ ॥

और जिसके जन्म कालमें चन्द्रमा उपचय ३।६।१०।११ घरमें स्थित होवे और शुभ ग्रह अपने २ घर अथवा अपने नवांश में या केन्द्र १।४।७।१० में बैठे हों और पापग्रह निर्बल होकर कहीं भी बैठे हों तब वह मनुष्य विशेष करके सेना से युक्त; इन्द्र के समान राजा होता है ॥ १६ ॥

विद्याकलागुणविराजितकामधेनुर्भोगैः सुरूपयुवतीजितकामराजः ।
देशाधिपत्यपुरदर्शनतः श्रमान्तोमीने सितेसकलमण्डलदीप्तदीक्षः॥

जिसके जन्मांग में शुक्र मीन राशि स्थित होकर केन्द्र में बैठा हो वह जातक विद्या कला तथा अनेक गुणों से सुशोभित कामधेनु के समान भोगों से परिपूर्ण, सुन्दर युवतियों के साथ काम क्रीडा करने वाला, अपने देश तथा रियासत के शहर एवं ग्राम आदिकों में बन्दोवस्त के लिये अधिक दौडा करने से श्रान्त

और संपूर्ण मंडल भर में जिसकी शासनरूप दीक्षा दीप्त रहे ॥ १७ ॥

कामाजकन्यारिपुरंध्रसंस्थे केंद्रे त्रिकोणे व्ययगे च राहुः ।
कामी च शूरो बलवान्स भोगी छत्रंगजाश्वा बहुपुत्रता च ॥१८॥

और जिसकी कुंडली में सप्तम घरमें मेष या कन्या और केंद्र में या त्रिकोण में या छटे आठवें घरमें अथवा बारहवें घरमें राहु हो वह मनुष्य बडा कामी, शूरवीर, बलवान्, भोग भोगने वाला, और हाथी, घोडा, छत्र और अनेक पुत्रवान् होता है ॥ १८ ॥

मृगपतिवृषकन्याकर्कटस्थे च राहौ
भवति विपुललक्ष्मी राजराजाधिपो वा ।
हयगजनरनौकामेदिनीपंडितश्च
स भवतिकुलदीपो राहुतुङ्गे नराणाम् ॥ १९ ॥

और जिसकी कुंडली में सिंह कन्या बृष कर्क इन में से किसी राशि में राहु हो वह मनुष्य विपुल लक्ष्मी संपन्न, वा राजाधिराज होता है अगर वही राहु उच्चका हो तो घोडा हाथी; नौकर चाकर, नाव जमीन आदि से युक्त, बडा पंडित और अपने कुल का दीपक होता है ॥ १९ ॥

केन्द्रत्रिकोणे बुधजीवशुक्रा दृष्टा नराणां यदि जन्मकाले ।
धर्मार्थविद्यायुतकीर्तिलाभःशान्तःसुशीलःस नराधिपःस्यात् २०

और जिसकी कुंडली में बुध बृहस्पति और शुक्र केन्द्र १।४।७।१० में और त्रिकोण में बैठे हों तो वह मनुष्य धर्म अर्थ विद्या कीर्ति लाभ से युक्त, शांत, बडा सुशील, राजा होता है ॥ २० ॥

भृगुसुतसुरपूज्यश्चन्द्रमाः केन्द्रवर्ती
बहुसुखधनवृद्धिःकर्म साध्यं नराणाम् ।
रविसुतशशिपुत्रे भानुजीवे त्रिकोणे
क्षितिसुतदशमे वै राजयोगा भवंति ॥ २१ ॥

जिसके शुक्र गुरु और चन्द्रमा केंद्र में हों वह मनुष्य अनेक सुख वृद्धि से युक्त

होता है, और शनि बुध सूर्य बृहस्पति त्रिकोण ९।५ में और मंगल दशम घर में हो तब राज योग होते हैं ॥ २१ ॥

केंद्रत्रिकोणेषु भवन्ति सौम्या दुश्चिक्यलाभारिगताश्च पापाः ।
यस्य प्रयाणेऽप्यथ जन्मकाले ध्रुवं भवेत्तस्य महीपतित्वम् ॥२२॥

जिसके जन्म समय वा यात्रा समय में सौम्य ग्रह केन्द्र में या त्रिकोण में बैठे हों और पापग्रह तृतीय या लाभ ११ और छटे घर में बैठे हों उस मनुष्य को अवश्य भूमिपतित्व होता है इसको यात्रा समय पर भी विचारे इसमें यात्रा करने से कार्य सिद्ध होता है ॥ २२ ॥

लाभे त्रिकोणे यदि शीतरश्मिःकरोत्यवश्यं क्षितिपालतुल्यम् ।
कुलद्वयानन्दकरं नरेन्द्रं ज्योत्स्नेव दीपस्य तमोऽपहर्त्री ॥ २३ ॥

जिसके लाम ११ में या त्रिकोण ९।५ में चन्द्रमा स्थित हो तब वह मनुष्य राजा के समान दोनों कुलका आनन्द करने वाला अंधकार के नाश करने वाले दीपक के उजियाले के समान होता है ॥ २३ ॥

शत्रुस्थाने यदा जीवो लाभस्थाने शशी भवेत् ।
गृहमध्ये स जातश्च विख्यातःकुलदीपकः ॥ २४ ॥

जिसकी कुंडली में छटे घर में गुरु, और लाभ ११ स्थान में चन्द्रमा हो वह मनुष्य अपने कुल का दीपक होता है ॥ २४ ॥

लग्नाधिपो वा जीवो वा शुक्रो वा यत्र केन्द्रगः ।
तस्य पुंसश्च दीर्घायुःस भवेद्राजवल्लभः ॥ २५ ॥

लग्न का स्वामी या बृहस्पति या शुक्र जिसके केन्द्र में स्थित हों वह मनुष्य दीर्घायु और राजवल्लभ होता है ॥ २५ ॥

दशमे बुधसूर्यौ च भौमराहू च षष्ठगौ ।
राजयोगोऽत्र यो जातःस पुमान्नायको भवेत् ॥ २६ ॥

जिसके दशम घर में बुध और सूर्य हों और छटे घर में मंगल और राहु हों तो इस योगमें जन्म लेनेवाला पुरुष नायक (स्वामी) होताहै यहभी राजयोग होताहै

आदौ जीवःशनिश्चान्ते ग्रहा मध्ये निरन्तरम् ।
राजयोगं विजानीयात्कुटुम्बबलमुत्तमम् ॥ २७ ॥

जिसके लग्नमें बृहस्पति और अंत (व्ययभाव) में शनि होवे और सब ग्रह बीच में स्थित होजांय तब भी राज योग होता है इस योग के होने से उत्तम कुटुम्ब का बल होता है ॥ २७ ॥

सहजस्थो यदा जीवो मृत्युस्थाने यदा सितः ।
निरन्तरं ग्रहा मध्ये राजा भवति निश्चितम् ॥ २८ ॥

और तीसरे स्थान में बृहस्पति हो तथा अष्टम में शुक्र हो और बाकी सब ग्रह मध्यम में होवें तब इस योग के होने से वह पुरुष निश्चित ही राजा होताहै ॥२८॥

जीवो वृषे सुधारश्मिर्मिथुने मकरे कुजः ।
सिंहे भवति सौरश्च कन्यायां बुधभास्करौ ॥ २९ ॥
तुलायामसुराचार्यो राजयोगो भवेदयम् ।
अत्र योगे समुत्पन्नो महाराजो भवेन्नरः ॥ ३० ॥

जिसकी कुंडली में वृष में गुरु; और मिथुन पर चन्द्रमा, और मकर पर मंगल और सिंह पर शनि, और बुध सूर्य कन्या राशि के होकर बैठे हों और तुला राशि का होकर शुक्र बैठा हो तब भी इस राजयोग वाला मनुष्य अवश्य महाराज होताहै

अष्टमे द्वादशे वर्षे यदि जीवति मानवः ।
सार्वभौमस्तदा राजा जायते विश्वपालकः ॥ ३१ ॥

परन्तु यदि ये मनुष्य अष्टम द्वादश वर्ष में जीता रहे तब वह विश्वका पालन करने वाला सार्वभौम (सब भूमिका) राजा होता है ॥ ३१ ॥

एको जीवो यदा लग्ने सर्वे योगास्तदा शुभाः ।
दीर्घजीवी महाप्राज्ञो जातको नायको भवेत् ॥ ३२ ॥

यदि केवल बृहस्पति ही लग्न में स्थित होवे तब सब योग शुभ होते हैं, वह मनुष्य दीर्घ काल तक जीने वाला बडा बुद्धिमान् और सबका स्वामी होताहै॥३२॥

धने शुक्रोऽथ भौमश्च मीने जीवस्तुले बुधः ।

नीचस्थौ शनिचन्द्रौ च राजयोगस्तदा ध्रुवम् ॥ ३३ ॥

जिसकी कुंडली में शुक्र मंगल धन भावमें, मीन राशिमें बृहस्पति, और तुला राशि पर बुध, और शनि चन्द्रमा दोनों ग्रह नीच (मेष–वृश्चिक) के होकर बैठेहों तब भी यह अवश्य राजयोग होता है ॥ ३३ ॥

अस्मिन्योगे च यो जातःस राजा धनवर्जितः ।
दाता भोक्ता च विख्यातो मान्यो मण्डलनायकः ॥ ३४ ॥

इस योग में जिसने जन्म लिया है वह मनुष्य राजा तो होता है परन्तु धनसे वर्जित होता है और दाता भोक्ता सर्वत्र विख्यात, सबों से मान पाने वाला, और मंडल भरका पालने वाला होता है ॥ ३४ ॥

मीने शुक्रो बुधश्चान्ते धने राहुस्तनौ रविः ।
सहजे च भवेद्भौमो राजयोगोऽभिधीयते ॥ ३५ ॥

और जिसकी कुंडली में मीनका शुक्र, और बुध व्ययभाव में, धनमें राहु; लग्न में सूर्य, और तीसरे घरमें होवे मंगल, इस योग का भी जन्म लेने वाला मनुष्य राजा होता है ॥ ३५ ॥

सहजे च यदा जीवो लाभस्थाने च चन्द्रमाः ।
स राजा गृहमध्यस्थो विख्यातःकुलदीपकः ॥ ३६ ॥

तीसरे घरमें बृहस्पति, लाभ ११ में चन्द्रमा होवे इस योगमें जन्म लेने वाला जातक अपने कुलका दीपक, न कहीं घूमता हुआ केवल घरमें ही बैठा हुआ सर्वत्र प्रसिद्धि पा जाने वाला और राजा होता है ॥ ३६ ॥

शुभग्रहाःशुभक्षेत्रे भवन्ति यदि केन्द्रगाः ।
तदा शुभानि कर्माणि स करोति हि जातकः ॥ ३७ ॥

और जिसकी कुंडली में शुभग्रह सब शुभ क्षेत्र के होकर केंद्र में बैठे हों इस योगमें जन्म लेने वाला पुरुष सदा शुभकर्म का करने वाला होता है ॥ ३७ ॥

उच्चस्थानगताःसौम्याःकेन्द्रस्थाने भवन्ति चेत् ।
ध्रुवं राज्यं भवेत्तस्य यदि नीचसुतो भवेत् ॥ ३८ ॥

और यदि शुभग्रह उच्च के होकर केंद्र में बैठे हों तब नीच जाति का भी पुत्र हो तब भी वह पुरुष अवश्य राजा होता है ॥ ३८ ॥

स्वक्षेत्रस्थो यदा जीवो बुधःसौरिश्च चेद्भवेत् ।
तस्य जातस्य दीर्घायुःसम्पत्तिश्च पदे पदे ॥ ३९ ॥

और जिसकी कुंडली में बृहस्पति बुध और शनि ये तीनों ग्रह अपने क्षेत्रके होकर बैठे हों इस योग में जन्म लेने वाला पुरुष दीर्घायु और पदपद में संपत्ति संपादन करने वाला होता है ॥ ३९ ॥

मीने बृहस्पतिःशुक्रश्चन्द्रमाश्च यदा भवेत् ।
तस्य जातस्य राज्यं स्यात्पत्नी च बहुपुत्रिणी ॥ ४० ॥

और जिसकी कुंडली में बृहस्पति शुक्र और चन्द्रमा ये तीनों ग्रह मीन राशि के होकर बैठेहों वह मनुष्य राजा होता है और उसकी पत्नी अनेक पुत्र उत्पन्न करने वाली होती हैं ॥ ४० ॥

पञ्चमस्थो यदा जीवो दशमस्थश्च चन्द्रमाः ।
स राज्यवान्महाबुद्धिस्तपस्वी च जितेन्द्रियः ॥ ४१ ॥

और जिसकी कुंडली में पंचम में बृहस्पति होवे, और दशम में चन्द्रमाहो इस योगमें जन्म लेने वाला मनुष्य राज्यवान् बडा बुद्धिमान्, तपस्वी, और जितेंद्रिय होता है ॥ ४१ ॥

सिंहे जीवस्तुलाकीटचापेषु मकरेऽपि च ।
ग्रहा यदा तदा जातो देशभोगी भवेन्नरः ॥ ४२ ॥

और जिस कुंडली में सिंह राशिमें बृहस्पति, और तुला कर्क धन और मकर राशिमें सब ग्रह बैठे हों तो इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य देश भरका भोगने वाला राजा होता है ॥ ४२ ॥

तुलाकोदण्डमीनस्थो लग्नसंस्थोऽपि चेच्छनिः ।
करोति भूपतेर्जन्म महापुण्यानुभावतः ॥ ४३ ॥

और जिसकी कुंडली में तुला धन मीन या लग्नमें यदि शनि स्थित होवे तब महा पुण्य के फलसे राजा के घरमें जन्म लेने वाला होता है ॥ ४३ ॥

विद्यास्थाने यदा सौम्यःकर्कस्थाने च चन्द्रमाः ।
धर्मस्थाने यदा सौम्या राजयोगस्तदा भवेत् ॥ ४४ ॥

जिसके पंचम में बुध हो; कर्क स्थान में चन्द्रमा, और नवम स्थानमें भी शुभग्रह हों तब भी राजयोग कहलाता है ॥ ४४ ॥

मकरे च घटे मीने वृषे मिथुनमेषयोः ।
ग्रहास्तदा च विख्यातो राजा भवति मानवः ॥ ४५ ॥

और जिसकी कुंडली में मकर कुम्भ मीन वृष मिथुन और मेप इनी लग्नों में सब ग्रहहों तब वह मनुष्य जगत् में विख्यात राजा होता है ॥ ४५ ॥

बुधभार्गवजीवार्कियुक्तो राहुश्चतुष्टये ।
कुरुते कमलारोग्यपुत्रमानादिकं फलम् ॥ ४६ ॥

और जिसकी कुंडली में केंद्र चतुष्टय में बुध शुक्र बृहस्पति और शनि से युक्त राहु स्थित हो तब उस मनुष्य को लक्ष्मी आरोग्य और पुत्र मान आदि फल से युक्त ये ग्रह करते हैं ॥ ४६ ॥

चतुर्थभवने शुक्रो गुरुचंद्रधरासुताः ।
रविसौरियुतास्सान्ति राजा भवति निश्चितम् ॥ ४७ ॥

और जिसके शुक्र; चन्द्रमा, बृहस्पति और मंगल ये चारों ग्रह सूर्य, शनि से संयुक्त होकर चौथे घर में बैठे हों तब वह मनुष्य अवश्य ही राजा होता है ॥४७॥

अष्टमे च व्यये क्रूरो मध्ये च क्रूरसौम्यकौ ।
राजयोगास्त्रयो जाता महाभूपो भविष्यति ॥ ४८ ॥

और जिसकी कुंडली में लग्न से अष्टम व्यय १२ में क्रूर ग्रह हों, और बीचमें शुभ ग्रह अशुभ ग्रहों से युक्त बैठे हों यह भी राजयोग होता है इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य भी महाराज होता है ॥ ४८ ॥

लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ ।
कर्मस्थाने भवेद्भौमोराजयोगोऽभिधीयते ॥ ४९ ॥

जिसके लग्न में शनि और चन्द्रमा बैठे हों, और सूर्य, बृहस्पति त्रिकोण ९।५में

बैठे हों, और कर्म १० स्थान में मंगल बैठा हो तब भी राजयोग कहलाता है ।४६

नवमे च यदा सूर्यःस्वगृहस्थो भवेत्तदा ।
तस्य जीवति नो भ्राता यदि कोऽपि नृपैःसमः ॥ ५० ॥

और जिसके नवम घर में सूर्य स्वक्षेत्री होकर बैठा हो तब उस मनुष्य के भ्राता नहीं जीता है यदि कोई जीवे भी तो राजाके तुल्य होताहै ॥५०॥

द्वित्रितुर्ये सुते षष्ठे कर्मण्यपि यदा ग्रहाः ।
राजयोगं विजानीयाज्जातस्तुच्छकुलेऽपि चेत् ॥ ५१ ॥

और जिसके लग्न से २।३।४।५।६।१० इन्हीं घरों में सब ग्रह बैठे हों तब तुच्छ कुलोत्पन्न भी मनुष्य राजा होता है ॥ ५१ ॥

लग्ने क्रूरे व्यये सौम्यो धने क्रूरश्च जायते ।
राजयोगे न राजा च भूपतिर्भवति स्फुटम् ॥ ५२ ॥

और जिसके लग्न में क्रूर, व्यय १२ में सौम्य ग्रह, और धन घर में भी क्रूर ग्रह होवें तब वह मनुष्य अवश्य ही भूमि का पालन करने वाला होता है ॥ ५२ ॥

लग्ने क्रूरो व्यये क्रूरो धने सौम्यो यदा भवेत् ।
सप्तमे भवति क्रूरःपरिबारक्षयंकरः ॥ ५३ ॥

और जिसकी कुंडली में लग्न व्यय तथा सप्तम में क्रूरहों,औरं धन में सौम्य हों; तब वह मनुष्य अपने परिवार का क्षय करने वाला होता है ॥ ५३ ॥

धने चन्द्रश्च सौम्यश्च मेषे जीबो यदा भवेत् ।
दशमे राहुशुक्रौ च राजयोगोऽभिधीयते ॥ ५४ ॥

और जिसके धन भाव में चन्द्रमा और बुध हों और मेष राशि का गुरु हो और दशम घर में राहु और शुक्र बैठे हों इसको भी राजयोग कहते हैं ॥ ५४ ॥

सिंहे जीवोऽथ कन्यायां भार्गवो मिथुने शनिः ।
स्वक्षेत्रे हिबुके भौमःस पुमान्नायको भवेत् ॥ ५५ ॥

और जिसके सिंह का बृहस्पति, कन्या का शुक्र, मिथुन का शनि, और स्वक्षेत्री होकर चतुर्थ में मंगल, हो तो वह मनुष्य भी राजा होता है ।

शनिचंद्रौ च कन्यायां सिंहे जीवो घटे तमः ।
मकरे च कुजस्तत्र जातःस्याद्विश्वपालकः ॥ ५६ ॥

और शनि चन्द्रमा कन्या राशि के बैठे हों, बृहस्पति सिंह का, राहु कुम्भका, और मकर का मंगल हो तो इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य विश्व का पालन करने वाला होता है ॥ ५६ ॥

शुक्रो जीवो रविर्भौमश्चापे मकरकुंभयोः ।
मीने च वत्सरे त्रिंशे समर्थः सर्वकर्मसु ॥ ५७ ॥

जिसकी कुण्डली में शुक्र बृहस्पति सूर्य और मंगल धन, मकर, कुंभ, मीन इन्हीं राशियों में बैठे हों तो वह मनुष्य तीस वर्ष की अवस्था में सब काम करने को समर्थ होजाता है ॥ ५७ ॥

कर्कलग्ने जीवयुक्ते लाभे चंद्रजभार्गवौ ।
मेषे भानुश्च जातो यो योगेऽस्मिन्नृपतिर्भवेत् ॥५८॥

और जिसके जन्मलग्न कर्क पर गुरु होवे, ग्यारहवें घर में बुध शुक्र, और मेष में सूर्य हो तो इस योग में जन्म लेने वाला भी मनुष्य राजा होता है ॥ ५८ ॥

कर्मस्थाने यदा जीवो बुधःशुक्रस्तथा शशी ।
सर्वकर्माणि सिद्धयन्ति राजमान्यो भवेन्नरः ॥ ५९ ॥

और कर्म १० स्थान में बुध बृहस्पति शुक्र और चन्द्रमा चारों ग्रह बैठे हों तो उस मनुष्य के सब कर्म सिद्ध होते हैं और वह मनुष्य राजमान्य होता है ॥ ५६ ॥

षष्ठेऽष्टमेपञ्चमे वा नवमे द्वादशे तथा ।
सौम्यक्रूरग्रहैर्योगे राजमान्यो न संशयः ॥ ६० ॥

और जिसकी कुंडली में छटे आठवें पंचम नवम और बारहवें घरमें सभी शुभाशुभ ग्रहों का योग हो वह मनुष्य निःसंदेह राजमान्य होता है ॥ ६० ॥

पंचमे च यदा षष्ठे चाष्टमे नवमे क्रमात् ।
भौमराहुसितार्काः स्युर्जातकःकुलपालकः ॥ ६१ ॥

और जिसकी कुंडलीमें क्रमसे पंचम मङ्गल, छटेमें राहु, अष्टम में शुक्र, और नवम में सूर्य बैठा हो वह मनुष्य कुलका पालन करने वाला होता है ॥ ६१ ॥

लग्ने सौरिस्तथा चंद्रश्चाष्टमे भार्गवो यदा ।
जायतेऽत्र नृपो योगे मानी भूरिप्रियःसदा ॥ ६२ ॥

और जिसके लग्नमें तो शनि और चन्द्रमा हो, और अष्टम घरमें शुक्र होवे, तो वह मानी; और बहुतों को प्रिय लगने वाला राजा होता है ॥ ६२ ॥

मिथुनस्थो यदा राहुःसिंहस्थो भूमिनन्दनः ।
अत्र योगे नरो जातो नृपोऽश्वगजनायकः ॥ ६३ ॥

और जिसकी कुंडली में मिथुन का राहु, और सिंहका मंगल बैठा हो वह मनुष्य घोडा हाथीओं का पालन करने वाला राजा होता है ॥ ६२ ॥

चापार्द्धे शशिना युक्तो यदि सूर्यः प्रजायते ।
लग्ने च सबलो मन्दो मकरे च कुजो भवेत् ॥ ६४ ॥

और जिसकी कुंडली में धनके पूर्वार्ध में चन्द्रमा सहित सूर्य बैठा हो और लग्नमें बली होकर शनि और मकर में मंगल बैठे हों ॥ ६४ ॥

अत्र योगे समुत्पन्नो महाराजो भवेन्नरः ।
दूरादेव नमन्त्यस्य प्रतापैश्चरणौ नृपाः ॥ ६५ ॥

तब इस योगमें जन्म लेने वाला मनुष्य महाराज होता है और इसके प्रताप से इसको यावन् मात्र राजा दूरसे हीं चरणों को प्रणाम करते हैं ॥ ६५ ॥

उच्चाभिलाषुकःसूर्यस्त्रिकोणस्थो यदा भवेत् ।
अपि नीचकुले जातो राजा स्याद्धनपूरितः ॥ ६६ ॥

और जिसकी कुंडली में उच्चाभिलाषी सूर्य त्रिकोण में ९।५ बैठाहो तब नीच कुलमें जन्म लेने वाला भी मनुष्य धनपूर्ण राजा होता है ॥ ६६ ॥

धनस्थाने यदा शुक्रो दशमे च बृहस्पतिः ।
षष्ठे च सिंहिकापुत्रो राजा भवति विक्रमी ॥ ६७ ॥

और जिसकी कुंडली में धन स्थान में शुक्र, और दशम में बृहस्पति और छटे में राहु होवे, वह मनुष्य बडा पराक्रमी राजा होता है ॥ ६७ ॥

चतुर्ग्रहा यदैकत्र स्थाने सौम्या भवन्ति हि ।
भ्रातृधीधर्मलग्ने वा राजयोगो भवेदयम् ॥ ६८ ॥

और जिसके जन्म समय में चार सौम्य ग्रह एक स्थान में ही आपडें या चारों ग्रह ३।५।९।१ इन घरों में पृथक् २ बैठे हों तब भी अवश्य राजयोग होता है ॥ ६८ ॥

सर्वैर्ग्रहैर्यदा चन्द्रो विना हेलिं निरीक्ष्यते ।
षष्ठाष्टमे च यामित्रे स दीर्घायुर्नराधिपः ॥ ६९ ॥

सूर्यके बिना ("हेलिः सूर्यः " व० मि०) सब ग्रह चन्द्रमा को देखते हों पर वह चन्द्रमा छटे या आठवें या सातवें घरमें स्थित हो तो इस योग में जन्म होने वाला मनुष्य पूर्ण दीर्घायु का राजा होता है ॥ ६९ ॥

नवमे पञ्चमे स्थाने चतुर्थे च यदा ग्रहाः ।
आदौ जाताश्च नश्यन्ति पश्चाज्जातश्च जीवति ॥ ७० ॥

और जिसकी कुंडलीमें नवम पंचम और चतुर्थ स्थान में ही सब ग्रह बैठे हों तब उसके प्रथम हुऐ बालक मर जाते हैं पिछले हुऐ जीते हैं ॥ ७० ॥

विवाहितायामन्यस्यामेकपुत्रोभवेत्तदा ।
विख्यातो भुवने त्यागी स दीर्घायुर्महीपतिः ॥ ७१ ॥

और फिर दूसरी बिवाहिता स्त्री में एक पुत्र होताहै वह जगतमें विख्यात दान करने वाला, दीर्घायु राजा होता है ॥ ७१ ॥

कन्यायां च यदा राहुःशुक्रो भौमःशनिस्तथा ।
तत्र जातस्य जायेत कुवेरादधिकं धनम् ॥ ७२ ॥

जिसकी कुंडली में कन्या राशि के राहु; शुक्र, मंगल और शनि हों इस योगमें जन्म लेने वाले पुरुषके कुवेर से भी अधिक धन होता है ॥ ७२ ॥

लग्ने मीने जीवशुक्रौ मेषेऽर्को मकरे कुजः ।
दासवंशेऽपि जातोऽसौ राजा छत्रधरो भवेत् ॥ ७३ ॥

जिसकी कुंडली में मीन लग्न हो और उसमें वृहस्पति शुक्र हों तथा मेष का

सूर्य मकर का मंगल होतो वह मनुष्य दास वंशमें भी जन्मा हो तब भी छत्रधारी राजा होता है ॥ ७३ ॥

भ्रातृस्थाने यदा जीवो लाभस्थाने यदा शशी ।
स लोक गृहमध्यस्थो जायते कुलदीपकः ॥७४ ॥

जिसकी कुंडली में तीसरे घरमें बृहस्पति, ग्यारहवें स्थान में चन्द्रमा होवे वह मनुष्य लोगबागों के घरों का मध्यस्थ (फैसला करने वाला) तथा अपने कुल का दीपक होता है ॥ ७४ ॥

दशमस्थौ बुधादित्यौ षष्ठे राहुधरासुतौ ।
राजयोगोऽत्र यो जातःस पुमान्नायको भवेत् ॥ ७५ ॥

जिसकी कुंडली में लग्न से दशम घरमें बुध, सूर्य, छठे घर में राहु और मंगल हों यह राजयोग जिसके होवे वह पुरुष स्वामी होता हैं ॥ ७५ ॥

चतुर्ग्रहैरेकगृहे च संस्थैर्धीधर्मदुश्चिक्यतनुस्थितैर्वा ।
दासश्च जातःक्षितिपालतुल्यो भवेन्नरेन्द्रोऽम्बुधिपारयायी॥७६॥

और जिसकी कुंडली में चार (शुभ या पाप) ग्रह एक घरमें बैठे हों या पंचम नवम तृतीय या लग्न में स्थित हों तो इस योगमें जन्मा मनुष्य राजा अथवा राजा के समान समुद्र पार जाने वाला होता है ॥ ७६ ॥

सुरगुरुशशियुक्ते कर्कटे लग्नसंस्थे-
भृगुतनयबलिष्ठःकेंद्रजातोऽथ शेषाः ।
शिवसहजरिपुस्था यस्य चेज्जन्मकाले-
नियतमिति तदायं चक्रवर्ती नरेशः ॥ ७७ ॥

जिसकी कुंडली में कर्क लग्न होवे और उसी पर गुरु तथा चन्द्रमा स्थित हों और शुक्रबली होकर केन्द्र में हो और शेष सब ग्रह ग्यारहवें तीसरे छटे घरमें स्थित हों तो एतद्योगोत्पन्न मनुष्य दीर्घायु और चक्रवर्ती राजा होता है ॥ ७७ ॥

तुले मीनमेषे वृषे दैत्यपूज्यो भवेद्राजमानी कलाकौतुकी च ।
त्रयं पुत्रवर्यं चिरं जीवितं च भवेद्वत्सरे वन्हियुग्मे च तस्य॥७८॥

जिसकी कुंडली में तुला, मीन; मेष अथवा वृष में शुक्र होवे वह मनुष्य राजाओं से मान पाने वाला, कला कौतुक का जानने वाला होता है परन्तु केवल तेईस वर्ष की आयु भोगता है ॥ ७८ ॥

लग्नाधिपतिःकेंद्रे बलपरिपूर्णःकरोति नृपतुल्यम् ।
गोपालकुलेऽपि जातं किं पुनरिह नृपतिसंभूतम् ॥७९॥

और जिसकी कुंडली में जन्मलग्नेश बली होकर केन्द्र में स्थित हो तब जो किसी गोप कुल में भी जन्म लिया हो तब भी राजा करता है यदि राजकुल में ही जन्म होय तब तो कहना ही क्या है ॥ ७६ ॥

रविस्तृतीयेभृगुनंदनःसुखे बुधो द्वितीये यदि पंचमे स्थितः ।
न नीचराशौ न च खान्तवेश्मगो भवेन्नरेन्द्रस्त्रिसमुद्रपालकः ८०

और जो तृतीय घर में सूर्य, चतुर्थ घर में शुक्र, द्वितीय में या पंचम में बुध हो, पर कोई ग्रह नीचके न हों; और दशम द्वादशमें न बैठे हों तो एतद्योगजातक तीनों समुद्रांत वर्तिनी भूमिका पालन करने वाला राजा होता है ॥ ८० ॥

यदि भवति च केंद्रे धर्मगे स्वोच्चसंस्थः-
सुतभवनगतो वा वाक्पतिर्जन्मकाले ।
स भवति नरनाथःसार्वभौमो जितारिः
शशिबुधभृगुपुत्रैरन्वितो वीक्षितो वा ॥ ८१ ॥

और जिसके जन्म समय में केन्द्र में या नवम में अथवा अपने उच्च ४ में या पंचम में बृहस्पति बैठा हो और चन्द्रमा बुध शुक्र से युक्त या दृष्ट हो तब वह मनुष्य शत्रुजयी सार्वभौम राजा होता है ॥ ८१ ॥

विलग्ननाथः सहजाऽस्तसंस्थःसुहृद्गृहे मित्रयुतो यदि स्थितः ।
करोति सर्वं पृथिवीतलस्य दुर्वारवैरिघ्नमहोदयं शुभम् ॥ ८२ ॥

जिसके लग्नेश मित्रों के घर में मित्रों के साथ ही रहता हुआ तृतीय या सप्तम में आ पडे तब उस मनुष्य को सब भूमंडल का वैरि रहित राजा करता है ॥८२॥

लग्नं विहाय केंद्रे सकलकलापूरितो निशानाथः ।

विदधाति महीपालं विक्रमबलवाहनोपेतम् ॥ ८३ ॥

और जिसकी कुंडली में पूर्ण बली चन्द्रमा लग्नातिरिक्त ४।७।१० में बैठा हो तब उस मनुष्य को विक्रम सेना तथा वाहन युक्त राजा करता है ॥ ८३ ॥

स्वोच्चे स्वकीयभवने क्षितिपालतुल्यो-
लग्नेऽर्कजे भवति देशपुराधिनाथः ।
दारिद्र्यदुःखःपरपीडित एव लोके-
शेषेषु सर्वजननिन्द्यशरीरचेष्टः ॥ ८४ ॥

जिसकी कुंडली में शनि अपने उच्चका केन्द्र या अपने घर १०-११ में बैठे तब वह मनुष्य राजा के तुल्य होता है और अगर वैसा ही शनि लग्न में बैठजाय तब वह मनुष्य देश तथा पुर का स्वामी होता है, उक्त लक्षण हीन शनि होने से दारिद्र दुःख और शत्रु से पीडित सर्वत्र निंदा युक्त मनुष्य होता है ॥ ८४ ॥

लग्ने चोच्चपदं गते दिनपतौ चन्द्रे धनस्थे भृगौ-
दुश्चिक्ये तमसा युते सुखगते जीवे व्ययस्थे बुधे ।
लाभे सूर्यसुते हि शत्रुभवने जातःकुलेभूपते-
र्जातोऽयंमनुजःसदा नृपगणे सम्राट्पदं गच्छति ॥ ८५ ॥

जिसके उच्चका सूर्य होता हुआ जन्म लग्न में आपडे और चन्द्रमा दूसरे में हो, तृतीय में राहु युक्त शुक्र होवे; चौथे में वृहस्पति, बारहवें बुध, और शनि ग्यारहवें या छटे घर में बैठा हो इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य चक्रवर्ती राजा होताहै

उच्चाभिलाषी सविता त्रिकोणे शशी तथा जन्मनि यस्य जंतोः ।
भुनक्ति पृथ्वीं स हि रत्नपूर्णां बृहस्पतिःकेंद्रगतो यदि स्यात् ॥ ८६ ॥

और जिसके उच्चाभिलाषी मीन राशिका होता हुआ सूर्य जन्म लग्न से त्रिकोण में बैठजाय तथा चन्द्रमा लग्न में और वृहस्पति केन्द्रगत हो तब वह मनुष्य बहु रत्न पूर्ण पृथ्वी को पालन करता है ॥ ८६ ॥

सर्वेऽप्याकाशवासाःस्फटिकविमलताकाशकार्पासवेषा-
लग्नं संवीक्ष्यमाणा नरपतितिलकं तं समुत्पादयन्ति ।

नीयंतेऽस्योपदार्थं जलनिधिसलिलोद्भूतरत्नानि भूपैः ।
बिभ्राणोनातिभीतिं बहुबिध विभवो भद्रमालार्पितश्रीः ॥८७॥

जिसकी कुंडली में सब प्रकार शुद्ध सब ग्रह लग्न को देखते हों तब उसे बडे बडे अन्य राजा लोग रत्नों की भेट करते हैं और वह निर्भय रहता है प्रशस्त युक्त जयमाल लक्ष्मी से युक्त राजाओं का मुकुटमणि होता है ॥ ८७ ॥

सर्वैर्गगनभ्रमणैर्दृष्टे लग्ने भवेन्महीपालः ।
वलिभिःसौख्यार्थयुतो विगतभयो दीर्घजीवी च ॥८८॥

जिसके जन्म लग्न को सब ग्रह बली होकर देखते हों वह मनुष्य भय रहित, दीर्घायु, सुख तथा धन से युक्त राजा होता है ॥ ८८ ॥

चतुर्थे भवने शुक्रो दशमे च धरासुतः ।
रविःसौरियुतो यस्य राजा भवति निश्चितम् ॥८९॥

और जिसकी कुंडली में लग्न से शुक्र चतुर्थ में और दशम में मंगल और सूर्य शनैश्चर साथ में बैठे होवें तो वह पुरुष निश्चित राजा होता है ॥ ८९ ॥

मिथुनेऽजे वृषे मीने कुंभे च मकरे ग्रहाः ।
यो योगेऽस्मिन्नरो जातो जायते गजवाजिमान् ॥९०॥

और जिसके मिथुन; मेष, वृष, मीन कुंभ और मकर इन्हीं राशियों में सब ग्रह बैठे हों इस योगमें जन्म लेने वाला पुरुष हाथी घोड़ोंका पालन करनेवाला होताहै।

जीवनिशाकरसूर्याःपंचमनवमतृतीयस्था यस्य ।
लग्नाद्यदि भवति तदा राजा कुवेरतुल्यो धनप्रसवैः ॥९१॥

जिस मनुष्य के लग्न से पंचम नवम तृतीय घर में वृहस्पति चन्द्रमा और सूर्य बैठे हों तो वह मनुष्य धन में कुवेर के समान राजा होता है ॥ ९१ ॥

सिंहे जीवस्तुलाकीटधनुर्मकरकेषु च ।
ग्रहाश्चान्ये यदा जातो देशभोगी भवेन्नरः ॥ ९२ ॥

जिसके सिंह राशि में गुरु बैठा हो शेष सब ग्रह तुला वृश्चिक धन मकर में बैठे हों इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य देश भारका भोगने वाला होताहै

स्वगृहे च भवेत्सूर्यस्तुलायां च भवेत्सितः ।
सौरिर्मिथुनसंस्थःस्याद् राजयोगःप्रजायते ।। ९३ ॥

जिसकी कुंडली में अपने घर में सूर्य, तुला में शुक्र, और मिथुन का शनि बैठा हो तब भी राज योग होता है ॥ ९३ ॥

षष्ठे च पञ्चमे चैव नवमे द्वादशे तथा ।
सौम्यक्रूरग्रहा योगा राजमान्यःसकण्टकः ॥ ९४ ॥

और जिसके छटे पांचमे नवमे तथा बारहवें घर में शुभाशुभ ग्रह बैठे हों तब वह मनुष्य राजाओं में भी मान्य होता है लेकिन साथ में ही उसे झगड़े भी बहुत लगे रहते हैं ॥ ९४ ॥

त्रिकोणसंस्था बुधजीवशुक्रास्त्रिषड्गते सोमसुतेऽर्कपुत्रे ।
जायास्थिते चेत्परिपूर्णचन्द्रे नूनं स जातोनृपतेःसमानः ॥९५॥

जिसकी कुंडली में त्रिकोण में बुध बृहस्पति शुक्र हों और बुध शनि क्रम से तीसरे छटे हों और सप्तममें पूर्ण बली चन्द्रमा होवे तो इस योग में जन्म लेनेवाला मनुष्य राजा के समान होता है ॥ ९५ ॥

लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रश्चाष्टमे भवने सितः ।
राजमान्यो महाकामी भोग्यपत्नीजनस्तथा ॥ ९६ ॥

जिसके लग्न में शनि और चन्द्रमा हों, अष्टम में शुक्र हो तो वह मनुष्य राजमान्य महाकामी अथवा भोग्यपत्नीजनों से युक्त होता है ॥ ९६ ॥

धने शुक्रश्च भौमश्च मीने जीवो घटे बुधः ।
नीचे चन्द्रःसूर्ययुक्तो राजयोगोऽभिधीयते ॥ ९७ ॥
अस्मिन्योगे नरो जातो राजा विभववर्जितः ।
दानभोगातिविख्यातःसामान्यःस भवेन्नरः ॥ ९८ ॥

जिसके लग्न से धनभाव में शुक्र और मंगल हों, मीन में गुरु, और कुंभ में बुध, अथवा सूर्य के संग नीच का होवे चन्द्रमा, तो इसको भी राजयोग कहते हैं इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य विभव रहित राजा होता है और दान भोग में सामान्य विख्यात होता है ॥ ९७-९८ ॥

मीने शुक्रो बुधश्चान्ते लग्ने सूर्यःशशी धने ।
सहजे च भवेद्राहू राजयोगःप्रचक्ष्यते ॥ ९९ ॥

मीन राशि में शुक्र, और बुध लग्नसे व्ययभाव में, सूर्य लग्न में और द्वितीय भाव में चन्द्रमा, और तीसरे घर में राहु होवे तो इसको भी राजयोग कहते हैं।९९।

मीने जीवस्तथा शुक्रश्चंद्रमाश्च यदा भवेत् ।
तस्य जातस्य राज्यं स्यात्पत्नी च वहुपुत्रिका ॥ ११० ॥

और जिसकी कुंडली में वृहस्पति शुक्र और चन्द्रमा ये तीनों मीन राशि के होकर बैठे हों इस योग में जन्म लेने वाले को राज्य प्राप्ति होती है और उसकी पत्नी अनेक पुत्रों वाली होती है ॥ १०० ॥

आयस्थाने यदा सौम्यःक्रूरस्थानीयचंद्रमाः ।
कर्मस्थाने पुनःसौम्यस्तदा राज्यं विधीयते ॥ १ ॥

और जिसके लग्न से ग्यारहवें स्थान में तो कोई भी शुभग्रह होवे, और क्रूर ग्रहकी राशिका होवे चन्द्रमा, और लग्न से दशम घरमें भी सौम्यग्रह होवे, तब उसः को राज्य प्राप्त होता है ॥ १०१ ॥

आदौ जीवःपंचमे च दशमे चंद्रमा भवेत् ।
राजमान्यो महाबुद्धिस्तेजस्वी चातितेजसम् ॥ २ ॥

और जिसकी कुंडलीमें लग्नमें वृहस्पति; और दशम या पंचम में होवे चन्द्रमा वह मनुष्य राजमान्य, महाबुद्धिमान् और बडातेजस्वी होता है ॥ १०२ ॥

अथ रिष्टकथनम्—

सूर्याच्च नवमे तातश्चंद्रान्माता चतुर्थगः ।
भौमाच्च तृतीये भ्राता बुधान्तुर्ये च मातुलः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्य की जन्म कुंडली में सूर्य से नवम स्थान में क्रूर ग्रह होता है तब उसके पिताको कष्ट होता है, और जिसके चन्द्रमा से चौथे घरमें क्रूर ग्रह हो तो माता को, और जिसके मंगल से तीसरे घरमें क्रूर ग्रह हो तो उसके भाई को, और जिसके बुधसे चौथे घरमें क्रूर ग्रह हो तो उसके मामा को ॥ ३ ॥

गुरोः पंचमतःपुत्रो भृगोःसप्तमतःस्त्रियः ।
शनेरष्टमतो मृत्युः क्रूरः कष्टं लभेत चेत् ॥ ४ ॥

और जिसके गुरुसे पंचम घरमें क्रूर ग्रह होवे तो पुत्रको, और जिसके शुक्रसे सप्तम घरमें क्रूर ग्रह होतो स्त्री को, और जिसके शनि से अष्टम घरमें क्रूर ग्रह होतो उसी की मृत्यु होती है ॥ ४ ॥

अथ द्वादशभवनविचारः—

सूर्यो भौमस्तथा राहुःशनिर्मूर्तौ यदा गतः ।
संतापो रक्तपीडा च सौम्यःसर्वनिरोगता ॥ ५ ॥

जिस मनुष्य की कुंडली में सूर्य मंगल राहु और शनि लग्न में बैठे हों तब सन्ताप और रक्त निमित्त पीडा होती है और सौम्य ग्रहों के बैठने से शरीर में सदा नैरुज्य होता है ॥ ५ ॥

भौमक्षेत्रे यदा जीवो जीवक्षेत्रे च भूसुतः ।
द्वादशे वत्सरे मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ ६ ॥

और जिसकी कुंडली में मंगल के घरमें तो होवे बृहस्पति, और बृहस्पतिके घरमें होवे मंगल, तो उस बालक की बारहवें वर्ष की अवस्था में निःसंदेह मृत्यु होतीहै ।

धनस्थाने यदा भौमः शनैश्चरसमन्वितः ।
सहजे च भवेद्राहुर्वर्षमेकं स जीवति ॥ ७ ॥

और जिसकी कुंडली में शनि के संग मंगल लग्न से दूसरे घरमें बैठा होवे; और तीसरे घरमें होवे राहु, तो वह बालक एक वर्ष जीता है ॥ ७ ॥

चतुर्थे च यदा राहुःषष्ठे चन्द्रोऽष्टमेऽपिवा ।
सद्यश्चैव भवेन्मृत्युःशंकरो यदि रक्षति ॥ ८ ॥

और जिसकी कुंडली में लग्न से चतुर्थ राहु हो, और छटे या आठवें होवे चन्द्रमा, तब बालक की यदि महादेव भी रक्षा करैं तब भी तत्काल मृत्यु होतीहै ।

अष्टमस्थो निशानाथः केन्द्रः पापेन संयुतः ।
चतुर्थे च यदा राहुर्वर्षमेकं स जीवति ॥ ९ ॥

और जिसके लग्न से अष्टम तो होवे चन्द्रमा, और केन्द्र में होवे पाप ग्रह, और चतुर्थ घरमें होवे राहु, तब वह बालक एक वर्ष जीता है ॥ ९ ॥

लग्ने व्यये धने क्रूरा यदा मृत्यौ च संस्थिताः ।
विष्ठावरोधतो दुःखं द्वादशाष्टमवर्षयोः ॥ १० ॥

और जिसके लग्न धन और अष्टम तथा व्यय १२ में क्रूर ग्रह हों तब उसकी बारहवें या आठवें वर्ष में दस्त बन्द होने के कारण से पीडा होती है ॥ १० ॥

सप्तमे भवने भौमश्चाष्टमे भार्गवो यदा ।
नवमे भवने सूर्यश्चाल्पायुस्तस्य कथ्यते ॥ ११ ॥

और जिसके लग्न से सप्तम घरमें मंगल, अष्टम में शुक्र; और नवम में सूर्य होवे, तब उसकी अल्पायु होती है ॥ ११ ॥

धने क्रूरःस्वभवने क्रूरःपातालगो यदा ।
दशमे भवने क्रूरःकष्टं जीवति जातकः ॥ १२ ॥

और जिसके लग्न से दूसरे घरमें स्वगेही का होकर कोई क्रूर ग्रह हो और चौथे घरमें और दशम घरमें भी क्रूर हो तब उसको जीना बहुतही कठिन होताहै ।

स्मरे व्यये च सहजे मध्ये क्रूरा यदा ग्रहाः ।
तदा जातस्य बालस्य शरीरे कष्टमादिशेत् ॥ १३ ॥

और जिसके सप्तम व्यय तीसरे तथा दशम घरमें क्रूर ग्रहहों इस योग में जन्म लेने वाले बालक के शरीर में कष्ट कहना चाहिये ॥ १३ ॥

लग्नस्थाने यदा भौमो द्वादशे च यदा गुरुः ।
शुक्रःशत्रुगृहे यस्य मासमेकं स जीवति ॥ १४ ॥

जिसके लग्न में तो मंगल होवे, बारहवें घरमें होवे बृहस्पति, और छटे घर में होवे शुक्र; वह बालक एक महीना जीता है ॥ १४ ॥

क्षीणचंद्रे गते लग्ने क्रूरग्रहानिरीक्षिते ।
द्वितीये द्वादशे भौमे मासमेकं स जीवति ॥ १५ ॥

और जिसके लग्नमें क्षीण चन्द्रमा होवे, उसे क्रूर ग्रह देखते होवें और द्वितीय या द्वादश घरमें मंगल होवे, वह बालक भी एक महीना जीता है ॥ १५ ॥

मूर्तिसप्तमयोः क्रूराव्ययद्वितीयगामिनः ।
चतुर्थे च यदा राहुःसप्ताहान्म्रियते तदा ॥ १६ ॥

और जिसके लग्न सप्तम व्यय तथा द्वितीय घरमें भी क्रूर ग्रह होवें, और चतुर्थ घर में राहु होवे वह बालक सात दिनमें मर जाता है ॥ १६ ॥

षष्ठाष्टमेऽपि चन्द्रःसद्यो मरणाय पापसंदृष्टः ।
अष्टाभिःशुभदृष्टो वर्षैर्मिश्रैस्तदर्द्धेन ॥ १७ ॥ व० मि०

जिसके लग्न से छटे आठवें पाप दृष्ट चन्द्रमा स्थित हो तब उस बालक की तत्काल मृत्यु करता है, यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट चन्द्रमा षष्ठाष्टम घरमें स्थित हो, तब उस बालक की अष्टम वर्ष में मृत्यु करता है और जो शुभाशुभ ग्रहों से दृष्ट चन्द्रमा छटे आठवें घरमें बैठा हो तब उस बालककी चार वर्ष में मृत्यु करता है ।

द्वादशस्थो यदा सौरिर्लग्नसंस्थश्च भूसुतः ।
चतुर्थःसैंहिकेयश्च ह्यष्टमासान्स जीवति ॥ १८ ॥

और जिसके लग्न से बारहवें घरमें शनि हो, लग्न में मंगल हो और चतुर्थ घरमें राहु बैठा हो, वह बालक आठ महीना जीता है ॥ १८ ॥

शुभलग्ने यदा जीवो ह्यष्टमे च शनैश्चरः ।
रंध्रसंस्थे च पापे च सद्यो मृत्युप्रदो भवेत् ॥ १९ ॥

और जिसके शुभ ग्रह के लग्न का होकर बृहस्पति बैठा हो, अष्टम घरमें शनि हो और उसी घरमें अन्य पाप ग्रह भी हों तब जल्दी मृत्यु देने वाले होते हैं ।१९।

चतुर्थे नवमे सूर्ये त्वष्टमे च बृहस्पतौ ।
द्वादशे च शशांके च सद्यो मृत्युकरो भवेत् ॥ २० ॥

जिसके लग्न से चौथे या नवें घर में सूर्य हो अष्टम में बृहस्पति हो, और बारहवें में होवे चन्द्रमा, तब उस मनुष्य को तत्काल मृत्यु होजाती है ॥ २० ॥

शशिसूर्यसिते केन्द्रे संयुक्तःसोमआर्किणा ।

हंति वर्षद्वयेनैव जातकं शिष्टभावितः ।। २१ ।।

चन्द्रमा सूर्य शुक्र केन्द्र में बैठे हों;और चन्द्रमा शनि युक्त होवे,तब वह बालक शुभ ग्रहों से भी भावित क्यों न हो तब भी दो वर्ष में ही मृत्युको प्राप्त होजाताहै

गुरुर्मंदगृहे वक्री मंदगौ बुधभास्करौ ।
ईप्सितं कुरुते मृत्युं मंदे चैकादशे ध्रुवम् ॥ २२ ॥

और जिसके जन्म समय में बृहस्पति वक्री होकर शनिके घरमें स्थित हो और बुध सूर्य सप्तम स्थान में हो तब जातक वह वांछित मृत्यु को पाता है और अगर एकादश में शनि होवे तोभी शीघ्र ही मृत्यु पाता है ॥ २२ ॥

सूर्यमंदगृहे शुक्रो गुरुणा च विलोकितः ।
नवभिर्मारयत्येनं वर्षैर्जातं न संशयः ॥ २३ ॥

जिसकी कुंडली में बृहस्पति दृष्ट शुक्र, सूर्य या शनि के घर में बैठा हो तो इस योग में जन्म लेने वाला बालक नौवीं वर्ष में मरजाता है ।। २३ ।।

सूर्येण सहितश्चन्द्रो बुधवेश्मगतःसदा ।
न वीक्षितश्च सौम्येन नववर्षेण मृत्युदः ॥ २४ ॥

जो सूर्य सहित चन्द्रमा बुध के घर में स्थित हो और किसी सौम्य ग्रह से देखा जाता होवे तब वह नवे वर्ष में मृत्यु पाता है ।। २४ ।।

बुधःसूर्येंदुसंयुक्तो वीक्षितोऽपि शुभैर्ग्रहैः ।
वर्षैरेकादशैस्तेन मारयत्येव निश्चितम् ॥ २५ ॥

और शुभग्रहदृष्ट भी बुध, सूर्य चन्द्रमा से युक्त हो तब ग्यारहवें वर्षकी अवस्था में मृत्यु करता है ।। २५ ।।

लग्नादष्टमगो राहुःशनिसूर्यावलोकितः
निरीक्षितःशुभैःकुर्यादष्टद्वादशभिःक्षयम् ॥ २६ ॥

शनि सूर्य से दृष्ट राहु, लग्न से अष्टम घर में स्थित हो तब अष्टम वर्ष में, और शुभ ग्रह दृष्ट हो तब बारहवें वर्ष में मृत्यु करता है ॥ २६ ॥

धने राहुर्बुधःशुक्रःसौरिःसूर्यो यदा स्थितः ।

तत्र जातस्य मृत्युःस्यान्मृते पितरि जायते ॥ २७ ॥

जिसके लग्न से दूसरे घर में राहु बुध शुक्र शनि सूर्य बैठे हों वह पिता के मरने के पश्चात् जन्म लेता है और होकर खुद भी हाल ही थोडे दिनोंमें मरजाताहैं

व्यये राहुःसौरिसौम्यौ जीवो लग्ने च पंचमे ।
अत्र योगे च यो जातो जातमात्रःस नश्यति । २८ ॥

जिसके लग्न से बारहवें में राहु शनि बुध हों, गुरु लग्न या पंचम में हो, इस योग में जन्म लेने वाला जन्म लेते ही मर जाता है ॥ २८ ॥

जीवार्कराहुभौमाःस्युश्चत्वारःक्रूरवेश्मगाः ।
सप्तमे च गृहे शुक्रो देहकष्टकराःसदा ॥ २९ ॥

और जिसके बृहस्पति सूर्य राहु तथा मंगल ये चारों ग्रह क्रूर ग्रह के घर में बैठे हों और लग्न से सप्तम घरमें शुक्रहो तब ये सदा देहमें कष्ट करनेवाले होतेहैं।

गुह्यस्थाने यदा भौमो राहुसौरिसमन्वितः ।
नृपपीडा भवेत्तस्यस्वासने नैव तिष्ठति ॥ ३० ॥

और जिसके छटे स्थान में राहु शनि युक्त मंगल बैठा हो तब उस मनुष्यको राजपीडा होती है इसी कारण अन्यत्रान्यत्र मारा मारा फिरता रहताहै अपने आसन (स्थान) पर कभी नहीं बैठता है ॥ ३० ॥

चतुर्थे राहुसौरार्काःषष्ठे चन्द्रो बुधःकुजः ।
भार्गवश्चात्र यो जातःस गृहस्य क्षयंकरः ॥ ३१ ॥

जिसके चतुर्थ घर में राहु सूर्य तथा शनि बैठे हों, और चन्द्र बुध मंगल शुक्र छटे घर में स्थित हों तो इस योग का जन्म लेने वाला अपने घर का क्षय करने वाला होता है ॥ ३१ ॥

एकःपापोऽष्टमस्थोऽपि शत्रुक्षेत्रे यदा भवेत् ।
पापेन वीक्षितो वर्षान्मारयत्येव बालकम् ॥ ३२ ॥

और एक भी पाप ग्रह शत्रु क्षेत्री होकर लग्न से अष्टम घर में बैठा हो तथा उसे पाप ग्रह देखते हों तब उस बालक को एक वर्ष में मारता है ॥ ३२ ॥

भौमभास्करमंदाश्च शत्रुक्षेत्रेऽष्टमे यदा ।
यमेन रक्षितोऽप्येषवर्षमात्रं स जीवति ॥ ३३ ॥

जिसके मंगल सूर्य तथा शनि ग्रह शत्रु क्षेत्री होकर अष्टम घर में स्थित हों वह बालक यदि यमराज से भी रक्षित हो तब भी एक वर्ष जीता है ॥ ३३ ॥

वक्री शनिर्भौमगेहे केन्द्रे षष्ठेऽष्टमेऽपि वा ।
कुजेन बलिना दृष्टो हन्ति वर्षद्वये शिशुम् ॥ ३४ ॥

और वक्री शनि मंगल के घर का होकर केन्द्र में या छटे आठवे घरमें बैठा हो और बली मंगल उसे देखता हो तब वह बालक दो वर्ष में मरजाता है ॥३४॥

लग्नस्थश्च यदा भानुःपंचमस्थो निशाकरः ।
अष्टमस्था यदा पापास्तदा जातो न जीवति ॥ ३५ ॥

और जिसके लग्न में सूर्य, पंचम घर में चन्द्रमा बैठा हो और पापी ग्रह सब अष्टम घर में स्थित हों तब जन्म लेने वाला जीता नहीं है ॥ ३५ ॥

शनिराहुकुजैर्युक्तःसप्तमे नवमे शशी ।
सप्तमे दिवसे हन्ति मासे वा सप्तमे शिशुम् ॥ ३६ ॥

और जिसके शनि राहु तथा मंगल से युक्त चन्द्रमा सप्तम या नवम घर में स्थित हो तब वह मनुष्य सातवें दिन या सातवें मास में मृत्यु पाता है ॥ ३६ ॥

लग्नपःपापसंयुक्तो लग्ने वा पापमध्यगे ।
लग्नात्सप्तमगःपापस्तदा चात्महतिर्भवेत् ॥ ३७ ॥

जिसका जन्म लग्नेश पाप ग्रह युक्त होवे अथवा लग्न पाप ग्रहों के मध्य में हो और लग्नसे सप्तम घरमें पाप गृह बैठाहो तब वह मनुष्य आत्मघात करके मरताहै।

क्रूरक्षेत्रे यदा जीवो लग्नशोऽस्तं गतो भवेत् ।
अकर्मा च तदा जातःसप्तवर्षाणिजीवति ॥ ३८ ॥

जिसके क्रूर ग्रह की राशि का बृहस्पति होवे, और लग्नेश अस्तगत होवे तब वह कुकर्मी होता है और सात वर्ष जीता है ॥ ३८ ॥

अष्टमे च यदा सौरिर्जन्मस्थाने च चंद्रमाः ।

मंदाग्न्युदररोगी च गात्रहीनश्च जायते ॥ ३९ ॥

जिसके अष्टम घर में शनि हो, और लग्न में होवे चन्द्रमा, तब वह मनुष्य मंदाग्नि उदर का रोगी, तथा किसी अंग से हीन होता है ॥ ३९ ॥

शनिक्षेत्रे यदा भानुर्भानुक्षेत्रे यदा शनिः ।
द्वादशे वत्सरे मृत्युर्निश्चितं तस्यजायते ॥ ४० ॥

जिसके शनि के घर में सूर्य, और सूर्य के घर में शनि बैठा हो तो इस योग में जन्म लेने वाले की बारहवें वर्ष में मृत्यु होती है ॥ ४० ॥

बुधभौमौ यदा लग्ने षष्ठस्थानेऽथवास्थितौ ।
तस्करश्चौर्यकर्मा स्याद्धस्तपादौ च नश्यतः ॥ ४१ ॥

जिसके लग्न में या छटे घर में बुध और मंगल बैठे हों, तब वह मनुष्य चोरी के काम का करने वाला होता है और उसके हाथ पांव नष्ट होते हैं ॥४१॥

षष्ठेऽष्टमे वा मूर्तौ च शत्रुक्षेत्रे यदा बुधः ।
चतुर्वर्षे भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ ४२ ॥

और जिसके छटे घर में या लग्न में शत्रुक्षेत्री होकर बुध बैठा हो, उस बालक की चौथे वर्ष में मृत्यु होती है ॥ ४२ ॥

अष्टमस्थो यदा राहुः केंद्रस्थाने च चंद्रमाः ।
सद्य एव भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ ४३ ॥

लग्न से अष्टम घरमें राहु बैठाहो, और केन्द्र में चन्द्रमा बैठा हो तो उस बालककी तत्काल मृत्यु हो जाती है ॥ ४३ ॥

चतुर्थस्थो यदा राहुःषष्ठाष्टमगृहे शशी ।
विंशत्या दिवसैर्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ ४४ ॥

जिसके चतुर्थ घरमें राहु हो, और छठे आठवें घरमें चन्द्रमा होवे तो उसकी बीस दिनमें मृत्यु होजाती है ॥ ४४ ॥

सप्तमे नवमेराहुः शत्रुक्षेत्रे यदा भवेत् ।
षोडशे वत्सरे मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ ४५ ॥

और जिसके लग्नसे सप्तम घरमें या नवम घरमें शत्रुक्षेत्री होकर राहु बैठाहो उसकी सोलह वर्षमें मृत्यु होती है ॥ ४५ ॥

द्वादशस्थो यदा चन्द्रःपापःस्यादष्टमे गृहे ।
एकमासे भवेन्मृत्युस्तस्य बालस्य निश्चितम् ॥ ४६ ॥

और जिसके लग्न से बारहवें घरमें चन्द्रमा बैठा हो और अष्टम घरमें पापग्रह बैठाहो तो उस बालककी एकमासके भीतर मृत्यु होती है ॥ ४६ ॥

जन्मस्थाने यदा राहुःषष्ठस्थाने च चंद्रमाः ।
अपस्मारस्तदा रोगो बालकस्य हि जायते ॥ ४७ ॥

और जिसके लग्न में राहु, और छटे घरमें चन्द्रमा बैठा हो, वह बालक अपस्मार (मृगी) के रोग से युक्त होता है ॥ ४७ ॥

भार्गवेण युतश्चन्द्रःषष्ठाष्टमगतो भवेत् ।
मन्दाग्न्युदररोगी च हीनांगोऽपि च बालकः ॥ ४८ ॥

और जिसके शुक्रयुत चन्द्रमा छटे आठवें घरमें बैठाहो वह बालक मंदाग्नि रोगसे युक्त और हीनांग होता है ॥ ४८ ॥

षष्ठाष्टमे यदा चंद्रो बुधयुक्तश्च तिष्ठति ।
विषदोषेण बालस्य तदा मरणमुच्यते ॥ ४९ ॥

और जिसके बुध संयुक्त चन्द्रमा छठे आठवें घरमें स्थित हो तब उस बालककी विष दोषसे मृत्यु होती है ॥ ४९ ॥

भानुना संयुतश्चन्द्रःषष्ठाष्टमयुतो भवेत् ।
गजदोषेण मृत्युर्वा सिंहदोषेण वा भवेत् ॥ ५० ॥

और जिसके सूर्य संयुक्त चन्द्रमा छठे आठवें घरमें स्थितहो वह बालक हाथी के दोषसे या सिंह के निमित्त से मृत्यु पाता है ॥ ५० ॥

एकोऽपि यदि मूर्तौ स्याज्जन्मकाले यदा भवेत् ।
स्थानहीनो भवेद्बालो वृत्तिर्दुष्टा सदा पुनः ॥ ५१ ॥

और जिसके जन्मकालिक एक सूर्य ही लग्न में स्थित होवे तब वह बालक स्थान से हीन होकर दुष्ट जीविका का करने वाला होता है ॥ ५१ ॥

लग्नेऽष्टमे यदा राहुश्चन्द्रेण यदि दृश्यते ।
दशाहैर्जायते तस्य बालस्य मरणं ध्रुवम् ॥ ५२ ॥

और जिसके जन्माङ्गमें राहु लग्न या अष्टम में बैठा हो और चन्द्रमा से दृष्ट हो तो उस बालक का दश दिन के भीतर मरण होजाता है ॥ ५२ ॥

लग्नाच्च नवमे सूर्यः सूर्यपुत्रे तथाऽष्टमे ।
एकादशे भार्गवे च मासमेकं न जीवति ॥ ५३ ॥

और जिसकी कुंडली में लग्न से नवम में सूर्य हो; और अष्टम में होवे शनि, और ११ में होवे शुक्र, तो वह बालक एक मास जीता है ॥ ५३ ॥

नवमे दशमे चन्द्रःसप्तमे च यदा सितः ।
पापे पातालसंस्थे च वंशच्छेदकरो नरः ॥ ५४ ॥

और जिसके लग्नसे नवम या दशममेंतो होवे, चन्द्रमा, और सप्तम घरमें होवे शुक्र, और चतुर्थ घरमें कोई पाप ग्रह बैठाहो,वह बालक अपने बंश का नाश करने वाला होता है ॥ ५४ ॥

शत्रुक्षेत्रेऽष्टमे षष्ठे द्वितीये द्वादशे रविः ।
स जीवेद्रसवर्षाणि बालको नात्र संशयः ॥ ५५ ॥

और जिसके लग्नसे छटे या आठवें घरमें अथवा द्वितीय द्वादश घरमें शत्रु क्षेत्री होकर सूर्य बैठा हो वह बालक निःसंदेह छः वर्ष जीता हैं ॥ ५५ ॥

शत्रुक्षेत्रेऽष्टमे मूर्तौ बुधःषष्ठे प्रजायते ।
बालो जीवति वर्षाणि चत्वार्यत्र न संशयः ॥ ५६ ॥

और जिसके लग्न में छटे या आठवें घरमें शत्रुक्षेत्री होकर बुध बैठाहो वह बालक निःसंदेह चारही बर्ष जीता है ॥ ५६ ॥

एकादशे तृतीये च नवमे पंचमे गुरौ ।
शत्रुक्षेत्रेऽष्टपंचाशदायुर्भवति निश्चितम् ॥ ५७ ॥

और जिसके लग्नसे ग्यारहवें या तीसरे या नवे पांचमे घरमें शत्रुक्षेत्री होकर बृहस्पति हो तो वह अट्ठावन वर्षकी आयु पाता है ॥ ५७ ॥

नवमे पंचमे वापि रिपुक्षेत्रे बृहस्पतिः ।
तदा नरस्य षट्त्रिंशद्वर्षाण्यायुर्न संशयः ॥ ५८ ॥

और जिसके नवम या पंचम घरमें शत्रु क्षेत्री होकर बृहस्पति बैठा होता है तब वह पुरुष निःसंदेह छत्तीश बर्ष जीता है ॥ ५८ ॥

मित्रक्षेत्रस्थितश्चाये दशमे वा यदा गुरुः ।
शत्रुक्षेत्रे यदा शुक्रो द्वितीये द्वादशे भवेत् ॥
एकविंशतिवर्षायुर्जायते बालको ध्रुवम् ॥ ५९ ॥

और जिसकी कुण्डलीमें मित्र क्षेत्री होकरलग्नसे ११ या १० घरमें बृहस्पतिहो; और शत्रु क्षेत्री होकर द्वितीय या द्वादश घरमें शुक्र हो तब उस बालक की इक्कीस वर्षकी आयु होती है ॥ ५९ ॥

शत्रुक्षेत्रेऽष्टमे षष्ठे द्वितीये द्वादशे शनिः ।
अष्टौ दिनान्यष्टमासानष्टवर्षाणि जीवति ॥ ६० ॥

और जिसके शत्रु क्षेत्री होकर छटे आठवें या द्वितीय द्वादश घरमें शनि बैठा हो, उस बालककी आठ दिन आठ मास या ८ वर्षकी आयु होतीहै ॥ ६० ॥

चन्द्रक्षेत्रे यदा भौमो जायते मनुजःसदा ।
रक्तपित्तेन हीनाङ्गो नानाव्याधिसमन्वितः ॥ ६१ ॥

और जिसके जन्म समय में चन्द्र क्षेत्रमें मंगल बैठा हो, तब वह मनुष्य रक्त पित्त के निमित्त से हीन अंग और नाना प्रकार व्याधि युक्त होता है ॥ ६१ ॥

चंद्रक्षेत्रे यदा चान्द्रिर्जायते यस्य जन्मनि ।
स जातःक्षयरोगी स्यात्कुष्ठादिभिरुपद्रुतः ॥ ६२ ॥

जिस मनुष्य के जन्म समय में चन्द्रमा के घरका होकर बुध बैठा हो वह पुरुष क्षय रोगसे और कुष्ट के उपद्रव से युक्त होता है ॥ ६२ ॥

राहौ च केंद्रगे मृत्युःपापानां दृष्टिसंयुतः ।

संवत्सरे तु दशमे षोडशे तु विशेषतः ॥ ६३ ॥

और जिसके पाप ग्रह दृष्टि युक्त राहु केन्द्र १।४।७।१० में बैठा हो उसके दशम वर्ष में मृत्यु न हुई होवे तब षोडश वर्ष में तो अवश्य ही मृत्यु होजाती है ॥

चन्द्रःसप्तमभवने शनिभौमराहुयुतो भवति ।
सप्तमादिवसे मृत्युःसप्तममासे न संदेहः ॥ ६४ ॥

और जिसके लग्नसे सप्तम घरमें शनि मंगल और राहु संयुक्त चन्द्रमा हो तब उस बालककी सप्तम दिन या सप्तम मासमें अवश्य मृत्यु होती है ॥ ६४ ॥

भौमक्षेत्रे यदा जीवो षष्ठे वाऽप्यष्टमे विधुः ।
षष्ठेऽष्टमे भवेन्मृत्यू रक्षको यदि शंकरः ॥ ६५ ॥

और जिसके मंगलके क्षेत्रका होकर बृहस्पति स्थित होवे, और छटे आठवें घरमें होवे चन्द्रमा, तब उस बालककी जो शिवजी भी रक्षा करें तब भी छटे आठवें वर्ष में मृत्यु हो जाती है ॥ ६५ ॥

जन्मसप्तमभे सौरिरष्टमे यदि चन्द्रमाः ।
ब्रह्मपुत्रो यदा जातःसोऽपि बालो न जीवति ॥ ६६ ॥

और जिसके लग्नमें या सप्तम घरमें शनि होवे और अष्टमघरमें चन्द्रमा होवे तब ब्रह्मा का पुत्रभी होवे तब भी नहीं जीता है ॥ ६६ ॥

षष्ठाष्टमे यदा चंद्रो रविर्भवति सप्तमः ।
पितृमातृधनं हंति मासमेकं न जीवति ॥ ६७ ॥

और जिसके लग्नसे छटे ८ वें घरमें चन्द्रमा और सप्तम घर में सूर्य होवे तब वह बालक माता पिताके धन को नाश कर केवल एक मास भर जीता है ॥ ६७ ॥

द्वादशे जीवशुक्रौ च जन्मतो राहुरेव च ।
सप्तमे च यदा सौरिर्वर्षमेकं न जीवति ॥ ६८ ॥

और जिसके लग्नसे बारहवें घरमें गुरु; शुक्र और राहु एकत्र होकर बैठेहों, और लग्न से सप्तम घरमें शनि हो तब वह बालक एक वर्ष जीता है ॥ ६८ ॥

भौमे दिवाकरे छिद्रे जातःशत्रुगृहे यदि ।
स नरो म्रियतेऽवश्यं यमो मासेन रक्षकः ॥ ६९ ॥

और जिसके शत्रु घरके होकर मंगल या सूर्य दशम घरमें बैठे हों, तब यदि यमभी रक्षा करै तौ भी अवश्य एक मासमें मर जाता है ॥ ६९ ॥

यदा लग्ने ग्रहःक्रूरो षष्ठे वाप्यष्ठमे विधुः ।
तदा सद्यो भवेन्मृत्युर्जातकस्य न संशयः ॥ ७० ॥

और जो लग्नमें क्रूर ग्रह होवे, और छटे या आठवें में चन्द्रमा होवे तो इस योग में जन्म लेने वाले की तत्काल मृत्यु होती है ॥ ७० ॥

चतुर्थेऽपि यदा राहुःकेंद्रे भवति चंद्रमाः ।
विंशद्वर्षे भवेन्मृत्युर्जातकस्य न संशयः ॥ ७१ ॥

और जिसके चतुर्थ घरमें राहु और केन्द्रमें चन्द्रमा होवे, इस योगमें जन्म लेने वाला वीस वर्षकी आयु पाता है ॥ ७१ ॥

सप्तमस्थो यदा राहुर्जन्मकाले यदा तदा ।
दशवर्षैर्भवेन्मृत्युरमृतं यदि पीयते ॥ ७२ ॥

और जिसके जन्म समय में सप्तम घरमें राहु होवे, तब यदि अमृत पिया हो तब भी दश वर्षकी आयु में मृत्यु पाता है ॥ ७२ ॥

लग्नेऽष्टमे यदा राहुश्चन्द्रो वा यदि पश्यति ।
जातकस्य तदा मृत्युर्यदि शक्रेण रक्षितः ॥ ७३ ॥

और जिसके लग्न में या अष्टम घरमें चन्द्रमा से दृष्ट यदि राहु बैठा हो, तब उसकी यदि इन्द्र भी रक्षा करे तब भी नहीं जीता है ॥ ७३ ॥

दशमेऽपि यदा भौमे उच्चशत्रुगृहेस्थितः ।
जातकस्य भवेन्मृत्युर्मातुश्चैव न संशयः ॥ ७४ ॥

और जिसके जन्मलग्नसे दशम घरमें उच्चका होकर या शत्रु क्षेत्री होकर मंगल बैठा हो, तब उस बालक की और उसकी माता की अवश्य मृत्यु होती है।

लग्नस्थितो यदा भानुःपंचमस्थो निशापतिः ।

लग्नेऽष्टमे स्थिताःपापास्तदा जातो न जीवति ॥ ७५ ॥

और जिसके लग्न में सूर्य और लग्न से पंचम में चन्द्रमा बैठा हो, तथा कोई पाप ग्रह लग्न या अष्टम में बैठे हों तब वह बालक नहीं जीता है ॥ ७५ ॥

लग्नात्सप्तमशीतांशुःपापोऽष्टमगतो ग्रहः ।
लग्नस्थितो यदा भानुर्मासेन म्रियते शिशुः ॥ ७६ ॥

और जिसके लग्न से सप्तम घर में चन्द्रमा, और लग्न में सूर्य, अष्टममें पापग्रह हों तो इस योग में जन्म लेने वाला बालक एक मास में मृत्यु पाता है ॥ ७६ ॥

धने गुरुःसैंहिकेयो भौमःशुक्रश्च सप्तमे ।
अष्टमे रविचन्द्रौ च म्लेच्छःस्याद्यवने स्थितः ॥ ७७ ॥

और जिसके लग्न से द्वितीय घर में राहु, तथा बृहस्पति; और सप्तम घर में मंगल और शुक्र बैठे हों तथा अष्टम घर में सूर्य और चन्द्रमा बैठे हों वह मनुष्य मुसलमान होजाता है ॥ ७७ ॥

लग्नस्थाने यदा भौमोह्यष्टमे च दिवाकरः ।
सौरिश्चतुर्थभवने तदा कुष्ठी भवेन्नरः ॥ ७८ ॥

और जिसके लग्न में मंगल, अष्टम घर में सूर्य, तथा चौथे घर में शनि होवे, वह मनुष्य कुष्ठी होता है ॥ ७८ ॥

धर्मस्थाने यदा पापो लग्नात्पापश्चतुर्थगः ।
कर्मस्थानगतो राहुस्तदा म्लेच्छो भवेद्ध्रुवम् ॥ ७९ ॥

और जिसके लग्न से नवम तथा चतुर्थ में पापी ग्रह हों, और दशम में राहु हो, तब वह मनुष्य अवश्य ही मुसलमान होता है ॥ ७९ ॥

व्ययस्थानस्थिते चन्द्रे वामं चक्षुर्विनश्यति ।
यदा सूर्यो द्वितीयस्थस्तदा ह्यंधं समादिशेत् ॥ ८० ॥

और जिसके लग्न से व्यय १२ में चन्द्रमा हो तब वह मनुष्य वाम नेत्र से काना होता है और जो सूर्य दूसरे में बैठा हो तब वह मनुष्य अंधा होता है ॥८०॥

सिंहलग्ने यदा जन्म शनिर्मूर्तौ यदा भवेत् ।

चक्षुर्हीनो भवेद्बालःशुक्रे जन्मान्धको भवेत् ॥ ८१ ॥

जिसका सिंह लग्न में जन्म हो उसमें शनि बैठा हो तो वह मनुष्य नेत्र हीन होता है यदि शुक्र होवे तब वह मनुष्य जन्मांध होता है ॥ ८१ ॥

होरायां द्वादशे राशौ स्थितो यदि दिवाकरः ।
करोति दक्षिणे काणंवामनेत्रे च चन्द्रमाः ॥ ८२॥

और जो जन्मलग्न मीन राशि की होरामें सूर्य स्थित होवे, तब वह मनुष्य दहिने नेत्र से काना होता है और जो चन्द्रमा मीन के होरा में होवे तब वाम नेत्रसे काना होता है ॥ ८२ ॥

स्वस्थाने लग्नतःक्रूरःक्रूरःपातालगःपुनः ।
दशमे भवने क्रूरःकष्टं जीवति जातकः ॥८३॥
अस्मिन्योगे हि यो जातो मातुर्दुःखकरो भवेत् ।
यदि जीवेदसौ जातो मातृपक्षक्षयंकरः ॥ ८४ ॥

और जिसके लग्न में क्रूर ग्रह स्वक्षेत्री होकर बैठा हो, और चौथे घर में भी क्रूर बैठा हो, दशम में भी क्रूर ग्रह होवे तो इस योग में जन्मा मनुष्य कठिन से जीता है यदि जीता रहे तब माता को दुःख देने वाला और माता के पक्ष का क्षय करने वाला होता है ॥ ८३ ॥ ८४ ॥

क्रूरे क्षेत्रे भवेत्सूर्यःकन्यायां क्रूरसंस्थितः ।
क्रूरक्षेत्रे भवेद्राहुःकष्टं जीवति जातकः ॥ ८५ ॥

क्रूर ग्रह के घर में सूर्य होवे, और क्रूर ग्रह कन्या राशि में भी बैठा हो, और क्रूर क्षेत्र में राहु हो इस योग में जन्मो मनुष्य कठिन से जीता है ॥ ८५ ॥

शुक्रे च वाक्पतौ सौम्ये नीचे राहुसमन्विते ।
चन्द्रमाश्च न पश्यते सोऽपि बालो न जीवति ॥ ८६ ॥

और जिसके बृहस्पति शुक्र बुध इन तीनों में से कोई ग्रह राहु युक्त नीचके हों, और उन्हें चन्द्रमा देखता न होवे वह बालक भी नहीं जीता है ॥ ८६ ॥

षष्ठाष्टमे यदा चन्द्रे द्वादशे रविमंगलौ ।

सौऽपि जातो न जीवेत रक्षते यदि शंकरः ॥ ८७

और जिसके छटे आठवे घर में चन्द्रमा; और बारहवें घर में सूर्य मंगल बैठे हों तो इस योग में जन्म लेने वाले की जो शिवजी भी रक्षा करें तब भी मृत्यु का भागी होता है ॥ ८७ ॥

षष्ठाष्टमे यदा केतुःकेन्द्री भवति चन्द्रमाः ।
सद्यो बालकमृत्युःस्याद्रक्षिता यदि शंकर ॥ ८८ ॥

और जिसके छटे आठवें घरमें केतु, और केन्द्र में बैठा होवे चन्द्रमा; तो इस योगमें जन्म लेने वाला जो शिवजी से रक्षित हो तब भी नहीं जीता है ॥ ८८ ॥

चन्द्रो बुधस्तथा सूर्यःशनिश्चान्ते यदा भवेत् ।
मध्यस्थाने यदा भौमो हीनदृष्टिस्तदा भवेत् ॥ ८९ ॥

जिसके चन्द्र बुध सूर्य और शनि बारहवें घरमें या मीनके बैठे हो, और मध्य स्थान में होवे मंगल तब वह बालक हीन दृष्टि होता है ॥ ८९ ॥

अर्कःसौरिस्तथा भौमःस्वर्भानुःकेतुसंयुतः ।
नीचस्थानस्थितो यस्य सजातो मातृघातकः ॥ ९०

और जिसके सूर्य शनि मंगल राहु या केतु से युक्त नीच क्षेत्री ग्रहसे दृष्टि या युक्त हों इस योगमें जन्म लेने वाला मातृ घातक होता है ॥ ९० ॥

रविराहू सौरिभौमौ जीवो लग्ने च पंचमे ।
योगेऽस्मिन्नपि यो जातो जातमात्रे विनश्यति ॥ ९१ ॥

सूर्य राहु शनि मंगल बृहस्पति लग्नमें या पंचम में बैठे हों इस योगमें जन्म लेने वाला जन्म लेतेही मर जाता है ॥ ९१ ॥

क्रूरे क्षेत्रे गतो जीवो रवी राहुर्धरासुतः ।
सप्तमे भवने शुक्रो देही कष्टं प्रयाति च ॥ ९२ ॥

और जिसके सूर्य बृहस्पति राहु मंगल क्रूर क्षेत्री हों; और सप्तम में शुक्र हों, वह देहमें कष्ट युक्त होता है ॥ ९२ ॥

क्रूरे लग्ने भवेज्जातस्तत्स्वामी क्रूरराशिगः ।

आत्मघातो भवेत्तस्य शरीरे कष्टमादिशेत् ॥ ९३ ॥

क्रूर लग्नमें तो जिसका जन्म होवे, और उसका स्वामी भी क्रूर राशिका हो सो वह मनुष्य शरीर में कष्ट से आत्मघात करके मरता है ॥ ९३ ॥

सप्तमे भवने भौमःपंचमे च दिवाकरः ।
अरण्ये च भवेज्जन्मवृक्षवृन्दे न संशयः ॥ ९४॥

और सप्तम घरमें जिसके मंगल, और पंचम होवे सूर्य, इस योगके होने से वनमें किसी वृक्षके नीचे झोंपडी में वह मनुष्य जन्म लेता है ॥ ९४ ॥

एकःपापो यदा लग्ने लग्नेशो वा न पश्यति ।
सूर्यःपश्यति नो लग्नमन्यजातस्तदा भवेत् ॥ ९५ ॥

और जिसके लग्न में एक पाप ग्रह बैठा हो, और उसे लग्नेश देखता न होवे, और न सूर्य लग्नको देखता होवे, तब वह पुरुष अन्यजात होता है ॥ ९५ ॥

तिथिप्रांते दिनांते च लग्नस्यांते तथैव च ।
चरांशेऽपि च यो जातः सोऽन्यजातःशिशुर्भवेत् ॥ ९६ ॥

और तिथि के अंतमें दिनके अन्त में लग्नके अन्त में और चर राशिके नवांश में जिसका जन्म होवे उसको भी अन्यजात समझना चाहिये ॥ ९६ ॥

न पश्यति शशी लग्नं मध्यस्थःसौम्यशुक्रयोः ।
ततःपरोक्षे जन्म स्याद्भौमेऽस्ते वा तनौ यमे ॥ ९७ ॥

बुध शुक्रके बीचमें बैठा चन्द्रमा लग्नको न देखता हो, और लग्न से सप्तम मंगल हो, या लग्नमें शनिहो, तो इस योगमें जातक पिताके परोक्षमें जन्म लेता है ॥ ९७ ॥

जीवक्षेत्रेगते चंद्रे शुक्रे वेतरराशिगे ।
द्रेष्काणे च तदंशे वा न परैर्जात इष्यते ॥ ९८ ॥

और जिसके बृहस्पति के घरमें चन्द्रमा होवे, और शुक्र अपनी राशिके विना अन्यत्र स्थित होवे या बृहस्पति के द्रेष्काण में वा नवांश में होवे, तो वह पिता से जन्म लिया नहीं होता है ॥ ९८ ॥

न लग्नमिंदुं न गुरुर्निरीक्षते न वा शशांकं रविणा समागतम् ।
सपापकोऽर्केण युतश्च वा शशी परेण जातं प्रवदंति सूरयः ९९
बृहस्पति लग्न वा चन्द्रमा को नहीं देखते हों, और रवि युक्त चन्द्रमा गुरुसे दृष्ट न हो, और पाप ग्रह के साथ सूर्य तथा चन्द्रमा हों वह मनुष्य भी अन्यजात होताहै॥

लग्नं पश्यति नो गुरुर्न च भृगुर्जारेण जातःशिशुः
क्षोणीजःसमवेक्षते शशधरं सूर्यश्च वा जारजः ।
चंद्रःपापयुतो दिनेशसहितः स्यादेवमप्यन्यजः
प्रोक्तं प्राङ्मुनिपुंगवैःस्फुटमिदं योगत्रयं जायते ॥ १ ॥

जिसके जन्म लग्न को बृहस्पति शुक्र न देखते हों वह बालक जारजात होताहै १ योग, और मंगल, सूर्य, चंद्रमा को न देखते हों २ योग, और जिसके सूर्य सहित चन्द्रमा पाप ग्रह युक्त बैठा होवे वह भी अन्यजात ३ होता है ये तीनों योग मुनिवरों ने अन्य जातके कहे हैं ॥ १ ॥

यदि वापि भवेच्चन्द्रो जन्माष्टमद्वितीयगः ।
द्वादशैकादशस्थो वा पश्चाज्जातस्तदा शिशुः ॥ २ ॥

जिसके लग्न या अष्टम या द्वितीय या बारहवें ग्यारहवें घरमें चन्द्रमा बैठा होवे तब वह बालक पिताके देशान्तर होते जन्म लेता है ॥ २ ॥

क्षपाकरःपश्यति नैव लग्नं विदेशसंस्थे जनके प्रसूतः ।
कुजार्किसंसर्गगते विलग्ने कवीज्यकेंद्रांशविहीनके वा ॥३॥

और जिसके लग्नको चन्द्रमा न देखता होवे, वह बालक अपने पिताके परदेश होने पर जन्म लेताहै (१) योग, अथवा मंगल शनि लग्नमें होवें; तथा बृहस्पति शुक्र केन्द्रसे रहित शेष स्थानोंमें आपड़ें (२) तो तब भी वह बालक पिताके विदेशस्थ होने पर जन्म लेता है ॥ ३ ॥

रविशशियुते सिंहे लग्ने कुजार्किनिरीक्षिते
नयनरहितःसौम्यासौम्यैःस बुद्बुदलोचनः ।
व्ययगृहगतश्चंद्रो वामं हिनस्त्यपरं रवि-

नशुभागादिता योगा याप्या भवंति शुभेक्षिताः ॥ ४ ॥

जिसके सूर्य, चन्द्रमा से युक्त, जन्मलग्न सिंह में आपड़े उन्हें मंगल और शनि देखते हों तब वह मनुष्य अंधा होता है, और जन्मलग्न को शुभाशुभ दोनों ग्रह देखते हों, तब जल के बबूला सरीकी आंख वाला होता है, और चन्द्रमा के व्यय १२ में बैठने से वाम नेत्र से हीन, और सूर्य के व्यय १२ में बैठने से दक्षिण नेत्र से हीन होता है, यदि शुभ ग्रह देखते हों तब शुभ फल देते हैं शुभ ग्रह दृष्टि से अशुभ भी कुछ २ शुभ होजाते हैं ॥ ४ ॥

अथ धनभावविचारः—

पापाःसर्वे धनस्थाने धनहानिकरा मताः ।
अन्यैःसौम्यैःशुभं सर्वमृद्धिवृद्धिधनादिकम् ॥ १ ॥

लग्न से दूसरे घरमें जितने पापग्रह बैठे हों, तब वे सब धन हानि करते हैं, यदि उक्त घरमें सौम्य ग्रह हों तब धन वृद्धि करते हैं ॥ १ ॥

क्रूराश्चतुर्षु केन्द्रेषु तथा क्रूरा धनेऽपि च ।
दरिद्रयोगं जानीयात्स्वपक्षस्य भयंकरः ॥ २ ॥

और जिसके केन्द्र चतुष्टय में क्रूर ग्रह हों, और दूसरे घर में भी क्रूर हों तब ये दरिद्रयोग होता है और वह अपने पक्ष को भय करने वाला होता है ॥ २ ॥

अष्टमस्थो यदा भौमास्त्रिकोणे नीचगो रविः ।
स शीघ्रमेव जातःस्याद्भिक्षाजीवी च दुःखितः ॥ ३ ॥

जिसके लग्न से अष्टम मंगल और त्रिकोण में नीच ७ का सूर्य होवे तो इस योग में जन्म लेने वाला बाल्यावस्था से ही भिक्षाजीवी तथा सदा दुःखी रहता है

कन्यायां च यदा राहुःशुक्रो भौमःशनिस्तथा ।
तत्र जातस्य जायेत कुबेरादधिकं धनम् ॥ ४ ॥

और जिसकी कुंडली में राहु शुक्र मंगल शनि चारों ग्रह कन्या के होकर बैठे हों इस योग में जन्म लेने वाले के कुबेर से भी अधिक धन होता है ॥ ४ ॥

अर्कःकेन्द्रे यदा चन्द्रो मित्रांशे गुरुणेक्षितः ।

वित्तवान् ज्ञानसंपन्नो जायते च तदा नरः ॥ ५ ॥

और जिसके जन्मांग में गुरु से दृष्ट मित्र के नवांश का चन्द्रमा हो और सूर्य केंद्र में बैठा हो तब वह मनुष्य धनवान् ज्ञान संपन्न होता है ॥ ५ ॥

स्वक्षेत्रस्थो यदा जीवो बुधः सौरिस्तथैव च ।
तदा जातःस दीर्घायुःसंपत्तिश्च पदे पदे ॥ ६ ॥

जिसके बुध शनि बृहस्पति स्वक्षेत्री बैठे हों तब वह दीर्घायु और संपत्ति युक्त होतो है ॥ ६ ।

लग्नं लग्नेशसंयुक्तं यस्य जन्मनि जायते ।
न मुंचंति गृहं तस्य कुलस्त्रिय इव श्रियः ॥ ७ ॥

जिसका जन्मलग्न लग्नेश से युक्त हो उसके घर को कुल स्त्रियों की तरह लक्ष्मी कभी भी नहीं त्यागती है ॥ ७॥

चन्द्रेण मंगलो युक्तो जन्मकाले यदा भवेत् ।
तस्य जातस्य गेहं तु लक्ष्मीर्नैव विमुञ्चति ॥ ८ ॥

और जिसके जन्म समय में मंगल युक्त चंद्रमा होवे उसके घरको लक्ष्मी कभी नहीं त्यागती है ॥ ८ ॥

मासमध्ये तु यत्संख्यदिवसैर्जायते पुमान् ।
तत्संख्यवर्षभुक्तौ तु लक्ष्मीर्भवति निश्चितम् ॥ ९ ॥

और जिसके उक्त योग हो उस मनुष्य को महीना के बीच में जितनी संख्या के दिन (तिथि) में जन्म हुआ होवे तब उसी संख्या के वर्ष बीतने पर धन मिलता है ॥ ९ ॥

अथ सहजभावविचारः—

पापैस्तृतीयगैःसर्वैर्बांधवैर्रहितो भवेत् ।
सौम्यैश्च भ्रातृसंयुक्तःकीर्तियुक्तो धनप्रियः ॥ १ ॥

जिसके तृतीय घर में सब पाप गृह बैठे हों तब वह भाइयों से रहित होता है, और सब शुभ गृह बैठे हों तब भाई बन्दों से युक्त, कीर्ति से युक्त, और धन प्रिय वह पुरुष होता है ॥ १ ॥

लग्नात्तृतीयभवने शिखिना सह चन्द्रमाः ।
लक्ष्मीवाञ्जायते बालो भ्रातृहीनो न संशयः ॥ २ ॥

जिसके लग्न से तृतीय घर में केतु युक्त चन्द्रमा होवे वह पुरुष लक्ष्मीवान् और भाइयों से रहित होता है ॥ २ ॥

आदौ जातान् रविर्हन्ति पश्चाद्भौमशनैश्चरौ ।
राहुसंज्ञोह्युभौ हंति केतुःसर्वनिवारकः ॥ ३ ॥

जो तीसरे घरमें सूर्य होवे तब अपुन से पहिले हुए भाइयों को मारता है, यदि मंगल और शनि तीसरे घरमें बैठे हों तब पिछारी हुये भाईयों को मारते हैं, एवं राहु तीसरे घरमें हो तब प्रथम जन्मे और पश्चाज्जन्मे दोनों को मारता है, और केतु तीसरे घरमें बैठा हो तब सर्व दोषों का विनाश करता है अर्थात् कुछ भी बुरा फल नहीं होता है ॥ ३ ॥

स्वक्षेत्रस्थो यदा राहुर्धनस्थाने बृहस्पतिः ।
बुधेन च समायुक्तस्तस्य बंधुत्रयं भवेत् ॥ ४ ॥

जिसके स्वक्षेत्री राहु होवे, और दूसरे घर में बुध युक्त बृहस्पति होवे, उसके तीन भाई होते हैं ॥ ४ ॥

लग्ने चंद्रे धने शुक्रो व्यये च बुधभास्करौ ।
राहुश्चेत्पंचमे बालःस भवेद्बंधुवंधकृत् ॥५॥

लग्न में चन्द्रमा, दूसरे घरमें शुक्र, व्यय १२ में बुध, सूर्य; और पंचम में राहु होवे तब वह मनुष्य भाईयों का मारने अथवा जेल कराने वाला होता है ॥ ५ ॥

धनस्थाने यदा क्रूरो भौमःसौरिसमन्वितः ।
सहजे च भवेद्राहुर्भ्राता तस्य न जीवति ॥ ६ ॥

और जिसके लग्न से दूसरे घरमें कोई भी क्रूर ग्रह हो, और शनि से युक्त मंगल और राहु तीसरे घरमें होवें, तो उस पुरुष का भ्राता नहीं जीता है ॥ ६ ॥

षष्ठे च भवने भौमःसप्तमे राहुसंभवः ।

अष्टमे च यदा सौरिर्भ्राता तस्य न जीवति ॥ ७ ॥

और जिसके छटे मंगल, सप्तम में राहु, और अष्टम में शनि हो तो उस पुरुष का भ्राता नहीं जीताहैं ॥ ७ ॥

विलग्नस्थो यदा जीवो धने सौरिर्यदा भवेत् ।
राहुश्च सहजे स्थाने भ्राता तस्य न जीवति ॥ ८ ॥

जिसके लग्न में गुरु, द्वितीय में शनि, और तीसरे घरमें राहु होवे, तब उसका भी भ्राता नहीं जीता है ॥ ८ ॥

सप्तमे भवने भौमश्चाष्टमेऽपि सितो यदि ।
नवमे च भवेत्सूर्यःस्वल्पायुश्च समूर्जितः ॥ ९ ॥

और जिसके सप्तम मंगल, अष्टम शुक्र, और नवम में सूर्य हो तो वह पुरुष अत्यन्त धनी किन्तु अत्यल्पायु होता है ॥ ९ ॥

उदयति मृदुभांशे सप्तमस्थेऽपि मंदे
यदिभवति निषेकः सूतिरब्दत्रयेण ।
शशिनि तु विधिरेष द्वादशाब्दे प्रकुर्या
न्निगदितमिह चिन्त्यं सूतिकालेऽपि युक्त्या ॥१०॥

गर्भाधान समयकी लग्न में मकर वा कुंभ के नवांश का उदय हो और उससे सप्तम घरमें शनि हो तब वह गर्भ तीन वर्ष में उत्पन्न होता है, और यदि निषेक लग्न कर्क के नवांश में होवे और लग्नसे सप्तम घरमें कर्काधीश चन्द्रमा होवे तब उस गर्भ निर्मुक्ति की अवधि मुनियों ने बारह वर्ष तक की कही है ॥ १० ॥

पुंग्रहो यस्य दुश्चिक्ये ह्युच्चस्थानस्थितो भवेत् ।
भ्रातरः षट् प्रजायंते चान्यथा भगिनी भवेत् ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यकी जन्मपत्री में उच्चके होकर पुंग्रह तीसरेमें स्थित होवें तब उसके छे भाई होते हैं; अगर स्त्री ग्रह हो तो (बुधसूर्यसुतौ नपुंसकाख्यौ शशिशुक्रौ युवती नराश्च शेषाः ब० सि०) भगिनी होती है ॥ ११ ॥

१——इतःप्रागसंगताभिप्रायको लिखितश्चैकः श्लोक आसीत् तथाहि—
"तस्यभ्राता भवेदन्यःपिता चायं समुद्धरेत्,तस्य चैको भवेत्पुत्रःसोऽपि विघ्नं विनश्यति";

अथ सुखभावफलम्—

तुर्यस्थाने स्थिताःपापा बालत्वे मातृकष्टदाः ।
सौख्यं सौम्याःप्रकुर्वंति राजसंमानदायकाः ॥ १ ॥

जिसके लग्न से चतुर्थ घर में पाप ग्रह बैठे हों तब बालकपन में माता को कष्ट देने वाले होते हैं, यदि शुभ ग्रह चतुर्थ स्थान में बैठे हों तब माता को सुख देने वाले होवे हैं और राज से सन्मान कराने वाले होते हैं ॥ १ ॥

लग्नाच्चतुर्थगःपापो यदि स्याद्बलवत्तरः ।
तदा मातृवधं कुर्यात्केंद्रे वा न परो यदि ॥ २ ॥

जिसके लग्न से चतुर्थ घर में पापग्रह बली होकर बैठा हो तब वह माता का वध करने वाला होता है, लेकिन केन्द्र में कोई अन्य ग्रह न होना चाहिये ॥ २ ॥

द्वितीये द्वादशे स्थाने यदा पापो व्यवस्थितः ।
तदा मातुर्भयं विंद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः ॥ ३ ॥

जिसके द्वितीय द्वादश घरमें पाप ग्रह होवे तब माता को भय दायक होता है, यदि चतुर्थ दशम घर में पाप ग्रह हो तब पिता को भयदायक होता है ॥ ३ ॥

पापमध्यगते लग्ने चंद्रे वा पापसंयुते ।
सौम्ये निधनगे पापे मातृहा सप्तवासरे ॥ ४ ॥

दो पाप ग्रहों के मध्य में लग्न हो, और उस लग्न में ही पापग्रहों से युक्त चन्द्रमा हो; और शुभग्रह भी पापग्रह युक्त अष्टम में आ पडे तब उस बालक की माता सात दिन में मरजाती है ॥ ४ ॥

चतुर्थे हन्यते माता दशमे च तथा पिता ।
सप्तमे भवने क्रूरास्तस्य भार्या विपद्यते ॥ ५ ॥

जिसके लग्न से चौथे घर में क्रूर ग्रह होवे तो माता, और दशममें क्रूर होवे तो पिता और सप्तम होवे तो भार्या मरती हैं ॥ ५ ॥

शन्यंगारकमध्यस्थःसूर्यःकुर्यात्पितुर्वधम् ।
मध्ये वा रजनीनाथो मातुर्मृत्युर्नसंशयः ॥ ६ ॥

जिसकी कुंडली में शनि और मंगल के मध्य में सूर्य होवे तब उसके पिता को, और यदि चन्द्रमा होवे तब उसकी माता को मारता है ॥ ६ ॥

चंद्रादष्टमगे पापे चंद्रे पापसमन्विते ।
पापैर्बलिष्ठैः संदृष्टे सद्यो भवति मातृहा ॥ ७ ॥

जिसके चन्द्रमा पापग्रह संयुक्त होवे, और चन्द्रमा से अष्टम घरमें भी पापग्रह होवे, तथा बली अन्यान्य पापग्रहों से दृष्ट होवें तब वह बालक उत्पन्न होवे ही अपनी माता का मारने वाला होता है ॥ ७ ॥

लग्नस्थाने यदा जीवो धनस्थाने शनैश्चरः ।
राहुश्च सहजे स्थाने माता तस्य न जीवति ॥ ८ ॥

जिसके लग्न में बृहस्पति; द्वितीय घर में शनि, और तीसरे घर में राहु होवे तब उस बालक की माता नहीं जीती है ॥ ८ ॥

सिंहे भौमस्तुले सौरिः कन्यायां वा सितो भवेत् ।
मिथुने च यदा राहुर्जननी तस्य नश्यति ॥ ९ ॥

जिसकी कुंडली में सिंह राशि का मंगल, तुला का शनि, कन्या का शुक्र; और मिथुन का होकर राहु बैठा हो तो उस बालककी माता मरजाती है ॥ ९ ॥

चंद्रः पापग्रहैर्युक्तश्चंद्रो वा पापमध्यगः ।
चंद्रात्सप्तमगः पापस्तदा मातृवधो भवेत् ॥ १० ॥

और जिसकी कुंडली में दो पाप ग्रहों के मध्य में अथवा पाप ग्रहों से युक्त चन्द्रमा हो, और चन्द्रमा से सप्तम घरमें पाप ग्रह होवे, तब उस बालक की माता मर जाती है ॥ १० ॥

एकादशे यदा क्रूरः पंचमे शुक्रशीतगू ।
प्रथमं कन्यका जाता माता तस्यास्तु कष्टगा ॥ ११ ॥

जिसके लग्न से एकादश घर में क्रूर ग्रह हो, और पंचम घर में शुक्र और चन्द्रमा हो, तो समझना चाहिये कि इस बालक की माता के पहिली सन्तान कन्या हुई होगी तब उसकी माता को बहुत कष्ट भोगना पड़ा होगा ॥ ११ ॥

धने राहुर्बुधः शुक्रःसौरिः सूर्यो यदा ग्रहाः ।
तदा मातुर्भवेन्मृत्युर्मृतोऽयं परिजायते ॥ १२ ॥

जिसके दूसरे घरमें राहु शुक्र बुध शनि और सूर्य ये पांचों ग्रह साथही बैठेहों, तब उस की, माता की मृत्यु होती है और वह बालक माता के मरने के पश्चात् जन्म लेता है अथवा मरा हुआ ही पैदा होता है ॥ १२ ॥

नीचस्थानगते चन्द्रे तिष्ठेद्वै भार्गवात्मजः ।
पापासक्तो महाक्रोधी माता तस्य न जीवति ॥ १३ ॥

जिसकी कुंडली में चन्द्रमा अपने नीच स्थान का होकर बैठा हो और शुक्र के संग हो, तब वह मनुष्य पाप करने में आसक्त, वडा क्रोधी, और माता का घातक होता है यानी उसकी माता मरजाती है ॥ १३ ॥

द्वादशे रिपुभावे च यदा पापग्रहो भवेत् ।
तदा मातुर्भयंविंद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः ॥ १४ ॥

और जिसके १२।६ घर में पाप गृह हो, तो माता को, और चौथे दशमे घर में पाप गृह होवे, तो पिता को भय करता है ॥ १४ ॥

त्रिसप्तस्थो दिवानाथो जन्मस्थश्च महीसुतः ।
तस्य माता न जीवेत वर्षमेकं पलद्वयम् ॥ १५ ॥

जिसके लग्न से तीसरे सातवें घर में सूर्य होवे, जन्म लग्न में मंगल होवे, तो उस बालक की माता एक वर्ष के अगाडी दो पल भी नहीं जीती है ॥१५॥

द्यूनाष्टमगते पापे क्रूरग्रहनिरीक्षिते ।
जनन्या सह मृत्युःस्याद्बालकस्य न संशयः ॥ १६ ॥

जिसके सप्तम और आठवें घरमें पाप गृह हों, और उसको क्रूर गृह देखता हो, तो उस बालक की माता सहित मृत्यु होती है इसमें सन्देह नहीं है ॥ १६ ॥

१—इतः पूर्वमेकंपद्यमसंगतार्थं लिखितमासीत् तन्मूलेऽलिखित्वाऽत्रस्थाप्यते तथाहि—

लग्ने च द्वादशे स्थाने यदि पापग्रहो भवेत् ।
तस्य माता भवेद्वन्ध्या पिता तस्य न जीवति ॥

अथ सुतभावः—

पञ्चमस्थाःशुभाःसर्वे पुत्रसन्तानकारकाः ।
क्रूराःसन्ततिमृत्युं च कुपुत्रं च धरासुतः ॥ १ ॥

जिसके लग्नसे पंचम घरमें शुभग्रह होते हैं तब वे सब पुत्र संतान करने वाले होते हैं, क्रूर ग्रह पंचम घरमें हों तब संतति होकर मर जाती है और पंचम घरमें मंगल होने से कपूत पुत्र होता हैं ॥ १ ॥

बालस्य जन्मकाले तु पञ्चती धरणीसुतः ।
अपुत्रश्च भवेद्बालो नारी चैव विशेषतः ॥ २ ॥

और जिसके पंचम घरमें मंगल होता है वह स्त्री या पुरुष कोई हो तब वह अपुत्र होता है ॥ २ ॥

अपुत्रं कुरुते भानुःपुत्रमेकं निशाकरः ।
सशोकं पुत्रहीनं च पंचमो धरणीसुतः ॥ ३ ॥

पंचम घर में सूर्य होवे तो संतति रहित करता है, चन्द्रमा पंचम होवे तब एक पुत्र करता है,और मंगल पंचम हो तब वह पुरुष सशोक,और पुत्रहीन होता हैं।

उच्चो वा यदि वा नीचो पंचमं केतुराश्रितः ।
हाहाकारं च कुरुते पुत्रशोकेन पीडितः ॥ ४ ॥

जिसके उच्च या नीचका जहां कहीं भी रहता हुआ केतु पञ्चम में आपडे तब वह पुरुष पुत्र शोक से पीडित होकर हा हा कार करता है ॥ ४ ॥

[१]तुरेतोऽप्यदृष्टं स्याद् यदिचैको न पश्यति ।
अप्रसूतो भवेन्मर्त्योबहुस्त्रीपरिणेतृकः ॥ ५ ॥

अगर पंचमस्थकेतु को कोई भी ग्रह न देखते हों तो सन्तानोत्पत्ति की तो कौन कहे बल्कि उस जातक की स्त्री का रजोधर्म भी बन्द होजाय तब वह लाचार होकर बेचारा सन्तानार्थ दो तीन चार विवाह करे तब भी पुत्र के मुख को नहीं देखता है ॥ ५ ॥

१—एत त्पद्यानन्तरमशुद्धप्राय निम्नस्थमप्येकं पद्यं पूर्वमासीत्—
"एकत्रिपञ्च पुत्राणि सूर्ये धीस्थे कुजे गुरौ ।
द्वित्रिपञ्च च सप्तैव पुत्रीन्दौ झसिते शनिः" ॥

पापःपंचमराशौ जातं जातं शिशुं विनाशयति ।
सप्तमराशौ पापाद्वे भार्ये बादरायणेनोक्तम् ॥ ६ ॥

और जिसके लग्न से पंचम घरमें कोई पाप ग्रहहों तब उसके हो २ कर बालक मरजाते हैं, और जिसके लग्न से सप्तम घरमें पाप ग्रह बैठे हों तब उस पुरुष के दो भार्या होती हैं ऐसा व्यास ऋषि ने कहा है ॥ ६ ॥

एकःपुत्रो रवौ वाच्यंश्चंद्रे चैव सुताद्वयम् ।
भौमेपुत्रास्त्रयो वाच्या बुधे पुत्रीचतुष्टयम् ॥ ७ ॥

जिसके पंचम सूर्य होवे तब एक पुत्र, चन्द्रमा हो तब दो कन्या, और मंगल हो तब तीन पुत्र, और बुध हो तब उस पुरुष के चार कन्या होती हैं ॥ ७ ॥

गुरौ गर्भे सुताःपंच षट् पुत्र्यो भृगुनंदने ।
शनौ च गर्भपातःस्याद्राहौ गर्भो भवेन्न हि ॥ ८ ॥

और बृहस्पति पंचम बैठा हो तब पांच पुत्र, शुक्र हो तो छः कन्या, और शनि होवे तो गर्भपात होता है, और यदि राहु हो तब उसकी स्त्री के गर्भ ही नहीं ठहरता है ॥ ८ ॥

सुतस्थाने द्विपापौ वा त्रिपापाश्चात्र संस्थिताः ।
तदा स्त्रीपुरुषौ वन्ध्यौ विज्ञेयौ सुतवीक्षिते ॥ ९ ॥

और जिसके पंचम घरमें दो या तीन पापग्रह हों या देखते होंतब वे स्त्री पुरुष दोनों वन्ध्य होते हैं ॥ ९ ॥

ऋतुश्च[१] कथितःशुक्रो रेतो भौमःप्रकीर्तितः ।
भौमः पश्यातियद्वर्षे तद्वर्षे गर्भसंस्थितिः ॥ १० ॥

शुक्र को ऋतु, और मंगल को रेत कहते हैं जिस वर्ष में मंगल देखता है उसी वर्ष में गर्भ स्थित होता है ॥ १० ॥

१—एतत्पद्योक्तसंज्ञकग्रहसंपर्कजनितयोगफलकथनकं—
" रेतऋत्वोश्च संपर्कात् ,, इत्यादि पद्यन्त्वत्रैव द्वितीयाऽध्याये योग प्रकरणे, स्थितमस्ति तत्तु तत्रैवात्रलोकनीयं ग्रन्थभूयस्त्वभीतेर्नास्माभिः पुनरिहोल्लिखितम् ॥

पुंराशौ[1] लग्नपतिः सुताधिपं वीक्षते वापि ।
संततिबाधां कुरुते केंद्रे पापान्विते चंद्रे ॥ ११ ॥

और जिसकी कुंडली में पुंराशिका होकर लग्नेश सुतभावेश को देखता हो; और पापग्रह युक्त चन्द्रमा केन्द्र का बैठा हो तब उस पुरुष को संतति निमित्त बाधा करता है ॥ ११ ॥

लग्ने[2]ऽत्पुत्रकलत्रभे शुभपतिप्राप्तेऽथ वाऽलोकिते
चंद्राद्वा यदि संपदस्तु हि तयोर्ज्ञेयोऽन्यथाऽसंभवः ।
पाथोनोदयगे रवौ रविसुतै मीनस्थिते दारहा
पुत्रस्थानगतश्च पुत्रमरणं पुत्रोऽवनेयंच्छति ॥ १२ ॥

जिसके लग्न से या चन्द्रमा से पंचम भाव शुभग्रह या अपने स्वामी से युक्त वा दृष्ट हो तो उसके पुत्र सम्पत्ति अवश्य होगी, एवं लग्न या चन्द्रमा से सप्तम भाव स्वनाथ वा सौम्य ग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो उसके स्त्री अवश्य होगी, अगर उपर्युक्त लक्षण न होवे पंचम भावके विचार से पुत्रहीन, एवं सप्तम भावके विचार से स्त्री हीन (क्वारा) जातक को कहना चाहिये; अगर जन्म लग्न कन्या में सूर्य आपडे, तथा शनि मीनमें होवे तो दारहा योग होता हैं (उसकी स्त्री मर जाती है); और अगर कन्या का सूर्य लग्न में हो, और मकर का मंगल पंचम में हो तो पुत्र मरण देता है ॥ १२ ॥

लग्ने द्वितीये यदि वा तृतीये विलग्ननाथे प्रथमः सुतः स्यात् ।
तुर्यस्थितेऽस्मिश्च सुतो द्वितीयः पुत्री सुतोवेति पुरः प्रकल्प्यम् ॥

और लग्न में द्वितीय में या तृतीय घरमें लग्नेश बैठा हो तब उस मनुष्य के प्रथम पुत्र होता है पश्चात पुत्री, और लग्न से लग्नेश चतुर्थ घरमें होवे तो कन्या दूसरी बार पुत्र होता है एवं आगे को भी प्रथम पुत्री फिर पुत्र होताहै ।१३।

धनस्थाने यदा क्रूरः क्रूरग्रहसमन्वितः ।

१—राशीनां पुंस्त्र्यादि संज्ञातु पुंस्त्री क्रूराऽक्रूरौ चरस्थिर द्विस्वभाव—संज्ञाश्च, अज वृष मिथुन कुलीराः पंचमनवमे, सहेन्द्राद्याः एतत्पद्यादवगन्तव्या, । व. मि.
२—वृहज्जातकस्थ मिदं ।

न पश्यति निजक्षेत्रमल्पपुत्रस्तदा भवेत् ॥ १४ ॥

जिसकी कुंडलीमें द्वितीय स्थानमें दो क्रूर ग्रह बैठे हों, और वे अपने स्थान को न देखते होवें, तब वह मनुष्य अल्प पुत्र वाला होता है ॥ १४ ॥

सहजे सहजाधीशो लग्ने वाऽथ धने भवेत् ।
जायते न तदा बालो यदि जातो न जीवति ॥ १५ ॥

जो तीसरे घरका स्वामी ग्रह तीसरे घरमें हो या लग्न में या दूसरे घरमें होवें तब उस मनुष्य के पुत्र नहीं होता है और होवे तो मरजाता है ॥ १५ ॥

झषधनुर्धरपंचमभावगे प्रसवसौख्यफलं न च दृश्यते ।
मृतप्रजःखलु पंचमगे गुरौ तदिह दृष्टिफलं शुभमश्नुते ॥१६

मीन और धन लग्न पंचम घरमें पडजांय तो उसकी स्त्री पहिले तो गर्भवती ही नहीं होती है अगर होवे भी तो गर्भ नष्ट हो जाता है, एवं पंचम स्थान में बृहस्पति होवे तो वह पुरुष मृतप्रज होता है, और पंचम घरपर शुभ ग्रह की दृष्टि होवे तब उस मनुष्य को संतति का सुख होता है ॥ १६ ॥

लाभे सुते वा शुक्रेंदुसुतौ भौमोऽथवा क्रमात् ।
शुक्रेंदू पश्यतःपुत्रं वर्षेऽस्मिन्संततिस्तदा ॥ १७ ॥

जिसके लाभ या पंचम में शुक्र और बुध हों; अथवा पंचम में मंगल क्रमसे हो, और शुक्र चन्द्रमा जिस वर्ष में देखते हों तब उस मनुष्य के उसी बर्ष में संतति होती है ॥ १७ ॥

यत्र चैकादशे राहुःपंचमे च शिखी स्थितः ।
सुताननं न दृश्येत यदीन्द्रोऽपि च सेव्यते ॥ १८ ॥५॥

और जिसके ग्यारहवें राहु, और पंचम में केतु होवे, तब वह यदि इन्द्र की भी सेवा करै तब भी पुत्रका मुख नहीं देखता है ॥ २० ॥ इति पं० ॥

अथ रिपुभाव विचारः—

षष्ठे क्रूरा नरं कुर्युःशत्रुपक्षविवर्जितम् ।
सौम्याःषष्ठे महारोगान्षष्ठश्चंद्रश्च मृत्युदः ॥ १ ॥

जिसके छटे घरमें क्रूर ग्रह हों तब उसको शत्रुपक्ष रहित करते हैं, और छटे घरमें सौम्य ग्रह बैठे हों तब उसको महारोग देनेवाले होते है, और जिसके छटे घरमें चन्द्रमा बैठा हो तब मृत्यु देने वाला होता है ॥ १ ॥

अथ जायाभावविचारः—

कुभार्यां सप्तमे पापाःसौम्याःसर्वजनप्रियाम् ।
गुरुशुक्रौ शचीतुल्यां रूपलावण्यशालिनीम् ॥ १ ॥

जिसकी कुंडली में लग्न से सप्तम घरमें पापग्रह हों तो खोटी स्त्री; और यदि शुभ ग्रह हों तो सर्वजन प्रिय स्त्री, यदि उक्त स्थान में बृहस्पति शुक्र बैठे तब उस मनुष्य को इन्द्राणी के समान रूपगुण शालिनी पत्नी को देते हैं ॥ १ ॥

षष्ठे च भवने भौमःसप्तमे सिंहिकासुतः ।
अष्टमे च यदा सौरिर्भार्या तस्य न जीवति ॥ २ ॥

छटे घरमें मंगल, और सप्तम में राहु, और अष्टम में शनि बैठाहो तब उस पुरुष की भार्या नहीं जीती है ॥ २ ॥

जायागृहे सौरिशशी च राहुर्जायापतिःपश्यति सप्तमञ्चेत् ।
तस्यालये संभवतीह नारी श्यामा च गौरी बहुपुत्रिणी च ॥३॥

जिसके लग्न से सप्तम में शनि चन्द्र राहु बैठे हों; और सप्तमेश ग्रह कहीं भी बैठा हुआ अल्प या पूर्ण दृष्टिसे सप्तम भावको देखता हो, तब पुरुषको श्याम गौरांगी और बहु पुत्रिणी पत्नी प्राप्त होती है और पुत्रभी अनेक होवे हैं ॥ ३ ॥

लग्ने व्यये च पाताले यामित्रे चाष्टमे कुजः ।
कन्या भर्तुर्विनाशाय भर्ता कन्यां विनाशयेत् ॥ ४॥

जिस लडकी की जन्म कुण्डली में १।१२।४।७।८ इन घरों में मंगल आपडे तब उसका पति मरजाता (यह वैधव्य योग है) है और यदि पुरुष के जन्मांग चक्रमें लग्नादि पांचों स्थानों में मंगल बैठजाय तो उसकी पत्नी मर जाती है ॥४॥

लग्ने पापग्रहे गौरो दुर्बलःशत्रुपीडितः ।
भवेद्दुर्वाच्यतायुक्तो भवेत्परवधूरतः ॥ ५ ॥

जिसका जन्मलग्न पाप ग्रह से युक्त हो तब वह गौर वर्ण वाला, दुर्बल; शत्रु की तरफ से पीडित, लोगों से निन्दा पाने वाला; एवं पर स्त्री गामी होता है ॥ ५ ॥

लग्नाद् व्यये वा रिपुमंदिरे वा दिवाकरेंदू भवतस्तदानीम् ।
स्यान्मानवस्यात्मज एक एव भार्यापि चैकेति वदंति संतः ॥६॥

और जिसके लग्न से छटे या बारहवें स्थान में सूर्य और चन्द्रमा हो तब उस मनुष्यके एकही पुत्र तथा एकही पत्नी होती है ॥ ६ ॥

गडांतकाले च कलत्रभावे भृगोःसुते लग्नगतेऽर्कजाते ।
वंध्यापतिःस्यान्मनुजस्तदानीं शुभेक्षितं नो भवनं खलस्य॥७॥

और किसी पुरुषका जन्म गंडांतज्येष्ठा (पौष्णाभ सार्पभान्त्य घटिकायुग्मभित्यादि रामोक्तिवो नक्षत्रतिथिलग्नभेदात्रिविधम्) में हो, तथा शुक्र सप्तम में हो, और लग्न में शनि हो, और क्रूरग्रह की राशि हो तथा उसे शुभ ग्रह कोई देखता न हो तब वह मनुष्य बंध्यापति होता है ॥ ७ ॥

व्ययालये वा मदनालये वा खलेषु बुद्ध्यालयगे हिमांशौ ।
कलत्रहीनो मनुजस्तनूजैर्विवर्जितःस्यादिति वेदितव्यम् ॥८॥

और बारहवें या सप्तम में पाप ग्रह हो, और पंचम में चन्द्रमा होवे, तब वह मनुष्य पुत्र तथा स्त्री से रहित होता है ॥ ८ ॥

प्रसूतिकाले च कलत्रभावे यमे च भूमेस्तनयस्य वर्गे ।
ताभ्यां प्रदृष्टे व्यभिचारिणी स्याद्भार्या स्वयं च व्यभिचारकर्त्ता॥

जिस मनुष्य की कुंडली में शनि सप्तम स्थान में हो, तथा मंगल का षड्-वर्ग होवे, और यही दोनों देखते होवें, तब वे दोनों स्त्री पुरुष व्यभिचार करने वाले होते हैं, अर्थात् परस्त्रीगामी पुरुष, और परपुरुषगामिनी स्त्री होती है ॥ ९ ॥

शुक्रेंदुपुत्रौ च कलत्रसंस्थौ कलत्रहीनं कुरुते नरं तौ ।
शुभेक्षितौ वा वयसो विरामे कामां च रामां लभते मनुष्यः॥१०

जिसके लग्नसे सप्तम घरमें शुक्र और बुध बैठे हों तब उस पुरुषको स्त्रीसे हीन

करते हैं, और उक्त स्थान स्थित ग्रहों को शुभग्रह देखते हों तब उस मनुष्यको आयुके समाप्त समय में मनोवांछित सुन्दर पत्नीको देते हैं ॥ १० ॥

चंद्राद्विलग्नाच्च खलाःकलत्रे हन्युःकलत्रं च लयं गतौ तौ ।
चंद्रार्कपुत्रौ च कलत्रसंस्थौ पुनर्भवास्त्रीपरिलब्धिदौ स्तः ॥११॥

और जिसकी कुण्डलीमें चन्द्रमा से या लग्न से सप्तम में पाप ग्रह हों, या अष्टम में हों तब वह पत्नीको मारते हैं, और जो चन्द्र शनि दोनों सप्तम घरमें बैठे हों तब उस मनुष्यका विवाह विधवा से होता है ॥ ११ ॥

महीसुते सप्तमभावयाते कांतावियुक्तःपुरुषस्तदा स्यात् ।
मंदेन दृष्टे म्रियतेऽचिरात्तदा सूर्येण दृष्टे बहुदुःखपीडितः ॥१२

और जिसके सप्तम में केवल मंगल हो, वह पुरुष पत्नी से वियोग को पाता है, यदि उसे शनि देखता हो तब वह जातक खुदही शीघ्र मरजाता है, और जो मंगल को सूर्य देखता हो तब वह पुरुष अनेक दुःखों से पीडित होता है ॥ १२ ॥

षष्ठे च भवने भौमःसप्तमे राहुसंभवः ।
अष्टमे च यदा सौरिस्तस्य भार्या न जीवति ॥ १३ ॥

और छटे घरमें मंगल; और सप्तममें राहु, और अष्टम शनि होवे, तब भी उस पुरुषकी भार्या नहीं जीती है ॥ १३ ॥

अथायुर्भावविचारस्तत्रादावरिष्ट भंगयोगवर्णनम् ।

पूर्वमायुःपरीक्षेत पश्चाल्लक्षणमादिशेत् ।
आयुर्हीननराणां च लक्षणैःकिं प्रयोजनम् ॥ १ ॥

प्रथम आयुकी परीक्षा करनी चाहिये पिछाडी लक्षण कहने चाहियें आयु हीन मनुष्यों के लक्षण कहने से क्या प्रयोजन है ॥ १ ॥

खेटाःसर्वे महादुष्टा अष्टमस्थानमाश्रिताः ।
शशांकस्तु विशेषेण जन्मकाले च मृत्युदः ॥ २ ॥

और सम्पूर्ण ग्रह अष्टम घरमें महाखराव यानी मृत्यु देने वाले होते हैं; यदि चन्द्रमा हो तब विशेष करके मृत्यु देने वाला होता है ॥ २ ॥

कृष्णपक्षे दिवा जातःशुक्लपक्षे यदा निशि ।
तदा षष्ठाष्टमश्चंद्रो मातृवत्परिपालकः ॥ ३ ॥

और जिसका कृष्णपक्षमें दिनका, और शुक्लपक्षमें रात्रिका जन्महो, तो अष्टम या षष्ठ स्थान स्थित भी वह चन्द्रमा माता के समान पालन करता है ॥ ३ ॥

पंचमस्थो निशानाथस्त्रिकोणे च बृहस्पतिः ।
दशमे च महीसूनुःशतवर्षं स जीवति ॥ ४ ॥

और जिसकी कुण्डली में पंचम में चन्द्रमा, और त्रिकोण ९।५ में बृहस्पति, दशम में मंगल हो, वह पुरुष पूर्ण १०० वर्ष जीता है ॥ ४ ॥

शनैश्चरस्तुलाकुंभमकरे यदि वा भवेत् ।
लग्ने षष्ठे तृतीये वा तदारिष्टं न जायते ॥ ५ ॥

और जिसकी कुण्डली में तुला मकर या कुंभ का शनि बैठा हो या लग्न छठे और तीसरे में बैठा हो तब उस मनुष्य के शरीर में कभी अरिष्ट नहीं होता है ॥ ५ ॥

केंद्रे शुभो यदैकोऽपि वली बिश्वप्रकाशकः ।
सर्वे दोषाःक्षयं यान्ति दीर्घायुश्च भवेन्नरः ॥ ७ ॥

जिसके केंद्र में पूर्ण बली होकर एक भी शुभ ग्रह आ पडे तब सब दोषों को क्षय करके दीर्घायु देता है ॥ ७ ॥

एकोऽपि केंद्रे बुधजीवशुक्राःक्रूराःसहस्राणि विरुद्धयुक्ताः ।
तथापि सर्वाण्यपि यांति नाशं यथा मृगाःकेसरिदर्शनेन ॥८॥

जिसके केंद्र १।४।७।१० में बुध बृहस्पति शुक्रमें से एक भी कोई ग्रह बैठा हो तब उसके विरुद्ध होकर चाहे कितने भी क्रूर ग्रह क्यों न हों तो भी सब दोष नाश होवे हैं जैसे सिंहके देखनें से मृग ॥ ८ ॥

पाताले बांवरे लग्ने सुते धर्मे तथायगे ।
देवपूज्यस्तथा शुक्रो नाशयेद्दुरितं मुहुः ॥ ९ ॥

चौथे दशम, लग्न, पंचम या नवम अथवा ग्यारहवें घर में बृहस्पति या शुक्र बैठा हो तब अनेक दोषों को नाश करते हैं ॥ ९ ॥

एकोऽपि केंद्रे यदि तुङ्गसंस्थःसर्वे ग्रहा भावगुणेन तुल्यम् ।
सर्वेऽप्यरिष्टं च विनाशयंति तमो यथा भास्करदर्शनेन ॥१०॥

और जिसके जन्म समय कोई एक भी ग्रह उच्च का होकर केन्द्र में बैठा हो और सब ग्रह भले ही अपने भाव के गुणों के अनुसार भी हों तब भी सूर्य के अगाड़ी अंधकार की तरह इतर गृहकृत सर्वारिष्ट नाश होते हैं ॥ १० ॥

शुक्रो दश सहस्राणि बुधो दश शतानि च ।
लक्षमेकं तु दोषाणां गुरुर्लग्ने व्यपोहति ॥ ११ ॥

और शुक्र के लग्न में होने से दशहजार दोष, बुध के लग्न में होने से हजार दोष,और बृहस्पति के लग्न में होने से एक लक्ष दोष शांत होते हैं ॥ ११ ॥

केंद्रत्रिकोणगो जीवःशुक्रो वा चंद्रनंदनः ।
तस्य मर्त्यस्य दीर्घायुःस भवेद्राजवल्लभः ॥ १२ ॥

और जिसके केंद्र में १।४।७।१० या त्रिकोण ९।५ में बृहस्पति शुक्र अथवा बुध होवें, वह पुरुष दीर्घायु और राजप्रिय होता है ॥ १२ ॥

गुरुर्धनुषि मीने वा तथा कर्कटकेऽपि वा ।
लग्नात्त्रिकोणे केंद्रे वा तदारिष्टं न जायते ॥ १३ ॥

जिसके बृहस्पति धनु मीन अथवा कर्क में होवे अथवा त्रिकोण या केंद्र में होवे तब उस पुरुष को कभी अरिष्ट नहीं होता है ॥ १३ ॥

अजवृषकर्कटलग्ने रक्षति राहुःसमग्रपीडाभ्यः ।
पृथ्वीपतिःप्रसन्नःकृतापराधं यथा पुरुषम् ॥ १४ ॥

और जिसकी कुंडली में मेष, वृष, या कर्क जन्मलग्न आ पडे और इन्हीं का होकर राहु बैठा हो तो कृतापराध पुरुष को स्वामी जैसे तैसे उस पुरुष को सब पीडाओं से रक्षा करता है ॥ १४ ॥

राहुस्त्रिषष्ठलाभे लग्नात्सौम्यैर्निरीक्षितःसद्यः ।
नाशयति सर्वदुरितं मारुत इव तूलसंघातम् ॥ १५ ॥

और यदि राहु तीसरे छठे ग्यारहवें घरमें बैठा हो एवं उसे कोई शुभग्रह देखते हों तब रुई को पवन जैसे सब दोषों को उडा देता है ॥ १५ ॥

विलग्नपो यत्र बलेन युक्तो लाभे तृतीये यदि कंटके वा।
सर्वाण्यरिष्टानि प्रयाति दूरं दीर्घायुरारोग्यतनुं करोति ॥१६॥

जिसका लग्नेश बली होकर लाभ (११) में या तीसरे अथवा कंटक (केन्द्र) में बैठा हो तब मनुष्य के सर्वारिष्टों को दूर करके दीर्घायु, और शरीर में आरोग्य करने वाला होता है ॥ १६ ॥

एकोऽपि यदि केंद्रस्थो भार्गवोऽथ गिरां पतिः।
नवमे वा सुतस्थाने सर्वारिष्टं निवारयेत् ॥ १७ ॥

और गुरु शुक्र में से कोई एकभी गृह केंद्रमें अथवा नवम पंचममें बैठा होवे तब वह सर्वारिष्टों का नाश करता है ॥ १७ ॥

बुधभार्गवजीवानामेकतमःकेंद्रमाश्रितो बलवान्।
क्रूरःसहायो यद्यपि सद्योऽरिष्टप्रशमनाय ॥ १८ ॥

और बुध शुक्रबृहस्पति इनमें से कोई एक भी ग्रह बलवान् होकर केंद्र में बैठा होवे और वह चाहे क्रूर ग्रह संयुक्त भी हो तब भी तत्काल ही अरिष्टों को नाश करता है ॥ १८ ॥

स्वस्थानगोऽधिकबलःसुरराजमंत्री केंद्रोपगःप्रशमयेत्स्फुरदंशुजालः
एको वहूनि दुरितानि सुदुस्तराणि भक्त्या प्रयुक्त इव शूलधरेप्रमाणः

और पूर्ण बलवान् बृहस्पति स्वक्षेत्री (६-१२) होकर केंद्रमें बैठाहो तब वह अकेला ही अनेक दुस्तर दोषों को नाश करता है जैसे भक्ति पूर्वक शिवजी को किया हुआ प्रणाम पापों को दूर करता है ॥ १६ ॥

लग्नाधिपोऽतिबलवानशुभैरदृष्टःकेन्द्रस्थितैःशुभखगैरथ वीक्ष्यमाणः
मृत्युं बिहाय विदधाति सुदीर्घमायुःसंपूर्यते निजगृहं परया च लक्ष्म्या

यदि लग्नेश पूर्णबली क्रूर ग्रहों से अदृष्ट तथा केंद्रस्थित शुभ ग्रहों से दृष्ट होवे तब वह मृत्यु से बचाकर दीर्घायु देता है और अपने घरको परलक्ष्मीसे परिपूर्ण करता है ॥ २० ॥

लग्नादष्टमसंस्थो गुरुबुधशुक्रद्रेष्काणगश्चन्द्रः।
मृत्युं प्राप्तमपि नरं परिरक्षत्येव निर्व्याजम् ॥ २१ ॥

और लग्नसे अष्टम घरमें बैठा हुआ चन्द्रमा गुरु शुक्र बुधके द्रेष्काण का होजाय तब अष्टम चन्द्रकृत कोई खराबी नहीं होती बल्कि वही चन्द्रमा मृत्यु पाते हुए को भी निष्कपट रक्षा करता है ॥ २१ ॥

चन्द्रःसंपूर्णतनुःसौम्यर्क्षगतोऽथवा शुभस्यांतः ।
प्रकरोत्यरिष्टभङ्गं विशेषतःशुक्रसंदृष्टः ॥ २२ ॥

जिसके संपूर्ण कलाओंसे युक्त चंद्रमा शुभग्रह की राशिमें हो, अथवा शुभ ग्रहान्तर्गत हो तब अरिष्टोंको नाश करता है, यदि शुक्र दृष्टहो तब विशेष करके अरिष्ट नाशक होता है ॥ २२ ॥

रिपुगःशुभद्रेष्काणे स्थितःशशी सौम्यखेचराःसबलाः ।
कुर्वंत्यरिष्टभङ्गं यच्छन्तो भूरिभव्यततिम् ॥ २३ ॥

शुभ ग्रह के द्रेष्काणका चन्द्रमा छटे घरमें हो और शुभ ग्रह सब बलीहों तब कल्याण का विस्तार करते हुए अरिष्टों को दूर करता है ॥ २३ ॥

सौम्यद्वयांतरगतःसंपूर्णःस्निग्धमंडलश्चन्द्रः ।
भुनक्त्यशेषारिष्टान्भुजगारिर्भुजगलोकानिव ॥ २४ ॥

और जिसके दो सौम्यग्रहों के बीचमें पूर्ण बली चंद्रमा बैठा हो, तब नागों को गरुडकी तरह सर्वारिष्टोंको नाश करता है ॥ २४ ॥

प्रस्फुरितकिरणजाले स्निग्धामलमंडले बलोपेते ।
सुरमंत्रिणि केंद्रगते सर्वारिष्टं क्षयं याति ॥ २५ ॥

और जिसकी कुण्डलीमें पूर्णबली तथा उदयी गुरु केंद्र में हो तब सर्वारिष्टोंका दूर करता हैं ॥ २५ ॥

सौम्यभवनोपयाताःसौम्यांशकसौम्यद्रेष्काणस्थाः ।
गुरुचंद्रकाव्यशशिजाःसर्वेऽरिष्टस्य हंतारः ॥ २६ ॥

और सौम्य ग्रह के घरके अथवा सौम्य नवांशों के या सौम्य ग्रहोंके द्रेष्काण के गुरु शुक्र चन्द्र बुध बैठे हों तब मनुष्य के सर्वारिष्टों को नाश करते हैं ॥ २६ ॥

चंद्राध्यासितराशेरधिपःकेंद्रे शुभग्रहो वापि ।

प्रकरोत्यरिष्टभंगं पापानि यथा शिवस्मरणम् ॥ २७ ॥

जिसके चंद्राधिष्ठित राशिका स्वामी या शुभ ग्रह केंद्र में बैठा हो तब वह पापोंको शिव स्मरण की तरह अरिष्टों को नाश करता है ॥ २७ ॥

पापा यदि शुभवर्गे सौम्यैर्दृष्टाःशुभांशवर्गस्थैः ।
निघ्नंति सदारिष्टं पतिं विरक्ता यथा युवतिः ॥ २८ ॥

यदि पाप गृह शुभ गृहों के वर्ग में, एवं शुभ गृहोंसे देखे जाते हुए शुभांश वर्ग में स्थित हों तो अरिष्टनाश करतेहैं यथा पतिविरक्ता (कुलटा) स्त्री पतिका नाश करती है ॥ २८ ॥

शीर्षोदयेषु राशिषु सर्वे गगनाधिवासिनोऽधिगताः ।
प्रतिघ्नन्ति सर्वदुरितं यथा घृतं वाग्निसंयोगात् ॥ २९ ॥

जिसके सब ग्रह शीर्षोदय राशियोंमें ही बैठे हों तब वे घृतको अग्निकी तरह सर्वारिष्टोंको नाश करते हैं ॥ २९ ॥

तत्कालयुद्धविजयी शुभग्रहःशुभनिरीक्षितश्चापि ।
नाशयति कष्टनिवहं वात्या इव पादपं सकलम् ॥ ३० ॥

जिसके जन्मकाल में आकाशीय तत्काल युद्ध में जीतने वाले शुभग्रह पर शुभ ग्रहकी दृष्टि होवे तो वह मनुष्य के सर्वारिष्टों को वृक्षों को वायुकी तरह दूर करता है ॥ ३० ॥

गगनविभूषणसौम्यैर्दृष्टो नाशयति सर्वदुरितानि ।

१—राशीनाम् —शीर्षोदयादिसंज्ञामाहवराहमिहिरः तथाहि—

"मेषाद्याश्चत्वारः सधन्विमकराः नृपाबलाज्ञेयाः ।
पृष्ठोदया विमिथुनाः शिरसान्ये ह्युभयतो मीनः" इति—

अयंभावः—मेष वृष मिथुन कर्कट धन्विमकर राशयो रात्रिवलाः, अन्ये दिनवलाः, मेष, वृष, कर्कट धन्वि मकराः पृष्ठोदयसंज्ञकाः, मिथुन सिंह कन्या तुला वृश्चिक कुंभाः शीर्षोदयसंज्ञकाः, मीनस्तु शीर्षोदयः पृष्ठोदयश्चेति ।

पृष्ठतो ये उदयन्ति ते पृष्ठोदयाः, शिरसा ये उदयन्ति ते शीर्षोदयाः, मीनश्च मुखपुच्छाभ्यां गात्राकृतिरतुभयत उदेतीत्युभयोदयित्वं तस्येति ।

संपूर्णमूर्तिरुडुपो दुर्नयनःस्वं यथा नाशम् ॥ ३१ ॥

जिसकी कुण्डली में पूर्ण वली चन्द्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट होवे तब वह धनों को दुर्नयन (मूर्ख) की तरह सर्वानिष्टों को नाश करता है ॥ ३१ ॥

मूर्तेस्तु राहुस्त्रिषडायवर्ती रिष्टं हरत्येव शुभैःप्रदृष्टः ।
शीर्षोदयस्थैर्विकृतिं न याति समस्तखेटैःखलु रिष्टभंगः ॥३४ ॥

जिसके लग्न से तीसरे छठे या ग्यारहवें घरमें राहु बैठा हो या उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि पडती हो तब वह सर्वारिष्टों को नाश करता है, और यदि शुभ या पाप ग्रह सब शीर्षोदय राशियों में रहते हुए राहु को देखते होवें तब भी कोई खराबी नहीं होगी वल्कि अरिष्टों का नाश ही होगा ॥ ३४ ॥

तत्र व्यये लाभरिपुत्रिसंस्थःकेतुस्तु हेतुर्निधनोपशांत्यै ।
परस्परं भार्गवजीवसौम्यास्त्रिकोणगास्तेऽपि हरंत्यरिष्टम् ॥३५॥

यदि किसीके जन्म लग्न में तीसरे छठे बारहवें या ग्यारहवें केतु हो तब मृत्यु भय की शांति करनेवाला होता है, और त्रिकोण ९।५ में बैठे हुए शुक्र वृहस्पति और बुध हों तो वे भी अरिष्टों को शांत करते हैं ॥ ३५ ॥

संध्याभवा वैधृतिपातभद्रगंडांतयुक्ता यदि जन्मकाले ।
भवंत्यरिष्टस्य विनाशनार्थं निरंतरा दृश्यदले च सर्वे ॥ ३६ ॥

जिसकी उत्पत्ति सन्ध्या समय, वैधृति योग, और व्यतीपात योग या भद्रा में या गण्डान्त में होती है और समस्त ग्रह जिसके दृश्य भाग में होंय तो भी अरिष्टों का नाश होता है ॥ ३६ ॥

चतुष्टये श्रेष्ठबलाधिशाली शुभो नभोगोऽष्टमगो न कश्चित् ।
विंशन्मितायुःप्रकरोति नूनं दशान्वितं तच्छुभखेटदृष्टः ॥ ३७ ॥

स्थानादि वर्गों से परिपूर्णवली शुभग्रह, केन्द्र चतुष्टय में होवे, और लग्न से अष्टम घरमें कोई ग्रह होवे नहीं तो उस मनुष्य की बीश वर्ष की आयु होती है और अगर केन्द्र गतग्रह शुभग्रह दृष्ट होय तो दश वर्ष युक्त वीस वर्ष अर्थात ३० वर्ष की आयु होती है ॥ ३७ ॥

निजत्रिभागे स्वगृहे गुरुश्चेदायुर्गतिःस्यात्खलु विंशबिंशत् ।
बृहस्पतिस्तुंगगतो विलग्ने भृगोःसुतःकेंद्रगतः शतायुः ॥ ३८ ॥

अगर बृहस्पति अपने द्रेष्काण एवं स्वगेही का होकर बैठा हो, तो उस पुरुष की चालीस वर्ष की आयु होती, है और यदि उच्च ४ का बृहस्पति लग्न में हो; और उच्च का शुक्र केंद्र में होवे तब वह पुरुष पूर्ण शतायु होता है ॥ ३८ ॥

लग्ने स्वतुंगे बलशालिनींदौ सौम्याःस्वभस्थाःखलु षष्टिरायुः ।
मूलत्रिकोणेषु शुभेषु तुंगे लग्ने गुरावायुरशीतिरेव ॥ ३९ ॥

अपने उच्च २का पूर्ण बलवान् चंद्रमा लग्नमें होवे, और सौम्य ग्रह सब अपनी अपनी राशि के होकर बैठे हों, तब उसकी ६० वर्ष की आयु होती है और यदि सब शुभ ग्रह अपने मूल त्रिकोण में बैठें तथा अपने उच्च का बृहस्पति लग्न में होवे तब उस मनुष्य की आयु ८० वर्ष की होती है ॥ ३९ ॥

लग्नाऽष्टमारिंदुयुतिर्नचेत्स्युःक्रूराःस्वभस्था अपि खेचरौ द्वौ ।
बलान्वितावंवरगौ भमेतां जातःशतायुःकथितो मुनींद्रैः ॥४० ॥

लग्न, अष्टम तथा छटे घर में चन्द्रमा न हो और क्रूर गृह अपने क्षेत्र के हों और बली दो गृह दशम भाव में बैठे हों इस योग में जन्मे मनुष्य की शतायु होती है ऐसा मुनींद्रों ने कहा है ॥ ४० ॥

शुद्धे रंध्रे केंद्रगैःसौम्यखेटैर्लग्ने जीवे नैधनेन्दूदयश्चेत् ।
नो संदृष्टाःपापखेटैस्तदा स्यादायुर्मानं सप्ततिर्वत्सराणाम्॥ ४१ ॥

जिसके सब शुभ ग्रह केन्द्र में हों; और अष्टम घर में कोई भी ग्रह न होवे, तथा लग्न में बृहस्पति, और नवम घर में चन्द्रमा होवे, एवं उन्हें पाप ग्रह देखते न हों तब उस मनुष्य की सत्तर ७० वर्ष की आयु होती है ॥ ४१ ॥

भानौ वायुसखाच्छशाङ्क उदकाद्भौमे मृतिश्चायुधात्—
सौम्ये कष्टतरज्वराच्च कठिनादुःसाध्यरोगाद् गुरौ ।
शुक्रे क्षुद्धर्मिकारणा द्रविसुते लग्नात्पिपासाजवान्—
मृत्युःस्यान्मनुजस्य चेद् दिविचरे स्थानं गते चाष्टमम् ॥

जिसकी कुंडली में लग्न से अष्टम घर में सूर्य हो तब अग्नि के निमित्त से, यदि चन्द्रमा होवे तब जल से, मंगल हो तो शस्त्र से, बुध हो तो घोर ज्वर से, बृहस्पति हो तो दुःसाध्य किसी रोगसे,शुक्रहो तो अत्यन्त क्षुधा व हैजासे;और जिस के शनि अष्टम होवे तब तृषा के निमित्त से उस मनुष्य की मृत्यु होती है ॥४२॥

दशमे पंचमे जीवो बुधश्चंद्रश्च भार्गवः ।
शतंजीवी भवेज्जातो धनाढ्यो वेदपारगः ॥ ४३ ॥

जिसके लग्न से दशम या पंचम में गुरु, बुध, चन्द्रमा और शुक्र हों तब वह मनुष्य धन परिपूर्ण, वेद में पारंगत, और पूर्ण शतायु होता है ॥ ४३ ॥

नवमे पंचमे जीवो बुधो भवति सप्तमे ।
लग्ने भार्गवचन्द्रौ च शतंजीवी भवेन्नरः ॥ ४४ ॥

और जिसके नवम पंचम बृहस्पति हो, सप्तम घर में बुध; और लग्न में शुक्र और चंद्र हों तब वह मनुष्य शतवर्ष तक जीता है ॥ ४४ ॥

अथ लघुजातकरीत्या गतिविचारो लिख्यते—

सूर्यादिभिर्निधनगैर्हुतवहसलिलायुधज्वरामयजः ।
क्षुत्तट्कृतश्च मृत्युःपरदेशे नैधने चरभे ॥ ४५ ॥

अब मृत्यु के कारण बतलाते हैं-जिसके सूर्यादि सप्त ग्रह अष्टम घर में बैठे हों तब उस मनुष्य की क्रम से अग्नि, जल, शस्त्र, ज्वर; जीर्णज्वर और क्षुधा, तृषा के निमित्त से मृत्यु होती है अगर लग्नसे अष्टम भाव में चरराशि आपडे तो परदेश में मृत्यु जानना ॥ ४५ ॥

यो वा बलवान्निधनं पश्यति तद्धातुकोपजो मृत्युः ।
लग्ने त्रिंशांशपतिर्द्वाविंशतिहायने मृत्युः ॥ ४६ ॥

जो गृह बलवान् होकर अष्टम घर को देखता होवे उसी अनुसार नियमित धातुप्रकोप से उसकी मृत्यु होती है, और जो लग्न में त्रिंशांश पति होवे तब बाईस वर्ष की आयु में मृत्यु होती है ॥ ४६ ॥

विबुधपितृतिरश्चो नरकान्गुरुरिंदुसितौ च ।
असृग्रवी ज्ञयमौ रिपुरंध्रत्रिंशपा नयंति विस्तारं निधनस्थाः॥४७॥

जिसके जन्म समय में जो ग्रह अष्टम में स्थित हो उसी ग्रह के लोक को प्राणी प्रयाण करता है अथवा ६-८ इन दोनों स्थानों में जिसका द्रेष्काण उदय हो और इन दोनों द्रेष्काणों में से जो ग्रह बली होय उसी के लोक को प्राणी जाता है जैसे बृहस्पति होवे तो देवलोक को, चन्द्र शुक्र हों तब पितृलोक को, मंगल सूर्य हों तब पशुलोक को, और बुध शनि हों तब उस पुरुष को नरक में प्राप्त करते हैं।

षष्ठाष्टमकंटकगो गुरुरुच्चे भवति मीनलग्ने वा।
शेषैरबलैर्जन्मनि मरणे वा मोक्षगतिमाहुः ॥ ४८ ॥

जिसके जन्म कालिक छटे आठवें और केन्द्र में बृहस्पति उच्च ४ का होकर बैठा हो, अथवा बली होकर जन्म लग्न मीनमें बैठा हो, और सब ग्रह निर्बल हों, तो वह मनुष्य मोक्षगति को प्राप्त होता है ॥ ४८ ॥

गुरुरुडुपतिशुक्रौ सूर्यभौमौ यमज्ञौ—
विबुधपितृतिरश्चो नारकीयांश्च कुर्युः।
दिनकरशशिवीर्याधिष्ठितत्र्यंशनाथा-
त्प्रवरसमनिकृष्टास्तुंगह्रासादनूके ॥ ४९ ॥

जिसके जन्मकाल में सूर्य और चन्द्रमा इन दोनों में से जो बली हो वह जिस द्रेष्काण में पडे उसका अधिपति अगर बृहस्पति होवे तब देवलोक से चन्द्रमा वा शुक्र हो तो पितृलोक से; सूर्य या मंगल हो तो पशुयोनिसे; और शनि बुध हों तो नरक से आया हुआ जातक को समझो ॥ ४९ ॥

स्थिरश्चरोद्वेगसमाह्वयश्च राशिर्यदा जन्मनि चाष्टमस्थः।
स्वकीयदेशे विषयान्तरे वा मार्गे प्रकुर्यान्मरणं क्रमेण॥ ५० ॥

लग्न से अष्टम स्थान में चर राशि आपडे तो विदेशमें, स्थिर हो तोस्वदेश में तथा द्विस्वभाव हो तो मार्ग में मृत्यु कहना ॥ ५० ॥

आयुर्गृहं खेटविवर्जितं चेद्विलोकयेत्तद्बलवान्ग्रहेंद्रः।
तद्धेतुजातं प्रवदंति मृत्युं बहुप्रकारं बहवो मुनीशाः ॥ ५१ ॥

और जो अष्टम घर में कोई ग्रह न हो, और उसे बलवान् कोई ग्रह देखता हो तब उसकी मृत्यु उसी ग्रह के धातुकोप अनुसार कहते हैं ॥ ५१ ॥

पित्तं कफःपित्तमथ त्रिदोषं श्लेष्मानिलो वाप्यनिलःक्रमेण ।
सूर्यादिकेभ्यो मरणस्य हेतुःप्रकल्पितःप्राक्तनजातकज्ञैः ॥ ५२ ॥

पित्त, कफ; पित्त, त्रिदोष, कफ, वायु, और वायु इस रीति से क्रमशः सूर्यादि ग्रहों के धातु विकार से मृत्यु के कारण प्राक्तन जातकज्ञों ने कहे हैं सूर्यके निमित्त जो मृत्यु हो तब पित्त से, चन्द्रमा के निमित्त मृत्यु हो तब कफ से, इसी क्रम से और भी सूर्यादि ग्रहों के धातु विकार जानना ॥ ५२ ॥

अथ नवमभावफलम्—

विहाय सर्वं गणकैर्विचिंत्यो भाग्यालयःकेवलमत्र यत्नात् ।
आयुश्च माता च पिता च बन्धुर्भाग्यान्वितेनैव भवन्ति धन्याः।१।

सबों को छोड़कर सब के प्रथम ज्योतिषियों को नवम घर का ही फल विचार करना चाहिये क्यों कि नवम घर का नाम भाग्य है आयु; माता, पिता, भाई और धन ये सब भाग्य युक्त मनुष्यसे ही धन्य होते हैं भाग्य विना कुछ नहीं होता है जो कुछ करामात है सो भाग्यकी ही है ॥१॥

यस्यास्ति भाग्यं सनरःकुलीनःस पंडितःस श्रुतिमान्गुणज्ञः ।
स एव वक्ता स च दर्शनीयो भाग्यान्वितःसर्वगुणैरुपेतः ॥२॥

जिसका भाग्य है वही कुलीन, वही पंडित, वही बेदज्ञ, वही गुणज्ञ, वही वक्ता वही दर्शनीय, और सर्व गुण संपन्न, भाग्य से ही होता है ॥ २ ॥

अथ भाग्योदयलक्षणम्—

द्वाविंशे रविणा च वर्षकथितं चन्द्रे चतुर्विंशति-
ह्यष्टविंशति भूमिनन्दनमतं दन्तैर्बुधे च स्मृतम् ।
जीवे षोडश पंचविंशति भृगोःषट्त्रिंशसौरी वदेत्--
कर्मेशात्खलु कर्म चैव कथितं लग्नाधिपे चेत्स्मृतम् ॥ ३ ॥

अगर किसी जातक के नवम (भाग्य) में सूर्य हो तो बाईसवें वर्षमें, चंद्रमा हो तो २४ वें वर्षमें, मंगल हो तो २८ वें वर्ष में, बुध हो तो बत्तीसवें वर्ष में, बृहस्पति हो तो षोडश वर्ष में, शुक्र हो तो २५ वें वर्ष में, और शनि होतो ३६ वें वर्ष में, भाग्योदय होता है, कर्मेश के विचार से कर्म का अनुसन्धान करे किन्तु उसमें लग्नेश की अनुकूलता देख लेनी चाहिये ॥ ३ ॥

भाग्ययोगकरे सौरे स्थिते जन्म यथा भवेत् ।
लग्नपे तु विशेषेण यावज्जीवं समृद्धिमान् ॥ ४ ॥

जिसके जन्म कालिक शनि भाग्य योग कारक हो विशेष करके लग्नेश यदि ऐसा हो तो वह जातक आजन्म समृद्धिमान् रहता है ॥ ४ ॥

मूर्तेश्चापि निशापतेश्च नवमं भाग्यालयं कीर्तितं-
तत्स्वस्वामियुतेक्षितं प्रकुरुते भाग्यं स्वदेशोद्भवम् ।
चेदन्यैर्विषयान्तरेऽत्र शुभदाःस्वोच्चादिगाः सर्वदा-
कुर्युर्भाग्यमसाधवो न च बलाद्दुःखोपलब्धिं पराम् ॥ ५ ॥

लग्नसे और चन्द्रमा से नवम घरको भाग्य कहते हैं; अगर अपने स्वामी से युक्त अथवा दृष्ट वह घर हो तो जातक का अपने देशमें व्यापारादि करने से भाग्योदय होता है । यदि वही भाग्यभाव भाग्येशतिरिक्त ग्रहों से सहित या दृष्ट होवे तो विदेशमें जाकर भाग्योदय होगा, तथा शुभ ग्रह अपने उच्चके या स्वक्षेत्री आदि गुण युक्त होवें तब भी वे सदा पूर्ण भाग्योदय करते हैं, और जो पाप ग्रह निर्बल हों तब वे ही ग्रह पूर्ण दुःख प्राप्ति कराते हैं ॥ ५ ॥

भाग्येश्वरो भाग्यगतोऽस्ति किं वा स्वस्थानगःसारविराजमानः ।
भाग्याश्रितःकोऽस्ति बिचार्य सर्वमनल्पमल्पम्परिकल्पनीयम् ॥६॥

और भाग्य (९) नाथ ग्रह भाग्य में हैं किंवा स्वक्षेत्री है किंवा बलवान् है भाग्येश्वर से संबन्ध करने वाला ग्रह कौन है इस बातका सब विचार अच्छी तरह से करके फिर अल्प अनल्प भाग्यका पूर्ण विचार कर जैसा भाग्य दीखता होवे वैसा कहे ॥ ६ ॥

तनुत्रिसूनूपगतो ग्रहश्चेद्यो वाऽधिवीर्यो नवमं प्रपश्येत् ।
यस्य प्रसूतौ स तुभाग्यशाली विलासशीलो बहुलार्थयुक्तः ॥७॥

जिसके जन्म समय में लग्न तृतीय पंचम घरमें पूर्ण बली जो ग्रह बैठा हुआ नवम घरको देखता हो; वह मनुष्य भाग्यशाली, विलास करने वाला, और अनेक प्रकार अर्थों से परिपूर्ण होता है ॥ ७॥

चेद्भाग्यगामी खचरःस्वगेहे सौम्येक्षितो यस्य नरस्य सूतौ ।
भाग्याधिशाली स्वकुलावतंसो हंसो यथा मानसराजमानः ॥८॥

जो ग्रह भाग्यमें बैठा हो और वह स्थान उसी का होवे और सौम्य ग्रह उसे देखता हो, तब वह मनुष्य अपने वंशका मुकुटमणि मानस सरोवर में हंसके तुल्य होता है ॥ ८ ॥

पूर्णेंदुयुक्तौ रविभूमिपुत्रौ भाग्यस्थितौ सत्त्वसमन्वितौ च ।
वंशानुमानात् सचिवं नृपं वा कुर्वन्ति ते सौम्यदशाविशेषात् ।९।

और पौर्णमासी के चन्द्रमा से युक्त, सूर्य और मंगल बली होकर भाग्य में बैठे हों तब उस मनुष्य के कुलानुरूप मनुष्यको मन्त्री अथवा राजा करते हैं, शुभ कारक ग्रहकी दशा के अन्तरमें विशेष करके जानना ॥ ९ ॥

स्वोच्चोपगो भाग्यगृहे नभोगे नरस्य योगं कुरुते च लक्ष्म्या ।
सौम्येक्षितोऽसौ यदि भूमिपालं दंताबलोत्कृष्टविलासलाभम् ।१०

और जिसके अपने उच्चका होकर कोई ग्रह भाग्य में स्थित होवे, तब उस मनुष्य को सदा लक्ष्मी से योग करता है, और यदि तदवस्थ ग्रह को कोई अन्य शुभग्रह पूर्णतया देखता हो, तब उस मनुष्यको अनेक हस्तिसमुदायका पालन करने वाला राजा करता है ॥ १० ॥

अथ दशमभावफलम् ।

समुदितमृषिवर्यैर्मानवानां प्रयत्ना-
दिहहिदशमभावे सर्वकर्म प्रकामम् ।
गगनगपरिदृष्ट्या राशिखेटस्वभावैः-
सकलमपिविचिंत्यं सत्त्वयोगात्सुधीभिः ॥ १ ॥

ऋषि मुनियोंने मनुष्यों कोइस ग्रन्थ में दशम भावको ही सब कर्मों का कारण कहा है, ग्रहोंकी दृष्टिसे राशि ग्रह और स्वभाव ये सब अपनी २ बुद्धिके अनुरूप बुद्धिमान् मनुष्यों को विचारने चाहिये ॥ १ ॥

तनोःसकाशाद्दशमे शशांके वृत्तिर्भवेत्तस्य नरस्य नित्यम् ।

नानाकलाकौशलवाग्विलासैःसर्वोद्यमैःसाहसकर्मभिश्च ॥ २ ॥

जिसके लग्नसे दशम घरमें चन्द्रमा बैठा हो उस मनुष्यकी वृत्ति अनेक साहस कर्मों से, नाना कला कौशल से, और अनेक उद्यमों तथा वाग्विलास से होती है ॥

तनोःशशांकाद्दशमे बलीयान्स्याज्जीवनं तस्य खगस्य वृत्त्या ।
बलान्विताद्वर्गपतेस्तु यद्वा वृत्तिर्भवेत्तस्य खगस्य पाके ॥ ३ ॥

लग्न से अथवा चन्द्रमा से दशम घरमें यदि बलवान् कोई ग्रह बैठा हो तब उस मनुष्यकी ग्रहों की वृत्ति के अनुसार जीविका होती है, अथवा षड्वर्गाधिपति पूर्ण बलान्वित हो तब उसके दशा पाक समय में वृत्ति होती है ॥ ३ ॥

दिवामणिःकर्मणि चन्द्रतन्वोर्द्रव्याण्यनेकोद्यमवृत्तियोगात् ।
सत्वाधिकत्वं च सदा सुरम्यं पुष्टत्वमंगे मनसःप्रसादः ॥ ४ ॥

और जिसके लग्न से या चन्द्रमा से दशम घरमें सूर्य हो तब उसको अनेक तरह के उद्यमों के द्वारा पूर्ण धन मिले, बडा बलवान्, सदा सुन्दर पुष्टाङ्ग, और हमेशा मनमें आनन्द होता है ॥ ४ ॥

लग्नेंदुतः कर्मणि चेन्महीजःस्यात्साहसाच्चौर्यनिषादवृत्तिः ।
नूनं नराणां विषयातिशक्तिर्दूरेनिवासःसहसा कदाचित् ॥ ५ ॥

लग्न या चंद्रमा से यदि दशम घरमें मंगल बैठा हो तब वह मनुष्य साहस और चौर्य तथा निषाद वृत्तिसे निर्वाह करने वाला होता है, विषयोंमें अत्यासक्ति करने वाला और घरसे दूर कभी २ निवास करने वाला होता है ॥ ५ ॥

लग्नेंदुभ्यां कर्मगो रौहिणेयःकुर्याद्द्रव्यं नायकत्वं बहूनाम् ।
शिल्पेऽभ्यासःसाहसं सर्वकार्ये विद्वद्वृत्त्या जीवनं मानवानाम् ॥६॥

और जिसके लग्न या चन्द्रमा से दशम घरमें बुध बैठा हो तब वह मनुष्य बहुत द्रव्य प्राप्त करे, और बहुत मनुष्यों का सर्दार होवे, एवं कारीगरी के कामों में अभ्यासी, सब कामों में साहसी और विद्वद्वृत्तिसे जीवन करता है ॥ ६ ॥

विलग्नतःशीतमयूखतो वाऽऽशाख्ये मघोनःसचिवो यदि स्यात् ।
नानाधनान्यागमनानि पुंसां विचित्रवृत्त्या नृपगौरवं च ॥ ७ ॥

लग्न या चन्द्रमा से दशम घरमें बृहस्पति बैठा हो तब अनेक धनों का आगम तथा विचित्र जीविकाकी प्राप्ति, और राजाओं से गौरव की प्राप्ति होती है ॥ ७ ॥

होरायाश्च निशाकराद्भृगुसुतो मेषूरणे संस्थितो--
नानाशास्त्रकलाकलापविलसद्वृत्त्याऽऽदिशेज्जीवनम् ।
दाने साधुजने यथा विनयतां कामं धनाभ्यागमं--
नानामानवनायकादिविरलं शीलं विशालं यशः ॥ ८ ॥

और लग्न या चन्द्रमा से दशम घरमें यदि शुक्र बैठाहो तब अनेक शास्त्र कलाओं के समूह से प्राप्त हुई विद्यादि उत्तम वृत्ति से जीवन होता है, दानी, साधु जनोंमें विनय भावसे रहने वाला, यथेच्छ धन प्राप्ति करने वाला, अनेक मनुष्यों की सर्दारी के कारण विशालशील और यशसे संसार में खूब नामवर होता है ॥ ८ ॥

होरायाश्च सुधाकराद्रविसुतःशैलूषमध्यस्थिता--
वृत्तिं हीनतरां नरस्य कुरुते कार्श्यं शरीरे सदा ।
खेदं वादभयञ्च धान्यधनयोर्हानिं स्वमुच्चैर्मन--
श्चिन्तोद्वेगसमुद्भवेन चपलं शीलं च नो निर्मलम् ॥ ९ ॥

और लग्न या चन्द्रमा से दशम घरमें शनि स्थित होता है तब वह मनुष्य अतिहीन वृत्तिसे जीविका करने वाला, शरीर से दुर्बल, खेद युक्त, मुकद्दमा से बहुत डरे, धान्य धनकी हानि, चित्त में बहुत घबराहट रहे इसी कारण उसका मन कहीं न लगे (मनको चांचल्य) और निर्मल शीलसे रहित होता है ॥ ९ ॥

जीवो द्विजात्माकरदेवधर्मैःशुक्रो महिष्यादिकरौप्यरत्नैः ।
शनैश्चरो नीचतरप्रकारैःकुर्यान्नराणां खलु कर्मवृत्तिम् ॥ १० ॥

जिसके लग्न से दशम घरमें बृहस्पति स्थित हो तब ब्राह्मण या अपनी सत्यता, या देव धर्म से जीविका करता है, और शुक्र होवे तब भैंस आदि से, चांदी; तथा रत्नों के व्यापार से उस पुरुषकी वृद्धि होती है, और उक्त स्थान में यदि शनैश्चर बैठाहो तब उस मनुष्यकी अत्यन्त नीच क्रियाओं से जीवन वृत्ति होती है ॥ १० ॥

कर्मस्वामी ग्रहो यस्य नवांशे परिवर्तते !

तत्तुल्यकर्मणा वृत्तिं निर्दिशन्ति मनीषिणः ॥ ११ ॥

दशम घरका स्वामी ग्रह जिस ग्रह के नवांश में स्थित हो तब उस मनुष्यकी उसी ग्रह के अनुरूप जीविका होती है ॥ ११ ॥

मित्रारिगेहोपगतैर्नभोगैस्ततस्ततोऽर्थःपरिकल्पनीयः ।
तुंगे पतंगे स्वगृहे त्रिकोणे स्यादर्थसिद्धिर्निजबाहुवीर्यात् ॥ १२ ॥

जिसके कर्मेश मित्रके घरमें हो तो मित्रों के आसरे से धन मिले, तथा शत्रुगेही होवे तो शत्रुओं के द्वारा धन प्राप्ति होगी, और जो उच्चका सूर्य हो या स्वक्षेत्री हो या त्रिकोणमें तब वह मनुष्य अपने भुज बलसे धनको संपादन करताहै॥

बुधभार्गवजीवार्कियुक्तो राहुश्चतुष्टये ।
कुरुते कमलारोग्यपुत्रमानादिकं फलम् ॥ १३ ॥

और यदि बुध शुक्र बृहस्पति शनि से युक्त होकर राहु केन्द्र में स्थित हो तब लक्ष्मी आरोग्य और पुत्र तथा मान प्राप्ति आदि फल करता है ॥ १३ ॥

कर्मस्थाने निजक्षेत्रे भौमशुक्रबुधैर्युतः ।
यदि राहुर्भवेत्तस्य क्षणे वृद्धिःक्षणे क्षयः ॥ १४ ॥

और लग्न से दशम घर में अपने क्षेत्र में भौम शुक्र और बुध से युक्त राहु बैठा हो तब उस मनुष्य का क्षण में वृद्धि तथा क्षण भर में क्षय होता है ॥१४॥

पताले चांबरे पापो द्वादशे च यदा स्थितः ।
पितरं मातरं हंति देशाद्देशान्तरं व्रजेत् ॥ १५ ॥

चतुर्थ दशम और बारहवें घर में पापग्रह बैठा हो तब उस मनुष्य के माता पिता को मारता है और उसे स्वदेश से देशांतर को गमन कराता है ॥ १५ ॥

चापे सूर्यशनी कुंभे मेषे भवति चन्द्रमाः ।
मकरे च यदा शुक्रो भुंक्ते नाशं पितुर्धनम् ॥ १६ ॥

धनु में सूर्य और शनि कुम्भ, या मेष में चन्द्रमा हो, और मकर में शुक्र हो, तब वह मनुष्य पिता को नाश करके उसी के धन को भोगता है ॥ १६ ॥

सप्तमे भवने भानुर्मध्यस्थो भूमिनन्दनः ।

राहुश्चान्ते च तस्यैव पिता कष्टेन जीवति ॥ १७ ॥

और लग्न से सप्तम घर में सूर्य, और दशम स्थान में मंगल, और १२ में राहु हो; तब उस मनुष्य का पिता कष्ट से जीता है ॥ १७ ॥

कन्यायां मिथुने राहुःकेन्द्रे षष्ठे व्यये भवेत् ।
त्रिकोणे च तदा जातो दाता भोक्ता निरामयः ॥ १८ ॥

और कन्या या मिथुन का होकर राहु केन्द्र में या छटे १२ में या त्रिकोण में होवे तब वह मनुष्य दानी अनेक भोगों का भोगने वाला रोग से रहित होता है।

सूर्यःपापेन संयुक्तःसूर्यश्च पापमध्यगः ।
सूर्यात्सप्तमगःपापस्तदा पितृबधो भवेत् ॥ १९ ॥

और जिसके सूर्य पापग्रह से युक्त हो, अथवा दो पापग्रहों के मध्य में हो, और सूर्य से सप्तम घर में भी पापग्रह हो; तब उस पुरुष के पिता का नाश करने वाला होता है ॥ १९ ॥

दशमस्थो यदा भौमःशत्रुक्षेत्रस्थितो यदि ।
म्रियते तस्य बालस्य पिता शीघ्रं नसंशयः ॥ २० ॥

और जिसके शत्रु क्षेत्री होकर मंगल दशम घर में स्थित हो, तब उसका पिता शीघ्र ही मरजाता है ॥ २० ॥

लग्ने जीवो धने मन्दो रविर्भौमस्तथा बुधः ।
विवाहसमये तस्य बालस्य म्रियते पिता ॥ २१ ॥

और जिसके लग्न में बृहस्पति हो, द्वितीय भाव में शनि सूर्य मंगल और बुध हों, उस पुरुष का विवाह के समय में पिता मरजाता है ॥ २१ ॥

भ्रातृस्थाने यदा जीवो लाभस्थाने यदा शशी ।
स लोके गृहमध्यस्थो जायते कुलदीपकः ॥ २२ ॥

और जिसके तीसरे घर में बृहस्पति, ग्यारहवें चन्द्रमा हो, वह मनुष्य लोक भर में और अपने घर में कुलदीपक होता है ॥ २२ ॥

सिंहे लग्ने यदा भौमःपंचमे च निशाकरः ।

व्ययस्थाने यदा राहुः स जातःकुलदीपकः ॥ २३ ॥

और जिसके जन्मलग्न सिंह में मंगल; और लग्न से पंचम चन्द्रमा, और बारहवें राहु हो, वह मनुष्य अपने कुल में दीपक होता है ॥ २३ ॥

एकःपापो यदा लग्ने पापश्चैको रसातले ।
जायते च द्विनाली स्यात्स जातःकुलदीपकः ॥ २४ ॥

और जिसके लग्न में एक ग्रह पापी हो, और एक पापी ग्रह सप्तम में हो, वह बालक जन्म समय में दो नाल वाला होता है और अपने कुलका दीपक होता है।

लग्ने वा सप्तमे भौमःपंचमे च दिवाकरः ।
व्ययस्थाने यदा राहुर्विख्यातःस न संशयः ॥ २५ ॥

लग्न में या सप्तम में मंगल, पंचम में सूर्य, और बारहवें राहु हो, वह मनुष्य सर्वत्र विख्यात होता है ॥ २५ ॥

केंद्रे शुभो यदैकोऽपि बली विश्वप्रकाशकः ।
सर्वदोषाःक्षयं यांति दीर्घायुश्च भवेन्नरः ॥ २६ ॥

और जिसके केंद्र में एक भी शुभ ग्रह पूर्ण बली होकर बैठा हो तो उस जातक के सब दोष क्षय होते हैं; और वह मनुष्य दीर्घायु होता है ॥ २६ ॥

अथैकादशभावविचारः प्रस्तूयते—

लाभस्थाने ग्रहाःसर्वे राज्यलाभफलप्रदाः ।
गजाश्वपतिमीप्सां च सौम्याःकुर्वन्ति निश्चितम् ॥ १ ॥

लाभ ११ स्थान में बैठे हुए सब ग्रह राज्यलाभ फल के देने वाले होते हैं, और यदि शुभ ग्रह लाभ स्थान में बैठें तब निश्चय उसके यहां हाथी घोड़ों की लंगतार लगी रहेगी; और हमेशा अच्छे काम करने में इच्छा रहेगी ॥ १ ॥

सूर्येण युक्तःस्वविलोकितो वा लाभालये तस्य गणोऽत्र चेत्स्यात् ।
भूपालतश्चौरकुलात्कलेर्वा चतुष्पदादेर्बहुधा धनाप्तिः ॥ २ ॥

और जिसका लाभ स्थान सूर्य से युक्त हो अथवा सूर्य से दृष्ट हो या सूर्य के षड्वर्ग में आ पडे तब राजा से, चोरों के कुल से, अथवा मुकद्दमा में किसी की डिग्री कराने से, या चौपाए पशुओं के द्वारा बहु प्रकार धन प्राप्ति होती है ॥ २ ॥

चन्द्रेण युक्तं च विलोकितं वा लाभालयं चन्द्रगणाश्रितं चेत्।
जलाशयं स्त्रीगजवाजिवृद्धिःपूर्णे भवेत्क्षीणतरे विलोमात्॥३॥

और जिसके लाभ स्थान को चन्द्रमा देखता हो अथवा चन्द्रमा बैठा हो या चन्द्रमा के षड्वर्ग में पड़जाय, तब वह पुरुष जलाशय, स्त्री, हाथी, घोड़ों की वृद्धि से युक्त, चन्द्रमा के पूर्ण बली होने से यह फल होता है, और क्षीण हो तब विपरीत फल होता है ॥ ३ ॥

लाभालयं मंगलयुक्तदृष्टं प्रकृष्टभूषामणिहमलब्धिः।
विचित्रयात्रो बहुसाहसी स्यान्नानाकलाकोमलबुद्धियोगैः॥४॥

और यदि मंगल से युक्त या दृष्ट लाभ गृह हो तब उस मनुष्य को उत्तमोत्तम भूषण मणि सुवर्ण की प्राप्ति होती हैं, और विचित्र यात्रा करने वाला; बड़ा साहसी; तथा नाना कलाओं से युक्त, कोमल बुद्धि से युक्त होता है ॥ ४ ॥

लाभे सौम्यगणाश्रिते शशियुते सौम्ये च सद्वीक्षिते
नानाकाव्यकलाकलापविधिना शिल्पेन लिप्या सुखम्।
युक्तिर्द्रव्यमयी भवेद्धनचयःसत्साहसैरुद्यमैः
सख्यं चापि वणिग्जनैर्बहुतरं क्लीवैर्नृणां कीर्तितम्॥ ५ ॥

और जिसका लाभ स्थान बुध से युक्त हो, या दृष्ट हो, या बुध के षड्वर्ग में लाभ भाव पड़जाय तब वह पुरुष अनेक कविता करने से बहुत कलाओं के जानने से, कारीगरी के कामों से, लिखिया पने के कामसे सुखी, बौहरगत की युक्ति से और उत्तम साहसों से, अनेक उद्यमोंसे, वणिग्जनों की मित्रता द्वारा, और क्लीव मनुष्यों से धन पाने वाला होता है ॥ ५ ॥

यज्ञक्रियासाधुजनानुयातो राजाश्रितोत्कृष्टकृपो नरःस्यात्।
द्रव्येण हेमप्रचुरेण युक्तो लाभे गुरौ वर्गनिरीक्षणं चेत्॥६॥

और जिसके लाभ स्थान में गुरु बैठा हो, या गुरु देखता हो, या लाभ भाव गुरु के षड्वर्गगत हो, तब वह मनुष्य यज्ञ क्रिया करने वाला; साधुजनों का संग करने वाला, राजा का कृपापात्र होने से उसके आश्रय में रहने वाला, सुवर्ण प्रधान द्रव्य से युक्त होता है ॥ ६ ॥

लाभालये भार्गववर्गयाते युक्तेक्षितं वा यदि भार्गवेण ।
वेश्याजनैर्वापि गमागमैर्वा सद्रौप्यमुक्ताप्रचुरस्य लब्धिः ॥७॥

जिसके लाभ स्थान में शुक्र बैठा हो, या शुक्र का षड्वर्ग हो, या शुक्र देखता हो, तब उस मनुष्य को वेश्याजनों के द्वारा अथवा प्रदेश के आने जाने से सोना, चांदी, मोती आदिकों की खूब प्राप्ति होती है ॥ ७ ॥

लाभवेश्मनि शनीक्षितयुक्ते तद्गणेन सहिते सति पुंसाम् ।
नीललौहमहिषीगजलाभो ग्रामबृन्दपुरगौरवमिश्रम् ॥ ८ ॥

और जिसके लग्न से लाभ स्थान को शनि देखता हो, अथवा बैठा हो, या उसी के षड्वर्ग में आ पडे तब उस मनुष्य को नील रंग की वस्तु, लोह भैंस हाथी आदि का लाभ होता है, और ग्राम नगर के मनुष्यों के बीच में पूर्ण बडप्पन पाता है ॥ ८ ॥

युक्तेक्षिते लाभगृहे शुभाख्ये वर्गे शुभानां समवस्थिते च ।
लाभो नराणां बहुधाऽथवाऽस्मिन् सर्वैर्ग्रहैर्युक्तनिरीक्ष्यमाणे ॥९॥

और जिसके लाभ स्थान में शुभ ग्रह बैठे हों, या देखते हों, या शुभ ग्रहों के षड्वर्ग का हो तब उस मनुष्य को सब तरह का लाभ होता है अथवा लाभ भवन में सब शुभाशुभ ग्रह बैठे हों या देखते हों तब भी उक्त फल होता हैं ॥ ९ ॥ इति ॥

अथ व्ययभावफलम्—

कुशीलं च तथा काणं पापिनं दुःखितं नरम् ।
महाव्ययं महादुष्टं व्ययभावे यदा ग्रहाः ॥ १ ॥

जिस मनुष्य के व्यय १२ भाव में सूर्यादि कोई ग्रह हो तब वे उस मनुष्यको दुष्टस्वभाव वाला; काणा, पापी, दुःख भोगने वाला, बहुत खरच करने वाला, और महा दुष्ट करते हैं ॥ १ ॥

व्ययालये क्षीणकरःकलानां सूर्योऽथवा द्वावपि तत्र संस्थौ ।
द्रव्यं हरेद्भूमिपतिस्तु तस्य व्ययालये क्षोणिजदृष्टियुक्ते ॥ २ ॥

यदि व्यय में क्षीणवली चन्द्रमा, अथवा सूर्य बैठाहो; या दोनों बैठे हों, या मंगल से यह भाव दृष्ट हो तब उस मनुष्यके धनको राजा छीन लेता है ॥ २ ॥

पूर्णेंदुसौम्येज्यसिता व्ययस्थाःकुर्वंति संस्थां धनसंचयस्य ।
प्रांत्यास्थिते सूर्यसुते कुजेन युक्तेक्षिते वित्तविनाशनं स्यात्॥३॥

और जिसके १२ में पूर्ण वली चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति, और शुक्रइनमें से कोई ग्रह बैठा हो तब धन संचयकी व्यवस्था करते हैं, और यदि शनि बारहवें घरमें बैठाहो और मंगल से युक्त वा दृष्ट हो तब धनका नाश होता है ॥ ३ ॥

अथाग्रे शेष श्लोकालिख्यन्ते—

उच्चाभिलाषिणः खेटाजन्मकाले पतंति चेत् ।
स नरो भूपपूज्यःस्याद्वंशस्य नृपतिर्भवेत् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उच्चाभिलाषी ग्रहों का समावेश हो तब वह मनुष्य राज पूज्य, और अपने वंश भरका राजा होता है ॥ १ ॥

रविर्मीने शशी मेषे भौमो धनुषि चाश्रितः ।
सिंहे बुधो गुरुर्युग्मे शुक्रःकुंभे तथैव च ॥ २ ॥
शनिः कन्यास्थितो ह्युच्चा--भिलाषी समुदाहृतः ॥ ३ ॥

कौन ग्रह किस २ राशि पर रहता हुआ उच्चाभिलाषी होता है यह कहते हैं सभी ग्रह अपनी २ उच्च राशिसे पूर्व राशि पर रहने से उच्चभिलाषी कहलाते हैं, उसी नियमानुकूल, सूर्य मीनमें, चन्द्र मेषमें, मंगल धनुमें, बुध सिंहमें, गुरु मिथुनमें शनि कन्यामें, उच्चाभिलाषी कहा है ॥ २ ॥ ३ ॥

अथ सवलनिर्वलग्रहपरिज्ञानम्—

उदितःस्वगृहस्थश्च मित्रगेहे स्थितोऽपि च ।
मित्रवर्गेण दृष्टश्च स ग्रहःसबलःस्मृतः ॥ १ ॥

जो ग्रह उदित हो, वा स्वक्षेत्री हो, या मित्रक्षेत्री हो, अथवा मित्र वर्गसे देखा जाता हो ये सब प्रकार से ग्रह बली कहा जाता है ॥ १ ॥

अथ बलाबलभावविचारः—

स्वामिना बलिना दृष्टःसबलैश्च शुभैर्ग्रहैः ।
न दृष्टो न युतःपापैः स भावःसबलःस्मृतः ॥ २ ॥

जो भाव अपने बली स्वामी से देखाजाता हो अथवा बलवान् शुभग्रह देखते हों; और पापी ग्रह कोई न तो हो और न पापी ग्रह उसे देखते ही हों वह भाव बलवान् कहलाता है ॥ २ ॥

अथ सर्वग्रहाणांदृष्टिः—

ज्ञार्केंदुशुक्रास्त्रिदशं त्रिकोणं तुर्याष्टमद्यूनमथांशवृद्ध्या ।
पश्यंति तुर्याष्टमसप्तमस्थं दशं त्रिकोणं च गुरुःक्रमेण ॥ १ ॥

बुध सूर्य चन्द्रमा और शुक्र ये चारों ग्रह तीसरे दशवें घरको एक चरण से, नवम पंचम को दो चरण से, चतुर्थ अष्टम को तीन चरण से, और सप्तम घरको चतुश्चरण (पूर्ण) दृष्टि से देखते हैं । और बृहस्पति चौथे आंठवें को एक चरण, सप्तम को दो चरण, दशम को तीन चरण से, और नवम पंचम को चतुश्चरण (पूर्ण) दृष्टि से देखता है ॥ १ ॥

त्रिकोणं चतुरस्त्रं च सप्तमे त्रिदशं शनिः ।
अस्तं त्रिखं त्रिकोणं च चतुरस्त्रं क्रमात्कुजः ॥ २ ॥

और नवम पंचमको एक चरण से, चतुरस्र ४।८ को दो चरण से, सप्तम को तीन चरण से, और तीसरे दशवें को चतुश्चरण (पूर्ण) दृष्टिसे शनि देखताहै। और सप्तम घरको एक चरण से, तीसरे दशवें को दो चरण से; नवम पंचम को तीन चरण से, और चौथे आठवें घरको चतुश्चरण (पूर्ण) दृष्टि से मंगल देखता है ॥ २ ॥

आये व्यये न पश्यंति न पश्यंति द्वितीयके ।
मूर्तौ ग्रहा न पश्यंति तेऽन्धकाःकथिता ग्रहाः ॥ ४ ॥

और जो ग्रह लग्न से ११ वें बारहवें, द्वितीय तथा लग्न इन स्थानों को न देखता हो उस ग्रहको अंधक (अंधा) कहते हैं ॥ ४ ॥

अथ जन्मपत्रिकानामानि—

तिथिवारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् ।
वेदेन हरते भागं शेषं नाम तदुच्यते ॥ १ ॥
व्योमा धोमा च मूर्द्धा च पद्मा चैव चतुर्थकम् ।

जन्मपत्रीस्थितं नाम यो जानाति स पंडितः ॥ २ ॥
व्योमायां पितृहानिःस्याद् द्योमा मातृक्षयंकरी ।
मूर्द्धा ह्यायुःकरी ज्ञेया पद्मा बलविधायिनी ॥ ३ ॥

जातक के जन्मकालिक तिथि वार और नक्षत्र इन सबके अक्षरों को नामाक्षर से युक्त करै फिर जो अंकसिद्ध हो उसमें चारका भाग देवे शेष अंक संख्या से नाम जाने जैसे एक शेष से व्योमा, दो से द्योमा, तीन से मूर्द्धा, और चार या शून्य शेष रहने से जन्मपत्री का पद्मानाम होता है जन्मपत्री के इन नामों को जो जानता है उसे पंडित समझना । व्योमा नाम होने से पितृहानि, द्योमा नाम होने से माता की क्षय करनेवाली, मूर्धा नाम के होने से दीर्घायु की करने वाली, और पद्मानाम के होने से वह जन्मपत्री बल देनेवाली होती है ॥ १–२–३॥

अथ जन्मसमये शब्दज्ञानम्—

शब्दे मेषे वृषे सिंहे मकरे च तथा तुले ।
अर्द्धशब्दो घटे कन्ये शेषाःशब्दविवर्जिताः ॥ १ ॥

जिस बालक का मेष वृष सिंह मकर और तुला इन लग्नों में से किसी लग्न में जन्म होय तो वह पैदा होते ही रोता है, कुंभ तथा कन्या लग्न में होवे तो धीरे २ रोता है, और शेष ३।४।९।१२।८।इन लग्नों में जन्म होतो नहीं रोता है ॥१॥ इति० ॥

अथ नालज्ञानम्—

छागे सिंहे वृषे लग्ने बृश्चिके नालवेष्टितः ।
नृलग्ने दक्षिणे पार्श्वे स्त्रीलग्ने वामपार्श्वगः ॥ १ ॥

मेष, सिंह, वृष तथा वृश्चिक इन लग्नों में जन्म लेने वाला जातक नाल वेष्टित (लिपटा हुआ) पैदा होता है, यदि जन्म लग्न पुंराशि हों तो दक्षिण पार्श्व में, और स्त्रीसंज्ञक राशि जन्म लग्न हों तो वाम पार्श्व में नाल समझना चाहिये ॥ १ ॥

अथ जन्मज्ञानम्—

शीर्षोदये विलग्ने मूर्द्धाप्रसवोऽन्यथोदये चरणौ ।
उभयोदये च हस्तौ शुभदृष्टःशोभनोऽन्यथा कष्टम् ॥ १ ॥

जिस मनुष्य का शीर्षोदय लग्न का जन्म होता है वह मनुष्य शिर से जन्म लेता है, पृष्ठोदयी लग्न में जन्म लेनेवाला मनुष्य चरण से जन्म लेता है, और उभयोदयी लग्न में जन्म लेने से हाथों से जन्म लेता है, यदि वह जन्म लग्न शुभग्रह दृष्ट या युक्त हो तब विना कष्ट के जन्म होता है ऐसा नहीं हो तो बडे दुःख दर्द के साथ होता है ॥ १ ॥

सूर्यश्चतुष्पदस्थःशेषा द्विशरीरसंस्थिता बलिनः ।
केशैर्वेष्टितदेहौ यमलौ खलु तौ प्रसूयेते ॥ २ ॥

और सूर्य जिसकी कुंडली में चतुष्पद संज्ञक राशि में स्थित हो, और शेषग्रह द्विस्वभाव राशिके बली होकर बैठे हों, वह केशों से लिपटे हुए शरीर वाले जोल्ला (दो लडके) होते हैं ॥ २ ॥

क्रूरग्रहसंधिगते शशिनि वृषे भौमसौरिसंदृष्टे ।
मूकःसौम्यैर्दृष्टे वाचं कालांतरे वदति ॥ ३ ॥

अगर कोई क्रूरग्रह किसी भी राशिके नवम नवांश में आपडे और मंगल तथा शनि से दृष्ट चन्द्रमा वृष राशिका हो, तब वह बालक गूंगा होता है यदि तल्लक्षण लक्षित चन्द्रमा शुभ ग्रहों से देखाजाता हो तब वह बालक कालांतर में वाणी बोलने वाला होता है ॥ ३ ॥

दक्षिणांशे ग्रहाःसर्वे दीप्तानस्तमितेक्षणाः ।
तस्य त्रिंशत्तमे वर्षे गजो द्वारेऽवतिष्ठते ॥ ४ ॥

जिसके जन्मांग चक्र के उत्तरार्ध यानी सप्तम से बारहवें घरके भीतर ही सब ग्रह पूर्ण बली होकर बैठें तो उस मनुष्य के द्वारपर तीस वर्ष की उम्र में हाथी बन्धता है ॥ ४ ॥

चतुःसागरगे चन्द्रे कोणे चैव दिवाकरे ।
अपि दासकुले जातःसोऽपि राजा भविष्यति ॥ ५ ॥

और जिसके केन्द्रगत चन्द्रमा हो, और लग्नसे नवम पंचम घरमें सूर्य हो, वह मनुष्य यदि दासकुल का भी जन्मा हो तब भी राजा होता है ॥ ५ ॥

त्रिभिःस्वस्थैर्भवेन्मन्त्री त्रिभिरुच्चैर्नराधिपः ।

त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासस्त्रिभिरस्तं गतैर्जडः ॥ ६ ॥

और जिसकी कुंडली में तीन ग्रह स्वराशिस्थ हों तब वह मनुष्य मन्त्री, और तीन ग्रह उच्चके होकर बैठे हों तब राजा, और तीन ग्रह नीचके होकर बैठे हों तब दास, और तीन ग्रह अस्त होकर बैठे हों तब जड होता है ॥ ६ ॥

अथ नवग्रहाणां पुरुषाकारचक्रम् तत्रादौ सूर्यचक्रम्—

लिखित्वा नरचक्रं च यत्र सूर्यो व्यवस्थितः ।
तन्नक्षत्रादिकं कृत्वा त्रयं दद्याच्च मस्तके ॥ १ ॥
वदने च त्रयं दद्यादेकैकं स्कंधयोर्द्वयोः ।
बाहुद्वये तथैकैकं पाण्योश्चैकैकमेव च ॥ २ ॥
ऋक्षाणि हृदये पंच नाभौ स्यादेकमेव हि ।
ऋक्षं गुह्ये भवेदकेमेकक्कं जानुनोर्द्वयोः ॥ ३ ॥
नक्षत्राणि षडन्यानि दद्यात्पादद्वये बुधः ।
पादस्थिते च नक्षत्रे निर्द्धनोऽल्पायुरेव च ॥ ४ ॥
विदेशगमनो जातो गुह्ये स्यात्पारदारिकः ।
अल्पतोषी भवेन्नाभौ हृदये चेश्वरस्तथा ॥ ५ ॥
तस्करःपाणियुग्मे च बाहौ स्थानच्युतो भवेत् ।
स्कन्धे गजस्कंधगामी मुखे मिष्टान्नभोजनः ॥ ६ ॥
मस्तकस्थे च नक्षत्रे पट्टबंधो भवेन्नरः ।
सूर्यनक्षत्रतो जन्म नक्षत्रमिति गण्यते ॥ ७ ॥

प्रथम एक मनुष्याकार चक्र लिखे फिर जन्म समय में जिस नक्षत्र पर सूर्य स्थित होवे उस नक्षत्र से लेकर तीन नक्षत्रों को मस्तकपर, फिर तीन नक्षत्र मुखपर, फिर एक नक्षत्रको दोनों कंधों पर, फिर एक एक नक्षत्र को दोनों बाहूपर, फिर एक एक नक्षत्र को दोनों हाथों में, फिर पांच नक्षत्रों को हृदय में, फिर एक नक्षत्र को नाभि में; फिर एक नक्षत्र को गुह्यमें, फिर एक एक नक्षत्र को दोनों जानुपर, फिर

छः नक्षत्रों को दोनों पावों में इस प्रकार २७ नक्षत्रों का समावेश हो जायगा इसमें अभिजित नहीं गिना जाता, फिर विद्वान् देवज्ञ उनका पृथक् २ फल कहै यदि जन्म नक्षत्र पावों में होवे तब वह मनुष्य निर्द्धन और अल्पायु तथा विदेश में जाने वाला, गुह्य (गुदा) में जन्म नक्षत्र हो तब पर स्त्री गामी, नाभिमें जन्म नक्षत्र हो तब थोडे में ही संतोष करने वाला, हृदय में जन्म नक्षत्र हो तब समर्थ, हाथों में जन्म नक्षत्र हो तब चोर, बाहुमें जन्म नक्षत्र हो तब स्थानसे भ्रष्ट,कंधोमें जन्मनक्षत्र हो तब हाथी का चढने वाला,मुखमें जन्म नक्षत्रहो तब मिष्टान्न भोजन करने वाला, और मस्तक में जन्म नक्षत्र होवे तब वह मनुष्य राज्याभिषेक पाने वाला होता है इस सूर्य चक्रमें सूर्य नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गणना मानी गई है ॥ ५-६-७ ॥

शतवर्षाणि जीवेत शिरो जातो न संशयः ।
मुखेनाशीतिवर्षाणि स्कंधाभ्यां च तथैव च ॥ ८ ॥
हस्ताभ्यां बाहुयुग्मे च जीवेत सप्तसप्ततिः ।
अष्टषष्टिर्हृदि ज्ञेया नाभौ चापि तथैव च ॥ ९ ॥

और शिरमें जन्म नक्षत्र हो तब पूरे १०० वर्ष जीवे, मुख में जन्म नक्षत्र हो तब भी ८० वर्ष, हाथों में और बाहुओं में जन्म नक्षत्र हो तब ७७ वर्ष, हृदय तथा नाभि में जन्म नक्षत्र हो तब ६८ वर्ष ॥ ८-९ ॥

गुह्ये च षष्टिवर्षाणि चाष्टौ वर्षाणि जानुनि ।
पादयोःषट् च वर्षाणि रविचक्रे क्रमेण च ॥ १० ॥

गुह्य (गुदा) में जन्म नक्षत्र हो तब ६० वर्ष, जानुमें जन्म नक्षत्र हो तब ८ वर्ष, और पावों में जन्म नक्षत्र होवे तब ६ वर्ष जीता है, इस क्रमसे रवि चक्रका फल कहा है ॥ १० ॥

अथ चन्द्रपुरुषाकारचक्रम्—

पूर्णिमायां तु यदृक्षं तदादौ त्रीणि मस्तके ।
मुखे त्रीणि भुजे षट्कं हृदि त्रीण्युदरे त्रयम् ॥ १ ॥
गुह्ये त्रीणि पदे षट्कं न्यसेच्चंद्रस्य सर्वदा ।
यावत्स्वजन्मनक्षत्रं गणनीयमिति क्रमात् ॥ २ ॥

अर्थसिद्धिर्नृवृत्तश्रीः कुशलं चाद्भुतं शुभम् ।
मार्गमृत्युं श्रियं क्षेममिति चन्द्र फलं वदेत् ॥ ३ ॥

पौर्णमासी के दिन जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र से लेकर तीन नक्षत्रों को चन्द्र पुरुषाकारके मस्तक पर, फिर तीन मुखमें; छः भुजापे, तीन हृदयमें, ३ पेट पर, तीन गुद पर फिर छः नक्षत्रों को पावों में, स्थापन करे, इस तरह पूर्णिमा के नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिने; तब मस्तक में जन्म नक्षत्र हो तब धन प्राप्ति; मुखके नक्षत्रों में जन्म नक्षत्र हो तब पूर्ण लक्ष्मी, और भुजा के नक्षत्रों में जन्म नक्षत्र हो तब कुशल, हृदय के नक्षत्रों में जन्म नक्षत्र हो तब कल्याण, पेटके नक्षत्र में जन्म नक्षत्र हो तब मार्ग में मृत्यु, गुदा में जन्म नक्षत्र हो तब लक्ष्मी, और पावों के नक्षत्रों में जन्म नक्षत्र हो तब उस उस पुरुष को श्रेयः प्राप्त होता है ॥१-२-३॥

अथ भौमपुरुषाकारचक्रम्—

यस्मिन्नृक्षे भवेद्भौमस्तदादौ त्रीणि मस्तके ।
मुखे त्रीणि त्रयं नेत्रे कंठे द्वे च चतुष्करे ॥ १ ॥
पंचोदरे त्रीणि गुह्ये पादे चत्वारि दापयेत् ।
जन्मऋक्षं स्थितं यत्र फलं तत्र वदेत्पुमान् ॥ २ ॥
मुखे रोगं सुखं नेत्रे शिरो राज्यं रुजा करे ।
कंठे रोगी धनी वक्षे गुह्ये पादे च विभ्रमः ॥ ३ ॥

बालक के जन्म समय जिस नक्षत्र पर मंगल विद्यमान हो उसी नक्षत्र से लेकर तीन नक्षत्र भौमपुरुषाकृतिके मस्तक पर, तीन मुखमें, तीन नेत्रों में, दो कंठ में, चार हाथोंपे, पांच पेट में, तीन गुदा में, चार पामों में, क्रमसे स्थापन करै फिर जिस स्थान में जन्म नक्षत्र हो उसका क्रम से इस तरह फल कहे मुख में जन्म नक्षत्र हो तो रोग, नेत्र में जन्म नक्षत्र हो तो सुख, शिरमें हो तो राज्य, हाथों में हो तो रोग, कंठ में हो तो रोग, वक्षस्थल में हो तो धन, गुदा तथा पावों में यदि जन्म नक्षत्र हो तब वह पुरुष भ्रम युक्त होता है १-२-३

अथ बुधपुरुषाकारचक्रम्—

यस्मिन्नृक्षे भवेत्सौम्यस्तदादौ शीर्षके चतुः ।

मुखे त्रीणि चतुर्वामे करे दक्षिणके चतुः ॥ १ ॥
हृदये षट् तथा गुह्ये चत्वारि द्वे पदे न्यसेत् ।
जन्मऋक्षं स्थितं यत्र फलं तत्र वदेत्पुमान् ॥ २ ॥
मुखेष्टभुक्छिरोराज्यं कष्टं वामकरे तथा ।
वक्षस्यन्यकरे सौख्यं गुह्ये रोगी पदे भ्रमः ॥ ३ ॥

जातक के जन्म काल में जिस नक्षत्र पर बुध हो उस नक्षत्र से लेकर चार नक्षत्र बुध पुरुषा कारके शिरमें, तीन मुखमें, चार वाम हाथ में, फिर चार नक्षत्र दक्षिण हाथ में, छै नक्षत्र हृदय में, चार गुदामें, दो नक्षत्र पैर में, क्रम से स्थापन करें फिर जिस जगह जन्म नक्षत्र हो उसका इस प्रकार फल कहे यदि मुख में जन्म नक्षत्रहो तब वांछित भोजन, शिर में पडेतो राज्य, वामकरमें हो तो कष्ट, वक्षस्थल में या दक्षिण हाथ में पडे तो सुख, गुदा में पडे तो रोगी, और पांवों में जन्म नक्षत्र होवे तब उस पुरुष को मन में भ्रम होता है १–३॥

अथ गुरुपुरुषाकारचक्रम्—

शीर्षे चत्वारि राज्यं युगपरिगणितं स्कंधयुग्मे च लक्ष्मी
रेकंकंठे विभूतिर्मदनपरिमित वक्षसि प्रीतिलाभम् ।
षड्भिःपीडांघ्रियुग्मे जलधिपरिमित वामहस्ते च मृत्युर्दृ-
ग्युग्मेत्रीणि कुर्यान्नृपतिसमसुखं वाक्पतेश्च क्रमे तत्॥ १ ॥

जिस नक्षत्र पर बृहस्पति हो उससे लेकर चार नक्षत्र बृहस्पतिपुरुषाकारके मस्तक पर रक्खे, उनमें यदि जन्म नक्षत्र आजावे तब राज्य, फिर चार कंधों में रक्खे लक्ष्मी प्राप्ति फल, एक कंठ में रक्खे फल विभूति प्राप्ति, वक्षःस्थलमें रक्खे फल प्रीति का लाभ, छः पावों में रक्खे फल पीडा प्राप्ति, चार वाम हाथ में तब मृत्यु प्राप्ति, फिर तीन नेत्रोंमें स्थापन करें यदि उनमें जन्म नक्षत्र हो तब उस मनुष्य को राजा के समान सुख मिलता है इस प्रकार गुरुचक्र का फल होता है ॥ १ ॥

अथ शुक्रपुरुषाकारचक्रम्—

यस्मिन्नृक्षे भवेच्छुक्रस्तदादौ च चतुःशिरे ।
कंठे वक्षःस्थले पंच त्रिगुह्ये पंचजंघयोः ॥ १ ॥
त्रीणि द्वे पदयोर्दद्यात्फलं जन्मर्क्षमानतः ।
शिरोराज्यं धनं कंठे हृदये सौख्यमेव च ॥ २ ॥
शत्रुभीतिर्भवेद्गुह्ये जंघायां मिष्टभोजनम् ।
पादे च सुखसंप्राप्तिःशुक्रचक्रे क्रमेण च ॥ ३ ॥

बालक के जन्मकाल में जिस नक्षत्र पर शुक्र वर्तमान हो उस नक्षत्र से लेकर चार नक्षत्रों को शुक्रपुरुषाकार के शिरमें, फिर पांच नक्षत्र कंठ में, पांच वक्षःस्थलपे, तीन गुदापे, पांच दोनों जांघो में;तीन और दो क्रमसे दोनों पावों में स्थापन करै, फिर उसका ये फल कहै, शिर के नक्षत्रों में जन्म नक्षत्र आपडे तौ राज्य, कंठ पर धन लाभ, हृदय पर सुख, गुदा पे हो तो शत्रु से भय, जंघा पर मिष्ट भोजन, और पैर पर होवे तो सुख प्राप्ति ॥ १ ॥

अथ मार्गिशनि चक्रम् जातकाभरणात्—

शनिचक्रं नराकारं लिखित्वा सौरिभादितः ।
नामऋक्षं भवेद्यत्र ज्ञेयं तत्र शुभाशुभम् ॥ १ ॥
नक्षत्रमेकं च शिरोविभागे तथा मुखे त्रीणि युगं च गुह्ये ।
नेत्रे च नक्षत्रयुगं हृदिस्थं त्रयं तथा वामकरे चतुष्कम् ॥२॥
वामे च पादे त्रितयं च भानां भानां त्रयं दक्षिणपादसंस्थम् ।
चत्वारि ऋक्षाणि च दक्षिणेतरे पाणौ प्रणीतं मुनिनारदेन ।३
रोगो लाभो हानिराप्तिश्च सौख्यं बंधःपीडा सत्प्रयाणं च लाभः
मांदे चक्रे मार्गगे कल्पनीयं तद्वैलोम्याद्वक्रगे स्युःफलानि ॥४॥

१—"ऋक्षयकः" इतिप्रकृतिभावान्नात्र सन्धिः । तथैव "चत्वारि ऋक्षाणि इत्यत्रापि ज्ञेयम् ।

पुरुषके आकार सा एक शनि चक्र लिखकर जन्मकालिक शन्यधिष्ठित नक्षत्र से लेकर लिखे अनुसार सब अंगोंपर धरे उसपर जन्म नक्षत्र को देखकर शुभा शुभ फलको कहे उसका क्रम कहते हैं, १ शिर स्थान में, फिर क्रमसे तीन नक्षत्रों को मुखमें, चार गुदा में, दो नेत्रों में; फिर ३ हृदय में, चार वामहस्त में, तीन वाम पादमें; तीन दक्षिण पादमें, फिर चार दक्षिण हाथमें स्थापन करै ऐसा नारदमुनि ने कहा है, फिर यदि शनि मार्गि हो तब तो क्रमसें रोग, लाभ, हानि, प्राप्ति; सुख; बंधन, पीडा सत्रयात्रा, और लाभ होना ये फल होता है, और यदि शनि वक्री होवे तो वदयमाण श्लोकोक्त फल जानें ॥ १–२–३–४ ॥

अथ वक्रिशनि पुरुषाकार चक्रम्—

यस्मिञ्छनिश्चरति वक्रगतं तदृक्षं-
चत्वारिदक्षिणकरेऽङ्घ्रियुगे च षट्कम् ।
चत्वारि वामकरणे ह्युदरे च पंच
मूर्ध्नि त्रयं नयनयोर्द्वितयं त्रिगुह्ये ॥ १ ॥
रोगो लाभस्तथा द्रव्यलाभो बंधनमेव च ।
पूजा च जनसौभाग्यमल्पमृत्युःक्रमात्फलम् ॥ २ ॥

जिस नक्षत्र पर शनि वक्रगत हो उस नक्षत्र से वैलोम्य क्रम से चार नक्षत्र दक्षिण हाथमें, फिर छः पैरों में; चार वाम हाथ पर, पांच पेट में, तीन मस्तकमें, दो नेत्रों में, ३ गुदा में, स्थापन करै इनमें जिस जगह जन्म नक्षत्र आवे तब उसका क्रम से इस प्रकार फल कहै रोग, लाभ, द्रव्यलाभ, बंधन, पूजा, जनसौभाग्य, और अल्प मृत्यु ये सब क्रमसे फल होते हैं जैसे कि दक्षिण हस्त नक्षत्रों में यदि जन्म नक्षत्र हो तब रोग, पांवों के नक्षत्रों में जो जन्म नक्षत्र होवे तब लाभ, इत्यादि और भी इसी क्रम से समझना ॥ १–२ ॥

राहुचक्रम्—

यस्मिन्नृक्षे भवेद्राहुस्तदादौ सप्त पादयोः ।
दक्षिणे च भुजे पंच शिरसि त्रीणि दापयेत् ॥ १ ॥

१—करणं साधकतमं क्षेत्रगात्रेन्द्रियेष्वपि" इति नामलिङ्गानुशासन प्रामाण्यात्करण शब्देनात्र हस्तेन्द्रियार्थो ग्राह्यः ।

द्वे[1] ऋक्षे हृदये न्यस्य मुखे चैकं नियोजयेत् ।
भपञ्चकंकरे ज्ञेयमृक्षमेकं च नाभिगम् ॥ २ ॥
तथैव त्रीणि गुह्ये च राहुचक्रं विधीयते ।
धनहानिर्भवेत्पादे संतापो दक्षिणे करे ॥
शीर्षे शत्रुभयं विद्याद्धृदये दुर्जनप्रियम् ॥ ३ ॥
मुखे दुर्जनसंहारो मृत्युर्वामे करे भवेत् ।
नाभिस्थं सर्वनाशाय गुह्ये प्राणविनाशनम् ॥ ४ ॥

जिस नक्षत्र पर जन्म समय राहु हो उस नक्षत्र से लेकर सात नक्षत्र पावों में, फिर पांच दक्षिण भुजामें, फिर तीन नक्षत्र शिरपे, दो हृदयमें,एक मुखपे, पांच बायें हाथ पर, एक नाभि में, तीन गुदा में स्थापन करे इस प्रकार शुद्ध चक्र बनाकर फिर कहे जैसे पांवों के नक्षत्रों में जन्म नक्षत्र होवे तब धन की हानि, दक्षिण हाथ पर संताप, शिरगत होतो शत्रुभय, हृदयगत हो तो दुर्जनों से स्नेह, मुखगत नक्षत्र होवे तो दुर्जनसंहार, शनि के वाम हस्तगत जन्म नक्षत्र हो तब मृत्यु और नाभिगत हो तो सर्वनाश, गुह्यगत होतो, प्राण नाश ॥ ४ ॥

अथ केतुपुरुषाकारचक्रम्—

शीर्षे[2] पंच द्वे मुखे पंच कर्णे द्वे वै वक्षस्य ंधिसंख्यानि हस्ते ।
अंघ्रौ देयाःपंच, चत्वारि वस्तौ केतोश्चक्रं प्रोदितंबुद्धिमद्भिः ।१।

जिस नक्षत्र पर जन्म काल में केतु हो उस नक्षत्र से लेकर पांच नक्षत्र शिर में, दो मुख में, पांच कानों में, दो हृदय में, चार हाथों में. पांच पावों में, चार वस्ति में स्थापन करें ये बुद्धिमानों ने केतु चक्र कहा है ॥ १ ॥

मुखे[3] भयं मूर्ध्नि जयं करोति कर्णे भयं पाणियुगे च सौख्यम् ।
पादे सुखं वक्षसि शोकमेव गुह्ये भ्रमं दुःखविकारहेतुम् ॥ २ ॥

१—ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यमिति प्रगृह्यत्वेन प्रकृतिभावत्वान्नात्र सन्धिः ।

२—शालिनी छन्दः तल्लक्षणं-मात् तौ गौ चेत् शालिनी वेदलोकैः”-मात् (मगणात्परम्) तौ (तगणद्वयम्) गौ (गुरुद्वयञ्च) स्यात् तदिदं शालिनीच्छन्दः अस्मिन्वृत्ते चतुर्थ सप्तसुचाक्षरेषु यतिर्भवति । एकादशाक्षरकं वृत्तम् ।

३—उपजाति वृत्तम् ।

मुखगत नक्षत्रों में जन्म नक्षत्र हो तब भय, शिरगत तब जय; कर्णगत हो तब भय, हाथों पर आने से सुख; और पादगत हो तब सुख, वक्षस्थल पर हो तब शोक, गुह्यगत हो तो भ्रम तथा दुःख विकार का हेतु होता है ॥ २ ॥

अथ नवप्रकारग्रहफलम्—

दीप्तः १ स्वस्थो २ मुदितः ३ शांतः ४ शक्तः ५ प्रपीडितो ६ दीनः ७ । विकलः ८ खलश्च ९ कथितो नवप्रकारो ग्रहो हरिणा ॥ १ ॥

दीप्त १ स्वस्थ २ मुदित ३ शांत ४ शक्त ५ प्रपीडित ६ दीन ७ विकल ८ और खल ९ इस प्रकार नौ तरह का ग्रह कहा है ॥ १ ॥

तल्लक्षमुच्यते—

दीप्तस्तुंगगतःखगो निजगृहे स्वस्थो हित हर्षितः
शांतःशोभनवर्गगश्च खचरः शक्तः स्फुरद्रश्मिभाक् ।
लुप्तःस्याद्विकलः स्वनीचग्रहगो दीनः खलः पापयुक्
खेटोयः परिपीडितश्च खचरैः स प्रोच्यते पीडितः ॥ २ ॥

अब उक्त नवविध ग्रह का लक्षण बताया जाता है जैसे कि स्वोच्च राशिगत जो ग्रह हो वह दीप्त, स्वक्षेत्री जो ग्रह हो वह स्वस्थ, मित्रक्षेत्री ग्रह हो वह मुदित, शुभग्रह के षड्वर्ग का जो ग्रह हो वह शांत; जो उदित ग्रह होता है वह शक्त; जो अस्त होवे वह विकल; अपने नीचका जो ग्रह होता है वह दीन, पाप ग्रह युक्त हो वह खल. और जो अन्य ग्रहों से पीडित हो वह ग्रह पीडित होता है ॥ २ ॥

अथ दीप्तादिग्रहाणांफलम्—

दीप्ते प्रतापादतितापितारिर्गलन्मदालंकृतकुंजरेशः ।
नरो भवेत्तन्निलयं सलीलं पद्मालयालंकुरुते विलासम् ॥ ३ ॥

जिसके दीप्त ग्रह होवे वह मनुष्य अपने प्रताप से शत्रु को अतिताप देनेवाला; मद मत्त हाथियों के ऊपर बैठनेवाला; और उसके घर को लक्ष्मी आनन्द पूर्वक सुशोभित करती है तथा विलास से युक्त होता है ॥ ३ ॥

स्वस्थे महद्वाहनधान्यरत्नैर्विशालशालाबहुलेन युक्तः ।
सेनापतिःस्यान्मनुजो महौजा वैरिव्रजावाप्तजयाधिशाली ॥४॥

और जिसके स्वस्थ ग्रह होता है वह मनुष्य उत्तम वाहन धान्य रत्न एवं बडी २ अनेकों महलावतों से युक्त तथा सेनापति, बडा पराक्रमी; और मंडल का विजय करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

हर्षिते भवति कामिनाजनात्यंतभूषणमणिव्रजवित्तः ।
धर्मकर्मकरणैकमानसो मानसोद्भवचयो हतशत्रुः ॥ ५ ॥

और जिसके हर्षित ग्रह होवे तब वह मनुष्य कामिनी जनों का अत्यंत प्रिय, मणि आदि बहु मूल्य वस्तुओं के समूह से पूर्ण धनी, धर्मकर्म करने में खूब मन रखने वाला, उदार चित्त और शत्रुजनों का नाश करनेवाला होता है ॥५ ॥

शांतेऽतिशांतो हि महीपतीनां मन्त्री स्वतंत्रो बहुमित्रपुत्रः ।
शास्त्राधिकारी सुतरां नरःस्यात्परोपकारी सुकृतैकचित्तः ।६।

और जिसके शांत ग्रह होवें वह मनुष्य अति शांत प्रकृतिवाला, राजाओं का मन्त्री, स्वतंत्र और अनेक मित्र पुत्रों से संपन्न शास्त्र में अधिकार करनेवाला. और परोपकारी पुण्य कर्म करने में चित्त रखनेवाला होता है ॥ ६ ॥

शक्तेऽतिशक्तःपुरुषो विशेषात्सुगंधमाल्याभिरुचिःसुविच्च ।
विख्यातकीर्तिःसुजनःप्रसन्नो जनोपकर्ताऽरिजनप्रहर्ता ॥ ७ ॥

जिसके शक्त ग्रह होवे वह मनुष्य सब काम करने में समर्थ, विशेष करके सुगंधित पुष्पों में रुचि रखने वाला, सब बातका ज्ञाता, जगतमें विख्यात कीर्ति, सज्जन, सदा प्रसन्न, जनों के उपकार करने वाला, और शत्रुजनोंका मारने वाला होता है।७।

हतबलो विकलो मलिनः सदा रिपुकुलप्रबलत्वगलन्मतिः ।
खलसखः स्थलसंचरणोनरःकृशतरःपरकार्यगतादरः ॥ ८ ॥

और जिसके विकल ग्रह हों वह मनुष्य बलसे हीन,मलिन; शत्रु कुलेकी प्रबलता से मन्दबुद्धि वाला; दुष्ट जनों का फिजूल इधर उधर घूमने वाला, अति दुर्बल, और परोपकार करने से रहित होता है ॥ ८ ॥

दीनेऽतिदीनोऽपचयेन तप्तःसंप्राप्तभूमीपतिशत्रुभीतिः ।
संत्यक्तनीतिःखलु हीनकांतिःस्वजातिवैरं हि नरःप्रयाति ॥९॥

और जिसके दीन ग्रह होता है वह पुरुष अत्यन्त दीन, गरीबी के मारे दुःखी, राजा तथा शत्रुसे भय युक्त, नीतिसे रहित, कांतिहीन, और अपनी जाति से वैर रखने वाला होता है ॥ ९ ॥

खलाभिधानो हि खलैःकलिःस्यात्कांताऽतिचिंतापरितप्तचित्तः ।
विदेशयानं धनहीनतांतःकोपी भवेल्लुब्धमतिप्रकाशः ॥१०॥

और जिसके खल ग्रह हो तब वह मनुष्य खलों से मुकद्दमा बाजी करे, स्त्री निमित्त चिंता से दुःखी चित्त, परदेश में जाने वाला, धनसे हीन, भीतर क्रोध करने वाला, और लोभ युक्त बुद्धिवाला होता है ॥ १० ॥

पीडिते भवति पीडितःसदा व्याधिभिर्व्यसनतोऽपि निंदितः ।
याति संचलनतां निजस्थलाद्व्याकुलत्वमपि बंधुचिंतया॥११॥

और जिसके पीडित ग्रहहो वह मनुष्य सदा अनेक व्याधि पीडित; दुर्व्यसनों से बदनाम, स्वस्थानका त्याग कर अन्त २ घूमनेवाला, बन्धु चिन्ता से व्याकुलता युक्त होता है ॥ ११ ॥

अथ गजचक्रं फलञ्च—

अथातःसंप्रवक्ष्यामि चक्रं मातंगनायकम् ।
यस्य विज्ञानमात्रेण यात्रायुद्धे जयो भवेत् ॥ १ ॥
गजाकारं लिखेच्चक्रं सर्वावयवसंयुतम् ।
अष्टाविंशति ऋक्षाणि देयानि सृष्टिमार्गतः ॥ २ ॥
मुखशुंडाग्रनेत्रे च कर्णशीर्षांघ्रिपुच्छके ।
द्विकं द्विकं चं दातव्यं चतुःपृष्ठे तथोदरे ॥ ३ ॥
द्विरदव्ययभान्यादौ वदनाद्गण्यते बुधैः ।
यत्र ऋक्षे स्थितःसौरिर्ज्ञेयं तत्र शुभाशुभम् ॥ ४ ॥

मुखशुंडाग्रनेत्रेषु सौरिभं मस्तकोदरे ।
युद्धकाले गते यस्य जयस्तस्य न संशयः ॥ ५ ॥
पृष्ठे पादे च पुच्छे च कर्णसंस्थे शनैश्चरे ।
मृत्युर्भंगो रणे तस्य ऐरावतसमो यदि ॥ ६ ॥
एतेषां दुष्टभंगानां तत्काले संस्थितःशनिः ।
तत्काले पट्टबंधोऽपि वर्जनीयःप्रयत्नतः ॥ ७ ॥
पृथिव्या भूषणं मेरुःशर्वर्या भूषणं शशी ।
नराणां भूषणं विद्या सैन्यानां भूषणं गजः ॥ ८ ॥

अब अगाडी गजचक्रको कहूंगा जिसके विज्ञान मात्र से यात्रा और युद्धमें जय होता है ॥ प्रथम सर्वांग युक्त हाथी का आकार लिखें उसमें सामिजित् अश्विन्यादि २८ नक्षत्रों को इस रीति से स्थापन करै मुख; शूंडका अग्र, नेत्र, कर्ण, शिर, पांव और पुच्छमें क्रमसे दो दो नक्षत्र; और पीठ तथा पेटमें चारचार नक्षत्र स्थापन करै ॥ इन हाथी के नक्षत्रों को प्रथम मुख से गणना करै फिर देखे कि शनि नक्षत्र गजा कृतिके किस अंग पर पड़ा है तब उस स्थानका शुभ या अशुभ जो कुछ फल हो उसे कहे । यदि युद्ध समय में शनि अधिष्ठित नक्षत्र मुख शुंडाग्र नेत्र मस्तक या उदरमें आया हो तो उस लडाई में मनुष्यकी अवश्य जीत होती है इसमें संदेह नहीं । और जो शन्यधिष्ठित नक्षत्र पीठ पांव पुच्छ या कानोंमें स्थित हो तब उस मनुष्यका यदि ऐरावत समान भी बली हो तब भी मृत्यु या भंग होता है । इन दुष्टांगों में जिस समय शनि नक्षत्र होवे तो उस समय युद्ध राज्याभिषेक भी प्रयत्न से सर्वथा वर्जनीय है, जिस प्रकार पृथ्वी का भूषण सुमेरु,रात्रिका भूषण चंद्रमा, और मनुष्यका भूषण विद्या होती हैं इसी प्रकार सेना के भूषण हाथी होते हैं ॥ १-८ ॥

अथ अश्वचक्रम्—

अश्वाकारं लिखेच्चक्रमश्वधिष्ण्यादितारकाः ।
वदनात्पृष्टिगा देया अष्टाविंशतिसंख्यया ॥ १ ॥
मुखाक्षिकर्णशीर्षेषु पुच्छांघ्र्योर्युग्मसंख्यया ।

पंच पंचोदरे पृष्ठे सौरिर्यंत्रफलं ततः ॥ २ ॥
मुखाक्षिकर्णशीर्षस्थो यदा सौरिस्तुरंगमे ।
तदारिर्भंगमायाति रणे शत्रुवशं गतः ॥ ३ ॥
कर्णांघ्रिपृष्ठे पुच्छस्थे अश्वांगेष्वर्कनंदने ।
विभ्रमं भंगहानिं च कुरुतेऽसौ महाहवे ॥ ४ ॥
एतत्स्थानास्थितःसौरिःसदा काले हयस्य च ।
पट्टबंधे गमे युद्धे वर्जयेत्तं हयं नृपः ॥ ५ ॥
देशांतरास्थितःसौरी रिपवःसंति शंकिताः ।
तुरंगा यस्य भूपस्य विचरंति महीतले ॥ ६ ॥

प्रथम एक सर्वांग पूर्ण घोडेकी शक्ल लिखै फिर साभिजित् अश्विनी आदि २८ नक्षत्रों को मुखसे आदि स्थानों में क्रमसे स्थापन करै. मुखमें, नेत्रों में, कानों में, शिरमें, पुच्छमें, और पावों में दो दो नक्षत्र और पांच २ नक्षत्र पेट तथा पीठमें रक्खे, जिस जगह शनि अधिष्ठित नक्षत्र आवे तब उसका फल कहै जो घोडे के मुख नेत्र कर्ण और शिरके स्थानों में कहीं शनि नक्षत्र हो तब संग्राम में जाने वाले के शत्रु हारकर वशगत होवे। और कर्ण पांव पृष्ठ और पुच्छ इनमें शनि नक्षत्र हो तो अपुन को विभ्रम भंग और हानि होती है. और इन्हीं स्थानोंमें स्थित शनि नक्षत्र पट्टबन्ध (राज्याभिषेक) में गमन में और युद्धमें वर्जित है. और उक्तांगों से अन्यत्र शनि नक्षत्र होवे सो शत्रु डरकर इधर उधर मारे २ फिरते हैं ॥ १-६ ॥

अथ शतपदचक्रम—

चक्रं शतपदं वक्ष्ये ऋक्षांशाक्षरसंभवम् ।
नामादिवर्णतो ज्ञेयमृक्षराश्यंशकं तथा ॥ १ ॥
तिर्यगूर्ध्वगता रेखा रुद्रसंख्या लिखेद्बुधः ।
जायते कोष्ठकं तत्र शतमेकं न संशयः ॥ २ ॥
न्यस्यावकहडादीनि रुद्रादिविदिशःक्रमात् ।
पंच पंच क्रमेणैव विंशद्वर्णान्प्रयोजयेत् ॥ ३ ॥

पंचस्वरसमायोग एकैकं पंचधा कुरु ।
कुर्यात्कुपुभुदुस्थानि त्रीणि त्रीण्यक्षराणि च ॥ ४ ॥
कुघङछा भवेत्स्तंभो रौद्र ईशानगोचरे ।
पुषणठा भवेत्स्तंभो हस्तमाग्नेयसंज्ञके ॥ ५ ॥
भूधफढा भवेत्पूर्वे दुथझञा स्तथोत्तरे ।
एवं स्तंभचतुष्कं च ज्ञातव्यं स्वरवेदिभिः ॥ ६ ॥
धिष्ण्यानि कृत्तिकादीनि प्रत्येकं चतुरक्षरैः ।
साभिजित्यंशकास्तस्य शतकं द्वादशाधिकम् ॥ ७ ॥
यदृक्षांशककोष्ठस्थः क्रूरः सौम्योऽपि वा ग्रहः ।
ततस्तद्वर्जयेन्नित्यं पुंसो नामाद्यमक्षरम् ॥ ८ ॥
सौम्यैर्विद्धे शुभं ज्ञेयमशुभं पापखेचरैः ।
मिश्रैर्मिश्रफलं तत्र निर्वेधेन शुभाशुभम् ॥ ९ ॥
यदुक्तं सर्वतोभद्रे ग्रहोपग्रहवेधतः ।
शुभाशुभफलं सर्वं तदिहापि विचिंतयेत् ॥ १० ॥

अब शतपद चक्रको कहते हैं जिसके द्वारा प्रत्येक मनुष्य के नामके पहिले अक्षर से नक्षत्र चरण तथा राशिका ज्ञान होजाता है प्रथम खडी और तिरछी ग्यारह ग्यारह रेखा करै तब पूरे १०० कोठे होते हैं, उन कोष्टकों में ईशान कोणसे लेकर अ, व, क, ह, ड, आदि अक्षरों को क्रम से स्थापन करके फिर पांच २ के क्रमसे मात्रा के अनुसार उनके नीचे इ, वि, कि हि, डि, आदि बीस वर्णों को रक्खे इस प्रकार करने से ईशान कोणके २५ कोठे भर जायेंगे एवं अन्य कोणों के स्तगों को भी भरदें एवं आगे को भी एक एक वर्णों में पांच २ स्वरों का समायोग करके रखता जाय । तदनन्तर कु, पु, भु, दु, इन अक्षरों के स्थान में तीन २ अक्षरों (घ ङ छ, षणठ थ झ ञ) को करै । तदनन्तर कु घ ङ छ अक्षरों का स्तंभ ईशान में आर्द्रा, पुषणठ हस्त नक्षत्र का खंभ आग्नेय कोणमें, भूधफढ पूर्व में, दु थ झ ञ उत्तर में, इस प्रकार चार खंभ स्वरके जानने वालों को जानने

चाहिये । फिर कृत्तिकादि प्रत्येक नक्षत्रों के चार २ वर्णों से (अ इ उ ए कृत्तिका ओ ब वि बु रोहिणी आदि क्रमसे) अभिजित् सहित गणना से बारह अधिक पूरे १०० अक्षर होते हैं । जिस नक्षत्र के चरण में क्रूर या सौम्य ग्रह आया हो पुरुष के नामके आद्याक्षर को वर्जन करे । शुभ ग्रहों के वेध से शुभफल, और पाप ग्रहों के वेध से अशुभ फल; और शुभाशुभ ग्रहों के वेधसे मिश्रफल. और निर्वेध होने से भी शुभाशुभ फल कहना चाहिये और जो फल ग्रहों के वेध से सर्वतो भद्रमें कहा है वह शुभाशुभ फल इसमें भी विचार करै ॥ १-१० ॥

शतपद्चक्रम्—

अ	व	क	ह	ड	म	ट	प	र	त
इ	वि	कि	हि	डि	मि	टि	पि	रि	ति
उ	बु	कु.घ.ङ.छ	हु	डु	मु	ष.टु	पु.ष.ण.ठ	रु	तु
ए	वे	के	हे	डे	मे	टे	पे	रे	ते
ओ	वो	को	हो	डो	मो	टो	पो	रो	तो
न	य	भ	ज	ख	ग	स	द	च	ल
नि	यि	भि	जि	खि	गि:	सि	दि	चि	लि
नु	यु	भु.ध.फ.ढ.	जु	खु:	गु	सु,	दु.थ.झ.ञ	चु	लु
ने	ये	भे	जे	खे	गे	से	दे	चे	ले
नो	यो	भो	जो	खो	गो	सो	दो	चो	लो

अथ सूर्यकालानलचक्रम् जातकाभरणात्—

सूर्यकालानलं चक्रं स्वरशास्त्रोदितं महत् ।
तदहं विशदं वक्ष्ये चमत्कृतिकरं परम् ॥ १ ॥

त्रिशूलकाग्राःसरलाश्च तिस्रः किलोर्ध्वरेखाःपरिकल्पनीयाः ।
रेखात्रयं मध्यगतं च तत्र द्वे द्वे च कोणोपरिगे विधेये ॥ २ ॥

त्रिशूलकोणांतरगान्यरेखा तदग्रयोःशृंगयुगं विधेयम् ।
मध्ये त्रिशूलस्य च दंडमूलात्सव्येन भान्यर्कभतोऽभिजिच्च।३।

स्वनामभं यत्र गतं च तत्र प्रकल्पनीयं सदसत्फलं हि ।
तत्तस्य ऋक्षात्रितये क्रमेण चिंता वधश्च प्रतिबंधनानि ॥ ४ ॥

शृंगद्वये रुक् च भवेच्च भंगं शूलेषु मृत्युं परिकल्पयंति ।
शेषेषु धिष्ण्येषु जयश्च लाभोऽभीष्टार्थसिद्धिर्विविधा नराणाम् ५

श्रीसूर्यकालानलचक्रमेतद्वदे च वादे च रणेप्रयाणे ।
प्रयत्नपूर्वं परिचिंतनीयं पुरातनानां वचनं प्रमाणम् ॥ ६ ॥

रवेर्वेधे मनस्तापो द्रव्यहानिश्च भूसुते ।
रोगपीडाकरो मंदो राहुःकेतुश्च मृत्युदः ॥ ७ ॥

गुरोर्वेधे भवेल्लाभो रत्नलाभश्च भार्गवे ।
स्त्रीलाभश्चंद्रवेधे च सुखं स्याद् बुधवेधतः ॥
जन्मराशेश्चवेधेन फलमेतत्प्रकीर्तितम् ॥ ८ ॥

महत् चमत्कारको करने वाला स्वर शास्त्रका कहा हुआ जो सूर्यकालानल चक्र है उसे मैं विस्तार करके कहता हूं । प्रथम त्रिशूलाकार अग्र भाग सहित तीन सीधी (खडी) रेखा करै, फिर मध्य में तीन रेखा आड़ी करै, उसके चारों कोनों में दो दो रेखा और बनावै । फिर त्रिशूल और कोणों के, अन्तराल में एक २ रेखा और करै उनके अग्र भागमें दो शृंग करै फिर मध्यके त्रिशूल के दण्ड के मूलसे लेकर विपरीत (वाम) क्रमसे सूर्य नक्षत्र से लेकर अभिजित सहित सब

नक्षत्रों को स्थापन करै । फिर अपना जन्म नक्षत्र जिस स्थान पर आवै उसका शुभाशुभ फल इस प्रकार करै त्रिशूल वाली रेखाओं के मूलमें पडे तो क्रमसे चिंता, बध तथा सब कार्यों में रुकावट समझै; । दोनों शृंगों में रोग और भय होता है त्रिशूल में हो तो मृत्यु होती है, और शेष नक्षत्रों में जन्म नाम नक्षत्र होने से जय, लाभ, अभीष्ट, अर्थ सिद्धि मनुष्यों को होती है, । यह सूर्य कालानल चक्र रोगमें, वाद (मुकद्दमा) में और प्रयाण में प्रयत्न पूर्वक विचारना चाहिये, ये सब पुरातन ऋषियों का बचन ही प्रमाण है । सूर्य के वेधसे मनको ताप; मंगल के वेध से द्रव्यहानि, शनि के वेध से रोग जन्य पीडा; और राहु केतु के वेध से मृत्यु, गुरुके वेधसे धन लाभ, शुक्रके वेध से रत्न लाभ, चन्द्रमा के वेध से स्त्री लाभ, बुध के बेध से सुख । जन्म राशि के वेध से भी यही फल कहा है ॥ १-८ ॥

सूर्य कालानल चक्रम् ।

पू० उ० ह०　चि० स्वा० वि०　अ० ज्ये० मू०
म०　पू०
आ०　उ०
पु०　अ०
पु०　अ०
आ०　ध०
मृ०　श०
पू०
रो०　उ०
कृ०　भ०　अ०　रे०
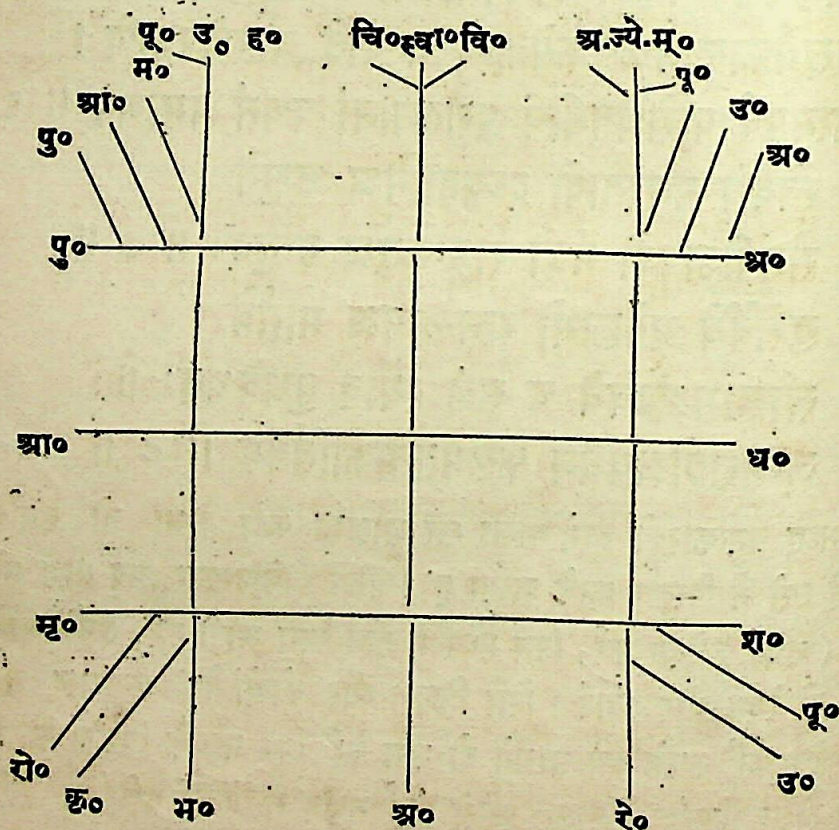
अथ चन्द्रकालानलचक्रम्—

चंद्रकालानलं चक्रं व्योमाकारं लिखेद् बुधः ।
चतुर्दिक्षु त्रिशूलानि मध्यत्र्यस्राणि कारयेत् ॥ १ ॥
पूर्वं त्रिशूलमध्यस्थं दिवसर्क्षं समालिखेत् ।
त्रिशूले च बहिर्मध्ये मध्ये बहिस्त्रिशूलके ॥ २ ॥
नामर्क्षं च स्थितं यत्र ज्ञेयं तत्र शुभाशुभम् ॥ ३ ॥
त्रिशूले च भवेन्मृत्युर्मध्यमं बहिरष्टके ।
आयुःप्रजाजयो लाभश्चंद्रगर्भे न संशयः ॥ ४ ॥

चन्द्रकालानल चक्रको आकाश के आकार लिखै उसके चारों दिशा में चार त्रिशूल करै, तथा प्रत्येक त्रिशूलोंके मध्य में त्रिकोण बनावै उनमें पूर्व त्रिशूलके मध्य में वर्तमान दिन नक्षत्र लिखै, उसके पीछे त्रिशूलमें, त्रिशूलके बाहिर और त्रिशूल के मध्य में फिर मध्यमें फिर बाहिर फिर त्रिशूल में फिर बाहिर इसी प्रकार क्रम से सर्वत्र त्रिशूलों के बाहिर मध्य में सब नक्षत्रों को अभिजित् सहित २८ लिखै; नक्षत्र जिस स्थान पर नाम नक्षत्र स्थित हो उस स्थानानुसार शुभाशुभ फल कहै । यदि नाम नक्षत्र त्रिशूल पर आवै तब मृत्यु; यदि बाहिर के आठों नक्षत्रों में नाम नक्षत्र आया हो तब मध्यम फल कहना, और जो गर्भ में जन्म नक्षत्र हो तो निः संदेह आयुः, प्रजा, जय, और लाभ, होता है ॥ १–४ ॥

अथ यमदंष्ट्राचक्रम्—

नवोर्ध्वगानि धिष्ण्यानि नव तिर्यग्गतानि च ।
अधोगतानि धिष्ण्यानि नव चैव विनिर्दिशेत् ॥ १ ॥
चतुर्नाडीकृतो वेधो जन्मनक्षत्रयोगतः ।
सर्पाकारञ्च वक्रञ्च कालचक्रं प्रजायते ॥ २ ॥
त्राणि मध्यगतर्क्षाणि तानि कालमुखानि च ।
कोणस्थिते चंद्रधिष्ण्ये तच्च दंष्ट्राद्वयं मतम् ॥ ३ ॥
दिनर्क्षमादितःकृत्वा नामर्क्षं यत्र संस्थितम् ।
मुखदंष्ट्रागते मृत्युःशुभमन्यत्र संस्थिते ॥ ४ ॥
ज्वरे च नष्टदंष्टे च विवादे विग्रहे रणे ।
कालदंष्ट्रास्यगं नाम यस्य तस्य महद्भयम् ॥ ५ ॥

चन्द्रकालानल चक्रम् ।
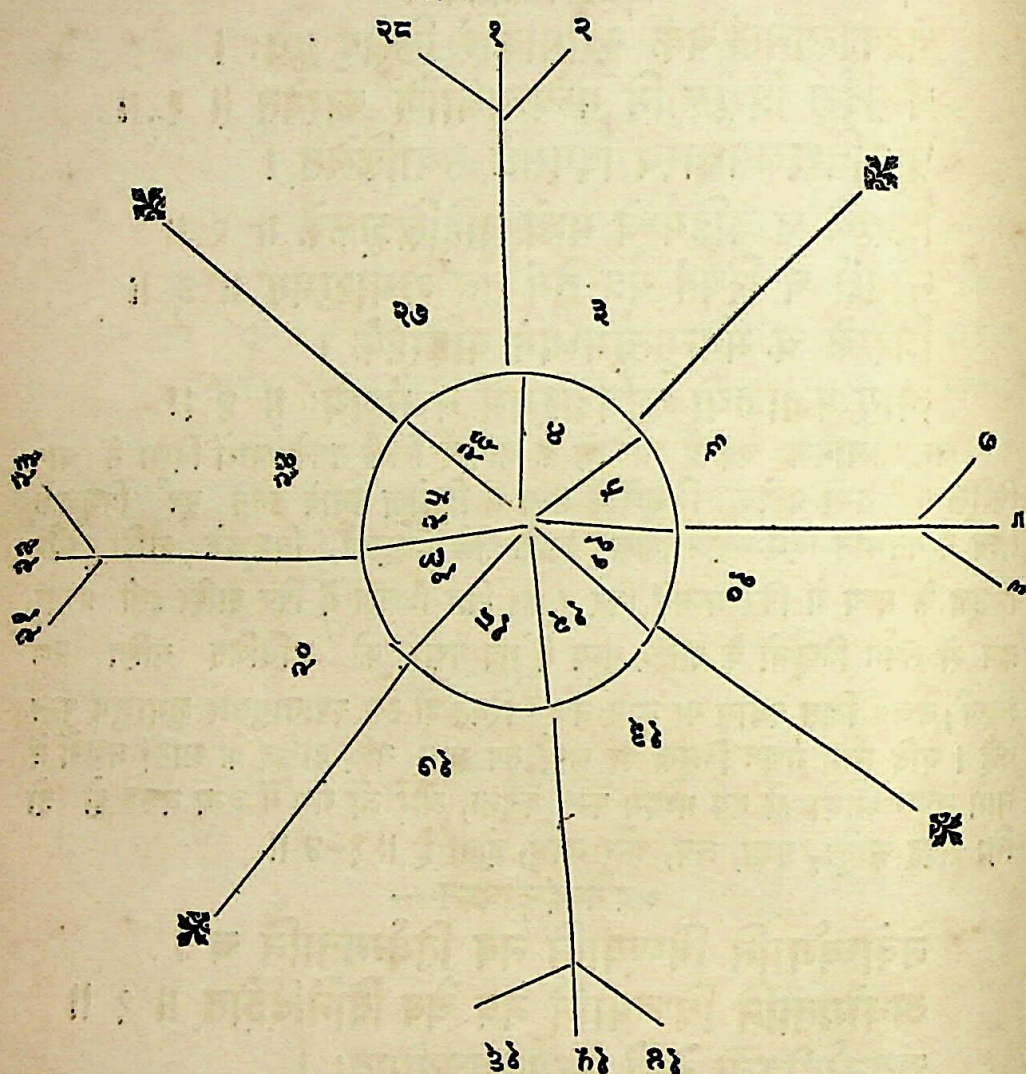
इस यम दंष्ट्राचक्रमें ६ नक्षत्र ऊपर, ६ नक्षत्र तिरछे और ६ नक्षत्र नीचे लिखकर स्थापन करै । इस यमदंष्ट्राचक्रमें जन्म नक्षत्र के योग से चार नाडी (घडी) का किया वेध होता है यह कालचक्र सर्पाकार चक्र होता है । मध्यगत जो तीन नक्षत्र होते हैं वे कालमुख होते हैं, कोण स्थित जो चन्द्राधिष्ठित नक्षत्र होते हैं वे दोनों दंष्ट्रा मानी हैं, वर्तमान दिन नक्षत्र से लेकर जिस जगह नाम नक्षत्र स्थित हो उनका फल कहैं यदि जन्म नक्षत्र मुख या दंष्ट्रा में होवे तब मृत्यु, यदि उक्त स्थानों से अन्यत्र जन्म नक्षत्र हो तब शुभ फल होता है । ज्वर आने में सर्पादि विषयुक्त जीवों के काटने पर विवाद में विग्रह में और रण (युद्ध) में इस चक्रका विचारकरैं तब मुखदंष्ट्रागत जन्मनक्षत्र होने से महद्भयहोताहै ॥१-५

आर्द्राद्यं विलिखेच्चक्रं मृगांतं च त्रिनाडिकम् ।
भुजंगसदृशाकारं मध्ये मूलं प्रतिष्ठितम् ॥ १ ॥
यद्दिने एकनाडीस्थाश्चंद्रनामर्क्षभास्कराः ।
तद्दिनं वर्जयेत्तस्य विवादे विग्रहे रणे ॥ २ ॥
रोगिणो जन्मऋक्षस्य एकनाड्यां यदा शशी ।
तदा पीडां विजानीयादष्टप्राहरिकीं ध्रुवम् ॥ ३ ॥
रोगिणो जन्मऋक्षस्य एकनाड्यां यदा रविः ।
यावदृक्षं भवेद्भोग्यं तावत्पीडां विनिर्दिशेत् ॥ ४ ॥
रोगिणां जन्मऋक्षस्य एकनाड्यां यदा भवेत् ।
जन्मऋक्षं रविश्चंद्रस्तदा मृत्युं समादिशेत् ॥ ५ ॥
जन्मऋक्षं रविश्चंद्रो भवेद्यदि कथंचन ।
अन्यास्वन्यासु नाडीषु तदा नीरोगता भवेत् ॥ ६ ॥

अथ त्रिनाडीचक्रम्---

आर्द्रा नक्षत्र से लेकर मृग शिर पर्यंत इस चक्रको लिखे; यह त्रिनाडी चक्र सर्प के आकार सा लिखे इस चक्र के २७ कोष्ठ होते हैं, इनमें प्रथम कोष्ठमें आर्द्रा और मध्यम कोष्ठमें मूल, और अन्त के कोष्ठ में मृग शिर नक्षत्र को स्थापन करै जिस दिन चन्द्रमा, नाम नक्षत्र, और सूर्य एक नाडी में स्थित हों उस दिन उस मनुष्य को विवाद विग्रह और संग्राम नहीं करने चाहिये, और रोगी का जन्म नक्षत्र और चन्द्रमा एक नाडी में होवें तब उस रोगी को आठ प्रहर की पीडा समझे, और रोगी का जन्म नक्षत्र और सूर्य एक नाडी में होवे तब उस रोगी को उस नक्षत्रको सूर्य भोगेगा तब तक पीडा रहैगी, और जब सूर्य चन्द्र और रोगी का जन्म नक्षत्र तीनों एक नाडी में हों तब उस रोगी की मृत्यु कहै; और चन्द्रमा सूर्य और जन्म नक्षत्र तीनों जब तक पृथक् २ नाडीस्थ रहते हैं तब तक उस मनुष्यको नैरुज्य होता है ॥ १--६ ॥

इति त्रिनाडीचक्रम् ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि चक्रं त्रैलोक्यदीपकम् ।
विख्यातं सर्वतोभद्रं सद्यःप्रत्ययकारकम् ॥ १ ॥
एकवेधे भवेद्युद्धं युग्मवेधे धनक्षयः ।
त्रिवेधेन भवेद्भंगो मृत्युश्चैव चतुर्ग्रहैः ॥ २ ॥
एकादिक्रूरवेधेन फलं पुंसां प्रजायते ।
उद्वेगश्च तथा हानी रोगो मृत्युःक्रमेण च ॥ ३ ॥
भ्रम ऋक्षेऽक्षरे हानिःस्वरे व्याधिर्भयं तिथौ ।
राशिवेधे महाविघ्नं पंचवेधे न जीवति ॥ ४ ॥
अर्कवेधे मनस्तापो द्रव्यहानिस्तु भूसुते ।
रोगपीडाकरः सौरी राहुःकेतुश्च विघ्नदौ ॥ ५ ॥
चंद्रो मिश्रफलं पुंसां रिपुश्चैव तु भार्गवे ।
बुधवेधे भवेत्प्रज्ञा जीवःसर्वफलप्रदः ॥ ६ ॥

अथ सर्वतोभद्रचक्रम्--

अब मैं त्रैलोक्य दीपक चक्रको कहूंगा जिसका नाम सर्वतोभद्र है और वह चक्र सद्यः (तत्काल) प्रतीति कराने वाला,है इस चक्रमें एक ग्रहके वेध होनेसे युद्ध, युग्म ग्रह (दो) के वेध होने से धनका क्षय, तीन ग्रहों के वेध होने से भंग, और चार ग्रहों के वेध होने से मृत्यु होती है इसी तरह एक क्रूर ग्रहके वेध से उद्वेग, दो क्रूर ग्रह वेध से हानि, तीन क्रूर ग्रहों के वेध से रोग, और चार क्रूर ग्रहोंके वेध से मृत्यु होती है और जन्म नक्षत्र के वेधसे भ्रम, नामके प्रथमाक्षर के वेध से हानि, स्वर के वेध से व्याधि, तिथि के वेध से भय, राशिके वेधसे महाविघ्न, और जो पांचों का वेध हो तब अवश्य मृत्यु होती है, सूर्य के वेधसे मनमें ताप, मंगल के वेध होने से द्रव्य हानि, शनिके वेध से रोग जन्य पीडा, और राहु केतु

१—एतत्पद्यानन्तरमेव ढुण्ढिराजेन स्वकीयग्रन्थे--"याम्योत्तराः प्रांगपराश्च कोष्ठा नवात्र चक्रे सुधियाः विधेयाः । स्वरर्क्षवर्णादिकमत्र लेख्यं प्रसिद्धभावाश्च मयानिरुक्तम्"--इत्येतस्मिञ्छ्लोके एतच्चक्रनिर्माणप्रकारोऽपि स्पष्टं प्रदर्शितः किन्त्वत्र विस्तरभीतेर्न निर्माय तल्लिख्यते ।

का वेध विघ्न देने वाला होता है चन्द्रका वेध होने से मिश्र (शुभा शुभ), शुक्र के वेध होने से शत्रु वृद्धि, बुध के वेधसे बुद्धि, और गुरुके वेध होने से सकल शुभ होता है ॥ १–६ ॥

अथादाबुदयो यस्यास्तिथे[1]र्भुक्तिप्रमाणतः ।
बालस्वरादिकप्रश्ने फलं तस्य वदाम्यहम् ॥ १ ॥

अब पंचस्वर के विचार को बताते हैं—जिस तिथिका उदय प्रश्न समय में हो उसी के घड़ी पलोंसे बाल, तरुण आदि स्वरों के प्रश्नमें शुभाशुभ फल कहै ॥ १ ॥

तिथिभुक्तघटीसंख्यां कृत्वा पलमयीं ततः ।
एवंवाणहृते शेषःस्वरस्तत्कालसंभवः ॥ २ ॥

तिथिकी भुक्त घडीओंकी संख्या को पल बनाकर ५ से भाग देकर पश्चात् जो शेष रहे उसे तत्काल संभव स्वरजाने ॥ २ ॥

यमुद्दिश्य कृतःप्रश्नःफलं तस्य वदाम्यहम् ।
यत्र नो दृश्यते किंचित्तत्र प्रश्नं शुभाशुभम् ॥ ३ ॥

जिस उद्देश्य करके प्रश्न किया हो उसका फल कहता हूं और जिस जगह किंचित् भी न दीखै उस जगह प्रश्न शुभा शुभ कहना चाहिये ॥ ३ ॥

बालोदये यदा पृच्छा लाभार्थे स्वल्पलाभदा ।
रुजार्ते चिररोगं च गमे हानिं क्षयं रणे ॥ ४ ॥

यदि कोई बालस्वर में लाभ के विषय में पूछे तो उसको स्वल्प लाभ कहना, रोग के विषय में पूछे तो चिरकाल तक रोग, गमन में हानि, रण में नाश ॥ ४ ॥

कुमारोदयवेलायां लाभो भवति पुष्कलः ।
राज्ये नाशं जयं युद्धे यात्रा सर्वार्थसिद्धिदा ॥ ५ ॥

१—'अतसातत्यगमने' (भ्वा० प०से) इत्यस्माद्धातोः "ऋतन्यञ्जिवन्यञ्ज्यर्पि०"- इत्याद्युणादिणादिसूत्रेण इथिन्प्रत्ययःपृषोदरादित्वादल्लोपः 'इति सुधायां श्रीभानुजि- दीक्षितः, तदाद्यास्तिथयोर्द्वयोरिति नामलिङ्गानुशासनप्रामाण्यात्तिथिशब्दस्य स्त्रीपुंलिङ्गत्वं बोध्यम्, ।

और कुमार स्वर में पुष्कल लाभ होता है, राज्य में नाश, युद्धमें जय; और यात्रा सर्वार्थसिद्धिदा होती है ॥ ५ ॥

युवोदये लभेद्राज्यं क्लेशच्छेदं च तत्क्षणात् ।
संग्रामे शत्रुहन्ता च यात्रायां सफलं भवेत् ॥ ६ ॥

युवा स्वरोदय में राज्य लाभ, और तत् क्षण क्लेश नाश होता है, और संग्राम में शत्रु मारने वाला, और यात्रा में साफल्य होता है ॥ ६ ॥

वृद्धोदये न लाभःस्यात्क्लेशनात्क्लेशवर्द्धनम् ।
संग्रामे भंगमायाति यात्रायां न निवर्तते ॥ ७ ॥

और वृद्ध स्वर से लाभ न हो बल्कि क्लेशों की वृद्धि, संग्राम में भंग, और यात्रा को गया हुआ नहीं लौटे ॥ ७ ॥

मृत्यूदये यदा प्रष्टा पृच्छति स्वप्रयोजनम् ।
तत्सर्वं मृत्युदं ज्ञेयं युद्धे मृत्युःसभंगदः ॥ ८ ॥

मृत्यु स्वर में जिस प्रयोजन से पृच्छक प्रश्न करे तो उसी कारण से उसको मृत्यु हो यह जानना, और युद्ध में मृत्यु तथा भंग देने वाला होता है ॥ ८ ॥

किंचिल्लाभकरो बालःकुमारस्त्वर्द्धलाभदः ।
सर्वासिद्धिं युवा दत्ते वृद्धे हानिर्मृते क्षयः ॥९॥

बालस्वर किंचित् लाभ करता है, कुमार स्वर अर्द्ध लाभदायक होता है, युवा संज्ञक स्वर सर्व सिद्धि देता है, वृद्ध स्वर से हानि, और मृत्यु नामक स्वर से क्षय होता है ॥ ९ ॥

मृत्युर्बालस्तथा वृद्धःकुमारस्तरुणःस्वरः ।
यो यस्य पंचमस्थाने स स्वरो मृत्युदायकः ॥ १० ॥

मृत्यु बाल वृद्ध कुमार और तरुण इन स्वरोंमें से जो जिसके पंचम स्थान में होता है वह स्वर मृत्यु देने वाला होता है ॥ १० ॥

नरनामादिमो वर्णो यस्मात्स्वरादधःस्थितः ।
स स्वरस्तस्य वर्णस्य वर्णस्वर इहोच्यते ॥ ११ ॥

नामके प्रथमाक्षर में जो स्वर हो वही स्वर उस वर्ण का वर्ण स्वर कहाता है।

इति स्वर चक्रम्।

अथ नक्षत्र विचारः।

जन्मभं जन्मनक्षत्रं दशमं कर्मसंज्ञकम्।
एकोनविंशमाधानं त्रयोविंशं विनाशकम् ॥ १ ॥

जिस नक्षत्र में जन्म होता है उसे जन्म नक्षत्र कहते हैं, और जन्म नक्षत्र से दशम नक्षत्र को कर्म कहते हैं, जन्म नक्षत्र से उन्नीस (१९) वें को आधान कहते हैं, तेईस २३ वां विनाशक कहलाता है ॥ १ ॥

अष्टादशं च नक्षत्रं सामुदायिकसंज्ञितम्।
सांघातिकं च विज्ञेयमृक्षं षोडशसंख्यकम् ॥ २ ॥

अठारहवें को सामुदायिक; और १६ वे को सांघातिक कहते हैं ॥ २ ॥

एतेषां पृथक्[१] फलम्—

मृत्युःस्याज्जन्मभे विद्धे कर्मभे क्लेशमेव च।
आधानर्क्षे प्रकाशःस्याद्विनाशे बंधुविग्रहः ॥ ३ ॥

जन्म नक्षत्र के विधने से मृत्यु, कर्म संज्ञक के विधने से क्लेश, आधान नक्षत्र के विधने से बुद्धि प्रकाश, विनाशक के विधने से भाई बन्दों में विग्रह ॥ ३ ॥

सामुदायिकभे विद्धे कष्टं हानिः सुघातिके ॥ ४ ॥

सामुदायिक नक्षत्रके विधने से कष्ट, और सांघातिक नक्षत्रके विधनेसे हानि होतीहै। इन उक्त नक्षत्रों में यात्रा और विवाह आदि मंगल काम वर्जित होते हैं।

अथ रश्मिकरणविधिः—

नीचोनखेटेऽभ्यधिके च षट्काचक्राच्च्युते सप्तहते विभक्तम्।
तर्कैस्तुराश्यादिकमेव लब्धं सूर्यादिकानामिह रश्मिजञ्च ॥ १ ॥

प्रथम तात्कालिक स्पष्ट ग्रह में उसीका परमनीच राशि, अंश घटाना चाहिये,

१—इत उत्तरं पूर्वपाठःपूर्वपुस्तकेषु—
"जातिभे कुलनाशश्च बन्धनञ्चाभिषांकभे।
एतेषु नक्षत्रेषु यात्राविवाहादिमाङ्गल्यकार्यं वर्ज्यम् ॥

अगर छः राशि से ऊपर होय तब बारह १२ में सोधे, पश्चात् शेषको क्रमसे राशि अंश घटी पलों को सात ७ से गुणा करना पश्चात् ६ का भाग देना जो लब्धिहो वे राश्यादि सूर्यादि ग्रहों की रश्मि होंगी इसी प्रकार चन्द्रादि ग्रहोंकी भी गणित से लानी चाहियें ॥ १ ॥ उदाहरण—

जैसे तात्कालिक स्पष्ट सूर्य ७–१–४४–५६ हैं और सूर्य का परम नीच ६-१०-०-० है इन दोनों का अन्तर ७ | १ | ४४ | ५६|–६ | १० | ० | ० |=०—२१—४४—५६ यह छः राशि से न्यून है अतः बारह में घटाने की कोई आवश्यकता नहींहै। अब इसको सात से गुणा किया तो ५--२--१४--५२ हुआ।

इसमें छः का भाग देने के लिये न्यास—

संख्या ५–२–१४-५२

६) ५ (० लब्धि
५×३०
१५०+२
६) १५२ (२५
१२
३२
३०
२×६०+१४
६) १३४ (२२
१२
१४
१२
२×६०+५२
६) १७२ (२८
१२
५२
४८
५ शेष का त्याग

अब क्रमसे सूर्य का रश्मिमान ०|२५|२२|२८ आया इसी प्रकार और शेष ग्रहों का भी जानना चाहिये।

अथ रश्मिसंस्कारःकथ्यते—

स्वोच्चस्थितस्य द्विगुणं निरुक्तम् स्वे द्वादशे मित्रगृहे स्वराशौ।
नृपांशको१६नाःकथितास्तु नीचे शत्रोःपुनश्चेद्विदशांशके च॥
वक्री पुनस्तद्विगुणं ददाति तत्त्यागकालेऽष्टमभागहीनः॥ २॥

यदि ग्रह अपने उच्च स्थान में स्थित हो, वा अपने द्वादशांश में हो, मित्र के घरमें हो, या अपनी राशि में हो तो गणितागत रश्मिमान को दूना करदे तब वही स्पष्ट रश्मि मान होगा; यदि नीच या शत्रु राशि के द्वादशांशमें होय तो सोलहवां हिस्सा हीन करदे। रश्मिपति वक्रारम्भ में होय तो रश्मिमान को दूना करे, वक्री के अन्त में रश्मिपति होय तो आठवां हिस्सा हीन करना चाहिये॥ २॥

अथ रश्मिफलं सारावल्याम्—

एकादिपंच यावद्रश्मिभि रतिदुःखिताः कुलविहीनाः।
पतितादुष्टदरिद्रा नीचरताःसंभवंति नराः॥ १॥

जिनकी जन्मपत्री में सब ग्रहोंके रश्मियोग एक से लेकर पांच तक हों वे मनुष्य अति दुःख पाने वाले, कुलसे हीन, पतित, दुष्ट, दरिद्री, तथा नीच मनुष्यों से स्नेह करने वाले होते हैं॥ १॥

परतो दशकं यावद्भृतकहीना विदेशगमनरताः।
जायन्ते तत्र पराःसौभाग्यपरिच्युता मलिनाः॥ २॥

और जिन्हों के जन्म समय में पांचसे अधिक दशतक रश्मि (किरण) होते हैं वे मनुष्य प्राणियों में अति हीन, प्रदेश जाने में मन रखने वाले, भाग्य से हीन, और सब समय मलिन रहने वाले होते हैं॥ २॥

पंचदशभ्यो जातास्तत्र प्रधानपूज्यरताः।
धर्मारंभाः सुसुखाःकुलतुल्यनराः प्रजायंते॥ ३॥

और जिनकी कुंडली में ग्रहों की किरण दशसे पन्द्रह तक हों तो वे मनुष्य प्रधान तथा पूजनीय जनों में भक्ति रखने वाले; धर्म कर्म में आरम्भ रखने वाले, उत्तम सुख भोगने वाले, और अपने कुलके अनुरूप होते हैं॥ ३॥

आविंशतेःकुलश्रेष्ठो धनवाञ्जन विच्युतः ।
भवेत्कीर्तिकरःशश्वत्स्वजनैःपरिपूरितः ॥ ४ ॥

और जिसके बीस तक किरणें होती हैं वह मनुष्य कुलश्रेष्ठ, धनी, अन्य जनों से वियुक्त, यशस्कर, तथा सर्वदा अपने जनों से युक्त होवे ॥ ४ ॥

पूज्याःसुभगा धीराःकृतिनो वीराश्च शरकृतिं यावत् ।
परतो भवंति मनुजाः संसाराधत्तसकलकरणीयाः ॥५॥

जिनके बीससे २५ तक रश्मियोग ग्रहों का आपडे तो वे मनुष्य सर्वत्र पूज्य; सौन्दर्य युक्त, धैर्यवान्; विद्वान्, और वीर, तथा संसार के सब विभागोंके कार्यों के करने में चतुर (सांसारिक व्यवहारों में चतुर) होते हैं ॥ ५ ॥

अथ उत्तरेण चंडा नृपाश्रिता नृपतिलब्धधनसौख्याः ।
त्रिंशद्यावत्सचिवाःपूज्याश्च भवंति भूतानाम् ॥६॥

और जिसके ग्रहों का रश्मि योग २५ से तीस तक हो वे मनुष्य बडे प्रचंड स्वभाव वाले, तथा राजा से धन और सुख के पाने वाले, एवम् राजमन्त्री और मनुष्यों में पूज्य होते हैं ॥ ६ ॥

एकत्रिंशद्भिरथ प्रचुराःख्याता महीभुजो निपुणाः ।
द्वात्रिंशद्भिःपुरुषाःपंचशतग्रामपतयःस्यु ॥ ७ ॥

और इकत्तीस किरणों के होनेसे अतीव विख्यात, पृथ्वीके भोगने वाले, चतुर, होते हैं; और जिनके बत्तीस किरण होती हैं वे मनुष्य पांचसो ५०० ग्रामों के अधिपति होते हैं ॥ ७ ॥

ग्रामसहस्राधिपतिमधिकात्करोति रश्मीनाम् ।
त्रिसहस्रग्रामाणां पुरुषं सूते चतुस्त्रिंशत् ॥ ८ ॥

और तेतीस किरणों के होने से एक सहस्र से अधिक ग्रामों का आधिपत्य मिलता है, और जिसके चौंतीस किरणें होती हैं तब तीन सहस्र ३००० ग्रामों का आधिपत्य देते हैं ॥ ८ ॥

परतो मंडलभाजो बहुकोशपरिग्रहा महत्सत्त्वाः ।
प्रख्यातकीर्तियशसो भवंति सुभगाश्च लोकानाम् ॥९॥

पैंतीस किरण जिसके जन्म समय हों तब वह मनुष्य मण्डलका भोगने वाला, अनेक कोशों (खजानों) से सम्पन्न, बडा पराक्रमी, और लोकों में विख्यात यश वाला, सौन्दर्य युक्त होता है ॥ ९ ॥

त्रिंशत्षड्भिःसहिता रश्मीनां यस्य जन्मसमये स्यात् ।
सार्द्धं भुनक्ति लक्षं ग्रामाणांस तु पुमान्नियतम् ॥ १० ॥

और जिसके जन्म समय में छत्तीश किरण होती हैं वह मनुष्य एक लक्ष ग्रामों का स्वाम्य करने वाला अवश्य होता है ॥ १० ॥

त्रिंशत्सप्तकसहिता रश्मीनां संचयो भवेदेवम् ।
लक्षत्रितयपतित्वं ग्रामाणां जायते पुंसाम् ॥ ११ ॥

जिसके जन्म समय में सैंतीस ३७ किरण होती हैं वह मनुष्य तीन लाख ग्रामों का स्वामी होता है ॥ ११ ॥

त्रिंशद्वसुभिःसहिता अस्रा येषां भवंति पुरुषाणाम् ।
मुनिसंमतलक्षाणां ग्रामाणां तेऽधिपा ज्ञेयाः ॥ १२ ॥

और जिन मनुष्यों के जन्म समय में अडतीस ३८ किरणें होती हैं वह मनुष्य सात लाख ग्रामों का अधिपति होता है ॥ १२ ॥

त्रिंशत्सनवकसंख्या जन्मनि येषां गृहे स्थिताःसंति ।
तेतोषितसकलजना भवंति पृथिवीश्वराःपुरुषाः ॥ १३ ॥

और जिसके जन्म समय में उन्तालीस किरणें होती हैं वे मनुष्य सम्पूर्ण जनों को सन्तुष्ट करने वाले पृथ्वी के पति होते हैं ॥ १३ ॥

खाब्धिप्रमाणैः किरणैः प्रसूतः क्षोणीपतिस्तद्विजयप्रयाणे ।
भवन्ति सेनागजगर्जितानां प्रतिस्वनाःखे घनगर्जितानि ।१४।

जिसके जन्मांग में ग्रहरश्मि योग ४० होवे, वह बडा प्रतापी राजा होवे, तथा उसकी विजय यात्रा में उसकी फौजके हाथी, घोडों की आवाज की प्रतिध्वनि आकाशमें छाजाय और ऐसी मालूम पडे कि मानों बादलही घोर गर्जना कर रहेहैं।

शशिजलनिधिसंख्यै ४१ रश्मिभिःसूर्यतेजा

जलनिधिसहितायाःपार्थिवःस्यात्सुभूमेः ।
द्विजलधिरसनायाःपक्षबेदाख्यसंख्यै
स्त्रिजलधिरसनाया रामवेदैस्तथैव ॥ १५ ॥

जिसकेजन्म समयमें ग्रह रश्मि योग ४१ हो वहसूर्य तुल्य तेजस्वी, समुद्रमंडला भूमिका पालन करने वाला होता है, और जिसके ब्यालीस किरणों हों वह मनुष्य दो समुद्रों तक की पृथ्वी का राजा, और तेतालीस किरणों होती हैं वह मनुष्य त्रिसमुद्र मंडला भूमिका पति होता है ॥ १५ ॥

वेदाब्धितुल्यैश्च मयूखजालैर्जाता नरेंद्राःखलु सार्वभौमाः ।
सौम्याः सुरब्राह्मणभक्तियुक्ता दीर्घायुषःसत्त्वयुता भवंति ।१६।

और जिनके जन्म समय में चवालीस किरण होती हैं वे मनुष्य चक्रवर्ती राजा, अति सौम्य, देवता तथा ब्राह्मणों के भक्त, दीर्घायु, बलसे युक्त होते हैं ॥ १६ ॥

परतःकिरणैर्द्वीपांतरपालकाःपुरुषसर्वगुणयुक्ताः ।
सर्वनमस्याःसुभगा महेंद्रतुल्यप्रतापाश्च ॥ १७ ॥

४४ से अधिक ४५ किरणों हों तब द्वीपांतरों के पालन करने वाले उत्तम जनों के समस्त गुणों से महाबली सब मनुष्यों से नमस्करणीय, सौभाग्य सम्पन्न और इन्द्रके तुल्य प्रतापी होते हैं ॥ १७ ॥

चत्वारिंशद्युक्ताःकिरणाःषड्भिश्चैवं प्रसूतौ स्युः ।
तस्य स्यात्संदिष्टं सर्वक्षितिपालकं मुक्त्वा ॥ १८ ॥

और जिसके जन्म समय में छयालीस किरण हों उसको सार्वभौम राज्य होता हैं और सब नृपों को छोडकर उसी का हुक्म सर्वत्र बहाल रहता है ॥ १८ ॥

भुवनभरसहिष्णोःसर्वतःक्षीणशत्रो
स्त्रिदशपतिसमस्यसर्वलोकस्तुतस्य ।
विदधति विहगानां रश्मयो जन्मकाले
तुरगकृतिसमानाश्चक्रवर्तित्वमेवम् ॥ १९ ॥

और जिसके सैंतालीस किरणें होती हैं वह मनुष्य समस्त भूलोक के भारका

सहने वाला, शत्रु जनों का मारने वाला, इन्द्र के तुल्य, सब लोकमें यश पाने वाला चक्रवर्ती होता है ॥ १९ ॥

अभिमुखकरप्रवाहैः फलं प्रयच्छंति पुष्टतरमाशु ।
तद्विपरीतं पुंसां पराङ्मुखस्थग्रहेंद्राणाम् ॥ २० ॥

इस प्रकार अधिक किरण होने से पुष्टतर फल होता है, इसी तरह किरण रहित ग्रहों के होने से उक्त फलसे विपरीत फल होते हैं ॥ २० ॥

जन्मसमये ग्रहाणां रश्मीनां संक्षयो भवति ।
वृद्धे वृद्धिर्नूणामेवं मोक्षेऽपि तत्क्रमेणैव ॥ २१ ॥

जन्म समय में ग्रहों की अन्तिम अवस्था होतो किरणों का क्षय और प्रथमावस्था होतो किरणों की वृद्धि होती है यह बात ग्रहों की अवस्थाओं के भेदसे जानना इसका विचार विस्तार से सारावलीमें दिया गया है यहां संक्षेप मात्रमें बताया है ।

अथाग्रे श्रीपतिपद्धत्यनुसारेण चतुर्विंशतिबलानि वर्ण्यन्ते

बलावबोधेन विना दशादिक्रमावबोधो न भवेद्यतोऽतः ।
तत्स्थानदिक्कालनिसर्गचेष्टा-दृग्भेदभिन्नं कथयाम्यशेषम् ॥ १ ॥

विना बलों के जाने दशा आदिकों का क्रमपूर्वक ज्ञान ठीक २ नहीं होता है इस लिये स्थानबल, दिग्बल, कालबल, निसर्गबल चेष्टाबल, आदि चौबीस बलोंको पृथक् २ कहता हूं ॥ १ ॥

तेषां तावत्स्थानबलम्—

स्वोच्चे सुहृद्भे स्वनवांशकेऽपि स्वर्क्षे दृकाणे द्विरसांशकेऽपि ।
कलांशकाद्यंशयुतेऽपि चैवमुपैति तत्स्थानबलं ग्रहेन्द्रः ॥ २ ॥

यदि कोई ग्रह अपने उच्चस्थान में, मित्र घरमें, अपने नवांश में अथवा स्वराशि में, अपने द्रेष्काण में, वा द्वादशांश में स्थित ग्रह स्थानबलको प्राप्त होता है, एवंनिज अंश कला विकला आदि में भी स्थित रहने से वही स्थिति उसकी होती है ॥ २ ॥

अथोच्चबलसाधनम्—

नीचोनद्युचरोऽङ्गभात्समधिकश्चेच्चक्रतः शोधितो-
लिप्तीकृत्य खखाष्टशून्यशशिभिस्संभाजितः स्यात्पुनः ।

सूर्याद्युच्चवलं तदेव भणितं लब्ध्याप्तसंख्या च या-
मिश्रेण त्रिगुणायकेन रचितं पद्यं बटुप्रीतये ॥ ३ ॥

जिस ग्रहका उच्चबल निकालना होय उसी स्पष्ट ग्रह में उसी ग्रह का नीच घटाना चाहिये घटाने के बाद छः राशि से अधिक होय तो उसे १२ में से घटाना चाहिये फिर शेष राश्यादि की कला बनाकर १०८०० से भाग दें तब जो लब्धि कलादि आवें वही उस ग्रह का उच्चबल होगा ॥ ३ ॥

उदाहरण—

जैसे सूर्य स्पष्ट ७-१-४४-५६ है और सूर्य का परम नीच ६-१०-०-० इन दोनों का अन्तर ०-२१-४४-५६ यह अन्तर ६ से कम है सो इस लिये १२ में से घटाने की कोई आवश्यक्ता नहीं है।

अब इसकी कला बनाई ०-२१ × ६०=१२६० + ४४=१३०४।५६ अब इसमें १०८०० का भाग दिया तो लब्धि ०-७-१४ कलादि सूर्य का उच्चबलहुआ। इसी तरह शेष ग्रहोंका भी उच्चबल लाना चाहिये। दूसरी तरह सारणी से भी उच्चबल निकलता है-

१—राशिसारिणी—

१	२	३	४	५	६
... १०	... २०	... ३०	... ४०	... ५०	-१- ...

२—अंशसारिणी—

अं.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
फ.	० २०	० ४०	१ ०	१ २०	१ ४०	२ ०	२ २०	२ ४०	३ ०	३ २०	३ ४०	४ ०	४ २०	४ ४०	५ ०
अं.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
फ.	५ २०	५ ४०	६ ०	६ २०	६ ४०	७ ०	७ २०	७ ४०	८ ०	८ २०	८ ४०	९ ०	९ २०	९ ४०	१० ०

३-कलासारिणी—

क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
फ.	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६
	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
क.	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
फ.	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०
क.	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
फ.	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०
	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

मूलत्रिकोणे विषयाऽधयः स्युः, स्वर्क्षे रदाः,
सार्धकराक्षिसंख्याः—। मित्रेऽधिके, पञ्चदश
स्वमित्रे, समे सखण्डा गिरिमानतुल्याः ॥ ४ ॥
अंऽध्यूनवेदाश्च रिपौ, तथाधि—शत्रौ कलैका
विकला द्विवाणाः दैवज्ञवर्यैर्गणितागमज्ञैः
प्रोक्तं वलं जन्मिशुभाशुभार्थम् ॥ ५ ॥

टि० १—केशव दैवज्ञेनाऽप्युक्तं स्वग्रन्थे तथाहि—
स्वर्क्षेऽर्धे समभेऽष्टमस्त्रिचरणा मूलत्रिकोणे वलम् ।
मित्रर्क्षेऽग्निरधीष्टभे त्रय इभांशा वैरिभेऽब्धयं १६ शको ॥
दन्तां शोध्यरिभे गृहाधिप वशात्खेटस्य सप्तैक्यजम् ॥ " के० प्र०
' अष्ट्यंशकः अष्टिशब्दतः षोडशानां वोधः अष्टिश्छन्दसां षोडशाक्षरत्वात् "
पूर्वपुस्तकेष्वेतत्सप्तवर्ग वलमान वोधकः पद्यं ना सीत् इति बालाववोधार्थं निर्मायसंरचितम्

जो ग्रह अपने मूल त्रिकोण में स्थित होवे उसका बल ४५ कला, और जो स्वराशि में हो उसका ३२ कला बल, तथा अपने अधिमित्र में जो ग्रह हो उसका साढे बाईस (२२ । ३०) अर्थात् २२ कला ३० विकला, मित्र गृही हो तो १५ कला बल, समगृही का साढे सात अर्थात् ७ कला ३० विकला, शत्रु स्थानस्थग्रह का पौने चार यानी ३ कला ४५ विकला बल, एवं अधिशत्रु के घर में रहने से १ कला ५२ विकला बल जानना चाहिये ॥ ४–५ ॥

स्पष्टप्रतिपत्त्यर्थं मूलत्रिकोणादिसप्तवर्गबलचक्रम्—

मूलत्रिकोण	स्वक्षेत्र	अधिमित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधिशत्रु	स्थान
४५	३२	२२	१५	७	३	१	बल (कला)
००	००	३०	००	३०	४५	५२	बल (विकला)

अथ केंद्रपणफरापोक्लिमबलमाह—

कंटकाद्युपगतेषु निधेया रूप १ कार्द्ध ३० चरणा १५ निजवीर्यें ।१।

यदि ग्रह केन्द्र (१-४-७-१०) में हो तो पूरा एक और जो ग्रह पणफर (२-५-८-११) स्थान में होवे तो अर्ध बल ३० देता है, और जो आपोक्लिम (३-६-९-१२) घरमें ग्रह होवे तो वह ग्रहका चतुर्थांश बल १५ देता है ॥ १ ॥

अथ भांशबलमाह—

भांतमध्यमुखगेषु च पादःस्त्रीनपुंसकनरेषु निधेयः ॥ १ ॥

यदि स्त्री ग्रह (चन्द्र शुक्र) किसी भी राशि में २० अंश के उपरान्त स्थित हों अर्थात् तीसरे द्रेष्काण में होंय, और नपुंसक ग्रह (बुध, शनैश्चर,) दूसरे द्रेष्काण में होंय; पुरुष ग्रह (गुरु, सूर्य, भौम;) पहिले द्रेष्काण में होंय तो, चतुर्थांश अर्थात् १५ बल होता है । यदि इस तरह नहीं होंयतो शून्यबल जानना ।

अथ दिग्बलसाधनम्—

स्थानवीर्यमिदमेवमिहोक्तं दिग्बलं तु शृणु पूर्वदिशातः ।

विद्गुरू रविकुजौ रविसूनुःशुक्रशीतकिरणौ बलिनौ स्तः॥१॥

ग्रन्थकार कहते हैं कि हमने यह स्थान बल कहा है अब क्रम से दिग्बल कहता हूं पूर्व में बुध गुरु, दक्षिण में सूर्य मंगल, पश्चिम में शनि, और उत्तर में शुक्र चन्द्र, क्रमसे पूर्वादि दिग्बली होते हैं ॥ १ ॥

यह जन्म कुण्डली में देखना चाहिये जैसे चारों केन्द्रों का क्रम से लग्न स्थान पूर्व दिशा, चतुर्थ उत्तर, सप्तम पश्चिम, दशम दक्षिण दिशा होती है अतः इसी के अनुसार लग्न में बुध गुरु, चतुर्थ में शुक्र चन्द्र, ७ में शनि, १० रवि भौम जानने ॥

अथ दिग्बलनिःसारणप्रकारः—

अर्कात्कुजात्स्वांबुगृहं विशोध्य जीवाद्बुधाच्चापि कलत्रभावम्।
मेषूरणं भार्गवचंद्रमोभ्यां प्राग्लग्नमुष्णांशुजतोऽवशेषम् ॥१॥

स्पष्ट सूर्य और मंगल में चतुर्थ भाव को; गुरु बुधमें सप्तम भाव को; और शुक्र चन्द्रमा में दशम भावको और शनिमें लग्न को शुद्ध करै ॥ १ ॥

षड्भाधिकश्चेद्गुरुणा विशोध्यं लिप्तीकृतं खाभ्रगजाभ्रभूमिः।
१०८०० भजेत्तदाप्तं हि ककुद्बलं स्यादतःपरं कालबलं गदामि

शुद्ध करके पश्चात् जो शेष६ से अधिक होवे तो १२ में से घटाना चाहिये फिर उसकी कला बना कर १०८०० का भाग देने पर जो लब्धि आवै वह दिग्बल होगा

उदाहरण।

जैसे स्पष्ट सूर्य ७-१-४४-५६ है और चतुर्थभाव १-१-४४-५६ है इन दोनों का अन्तर ६-०-०-० इसको १२ में से घटाने से भी यही शेष रहता है। इसकी कला बनाई तो १०८०० हुई उनमें १०८०० भाग दिया तो लब्धि १-०-० बस यही सूर्य का दिग्बल हुआ। इसी प्रकार शेष ग्रहों का भी दिग्बल लाना चाहिये । इस जगह भी पूर्वोक्त सारणियों से ही दिग्बल का काम निकल आता है। अर्थात् अन्तर की राश्यादि राशि सारिणी से, अंश सारिणी से अंश, कलासारिणी से कलाबल अर्थात् सभी का ठीक २ आजायगा। फिर उन्हीं सारिणीयों को दुबारा यहां रखने की कोई आवश्यकता नहीं है इस लिये नहीं बनाईं हैं वहीं ही देखलें ॥

अथ कालबल नतोन्नतबलमाह—

नक्तं बला भौमशशांकमंदा गुर्वर्कशुक्रा दिननक्तपाःस्युः।
सौम्याः सदा वासरनक्तभाजो ग्राह्यो बुधैरुन्नतसंज्ञकालः॥१॥

नतस्त्वमी वीर्यवतो पलीकृताःखखाष्टचंद्रै१८००र्विहृतो बलंभवेत्
बुधस्य रात्रौ च दिवा च रूपं विधेयमेतत्समयोद्भवं बलम् ।२।

मंगल, चन्द्रमा, और शनि, तीनों ग्रह रात्रिवली, गुरु, सूर्य, और शुक्र, यह तीनों दिवावली और बुध, दिन रात्रिवली है अर्थात् सदैव वली होता है इनके नतबल और उन्नत वल करने के लिये इष्टकी जितनी घड़ी होंय उनके पल बनावे तदनन्तर १८०० का भाग देवे जो लब्धि आवै वह नतवल होगा और यही क्रिया उन्नत बल लाने में है जो ग्रहरात्रि वली होवे उस ग्रहके बलको नतसे करे और जो ग्रह दिन बली होवे उसके वलको उन्नत से करे और बुधका हमेशा रूप (१) बल माना गया है । यहां पर यह जरूर समझना चाहिये कि रात्रि वली ग्रहों का बलनत से एवं दिन बलीयों का बल उन्नत से लावे ॥ १–२ ॥

उदाहरण ।

जैसे किसी इष्टके नत घटी पल ७–२७ हैं अब इनके पल बनाये ७×६०+२७= ४४७ हुये अब इसमें १८०० से भाग दिया तो पहिले स्थान पर शून्य आया शेष ४४७ को ६० से गुणा किया तो २६८२० फिर १८०० से भाग दिया तो लब्धि १४ आई फिर ६०से गुणा किया ९७२०० इसमें १८०० से फिर भाग दिया लब्धि ५४ आई बस यही क्रम से ०–१४–५४ लब्धि हुई यही नतवल हुआ इसी तरह उन्नत से भी गणित करना चाहिये ।

अथ पक्षबलप्रकारः——

त्र्यर्कःशशी षड्भवनाधिकश्चेच्चक्राद्विशोध्योऽथ कलीकृतोऽसौ।
चक्रार्द्धलिप्ता१०८००विहृतो बलक्षपक्षे बलं स्यादथ कृष्णपक्षे॥
तदेव रूपाच्च्युतमेव कृत्वा नगुर्बुधाःपक्षबलं ग्रहाणाम् ।
बलक्षपक्षे शुभखेचराणां पापग्रहाणामसिते च पक्षे ॥ २ ॥

तात्कालिक स्पष्ट चन्द्रमा में स्पष्ट सूर्य को घटावे यदि वह अन्तर छः राशिसे अधिक होवे तब उसे १२ में शुद्ध करै, तदनन्तर जो शेष हो उसे कला बनाकर १८०० भाग दे जो अंक लब्ध आवे उसे शुक्ल पक्ष में पक्षवल जानना यदि कृष्ण पक्ष में लाना हो तो उसे १ में से हीन करे तो कृष्णपक्ष का पक्ष बल होगा इसमें ये समझना कि शुभ ग्रहोंका वल शुक्लपक्ष में और पाप ग्रहों का बल कृष्णपक्षमें होता यही विद्वान् जन कहते हैं ॥ २ ॥

उदाहरण ।

जैसे स्पष्ट सूर्य ८–१–४४–५६ है और चन्द्रमा ६–२६–४१–५२ है दोनोंका अन्तर

०--५--३--७ (यह छः राशि से कम होने के कारण १२ में से घटाने की कोई आवश्यकता नहीं है) अब इस की कला बनाई तो ५×६०+३=३०३ इसमें १८०० का भाग दिया तो लब्धि ०-१०-६ आई यह शुक्लपक्ष का पक्षबल हुआ। इसी को शुभ ग्रहोंका भी जानना चाहिये, इसही को १ में घटाने पर १--०।१०।६।=०।१६।५४ यह अन्तर रूप कृष्ण पक्षमें पाप ग्रहों का पक्षबल हुआ। यह बल भी पूर्वोक्त सारिणीयों से ही निकल आता है अतएव विस्तार भय से पुनः सारिणियां नहीं दिखाई हैं।

अथ दिनरात्रिबलम्--

अन्हि त्रिभागेषु बलं क्रमेण सौम्यार्कितिग्मांशुनभोगतानाम्।
रात्रौ तुषारांशुसितासृजाञ्च रूपं सदैवामरपूजितस्य ॥ २ ॥

बुध, शनि सूर्य का दिनमें त्रिभाग बलरूप(१)होता है और चन्द्र शुक्र मंगल का रात्रि त्रिभागरूपबल(१)होताहै और वृहस्पतिका सदैव त्रिभाग बलरूप[१]होताहै, प्रयोजन इसका यह है कि यदि दिनमें जन्म होवे तो दिनमान को स्थापन कर तीनका भाग देवे लब्धि के तीन खण्ड करे यदि प्रथम त्रिभागमें इष्ट होवे तो बुध का १ बलले, और द्वितीय तृतीयांशका जन्म होवे तब शनि का बलरूप (१) कला, और जो दिनके तृतीय तृतीयांशका जन्म होवे तो सूर्य का बल लेना चाहिये, यदि रात्रि के समय का इष्ट हो तो रात्रिमानके समान तीन भाग करे; पूर्वोक्तानुसार फिर तीनों खण्डों में क्रम से चन्द्रमा, शुक्र, तथा मंगल का एक २ बल ग्रहण करना चाहिये, किन्तु गुरु का सर्वकाल [दिन-रात्रि) में पूर्ण एक बल लेना चाहिये ॥ २ ॥

उदाहरण।

जैसे किसी के जन्म समय में दिनमान २६--४६ है और इष्टकाल १३--२३ है अब दिन मान का तीसरा हिस्सा ८--५५--२० हुआ। इससे विदित होता है कि इष्टकाल दिन मान के द्वितीय भाग में है इस लिये शनि का पूरा एक बल आया, और वृहस्पति का भी बल एक ही आया, और शेष ग्रहों का शून्य बल आया।

अथ वर्षपतिबलम् तत्रादौवर्षाधिपानयनम्--

शश्यश्विभव११२१विहीनो द्युगणः खरसाग्नि३६०भाजितस्त्रिघ्नः
सैकः सप्तविभक्तः सावनवर्षाधिपोऽर्कादिः ॥ १ ॥

जन्मदिनके अहर्गण में ११२१ को घटावें, पश्चात् शेष को ३ से गुणा करके उसमें ३६० का भाग देवें जो लब्धांक सिद्ध होवे उसमें १ और मिलावे, फिर उसमें

सात ७ का भाग देवे, जो शेष रहें वह सावन वर्ष का स्वामी सूर्यादि होता है ॥१॥

उदाहरण ।

जैसे अहर्गण २७४१९२ है इसमें ११२१ घटाये तो शेष २७३०७१ इसको ३ से गुणा किया तो ८१९२१३ इसमें ३६० का भाग दिया तो लब्धि २२७५ इनकी आवश्यक्ता नहीं है शेष २१३ बचे १ और युक्त किया तो २१४ हुआ, इसमें ७ का भाग दिया तो शेष ४ रहे इस लिये बुध ही वर्षेश हुआ, और चतुर्थांश (१५) बल आया शेष ग्रहों का शून्य बल माना है ।

अथ मासपतिबलम्—

शशिमुनि ७१ हीनः खचरस्त्रिंशद्भक्तः फलं द्विगुणम् ।
सैकं सप्तविभक्तं सावनमासाधिपोऽर्कादिः ॥ १ ॥

मासेश जानने के लिये जन्म दिनके अहर्गणको स्थापन कर ७१ को घटावै, फिर शेष को दूना करे फिर ३०से भाग दें फिर शेष में एक अंक और जोड़े तदनन्तर उस सिद्धांक में सातका भाग देवे, पीछे लब्ध्यङ्कको छोडकर जो शेष रहै उसे सूर्यादि मासाधिप जानैं ॥ १ ॥

उदाहरण ।

जैसे अहर्गण २७४१९२ में ७१ घटाये शेष २७४१२१ इसको दूना किया तो ५४८२४२ हुए । ३० से भाग दिया तो लब्धि १८२७४ (अनपेक्षितहै) शेष २२ में १ और युक्त किया तो २३ इसमें ७ का भाग दिया तो शेष २ रहे बस यह ही चन्द्रमा मासपति और इसका बल आधा आया (३०) शेष ग्रहों का पूर्ववत् शून्य बल है ।

अथ सूर्यसिद्धान्तादयनादिबलसाधनार्थं ज्याखण्डान्याह—

तत्त्वाश्विनो २२५ऽङ्काब्धिकृता ४४९ रूपभूमिधरर्त्तवः ६७१ ।
खांकाष्टौ ८९० पंचशून्येशाः ११०५ बाणरूपगुणेंदवः १३१५ ॥
शून्यलोचनपंचैका १५२० श्छिद्ररूपमुनींदवः १७१९ ।
वियच्चंद्रातिधृतयो १९१० गुणरंध्रखलोचनाः २०९३ ॥
मुनिषड्यमनेत्राणि २२६७ चंद्रत्रियुगलोचनाः २४३१ ।
पंचाष्टविषयाक्षीणि २५८५ कुंजराश्विनगाश्विनः २७२८ ॥
रंध्रपंचाष्टकयमा २८५० वस्वद्र्यंकयमास्ततः २९७८ ।

कृताष्टशून्यज्वलना ३०८४ नागाद्रिशशिवन्हयः ३१७८ ॥
षट्पंचलोचनगुणा ३२५६ श्चंद्रनेत्राग्निवह्नयः ३३२१ ।
यमाद्रिवह्निज्वलना ३३७२ रंध्रशून्यार्णवाग्नयः ३४०८ ॥
रूपाग्निसागरगुणा ३४३१ वसुत्रिकृतवन्हयः ३४३८ ।
प्रोज्झयोत्क्रमेण व्यासार्द्धादुत्क्रमज्यार्द्धपिंडकाः ॥ ४ ॥

जिस ग्रहकी क्रान्ति बनानी होय, उसमें अयनांश युक्त करे इसके बाद यदि राश्यंक तीन से ज्यादह होय तो तीन का भाग देना। यदि कम होय तो वह ही भुज जानना फिर उसकी कला बनाकर २२५ का भाग दे, लब्धि गतसंज्ञकखंड जाने भाग देने पर जो शेष है उसको गत और ऐष्य खंडों के अन्तर से गुणा करें फिर इसमें भी २२५ का भाग दें फिर जो लब्धि आवे वह गत खण्ड में जोडने से तत्कालीन स्पष्ट ग्रहकी दोर्ज्या होगी। इसी तरह सायन सूर्य के राश्यादि तीन से ज्यादह होय तो ६ राशि में घटाने से भुज होता है ॥ ४ ॥

उदाहरण ।

जैसे स्पष्ट सूर्य ७--१--४४--५६ है और अयनांश २३--३० है। इस लिये सायन सूर्य ७--२५--१४--५६ हुआ इसमें से ६ राशि घटाई तो १--२५--१४--५६ हुआ, इसकी कला (१×३०+२५)=५५×६०+१४=३३१४।५६ इसमें २२५ का भाग दिया तो लब्धि १४ यह गत खण्ड सं० २७२८ और ऐष्यखण्ड सं० २८५० सारिणीके अनुसार से अब शेष १६४ को गतैष्य खण्डान्तर (२८५०--२७२८=१२२) से गुणा किया तो २०००८ फिर २२५ से भाग दिया तो लब्धि ८८ शेष को छोड दिया। इसे गत खण्ड २७२८ में युक्त किया तो २८१६ योगफल हुआ, यह ही स्पष्ट दोर्ज्या हुई इसी तरह और दूसरे उदाहरण से दोर्ज्या लाना चाहिये।

अथेष्टक्रान्त्यानयनम् सूर्य सिद्धान्ते—

परमापक्रमज्यात्स सप्तरन्ध्रगुणेन्दवः ।
तद्गुणज्या त्रिजीवाप्ता तच्चापं क्रान्तिरुच्यते ॥

पूर्वोक्त गणितानुसार उस ग्रह की दोर्ज्या बनावे, फिर उसको परमापक्रमज्या १३९७ से स्पष्ट दोर्ज्या को गुणाकर त्रिज्या ३४३८का भागदे इससे जो फल प्राप्त हो उसे क्रान्तिज्या कहते हैं। और उसी जीवा पर से बिलोम रीति से चाप करे वह ही क्रान्ति होती है।

उदाहरण ।

जैसे स्पष्ट दोर्ज्या २८१६ है इसको परमक्रान्ति ज्या १३९७ से गुणा किया तो ३९३३९५२हुआ इसमेंत्रिज्या३४३८का भागदिया तो लब्धि ११४४आई यहही क्रान्ति ज्याहै, अब इससे चाप निकालने की क्रिया इस तरह है कि इसमें पांचमा खण्ड ११०५ घट सकै है अतः इसे घटाया तो शेष ११४४--११०५=३९ रहा (छटा १३१५ ऐष्य हुआ) शेष को २२५ से गुणा ८७७५ इसमें यातैष्यान्तर (१३१५-११०५=२१०) से भाग दिया तो लब्धि ४१ इसको गत खण्ड ११०५ में जोडा तो ११४६ यह ही क्रान्ति हुई ॥

स्पष्टार्थं ज्यार्धपिण्ड सारिणी—

सं०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
खण्ड	२२५	४४९	६७१	८९०	११०५	१३१५	१५२९	१७१९	१९१०	२०९३	२२६७	२४३१
अन्तर	२२४	२२२	२१९	२१५	२१०	२०५	१९९	१९१	१८३	१७४	१६४	१५४
सं०	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
खण्ड	२५८५	२७२८	२८५०	२९७८	३०८४	३१७८	३२५६	३३२१	३३७२	३४०९	३४३१	३४३८
अन्तर	१४३	१३१	१२०	१०६	९३	७९	६५	५१	३६	२३	७	००

अथ अयनवलंक्षयं चन्द्रचेष्टावलेञ्चोच्यते—

क्रांतिः सौम्या स्वमिह परमापक्रमे दक्षिणार्णं
शुक्रादित्यक्षितिसुतमरुत्पूजितानां विधेया ।
व्यस्ता शीतद्युतिरविजयोस्तस्य नित्यं विधेया
चान्द्रेश्चैवं तदनु परमापक्रमेणाभ्युपेता ॥ १५ ॥
ग्राह्यं राशिप्रभृति च फलं तत्कलीभूतमेत-
द्व्योमाकाशद्विरदखकुभि १०८०० र्भाजयदायनं स्यात् ।

द्विघ्नं भानोरयनजबलं पक्षवीर्यंतथेन्दो
युद्धेबाणान्तरसुविहतं खेटवीर्यांतरं हि ॥ १६ ॥

अयनबल करने का ये प्रकार है कि जो शुक्र, सूर्य, मंगल, और बृहस्पति, इन ग्रहोंकी उत्तर क्रांति होवे तब परमापक्रममें युक्त करै, और जो शुक्र, मंगल,गुरु, सूर्य इनकी दक्षिण क्रांति होवे तब परमापक्रम में ऋण करै, जो शनि और चन्द्रमा की उत्तरक्रांति होवे तौ ऋण करै, और जो दक्षिण क्रांति होवे तौ धन करै, और बुधको सदा धनही करै। फिर संस्कृत क्रांति के राश्यादि की कलाबनाकर १०८०० का भाग दे तो अयन बल होगा। सूर्य का अयन बल और चेष्टा बल दोनों बराबर ही होता है। इस लिये सूर्य के अयन बलको दूना करै तब सूर्यका चेष्टा बल होता है, और चन्द्रमा का जो पक्ष बल होवे उसके दूने करने से चन्द्रमा का चेष्टा बल होता है॥ यदि जन्म काल में कुजादि ग्रहों का युद्ध हो तो दोनों ग्रहों का बलान्तर करना फिर उसमें दोनों के शरान्तर से भाग देने पर युद्ध बल होगा। और जो ग्रह उत्तर दिशा में पडे उसके बल में धन (जोड) करे और दक्षिण दिशा के ग्रह के बल को हीनकरे तो स्पष्ट बल होगा, क्योंकि उत्तर दिशा का ग्रह हमेशा विजयी होता है इस लिये वह अधिक बली होता है॥ १६ ॥

कुजादिचेष्टाबलकथनम्

मध्यस्पष्टद्युचरविवरार्धेन युक्तं चलोच्चं-
चेष्टाकेन्द्रं भगणपतितं षड्गृहेभ्योऽधिकं चेत्।
लिप्ताः कृत्वा खखगजखभूभि र्भजेल्लब्धिमानम्
चेष्टावीर्यं तदिह गदितं होरिकैर्बुद्धिमद्भिः॥ १ ॥

मंगल आदि जिस ग्रहका चेष्टाबल करै उस ग्रहका सवीर्य बल मध्यम स्थापन कर फिर ग्रहको तात्कालिक स्थापन करना तदनन्तर अपने २ मध्यमका और तात्कालिक स्पष्टकाअन्तर करना जिसमें जो घटसके उसको उसीमें घटाना,जो शेषरहै उसको आधा करै, फिर निजशीघ्रोच्च में युक्त करना तो चेष्टा बल होगा यदि यह केन्द्र ६ राशि से अधिक होवे तब १२ में शोधकर शेषकी कला बनाकर फिर १०८०० का भाग देवे उसकी जो लब्धि होवे वही [१]चेष्टाबल त्रिस्थानिक रूप होता है॥

१—यहां पर पूर्वोक्त राशि, अंश, कला सारिणीयों से चेष्टाबल निकल आता है अतः वार २ लिखना उचित न समझ कर सारिणी नहीं लिखी हैं।

अथ नैसर्गिक बलमाह—

मंदावनीसूनुशशांकपुत्रवागीशशुक्रेन्दुदिवाकराणाम् ।
एकोत्तरं रूपनगैर्विभक्तं नैसर्गिकं वीर्यमुदाहरंति ॥ १ ॥

शनि; मंगल, बुध, गुरु, शुक्र; चन्द्रमा, और सूर्य, इन ग्रहोंका अंक एकसे लेकर १-२-३-४-५-६-७इस तरह क्रमसे सात जगह स्थापनकरना, इसतरहफिर उन प्रत्येकको सातसे भागदेने पर जो फलस्वरूपहो उसे ही नैसर्गिक वीर्य कहतेहैं इस तरह सब ग्रहोंका बल होगा जैसे शनि का $\frac{१}{७}$, भौम का $\frac{२}{७}$; बुधका $\frac{३}{७}$, गुरुका $\frac{४}{७}$, शुक्रका $\frac{५}{७}$, रविकाचंद्रका $\frac{७}{७}$

इससे स्पष्ट है कि शनि के बल को २ से ३ से ४ से इत्यादि क्रम से गुणते जाओ तो कुजादि गूहों का यही नैसर्गिक बल यथार्थ होजायगा ।

अथ दृष्टिबलम्—

उक्तानि यस्माद्बहुधा फलानि व्योमौकसां दृष्टिसमुद्भवानि ।
तस्मात्प्रवच्म्यानयनं हि दृष्टेर्होराविदां दृक्फलनिर्णयार्थम् ॥१॥

जातक शास्त्र जानने वाले विद्वानोंने ग्रहोंकी दृष्टि वशसे बहुतसे फलोंको कहा है अतः होरा शास्त्रके जानने वालोंके लिये दृष्टि फलके निर्णयार्थ दृष्टिके आनयन को कहता हूं ॥ १ ॥

खैकाग्निद्विखवेदरामयमभूखाभ्राभ्रमेकादिभे
द्रष्ट्रा वर्जितदृश्यकस्य गुरुणा चेदष्टवेदे कृताः ।
मन्देनाङ्कयमेऽसृजा नगगुणेऽका भादिजाः संस्कृता
भागघ्नक्षयवृद्धिखानललवेनाऽध्युधृता दृग् भवेत् ॥ २ ॥

देखने वाला गूह द्रष्टा और जिस गूहको देखा जाय वह दृश्य कहलाता है. अब जिस गूहकी दृष्टि लानी हो वह द्रष्टा, और जिसके ऊपर दृष्टि देखना हैं वह दृश्य होता है । दृश्य गूह में द्रष्टाको घटाकर राश्यादि लावे; यदि राशि के स्थान पर एक शेष रहे तो शून्य (०) और दो रहै तो एक (१) तीन रहें तो (३) चार रहें तो (२) पांच रहें तो (०) छः रहें तो (४) सात रहें तो

१–पद्यमिदं केशवीयप्रकाशस्य बोध्यम् ।

(३) आठ रहें तो (२) नौ रहें तो (१) इसी तरह दश, ग्यारह, बारह; रहे तो शून्य राश्यंक होते हैं, फिर अंशादि जो शेष रहे उसको गत और ऐष्य के अन्तर से गुणाकर ३० का भाग देना फिर जो लब्धि आवे वह गत से ऐष्य के ज्यादा होने पर गत में जोड दें, तथा गत से ऐष्य के थोडे रहने से आई भई लब्धि राश्यंक में घटादें तो दृष्टि बल होगा। किन्तु चरणबल लानेके लिये इसमें ४ का भाग देना चाहिये, इस तरह से दृष्टिबल ठीक आजायगा ॥ २ ॥

दृष्टि राश्यङ्क चक्रम्—

राशि.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
चरणांक.	०	१	३	२	०	४	४	२	१	०	०	०

भाव बलम्—

भावानां बलमीशजं च नृचतुःपादाख्यकीटाम्बुजा
जायाम्बाद्यखभोनिताः खलु ततो दिग्वीर्यवत्तद्युत्तम् ।
तद्दृष्टयङ्घ्रियुगुग्रदृष्टिचरणोनं ज्ञेज्यदृग्युक्पुनः ॥१॥

अब पहिले पृथक् २ तीन तरह के बल कहे जाते हैं भावेशबल, दिग्बल; दृग्बल, जिनमें प्रथम का जानना। उस भावके स्वामी का जो बल हो। दूसरा यदि वह राशि मनुष्य राशि होय तो उसमें सप्तम भावको घटावे, चतुष्पद संज्ञक होय तो चतुर्थ भावको हीन करे, कीट राशि होय तो पहिले भावको घटावे, इसी तरह जलचर राशि होय तो दशम भावको हीन करके अन्तर जानना चाहिये। फिर उसीसे पूर्वोक्त प्रकार से बल लावें, किन्तु यहां पर इतना विशेष है कि यदि अन्तर ६ से अधिक होय तो १२ में घटाकर (षड्भाल्प) बनाकर शेष क्रिया करें, फिर वह ही द्वितीय (दिग्बल) होगा; पीछे इस बलको प्रथम बल (भावेश बल) में युक्त करदें; और उस भाव पर जिन २ शुभ ग्रहों की दृष्टि पहुंचती होय उनके बल योग की चौथाई को भी युक्त करदें, उसी तरह जिन जिन पाप ग्रहों की दृष्टि उस भाव के ऊपर पडती होय तो उनके बलयोग की चौथाई घटादें। यदि बुध गुरु करके

१—पद्यमिदं केशवीय प्रकाशस्य।

वह भाव देखा जाता हो तो उनके संपूर्ण बल (दृष्टिज) भी युक्त करदें तब त्रिकल संस्कार किया हुआ स्पष्ट भाव बल होता है ॥

अथाष्टकवर्गज्ञानम्—

सूर्यःसौरिश्च जीवश्च शुक्रो भौमो बुधस्तथा ।
चन्द्रो लग्नं क्रमात्स्थाप्या अष्टवर्गे बुधैर्ग्रहाः ॥ १ ॥

अष्टक वर्ग चक्र में क्रम से प्रथम सूर्य २ शनि ३ बृहस्पति ४ शुक्र ५ मंगल ६ बुध, ७ चन्द्रमा और लग्न सहित सब ग्रहों को स्थापन करना चाहिये जिस ग्रहकी रेखा या विंदु स्थापन करना चाहै उसी ग्रहका विचार करै जो ग्रह जिस लग्न में बैठा होवे उसी कोष्टकसे लेकर पठित शुभस्थानोंमें रेखा सीधी (जैसे अधोलिखित चक्र में स्पष्ट हैं) स्थापन करें, फिर जिनस्थानों में रेखा नहीं होय वहां अशुभ विन्दु रखना चाहिये जैसा कि नीचे चक्र में है।

अथैकस्मिन्नुदाहरणे सूर्यरेखा विन्दुनिवेशचक्रम्—

भावाः	सू.	श.	बृ.	शु.	मं.	बु.	चं.	ल.	रेखा. योग	विन्दुयोग.
५ सू. मं.	1	1	०	०	1	1	०	1	५	३
६ गु. बु. चं.	1	1	०	1	1	०	०	1	५	३
७ ल शु. के.	०	1	०	०	०	०	०	०	१	७
८	1	1	०	०	1	1	1	०	५	३
९	०	०	०	०	०	०	०	1	१	७
१० श.	०	1	1	०	०	1	०	1	४	४
११	1	1	1	०	1	1	1	०	६	२
१२	1	०	०	1	1	०	०	1	४	४
१ रा.	1	1	०	1	1	०	०	०	४	४
२	1	०	1	०	1	1	०	०	४	४
३	1	०	०	०	1	1	1	०	४	४
४	०	1	1	०	०	1	1	1	५	३

अथ रेखाबिंदुचक्राणिम्—

सूर्याष्टकरेखा ४८ दिन ३ घटी ४५	चंद्राष्टकरेखा ४९ घ. १२ विकला ४९	जीवाष्टकमा. १ दि १८ घ५४ प ५६ रे.५६	शुक्राष्टकरेखा ५।२ दिन ३ घ।५ प.५१
सूर्यात् १२४७८४।.।।। सौरात् १२४७८४।.।।। जीवात् ५६९११ शुक्रात् १०६७१२ भामात्१२४७१०११८४ बुधात् ३५६८१०१११२ चंद्रात् ३९१०११ लग्नात् ३४६१०१११२	चंद्रात् १३६७१।११ सूर्यात् ३६७८१०११ सौरात् ३५६११ जीवात् १४७८१.११ शुक्रात् ३४'१७४० भौमात् २३५६८११ बुधात् १३४५७८१ लग्नात् ३६१०११	जीवा.१२३४७८१०११ सूर्या.१२३४७८९१.११ सौरा. ३५६१२ शुक्रा. २५६९१. ११ भौमा. १२४७८१.११ बुधा.१२४५६९१.११ चंद्रा, १५७८११ लग्ना, १२४५६७१०११	शु. १२३४५८४१.११ सू. ८१११२ सौ. ३४५८९१०११ जी. ५८९१०११ भौ. ३५६८१११२ बु. ३५६९११ चं.१२३४५८९१११ ल. १२३४५८९१
भौमाष्टकदि ५ घ. ३ विप ३९ रेखा ४०	बुधाष्टक घ. दि३घ टी १७ रेषा ५४	शन्यष्टकवर्गरेखा ३९मा.३ दि, २२घ, २२	लग्नाष्टकवर्ग रेखा ३९
भौमात् १६४७८१११ सूर्यात् ३५९१७११ सौरात् १४७८९१.११ जीवात् ६१०१११२ शुक्रात् ६८१११२ बुधात् ३५८११ चंद्रात् ३६१०११ लग्नात् १३६१.०११	बुधा.१२५९४१.१११२ सूर्या. ५६९१०१२ सौरा. १२४७८८१.११ जीवा.६८१११२ शुक्रा.१२३४७८४।.१ भौमा१२४७८८१०११ चंद्रा. २४८८१०११ लग्नात्१२४६८१०११	सौरा, ३५६११ सूर्या, १२४७८१.११ जीवा. ५९१११२ शुक्रा. ६१११२ भोमा.३५६१०१११२ बुधा. ६८९१११२ चंद्रा. ३६११ लग्ना. ३९१०१११२	लग्ना. १४५७९१ सूर्या. ३६१०११ सौरा. ३६१०११ जीवा. १४५७९१० भौमा. ३६१०११ बुधा. १४५७९१० चंद्रा. ३६११ शुक्रा. ३७८१२

अथाष्टकवर्गफलम् प्रथमं रविरेखाफलम्—

वर्त्तते रविरेखा च शत्रूणां च पराजयम् ।
सहसा सिद्धिरेवात्र भावजेयमुपस्थिता ॥ १ ॥

यदि जिस भाव से उत्पन्न हुई सूर्य की रेखा विद्यमान होय तो शत्रु जनों का पराजय, और सहसा सिद्धि होती है ॥ १ ॥

अथ सूर्यबिंदुफलम्

बिंदुः सकष्टफलदो महाव्यसनकारकः ।

रोगशोकप्रदाता च नृपोद्वेगमकारणात् ॥ २ ॥

सूर्य को बिन्दु कष्टों के सहित फल देने वाला, महा व्यसन करने वाला, रोग शोकको देनेवाला और विना कारण राजा द्वारा उद्वेग देनेवाला होता है ॥ २ ॥

* अथ चन्द्ररेखाफलम् *

ददाति शशिरेखा च वस्त्राभरणभूषणम् ।
लभते प्रभुसन्मानं कर्मप्राप्तिमिवांबरम् ॥ १ ॥

मनुष्यको चंद्रमा की रेखा वस्त्रभूषण, भोजन, प्रभु से सन्मान, और अकस्मात् उत्तम कर्म की प्राप्ति को कराती है ॥ १ ॥

* अथ चन्द्रविंदु फलम् *

विंदुःकष्टफलं चैवं कलहं वैरिभिः सह ।
दुःस्वप्नदर्शनं नित्यं धननाशमवाप्नुयात् ॥ २ ॥

और चंद्रमाकी जो बिन्दु होती हैं वह उस मनुष्य को कष्टरूप फल, वैरिजनों से कलह, नित्य दुःस्वप्नदर्शन और उसके धन का नाश करती हैं ॥ २ ॥

अथ भौमरेखाफलम्—

ददाति भौमजा रेखा अर्थप्राप्तिं सदैव हि ।
आरोग्यमायुर्वृद्धिञ्च कायकांतिं प्रदापयेत् ॥ २ ॥

मंगल की रेखा मनुष्य को सदैव अर्थ की प्राप्ति, आरोग्य, आयुष्यकी वृद्धि, और शरीर में कांति देती हैं ॥ २ ॥

* भौम विंदुफलम् *

विंदुस्तस्य फलं शश्वदुदराग्निरुजस्सदा ।
शिरःशूलं प्रजायेत रक्तपित्तरुजा भवेत् ॥ १ ॥

और मंगल की बिन्दु से हमेशा जठराग्निका रोग, शिर में शूल, रक्त पित्त का रोग, मनुष्य को होता है ॥ १ ॥

अथ बुधरेखाफलम्—

बुधस्य रेखया सौख्यं मिष्टान्नं लभते सदा ।
दानधर्मरतश्चैव द्विजदेवाग्निपूजकः ॥ १ ॥

बुध की रेखा होने से मनुष्य को सुख मिष्टान्नभोजन प्राप्त होता है और वह मनुष्यदान धर्म में निरत, और द्विज, देव, अग्नि का पूजन करने वाला होताहै ॥१॥

बुधबिंदुफलम्—

विंदुर्भंगप्रदश्चैव कलहं वैरिभिःसह ।
दुःस्वप्नदर्शनं नित्यमवेलाभोजनं तथा ॥ २ ॥

और बुधका जो बिंदु होवे तब मनुष्यको भंग देनेवाला, वैरिजनों से कलह, दुःस्वप्नदर्शन, और नित्य असमय में भोजन देता है ॥ २ ॥

अथ गुरुरेखाफलम् ।

रेखा जैवी जनयति सदा वित्तसौख्यादिपुष्टिं
जायाभोगं जनयतितरां शत्रुहन्त्री च नित्यम् ।
मानोत्साहौ विभवमतुलं वस्त्रहेमादिवृद्धिं
प्राप्यं सौख्यं सकलमतुलं बंधुवर्गोपहारम् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यकी कुंडली में गुरुरेखा हो उस मनुष्य को धन सुख आदि की पुष्टि, स्त्रीसे संभोग प्राप्त हो और वह मनुष्य नित्य शत्रुजनों का मारनेवाला, मान उत्साह से युक्त, अतुल विभवयुक्त, वस्त्रसुवर्ण सुखसंपादक, और अपने बंधुवर्ग में पूजा पानेवाला होता है ॥ १ ॥　　गुरुबिंदुफलम्—

विंदुःकष्टं विगतधनधीर्मानसे वित्तचिंतां
मार्गे भंगं जनयति सदा पातनं वाहनाद्वा ।
लोकादिष्टं भवति कलहं वाङ्मयेनापमानं
शत्रुद्वेषं व्ययमपि सदा साहसात्कार्यहानिः ॥ २ ॥

और जिसके गुरु का बिंदु होवे वह मनुष्य कष्टयुक्त, धन तथा बुद्धि से हीन, मनमें धन की चिंता लगीरहे, मार्ग में दुःख, वाहन से पात, सर्वत्र कलह, वाणी-निमित्त अपमान, शत्रुजनोंसे द्वेषके कारण व्यय (खरच) होता रहे और साहससे कार्य हानि को प्राप्त होता है ॥ २ ॥

अथ शुक्ररेखाफलम्

शौक्री रेखा जनयति नरं राज्यसन्मानवृद्धिं
कन्यालाभं सुसुखवपुषं दीर्घमायुश्च धत्ते ।

कैश्चित्क्रीडा भवति बहुधा ज्ञानमेकार्थसिद्धिं
लक्ष्मीलाभं जनयति सुखं सौख्यसंपत्तिवृद्धिम् ॥ १ ॥

शुक्र की रेखा मनुष्य को राज्य, तथा सन्मान की वृद्धि, कन्या का लाभ, सुखयुक्त शरीर, दीर्घायु, कितनेऊ आदमियों के साथ खेल में लगा रहे, अनेक बातों के ज्ञान हो एकार्थ की सिद्धि; लक्ष्मी का लाभ, और सुखसंपत्ति की वृद्धि प्राप्ति करती है ॥ १ ॥

शुक्रबिन्दुफलम्—

विंदुःकष्टं भवति हि रिपोर्वित्तनाशप्रदाता
जायापीडा कलहमतुलं भूमिनाशं च कष्टम् ।
बुद्धिभ्रंशं व्ययमपि सदा पातनं वाजिभिर्वा
मार्गे भंगं जनयति सदा सर्वकालं जनानाम् ॥ २ ॥

और जिसकी कुंडली में शुक्र की बिंदु होती है उस मनुष्य को शत्रु से कष्ट धननाश स्त्री को पीडा, बहुत लडाई झगडा, भूमिका नाश, बुद्धि का नाश, सदा अत्यंत खरच, घोडे से पतन, और रास्ता में हमेशा चोट फैंटका डर रहा करे ॥२॥

अथ शनिरेखाफलम्—

सौरी रेखा जनयति फलं मृत्युहेत्वर्थसंपत्
कार्ये प्राप्तिं नृपतिसचिवं साधुसंपर्कदात्री ।
भूमिप्राप्तिं कितवजयिता स्नानदानार्चनेषु
मिष्टान्नं स्यान्नृपतिवरदं धान्यसस्येषु वृद्धिः ॥ १ ॥

जिसकी कुंडली में शनि की रेखा होती है उस मनुष्य की सारी संपत्ति उसकी मौतका कारण होवे, सब काम में धन प्राप्ति, राजा का मंत्री, सतपुरुषों से संबंध, भूमि की प्राप्ति, कपटी मनुष्यों में विजय, स्नान दान पूजन में निष्ठा राजाश्रय से मिष्टान्न भोजन, और खेती विषय तथा अन्नविषय में वृद्धि करती है॥१॥

शनिबिन्दुफलम्—

विंदुःकष्टं नृपतिभयदो बंधुपीडाविवृद्ध्यै
धातोःशस्त्रैर्विषमपतितैर्वित्तसंहारकर्ता ।
चित्तोद्वेगो भवति बहुधा भूमिनाशः कलिर्वा

बुद्धिभ्रंशो भवति च सदा वाहने हानिरेव ॥ २ ॥

और जिसकी कुंडली में शनि का बिंदु हो तो उस मनुष्य को कष्ट, राजा से भय, बंधुजनों में पीड़ा की वृद्धि, धातुनिमित्त, शस्त्र और विषयमपात से धनका नाश, चित्त में उद्वेग, भूमिको नाश, कलह, बुद्धिका भ्रंश, और वाहन विषय में हानि करता है ॥ २ ॥

अथ सर्वाष्टकवर्गकरणविधिः

प्रथम जिस लग्न का जन्म होवे वह लग्न स्थापन करै पश्चात् बारह कोठों में अनुक्रमसे द्वितीयादि सब लग्नोंको लिखकर जन्माङ्क चक्र लिखे पश्चात् अष्टकवर्गकी आठों कुंडलीओं में जो कि पूर्वोक्तरीत्यनुसार बनी हों उनमें से प्रत्येक लग्नकी पृथक् २ रेखा बिन्दुओं को एक साथ जोड़कर फिर उन सब रेखा और बिन्दुओं को यथा क्रम से जन्मांगचक्रमें अपने २ भाव स्थान कोष्टक में लिखे अर्थात् जिस लग्न की जितनी रेखा बिन्दु हों उस लग्न की उतनी ही रेखा और बिंदु लिखै, फिर जन्म जिस सम्वत् में हुआ हो उसे लग्न में रखकर दूसरी लग्न में आगे को संवत् तीसरे लग्न में तीसरा इत्यादि क्रम से रक्खे पश्चात् क्रम से जन्म वर्ष से लेकर जितनी वर्ष आयु की जन्म काल से बीती हों उतनी ही वर्ष अनुक्रम से लिखै इस तरह करने से १२ वर्ष से जन्न-कुण्डली पूरी हो जायगी अतः योगिनी महादशा चक्रानुसार यहां भी द्वितीयादि आवृत्तिसे लग्न से लेकर वर्षों का सन्निवेश हो जायगा पश्चात् विचार करै कि जिस वर्ष में अधिक बिंदु आई हों उन उन वर्षों में कष्ट, और जिन जिन वर्षों में जितनी रेखा अधिक हों उन उन वर्षों में अधिक सुख प्राप्त होता है।

अथ सर्वाष्टकवर्गरेखाफलम्—

मरणं चतुर्दशभिःसक्रूरैःपंचदशभिर्वा ।
षोडशभिरंगपीडा भवति शरीरे महाव्याधिः ॥ १ ॥

क्रूर ग्रहों की चौदह या पन्द्रह रेखा होने से मरण, षोडश से अंगपीडा शरीर में महाव्याधि होती हैं ॥ १ ॥

सप्तदशभिर्दुःखमष्टादशभिर्धनक्षयःप्रोक्तः ।

बांधवपीडा बह्वी भवति तथैकोनविंशत्या ॥ २ ॥

और १७ रेखा होने से दुःख, १८ से धननाश, और १६ से अत्यन्त करके भाई बन्धु जनों में पीडा होती है ॥ २ ॥

व्ययकलहो विंशतिभिर्गदो दुःखं तथैकविंशत्या ।
कुमतिर्द्वाविंशतिभिर्दैन्यं च पराभवो विफलम् ॥ ३ ॥

बीस रेखा होने से खरच और कलह, २१ से रोग और दुःख, २२ से बुद्धि विगड़ जाय, दैन्य और निष्फलता तथा पराभव प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

नूनं त्रिवर्गहानिर्भवति नराणां त्रिविंशतिभिर्नित्यम् ।
द्रव्यक्षयस्त्वकस्माद्विंशतिभिश्चतुर्भिरधिकाभिः ॥ ४ ॥

और तेईस रेखाओं के होने से मनुष्यको धर्मार्थ कामकी हानि, और २४ से अकस्मात् द्रव्यका क्षय होता है ॥ ४ ॥

करतलगतमपि च धनं नश्यति नराणां पंचविंशतिभिः ।
षड्विंशतिभिःक्लेशःसमता स्यात्सप्तविंशतिभिः ॥ ५ ॥

और पचीस रेखाओं के होने से हाथ में आये हुए भी धनका नाश, और २६ से क्लेश होता है, और सत्ताईस से मनुष्य को दुःख सुखकी समता होतीहै। ५।

अष्टाधिकविंशत्या द्रव्यागमनं यथासुखं भवति ।
एकोनत्रिंशतिभिर्लोकेषु नरःपूज्यतामेति ॥ ६ ॥

अट्ठाईस रेखाओं के होने से सुखसे द्रव्य का लाभ, और उन्तीश से मनुष्य लोकों में पूज्यता को प्राप्त होता है ॥ ६ ॥

मानं सुकृतव्याप्तिस्त्रिंशत्या नास्ति संदेहमानम् ।
सुकृतिं सौख्यं नृणामेकाभिराधिकाभिःस्यात् ॥ ७ ॥

और जिसकी कुण्डली में तीश रेखा होती हैं उस मनुष्यका निःसंदेह मान और सुकृतकी प्राप्ति, और ३१ रेखाओं के होने से सुकृत और सुख प्राप्त होता है॥

राज्यादिफलप्राप्तिःकथिता शरक्षतिं यावत् ॥ ८ ॥

इसके उपरान्त ३१ से अधिक ४५ रेखा हो तो राज्यादिक फल प्राप्ति आदि उत्तरोत्तर अधिक फल मनुष्यको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

मतांरेण रेखाणां फलम्--

कष्टं स्याच्चैकरेखायां द्वाभ्यामर्थक्षयो भवेत् ।
त्रिभिः क्लेशं विजानीयाच्चतुर्भिःसमता मता ॥ १ ॥

एक रेखाके होने से कष्ट, दो से धन नाश, तीन से क्लेश, और चार से दुःख सुखकी समता होती है ॥ १ ॥

पंचभिःक्षेममारोग्यं षड्भिरर्थागमो भवेत् ।
सप्तभिःपरमानंदमष्टाभिःसर्वकामदम् ॥ २ ॥

पांचसे कल्याण और आरोग्य; छः से अर्थागम, सातसे परमानन्द; और आठ से सर्व काम मनुष्यको प्राप्त होते हैं ॥ २ ॥

रेखास्थाने तु संप्राप्ते यदा पापशुभग्रहाः ।
शुभास्ते च विजानी याद्बिंदुस्थाने च दुःखदाः ॥ ३ ॥

रेखा के स्थानों में यदि पाप या शुभ ग्रह हों तो सब के सब शुभ फल देने वाले होते हैं, और बिंदुस्थानों में शुभ या पाप ग्रह हों वे सब दुःख देने वाले होते हैं ॥ ३ ॥

शुभा च कथिता रेखा बिंदुश्च कथितःशुभः ।
समे समफलं ज्ञेयं गोचरे यदि नांतरम् ॥ ४ ॥

रेखाधिक्य से शुभ और बिंदुओं के आधिक्य से अशुभ फल होता है और रेखाबिंदुका साम्य समफल देता है, परन्तु यदि गोचरमें अन्तर न होवे तब ॥ ४ ॥

यदि संस्थितरेखायां फलं पुंसां प्रजायते ।
लक्ष्मीभोगस्तथा सौख्यं सार्वभौमजनेशता ॥ ५ ॥

जो विद्यमान रेखाओं का फल पुरुषको होवे तब लक्ष्मी भोग, सुख और सार्वभौम (चक्रवर्ती) राजा होता है ॥ ५ ॥

यदि संस्थितविन्दूनां फलं पुंसां प्रजायते ।

उद्वेगो हानी रोगश्च मृत्युश्चास्य क्रमेण च ॥ ६ ॥

और जो मनुष्यको बिंदुओं का यथावत् फल प्राप्त होवे तब उद्वेग, हानि रोग और मृत्यु क्रम से प्राप्त होते हैं ॥ ६ ॥

यो ग्रहो गोचरे श्रेष्ठस्त्वष्टवर्गेषु मध्यमः ।
अधमस्तु दशायां हि स ग्रहो ह्यधमाधमः ॥ ७ ॥

जो ग्रह गोचर में श्रेष्ठहो, और अष्टवर्ग में मध्यम, और अपनी दशामें अधम हो वह ग्रह ज्योतिःशास्त्र के विचार से अधमाधम अत्यन्त (खराब)होता है ॥७॥

अथायुरानयनम् तत्र प्रथमं श्रीपतिपद्धत्त्यनुसारेणपिंडायुरानयनम्—

नंदेंदवो बाणयमाः शरक्ष्मा दिवाकराः पंचभुवः कुपक्षाः ।
नखाश्च भास्वत्प्रमुखग्रहाणां पिंडायुषोऽब्दा निजतुंगगानाम्॥१॥

अपने अपने उच्चको प्राप्त होने वाले सूर्यादि ग्रहों की पिंडायुके वर्ष १६।२५। १५।१२।१५।२१।२० क्रम से होते हैं अर्थात् सूर्य की पिंडायु १६ वर्ष की, चन्द्रमाकी २५ वर्षकी; मंगलकी १५ वर्ष की; बुधकी १२ वर्ष की, बृहस्पतिकी १५ वर्ष की, शुक्रकी २१ वर्ष की, और शनिकी २० वर्षकी होती हैं ॥ १ ॥

निजोच्चशुद्धःखचरो विशोध्यो भमण्डलात्षड्भवनोनकश्चेत् ।
यथास्थितःषड्भवनाधिकश्चेल्लिप्तीकृतःसंगुणितो निजाब्दैः ॥२॥

जिस ग्रह की पिण्डायु निकालनी होय तो उसे स्पष्ट करके उसमें उसी का उच्च घटादे यदि वह शेष ६ राशि से कम होय तो उसे १२ में से घटावे, शेष यदि छः राशि से अधिक होवे तब उसे यथास्थित रक्खे १२ में से घटाने की कोई जरूरत नहीं है, फिर इसकी कला बना कर अपने (उस ग्रह के ध्रुवांक) वर्षों से गुणा करै ॥ २ ॥

तत्र खाभ्ररसचंद्रलोचनै २१६०० रुद्धृते सति यदाप्यते फलम् ।
वर्षमासदिननाडिकादिकं तद्धि पिंडभवमायुरुच्यते ॥ ३ ॥

तदनन्तर २१६०० से भाग देवे जो लब्धि होवे वह क्रमसे वर्ष मास, दिन, घडी, पल, क्रम से इष्ट कालिक उस ग्रह का पिंडायु होती है ॥ ३ ॥

उदाहरण ।

जैसे स्पष्ट सूर्य ७-१-४४-५६ उसका उच्च ०-१०.०-० घटाया तो शेष ६-२१-४४-५६ (यह ६ राशि से अधिक होने के कारण १२ में घटाने की आवश्यकता नहीं है) अब इसकी कला बनाईं १२१०४ | ५६ अब इसको सूर्य के ध्रुवांक १६ से गुणा किया गुणन फल २२९९७६ हुआ, इसमें २१६०० का भाग देने के लिये न्यास—

```
२१६०० ) २२६६७६ ( १०—वर्ष
        २१६००
        १३६७६
        × १२
२१६०० ) १६७७१२ ( ७—मास
        १५१२००
        १६५१२
        ×३०
२१६०० ) ४६५३६० ( २२—दिन
        ४३२००
        ६३३६०
        ४३२००
        २०१६०
        ×६०
२१६०० ) १२०६६०० ( ५६ घ०
        १०८०००
        १२६६००
        १२६६००
```

लाघव के लिये भाज्य के दूसरे अवयव छोड़ दिये हैं, इस तरह भाग देने पर वर्षादि लब्धि क्रम से १०-७-२२-५६ आई यह सूर्य का आयुर्मान आया इसी तरह शेष ग्रहों का भी लाना चाहिये ।

ये धर्मकर्मनिरता विजितेंद्रिया ये
ये पथ्यभोजनरता द्विजदेवभक्ताः ।
लोके नरा दधति ये कुलशीललीला-
स्तेषामिदं कथितमायुरुदारधीभिः ॥ १ ॥

यहां अनेक प्रकारकी आयु निकाली है, परन्तु वे ही मनुष्य संपूर्णायु हो सक्ते हैं कि जो धर्म कर्म में निरत, इन्द्रियों के जीतने वाले, पथ्य भोजन करने वाले, देवता ब्राह्मणों के भक्त, और जो कुलानुसार आचार को धारण करतेहैं उनके लिये ही यह आयु उदार बुद्धिवाले मनुष्यों ने कही है ॥ १ ॥

ये पापलुब्धाश्चौराश्च देवब्राह्मणनिंदकाः ।
परदाररता ये च ह्यकाले मरणं भवेत् ॥ २ ॥

और जो मनुष्य पाप में रत रहैं, लोभी, चोरी करने वाले, देवता, तथा ब्राह्मणोंकी निंदा करने वाले, और परस्त्रीओं से गमन करने वाले हैं, उनका अवश्य अकाल मरण होता है। अर्थात् उनके वास्ते यह आयु नहीं है ॥ २ ॥

अथ नैसर्गिकायुः—

अंशोद्भवं लग्नबलात्प्रसाध्यमायुश्च कर्मोद्भवमर्कवीर्यात् ।
नैसर्गिकं चन्द्रवलाधिकत्वादायुर्निरुक्तं हि मया विचार्य ॥ ३ ॥

इस प्रकरणमें कई प्रकारकी आयु बताई गईहैं उनमें से कौनसी किस स्थिति में लेनी चाहिये इसका विचार करते हैं कि जन्म कुण्डली में लग्नका बल पूर्ण होवे तो अंशायुलेनी चाहिये, और जो सूर्य केबली होतो पिंडायुलेनीचहिये इसीतरहचन्द्रमा के वलाधिक्य से नैसर्गिक (स्वभावसिद्ध) आयु लेनी चाहिये, ये मैं (ग्रन्थकार) ने खूब विचार कर निश्चय करके कहा है इसलिये आयु विचार के समय पहिले सबसे बली कौन है यह देखकरतब उसी के अनुसार आयु का निर्णय करना चाहिये ॥

विंशति रेकं द्वावथ नवधृतिर्विंशच्च पंचाशत् ।
अब्दाःक्रमशो ज्ञेयाः सूर्यादीनां निसर्गभवाः ॥ १ ॥

नैसर्गिक आयु के सूर्यादि ग्रहों के ध्रुवांक क्रम से इस तरह हैं जैसे सूर्यका २० चन्द्र १ मंगल २ बुधका ६ गुरु १८ शुक्र २० शनि ५० माने गये हैं ॥१॥

जिस ग्रह की नैसर्गिक आयु लानी हो उस स्पष्ट ग्रहमें उसीका उच्च राश्यादि हीन करे, फिर शेष यदि ६ राशिसे कम होय तो पूर्ववत् वारह में इसे घटाकर शेष

१—तथाचोक्तं वराहमिहिरेण—
" एकं द्वौ नव विंशतिर्धृतिकृती पञ्चाशदेषां क्रमा-
च्चंद्रारेन्दुजशुक्रजीवदिनकृद्दैवाकरीणां समाः इति "

रखना यदि ६ से अधिक होय तो वैसाही रखना चाहिये, फिर ग्रह के अपने ध्रुवांकसे शेष को गुणाकर गुणनफलमें १२ का भाग देकर लब्धि वर्षादि[वर्ष, मास दिन घड़ी, पल,] निकालना चाहिये इस तरह नैसर्गिक आयु होगी ॥

उदाहरण।

जैसे स्पष्ट सूर्य ७-१-४४-५६ है और उसका उच्च ०-१०-०-० है तब उच्च घटाने से शेष ६-२१-४४-५६ इसे ६ राशि से अधिक होने के कारण १२ में घटाने की आवश्यकता नहीं है। अब इसे सूर्य ध्रुवांक २० से गुणा दिया तो गुणनफल १३४-१४-५६-४० हुआ इसमें १२ से भाग दिया तो लब्धि ११ ३-९ (अर्थात् ११ वर्ष ३ महीना ९ दिन ५८ घडी) यह नैसर्गिक आयु सूर्य का हुआ, इसी तरह और ग्रहों का लाना चाहिये।

अथ अंशायुरानयनम्—

लवादयो ग्रहाःस्थाप्यास्तत्रांशे दिग् १० विहीनता।
शेषं त्रयं त्रिभिर्गुण्यं खाङ्कमध्ये पुनस्त्यजेत् ॥
विंशोत्तरीदशावर्षैःस्वकीयैर्गुणयेत्सदा।
भागो नवति ९० दातव्यो लब्धांको वर्ष संज्ञकः ॥ २ ॥

जिस ग्रहकी अंशायु करनी होवे तो उस इष्ट कालिक राश्यादि स्पष्ट ग्रहकी राशिको छोडकर अंश कला विकला स्थापन करै तदनन्तर अंशांकों में १० घटावे फिर शेष राश्यादि तीनों अंकों को तीनसे गुणा करना फिर उनको ९० में घटाना तब जो शेष रहे उसे उसी ग्रहके दशामान वर्षांकसे गुणा करना, फिर उसमें नव्वे ९० का भाग देने पर जो लब्धि आवे वह ही उस ग्रहकी अंशायु होगी ॥

उदाहरण।

जैसे स्पष्ट चन्द्र ६-२६-४१-५२ इसमें से राशि को छोड़कर अंशादि २६-४१-५२ रहा जिनमें १० अंश घटाये शेष १६-४१-५२ इसको ३ से गुणा किया तो ५०-५-३६ और ९० में से घटाया तो शेष ३९-५४-२४ रहा इसे चन्द्र विंशोत्तरी महादशावर्ष १० से गुणा दिया तो गुणनफल ३९९-४-० आया ९० का भाग दिया तो लब्धि ४-२६-२ आई यह ही चन्द्र की अंशायु हुई इसी तरह सूर्यादि शेष ग्रहों का जानना चाहिये।

अथ लघुजातकाद्ग्रहायुः कथ्यते—

राश्यंशकला गुणिता द्वादशनवभिर्ग्रहस्य भगणेभ्यः।
द्वादशहतावशेषेऽब्दमासदिननाडिकाःक्रमशः" ॥

इष्ट कालिक ग्रहके राश्यादिको पहिले बारह १२से फिर ९ से अथवा एकहीबार

*१०८से गुणा करे तब गुणन फल जो होवे उसे मासादि जानना फिर उनमें बारह १२ से भाग दे लब्धिको छोड़कर शेष वर्ष उस ग्रहकी ग्रहायु होगी। किंतु इतना ध्यान रहे कि वर्षकी जगह १२से कम आना चाहिये यदि १२ से ज्यादह आवै तो उसमें १२ का भाग देना चाहिये ॥ १ ॥

उदाहरण।

जैसे स्पष्ट सूर्य ७-१-४४-५६ इसको एक ही बार १०८ से गुणा किया तो ७६२-८-५८-१२ यह गुणनफल हुआ, इसमें १२ से भाग दिया तो लब्धि ६३ यह अनपेक्षित है किन्तु शेष ६-६-२८-१२ (बारह से कम होने के कारण १२ से भाग देने की जरूरत नहीं है) यह ही सूर्य की ग्रहायु हुई, इसी तरह शेष ग्रहों का भी साधन करना चाहिये।

अथ लग्नायुर्दायो लघुजातकात्—

होरादायोऽप्येवं बलयुक्ताऽन्यानि राशितुल्यानि ।
वर्षाणि संप्रयच्छंत्यनुपाताच्चांशकादिफलम् ॥ १ ॥

अब लग्नायुर्दाय[1] कहते हैं—कि जिस प्रकार ग्रहों के आयु कहे गये हैं उसी प्रकार होरायु (लग्न के आयु) लाने चाहियें, यदि लग्न बलवान् होवे तो राशि तुल्य वर्ष देगा, अर्थात् लग्न के जितने नवांश बीत चुके हों उतने वर्ष जाने। फिर इसके आगे अनुपात (त्रैराशिक गणित) से अंशादि फल लावे, लग्न की राशियों को छोडकर भागादिकों से कला बनावे और फिर उस कला समूह को १२ से गुणाकर १८०० से भाग देने से लब्धि जो आवे वही मास हैं, और उस मास शेष को ३० से गुणाकर १८०० से का भाग देने से लब्धि जो होवे वह

*—अत्र हितायां भट्टोत्पलः—तात्कालिकग्रहस्य राश्यंशकलाविकला द्वादशभिर्गुणितास्ततो नवभिर्गुणिता एव मष्टाधिकशतेन गुणिताः कार्याः इत्यादिप्रोक्तवान्, अष्टाधिक शतेन गुणनन्तु लाघवार्थं विज्ञेयम्, द्वादशभिर्नवभिश्च गुणने प्रक्रियागौरवं भवति इति प्रक्रिया लाघवार्थैवाष्टाधिक शतेनैकवारं गुणनं विधेयम्।

१—एतस्मिन् सूत्रे-हितायां भट्टोत्पलोऽप्येवमेवाह-तथाहि—

"लग्नस्य राशीनपास्य भागादिलिप्तापिण्डः कार्यः तल्लिप्तापिण्डं द्वादशभिः संगुण्य अष्टादशभिश्शतैर्विभज्यावाप्तं मासाः, मासशेषं त्रिंशता संगुण्य अष्टादशशत-विभागेन लब्धदिवसाः, दिनशेषं षष्टिगुणितं कृत्वा अष्टादशशतैर्लब्धं घटिकाः कार्याः, घटिकाशेषं षष्टिगुणं कार्यम्, अष्टादशशतैर्लब्धं पलानि, एव मनुपातेन लब्धो मासादिर्लग्नस्यायुर्दायोज्ञेयः" इति।

दिन जानें, और दिन शेष को ६० से गुणाकर १८०० भाग देने पर लब्धि को घडी जानों, और घटिका शेपको ६० से गुणाकर १८०० का भाग देने से लब्धि जो होवे वह पल जाने, इस प्रकार अनुपात से लब्धि आये हुए को मासादि जानना चाहिये यही लग्नायु की क्रिया है ॥ १॥

वर्गोत्तमस्वराशिद्रेष्काणनवांशके सक्छद्विगुणम् ।
वक्रोच्चयोस्त्रिगुणितं द्वित्रिगुणत्वे सकृत्त्रिगुणम् ॥२॥ ल.जा.

जो ग्रह अपने वर्गोत्तम के हों स्वक्षेत्री हों, अथवा स्वद्रेष्काण में अथवा अपने नवांश के हों उनका आयु द्विगुण करना, और जो ग्रह वक्री होवे, तथा उच्चके घरका होवे, तब उनकी आयु को त्रिगुणित करै, और जब किसी को द्विगुणित त्रिगुणित करना ठीक माना जाय तो एकवारही उसे त्रिगुणित करदेना चाहिये॥२॥

शत्रुक्षेत्रे त्र्यंशं नीचेऽर्धं सूर्यलुप्तकिरणाश्च ।
क्षेपयंति स्वायुर्दायान्नास्तं यातौ रविजशुक्रौ ॥३॥ ल.जा.

भौमको छोडकर अन्य जो ग्रह शत्रु क्षेत्री होवे वह अपने दीये हुए आयुर्दाय में से तृतीयांश को नष्ट कर देता है, और जो ग्रह नीच का होवे अथवा अस्तंगत होवे परंतु शुक्र और शनि अस्तंगत हों अथवा हीन वल हों तब भी नहीं घटाते हैं तो वह स्वदत्तायुर्दायमें से आधी आयुनष्ट करता है,इसलिये इन अवस्थाओं को कहे हुये के अनुसार हा गणितागत आयु में घटाकर शेष स्पष्ट आयु करें ॥ ३ ॥

इति श्री जन्मपत्रीपद्धतौ भवनेशफल लग्नस्वामिफल षड्वर्गफल (चौराशि)-
योगफल राजयोग द्वादशभवनफल दीप्तादिग्रहफल नवग्रहचक्र सर्वतोभद्र-
सूर्यकालानल त्रिनाडी चक्र पञ्चस्वरचक्र रश्मिचक्र (चौवीसबल)-
अष्टकवर्गफल पिण्डायुर्नैसर्गिकायु रंशायुर्ग्रहायुर्लग्नायुरायना
ध्यायश्चतुर्थः सम्पूर्णः

तेजाढाना (मथुरा) स्थ पं० चिरञ्जीलालतनूज—नागरवंशावतंस-
-श्रीलज्जाशंकरशर्म्माधिकारिसंरक्षितमथुरास्थ श्रीद्वारकेश-
संस्कृतपाठशालाध्यापक मिश्रपरमानन्दशास्त्रित्रिगुणायक-
विरचितायां " शंकरमन्दाकिन्याख्यायाम् "
मानसागरीपद्धतिहिन्दीभाषाटीकायाम्
चतुर्थोऽध्यायः सम्पूर्णः

अथ पंचमोऽध्यायः प्रारभ्यते ।

तत्रादौ ग्रन्थकर्तृ मंगलाचरणम्—

प्रणम्य सर्वज्ञमनन्यचेतसं लसत्तमं ज्ञानमणिं महोदधिम् ।
दशाफलं वच्मि महर्षिभाषितं स्वबोधरूपं स्वगुरूपदेशात् ।१।

अवमें सर्वांतर्यामी, सर्वज्ञ, अनन्यचेता, अति सुशोभित ज्ञान की खानि प्रकाशमान, समुद्र के समान अगाध महिमा वाले भगवान् को प्रणाम करके महर्षिओं के कहे हुए दशाओं के फलको अपने गुरूपदेशानुसार और अपनी बुद्धि के अनुसार कहताहूं ॥ १ ॥

कृते नैसर्गिकायुःस्यान्नक्षत्रायुःकलौ युगे ॥ २ ॥

सतयुग में नैसर्गिकायु फल देती है, और इस कलियुग में तो नक्षत्रायु ही मनुष्यों को फल देने वाली होती है ॥ २ ॥

तत्र प्रथमं विंशोत्तरी महादशानयनम्—

सूर्ये विंशतिमो भागः शशिनि द्वादशः १२ स्मृतः ।
सूर्यषड्भागयुग्भौमदशा चान्तर्दशाभवेत् ॥ १ ॥
आदित्यात्त्रिगुणो राहू रविचंद्रयुतो गुरुः ।
सूर्यस्तु द्विगुणो भौमे मिलितस्तु शनिर्भवेत् ॥ २ ॥
बुधश्चंद्रयुतो भौमःकेतुर्मंगलवत्सदा ।
चन्द्रमा द्विगुणःशुक्रःपरमायुःप्रकीर्तितम् ॥ ३॥

सूर्य में परमायु(१२०) का वीसवा भाग यानी सूर्य की दशाके वर्ष छः ६, चन्द्रमाकी दशा ($\frac{१२०}{१२}$=१० वर्ष की होतीहै, एवं सूर्य दशाका षष्ठांश ६ सूर्य ही में मिलाने से ७ वर्ष मंगल की दशाके वर्षोंका प्रमाण निकलता है ॥ १ ॥

सूर्य की वर्षोंको तिगुना करने से राहुकी दशा १८, सूर्य और चन्द्र दशा मिलने से गुरुकी दशा १६, सूर्य वर्षों को दूना कर मंगलकी वर्षों के मिलाने से शनि वर्ष १९ निकलते हैं ॥ २ ॥

चन्द्रमाकी वर्षों १० को मंगलकी वर्षोंमें मिलाने से बुधकी १७ वर्षों का मान निकलता है, और केतुकी वर्ष मंगल के समान ७ जानने, और चन्द्रमा के वर्षों से दूनो शुक्रकी दशा २० होती है, इस प्रकार सूर्यादि ग्रहोंकी दशायु कहा है ॥ ३ ॥

अथ विंशोतरीदशायां सूर्यादिग्रहणां वर्षमानम्—

षड् दश सप्ताष्टादश षोडश नंदेंदवो मुनिशशांकाः ।
सप्त नखा वर्षाणि हि रव्यादीनां यथाक्रमशः ॥ ४ ॥

स्पष्ट करने के लिये सूर्यादि ग्रहोंके महादशावर्ष यथा क्रमसे बताये जातेहैं कि जैसे—सूर्यकी वर्ष ६, चन्द्रमाकी १०, मंगलकी ७, राहुकी १८, बृहस्पति की १६, शनि की १९, बुधकी १७, केतुकी ७ और शुक्रकी महादशा का प्रमाण २० वर्षका होता है ॥

कृत्तिकामवधिं कृत्वा भरण्यवधि गण्यते ।
विंशोत्तरीदशाचक्रं षट्त्रिंशद्भिश्च कोष्ठकैः ॥ ५ ॥

किस गृहकी महादशा में जातक का जन्म हुआ है इसके जानने के लिये कृतिकासे लेकर भरणी तक नक्षत्रों को गिनना तब छत्तीस कोठोंसे सूर्यादि दशाओं का चक्र बन जाताहै उस चक्रमें ऊपर आ, चं; भौ, रा, जी, श. बु. के. शु इस

स्पष्टज्ञानार्थम् विंशोत्तरीमहादशाचक्रम्—

ग्र.	आ	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
न.	कृ	रो	मृ	आ	पुन	पुष्य	आश्ले	म	पू फा
न.	उ फा	ह	चि	स्वा	वि	अनु	ज्ये	मू	पू षा
न.	उ षा	श्र	ध	श	पू भा	उ भा	रे	अ	भ

क्रमसे ग्रह न्यास करे उनके नीचे के कोष्ठोंमें यथा क्रमसे तत्तद्ग्रह दशा वर्ष स्थापित करे उनके नीचे के कोष्ठों में कृत्तिकासे लेकर भरणयन्त नक्षत्रों का निवेश करे तब फिर स्पष्ट हो जायगा कि—जातक का जन्म नक्षत्र जिस ग्रहके नीचे पडे उसी ग्रहकी महादशा में उस जातक का जन्म जाने[1]। अथवा कृत्तिका से जन्म नक्षत्र तक गिनकर उस संख्या में ९ का भाग दें फिर लब्धि को छोडकर शेष की तुल्य संख्या अनुसार (सू. चं. मं. रा. गु. श, बु, के. शु.) इस क्रमसे ग्रहोंकी महादशा होती है।

अथान्तर्दशानयनप्रकारः—

दशा दशाहता कार्या दशभिर्भागमाहरेत्।
यल्लब्धं स भवेन्मास स्त्रिंशन्निघ्नं दिनं भवेत्॥ १॥

जिस ग्रहकी महादशामें जिसका अन्तर देखना होयतो उन दौनों की महादशा वर्षों को आपस में गुणाकर १० का भाग देवे जो लब्धाङ्क आवे उसको मास जाने (मासोंमें १२ का भाग देकर वर्ष जानो) शेष को तीस ३० से गुणा करै उसमें फिर दश का भाग देवे लब्धांक को दिन जाने शेष रहे उसको साठिसे गुणा करे और दस से भागदे इस तरह घडी और पल भी आ जांयगे इसी प्रकार से सब ग्रहों के मास दिनका प्रमाण निकल आता है॥ १॥

उदाहरण।

जैसे प्रथम सूर्य की महा दशा में सूर्य का ही अन्तर देखना हो तो सूर्य महा दशा वर्ष छः है उस ६ को ६ से गुणा किया तब ३६ हुआ इसमें १० का भाग दिया तो लब्धि३ आया यह मास, शेष ६को तीस ३०से गुणा किया तो १८० हुआ इसमें फिर दश का भाग दिया लब्धि दिन १८ आये सूर्य मध्ये सूर्य का अन्तर ३ महीना १८ दिन हुआ इसी तरह सूर्य में चन्द्रमा की अन्तर्दशा निकालनी हुई तब चन्द्रमा की दशा वर्षों १० से सूर्य वर्ष ६ को गुणा किया तो ६० इसमें दश १० का भाग दिया तो ६ लब्धि आये तब सूर्य की महा दशा में ६ महीना अन्तर्दशा चन्द्रमा की हुई क्योंकि अगाड़ी शेष शून्य रहा इसी तरह शेष ग्रहों का अन्तर लाना चाहिये।

१—" दहनात्स्वर्क्षपर्यन्तं गणयेन्नवभिर्हरेत् " इति वृ० पा०,।

दहनो हव्यवाहनः "—इत्यमराद्दहनो नामाग्निः कृत्तिकानक्षत्रस्याऽग्निस्वामित्वाल्लक्षणया दहनशब्देनात्र कृत्तिकानक्षत्र मभिधीयते"क्वचित्स्वस्वामिभावात् यथा"राजकीयः पुरुषो राजा "—इतिस्वस्वामिभावे लक्षणोदाहरणस्य काव्य प्रकाशादौ स्पष्टत्वादिति।

अथ प्रत्यंतर्दशानयनम्—

स्वांतर्दशाघुवृंदं च हन्यात्स्वाऽब्दैर्ग्रहस्य च ।
विंशोत्तरशतेनाप्तं १२० घस्रा घट्योऽवशेषकम् ॥ १ ॥

जिस ग्रहकी अन्तर्दशामें जिस ग्रहकी प्रत्यंतर्दशा निकालनी हो तो उसी ग्रहकी अन्तर्दशामानको दिन करके उसके महादशा वर्ष मानसे गुणा करना उसमें एकसे बीस १२० का भाग देना जो लब्धि आवै वे दिनादि ही ग्रहकी उपदशा होगी ॥१॥

उदाहरण ।

जैसे सूर्य की अन्तर्दशा ३ मास १८ दिन की है उसको दिनात्मक बनाया तब १०८ हुए इसको सूर्य महा दशा वर्षमान ६ से गुणा किया तब ६४८ हुए इसमें १२० का भाग दिया लब्धि ५ आये यह दिन, शेष ४८ को ६० से गुणा किया तो २८८० इसमें फिर १२० का भाग दिया तो २४ लब्धि आये ये घड़ी हुई, अतः सूर्य की अन्तर दशा में सूर्य का प्रत्यंतर ५ दिन २४ घडी हुआ । इसी प्रकार और भी ग्रहों का करलेना ।

अथ फलदशा—

स्वदशाया घटीवृंदं हतं स्वाब्दैर्ग्रहस्य च ।
विंशोत्तरशतेनाप्तं १२० घट्यः शेषं पलादिकम् ॥ १ ॥

प्रथम प्रदर्शित प्रत्यंतर मान दिनों को घट्यात्मक (घडीरूप) बना लेवे और उसे पूर्ववत्जिसग्रहकी फलदशा लानीहो उसीग्रहकी महादशा वर्षमान अंकसे गुणाकरै फिर उसमें १२० का भाग देवे जो लब्धि आवे उसे उस ग्रहकी फलदशा जानना चाहिये ॥१॥

उदाहरण ।

जैसे सूर्यका प्रत्यंतर मान दिन ५ घडी२४है उनको घडी बनाया तब ३२४ हुआ इसको सूर्य के ही दशामान ६से गुणा किया तब १९४४ इसमें १२० का भाग दिया तो १६ लब्ध घडी जाना, शेष २४ को फिर ६० से गुणा किया तब १४४० हुआ उसमें १२० का भाग दिया तो लब्ध १२ इनको पल जानो, अगाडी शून्य ० शेष रहा तो १६ घडी १२ पल की सूर्य की फलदशा आई इसी तरह सब ग्रहों की दशांतर्दशादि निकालने में क्रिया करनी चाहिये ।

अथास्यादिनरात्रिभेदात्फलम्—

कृष्णपक्षे दिवा जन्म शुक्लपक्षे यदा निशि ।
विंशोत्तरी दशा तस्य शुभाशुभफलप्रदा ॥ १ ॥

जिस मनुष्यका कृष्णपक्ष में दिनका जन्म होवे और शुक्लपक्ष में रात्रिका जन्म

होवे तो उसके लिये विंशोत्तरी दशा शुभा शुभ फलको देने वाली होती है ॥ १॥

अथ नक्षत्रायुःकरणविधिः—

जन्मऋक्षगतनाडिकागणो विंशताधिकशतेन १२० गुण्यते ।
भज्यते नवति९०संख्यया ततो लब्धशुद्धपरमायुषःस्फुटम् ।१।

जातक के जन्म समय में जो नक्षत्र होवे उस जन्म नक्षत्र की गत [भुक्त] घडियों [[1]भयात] को एकसौवीस १२० से गुणा करै फिर उस गुणन फल में ९० का भाग दैने पर जो लब्ध अंक आवै उसे आयु का मान जाने यानी उस मनुष्यकी उस लब्धांक के तुल्य आयु होगी ॥ १ ॥

उदाहरण ।

जैसे जन्म समय भयात २८-३२ भभोग ५६-४८ अबभयात २८-३२ को १२० से गुणा किया तो (३३६०-३८४०+३४२४) यह हुआ फिर इसमें ९० से भाग दिया तो लब्धि ३८ आई शेष ४ को १२ से गुणा किया तो ४८ यह हुआ अब इसमें ९० का भाग नहीं जो सके है अतः महीना की जगह शून्य आया अर्थात् ३८ वर्ष यही नक्षत्र के विचार से परमायु हुई इसको नक्षत्रायु कहते हैं ।

अथापरप्रकारेणायुर्मानम्—

परमायुःप्रमाणेन गुणयेद्गतनाडिकाः ।
नक्षत्रस्य हरेद्भागं नवत्याप्तं विशोधयेत् ॥ १ ॥

जन्म नक्षत्र की गत घडी पलों (भयात) को परमायु प्रमाण १२० से गुणा देय और ९० का भाग देकर लब्धि निकाले, फिर उस लब्धिको १२० में घटाना, शेष तुल्य स्पष्ट आयु होगी ॥ १ ॥

१—भस्य भानां (नक्षत्राणां) वा यातम् (गतम्) इति भयातम् "नक्षत्रमृक्षं भं तारेत्यमरः" इस विग्रहके अनुसार जन्मकाल से पूर्व इष्टकालतक नक्षत्रकी जो घडी पल बीत चुके हैं अर्थात् जन्म नक्षत्रकी गत घडी पलों का ही नाम भयात है इसीसे इसको गतर्क्ष नाम से भी पुकारते हैं, । इसी तरह भस्य भानां वा भोग इति भभोगः इस तरह जन्म नक्षत्रकी भुक्त और भोग्य घट्यादिकों को अर्थात् जन्म नक्षत्र की बीती हुई घडी पल, तथा वर्तमान में भोगी जारहीं जो घडी पल, एवं आगे जो भोगी जांयगी इस प्रकार समस्त नक्षत्र भरका नाम भभोग है इसी कारण इसका दूसरा नाम सर्वर्क्ष है "गतञ्च तदृक्षम्, गतर्क्षम् सर्वञ्चतदृक्षञ्च सर्वर्क्षम्, इति । इनका आनयन प्रकार दूसरे अध्यायमें टिप्पणी में दे चुके हैं ।

अथायुर्दायोपरि दशानयनम्—

दशभिर्वर्षैर्मासो मासचतुष्केण लभ्यते दिवसः ।
दिवसद्वियेन घट्यो घटिकायुग्मेन पलमेकम् ॥ १ ॥

आई हुई आयुपर ग्रहों की दशा लाने की रीति बतलाते हैं कि–पूर्वोक्त रीतिसे जो आयुमान आया होय उनमें जितने वर्ष आये होंय उनमें १० का भाग देय जो लब्धि होय वह मास होगा,महीनाओं में ४ का भाग देना तो लब्धि दिनादि होगा, और दिनों में २ का भाग देनेपर लब्धि घटी, घटी में २ का भाग देने पर पल आते हैं । यह ध्रुवांक हुये, इन मासादि ध्रुवांकों को निकाल कर गणित में लाघव देकर दशा वर्षादि लावें ॥ १ ॥

उदाहरण ।

जैसे वर्षादि आयुमान ८२-४-०-० तो वर्ष स्थान ८२ में १० का भाग दिया तो लब्धि ८ शेष २ को ३० से गुणा किया ६० इसमें १० का पुनः भाग दिया तो दूसरी लब्धि ६ आई एवं मास स्थानीय ४ को ४ से भाग देने पर लब्धि १ शेष शून्य आया और घट्यादि स्थानों पर भी शून्य है अतः उन स्थानों पर भी शून्य ही आया, इस तरह सभी का योग ध्रुवांक होगा, जिस ग्रहकी दशा जाननी होय तो उसके वर्षको ध्रुवांकों से गुणा करे, गुणन फल मासादि होगा फिर उसमें १२ का भाग देकर वर्षादि बनाना चाहिये ।

अथाष्टोत्तरीदशानयनम् ।

अष्टादशांशःक्रियतेंऽशुमाली लब्धं द्विसार्द्धं क्रियते हिमांशुः ।
त्रिभागसूरःसकलश्च भौमस्तस्य त्रिभागः सशशी बुधःस्यात् ॥१॥
भानोस्त्रिभागःकुजयुक्तसौरिरर्द्धं कुजश्चंद्रयुतो गुरुश्च ।
भानोर्द्विगुण्यःक्रियते च राहुर्हिमांशुभानू सहितौ च शुक्रः ॥२॥

१—दन्त्यादिरयं शब्दः, तथा च सुवति प्रेरयति कर्म्मणि लोकम्, षू प्रेरणे (तु० प० से०) इत्यस्माद्धातोः "सुसूधाञ्‌ गृधिभ्यः क्रन्"–इत्युणादि (२-२४) सूत्रेण क्रन्प्रत्ययः कित्त्वाद्गुणाभावः सूरः, "वारुणीवारुणीभूतसौरभासौरभास्पदम्" इति दण्डि यमकात्, । "कुमुदा करा इवा सोढ शूरभासःइति वासवदत्ताश्लेषात्सालभ्यादिरपि इति मुकुटः" । परं विशेषतस्त्वयं शब्दो दन्त्यादित्वेनैव दृष्टिपथे पथिकायते इत्यलम् ।

अष्टोत्तरी दशाके हिसाब से मनुष्य की पूर्णायुमान १०८ वर्ष का है। जिसमें उसका अठारहमा हिस्सा ६ वर्ष सूर्य, सूर्य का २॥ गुणा चन्द्रका १५ वर्ष, तृतीयांश २ युक्त सूर्य वर्ष यानी ८ वर्ष मंगल का, सूर्य का तीसरा भाग २ चन्द्र वर्ष १५ युक्त अर्थात् १७ वर्ष बुधका; सूर्य का तृतीयांश २ वर्ष सहित और मंगलके ८ वर्ष सहित १० वर्ष शनिका; मंगल का आधा ४ चन्द्रवर्ष १५ सहित १९ वर्ष गुरुका, सूर्य का दूना १२ राहुका; सूर्य ६ चन्द्र १५ युक्त २१ वर्ष शुक्रकी महादशा मान होता है। विशेष जानने के लिये आगे लिखित चक्र देखें ॥ १–२ ॥

अथाष्टोत्तरीदशाक्रमः—

चतुष्कं त्रितयं तस्माच्चतुष्कं त्रितयं पुनः ।
यावत्स्वजन्मभं तावद्गणयेच्च यथाक्रमात् ॥ १ ॥ बृ. पा.

दशा जानने के लिये आर्द्रा से लेकर सम्पूर्ण नक्षत्र स्थापन करे, फिर आर्द्रा से जन्म नक्षत्रतक जितनी संख्या बैठे उसे निश्चय करके पहिले चार नक्षत्र तक पाप ग्रहों की दशा, इसके बाद ३ नक्षत्र तक शुभ ग्रहों की दशा, इसके बाद फिर ४ तक पाप ग्रहोंकी इसके बाद फिर ३ तक शुभ ग्रहोंकी इस प्रकार पुनः पुनर्गणना करता जाय, जैसे—आर्द्रा, पुन, पु० आ० इनमें जन्म होनेसे पापग्रह सूर्य की दशा, म, पू फा, उ फा, इन ३ तीनमें जन्म होनेसे शुभग्रह चन्द्र दशा, इसी प्रकार फिर ३–४–३ की आवृत्ति करता जाय और सू चं मं बु श गु रा शु इस क्रम से पाप शुभ ग्रहों को लगाता जाय इस तरह मालूम पड जायगा कि जातक को अमुक ग्रह की अष्टोत्तरी दशामें जन्म हुआ है आगे चक्रमें स्पष्ट किया है ॥ १ ॥

अथाष्टोत्तरीदशाक्रमः—

षडादित्ये च वर्षाणि चन्द्रे पंचदशैव च ।
मंगले चाष्टवर्षाणि बुधे सप्तदशैव च ॥ २ ॥

१—अत्र पूर्वपाठः—

"चत्वारि भानि पापेषु शुभेषु त्रीणि योजयेत्,
रौद्रादिमृगपर्यन्तं लिखेदभिजिता सह ,, ॥

"अष्टोत्तरी द्विधा प्रोक्ता शिवाद्याकृत्तिकादितः–इत्युक्तेर्द्वैविध्यमस्या यत्केचिदाचार्या आर्द्रानक्षत्रतो जन्मनक्षत्रान्तं गणनामिच्छन्ति केचिच्च कृत्तिकातः किन्तु सर्वसम्मतिस्तु आर्द्रात एव, सम्मतिद्वयेऽप्यभिजिन्नक्षत्रस्य गणना विद्यते एवेति ध्येयम्।

शनौ च दशवर्षाणि गुरावेकोनविंशतिः ।
राहोर्द्वादश वर्षाणि शुक्रस्याप्येकविंशतिः ॥ ३ ॥

यहां अष्टोत्तरी दशामें सूर्यादि ग्रहोंके दशा वर्ष क्रमसे इस तरह हैं सूर्यके वर्ष ६, चन्द्रमा के वर्ष १५, मंगल के ८, बुधके १७, शनिके १०, गुरुके १९, राहु के १२; शुक्र के वर्ष २१ दशा प्रमाण है ॥ २-३ ॥

अथांतर्दशाकरणम्—

दशा दशाहता कार्या नवभिर्भागमाहरेत् ।
यल्लब्धं तद्भवेन्मासास्त्रिंशद्भिर्गुणितं दिनम् ॥ १ ॥

जिस ग्रहकी महा दशामें जिस ग्रहकी अन्तर्दशा निकालनी हो तो उन दोनों ग्रहों की महादशा वर्षों को परस्पर में गुणा करै, जो अंक सिद्ध हो उसमें नौ ९ का भाग देवे जो लब्ध आवें उन्हें मास जाने, शेष को ३० से गुणा करे उसमें ९ का भागदेवै लब्धिको दिन जाने, फिर शेष बचे तो ६० से गुणाकर ९ से भागदे लब्धि को घडी पल जाने इस प्रकार पूर्वोक्त विंशोत्तरी दशान्तर्दशा करणवत् जानना चाहिये केवल १०, और ९ के भाग का ही वैशिष्टय है ॥ १ ॥

अथोपदशाकरणम्—

अंतर्दशाऽहर्गण एव गुण्यःस्वमूलवर्षैर्गजखेन्दुभक्तः १०८ ।
पुनःपुनःषष्टि ६० गुणावशेषे दिनादयश्चोपदशाक्रमोऽयम् ॥२॥

यदि किसी ग्रहकी अन्तर्दशा में किसी ग्रहकी उपदशा (प्रत्यन्तर) लानी होय तो अन्तर्दशा के वर्षादि को दिन बनाकर उस दिनात्मक संख्या को जिस ग्रह की उपदशा लानी होय उसी के महा दशा वर्ष से गुणादेय फिर १०८का भाग देना लब्धि दिनादि होगी, शेष को ६० से गुणाना और फिर १०८ का भाग देना लब्धि घटी होगी, शेष को फिर ६० से गुणा करे और १०८ का भाग देना तव लब्धि पल आवेंगे । बस यह ही लब्धि दिनादि ग्रहकी उपदशा होगी इसी प्रकार सब ग्रहों की उपदशा लानी चाहिये ॥ २ ॥

अथ फलदशाकरणम्—

उपदशादिवसाःखरसा ६० हता निजघटीसहिताःस्वदशाहताः ।
वसुखचंद्रहता घटिकादयःफलदशाक्रम एव पुनःपुनः ॥ २ ॥

जो प्रत्यन्तर के दिन आये हों उनको ६० से गुणा करै उस गुणनफल को जो घटी रहीं हों उनमें युक्त करे फिर जिस ग्रहकी फलदशा लानी होय उसके महा दशा वर्षसे गुणाकर १०८ का भाग देने से लब्धि घट्यादिक फलदशा होगी (यहां महादशा वर्ष अष्टोत्तरी का ही ग्रहण करना चाहिये) विंशोत्तरी महादशा वर्ष ग्रहण करने से गलती हो जायगी ॥ १ ॥

अष्टोत्तरीदशाधिपाः—

सूर्यश्चन्द्रःकुजःसौम्यः शनिर्जीवस्तमो भृगुः ।
एते दशाधिपाःप्रोक्ता विना केतुं नवग्रहाः ॥

अष्टोत्तरी दशामें आठ ग्रह दशाके स्वामी होते हैं जैसे पहिले सूर्य, दूसरा चन्द्रमा, तीसरा मंगल, चौथा बुध, पांचवां शनिश्चर, छटा वृहस्पति; सातवां राहु, आठवां शुक्र, यह क्रमसे दशापति होते हैं ॥ १ ॥

अष्टोत्तरीदशा चक्रम्—

द. स्वा.	सू.	चं.	मं.	बु.	श.	गु.	रा.	शु.
द. व.	६	१५	८	१७	१०	१९	१२	२१
नक्षत्राणि	आ. पुन. पु. आश्ले	म. पू. फा. उ. फा.	ह. चि. स्वा. वि.	ऽनु. ज्ये. मू.	पू. षा. उ. षा. ऽभि. श्र.	ध. श. पू. भा.	उ. भा. रे. अ. भ.	कृ. रो. मृ.

दशाप्यष्टोत्तरी शुक्ले कृष्णे विंशोत्तरी मता ।
गणनीया दशा सुज्ञैस्तदुमेश्वरसंमतम् ॥ १ ॥

१—वृहत्पाराशरहोराशास्त्रस्ये दं पद्यम् पूर्व पुस्तके षु नासीदिति बालाववोधार्थं तत उद्धृत्येह रक्षितमिति वोध्यम्—

तदुक्तं तत्रैव सूर्यादीनां वर्षमानमपि तथाहि—
" रसाः पंचेन्दवो नागाः शैलचन्द्रानभेन्दवः ।
गोब्जाः सूर्याः कुनेत्राश्च समाः प्रद्योत नादयः ,, ॥
इति । एतदर्थस्तु स्पष्टतया चक्रे प्रदर्शित एव

विद्वानों को पार्वतीनाथ श्री महादेवजी के मतसे शुक्लपक्ष में अष्टोत्तरी दशा और कृष्णपक्ष में विंशोत्तरी दशा की गणना करनी चाहिये ॥ २ ॥

अथ नक्षत्रायुःकरणम्—

मासाश्चतुर्दश तथा घस्राःद्वादशसंख्यकाः ।
एवं कृतेऽब्दमानं यत् तत्त्याज्यं परमायुषः ॥ १ ॥

पूर्वोक्त विंशोत्तरी के मत से जो आयु आई होय उसमें चौदह मास और बारह दिन घटावे, तब अष्टोत्तरी के मत से स्पष्ट परमायु होती है ॥ १ ॥

नक्षत्रभोगनाडीभिर्युताल्लिंशद्धता रसैः ।
बाणभक्तेन चाब्दानामष्टोत्तर्यादिसूरिभिः ॥ २ ॥

जन्म नक्षत्र के भयात भभोग बनाकर भभोग घटीओं को तीस ३० से युक्त कर छः से गुणा करै जो अंक सिद्ध हो उसमें पांचका भाग देने से अष्टोत्तरी के विचार से नक्षत्रायु सिद्ध होती है ॥ २ ॥

अथायुर्दायोपरि दशानयनम् ।

* तावद्ध्रुवानयनम् *

नवभिर्वर्षैर्मासः शेषमर्कगुणं कुरु ।
मासान्क्षिप्त्वा ततस्त्रिंशद्गुणं तत्र दिनं क्षिपेत् ॥ १ ॥
अष्टोत्तरशतेनाप्तं १०८ दिनं तद् ध्रुवका बुधाः ।
तच्च षष्टिगुणं कृत्वा तन्मध्ये घटिकाःक्षिपेत् ॥ २ ॥
अष्टोत्तरशतैर्भागं १०८ लब्धांके घटिका वदेत् ।
शेषं षष्टि ६० गुणं कृत्वा स्वहरैर्भागमाहरेत् ॥ ३ ॥
लब्धांके च पलं ज्ञेयं शेषं षष्टि ६० गुणं कुरु ।
अष्टोत्तरशतैर्भागं लब्धं तद्विपलं वदेत् ॥ ४ ॥

अब अष्टोत्तरी मतानुसार ध्रुवानयन प्रकार कहते हैं पूर्वोक्त जो वर्षादि आयु आई है उसके वर्षों में ९ का भाग देना शेषको १२ से गुणा कर उसमें अग्रिमखंड (आयुर्दाय के मास) युक्त करदें फिर ३०से गुणाकर अग्रिम खण्ड (जो दिन होंय)

युक्त करदें फिर १०८ का भाग देकर लब्धि को दिनात्मक ध्रुवांक जानना । अब १०८ का भाग देने पर जो शेष होय उसको ६० से गुणा करे इसमें अग्रिम खण्ड (घटी) जोड दें फिर १०८ का भाग देकर लब्धि आवे वह घटी ध्रुवांकका दूसरा खण्ड होगा, फिर जो शेष रहे उसको ६० से गुणाकर पल जोड देना चाहिये फिर १०८ का भाग दें लब्धिपल होगा, इसी प्रकार विपल भी आ सकते हैं । इस तरह मासादि ध्रुवांक निकाल कर फिर जिस ग्रहकी दशा लानी होय उस ग्रहकी अष्टोत्तरी दशा वर्षों से ध्रुवांक को गुणा देय, यदि विपल ६० से अधिक होंग तो ६० का भाग देकर लब्धि को पलों में युक्त करे, इसी तरह पलों में ६० का भाग देकर घटियों में जोडदे, घटियों में ६० का भाग देकर दिनों में और दिनोंमें३०का भाग देकर महिनों में, महिनों में १२ का भाग देकर वर्ष बनाना चाहिये ॥ १-४॥

अथ संध्यादशापाचकविधिः—

परमायुर्दशांशा च स्फुटं संध्या भवेत्ततः ।
स्वलग्नाधिपतेरादौ ततोऽन्येषु ग्रहेषु च ॥ १ ॥

अष्टोत्तरी दशानुसार परमायु का दशवां हिस्सा ही सन्ध्या दशा के वर्ष होते हैं, उसमें सबसे पहले स्वलग्नाधिपति की दशा, पश्चात् क्रमसे अन्य सब ग्रहोंकी संध्या दशा होती है ॥ १ ॥

यावद्वर्षाणि चन्द्रस्य दशा विंशोत्तरीमते ।
तावद्वर्षप्रमाणा च संध्या भवति निश्चितम् ॥ २ ॥ वृ. पा.

विंशोत्तरी के मतसे जितनी वर्ष १० चन्द्रमा की महा दशाकी होती है उतनेही वर्षों के समान ग्रहकी सन्ध्या होती है यह शास्त्रकारों का निश्चित सिद्धान्त है॥२॥

अथ पाचकदशाकरणम्—

संध्या रसंगुणा कार्या चन्द्रवह्नि ३१ त्हृता फलम् ।

१—पद्यद्वयमिदं वृहत्पाराशरहोराशास्त्रस्य, एतदुदाहरणं तत्रैव यथाहि—

"संध्या दशा रस गुणा कार्या ६० चन्द्रवन्हि ३१ भक्ते लब्धम्-१ । ११ । ६ । ४६ । २७ । प्रथमकोष्ठे संस्थाप्य पुनरस्यार्द्धम् ० । ११ । १८ । २३ । १३ इमं त्रिषु कोष्ठेषु संस्थाप्य पुन स्तृतीयांशम् ० । ७ । २२ । १५ । २६ । अयं बसु कोष्ठ के संस्थाप्य एवं सर्वत्र ज्ञेयम् ,, इति । चक्राण्यपि तत्र प्रदत्तानि विस्तरभिया नात्र तानि प्रदर्श्यन्ते ।

प्रथमे कोष्ठके स्थाप्यमर्द्धमर्द्धं त्रिकोष्ठके ॥ १ ॥
त्रिभागं वसुकोष्ठेषु लिखेद्विद्वान् प्रयत्नतः ।
एवं द्वादशभावेषु पाचकानि प्रकल्पयेत् ॥ २ ॥

उपर्युक्त श्लोकमें कहे हुए सन्ध्यादशा वर्ष प्रमाण को छः से गुणा कर उसमें इकतीस ३१ का भाग देनेसे जो लब्धिवर्षादि हो उसे पहले कोठे में स्थापन करे और उसका अर्द्ध अर्द्ध तदग्रिम तीन कोठों में स्थापन करे, तथा लब्धि के त्रिभाग को शेष आठ कोठों में विद्वान् जन रक्खे, इसप्रकार बारहों भावों में पाचकों को स्थापन करें ॥ १-२ ॥

अथ वृहत्पाराशरोक्तं दशाफलम्—

तत्रादौ दशावाहन विचारः—

स्वकीयजन्मनक्षत्राद्गणयेत्पाकभावधि ।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं तु पाकवाहनः ॥ १ ॥
गर्दभो घोटको हस्ती महिषो जंबुसिंहकौ ।
काको हंसो मयूरश्च नवैते नरवाहनाः ॥ २ ॥

जातकके जन्मनक्षत्रसे जिस दिन दशालगे उस दिनके वर्तमान नक्षत्रतक गिने जो अंक हो उस अंकमें नौ का भाग देवे भाग दिये पश्चात् लब्धि को छोड कर जो अंक शेष रहे उसे दशाका बाहन जाने जैसे १ एक अंक शेष रहे तब गधा, दो घोड़ा, तीन हाथी, चार भैंसा; पांच स्यार; छः सिंह, सात काक, आठ हंस, और नौ या शून्य से मोर; इस प्रकार नक्षत्रानुसार दशाके बाहन ९ होते हैं ॥ २ ॥

उदाहरण ।

जैसे जन्म नक्षत्र पुष्य से दशा लगनेके नक्षत्र श्रवण तक पन्द्रह हुए उसमें नवका भाग दिया तब शेष ६ रहा तब इस मनुष्य का दशा बाहन सिंह होगा इसी प्रकार और भी समझना ॥

बुधदशावर्ष १७ तन्मध्ये अन्तर्दशा.

बु	श	गु	रा	शु	र	चं	मं
२	१	२	१	३	०	२	१
८	६	११	१०	३	११	४	३
३	२६	२६	२०	२०	१०	१०	३
२०	४०	४०	०	०	०	०	२०

शनिदशावर्ष १० तन्मध्ये अन्तर्दशा.

श	गु	रा	शु	र	चं	मं	बु
०	१	१	१	०	१	०	१
११	९	१	११	६	४	८	६
३	३	१०	१०	२०	२०	२६	२६
२०	२०	०	०	०	०	४०	४०

गुरुवर्ष १६ तन्मध्ये अंतर्दशा.

गु	रा	शु	र	चं	मं	बु	शं
३	२	३	१	२	१	२	१
४	१	८	०	७	४	११	९
३	१०	१०	२०	२०	२६	२६	३
२०	०	०	०	०	४०	४०	२०

राहुवर्ष १२ तन्मध्ये अंतर्दशा.

रा	शु	र	चं	मं	बु	श	गु
१	२	०	१	०	१	१	२
४	४	८	८	१०	१०	१	१
०	०	०	०	२०	२०	१०	१०
०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रदशावर्ष २१ तन्मध्ये अन्तर्दशा.

शु	र	चं	मं	बु	श	गु	रा
४	१	२	१	३	१	३	२
१	२	११	६	३	११	८	४
०	०	०	२०	२०	१०	१०	०
०	०	०	०	०	०	०	०

सूर्यमध्येसूर्यांतर्दशाया-मुपदशा.

र	चं	मं	बु	श	गु	रा	शु
०	०	०	०	०	०	०	०
६	१६	८	१८	११	२१	१३	२३
४०	४०	५३	५३	६	६	२०	०
०	०	२०	२०	४०	४०	०	०

सूर्यमध्येचन्द्रांतर्दशाया मध्येउपदशा

चं	मं	बु	श	गु	रा	शु	सू
०	०	१	०	१	१	१	९
११	२२	१७	२७	२२	३	२८	१६
४०	१३	१३	४६	४६	२०	२०	४०
०	२०	२०	४०	४०	०	०	०

सूर्यमध्येभौमांतर्दशा मध्येउपदशा

मं	बु	श	गु	रा	शु	र	चं
२	०	०	०	०	१	०	०
११	२५	१४	२८	२७	१/६	८	२२
५१	१/६ १	४८	८/५३	४४/६१	४०	५३/२०	१२
६/४ ०	४०	५३/२०	३०	०	०	०	३/९ ०

सूर्यमध्येबुधांतदशामध्ये उपदशा.

बु	श	गु	रा	शु	र	चं	मं
१	१	१	१	२	०	१	०
२३	१	१९	७	६	१८	१७	२५
३१	२८	४८	४६	६	५३	१३	११
६	५३	५३	४०	४०	२०	२०	६
४०	२०	०	०	०	०	०	४०

रविमध्येशन्यन्तर्दशामध्ये-उपदशा.

श	गु	रा	शु	र	चं	मं	बु
१	१	०	१	०	०	०	१
१८	५	२२	८	११	२७	१४	१
३१	११	१३	५३	६	४६	४८	२८
६	६	२०	२०	४०	४०	५३	५३
४०	४०	०	०	०	०	२०	२०

रविमध्येगुरोरंतर्दशाया मध्येउपदशा.

गु	रा	शु	र	चं	मं	बु	श
१	१	२	०	१	०	१	१
६	१२	१३	२१	२२	२८	२९	५
५१	१३	५३	६	४६	८	४८	११
६८	२०	२०	४०	४०	५३	५३	६
४०	०	०	०	०	२०	२०	४०

रविमध्येराहोरंतर्दशा मध्येउपदशा.

रा	शु	र	चं	मं	बु	श	गु
०	१	०	०	०	१	०	०
२६	१६	१३	१७	१७	७	२२	१२
४०	४०	२०	४६	४६	४६	१३	१३
०	०	०	४०	४०	४०	२०	०
०	०	०	०	०	०	०	०

रविमध्ये शुक्रांतर्दशामध्ये उपदशा.

शु	र	चं	मं	बु	श	गु	रा
२	०	१	१	२	२१	२	१
२१	२३	१८	१	६	३८	१३	१६
२०	२०	०	६	६	५३	५३	४०
००	००	००	४०	४०	२०	२०	००

चंद्रमध्ये शन्यन्तर्दशाया मुपदशा

श	गु	रा	शु	र	चं	मं	बु
१६	५	१	३	०	२	१	२
१९	२७	२५	७	२७	९	७	१८
४६	५९	३३	१२	४६	२६	२	४२
४०	४६ ४०	२०	२०	४०	४०	१३ २०	१३ २०

चन्द्रमध्येसूर्यान्तर्दशाया- मुपदशा.

र	चं	मं	बु	श	गु	रा	शु
०	१	०	१	०	१	१	१
१६	११	२२	१७	२७	२२	३	२८
४०	४०	१३	१३	४६	४६	२०	२०
००	०	२०	२०	४०	४०	०	०

चन्द्रमध्ये चन्द्रांतर्दशाया- मुपदशा.

चं	मं	बु	श	गु	रा	शु	र
३	१	२	२	४	२	४	१
१४	२५	२८	९	११	२३	२५	११
१०	३३	३	२६	५६	२०	५०	४०
०	२०	२०	४०	४०	०	०	०

चन्द्रमध्येगुरोरन्तर्दशाया- यामुपदशा.

गु	रा	शु	र	चं	मं	बु	श
५	३	६	१	४	२	४	२
१६	१५	४३	२२	११	१०	२९	२७
४९	३३	२०	४६	५६	२२	३२	५९
४६ ४०	२०	०	४०	४०	१३ २०	१३ २०	४६ ४०

चन्द्रमध्यंभौमान्तर्दशाया- मुपदशा.

मं	बु	श	गु	रा	शु	र	चं
०	१	०	७	० २३	१	०	०
१५	२	१९	३१	४२	११	११	२९
४८	३४	४५	५१ ६	१३	२८	२८	३७
८ ५३ २०	४ ५३ २०	१ ६ ४०	४०	२०	५३ २०	५३ २०	४६ ४०

चन्द्रमध्येभौमान्तर्दशाया- मुपदशा.

मं	बु	श	गु	रा	शु	र	चं
०	२	१	१०	१	२	०	१
२९	२	२७	२२	१४	१७	२२	२५
३९	५७	१३	१३	२६	४६	१३	३३
४६ ४०	४६ ४०	२०	२०	४०	४०	२०	२०

चन्द्रमध्ये राहोरंतर्दशाया- मुपदशा.

रा	शु	र	चं	मं	बु	श	गु
२	३	१	२	१	३	१	३
६	२६	३	२३	१४	४०	२५	१५
४०	४०	२७	२०	२६	२६	३३	३३
००	००	००	००	४०	४०	४० २०	१०

भौममध्ये बुधांतर्दशाया- मुपदशा.

बु	श	गु	रा	शु	र	चं	मं
२	१	२	१	२	०	२	१
२१ २१	१२ ५८	१९ ४५	२० २२	२८	२५	२	३
२८	३१	११	१३	८	११	५७	३४
५३ २०	५३ ४०	६ ००	२०	५३ २७	६ ०	४६ ४०	४६ ५३ २०

चन्द्रमध्ये बुधान्तर्दशाया- मुपदशा,

बु	श	गु	रा	शु	र	चं	मं
४	२	४	३	५	१	३	२
१३	१८	२९	४	१५	७	२८	२
४७	४६	३२	२६	१६	१३	३	५७
४६ ४०	१३ २०	१३ २०	४०	४०	२०	२०	४६ ४०

चन्द्रमध्येशुक्रान्तर्दशाया- मुपदशा.

शु	र	चं	मं	बु	श	गु	रा
६	१	४	१	५	३	६	३
२४	२८	२५	१७	१५	७	४	२६
१०	२०	५०	४६	१६	१३	४३	४०
००	००	००	४०	४०	२०	२०	००

:भौममध्येशन्यन्तर्दशाया- मुपदशा.

श	गु	रा	शु	र	चं	मं	बु
०	१	०	१	०	१	०	१
२४	१६	२९	१	१४	७	१९	११
४१	५४	३७	५१	४८	२	४५	५८
२ ५३ २०	४ ५३ २०	४६	६	५३	१७	११	३८ १
		४०	४०	२०	२०	४६	४०

भौममध्येसूर्यान्तर्दशाया-मुपदशा.

र	चं	मं	बु	श	गु	रा	शु
०/८	०/८	०/११	०/२५	०/१४	०/२६	०/१७	०/१
५३	५३	५१	११	४८	४६	४६	८
२०/०	२०/०	६/४०	६/०	५३/२०	५३/०	४०/०	४०/०

गुरोरन्तर्दशायामुपदशा-बुधमध्ये.

गु	रा	शु	र	चं	मं	बु	श
६/९	३/२९	६/२९	१/२९	४/२९	२/२९	५/२९	३/२९
२४/४९	३७/४६	२१/६	४८/५३	३२/१३	४५/११	२८/३१	४१/२८
५३/२०	४०/०	४०/०	२०/०	२०/०	६/४०	६/४०	३०/५२

बुधमध्येचन्द्रान्तर्दशाया-मुपदशा.

चं	मं	बु	श	गु	रा	शु	र
३/२८	२/२	४/१३	२/२८	४/२९	३/४	५/१५	१/१७
३	५७	४७	४२	३२	२६	१६	१३
२०/०	४६/४०	४६/४०	१३/२०	१३/२०	४०/०	४०/०	२०/०

भौममध्येशुक्रान्तर्दशाया-मुपदशा.

शु	र	चं	मं	बु	श	रा	गु
२	१	२	१	२	१	३	२
१८/१३	१/६	१७/४६	११/२८	२८/८	११/५१	८/३१	२/१३
२०/०	४०/०	४०/०	५३/२०	४०/०	६/४०	६/४०	२०/०

बुधमध्येशनेरन्तर्दशाया-मुपदशा.

श	गु	रा	शु	र	चं	मं	बु
२/२२	३/४	२/२	३/२०	१/१	२/१८	१/११	२/२९
२८/८	४१/२८	५७/४६	११/६	२८/५३	४२/१३	५८/३१	११/५१
५३/२०	५३/२०	४०/०	४०/०	२०/०	२०/०	६/०	६/०

बुधमध्येबुधान्तर्दशायां-मुपदशा.

र	चं	मं	बु	श	गु	रा	शु
०/१८	१/१७	०/२५	१/२३	१/१	१/२९	१/७	२/६
५३	३१	११	१३	२८	४८	४६	६
२०/०	२०/०	६/४०	६/४०	५३/२०	५३/२०	४०/०	४०/०

राहोरन्तर्दशायामुपदशा भौममध्ये.

रा	शु	र	चं	मं	बु	श	गु
१	२	०	१	०	१	०	१
५/३३	२/१६	१७/४६	१४/२९	२३/४२	२०/२२	२९/३७	२६/१७
२०/०	२०/०	४०/०	४०/२०	१३/२०	१३/२०	४६/४०	४६/४०

बुधमध्येबुधान्तर्दशाया-मुपदशा.

बु	श	गु	रा	शु	श	चं	मं
५/१	२/२९	५/१९	३/१७	६/७	१/२३	४/१३	२/१०
३८/८	११/५१	२८/३१	२/२३	१८/५३	३१/६	४७/४६	२१/२८
५३/२०	६/४०	६/४०	२०/०	२०/०	४०/०	४०/०	५३/२०

बुधमध्येशुक्रान्तर्दशाया-मुपदशा.

शु	र	चं	मं	बु	श	गु	रा
७/२१	३/६	५/२५	२/२८	६/७	३/२०	६/२९	४/१२
२३	६	१६	८	१८	११	२१	१३
२०/०	४०/०	४०/०	५३/२०	५३/२०	६/४०	६/४०	२०/०

गुरोरन्तर्दशायामुपदशा भौममध्ये.

गु	रा	शु	र	चं	मं	बु	श
१/२९	१/२६	३/८	०/२८	२/१०	१/७	२/१९	१/१९
८/८	१७/४६	३१/६	८/५३	१२/१३	३१/५१	४५/११	५४/४८
५३/२०	४०	४०	२०	२०	६/४०	६/४०	५३/२०

भौममध्येचन्द्रान्तर्दशाया-मुपदशा.

चं	मं	बु	श	गु	रा	शु	र
१/२५	१/२९	२/२	१/७	२/१०	०/१४	२/१७	०/२२
२१	३७	५७	२	२२	२६	४६	३३
२०	४६/४०	४६/४०	१३/२०	१३/२०	४०/०	४०/०	२०/०

राहोरंतर्दशायामुपदशा शुक्रमध्ये.

रा	शु	र	चं	मं	बु	श	गु
२/१५	४/१२	१/७	३/४	१/२०	३/१७	२/२	३/२९
३३	१३	४६	२६	२२	२	५७	३७
२०/०	२०/०	४०/०	४०/०	१३/२०	१३/२०	४६/४०	४६/४०

बुधमध्येभौमान्तर्दशायामुपदशा.

मं	बु	श	गु	रा	शु	र	चं
१/३	२/११	१/११	२/१९	१/२०	२/२८	०/३५	२/२
३४/४८	२१/२८	५८/३१	४५/११	२२/१३	८/५३	१/६१	५७/४६
५३/२०	५३/२०	६	६/४०	२०	२०	४०	४०

शनिमध्येशन्यन्तर्दशायामुपदशा.

श	गु	रा	शु	र	चं	मं	बु
३/०	२/३८	७/२	२/४	०/१८	१/१६	०/२४	१/२२
५१/५१	३/६१	१३/२०	४८/५३	३/६१	१७/४६	४१/२८	२८/८
४६/४०	४०		२०	४०	४०	५३/२०	५३/२०

गुरोरन्तर्दशायामुपदशा.

गु	रा	शु	र	चं	मं	बु	श
३/२१	२/१०	४/३	१/५	२/२७	१/१६	३/९	८/२८
२५/२१	२२/१३	८/५३	११/६	५७/४६	५४/४८	४१/२८	३८/३१
६/४०	०/०	२०/०	४०/४०	४०/४०	५३/२०	५३/२०	६/४०

राहोरन्तर्दशायामुपदशा.

रा	शु	र	चं	मं	बु	श	गु
१/१४	२/१७	०/२२	१/२५	०/२९	२/२	१/७	२/१०
२६	४६	१३	३३	३७	५७	२	२२
४०/०	४०/०	२०/०	२०/०	४६/४०	४६/४०	१३/२०	१३/२०

शुक्रान्तर्दशायामुपदशा.

शु	र	चं	मं	बु	श	गु	रा
४/१६	१/८	३/७	१/२१	३/२०	२/४	४/३	२/१७
६/४०	५३/२०	१३/२०	५१/६	११/६	४८/५३	८/५३	४६/४०
०	०	०	४०	४०	२०	२०	०

सूर्यान्तर्दशायामुपदशा.

र	चं	मं	बु	श	गु	रा	शु
०/११	०/२७	०/१४	१/१	०/१८	२/५	०/२८	१/८
६	४६	४८	२०	३१	११	१३	५३
४०/०	४०/०	५३/२०	५३/२०	६/४०	६/४०	२०/०	२०/०

चन्द्रान्तर्दशायामुपदशा शनि.

चं	मं	बु	श	गु	रा	शु	र
२/९	१/७	२/१८	२१/२७	२/२७	१/२५	३/७	०/२७
२६	२	४२	१८	५७	३३	१३	४९
४०/०	१३/२९	१३/०	१७/४६	४६/४०	०/०	२०/०	४०/०

भौमान्तर्दशायामुपदशा शनि.

मं	बु	श	गु	रा	शु	र	चं
०/१९	१/११	०/२४	१/१६	०/२९	१/२१	०/१४	१/१७
४५/११	५८/३१	४०/२८	५४/४६	३७/४६	५१/६३	४८/५३	१३/२०
६/४०	६/४०	५३/२०	५३/२०	४०/०	४०/०	२०/०	२०/०

बुधांतर्दशायामुपदशा.

बु	श	गु	रा	शु	र	चं	मं
२/२८	०/२२	३/९	२/२	३/३०	१/१	२/१८	११
११		४१	५९	११	२८	४२	५८
५१		२८	४६	८	५३	१३	३१
६/४०	२०	५३/२०	४०/०	४०/०	२०/०	२०/०	६/४०

गुरुमध्येगुरोरन्तर्दशायामुपदशा.

गु	रा	शु	र	चं	मं	बु	श
७/१	४/१३	७/२३	२/६	५/१६	२/२८	६/२९	३/३१
४१	४२	३८	५१	४७	८	२४	२५
५१	१३	५३	६	४६	८	४८	६
६/४०	२०/०	२०/०	४०/०	४०/०	५३/२०	५३/२०	४०/०

सूर्यान्तर्दशायामुपदशा गुरु.

रा	शु	र	चं	मं	बु	श	गु
२	४	१	३	१	३	२	४
२४	२७	१२	१५	१६	२९	१०	१३
२६	४७	१३	३३	१७	३७	२२	४२
४०/०	४०/०	२०/०	२०/०	४६/४०	४६/२०	१३/२०	१३/२०

शुक्रान्तर्दशायामुपदशा गुरु.

शु	र	चं	मं	बु	श	गु	रा
८	६	६	३	६	४	७	४
१८	४३	४	८	२९	३	२२	२७
३६	४३	४३	३१	२१	८	३४	४६
४०/०	२०/०	२०/०	६/४०	६/४०	५३/२०	५३/२०	४०/०

सूर्यान्तर्दशायामुपदशा गुरु.

र	चं	मं	बु	श	गु	रा	शु
० २१	१ २७	० २८	१ २९	१ ५	३ ६	१ १२	२ १३
६ ४०	४६ ४०	८ ५३	४८ ५३	३१ ६	५१ ८	१३ २०	५३ २०
०	०	२०	२०	४० ०	४० ०	०	०

चन्द्रान्तर्दशामध्येगुरोरुपदशा.

चं	मं	बु	श	गु	रा	शु	र
४ ११	२ १०	४ २९	२ २७	५ १६	३ १५	९ ४	१ २२
५६	२२	३२	५७	४७	३३	४३	४६
४० ०	१३ २०	१३ २०	४६ ४०	४६ ४०	२० ०	२० ०	४० ०

गुरुमध्येभौमान्तर्दशायामुपदशा.

मं	बु	श	गु	रा	शु	र	चं
१ ७	१ १९	१ १६	३ २९	१ १६	३ ८	० २८	२ १०
३१ ५१	४५ ११	५४ ४८	८ ८	१७ ४९	३१ ६	८ ५३	२२ १३
६ ४०	६ ४०	५३ २०	५३ २०	४० ०	४०	२०	२०

बुधांतर्दशायामुपदशा गुरु.

ब	श	गु	रा	शु	र	चं	मं
५ २९	३ ९	९ ९	३ २९	६ २९	१ २९	४ २९	२ १९
२८ ३१	४१ २८	४८ ४६	३७ ४६	२२ ६	४८ ५३	३२ १३	४५ २१
९ ४०	५३ २०	४० ०	४० ०	४०	२०	२०	४०

शनेरन्तर्दशायामुपदशा गुरु.

श	गु	रा	शु	र	चं	मं	बु
१ २८	३ २१	२ १०	४ ३	१ ५	३ ५७	१ १९	३ ९
३८ ३१	२५ ११	२२ १३	८ ५३	३१ ६	५७ ४६	५४ ४८	४१ २८
६ ४०	६ ४०	२० ०	२० ०	४० ०	४० ०	५३ ०	५३ ०

राहोरन्तर्दशायामुपदशा.

रा	शु	र	चं	मं	बु	श	गु
१	३	०	२	१	२	१	२
२३	३	२६	६	५	१५	१४	२४
२० ०	२०	४०	४०	३३ २०	३३ २०	२६ ४०	२६ ४०

शुक्रान्तर्दशायामुपदशा राहु.

शु	र	चं	मं	बु	श	गु	रा
५	१	३	२	४	२	४	३
१३	१६	२६	२	१२	१७	७	३४
२०	४०	४०	१३ २०	१३ २०	४५ ४०	४६ ४०	२० ०

राहुमध्येऽन्तर्दशायामुपदशा.

र	चं	मं	बु	श	गु	रा	शु
०	१	०	१	०	१	०	१
१३	३	१७	७	२२	१२	२६	१६
२० ००	२० ००	४६ ४० ०	४६ ४० ०	१३ २० ०	१३ २० ०	४० ००	४० ००

राहुमध्येचन्द्रान्तर्दशायामुपदशा.

चं	मं	बु	श	गु	रा	शु	र
२	१	३	१	३	२	३	१
२३	१४	४	२५	१९	६	२६	३
२०	२६ ४०	२६ ४०	३३ २०	३३ ०	४० ०	४० ०	२० ०

राहुमध्येभौमान्तर्दशायामुपदशा.

मं	बु	श	गु	रा	शु	र	चं
०	१	०	१	१	२	०	१
२३ ४२	२० २२	३९ ३७	२६ १७	५ ३३	३ १३	१७ ४६	१४ २६
१३ २०	१२ २०	४६ ४०	४६ ०	२० ०	२० ०	४० ०	४० ०

राहुमध्येबुधान्तर्दशायामुपदशा.

बु	श	गु	रा	शु	र	चं	मं
३ १७	२ २	३ २९	२ १५	४ १३	१ ७	३ ४	२ २०
२	५७	३७	३३	१३	४६	२६	२२
१३ २०	४६ ४०	४० ०	२० ०	२० ०	४० ०	४० ०	१३ २०

राहुमध्येशनेरन्तर्दशायामुपदशा.

श	गु	रा	शु	बु	मं	र	चं
१	२	१	२	०	१	०	२
७ २	१० २२	१४ ५६	१७ ४६	२२ १३	२५ ३३	२९ ३७	२ ५३
१३ २०	१३ २०	४० ०	४० ०	२० ०	२० ०	४६ ४०	४६ ४०

राहोरन्तर्दशाया-मुपदशा.

गु	रा	शु	र	चं	मं	बु	श
४/३२	२/२४	४/२७	१/१३	१/१५	१/१६	३/२९	२/१०
४२	२६	४६	१३	३३	१७	३७	२२
१३/२७	४०/०	४०/०	२०/०	४६/०	४६/४०	१३/४०	१३/२०

शुक्रमध्येशुक्रान्तर्दशाया-मुपदशा.

शु	र	चं	मं	बु	श	गु	रा
६	२	६	३	७	४	८	५
१५	२१	२४	१८	२१	१६	१८	१३
३०	२०	१०	५३/२०	२३/२०	६/४०	३६/४०	२०/०

सूर्यान्तर्दशायामुपदशा शुक्र.

र	चं	मं	बु	श	गु	रा	शु
०	१	११	२	१	२	१	२
२३	२८	६	६	८	१३	१६	२१
२०	०	४०	६/४०	५३/२०	५३/२०	४०/०	२०/०

चन्द्रान्तर्दशायामुपदशा शुक्र.

चं	मं	बु	श	गु	रा	शु	र
४	२	५	३	६	३	६	१
२५	१७	१५	७	४	२६	२४	२८
५०	४६/४०	१६/४०	१३/२०	४३/२०	४०	१०	२०

भोमान्तर्दशायामुपदशा शुक्र.

मं	बु	श	गु	रा	शु	र	चं
१/११	२/२८	१/२१	३/८	२/२	१३/१८	१/१	२/२७
२८/५३	८/५३	५१/६	३१/६	१३/२०	५३/२०	६/४०	४६/४०
२०	२०	४०	४०	०	०	०	०

बुधान्तर्दशायामुपदशा शुक्र.

बु	श	गु	रा	शु	र	चं	मं
६/७	३/२०	६/२९	४/१२	७/२१	६/६	५/१५	२/२८
१८	११	२१	१३	२३	६	१६	८
५३/२०	६/४०	६/४०	२०/०	२०/०	४०/०	४०/०	५३/२०

शनेरन्तर्दशायामुपदशा-शुक्र.

श	गु	रा	शु	र	चं	मं	बु
२/४	४/३२	२/१७	४/१६	१/८	३/७	१/११	३/२०
४८/५३	८/५३	४६/४०	६/४०	५३/२०	१३/२०	५१/६	३१/६
२०	२०	०	०	०	०	४०	४०

गुरोरन्तर्दशायामुपदशा शुक्र.

गु	रा	शु	र	चं	मं	बु	श
७/२३	४/२७	८/१८	२/१३	६/४	३/८	६/२९	४/३
३८	४६	२६	५३	४३	३१	२१	८
५३/४०	४०/०	४०/०	२०/०	२०/०	६/४०	६/४०	५३/२०

राहोरन्तर्दशाया मुपदशा.

रा	शु	र	चं	मं	बु	श	गु
३	५	१	३	२	४	२	४
३	१३	१६	१६	२	१२	१७	२८
२०	२०	४०	४०	१३/२०	१३/२०	४६/४०	४६/४०

अथैषां वाहनानां पृथक् फलम् ।

दशाप्रवेशे नरवाहनस्य ह्युत्पन्नभोगी जडतासमेतः ।
लज्जाविहीनो धनधान्यहीनःस्यान्मानवो वस्त्रविवर्जितश्च ॥३॥
चपलचंचलताबहुभक्षकःप्रकटबुद्धिसघोषचमूपतिः ।
दृढतनुर्बहुकार्यकरो नरस्तुरगयोर्यदि वाहनसंस्थितः ॥ ४ ॥

दशाके प्रवेश समय में यदि दशाका वाहन गधा हो तब वह मनुष्य प्राप्त विषयों का भोगने वाला, जडता युक्त, लज्जा रहित, धनधान्य से हीन, और वस्त्रोंसे भी रहित होता है ॥ ३ ॥

और जो दशाको घोडा वाहन हो तब वह मनुष्य बडा चपल, चञ्चलता युक्त, वहुभोजनी, प्रकटबुद्धियुक्त, शब्दयुक्त सेनाका रक्षक, दृढ अंगवाला, अनेक कामों का करने वाला होता है ॥ ४ ॥

अथ गजफलम्—

नानाकार्यकृतो हि सौख्यजननो देवाधिपो वाहनः
संतप्तो वहुमानता शुभगतिःसेनापतिःशोभनः ।
सर्वःसौख्यकरःसुभूषणधरःस्याच्चंचलो दुष्टता
पाकोऽयं यदि वाहनो गजपतेर्नानाकलाकौशलः ॥ ५ ॥

और जिसके दशा प्रवेश में हाथी बाहन हो तब वह मनुष्य अनेक कामों के करने से सुख पाने वाला, अधिक सत्कार पाने वाला, शुभगति पाने वाला, सेना का पति, अति सुन्दर, सबको सुख करने वाला, उत्तम भूषणोंसे भूषित,अति चंचल और अनेक कला कौशल से युक्त होता है ॥ ५ ॥

अथ महिषफलम्—

महिषयोर्बलबुद्धिविहीनता जयमलं प्रबलाग्निभयातुरम् ।
शकटयोःप्रबले बलसंयुतो महिषयोर्यदि वाहनता भवेत् ॥६॥

और जो दशाके प्रवेश समय में दशाका बाहन महिष (भैंसा) हो तब वह मनुष्य बल बुद्धि से हीन; वैरी से पराजित होवे, प्रबल अग्नि के भयसे आतुर,गाडी के जोतने के कामसे अपने जीवन निर्वाह में हिम्मत रखने वाला होता है ॥ ६ ॥

अथ जंबुफलम्—

जंबुके बहुतरैव चंचला व्याधिदुःखपरिपीडितांगना ।
क्लेशता रिपुजनाच्च पीडनं धान्यनाशमतिसंक्षयो भवेत् ॥ ७ ॥
जंबुकोत्पन्नभोगी च लाभभक्षस्तथैव च ।
श्वेतांगःश्वेतवस्त्रं च हानिःस्यात्क्रयविक्रयोः ॥ ८ ॥

जिसकी दशा का वाहन गीदड होता है उस मनुष्य की स्त्री अत्यन्त चपल, व्याधि तथा दुःखों से पीडित रहे, शत्रुसे क्लेश पानेवाला, और धान्य नाश हो, बुद्धिहीन होता है, एवम् सुभोग भोगने वाला, लाभकारी गौरांग, श्वेतवस्त्रपहरने वाला, और क्रयविक्रय में नुकसान पाने वाला होता है ॥ ७-८ ॥

अथ सिंहफलम्–

दशाप्रवेशे यदि वाहनश्च सिंहो बलिष्ठो विविधैःप्रकारैः ।
उत्पन्नभोगी रिपुनाशकारी स्याद्वाहने केसरिणो विशेषः ॥९॥

जिसके दशा प्रवेशके समय में दशा का वाहन सिंहहो वह मनुष्य अनेक प्रकार से वलवान्, उत्पन्न वस्तुओं को भोगने वाला, और शत्रु जनों का नाश करने वाला होता है ॥ ९ ॥

अथ काकफलम्–

काके वाहनसंस्थिते यदि दशा स्याच्चंचलो निर्भयो–
वत्सारो मलिनःकुवेषधरितो नीचैर्जनैःपूजितः ।
स्थाने राजभयं तथा रिपुभयं मानापमानं नराद्
दुष्टार्तिः कलहं कुचेष्टितनरः स्त्रीद्वेषकारी भवेत् ॥ १० ॥

और जिसके दशाप्रवेश के समय दशाका वाहन कौआ होतो वह मनुष्य बडा चंचल; भयसे रहित, बडा मलिन, कुवेषी, नीच मनुष्यों से पूजा पाने वाला, राज तथा शत्रु भयसे युक्त; मानापमान पाने वाला, अत्यन्त पीडित, कलह करने वाला खोटे काम करने वाला और स्त्री से द्वेष करने वाला होता है ॥ १० ॥

अथ हंसवाहनफलम्–

जनकलानिधिकेलिसमन्वितो द्विजपतेर्बहुजात्यसुखान्वितः ।
सदशने मतिना प्रबलायता सुगतिता चतुराननवाहनः ॥११॥

जिसके दशाप्रवेश समय में दशाको वाहन हंस होतो वह मनुष्य अनेक कला वेत्ता, क्रीडा करने वाला; द्विजों के द्वारा सुखी, विरादरी में आदर पावे, प्रवलबुद्धि युक्त, और अन्त में सद्गति पाने वाला होता है ॥ ११ ॥

१ बृहत्पाराशरोक्तमिदमत एव मतिना इति व्याकरणरीत्याऽसाध्वपि पदं मार्षत्वात्समाधेयम् ।

मयूरवाहनफलम्—

मयुरवाहनतो बहुलं सुखं धृतिकलाकुशलो मखकेलिकृत ।
मधुरवाक्यमयुतो मधुरप्रियःस दशमेन नरस्य समन्वितः ॥ १२

जिसके दशाप्रवेश समय में मोर बाहन होतो वह मनुष्य बहुत सुख भोगने वाला, धैर्ययुक्त, अनेक कलाकुशल, यज्ञ और क्रीडा करने वाला,मधुर वाक्य बोलने वाला, मधुर वस्तु खाने वाला होता है किंतु दशाधिप दशमगत न होना चाहिये ॥

सूर्यमहादशाफलम्—

उद्विग्नचित्तपरिखेदितवित्तनाशं क्लेशप्रवासगदपीडमहाभिघातम् ।
संक्षोभितःस्वजनबंधुवियोगमेति सौरी दशा भवति राजकुलाभिघातः

सूर्य की महा दशामें मनुष्य उद्विग्न चित्तसे खेद पाने वाला,धनका नाश पावे, अनेक क्लेश, परदेश का निवास, रोगजन्य पीडा, महान् अभिघात (चोट),क्षोभयुक्त, भाई बन्दों से वियुक्त, और राजकुल से दुःख पाने वाला होता है ॥ १ ॥

सूर्यमध्ये सूर्यान्तर्दशाफलम्—

सूर्ये राजकुलाल्लाभः पीडा स्यात्पित्तसंभवा ।
विपत्तथा वांधवानां व्ययमेव हि सर्वतः ॥ २ ॥

जब सूर्यकी महादशा में सूर्यकी ही अंतर्दशा हो तो उस मनुष्य को राजकुलसे लाभ, पित्तके कोप से पीडा, बांधवों को विपत्ति, और सब समय खर्च होता रहै ।

सूर्यमध्ये चंद्रांतर्दशा फलम्—

शत्रुसंध्यादिगमनं वित्तलाभं सुखावहम् ।
भवेदंतर्दशायां हि सूर्यस्यैव यदा शशी ॥ ३ ॥

जब सूर्य महादशा में चन्द्रमा का अन्तर होतो जातक को शत्रु से सुलह (राजी नामा) विदेश गमन, सुख प्राप्ति, धन लाभ हो ॥ १ ॥

सूर्यमध्ये भौमांतर्दशाफलम्—

नृपाल्लाभःसुवर्णानि मणिरत्नप्रवालकम् ।
प्राप्यते यानमानं तु सूर्यस्यांतर्दशां कुजे ॥ ३ ॥

सूर्य महादशा में मंगलकी अन्तर्दशा होनो राजा से सुवर्ण मणि रत्न मूंगा, सवारी, तथा मानकी प्राप्ति पुरुष को होती है ॥ २ ॥

सूर्यमध्ये राह्वंतर्दशाफलम्—

शंकाऽमानं व्याधिकोपं वित्तनाशं जनक्षयम् ।
सर्वमत्राशुभं विद्यात्सूर्यस्यांतर्गतस्तमः ॥ ४ ॥

सूर्य महादशा में राहूकी अंतर्दशा हो तो शंका, अपमान, व्याधिकोप, धन नाश, स्वजन नाश आदि अनेक सभी अशुभ बातें होती हैं ॥ ४ ॥

सूर्यमध्ये गुर्वंतर्दशाफलम्—

गतव्याधिशरीरश्च अलक्ष्म्या त्यज्यते नरः ।
प्राप्नोति धर्मपदवीं भानोरंतर्गते गुरौ ॥ ५ ॥

सूर्य महादशा में गुरुकी अन्तर्दशा हो तो शरीर की समस्त व्याधि दूर हों, लक्ष्मी प्राप्ति, और धर्म पदवी की प्राप्ति होती है ॥ १ ॥

सूर्यदशामध्ये शनिफलम्—

राज्यभंगःशक्तिहानिःसुहृद्बन्धुविवर्जितः ।
जायते तत्र बैकल्यं सूर्यस्यांतर्गते शनौ ॥ ६ ॥

सूर्य महा दशामें शनिकी अन्तर्दशा हो तो राज्य भंग, नाश, भाई बन्दों का वियोग, और शरीर में विकलता होती है ॥ ५ ॥

सूर्यमध्येबुधांतर्दशाफलम्—

क्लेशःकष्टं च दारिद्र्यं पामा[1]विचर्चिकादिभिः ।

१—"पामेत्युक्ताः कण्डुमत्यः सदाहाः" "सकण्डूः पिडका श्यावा बहुस्रावा विचर्चिका" इत्येतद्रोगद्वयं माधवकरेणैकादशक्षुद्रकुष्ठेषु परिगणितम्, 'पाण्योर्या विचर्चिका, इति विचर्चिका पाण्योर्भवति "पादस्फोटो विपादिका" इति विचर्चिकैव पादयो र्भवन्ती सती विदारणयोगाद् विपद्यतेऽनयेति विपादिका (बिवांई) भवति इति स्थानभेदाद्भेदत्वम् न तु संख्यातिरेकः, 'सैव स्फोटैस्तीव्रदाहै रुपेतेत्यभिधानेन पामापि तीव्रदाहवृहत्स्फोटयुक्तैकप्रकारका कच्छूरेव भवति, वस्तुतस्तु पामाविचर्चिकयोरपि न कोऽपिभेदः 'कच्छ्वां तु पामपामा बिचर्चिकेत्यभिधानादिति इदमेवगदाधराद्याचार्याणा-मतम् "पायत्यङ्ग पै शोषणे इतिधानोर्मनिन्प्रत्ययः, पायतेदेहोऽस्माद्वा इति पामा पारक्षणे इति धातोर्मनिन् पिवति देहं वा इति इह स्त्रियां तु, नान्त लक्षणे न ङीप् ' मनः ' इति निषेधात् 'डाबुभाभ्यामिति डाव बा कर्तव्यः, चर्च अध्ययने इतिधातो र्विचर्च्यतेऽनयेति विग्रहे रोगाख्यायाँण्वुल् वोध्यः । विशेषरत्नाकरग्रंथेषु द्रष्टव्यम् ।

शरद्धान्यस्य निक्षिप्तं सूर्यस्यांतर्गते बुधे ॥ ७ ॥

जब सूर्य की महादशामें बुधकी अ'तर्दशा हो तो क्लेश, कष्ट, दारिद्र, पामादि (क्षुद्रकुष्ठ) रोगों से परिपीडित शरत्कालिक अन्नका नाश होता है ॥ ६ ॥

सूर्य मध्ये केत्व'तर्द'शाफलम्—

देशत्यागं बंधुनाशमर्थनाशं धनक्षयम् ।
केतावंतर्गते सूर्ये सर्वं चैवाशुभं भवेत् ॥ ८ ॥

सूर्य महादशामें केतु की अन्तर्द'शा होती है तब देशका त्याग, वन्धु नाश, धन नाश, आदि सब अशुभ फल होते हैं ॥ ७ ॥

सूर्य मध्ये शुक्रांतर्दशाफलम्—

शिरोरोगःप्रबलेभ्यो ज्वरातीसारशूलयोः ।
शरीरे क्लेशमाप्नोति सूर्यस्यांतर्गते भृगौ ॥ ९ ॥

सूर्य महा दशामें शुक्रकी अन्तर्दशा होतो शिरमें रोग, जबर्दस्तों से डर होवे, ज्वर, अतीसार, (दस्त माधवने छः प्रकार का कहाहै) शूलादि रोगोंकी उत्पत्ति और शरीर में क्लेश होते हैं ॥ ६ ॥

चन्द्रमहादशाफलम्—

सम्यग्विभूतिवरवाहनछत्रयानं क्षेमप्रतापबलवीर्यसुखानि तस्य ।
मिष्टान्नपानशयनासनभोजनानि चंद्रोददाति धनकांचनभूमिलाभम् ।

जब चन्द्रमाकी महादशा होती है तब अच्छी तरह विभूति, उत्तम छत्र सवारी की प्राप्ति, क्षेम प्रतापकी वृद्धि, बलवीर्य सुख मिष्टान्न पान, दिव्यशय्या, आसन, भोजन, और धन सुवर्ण भूमिकी प्राप्ति होती है ॥ १ ॥

चंद्रमध्येचन्द्रांतर्दशाफलम्—

चंद्रान्तःस्त्रीपुत्रलाभं वस्त्राभरणसंयुतम् ।
स्वपक्षगैश्च कल्याणमात्मनिद्रारतिर्भवेत् ॥ १ ॥

जब चन्द्र महादशामें चन्द्रांतर्दशा हो तो स्त्री पुत्र लाभ, वस्त्राभरण प्राप्ति, और अपने पक्षसे कल्याण, और निद्रामें विशेष प्रीति होती है ॥ १ ॥

चन्द्रमध्ये मंगलांतर्दशाफलम्—

अग्निपित्तकृता पीडा वह्निचौरपदच्युतिः ।
भवत्यंतर्दशायां च चन्द्रे भौमो गतो भवेत् ॥ १ ॥

चंद्र महादशामें मंगलकी अंतर्दशाहो तो मंदाग्निसे पीडा, पित्तजन्य व्याधि, अग्नि तथा चोर से भय, और स्वपद से च्युति होती है ॥ १ ॥

चंद्रमध्ये राहु फलम्—

रिपुरोगाग्निरुद्वेगो बंधुनाशो धनक्षयः ।
न किंचित्सुखमाप्नोति चन्द्रे राहुर्यदाऽनुगः ॥ १ ॥

चन्द्रमाकी महा दशामें राहुकी अंतर्दशा होतीहै तब शत्रु, रोग, और अग्निसे उद्वेग, बंधु नाश, धन क्षय, आदि दुःख प्राप्त होते हैं सुख तनिक भी न मिले ॥ १ ॥

चंद्रमध्ये गुरु फलम्—

धर्माधर्माप्तिसौख्यानि वस्त्रालंकरणैर्जयः ।
प्राप्नोत्यंतर्दशायां हि चन्द्रस्यैव गुरुर्यदा ॥ १ ॥

यदि चन्द्र महादशा में गुरुकी अंतर्दशा होती है तब धर्माधर्मके विचार से सुखों की प्राप्ति, वस्त्रा भूषणों से जय प्राप्त होता है ॥ १ ॥

चन्द्रमध्ये शनिफलम्—

बंधूद्वेगं शोकभयं हानिर्व्यसनदोषकम् ।
भवंति तत्र संदेहाश्चन्द्रस्यांतर्गते शनौ ॥ १ ॥

चन्द्र महादशा में शनिकी अंतर्दशा होती है तब बन्धुजनों से उद्वेग, शोक, भय, हानि, और अनेक प्रकार के व्यसनों से दोष एवं अनेक संदेह प्राप्त होतेहैं ॥

चन्द्रमध्ये बुधफलम्—

सर्वत्र लभते लाभं गजाश्वैर्गोधनादिकैः ।
भवत्यंतर्दशायां हि चन्द्रस्यांतर्गते बुधे ॥ १ ॥

अगर चन्द्र महादशा में बुधकी अन्तर्दशा हो तो सर्वत्र लाभ, और हाथी, घोडा, गैय्या, धन आदि अनेक पदार्थों का लाभ होता है ॥ १

चन्द्रमध्ये केतुफलम्—

चापल्यं चोद्वेगवृद्धिर्बंधुहानिर्धनक्षयः ।
जायतेंऽतर्गते केतौ चन्द्रस्यैव यदाऽनुगः ॥ १ ॥

चंद्र महादशा में केतुकी अन्तर्दशा होती है तब अति चपलता, उद्वेगकी वृद्धि, बन्धुजन नाश, धन क्षय होते हैं ॥ १ ॥

चंद्रमध्ये शुक्रफलम्—

बहुस्त्रीसंगमं चाथ कन्यकाजन्म एव च ।
मुक्ताहारमणिप्राप्तिश्चंद्रस्यांतर्गते सिते ॥ २ ॥

जब चंद्रमाकी महादशा में शुक्रकी अन्तर्दशा होती है तब अनेक स्त्रियों से संगम; कन्याका जन्म, मुक्ता हार तथा मणियों की प्राप्ति होती है ॥ २ ॥

चन्द्रमध्ये सूर्यफलम्—

जनप्रभावसौख्यं च व्याधिनाशं रिपुक्षयम् ।
ऐश्वर्यं सौख्यमतुलं चन्द्रमर्कोऽनुगो यदि ॥ १ ॥

जब चंद्रमाकी महा दशामें सूर्यकी अंतर्दशा हो तो मनुष्यों में प्रभाव, अनेक सुख, व्याधि नाश, शत्रु क्षय; अनेक ऐश्वर्य और अतुल सुखकी प्राप्ति होती है ॥

मंगल महादशाफलम्—

शस्त्राभिघातो नृपतेश्च पीडा चौर्याग्निरोगाश्च धनस्य हानिः ।
कार्याभिघातश्च नरस्य दैन्यं भवेद्दशायां धरणीसुतस्य ॥ १ ॥

जब मंगलकी महादशा होती है तब शस्त्रकी चोट लगे, राजाके द्वारा पीडाहो, चोरी, अग्नि तथा रोगों से भय होवे; और धनकी हानि, कार्य का नुकसान, और दीनता दुःख मनुष्यको होवे हैं ॥ १ ॥

भौमदशायां भौमांतर्दशाफलम्—

कौज्यां शत्रुविमर्दश्च विग्रहो बंधुभिःसह ।
रक्तपित्तकृता पीडा परस्त्रीसंगमो भवेत् ॥ १ ॥

जब मंगलकी महादशा में मंगलकी अन्तर्दशा होतीहै तब शत्रु के संग संग्राम, भाइयों से विरोध, पर स्त्री संगम और रक्त पित्तकी पीडा होती है ॥ १ ॥

भौममहादशायां राह्वंतर्दशाफलम्---

शस्त्राग्निचौरशत्रूणामापदां च भयं भवेत् ।
अर्थनाशो रुजापीडा राहौ मंगलवर्तिनि ॥ १ ॥

जब मंगलकी महादशा में राहुकी अंतर्दशा होती है तब शस्त्र; अग्नि,चोर, शत्रु तथा आपदसे भय, धन नाश, और रोग निमित्तसे पीडा होती है ॥ १ ॥

भौमदशायां गुर्वंतर्दशाफलम्---

पुण्यतीर्थाभिगमनं देवब्राह्मणपूजनम् ।
जीवे कुजांतरं प्राप्ते नृपात्किंचिद्भयं भवेत् ॥ १ ॥

जब भौमकी महादशामें बृहस्पति की अन्तर्दशा होती है तब पुण्य तीर्थकी यात्रा, देवता ब्राह्मणों का पूजन, और राजा द्वारा किंचिद्भय होता है ॥ १ ॥

भौमदशायां शन्यंतर्दशाफलम्--

उपर्युपरि जायन्ते दुःखान्यपि सहस्रशः ।
जनक्षयं कुजस्यार्कीया प्राप्तांतर्दशा यदा ॥ १ ॥

जब भौममहादशामें शनिकी अंतर्दशा होती है तब हजारों दुःख ऊपर से होते रहते हैं, और मनुष्यों का नाश होता है ॥ १ ॥

भौममध्ये बुधांतर्दशाफलम्---

रिपुशस्त्राग्निचौरेभ्योनाशं प्राप्नोति मानवः ।
महाक्रूरकृता पीडा कुजस्यानुगते बुधे ॥ १ ॥

मंगल महादशा में बुधान्तर्दशा आती है तो शत्रु, शस्त्र; चोर अग्नि से भय और महाक्रूर मनुष्यकृत पीडा होती है ॥ १ ॥

भौममध्ये केतुफलम्—

मेघाशनिभयं घोरं शस्त्राग्नितस्करैस्तथा ।
क्लेशमाप्नोति भौमस्य केतुरंतर्गतो यदा ॥ १ ॥

जब मंगल महादशा में केतुकी अन्तर्दशा होती है तब मेघ बिजली का घोर भय, शस्त्र, अग्नि और चोर से क्लेश होता है ॥ १ ॥

भौममध्ये शुक्रफलम्—

शस्त्रकोपभयं व्याधिर्धनक्षयमुपद्रवम् ।
प्रवासगमनानि स्युःकुजस्यांतर्गते सिते ॥ २ ॥

अगर भौम महादशा में शुक्रान्तर्दशा होवे तब शस्त्र कोपसे भय व्याधि, धनक्षय, उपद्रव और प्रदेश गमन होता है ॥ १ ॥

भौममध्ये रविफलम्—

प्रचण्डशासनं वाति नृपाद्धयजयान्वितम् ।
क्षुवतेऽनर्थयुक्तं च भौमस्यान्तर्गते रवौ ॥ १ ॥

जब मंगल महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा होती है तब उस पुरुषका शासन बड़ा प्रचण्ड रहता है, तथा राजा के साथ बाजी (होड़) बदकर घोड़ा जीते, और अनर्थ युक्त होता है ॥ १ ॥

भौममध्ये चन्द्रफलम्—

नानाविक्तसुहृत्सौख्यं मुक्तं मुक्तामणिःप्रभोः ।
भौमस्यांतर्दशां प्राप्तश्चंद्रमाःकुरुते भृशम् ॥ १ ॥

जब मंगलकी महादशा में चन्द्रमाकी अंतर्दशा होती है तब अनेक प्रकारके धन मित्र और सुख तथा राजाद्वारा मणि गणकी प्राप्ति होती है ॥ १ ॥

राहुमहादशाफलम्—

बुद्ध्या विहीनमतिविभ्रमसर्वशून्यं विध्वं भयातिविषमापदमृत्युतुल्यम्
व्याधिर्वियोगधनहानिविषानिचैवं राहोर्दशासृजति जीवितसंशयं च

जब मनुष्यको राहुकी महादशा होती है तब बुद्धि से हीन, भ्रम संयुक्त, सर्व शून्य, मरने के तुल्य, अति विषम आपत्ति भोगने वाला, शरीर में व्याधियुक्त, प्रिय वियोग वाला, धन नाशयुक्त, और जीने के संदेह युक्त होता है ॥ १ ॥

राहुमध्ये राहुफलम्—

स्वभ्रातृतातमरणं बंधुनाशात्मकं रुजा ।
अर्थनाशो विदेशस्य गमनं गौरबाल्पता ॥ १ ॥

जब किसी के राहुकी महादशा में राहुकी ही अन्तर्दशा होती है तब उसके भाई तथा पिताका मरना, बन्धु नाश से शरीर में रोग, धनका नाश, परदेश का गमन और लोगों में उसका कुछ भी बडप्पन न रहे ॥ १ ॥

राहुमध्ये गुरुदशाफलम्—

व्याधिदुःखपरित्यक्तो देवब्राह्मणपूजनः ।
भवत्यर्थयुतश्चात्र राहोरन्तर्गते गुरौ ॥ १ ॥

जब राहु महादशामें गुरुकी अंतर्दशा होती हैं तब व्याधि से दुःखसे रहित, देवता ब्राह्मणों का पूजन करने वाला, और धनयुक्त होता है ॥ १ ॥

राहुमध्ये शनिफलम्—

रक्तपित्तकृता पीडा कलहःस्वजनैःसह ।
देहभंगःकृतत्यागो राहोःतर्गते शनौ ॥ १ ॥

जब राहुकी महादशा में शनिकी अंतर्दशा होती है तब रक्तपित्त की पीडा, स्वजनों से कलह, और देहके कर चरणादि किसी अवयवका टूट जाना, किये हुए कर्म को मूर्खता से त्यागदे ॥ १ ॥

राहुमध्ये बुधफलम्—

सुहृद्बंधुजनैर्योगं बुद्धिभोगधनागमम् ।
किंचित्क्लेशमवाप्नोति स्वर्भान्वंतर्गते बुधे ॥ १ ॥

जब राहु महादशा में बुधांतर्दशा होती है तब मित्र भाई बन्दों के साथ खूब मेल रहे और बुद्धि धन तथा भोगकी बुद्धि हो एवं किसी कारण वश किंचित क्लेश हो ॥ ३ ॥

राहुमध्ये केतुफलम्—

ज्वराग्निरिपुशस्त्रैश्च मृत्युं प्राप्नोति पूरुषः ।
राहोरंतर्गते केतौ नास्त्यत्र संशयःक्वचित् ॥ ५ ॥

जब राहुकी महादशामें केतुकी अंतर्दशा होती है तब मनुष्य ज्वर, अग्नि शत्रु तथा शस्त्रों से मृत्युको प्राप्त होता है इसमें नेकभी संदेह नहीं है ॥ ५ ॥

राहुमध्य शुक्रफलम्—

सुहृत्तापःकामिता स्यात् स्त्रीलाभो वित्तसंचयः ।

कलहो बांधवैःसार्द्धं राहोरंतर्गते सिते ॥ १ ॥

जब राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा होती है तब मित्र के निमित्त से ताप, कामीपन ज्यादः होवे, स्त्रीलाभ, धनलाभ तथा भाई बन्दोंसे कलह होताहै॥१॥

राहुमध्ये सूर्यफलम्---

शस्त्ररोगभयं घोरमर्थनाशं नृपाद्भयम् ।
अग्निचौरभयं चात्र दैत्यस्यांतर्गते रवौ ॥ १ ॥

जब राहु महादशा में सूर्यका अन्तर आपडे तो शस्त्र तथा रोगसे घोर भय, धन नाश, राजा से भय, अग्नि और चोर से भय होता है ॥ १ ॥

राहुमध्ये चन्द्रफलम्----

स्त्रीलाभं कलहं चैव वित्तनाशमनिर्वृतिः ।
बांधवैःसह संक्लेशो राहोरंतर्गतःशशी ॥ १ ॥

जब राहु की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा होती है तब स्त्री लाभ, कलह, धन नाश, अत्यन्त कष्ट, और भाई वन्दों से कलह होता है ॥ १ ॥

राहुमध्ये भौमफलम्--

रिपुशस्त्राग्निचौराणां भयमाप्नोति सर्वदा ।
स्वर्भान्वन्तर्गते भौमे निश्चितं नात्र संशयः ॥ १ ॥

जब राहु महादशा में मंगल की अन्तर्दशा होती हैं तब शत्रु, शस्त्र, अग्नि तथा चोरों से सर्वदा भय प्राप्त होता है इसमें सन्देह नहीं ॥ १ ॥

गुरु महादशाफलम्----

नृपप्रसादं धनधान्यपुत्रकलत्रमित्रादिसुरत्नलाभम् ॥
नीरोगतां शत्रुजयं च सौख्यं गुरोर्दशा वांछितमातनोति॥१॥

जब मनुष्य को गुरु की महादशा लगती है तब राजासे आदर प्राप्त हो, मित्र और रत्नों का लाभ, शरीर में नीरोगता, शत्रु का जय. और अनेक प्रकार सुख तथा मनोरथ पूर्ण होता है ॥ १ ॥

गुरुमध्ये गुरुफलम्---

जैव्यन्तरे सुतोत्पत्तिर्धनधर्मार्थगौरवम् ॥

हेम्नश्चांबरलाभश्च वर्णेभ्यो ह्यतिसंचयः ॥ १ ॥

अगर गुरु महादशा में गुरुका ही अंतर हो तो चिरंजीव पुत्रकी प्राप्ति, बुद्धि धन धर्मकी बृद्धि हो, सुवर्ण वस्त्रों का लाभ, सब वर्ण के लोगों से काफी धन मिलता है ॥ १ ॥

गुरुमध्ये शनिफलम्—

वेश्यास्त्रीमद्यपानैश्च भूषितःसुखवर्जितः ।
विलुप्तधर्मवस्त्रोऽसौ सौरिर्गुर्वनुगो यदा ॥ १ ॥

जब गुरुकी महादशामें शनिकी अन्तर्दशा होती है तब वेश्या से समागम, मद्यपान से युक्त, सुखसे हीन, वस्त्रसे रहित, धर्म लोप होता है ॥ १ ॥

गुरुमध्ये बुधफलम्—

स्वस्थो मित्रयुतो भोगी गुरुदेवाग्निभक्तिकृत् ॥
सुकृताचरणे शक्तो जीवस्यांतर्गते बुधे ॥ १ ॥

यदि गुरुकी महादशामें बुधका अन्तर आपडे तो वह मनुष्य तन्दुरुस्त रहे, मित्रों से युक्त, भोगों का भोगने वाला, गुरु देवता तथा अग्नि के पूजन और सत्कर्म करने में लगा रहे ॥ १ ॥

गुरुमध्ये केतुफलम्—

पुत्रबंधुक्षतो भोगायुक्तःस्वस्थानवर्जितः ॥
परिभ्रमति सर्वत्र केतावंतर्गते गुरोः ॥ १ ॥

जब गुरु महादशा में केतुकी अंतर्दशा आजाती है तब पुत्र तथा भाईयों के निमित्त चोट खाने वाला, भोगों से रहित अपने स्थान से भ्रष्ट होकर इतस्ततः भ्रमण करने वाला होता है ॥ १ ॥

गुरुमध्येशुक्रफलम्—

कलहं शत्रुवैरं च वित्तमानसानिर्वृतिः ।
स्त्रीभ्यो विघातमाप्नोति जीवस्यांतर्गते सिते ॥ १ ॥

अगर बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा होती है तब कलह, शत्रु से बैर, धन और मानसिक चिन्ता और स्त्रियोंके कारण पीडा प्राप्त होती है ॥१॥

गुरुमध्ये रविफलम्—

शत्रूणां संजयं सौख्यं नृपपूजा च लभ्यते ।

प्रचंडसाहसांगैश्च जीवस्यांतर्गते रवौ ॥ १ ॥

जब किसी को गुरु की महादशामें सूर्य की अन्तर्दशा आजाय तब शत्रुओं का जय, सुख, राज से मान होता है, और प्रचण्ड साहस युक्त होता है ॥ १ ॥

गुरुमध्ये चन्द्रफलम्—

बहुस्त्रीरतिभोगश्च रिपुभोंगाविवार्जितः ।
नृपतुल्यो भवेन्नित्यं चंद्रे गुर्वंतरं गते ॥ १ ॥

अगर गुरु महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो अनेक स्त्रियों के साथ रति भोग प्राप्त हो, शत्रुजनों को दुःख होता है, और राजा के समान वह मनुष्य होता है ।

गुरुमध्ये भौमफलम्—

तीक्ष्णशौर्यरिपुं जित्वा धनं कीर्तिमवाप्नुयात् ।
सुखसौभाग्यमारोग्यं गुरोरन्तर्गते कुजे ॥ १ ॥

जब कि जातक को गुरु महादशा में मंगल की अन्तर्दशा आजगती हैं तब अधिक वली शत्रु को जीत कर धन तथा कीर्ति की प्राप्ति होवे, एवं सुख सौभाग्य और आरोग्य होता है ॥ २ ॥

गुरुमध्ये राहुफलम्—

वंधूद्वेगं रुजञ्चैव कलहं मरणाद्भयम् ।
स्वस्थानच्युतिमाप्नोति राह्रावंतर्गते गुरोः ॥ १

जब गुरु महादशा में राहु का अन्तर आजाय तो जातक के बन्धु जनों को घबराहट एवं रोग हो; स्वयं के भी टन्टे झगडे औरों के साथ होते हैं, मरने का भय, और स्वस्थान से हट जाय ॥ १ ॥

शनिमहादशाफलम्—

मिथ्यापवादवधबंधनिराश्रयं च मित्रातिवैरधनधान्यकलत्रशोकम् ।
आशानिराशकृतनिष्फलसर्वशून्यं कुर्याच्छनैश्चरदशासततंनराणाम्

जब मनुष्य को शनि की महादशा आती है तब झूठी बदनामी, जेल तथा फांसी तक की भी नौबत आ पडे, आश्रय का नाश, मित्रों से अत्यन्त वैर,

धन धान्य और स्त्री के कारण शोक, आशा का नाश सब कार्यों का वैफल्य, और सब कामों में हानि होती है ॥ १ ॥

शनिदशायां शन्यन्तर्दशाफलम्—

शनैश्चराद्देहपीडा पुत्रदारैश्च विग्रहः ।
स्त्रीकृते बुद्धिनाशश्च विदेशगमनं भवेत् ॥ १ ॥

जब किसी को शनि की महादशा में शनि का ही अन्तर होता है, तब देह में पीडा, पुत्र स्त्री से कलह, और स्त्री के निमित्त से बुद्धि का नाश, और विदेशगमन होता है ॥ १ ॥

शनिमध्ये बुधफलम्—

सौभाग्यं सौख्यविजयं बोधसंस्थानमानतः ।
सुहृद्वित्तप्रदं सौख्यं सौरस्यांतर्गते बुधे ॥ १ ॥

जब शनि का महादशा में बुध का अन्तर आवे तो सौभाग्य सौख्य और विजय प्राप्त होते हैं, तथा बुद्धि श्रेष्ठ हो, स्थान और मानकी प्राप्ति हो, और अपने मित्रों की तरफ से धन और सुख होता है ॥ १ ॥

शनिमध्ये केतुफलम्—

रक्तपित्तकृता पीडा वित्तचिंता न संग्रहः ।
दुःस्वप्नं बंधनं चैव केतावंतर्गते शनेः ॥ १ ॥

जब कि किसी को शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा होती है तब रक्त पित्त जन्य पीडा, धन की चिन्ता, तथा संगृहीत धन का भी नाश; दुःस्वप्न और बन्धनादि दुःख होते हैं ॥ १ ॥

शनिमध्ये शुक्रफलम्—

सुहृद्बंधुवशीयुक्तं भार्यावित्तजयान्वितम् ।
सुखसौभाग्यवात्सल्यं सौरस्यांतर्गते सिते ॥ १ ॥

अगर शनिकी महादशामें शुक्रका अन्तर हो तो बन्धु तथा मित्रों से बड़ा मेल होवे, पत्नी धन और जयकी प्राप्ति, सुख सौभाग्य और वात्सल्यगुण प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥

अथ शनिमध्ये सूर्यफलम्—

पुत्रदारधनैर्नाशं करोति समयं महत् ॥
सौरस्थांतर्गते भानौ जीवितस्यापि संशयः ॥ १ ॥

जब शनिकी महादशा में सूर्यकी अंतर्दशा आतीहै तो पुत्र स्त्री धनका नाश, समय बडी कठिनता से गुजरे; और प्राण बचने का भी संदेह हो ॥ १ ॥

अथ शनिमध्ये चन्द्रफलम्—

मरणं स्त्रीवियोगश्च बंधूद्वेगोऽसुखं श्रृणु ।
क्रुद्धमारुरुजो रोगं चंद्रे चांतर्गते शनेः ॥ १ ॥

जब शनिकी महादशामें चन्द्रमा का अंतर आपडे तो मरण तुल्य कष्ट, स्त्री वियोग, भाई जनोंको उद्वेग, दुःखका श्रवण, क्रोध और रोग होते हैं ॥ १ ॥

अथ शनिमध्ये भौमफलम्—

देशभ्रंशं तथा दुःखं कुरुते व्याधिभ्रंशताम् ।
अंतर्दशायां सौरस्य कौज्यां प्राणमहद्भयम् ॥ १ ॥

जब शनि महादशा में मंगलकी अन्तर्दशा होती है तब देशसे भ्रंश, अनेक दुःख, तथारोगवढें स्थान से भ्रंश और मरण से भय होता है ॥ १ ॥

अथ शनिमध्येराहुफलम्—

श्वभ्रावातांगभेदश्च ज्वरातीसारपीडनम् ।
शत्रुभंगोऽर्थनाशश्च राहोरंतर्गते शनौ ॥ १ ॥

जब शनि महादशामें राहुकी अन्तर्दशा आ लगे तो किसी श्वभ्र (गड्ढा) में पतन, वायु से शरीर में हड़फूटन, ज्वर तथा अतीसार (दस्तों की बीमारी),सेपीड़ाशत्रुसे पराजय, और धनका नाश होता है ॥ १ ॥

अथ शनिमध्ये गुरुफलम्—

द्विजदेवार्चनं सौख्यं बहुभृत्यगुणैर्युतम् ।
स्थानप्राप्तिं गुरुः कुर्य्यात्सौरस्यांतर्गतो भवेत् ॥ १ ॥

अगर शनि महादशामें बृहस्पति का अन्तर हो तो ब्राह्मण तथा देवताओं का

पूजन, करे तथा सुख प्राप्तहो, अनेक भृत्य तथा गुणों की प्राप्ति, और स्थान (अधिकार) की प्राप्ति होती है ॥ १ ॥

अथ बुधमहादशाफलम्—

दिव्यांगनावदनपंकजषट्पदस्य लीलाविलासवरभोगसमन्वितस्य।
नानाप्रकारविभवागमकोशवृद्धिः क्षिप्रंपुनर्बुधदशाभिमतार्थसिद्धिम्।

जब मनुष्यको बुधकी महादशा आती है तब दिव्य स्त्रियों के सम्बन्ध से उनके मुखमकरंदका पान, लीलाओं में विलास; अनेक प्रकार का भोग, नाना प्रकार के वैभवों की प्राप्ति, और कोश की वृद्धि होती है ॥ १ ॥

अथ बुधमध्ये बुधफलम्—

बुद्धिधर्मसमायोगो मित्रबंधुसमागमः ।
प्राप्तिर्ज्ञानस्य विपुला देहपीडा प्रकोपनम्

जब बुधकी महादशामेंबुधकी ही अन्तर्दशा होतीहै तब बुद्धि और धर्मसे योग, मित्र तथा बन्धुजन से समागम, विपुल ज्ञानकी प्राप्ति और शरीर में पीडाका कोप (आधिक्य) होता है ॥ १ ॥

अथ बुधमध्ये केतुफलम्—

दुःखशोकाकुलं नित्यं शरीरं क्लेशसंयुतम् ।
भवत्यंतर्दशायां हि केतुर्यदि बुधस्य च ॥ १ ॥

जब पुरुषको बुध महादशा में केतुकी अंतर्दशा आती है तबहमेशा दुःख शोक से आकुल रहे तथा शरीर में क्लेश होते हैं ॥ १ ॥

अथ बुधमध्ये शुक्रफलम्—

गुरुवस्त्राणि लभ्यंते धनंधर्मप्रियं तथा ।
वस्त्रालंकरणैर्युक्तं बुधस्यांतर्गतःसितः ॥ १ ॥

जब पुरुषको बुधकी महादशामें शुक्रको अन्तर्दशा आती है तब उत्तम वस्त्रोंकी प्राप्ति, धनकी प्राप्ति, धर्म कर्म में रुचि, और वस्त्राभूषणकी प्राप्ति होती है ॥१॥

अथ बुधमध्ये रविफलम्—

स्वर्णादिकं भवेत्प्राप्तं यशःप्राप्नोति सर्वतः ।

जायास्वस्त्रीभवोद्वेगो बुधस्यांतर्गते रवौ ॥ १ ॥

जब मनुष्य को बुध महादशा में सूर्य की दशा आती है तब सुवर्णादिक की प्राप्ति, सबतरह यशप्राप्ति, और अपनी स्त्रीके निमित्त उद्वेग की प्राप्ति होतीहै ॥१॥

अथ बुधमध्ये चन्द्रफलम्—

कुष्ठगंडविकारैश्च क्षयरोगभगंदरैः ॥
गजादिवाहनैर्भीतिर्बुधस्यान्तर्गतो विधुः ॥ १ ॥

जब कि बुध महादशा में चन्द्रमा का अन्तर हो तो शरीर में कुष्ठ, गण्ड-मालारोग, क्षयरोग, भगंदर और हाथी आदि वाहनों से गिरनेका भय होताहै॥१॥

अथ बुधे भौमफलम्—

शिरोरोगगलेरोगैर्नानाक्लेशविमर्दनम् ॥
चौर भंग भयं चाथ बुधस्यांतर्गते कुजे ॥ १ ॥

अगर बुध महादशा में मंगल का अन्तर हो तो शिर में रोग, गले में रोग, अनेक क्लेश, और चोर से भय होता है ॥ १ ॥

अथ बुधे राहुफलम्—

अकस्माच्छत्रुनिर्घातमकस्मादर्थनाशनम् ॥
संपर्कादग्निदाहं च राहोरंतर्गते बुधे ॥ १ ॥

अब कि किसीको बुध महादशा में राहु की अन्तर्दशा हो तो अकस्मात् शत्रु से पीडा, अकस्मात् धन का नाश, और अग्नि से भय होते हैं ॥ १ ॥

अथ बुधमध्ये बृहस्पतिफलम्—

व्याधिशत्रुभयैर्मुक्तो ब्रह्मिष्ठो नृपवल्लभः ॥
पूतात्मा धर्मकश्चैव बुधस्यांतर्गते गुरौ ॥ १ ॥

जब बुध महादशा में बृहस्पति का अन्तर आता है तब व्याधि और शत्रु भय से निवृत्ति, ब्रह्म का विचार, राजा से स्नेह, पवित्रता, और धर्म में प्रवृत्ति ये सब बातें होती हैं ॥ १ ॥

अथ बुधमध्ये शनिफलम्--

धर्मार्थभोगी गंभीरः क्लीबो मित्रार्थलुब्धकः ॥
सर्वकार्येष्वनुत्साहो बुधे सौरो यदाऽनुगः ॥ १ ॥

जब मनुष्य को बुध महादशा में शनि का अन्तर आता है तब धर्म तथा धन का भोगने वाला, बडा गम्भीर, नपुंसक, मित्रों के धन का लेने वाला, और सब कामों में उत्साह रहित वह पुरुष होता है ॥ १ ॥

अथ केतुमहादशाफलम्--

विषादकर्त्री धनधान्यहर्त्री सर्वापदां मूलमनर्थदात्री ॥
भयंकरी रोगविपद्विधात्री केतोर्दशा स्यात् किल जीवहंत्री॥

जब कि केतु की महादशा होती है तब उस पुरुष को अनेक तरह के विषाद, धन धान्य का नाश, सब आपत्तिओं की प्राप्ति, अनेक तरह के अनर्थ, भय, रोग, विपत्ति यहां तक कि अन्त में प्राणों का भी नाश हो ॥ १ ॥

अथ केतुमध्ये केत्वन्तर्दशाफलम्--

केतौ कन्यापुत्रनाशधनरोगाग्निविग्रहाः ॥
भयं राजकुलाद्दुष्टस्त्रीभिस्सह कलिर्भवेत् ॥ १ ॥

जब मनुष्यको केतु महादशामें केतुकाही अन्तर हो तो कन्यापुत्र मरण,धननाश, रोग, अग्नि का भय, विरोध, राजकुल से भय; और दुष्ट स्त्रियों से कलह होताहै।१।

अथ केतुमध्ये शुक्रफलम्--

केतोरंतर्गते शुक्रे प्रियया च कलिर्भवेत् ॥
अग्निदाहं ज्वरं तीव्रं स्त्रीत्यागं कन्यकाजनिः ॥ १ ॥

जब मनुष्य को केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा आती है तब स्त्री से कलह, अग्नि से दाह, तीव्र ज्वर, कुछेक दिनों तक किसी कारण वश, स्त्री का त्याग; और पीछे कन्या का जन्म भी होता है ॥ १ ॥

अथ केतु मध्ये रविफलम्--

केतोरंतर्गते सूर्ये राजभंगोऽरिविग्रहः ॥
अग्निदाहो ज्वरस्तीव्रो विदेशगमनं भवेत् ॥ १ ॥

जब मनुष्य को केतु महादशा में सूर्यान्तर आता है तब राजा द्वारा पीडा, वैरिजन विरोध, अग्नि दाह; तीव्रज्वर, और प्रदेश गमन होता है ॥ १ ॥

अथ केतुमध्ये चन्द्रफलम्—

अर्थलाभोऽर्थहानिश्च सुखं दुःखं तथैव च ॥
स्त्रीलाभो धनहानिश्च केतोरंतर्गतःशशी ॥ १ ॥

जब केतु महादशा में चन्द्रान्तर होता है तो धन का लाभ; और धन का नाश, सुख और दुःख की प्राप्ति, स्त्री लाभ और धन का नाश होता है ॥ १ ॥

अथ केतुमध्ये भौमफलम्—

गोत्रजैःसह संवादश्चौराणां च भयं तथा ॥
शरीरपीडां प्राप्नोति केतोरंतर्गते कुजे ॥ १ ॥

जब मनुष्य को केतु महादशा में मंगल का अन्तर होता है तब गोत्र के मनुष्यों से झगडा; चोरों का डर, शरीर में पीडा होती है ॥ १ ॥

अथ केतुमध्ये राहुफलम्—

चौरैश्च शत्रुभिर्वापि देहभंगः प्रजायते ॥
दुर्जनैःसह संवादो राहुःकेतोर्यदानुगः ॥ १ ॥

जब मनुष्य को केतु की महादशा में राहन्तर हो तो चोर या शत्रुओं से देह-भंग, और दुष्ट मनुष्यों से झगडा होता है ॥ १ ॥

अथ केतुमध्ये गुरुफलम्—

दुर्जनैःसह संयोगो राजमान्यैःसहाथवा ॥
भूलाभो जन्म पुत्रस्य केतोरंतर्गते गुरौ ॥ १ ॥

जब मनुष्य को केतु महादशा में गुरु की अन्तर्दशा आती है तब दुर्जनों से संयोग, या राजमान्य, मनुष्यों से संयोग, भूमि लाभ और पुत्र जन्म होता है १।

अथ केतुमध्ये शनिफलम्—

वातपित्तभवा पीडा स्वजनैःसह विग्रहः ॥
विदेशगमनं चापि केतोरंतर्गते शनौ ॥ १ ॥

जब केतु महादशा में शनि की अन्तर्दशा आती है तब मनुष्य को वातपित्त जन्य पीडा; स्वजनों से कलह; और प्रदेश गमन होता है ॥ १ ॥

अथ केतुमध्ये बुधफलम्—

सुहृद्बंधुसमायोगो बुद्धिबोधं धनागमम् ॥
न किंचित्क्लेशमाप्नोति केतोरंतर्गते बुधे ॥ १ ॥

जब कि केतु महादशा में बुधान्तर आता है तब मनुष्य को अपने सुहृद्बन्धु वर्गों से संयोग, बुद्धि बोध, धन प्राप्ति, और कभी जरा भी क्लेश नहीं होता है ।१।

अथ शुक्रमहादशाफलम्—

मित्रोपचारमनिशं प्रमदाविलासं श्वेतातपत्रनृपपूजितदेशलाभम् ।
हस्त्यश्वयानपरिपूर्णमनोरथाश्च शौक्री दशा सृजति निश्चलराज्यलक्ष्मीं ॥

जब शुक्र की महादशा होती है तब उस मनुष्य को मित्रों से उत्तम उत्तम वस्तुओं की प्राप्ति; स्त्रियों से संभोग विलास, श्वेतछत्र, राज्य प्राप्ति, देश लाभ, तथा हाथी, घोड़ा और सुन्दर सवारियों की प्राप्ति, मनोरथों की पूर्ति; और निश्चल राज्यलक्ष्मी की प्राप्ति होती है ॥ १ ॥

अथ शुक्रमध्ये शुक्रफलम्—

शौक्रे स्त्रीसंगमो लाभो धर्म्मकामार्थसंयुतः ॥
कौशल्यं च महाकीर्तिर्निधिलाभश्च जायते ॥ १ ॥

जब शुक्र की महादशा में शुक्र की ही अन्तर्दशा होती है तब स्त्री से समागम, लाभ, धर्मार्थ काम से युक्त, कौशल्य, महाकीर्ति और खज़ाने का लाभ होताहै ॥१॥

अथ शुक्रमध्ये रविफलम्—

गंडोदरक्षयै रोगैर्नृपवंध्यादिकैतवैः ॥
उपपातो भवेन्नूनं शुक्रस्यांतर्गते रवौ ॥ १ ॥

जब मनुष्य को शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा होती है तब गंडरोग, उदर रोग क्षयरोग, राजा, वन्ध्या स्त्री और कपटी मनुष्यों के द्वारा अवश्य किसी प्रकार का खेद होता है ॥ १ ॥

अथ शुक्रमध्ये चन्द्रफलम्—

नखास्थिजशिरोरोगैःकामलाद्यामयैर्दशाम् ॥
शरीरे क्लेशमाप्नोति शुक्रस्यांतर्गतःशशी ॥ १ ॥

जब कि मनुष्य को शुक्र की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा लग जाती है तब नख हड्डियां, तथा शिरमें अनेक रोग, और कामला आदि रोगों से शरीर में क्लेश होता है ॥ १ ॥

अथ शुक्रमध्ये भौमफलम्—

वातपित्तक्षयो रोगो मदोत्साहो न संशयः ।
भूयःस्याद्भूमिलाभश्च शुक्रस्यांतर्गते कुजे ॥ १ ॥

यदि मनुष्यको शुक्र महादशामें मंगलकी अन्तर्दशा आतीहै तब वातपित्त रोग, क्षयरोग, मद, उत्साह और पृथिवी का लाभ होता है ॥ १ ॥

अथ शुक्रमध्ये राहुफलम्—

अंत्यजैःसह संक्लेशोबंधूद्वेगः सुहृद्वधः ।
अकस्माद्भयमाप्नोति राहोरन्तर्गते सिते ॥ १ ॥

अगर मनुष्यको शुक्रकी महादशा में राहुकी अन्तर्दशा होती है तब चांडाल मनुष्यों से क्लेश, भाई जनों से उद्वेग; सुहज्जनों का बध, और अकस्मात् भय होता है ॥ १ ॥

अथ शुक्रमध्ये गुरुफलम्—

धान्यरत्नसमृद्धिं च भूमिपुत्रसुखावहम् ।
श्रियं प्रभुत्वमाप्नोति जीवःशुक्रदशां गतः ॥ १ ॥

जब कभी मनुष्यको शुक्रकी दशा में गुरुकी अन्तर्दशा आजाती है तब धान्य रत्नसे समृद्ध (संपन्न) जमीन और पुत्रों से सुख पाने वाला, और लक्ष्मी तथा प्रभुत्वका पाने वाला होता है ॥ १ ॥

अथ शुक्रमध्ये शनिफलम्—

वृद्धस्त्रीभिःसह क्रीडा पुत्रनाशो विपत्पदम् ।
शत्रुनाशःसुखप्राप्तिःसौरःशुक्रदशां गतः ॥ १ ॥

जब कि मनुष्यको शुक्रकी महादशा में शनिकी अन्तर्दशा आ लगे तब वृद्ध स्त्रीयोंसे संभोग, पुत्रका मरण, विपत, शत्रु का नाश, और अन्तमें जाकर कुछ सुख प्राप्त होता है ॥ १ ॥

अथ शुक्रमध्ये बुधफलम्—

धनागमश्च सौख्यं च मनोरथयशःश्रियः ।
नृपवल्लभता शौर्यं शुक्रस्यांतर्गते बुधे ॥ १ ॥

जब कि मनुष्यको शुक्रकी महादशा में बुधकी अन्तर्दशा आ लगे तब धनके आगम से सुख, मनोरथ पूर्ति, यश, लक्ष्मी, राजासे स्नेह, और शूरवीरता ये सब प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥

अथ शुक्रमध्ये केतुफलम्—

कलहो बांधवैःसार्द्धं रिपुनाशोऽरिविग्रहः ।
चलाचलं समग्रं च केतावंतर्गते कवेः॥ १ ॥

जब शुक्रकी महादशा में केत्वंतर्दशा आ लगती है तब भाइयों से कलह, शत्रु नाश, तथा कभी २ फिर शत्रुओं से विग्रह, और ये सब हालत कभी जमी रहैं तथा कभी नष्ट हो जांय ॥ १ ॥

अथाष्टोत्तरी महादशान्तर्दशाफलम् लिख्यते—

तत्रादौ सूर्य महादशाफलम्—

रवेर्दशायामतितीक्ष्णभोज्यं प्राप्नोति मानोपचयं महांतम् ।
धनानि चामीकरसंप्रशांतं संजायते बंधुसुखं शुभं च ॥ १ ॥

जब जातक को अष्टोत्तरी दशामें सूर्य की महादशा आ जाती हैं तब मनुष्यको अति तीक्ष्ण रुचिकर भोजन, मानकी वृद्धि, अनेक प्रकार धन सुवर्ण, भाई जनों से सुख और सब शुभ प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥

अथ सूर्य मध्ये सूर्य फलम्—

बंधूनां स्वांतरे मानो बंधूनां मरणं भवेत् ।
प्रत्यंतरे चांतरादौ सर्वमेव फलं वदेत् ॥ २ ॥

जब मनुष्यको सूर्य में सूर्य की ही अंतर्दशा आती है तब भाइयों का मान, तथा कुछेक भाइयोंका मरण, और यही सब फल अन्तर तथा प्रत्यन्तरमें भी होताहै॥

सूर्य मध्ये चन्द्रफलम्—

शत्रुनाशोऽर्थलाभश्च चिन्तानाशः सुखागमः ।

सूर्यस्यान्तर्गते चन्द्रे व्याधिनाशश्च जायते ॥ ३ ॥

अगर किसी मनुष्यको सूर्य महादशा में चन्द्रमा का अन्तर आ लगे तो वैरि नाश, धनलाभ, चिन्तानाश, सुख प्राप्ति, रोगनाश होवें ॥ ३ ॥

अथ सूर्यमध्ये भौमफलम्—

प्रवालमुक्ताहेमादिधनं प्राप्नोति भूपतेः ।
रवेरंतर्गते भौमे विभूतिःसुखमद्भुतम् ॥ १ ॥

जब कि मनुष्यको सूर्य की दशा में मंगलकी अंतर्दशा आती है तब मूँगा, मोती, सुवर्णादि धन, राजा से प्राप्त होते हैं, और अद्भुत विभूति और सुख प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥

अथ सूर्यमध्ये बुधफलम्—

ग्रहवातव्याधिहानिर्द्रव्यनाशःकुलक्षयः ।
अविश्वासो भवेल्लोके रवेरंतर्गते बुधे ॥ १ ॥

जब मनुष्यको सूर्य महादशा में बुधकी अन्तर्दशा आती है तब ग्रह तथा वात निमित्त व्याधि, हानि, द्रव्य नाश, कुल नाश, लोकमें अविश्वास होता है ॥ १ ॥

अथ सूर्यमध्ये शनिफलम्—

महादुःखानि जायंते पुत्रमित्रविनाशनम् ।
रवेरंतर्गते मंदे शत्रुतश्च भयं भवेत् ॥ १ ॥

जब सूर्य में शनिकी अन्तर्दशा आती है तब मनुष्यको महादुःख, पुत्र मित्रका मरण, और शत्रुसे भय होते हैं ॥ १ ॥

अथ रविमध्ये गुरुफलम्—

विपद्रोगविनाशश्च लक्ष्मीमेधे सुखानि च ।
रवेरंतर्गते जीवे शत्रुमंगलमुत्सवः ॥ १ ॥

जब मनुष्यको सूर्य की महादशामें गुरुकी अन्तर्दशा आती है तब विपत्ति और रोगोंका नाश, लक्ष्मी प्राप्ति, तथा बुद्धिकी वृद्धि अनेक प्रकार के सुख, शत्रुओं का अमंगल और अपने घर बडे २ उत्सव होते हैं ॥ १ ॥

अथ रविमध्ये राहुफलम्—

शोको भंगो महाभीतिर्विपत्तिरशुभं नृणाम् ।

रवेरंतर्गते राहौ सर्वत्रामंगलक्रिया ॥ १ ॥

जब मनुष्यको सूर्य महादशा में राहुकी अन्तर्दशा होती है तब शोक, स्थानभंग, महाभय, विपत्ति, अशुभ, और सर्वत्र अमंगल प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥

अथ रविमध्ये शुक्रफलम्—

गात्रपीडा भयं त्रासो ज्वरातीसारशूलके ।
द्रव्यादिहानिं प्राप्नोति रवेरंतर्गते सिते ॥ १ ॥

जब मनुष्यको रवि महादशा के मध्यमें शुक्रकी अन्तर्दशा आती है तब अंगमें पीडा, भय; त्रास, ज्वर, अतीसार, शूल, और द्रव्यादिकों का नुकसान होता है ॥

अथ चन्द्रदशांतर्दशाफलम्—

नित्यं विभूषामणिवस्त्रलाभं मिष्टान्नपानं प्रमदानुरागम् ।
चान्द्री दशा साधुफलं नराणां ददाति पूजां नृपतेःसदैव॥१॥

जब अष्टोत्तरीदशामें चन्द्रमाकी महादशा आती है तब नित नये भूषण मणि और वस्त्रोंका लाभ, मिष्टान्नपान, और स्त्रीजनों से अनुराग; और सदा राजा से मान पूजा प्राप्त होते हैं वास्तव में चन्द्रदशा जातकों को सर्वथा शुभ फलदा होती है ॥ १ ॥

अथ चन्द्रमध्ये चन्द्रफलम्—

चन्द्रे स्वांतर्गते सौख्यं सर्वत्र विजयो भवेत ।
स्वपक्षवैरं कन्यानां जन्म निद्रारतिर्भवेत् ॥ १ ॥

जब चन्द्रमहादशामें चन्द्रमाकी ही अन्तर्दशा होती है तब अत्यन्त सुख, सर्वत्र विजय,, अपने पक्षके मनुष्यों से वैर, कन्याका जन्म, और नींदमें अधिक प्रेम रक्खे अर्थात् बेखटके तान दुपट्टा अधिक समय तक सोता ही रहे ॥ १ ॥

अथ चंद्रमध्ये भौमफलम्—

शस्त्ररोगभयैर्युक्तो वह्निचौरधनक्षयः ।
विधोरंतर्गते भौमे मनोदुःखं भवेन्नृणाम् ॥ १ ॥

जब चन्द्रमाकी महादशा में भौमकी अंतर्दशा आती है तब शस्त्र तथा रोग से भय; अग्नि तथा चौरके निमित्त से धनका क्षय, और मानसिक दुःख होता है ॥

अथ चंद्रमध्ये बुधफलम्—

सर्वत्र लभते लाभं गजाश्वैर्गोधनादिकम् ।
जायते कन्यकालाभश्चंद्रस्यांतर्गते बुधे ॥ १ ॥

जब चन्द्रमाकी महादशामें बुधकी अन्तर्दशा आती है तब सर्वत्र लाभ, हाथी, घोडा और गायोंकी प्राप्ति और कन्या का लाभ होता है ॥ १ ॥

अथ चन्द्रमध्ये शनिफलम्—

बंधुवैरं स्थानहानिःशोको वा कलहो विपत् ।
विधोरंतर्गते मंदे संदिग्धो भवति ध्रुवम् ॥ १ ॥

जब मनुष्यको चन्द्रमहादशामें शनिकी अन्तर्दशा आतीहै तब भाईबन्दों से वैर, स्थानकीहानि, शोक, कलह तथाविपत होतेहैं, औरसबसमय शशपंजमें पड़ा रहे ॥१॥

अथ चन्द्रमध्ये गुरुफलम्—

धर्मवित्तसुखानि स्युर्वसनाभरणादिकम् ।
विजयो राजसन्मानो विधोरंतर्गते गुरौ ॥ १ ॥

जब चन्द्र महादशामें गुरुकी अन्तर्दशा होती है तब पुरुषको धर्म, धन, सुख, वस्त्र, आभूषण, विजय, और राजासे सन्मान प्राप्त होता है ॥ १ ॥

अथ चन्द्रमध्ये राहुफलम्—

बंधुनाशःस्थानहानिःशत्रोर्बहुभयं तथा ।
न कुत्रापि सुखं राहौ विधोरंतर्गते सति ॥ १ ॥

जब कि मनुष्यको चन्द्र महादशामें राहुकी अन्तर्दशा आ लगती है तब बंधु नाश, स्थान हानि, शत्रुसे बहुत भय होता है, और उस मनुष्यको कहीं भी सुख नहीं मिलता है ॥ १ ॥

अथ चन्द्रमध्ये शुक्रफलम्—

कन्याजन्मसुखप्राप्तिःस्त्रीसंगो विजयःसुखम् ।
मुक्ताहेममणिप्राप्तिश्चंद्रस्यांतर्गते सिते ॥ १ ॥

जब चन्द्र महादशा में शुक्रांतर्दशा आती है तब कन्या का जन्म, सुखकी प्राप्ति, स्त्री संग, विजय, सुख और मोती, सुवर्ण, मणिकी प्राप्ति होती है ॥ १ ॥

अथ चन्द्रमध्ये रविफलम्—

भूपाश्रयसुखं राज्यं रिपुरोगक्षयो भवेत् ।
ऐश्वर्यं सौख्यमतुलं चंद्रस्यांतर्गते रवौ ॥ १ ॥

अगर चन्द्र महादशा में सूर्य का अन्तर आ लगे तो राजा के आश्रयसे सुख, राज्य प्राप्ति, शत्रु तथा रोगका क्षय, ऐश्वर्य अतुल सुख प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥

अथ भौममहादशाफलम् लिख्यते—

शस्त्राभिघातवधबंधनरेन्द्रपीडाचिंताग्रहो विकलरुक्च गृहाश्रमेषु ।
चौराग्निभीतिधननाशयशःप्रणाशं कुर्याद्विघातभयमत्र दशा कुजस्य

जब मंगलकी महादशा आती है तब शस्त्रसे चोट लगे, वध, बंध, राजा से पीडा, चिंताओं से विकलता, रोग, घरमें चौर अग्नि का भय होवे, धननाश, यशो नाश; और सब काम भी विगड़ जावें ॥ १ ॥

अथ भौममध्ये भौमफलम्—

भौमे शत्रुविमर्दःस्यात्कलहो बंधुभिर्नृणाम् ।
स्वांतरे बहुपीडा स्याद् वृद्धस्त्रीगणिकारतिः ॥ १ ॥

जब कि किसी को मंगल महादशा में मंगल का ही अंतर हो तो वैरियों से झगड़ा बढे, भाइयों से कलह, बहुतसी पीड़ा होवें; वृद्ध स्त्री और वेश्याओं के साथ प्रीति होती है ॥ १ ॥

अथ भौममध्ये बुधफलम्—

भूपाग्निनृपचौरेभ्यो भयं पीडा ज्वरादिभिः ।
भूमिजांतर्गते सौम्ये कलहो दुर्जनादिभिः ॥ १ ॥

जब मंगल महादशा में बुधका अंतर हो तो राजा अग्नि और चोरों से भय, ज्वरादि से पीड़ा, और दुर्जनों से कलह होता है ॥ १ ॥

अथ भौममध्ये शनिफलम्—

महादुःखानि जायन्ते जलभीतिमतिर्नृणाम् ।
भौमस्यांतर्गते मंदे राजपीडा भयं नृणाम ॥ १ ॥

मनुष्य को जब मंगल महादशामें शनिकी अंतर्दशा आती है तब महा दुःख;

जलमें डूबने का भय बुद्धि में होता रहे; राजा से पीडा, और भय प्राप्त होते हैं ।१।

अथ भौममध्ये गुरुफलम्—

पुण्यतीर्थादिगमनं देवब्राह्मणपूजनम् ।
भौमस्यान्तर्गते जीवे लभते वित्तमुत्कटम् ॥ १ ॥

जब मनुष्यको मंगल महादशा में गुर्वंतर आता है तो पुण्य तीर्थोंकी यात्रा, देवता ब्राह्मणों का पूजन, और उत्तम धन प्राप्त होता है ॥ १ ॥

अथ भौममध्ये राहुफलम्—

शस्त्राग्निनृपचौराणां भीतिर्मृत्युर्नृपाद्भयम् ।
भौमस्यांतर्गते राहौ मनो दुःखं प्रवर्तते ॥ १ ॥

जब कि मनुष्यको मंगल महादशा में राह्वंतर्दशा होती है तब शस्त्र, अग्नि, राजा तथा चोर से और मृत्यु से भय, और मन दुःखों में डूबा रहता है ॥ १ ॥

अथ भौममध्ये शुक्रफलम्—

शत्रुभीतिर्महाक्लेशो धर्महानिःसुखव्ययः ।
भौमस्यांतर्गते शुक्रे भयं भूपात् स्वबंधनम् ॥ १ ॥

यदि किसी को मंगल महादशा में शुक्रकी अंतर्दशा आती है तब शत्रु से भय, महा क्लेश, धर्मकी हानि सुख हानि, तथा राजा से भय होकर कमीजेल भी भोगनी पडे ॥ १ ॥

अथ भौममध्ये रविफलम्—

सम्मतो नृपतेर्भूरिप्रचंडैःसह संगतिः ।
मंगलांतर्गते भानौ भवेत्कुस्त्रीसमागमः ॥ १ ॥

जब कि जातकको भौम महादशा में सूर्यान्तर्दशा आ लगती है तब उसके ऊपर राजाकी कृपा होवे. प्रचण्ड मनुष्यों से समागम. और दुष्टास्त्रियोंसे समागम होता है ॥ १ ॥

अथ भौममध्ये चन्द्रफलम्—

बहुवित्तं सुहृत्सौख्यं मुक्ताहेममणिश्रियम् ।
भौमस्यांतर्गते चंद्रे प्राप्नोति परमं पदम् ॥ १ ॥

जब मंगल महादशा में चन्द्रान्तर्दशा होती है तब बहुतसा धन मिले, मित्रों से सुख, मोती, सुवर्ण, मणि, लक्ष्मी, और उत्तम पद की प्राप्ति होवे ॥ १ ॥

अथ बुधमहादशान्तर्दशाफलम् लिख्यते—

प्राप्नोति सौम्यस्य दशाविपाके शुभे शुभानि प्रियमित्रसंगम्
सुवर्णहेमांबरपूर्णलाभं विद्यार्थलाभं मनसःप्रमोदम् ॥ १ ॥

जब कभी मनुष्य को बुध की महादशा आती है तब प्यारे मित्रों से समागम, सुवर्ण वस्त्र का पूर्ण लाभ, विद्या तथा धन का लाभ, और मन को आनन्द प्राप्त होता है ।

अथ बुधमध्ये बुधफलम्—

स्वदशांतर्गते सौम्ये बुद्धिवृद्धिःसमागमः ॥
शरीरे युवतेःसौख्यं नानावित्तं सुखं यशः ॥ १ ॥

जब मनुष्य को बुध महादशा में बुध की ही अन्तर्दशा आती है तब बुद्धि की वृद्धि, प्रियजनों से समागम, स्त्री निमित्त से सुख, अनेक प्रकार के सुख और धन यश प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥

अथ बुधमध्ये शनिफलम्—

मित्रार्थसाधकःसिद्धो गुणधर्मार्थसाधकः ।
सर्वकार्योद्यमी भास्वान्बुधस्यांतर्गते शनौ ॥ १ ॥

जब मनुष्य को बुध महादशा में शन्यंतर्दशा आती है तब मित्रों के मतलवों को सिद्ध कराने वाला, गुण और धर्मार्थ का भी साधक, तथा स्वयं सिद्ध, (महात्मा) और सब कामों में उद्यमी तथा बडा प्रतापी होता है ॥ १ ॥

अथ बुधमध्ये गुरुफलम्—

रिपुरोगभयैस्त्यक्तो धर्मज्ञो नृपवल्लभः ।
हेमादिजनशोभाढ्यो बुधस्यांतर्गते गुरौ ॥ १ ॥

जब मनुष्य को बुध महादशा में गुरु की अन्तर्दशा आती है तब शत्रु तथा रोग के भय से रहित, धर्मज्ञ, राजप्रिय, सुवर्ण आदि की शोभा से सशोभित हो।१

अथ बुधमध्ये राहुफलम्---

अकस्माद्बंधुभेदो वाप्यकस्माद्भजतो नृपात् ॥
भयं वाह्यर्थनाशो वा राहौ सौम्यांतरे सति ॥ १ ॥

जब बुध की महादशा में राहु का अन्तर हो तो अकस्मात् वन्धुजनों से अथवा राजा से भेद, या भय, और धन का नाश होता है ॥ १ ॥

अथ बुधमध्ये शुक्रफलम्--

गुरुदेवद्विजार्चासु दानधर्मपरो भवेत् ॥
बस्त्रालंकाररक्तस्य लाभो ज्ञस्यांतरे सिते ॥ १ ॥

जब मनुष्य को बुध महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा आती है तब गुरु देवता और ब्राह्मणों की पूजा में तथा दान धर्म में तत्पर होवे, और वस्त्र अलंकार का लाभ होता है ॥ १ ॥

अथ बुधमध्ये रविफलम्---

सुवर्णहयमाणिक्यं विजयं लभते सुखम् ।
राज्यं श्रियं बलं तेजो बुधस्यांतर्गते रवौ ॥ १ ॥

जब बुध महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा आती है तब सुवर्ण घोडा, मणि, माणिक्य, विजय, सुख, राज्य, लक्ष्मी, वल, और तेज का लाभ होता है ॥ १ ॥

अथ बुधमध्ये चन्द्रफलम्----

आचारवान्बहुधनो गजाश्वादिसुखाश्रयः ।
बुधस्यांतर्गते चंद्रे पर्यंकच्छत्रसंपदः ॥ १ ॥

जब मनुष्य को बुध महादशा में चन्द्रांतर्दशा आती है तब सदाचार रहने वाला, अनेक प्रकार के धनोंसे सम्पन्न, गज अश्व आदिकों के सुख का भोगनेवाला, और शय्या छत्र आदि संपत्ति की प्राप्ति होती है ॥ १ ॥

अथ बुधमध्ये भौमफलम्----

शिरोगुदरुजापीडा वन्हिचौरनृपाद्भयम् ।
बुधस्यान्तर्गते भौमे बंधुपुत्रादिपीडनम् ॥ १ ॥

जब बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा आती है तब शिर और गुदा

में पीडा, अग्नि चोर और राजा से भय; बन्धु और पुत्रादिकों का कष्ट होता है।

अथ शनिमहादशाफलम्----

प्राप्नोति सौरस्य दशाविपाके दुर्गादिसीमागिरिरक्षणञ्च ।
सुधान्यजीर्णांबरभूमिलाभं संयुज्यतेऽश्वैर्महिषादिभिश्च ॥ १ ॥

जब मनुष्य को शनि की महादशा आती है तब दुर्ग (किला) सीमा (हद) पर्वत की रक्षा करने वाला, और अच्छे अच्छे धान्य तथा जीर्णवस्त्र भूमि का लाभ करने वाला, और घोडे महिष आदि का लाभ होता है ॥ १ ॥

अथ शनिमध्ये शन्यंतर्दशाफलम्----

बंधुदारसुतार्थानां नाशो वा पीडनं भवेत् ।
विदेशगमनं दुःखं सौरे स्वांतरसंस्थिते ॥ १ ॥

जब शनि महादशा में शनि की ही अन्तर्दशा आती है तब भाई बन्धु स्त्री पुत्र और धन का नाश व पीडन, विदेश में गमन, और अनेक दुःख होते हैं ।.१॥

अथ शनिमध्ये गुरुफलम्----

देवद्विजार्चनं सौख्यं धनवृद्धिर्गुणोदयः ।
स्थानाप्तिःकामनाप्तिश्च शनेरंतर्गते गुरौ ॥ २ ॥

जब शनि महादशा में गुरु की अन्तर्दशा आती है तव देवता ब्राह्मणों का पूजन, सुख, धन की वृद्धि, गुणों का उदय, स्थान की प्राप्ति, कामनाओं की प्राप्ति होती है ॥ १ ॥

अथ शनिमध्ये राहुफलम्----

वातरोगःकुक्षिपीडा देशांतरगतिर्भवेत् ।
बुधद्वेषःसुखाभावो राहौ शनिदशां गते ॥ १ ॥

जब शनि महादशा में राहून्तर्दशा आती है तब वायु के विकार से रोग, कूख में पीडा, देशांतर में गमन, बुद्धिमान् मनुष्यों से द्वेष, और सुख का अभाव होता है ॥ १ ॥

3111

अथ शनिमध्ये शुक्रफलम्----

बंधुमित्रकलत्रार्थसुखसंपत्समागमः ।

सौहार्दं नृपतेर्लक्ष्मीः शनेरंतर्गते सिते ॥ १ ॥

जब मनुष्य को शनि महादशा में शुक्रांतर्दशा आती है तब बन्धु मित्र, स्त्री, धन, सुख सम्पत् सबों का समागम, और राजा से प्रेम होने के कारण लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ॥ १ ॥

अथ शनिमध्ये रविफलम्—

दारासुतधनार्थानां भीतिर्जीवितसंशयः ।
शनेरंतर्गते भानौ सर्वत्राशुभदर्शनम् ॥ १ ॥

जब मनुष्यको शनि महादशामें सूर्य की अन्तर्दशा आतीहै तब स्त्री, पुत्र, तथा धन के नाश का भय, प्राण जीवन का सन्देह, और सर्वत्र अशुभ दर्शन की प्राप्ति होती है

अथ शनिमध्ये चन्द्रफलम्—

स्त्रीलाभं विजयं सौख्यं महिषीगोधनादिकम् ।
लभते कन्यकाजन्म शनेरंतर्गते विधौ ॥ १ ॥

जब शनि महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा आती है तब स्त्री का लाभ, विजय सौख्य, भैंस गैया आदि धन का लाभ, और कन्या का जन्म होता है ॥१॥

अथ शनिमध्ये भौमफलम्—

बंधुस्त्रीसुतनाशो वा विद्युत्पातभवं भयम् ।
महाव्याधिररिष्टं वा शनेरंतर्गते कुजे ॥ १ ॥

जब शनि की महादशा में भौम की अन्तर्दशा आती है तब भाई स्त्री पुत्र का नाश, बिजली गिरने से भय, बडी भारी व्याधि या अरिष्ट होते हैं ॥ १ ॥

अथ शनिमध्ये बुधफलम्—

सौख्यं सौभाग्यमारोग्यं यशःसंतोषवृद्धयः ।
सुहृत्स्थानादिलाभःस्याच्छनेरंतर्गते बुधे ॥ १ ॥

जब मनुष्य को शनि महादशा में बुध की अन्तर्दशा आती है तब सुख, सौभाग्य, आरोग्य, यश, संतोष, वृद्धि, सुहृज्जन और स्थान आदिका लाभ होताहै।

अथ गुरु महादशान्तर्दशाफलम्—

गुरोर्दशायां लभतेऽतिसौख्यं गुणोदयं बुद्ध्यवबोधनाग्र्यम् ।

स्त्रीवित्तलाभं गतिकांतिभोगान्महात्मचेष्टफलमुत्तमं च॥१॥

जब मनुष्यको बृहस्पति की महादशा होती है तब अत्यन्तसुख, गुणों का उदय, बुद्धि की वृद्धि, स्त्री धन तथा तेज और भोगों का लाभ और उत्तम कर्म करने में उत्तम फल की प्राप्ति होती है ॥ १ ॥

अथ गुरुमध्ये गुरुफलम्—

स्वदशांतर्गते जीवे धर्मार्थहयलब्धयः ।
लाभो हेमस्थावराणां[1] राजपूजा गुणोदयः ॥ १ ॥

जब गुरु महादशामें गुरु का ही अन्तरआता है तब धर्म धन घोडोंकी प्राप्ति, सुवर्ण एवं स्थावर पदार्थों का लाभ, राज्य में पूजा, और गुणों का उदय होता है ॥ १ ॥

अथ गुरुमध्ये राहुफलम्—

अन्त्यजैःसह संप्रीतिर्वातपित्तभयावहम् ।
गुरोरंतर्गते राहौ सर्वकार्यविनाशनम् ॥ १ ॥

जबगुरु महादशामें राहुकी अन्तर्दशा लगती हैं तब अन्त्यजों (चाण्डाल) से प्रीति, वात पित्त का भय, और सब कामों का नाश होता है ॥ १ ॥

अथ गुरुमध्ये शुक्रफलम्—

रिपुभीतिर्वित्तनाशो बंधनं कलहो गदः ।
स्त्रीवियोगमवाप्नोति जीवस्यांतर्गते सिते ॥ १ ॥

जब गुरु महादशा में शुक्रांतर्दशा आती है तब शत्रु से भय, धन नाश, बन्धन; कलह, रोग और स्त्री से वियोग प्राप्त होता है ॥ १ ॥

अथ गुरुमध्ये रविफलम्—

नृपतुल्यक्रियायुक्तो व्याधिरोगविवर्जितः ।
बहुस्त्रीसुखसंतोषो गुरोरंतर्गते रवौ ॥ १ ॥

जब मनुष्य को गुरु महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा आती है तब वह मनुष्य

१---तिष्ठन्ती ति स्थावराः " स्थेश भास पिसकसो वरच् " इति वरच् प्रत्ययः, लाभो हेमस्थावराणामित्यभिधानेन उद्यान प्राप्ति र्व्यज्यते ।

राजा के समान काम करने वाला, व्याधि रोग से रहित, बहुत स्त्री और सुख से सन्तोष को प्राप्त होता है ॥ १ ॥

अथ गुरुमध्ये चन्द्रफलम्—

शत्रुहानिःसुखं पुण्यं शरीरे पुष्टिरुत्तमा ।
स्वजनैःसह संवासो गुरोरंतर्गते विधौ ॥ १ ॥

जब गुरु महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा आती है तब शत्रु हानि, सुख, पुण्य, शरीरमें उत्तम पुष्टि, तथा स्वजनों के साथ रहन सहन होती है ॥ १ ॥

अथ गुरुमध्ये भौमफलम्—

धनं कीर्तिःशत्रुहानिर्बंधुकीर्तिःसुखान्वितः ।
नीरोगी सुभगःश्रीमान्गुरोरंतर्गते कुजे ॥ १ ॥

जब बृहस्पति की महादशामें मंगल की अन्तर्दशा आती है तब धन कीर्ति की प्राप्ति, शत्रु नाश, भाई बन्दोंमें कीर्ति, सुख की प्राप्तिः रोग की निवृत्ति, सौभाग्य और धन की प्राप्ति होती है ॥ १ ॥

अथ गुरुमध्ये बुधफलम्—

समदुःखसुखःश्रीमान्गुरुदेवाग्निपूजकः ।
गुरोरंतर्गते सौम्ये शत्रुर्मित्रसमो भवेत् ॥ १ ॥

जब मनुष्य को गुरु महादशा में बुधांतर्दशा आती है तब दुःख सुख की समता, लक्ष्मी की प्राप्ति, गुरु देवता और अग्नि का पूजन, और शत्रु भी मित्र के समान होवे हैं ॥ १ ॥

अथ गुरुमध्ये शनिफलम्—

वारस्त्रीसंगमं दुःखं कुवृत्तिर्धर्मनाशनम् ।
कामलोभौ नीचसख्यं गुरोरंतर्गते शनौ ॥ १ ॥

जब गुरु महादशा में शन्यंतर्दशा आती है तब वैश्या से संगम, दुःख, कुत्सितवृत्ति, धर्म का नाश, काम, लोभ, और नीचों से मित्रता होती है ॥ १ ॥

अथ राहुमहादशान्तर्दशाफलं लिख्यते—

धर्मव्ययःकामरतेर्विनाशःस्त्रीपुत्रमित्रादिविदेशयानम् ।

मतिभ्रमःस्यात् कलिकुष्ठरोगभयं भवेद्राहुदशागमे वै[1] ॥१॥

जब राहु की महादशा आती है तब धर्म की हानि; काम रति का नाश, स्त्री पुत्र मित्रादिकों का परदेश में गमन; बुद्धि में भ्रम, लोगों से फिसाद हो, और कुष्ट रोग का भय होता है ॥ १ ॥

अथ राहुमध्ये राहु फलम्---

भयं स्वांतर्गते राहौ रोगार्तःपापपीडितः ।
स्त्रीपुत्रमित्रनाशो वा कलहो वा स्वबंधुभिः ॥ १ ॥

जब राहु की महादशा में राहु की ही अन्तर्दशा लगती है तब भय प्राप्ति, रोगों से तकलीफ, पाप कर्म से पीडा, स्त्री पुत्र मित्र का नाश, और अपने भाई वन्दों से झगडे होते हैं ॥ १ ॥

राहु मध्ये शुक्रफलम्----

सौहार्द विप्रभूपाभ्यां संगःस्त्रीवित्तसंचयः ।
कलहे बिजयःख्यातो राहोरंतर्गते सिते ॥ १ ॥

जब मनुष्य को राहु की महादशा में शुक्रान्तर्दशा आलगती है तब किसी बडे धनी ब्राह्मण वा राजा से मैत्री हो, स्त्री से समागम, धन का संचय, और हर एक मुकद्दमा में जीत हो, तथा खूब नामवर होता है ॥ १ ॥

अथ राहुमध्ये रवि फलम् ---

रिपुरोगभयं घोरं द्रव्यनाशो महद्भयम् ।
अग्निचोरभयं चैव राहोरंतर्गते रवौ ॥ १ ॥

जब मनुष्यको राहु महादशामें सूर्यकी अन्तर्दशा आती है तब शत्रु और रोगसे घोर भय, द्रव्यनाश, बड़ा भय; और अग्नि तथा चोर से भी भय होता है ॥ १ ॥

अथ राहुमध्ये चन्द्रफलम् ---

रिपुव्याधिर्महाभीतिर्बंधुवित्तविनाशनम् ।

१---- " भयं भवेद्राहुदशागमे सति "----इति पूर्वस्थितपाठेत्वेकाक्षर—वृद्धित्वेन च्छन्दोभङ्गदोषापत्तेरस्यचोपजातित्वेनैकादशाक्षरसम्भवत्वादिति परिवर्तनेन रक्षणे न कश्चित्द्विवादशङ्कापंककलंकलेशावकाशः " इति

कलहो बंधुविद्वेषो राहोरंतर्गते विधौ ॥ १ ॥

जब राहु महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा आती है तब शत्रु बढें, व्याधि और महाभय की उत्पत्ति, बन्धु तथा धन का नाश, कलह, और बन्धुजनों से द्वेष प्राप्त होता है ॥ १ ॥

अथ राहुमध्ये भौमफलम्--

विषशस्त्राग्निचौरेभ्यो महाभीतिःपुनःपुनः ।
राहोरंतर्गते भौमे वित्तस्त्रीबंधुनाशनम् ॥ १ ॥

जब राहु महादशा में भौमान्तर्दशा आती है तब विष शस्त्र अग्नि और चोरों से महाभय, और धन स्त्री और भाइयों का नाश होता है ॥ १ ॥

अथ राहुमध्ये बुधफलम्—

बंधुमित्रकलत्रादिवित्तभृत्यसुखान्वितः ।
न कुत्रापि भयं तस्य राहोरंतर्गते बुधे ॥ १ ॥

जब राहु में बुधान्तर्दशा होती है तब बन्धु मित्र कलत्र धन नौकर चाकर और सुख की प्राप्ति होती है, और निर्भय होकर आनन्द करता रहता है ॥ १ ॥

अथ राहुमध्ये शनिफलम्---

वातपित्तभवा रोगाःकलहो बांधवैःसह ।
देशत्यागो धनभ्रंशो राहोरंतर्गते शनौ ॥ १ ॥

जब मनुष्य को राहु महादशा में शन्यंतर्दशा होती है तब वातपित्तजन्यरोग, बांधवों से कलह, देश का त्याग, और धन का नाश होता है ॥ १ ॥

अथ राहुमध्ये गुरुफलम्--

नीरोगैः स्वगणैर्युक्तो देवद्विजरतो भवेत् ।
राहोरंतर्गते जीवे धर्मतीर्थरतो भवेत् ॥ १ ॥

जब राहु महादशा में गुर्वंतर आता है तब खूब बली स्वजनों से युक्त, देवता ब्राह्मणों का पूजक, और धर्म कर्म तथा तीर्थों में रति होती है ॥ १ ॥

अथ शुक्रमहादशान्तर्दशाफलम्—

शौर्यं गीतिरतिप्रमोदविभवो द्रव्यान्नपानांबर-

स्त्रीरत्नं मतिमन्महोपकरणैरर्थाश्च नानाविधाः ।
स्वध्यायौषधमंत्रशिल्पकरणैरर्थस्य सिद्धिर्भवेत्
सौख्यं चेक्षुविकारभोजनरुचिःख्यातिःप्रतापोन्नतिः ॥ १ ॥

जब मनुष्य को शुक्र की महादशा आती है तब शूरता, गाने में प्रीति, आनन्द, वैभवों से युक्त, द्रव्य अन्न पान वस्त्र स्त्री रत्न आदिकी प्राप्ति, और अनेक प्रकार की बुद्धिमत्ता, धन विद्या औषधि तथा मन्त्रविद्या और कारीगरी से धन की प्राप्ति. सौख्य, चीनी तथा खांड की मिठाइयों के भोजन में रुचि, जगत् में ख्याति और प्रताप की उन्नति होती है ॥ १ ॥

अथ शुक्रमध्ये शुक्रफलम्---

लाभःस्वांतरगे शुक्रे स्त्रीसंगो धर्मजं सुखम् ।
अभिलाषार्थयुक्तश्च कीर्तिकौशल्ययुग्भवेत् ॥ १ ॥

जब शुक्र महादशा में शुक्र की ही अन्तर्दशा आती है तब स्त्रियों से संग धर्म से सुख, अभिलाषायें पूर्ण हों, और धन खूब बढे, तथा कीर्ति और चतुराई से युक्त होता है ॥ १ ॥

अथ शुक्रमध्ये रविफलम्---

नेत्रगंडभवै रोगैःपीड्यते नृपबांधवैः ।
उत्पातश्च महद्दुःखं शुक्रस्यांतर्गते रवौ ॥ १ ॥

जब शुक्र महादशा में रवि की अन्तर्दशा आती है तब नेत्र और कपोल के रोगों से पीडा, राजा और भैया बन्दों के सताने से उत्पात और दुःख होते हैं ।१

अथ शुक्रमध्ये चन्द्रफलम्--

उद्वेगोऽकुशलं हानिरश्वादीनां धनक्षयः ।
बहुक्लेशमना दुःखं शुक्रस्यांतर्गते विधौ ॥ १ ॥

जब शुक्र महादशा में चन्द्रांतर्दशा आती है तब उद्वेग, अकल्याण अश्वादिकों को हानि, धन का क्षय, मन में बहुत क्लेश, तथा दुःख होते हैं ॥ १ ॥

१---बहुक्लेशयुक्त मनो यस्य स इति बहुव्रीहि र्बोध्यः ।

अथ शुक्रमध्ये भौमफलम्—

नखोदराशिरोव्याधिःकलहो बन्धुसंक्षयः ।
दौर्बल्यं च शरीरस्य कुजे शुक्रदशां गते ॥ १ ॥

जब शुक्र महादशामें मंगलका अन्तर आता है तब नखोंमें, पेटमें, और शिर में व्याधि, कलह, बन्धुजनों का क्षय, शरीर में दुर्बलता आती है ॥ १ ॥

अथ शुक्रमध्ये बुधफलम्—

धनं धान्यं सुखं लाभो मानो धर्मो यशःसुखम् ॥
महाजनेन सौहार्दं शुक्रस्यांतर्गते बुधे ॥ १ ॥

जबकि किसी को शुक्र महादशा में बुधकी अन्तर्दशा आती है तब धन, धान्य, सुख, लाभ, मान, धर्म, यश, और सुख की प्राप्ति, बडे बडे धनिकजनों से मित्रता होती है ॥ १ ॥

अथ शुक्रमध्ये शनिफलम्—

वृद्धस्त्रीगमनं पीडा पुत्रनाशो विपत्पदम् ॥
शत्रुनाशःसुहृत्प्राप्तिःसौरे शुक्रदशां गते ॥ १ ॥

जब जातकको शुक्र में शन्यंतर्दशा आती है तब वृद्ध स्त्री से सम्भोग, पीडा, पुत्र मरण, विपत्ति, शत्रु नाश, और सुहज्जनों की प्राप्ति होती है ॥ १ ॥

अथ शुक्रमध्ये गुरुफलम्—

धनधान्यसमृद्धिश्च धर्मशीलसुखानि च ।
स्त्रीसुखं कीर्तिमाप्नोति गुरौ शुक्रदशां गते ॥ १ ॥

जब कि किसी को शुक्र में गुरु की अन्तर्दशा आ पडती है तो धन, धान्य की समृद्धि, धर्म स्वभाव, सुख, स्त्री सुख, और कीर्ति प्राप्ति होती हैं ॥ १ ॥

अथ शुक्रमध्ये राहुफलम्—

विदेशगमनं बंधुद्वेषःसंगमशुद्धयः ।
स्ववंशनाशमाप्नोति राहौ शुक्रदशां गते ॥ १ ॥

जब शुक्र महादशा में राहु की अन्तर्दशा आती है तब विदेश में गमन, बंधु-

जनों से द्वेष, संगम में शुद्धि और अपने वंश का नाश प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

अथ सर्वग्रह दशाफलविचारः—

क्रूरग्रहदशायां च क्रूरस्यांतर्दशायदि ।
शत्रुयोगे भवेन्मृत्युर्मित्रयोगे न संशयः ॥ १ ॥

यदि क्रूर ग्रह की महादशा में क्रूर ग्रह का ही अन्तर्दशा हो चाहें शत्र ग्रहों से योग हो वा मित्र ग्रहों से किन्तु ऐसी स्थिति में मृत्यु उस जातक की जरूर होती है ॥ १ ॥

मंगलस्य दशायां च शनेरंतर्दशा यदि ।
म्रियते च चिरंजीवी का कथा स्वल्पजीविनः ॥ २ ॥

अगर मनुष्यको मंगल की दशामें शनि की अन्तर्दशा आ लगें तो चिरंजीवी जातक भी मृत्यु को प्राप्त होता है फिर अल्पायुवाले मनुष्य का तो कहना ही क्या है ॥ २ ॥

क्रूरराशिस्थितःपापःषष्ठे वा निधनेऽपि वा ।
सितेनर विणा दृष्टःस्वपाके मृत्युदो ग्रहः ॥ ३ ॥

अगर किसी के जन्मांग चक्र में क्रूरराशिस्थ पापग्रह यदि छठे या आठवें घर में बैठा हो और शुक्र या सूर्य उसे देखता हो तब वह क्रूर ग्रह अपनी दशा में मृत्यु का देने वाला होता है ॥ ३ ॥

लग्नस्याधिपतेःशत्रुर्लग्नस्यांतर्दशां गतः ।
करोत्यकस्मान्मरणं सत्याचार्येणभाषितम् ॥ ४ ॥

और जन्म लग्नेश का शत्रु ग्रह लग्नेश की दशा के जब अंतर में आता है तब अकस्मात् मृत्यु करता है यह सत्याचार्य का कथन है ॥ ४ ॥

प्रवेशे बलवान्खेटःशुभैर्वा स निरीक्षितः ।
सौम्याधिमित्रवर्गस्थो रिष्टभंगो भवेत्तदा ॥ ५ ॥

किसी भी राशि में प्रवेश होते समय ग्रह बलवान् होवे और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो और शुभ ग्रह के या अधिमित्र के वर्ग में स्थित हो तब अनेक अरिष्टों का नाश करता है ॥ ५ ॥

अथोपदशाफलं लिख्यते--

अथातःसंप्रवक्ष्यामि ग्रहस्योपदशाफलम् ।
सौम्यक्रूरविभिन्नस्य प्रत्नाचार्यादिसंमतम् ॥ १ ॥

अब मैं पूर्वाचार्यों की सम्मत्यनुसार सौम्य ग्रह तथा क्रूर ग्रहों के वश से पृथक् पृथक् सभी ग्रहों की उपदशा का फल कहता हूं ॥ १ ॥

ज्वरःशिरोऽर्तिपीडा च कलिरुद्वेगकारकः ।
विग्रहश्च विवादश्च सूर्ये स्वोपदशां गते ॥ २ ॥

जब सूर्य की दशा तथा अन्तर्दशा में सूर्य की ही उपदशा (प्रत्यन्तर) आती है तब पुरुष को ज्वर, शिर में पीडा, कलह, उद्वेग, विग्रह और विवाद होते हैं २

धननाशोदरे रोगं कुर्यात्पामां चतुष्पदात् ।
क्षीरं स्नेहं विना भुंक्ते चंद्रःस्वोपदशां गतः ॥३ ॥

और जब मनुष्यके सूर्यकी अंतर्दशामें चंद्रमा की उपदशा हो तो धनका नाश; उदर में रोग, पामा (खाज) चौपाये पशुसे भय, दूध, घी के विनाही (रूखा) भोजन प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

राज्ञो भयं विकारश्चोपद्रवं रिपुविग्रहः ।
कुधान्यभोजनं सूर्ये भौमस्योपदशाफलम् ॥ ४ ॥

और जब मनुष्य के सूर्यान्तरमें उपदशा होती है तब राजा से भय, अनेक विकार, उपद्रव, शत्रुजनोंसे विग्रह, कुत्सित अन्नको भोजन प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

वातश्लेष्मं शत्रुभयं तीक्ष्णं क्षीरं कुभोजनम् ।
राजपीडा धने हानी राहावुपदशां गते ॥ ५ ॥

और सूर्यके अन्तर में जब राहुकी उपदशा होती है तब वात कफकी पीड़ा; शत्रुसे भय, तीक्ष्ण क्षीर (दूध) रहित कुभोजन, राजासे पीड़ा, धनका नाश,आदि अनेक अनिष्ट होते हैं ॥ ५ ॥

हेमांबरजयैर्वृद्धिःशत्रुनाशो महत्सुखम् ।
मिष्टान्नभोजनं सूर्ये शनेरुपदशा यदि ॥ ६ ॥

और जब सूर्यमें शनिकी उपदशा होती है तब मनुष्यको सुवर्ण वस्त्र जयकी वृद्धि, शत्रुका नाश; महत्सुख, और मिष्टान्न भोजन प्राप्त होता है ॥ ६ ॥

नृपपूजा धनं कीर्तिर्विद्याबंधुसमागमः ।
भोजनं मधुरान्नस्य रवौ ज्ञोपदशां गते ॥ ७ ॥

और जब सूर्य दशान्तर्दशा में बुधकी उपदशा होती है तब राजा से सन्मान, धन,कीर्ति,विद्या और बन्धुजनों से समागम, और मधुर अन्नका भोजन प्राप्त होताहै ॥

दैन्यं परान्नभोजी स्याद्राजपीडा महद्भयम् ।
शत्रुद्वेषो भवेत्केतुःसूर्यस्योपदशां गतः ॥ ८ ॥

और जब सूर्य में केतुकी उपदशा होती है तब पुरुषको दीनता, पराच भोजन, राजा से पीडा; महद्भय, शत्रजनों से द्वेष प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

सुखवृद्धिसमानानि धनलाभो महोत्सवः ।
स्त्रीविलासाःसदा सौख्यं रविः सितदशां गतः ॥ ९ ॥

और सूर्यान्तरमें जब शुक्रकी उपदशा आती है तब सुखकी वृद्धि, धनका लाभ, महान् उत्सव, स्त्रीके संग विलास, और सदा सुख होता है ॥ ९ ॥

अथ चन्द्रोपदशाफलम्—

धनलाभो महासौख्यं स्त्रीलीलापुत्रसंपदः ।
वस्त्रान्नपानलाभश्चोपदशासु गतः शशी ॥ १ ॥

जब मनुष्यको चन्द्रमाकी दशान्तर्दशा में चन्द्रमाकी ही उपदशा आती है तब धनका लाभ, महा सौख्य, स्त्रियों के संग लीला, पुत्रसंपदा, और वस्त्र अन्नपान का लाभ प्राप्त होता है ॥ १ ॥

ऋद्धिर्धनागमो बुद्धिबंधुस्वजनसौहृदः ।
रक्तवस्तुकृतो लाभश्चन्द्रस्योपदशां कुजः ॥ २ ॥

और जब चन्द्रान्तर्दशा में मंगलकी उपदशा आती है तब वृद्धि धनागम, बुद्धि अपने बन्धु तथा स्वजनों से मित्रता और रक्त वस्तुसे लाभ होता है ॥ २ ॥

राजमानो महासौख्यं भूतिकल्याणवर्द्धनम् ।

चन्द्रस्योपदशां प्राप्तो राहुःशत्रुभयावहः ॥ ३ ॥

और जब मनुष्यको चन्द्रदशा में राहुकी उपदशा आती है तब राजा से मान, सदा सौख्य; ऐश्वर्य, कल्याण वृद्धि तथा शत्रु उसके डरते रहें ॥ ३ ॥

धनधर्मौ महत्तेजो मित्रलाभःसुभोजनम् ।
सौख्यं च वस्त्रलाभश्च चन्द्रस्योपगतो गुरुः ॥ ४ ॥

और जब चन्द्रदशामें गुरुकी उपदशा आती है तब धन धर्म, महत् तेज, मित्रसे लाभ, उत्तम भोजन, सौख्य और वस्त्रका लाभ होता है ॥ ४ ॥

पुत्रबंधुकृतोद्वेगयुक्तःस्वस्थानवर्जितः ।
चन्द्रस्योपगते सौरे तुषधान्यादिभोजनम् ॥ ५ ॥

और चन्द्रदशान्तर्दशा में जब शनिकी उपदशा आतीहै तब पुत्र बन्धुसे उद्वेग, अपने स्थान से वर्जित, और तुष धान्य के बेचने (पल्लेदारी) से भोजन प्राप्त होते हैं ॥ ५ ॥

शुक्लवस्त्रास्त्रिया लाभो मांगल्यं पुत्रसंपदः ।
हयभूलाभदश्चैव चन्द्रस्योपगतो बुधः ॥ ६ ॥

और जब मनुष्यको चन्द्रमा की दशा में बुधकी उपदशा आती है तब शुक्लवस्त्र और स्त्रीका लाभ, मांगल्य, पुत्र संपत्ति, घोडा और भूमिका लाभ होता है ॥ ६ ॥

विरोधःसर्वधर्माणां जीवितं बहुसंशयम् ।
सर्पांबुविषजा भीतिःशिखी चोपदशां गतः ॥ ७ ॥

और जब कि चन्द्र दशान्तर्दशा में केतुकी उपदशा आती है तब सब धर्मों से विरोध, जीवन में भी सन्देह, सर्प जल और विष से भय होता है ॥ ७ ॥

जलोदरादिरोगैस्तु रिपुचौरैर्धनक्षयः ।
अक्षीरं भोजनं रूक्षमिंदोरुपगते सिते ॥ ८ ॥
विजयं धनसौख्यं च वस्त्रपानान्नलाभकृत् ।
चन्द्रस्योपदशां भानुःकुरुते नात्र संशयः ॥ ९ ॥

चन्द्रान्तर्गत शुक्रकी उपदशा आ जाय तब जलोदरादिरोग हों,तथा शत्रु चोरों द्वारा धन क्षय होवे, विना दूधके रूखा भोजन मिले ॥ ८ ॥

जब कि चन्द्रान्तर्दशा में सूर्य का प्रत्यन्तर आता है तब विजय,धन,सुख, वस्त्र तथा अन्न पानका लाभ होता हैं इसमें सन्देह नहीं ॥ ९ ॥

अथ भौमोपदशाफलम्—

पीडा शत्रुनरेंद्राणां रक्तस्रावो भगंदरः ।
अकस्माज्जायते भौमोपदशासु स्वयं कुजः ॥ १ ॥

जब मंगलकी दशान्तर्दशामें मंगलकी ही उपदशा आती है तब शत्रु या राजा से पीडा और देहमें से लोहू गिरे, तथा अकस्मात् भगन्दरका रोग हो ॥ १ ॥

कलहं बंधनं रोगं राजभंगं कुभोजनम् ।
अपमृत्युदशां राहुर्जायते शत्रुपीडितः ॥ २ ॥

और जब मंगलान्तर्गत राहुकी उपदशा आती है तब सर्वत्र कलह, रोग,बन्धन, राजसे भंग, निषिद्ध भोजन, शत्रुसे पीड़ा और अपमृत्यु प्राप्त होते हैं ॥ २ ॥

कुबुद्धिर्दूषितो रोगी देशे देशे परिभ्रमः ।
भौमस्योपदशां जीवे स्वर्णं भवति मृत्तिका ॥ ३ ॥

और जब मंगलकी दशान्तर्दशा में बृहस्पति की उपदशा आती है तब बुद्धि खराब होजाय, लोगोंमें निन्दित माना जाय, रोगों से घिरा रहे, अनेक देशों में भ्रमण करता रहै और मनुष्यको सोना भी मिट्टी हो जाता है ॥ ३ ॥

रक्तवासो[1] महात्रासो बंधनं धनपीडनम् ।
कोद्रवं च तिलं भोज्यं भौमस्योपदशां शनिः ॥ ४ ॥

और जब मंगलकी दशान्तर्दशा में शनिकी उपदशा आती है तब लाल वस्त्र धारण करे, अनेक त्रास होवें, कैद भोगनी पडे, धनके निवट जाने से खर्चा की तकलीफ रहे, तथा कोदों और तिलका भोजन मिले है; ॥ ४ ॥

ज्वरार्तिःसुहृदासीनो विलंबेन धनक्षयः ।

१—वासस् शब्दस्य सकारान्तनपुंसकत्वात् मकारेपरतःसस्य रुत्वं उत्वं च विहिते 'रक्तवासो'—इत्यत्र भाव्यम् ।

भौमस्योपदशां सौम्यस्त्वन्नवस्त्रादिनाशनः ॥ ५ ॥

और जब मंगलान्तरमें बुधकी उपदशा आती है तब पुरुषको ज्वरकी पीडा, सुहृदों के पास निवास, विलंबसे धनका नाश, और अन्न वस्त्रादि का भी नाश होता है ॥ ५ ॥

जृंभणं च शिरःपीडा रोगमृत्यू नृपाद्भयम् ।
तंद्रालस्यं कुभोज्यं च केतौ भूसुतमध्यगे ॥ ६ ॥

और जब मंगलकी दशान्तर्दशा में केतुकी उपदशा आती है तब जभांई बहुत आया करें शिरमें पीडा, रोग मृत्यु, राजा से भय, झपनी में पड़ा रहे, आलस्य में भरा रहे और कुभोजन प्राप्त होवे ॥ ६ ॥

राजशत्रुभयं त्रासो वम्यतीसारतो भयम् ।
व्रणा जीर्णामयाद्दुःखं भौमस्योपदशां सिते ॥ ७ ॥

और जब मंगल की दशान्तर्दशा में शुक्रकी उपदशा आती है तब राजा तथा शत्रुसे भय, घबराहट, वमन (कै) और अतीसार रोगोंसे भय, घाव तथा जीर्ण ज्वरसे दुःख होवे हैं ॥ ७ ॥

भूमेश्च मणिलाभं च धनमित्रसुखावहम् ।
तीक्ष्णं वै मधुरं भुंक्ते भौमस्योपदशां रवौ ॥ ८ ॥

और जब मंगलकी दशान्तर्दशा में सूर्यकी उपदशा आती है तब भूमि और मणिकालाभ, धन,मित्रों से सुख,तीक्ष्ण और मधुर भोजन मिलता है ॥ ८ ॥

मौक्तिकं शुक्लवस्त्रं च लभते च सुखं यशः ।
क्षीरमिष्टान्नभोजी स्यात्कुजस्योपदशां शशी ॥ ९ ॥

और जब मंगलान्तर में चन्द्रमा की उपदशा आती है तब मोती, सफेद वस्त्र, सुख, और यश चोर मिष्टान्न भोजन-प्राप्त होते हैं ॥ ९ ॥

अथ राहूपदशाफलम्—

बंधव्याधिस्तथा रोगःपीडा भवति दारुणा ।
स्थानच्युतिःकुभोज्यं च राहुःस्वोपदशां गतः ॥ १ ॥

जब राहुकी अन्तर्दशामें राहुकी ही उपदशा आती है तब बंधन, व्याधि, रोग, और दारुण पीडा, स्थान से भ्रष्ट और कुत्सित भोजन प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥

ज्ञानधर्मार्थनाशश्च कलहं व्यसनं भवेत् ।
कटुकं मिष्टभोज्यं च राहोरुपदशां गुरुः ॥ २ ॥

और जब राहु दशान्तर्दशा में गुरुकी उपदशा आती है तब ज्ञान, धर्म एवं धनका नाश; कलह, व्यसन, तथा कुछ कडवा कुछ मीठा भोजन प्राप्त होता है ॥

लंघनं गृहभंगश्च हस्तपादाक्षिपीडनम् ।
बंधनं बहुजीवश्च राहोरुपगते शनौ ॥ ३ ॥

और जब राहुदशान्तर्दशा में शनिकी उपदशा आती है तब लंघन;गृहकानाश, हाथ पांव और आंखों में पीडा, और बंधन, तथा दुःख मय चिरजीविता होवे ॥३॥

धनवस्त्रादिहानिश्च पदबुद्ध्योर्विनाशकृत् ।
भोजनं फलशाकादि राहोरुपदशां बुधः ॥ ४ ॥

और जब कि बुधकी उपदशा राहु के अन्तरमें आपड़ती है तब धन वस्त्रादिका, नुकसान, स्थान तथा बुद्धिका भी नाशहो, और फलशाक पत्रका भोजन प्राप्त होवे॥

अर्थनाशो विदेशश्च मृत्युचौरनृपाद्भयम् ।
राहोरुपदशां केतुर्बंधनं विग्रहो भवेत् ॥ ५ ॥

और जब केतुकी उपदशा राहु के अन्तरमें आपड़ती है तब धनका नाश,विदेशगमन, मृत्यु, चौर तथा राजा से भय, बंधन, और विग्रह प्राप्त होते हैं ॥ ५ ॥

स्त्रीनाशःकुलनाशश्च योगिनीभूतमातृभिः ।
पीडनं च कुभोज्यं स्याद्राहोरुपदशां सितः ॥ ६ ॥

और जब राहु दशान्तर्दशा में शुक्रकी उपदशा आती है तब स्त्रीका नाश, कुलका नाश, योगिनी भूत और मातृगणों से पीडा, और कुत्सित (बुरा) भोजन प्राप्त होता है ॥ ६ ॥

सुहृत्पुत्रमहापीडा ज्वररोगोऽन्नहानिकृत् ।
राहोरुपदशां सूर्यःकुरुते नात्र संशयः ॥ ७ ॥

और जब राहु के अंतर में सूर्यकी उपदशा आती है तब मित्र पुत्रों से पूरी २ पीडा होवे, ज्वर रोग, अन्नकी हानि इसमें संदेह नहीं ॥ ७ ॥

चित्तभ्रमो मनोभंग उद्वेगोऽथ कलिर्भयम् ।
भोज्यं स्नेहं हविष्यान्नं राहोरुपदशां शशी ॥ ८ ॥

और जब राहुकी दशान्तर्दशा में चन्द्रमाकी उपदशा आती है तब चित्तमें भ्रम, मनको भंग, उद्वेग, कलह, भय और घृतप्लुत हविष्यान्न भोजन प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

रोगमृत्यू प्रमादश्च रक्तपित्तभगंदरौ ।
कुभोजनं मानहानी राहोरुपदशां कुजः ॥ ९ ॥

और जब राहु के अंतर में मंगलकी उपदशा होती है तब रोग, मृत्यु, प्रमाद, रक्तपित्त, भगंदर रोग, कुत्सित (बुरा) भोजन और मानकी हानि होती है ॥ ९ ॥

अथ जीवोपदशाफलम्—

यशोदयो महावृद्धिर्धनहेमसमागमः ।
सुखमिष्टान्नभोज्यं च गुरुःस्वोपदशां गतः ॥ १ ॥

जब बृहस्पति की अन्तर्दशा में बृहस्पति की ही उपदशा आती है तब यश का उदय, अत्यन्त वृद्धि, धन सुवर्ण की प्राप्ति; सुख, और मिष्टान्न भोजन प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥

हयभूमिपशुप्राप्तिःसर्वत्र सुखमाप्नुयात् ।
सुभोज्यं बहुधान्यानि जीवस्योपदशां शनिः ॥ २ ॥

और जब गुरु के अन्तर में शनि की उपदशा आती है तब घोडा, पृथ्वी, तथा पशुओं की प्राप्ति; एवं सर्वत्र सुख की प्राप्ति, उत्तम भोजन, और बहुत से धान्य की प्राप्ति होती है ॥ २ ॥

विद्यामौक्तिकशास्त्राणां लाभो मित्रभयागमः ।

१—यशस् शब्दस्य सान्तत्वात्तस्य रुत्वे यत्वे तल्लोपे-पूर्वत्रा सिद्धि मिति गुणं प्रति यलोपस्याऽसिद्धत्वान्नात्र सन्धिर्भवितु मर्हति, अत एतत्स्थाने " कीर्त्युद्गमः " —इत्येवं पाठः पठनीयः ।

अशनं स्नेहपक्वादि जीवस्योपदशां बुधः ॥ ३ ॥

और जब गुरु की दशान्तर्दशा में बुध की उपदशा आती है तब विद्या, मोती और शस्त्रों का लाभ, मित्रों द्वारा भयागम; और घृत पक्व वस्तुओं का भोजन प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

बंधूनां तस्करादीनां कलितो मृत्युतो भयम् ।
कुधान्यस्याशनं जीवे केतोरुपदशां गते ॥ ४ ॥

और जब गुरु दशान्तर्दशा में केतु की उपदशा आती है तब भाई बन्दों तथा चोरों से कलह के कारण अपने मारे जाने का डर बना रहे तथा बुरे अन्न का भोजन प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

हेमवस्त्रधनप्राप्तिःक्षेमवृद्धिर्विभूषणः ।
भोजनं मधुरं क्षीरं जीवस्योपदशां सितः ॥ ५ ॥

और जब गुरु अन्तर्दशा में शुक्र की उपदशा आती है तब सुवर्ण वस्त्र तथा धन की प्राप्ति, क्षेम की वृद्धि, आभूषण, मिष्ट और दूधमिलमा भोजन प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

मातृपितृधनं भुंक्ते राजपूज्यश्च जायते ।
सर्वत्रादरसंप्राप्तिर्जीवस्योपदशां रवौ ॥ ६ ॥

और जब गुरु की अन्तर्दशा में सूर्य की उपदशा आती है तब वह मनुष्य माता पिता के धन का भोगने वाला, राजा से पूजा पाने वाला होता है और सर्वत्र उसका आदर होता है ॥ ६ ॥

दधिमधुघृतक्षीरमणिमुक्तासु लाभदा ।
जीवस्योपदशां चन्द्रे कुक्षिपादप्रपीडनम् ॥ ७ ॥

जब गुरु के अन्तर में चन्द्रमा की उपदशा आती है तब दही, सहत घृत, दूध और मोतिओं के क्रय विक्रय से बडा लाभ, और कूख तथा पावों में पीडा होती है ॥ ७ ॥

शस्त्रशत्रुकृता पीडा गंडमंदाग्न्यजीर्णता ।

कुधान्यभोजनं भौमो जीवस्योपदशां गतः ॥ ८ ॥

और जब गुरु के अन्तर में मंगल की उपदशा आती है तब शस्त्र तथा शत्रु से पीडा, गंड रोग, मन्दाग्नि, अजीर्ण और बुरे अन्न का भोजन प्राप्त होता है ॥८॥

चांडालव्याधिशत्रुभ्यःपीडनं वमनं भयम् ।

कटुक्षारं च संभोज्यं जीवस्योपदशां तमः ॥ ९ ॥

और जब गुरु के अन्तर में राहु की उपदशा आती है तब चण्डाल, तथा व्याधि और शत्रु से पीडा होवे वमन (उलटी) होती रहे, भय, और कडुए तथा नौन के भोजन प्राप्त होते हैं ॥ ६ ॥

अथ शनेरुपदशाफलम्—

जलौकादेहपीडा च विदेशगमनं भवेत् ।

कुधान्यतिलमश्नाति शनिःस्वोपदशां गतः ॥ १ ॥

जब मनुष्यको शनिकी अन्तर्दशा में शनि की ही उपदशा आती है तब जोक (जलके एक जन्तु)से देहमें पीडा, विदेश गमन, और निषिद्ध अन्न और तिलका भोजन प्राप्त होता है ॥ १ ॥

धनबुद्धी रिपोःपीडा अन्नपानादिहानिकृत् ।

स्नेहं रसं विना भुंक्ते सौरस्योपदशां बुधः ॥ २ ॥

और जब शनि के अन्तर में बुध की उपदशा आती है तब धन की तथा बुद्धि की वृद्धि, शत्रु से पीडा; अन्न पानादि की हानि, घृत दूध के रहित रूखा भोजन प्राप्त होता है ॥ २ ॥

शत्रुचित्तभयं त्रासो दारिद्र्यं च बहुक्षुधा ।

नीचसंगःकुभक्षी च सौरस्योपदशां शिखी ॥ ३ ॥

और जब शनि के अन्तरमें केतूपदशा आती है तव शत्रु से चित्तमें भय, त्रास, कंगाली, अत्यन्त क्षुधा, नीचों से संग, और निषिद्ध भोजन प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

द्यूतवेश्याभवं द्रव्यं महिषीकृष्यलाभदः ॥

कन्याजन्म तदा गर्भे सौरस्योपदशां सितः ॥ ४ ॥

और जब शनि के अन्तर में शुक्र की उपदशा आती है तब जूआ तथा वैश्याओं से धन की प्राप्ति, भैंस और खेती में लाभ; और कन्या का जन्म होता है ॥ ४ ॥

राजाधिकारस्तेजस्वी व्याधिःपीडा ज्वरो व्यथा ।
कलत्रकलहं चौरं सौरस्योपदशां रविः ॥ ५ ॥

और जब शनि के अन्तर में सूर्य की उपदशा आती है तब राजा से कुछ अधिकार मिले, बडा तेजस्वी, ज्वर व्याधिकी व्यथासे युक्त, स्त्रीके साथ कलह होवे, और कुछेक धन की चोरी हो जाय ॥ ५ ॥

प्रमाणबुद्धिप्राधान्यं बहुस्त्रीभोगवान्धनी ।
हविर्मधुपयोभोक्ता सौरस्योपदशां शशी ॥ ६ ॥

और जब कि शन्यन्तर्गत चन्द्रमा की उपदशा आ जाय तो उसकी बुद्धि बहुत प्रमाणित मानी जाय; बहुतसी स्त्रियों के साथ संभोग करे, बडा धनी हो, दूध, शहद, खीर का भोजन मिलता है ॥ ६ ॥

शस्त्रवन्हिरिपोर्भीतिर्वातरक्तरुजा भवेत् ।
भोजनं मधुसर्पिर्भ्यां सौरस्योपदशां कुजः ॥ ७ ॥

अगर शनि के अन्तर्गत भौम की उपदशा हो तो शस्त्र, अग्नि एवं शत्रुओं से भय हो, वात रक्त की बीमारी हो, लेकिन् भोजन हमेशा शहद घी का ही होता रहे ॥ ७ ॥

धनभूमिपशोर्नाशः कटुतीक्ष्णाम्लभोजनम् ।
मृत्युर्विदेशयात्रा स्यात् सौरस्योपदशां तमः ॥ ८ ॥

अगर शनि दशान्तर्दशा में राहु का प्रत्यन्तर आ लगे तो धन, भूमि तथा पशुओं का नाश हो; कडुआ तीखा तथा आमले के रस कासा भोजन मिले, मरण तुल्य कष्ट होवे और विदेश गमन होवे ॥ ८ ॥

गृहध्वंसो भवत्स्त्रीभिः क्लेशपीडानिरुद्यमः ।
किञ्चित्सौख्यमवाप्नोति सौरस्योपदशां गुरुः ॥ ९ ॥

और जब कि शन्यन्तर्दशा में गुरु का प्रत्यन्तर आ लगे तो स्त्रियों द्वारा घर

का बरबाद होना; बहुत उन्माद: क्लेशों से पीडा होने के कारण उद्योग रहित हो जाय, अन्तिम में कुछ सुख मिले ॥ ९ ॥

अथ बुधोपदशा फलम्—

विद्याबुद्धिधनप्राप्तिःस्वर्णं रूप्यं च माणिकम् ।
लभते धान्यरत्नानि बुधस्योपदशा स्वयम् ॥ १ ॥

जब बुध की दशान्तर्दशा में उसी की उपदशा हो तो विद्या में बुद्धि बढे, धन प्राप्ति, सुवर्ण, चांदी, मणियों की प्राप्ति, और धान्य रत्न का लाभ होता है ।१।

रक्तपित्तकृता पीडा कुख्यातोदर पीडनम् ।
वस्त्रार्थशस्त्रहानिश्च सौम्यस्योपदशां शिखी ॥ २ ॥

और जब बुधान्तर्दशा में केतु की उपदशा आती है तब रक्तपित्त की पीडा, लोगों में निन्दा हो, उदर में पीडा, वस्त्र शस्त्र और धन की हानि होती है ॥ २ ॥

सौम्यदिक्षु भवेल्लाभःपदप्राप्तिर्महत्सुखम् ।
भुंक्ते मिष्टान्नमाहारं सौम्यस्योपदशां सितः ॥ ३ ॥

बुध दशान्तर्दशा में जब शुक्र की उपदशा आती है तब उत्तर दिशा से लाभ, उत्तम पद प्राप्ति, महत्सुख, और मिष्टान्न भोजन प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

तेजोहानिःशिरःपीडा चोद्वेगश्चलचित्तकः ॥
दृष्टिदोषो भवेच्छर्दिः सौम्यस्योपदशां रविः ॥ ४ ॥

और जब बुध की अन्तर्दशा में सूर्य की उपदशा होती है तब तेजकी हानि, शिरमें पीडा; उद्वेग चित्तमें चंचलता, दृष्टिमें दोष, और वमन (उल्टी, कै,) करने का रोग होता है ॥ ४ ॥

श्रियो लाभस्तथा कन्यासौम्यार्थं पुत्रपौत्रकः ।
मिष्टान्नभोज्यवस्त्राणि बुधस्योपदशां विधुः ॥ ५ ॥

और जब मनुष्यको बुधान्तर्दशा में चन्द्रमा की उपदशा आती है तब मनुष्यको लक्ष्मीका लाभ, कन्याका जन्म, पुण्य कर्मों में खर्च होजाने वाले धनकी प्राप्ति, पुत्र पौत्र, मिष्टान्न भोजन, तथा सुन्दर बहुमूल्य वस्त्र प्राप्त होते हैं ॥ ५ ॥

आममृत्युश्चातिसारं चौराग्निशस्त्रपीडनम् ।
ज्ञानधर्मधनप्राप्तिःसौम्यस्योपदशां कुजः ॥ ६ ॥

और जब बुधान्तर्गत मंगलकी उपदशा आती है तब आम रोगसे मृत्यु तुल्य दुःख अतीसार रोग, चौर, शस्त्र और अग्निसे पीडा और ज्ञान तथा धर्म से धनकी प्राप्ति होती है ॥ ६ ॥

राजशत्रुभयं त्रासः कलहःस्त्री निरुत्सहा ॥
स्नेहक्षीरं विना भुंक्ते बुधस्योपदशां तमः ॥ ७ ॥

और जब बुधदशान्तरमें राहुकी उपदशा आती है तब राजा व शत्रु से भय, घबराहट, कलह हो तथा उत्साह रहित स्त्री मिले, और घी दूध रहित रूक्ष भोजन मिलता है ॥ ७ ॥

प्रधानपुरुषं राज्ये विद्याबुद्धिविवर्द्धनम् ।
अन्नपानादिसौख्यं च बुधस्योपदशां गुरुः ॥ ८ ॥

और जब बुध के अंतर में गुरुका प्रत्यन्तर आता है तब राजसभा में प्रधान का पद पावे; विद्या तथा बुद्धिकी वृद्धि, और अन्नपान का सुख होता है ॥ ८ ॥

विकलं घातपातानां वातपीडामहद्भयम् ।
अन्नपानादिहानिश्च बुधस्योपदशां शनिः ॥ ९ ॥

अगर शनि प्रत्यंतर बुधान्तर्दशागत हो तो घात और गिरने से विकलता वायुजन्य पीडा से महद्भय, और अन्नपान की हानि हो ॥ ९ ॥

अथ केतूपदशाफलम्—

धननाशोपघातश्च विदेशे दुःखपूरितम् ।
सर्वत्र विफलं विंद्यात् केतोरुपदशां शिखी ॥ १ ॥

जब कि केत्वन्तर में केतुका ही प्रत्यन्तर हो तो धन नाश, शरीर में चोट लगे, प्रदेश में पडकर दुःख भोगने पडें, सब जगह निष्फलता होवे ॥ १ ॥

चतुष्पाद्धनहानिः स्यान्नेत्ररोगः शिरोव्यथा ।
श्लेष्मभीरर्थहानिश्च केतोरुपदशां भृगुः ॥ २ ॥

जब कि केतुकी अन्तर्दशा में शुक्रकी उपदशा आ लगे तो चौपाये रूप धनका नाश, नेत्र रोग हो,शिरमें दर्द होवे, कफकी तकलीफ रहे तथा धनकी हानि हो॥२॥

मित्रस्वजनजोद्वेगो ह्यल्पमृत्युः पराजयः ।
भोजनं तक्रहीनञ्च केतोरुपदशां रवौ ॥ ३ ॥

केत्वन्तर्गत सूर्यका प्रत्यन्तर आजाय तो मित्र और अपने ही जनों से चित्तमें किसी तरह का घबराहट बना रहे, मृत्यु तुल्य कष्ट, अभियोग में हार होवे और विना छाछ के भोजन मिले ॥ ३ ॥

अन्नपानादिनाशश्च व्याधिस्तस्य च विभ्रमः ।
मिष्टान्नभोजनप्राप्तिःकेतोरुपदशां शशी ॥ ४ ॥

और जब केतुके अन्तर में चन्द्रमाकी उपदशा आती है तब अन्नपानादि का नाश; व्याधि तथा विभ्रम होवे और मिष्टान्न भोजनकी प्राप्ति हो ॥ ४ ॥

वन्हेःशत्रो रणे भीतिर्वातकष्टभयं नृपात् ।
कुधान्यमत्स्यमांसानि केतोरुपदशां कुजः ॥ ५ ॥

और जब केतुकी अन्तर्दशा में मंगलकी उपदशा आती है तब अग्नि तथा शत्रु से रणमें भय, बातजन्य कष्ट से भय, एवं राजा से भी भय होवे, कुधान्य और मत्स्यमांस का भोजन प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

शत्रुतो हि भयं स्त्रीणां नीचेभ्योऽधिकपीडनम् ।
बुभुक्षितं पराधीनं केतोरुपदशां तमः ॥ ६ ॥

और जब केतु के अन्तर में राहुकी उपदशा आती है तब मनुष्यको शत्रुसे भय, और स्त्रीयोंको नीचों से अधिक पीडा होवे, दारिद्रय तथा पराधीनता होती है ॥ ६ ॥

विवादं धनहानिश्च वस्त्रमंत्रादिनाशनम् ।
केतोरुपदशां जीवो रूक्षधान्यादिभोजनम् ॥ ७ ॥

और जब केतुकी अन्तर्दशा में गुरुकी उपदशा आती है तब विवाद, धनकी हानि, वस्त्र मंत्रादिका नाश, और रूखे अन्नका भोजन प्राप्त होता है ॥ ७ ॥

वस्त्रान्नपानहानिश्च सुखमाश्रमपीडनम् ।
गोमहिष्यादिनाशश्च केतोरुपदशां शनिः ॥ ८ ॥

और जब केतुके अन्तर में शनिकी उपदशा आती है तब वस्त्र अन्नपानकी हानि, सुख, तथा आश्रमकी तरफसे पीडा होवे, और गौ, भैंस आदिका नाश होताहै ॥ ८॥

शत्रुपीडा महोद्वेगो विद्याबंधुधनक्षयः ।
केतोरुपदशायां हि भवेत् सौम्ये न संशयः ॥ ९ ॥

और केतु अन्तर्दशा में बुधकी उपदशा आती है तब शत्रुसे पीडा, महान् उद्वेग, विद्या बन्धु और धनका नाश होवे इसमें सन्देह नहीं ॥ ९ ॥

अथ शुक्रोपदशाफलम्—

माणिक्यसुन्दरीप्राप्तिर्मधुदुग्धाज्यभोजनम् ।
श्वेतवस्त्रस्य संप्राप्तिर्भृगुः स्वोपदशां गतः ॥ १ ॥

शुक्रकी अन्तर्दशामें अगर शुक्रका ही प्रत्यन्तर आ लगे तो मणि तथा सुन्दर भार्य्याकी प्राप्ति, शहद, दूध, घी का भोजन, तथा सफेद वस्त्रकी प्राप्ति होवे ।१।

राजशत्रुज्वरात्पीडा हृदि जंघाशिरोव्यथा ।
स्वल्पाशनश्च लाभश्च शुक्रस्योपदशां रविः ॥ २ ॥

जबकि शुक्र के अन्तर में सूर्य की उपदशा आ जाय तो राजा शत्रु तथा ज्वरसे पीड़ा, हृदय जांघ तथा शिरमें पीड़ा, थोड़ा भोजन ही पचसके, एवं लाभहो॥

राज्याधिकप्रदो राज्ये लभते वस्त्रकाञ्चनम् ।
कन्याजन्मफलप्राप्तिः शुक्रस्योपदशां शशी ॥ ३ ॥

चन्द्रोपदशाको शुक्रान्तर्गत होने पर अपनी रियासत में खूब हुकूमत चले, वस्त्र सुवर्ण की प्राप्ति हो तथा कन्या जन्म के फलकी प्राप्ति होवे ॥ ३ ॥

अलाभं ताडनं क्लेशो रक्तपित्तप्रपीडनम् ।
अन्नपानादिसौख्यञ्च शुक्रस्योपदशां कुजः ॥ ४ ॥

जब कि शुक्रकी अंतर्दशा में भौम की उपदशा आ लगे तो हानि होवे, मार पीट होवे, क्लेश हो, रक्त पित्तके विकारसे पीड़ा हो, किंतु अन्नपानका कुछ सुखरहे॥

राजशत्रुभवा पीडा स्त्रीशत्रुकलहो भवेत् ।
भोजने कटुकक्षारं सितस्योपदशां तमः ॥ ५ ॥

शुक्रके अन्तर में यदि राहुका प्रत्यंतर आ पडे तो राजा तथा शत्रु से पीड़ा हो, स्त्री तथा शत्रु से झगड़ा होवे, भोजन में कडुआ या खारा पदार्थ मिले ॥५॥

वज्रमुक्तापदप्राप्तिर्धेनुवाजिगजाँल्लभेत् ।
कर्पूरमिष्टमाहारं शुक्रस्योपदशां गुरुः ॥ ६ ॥

जब शुक्रान्तर्दशा में गुरुकी उपदशा हो तो मणि मोती तथा अच्छा पद मिले, गैय्या, घोड़ा, हाथी मिलें कपूर आदि सुगन्धित पदार्थों का लाभ रहे, मन चाहे भोजन मिलें ॥६॥

गवोष्ट्रखरलौहादि लभते स्वल्पलाभकृत् ।
भोजने तिलमाषाश्च शुक्रस्योपदशां शनिः ॥ ७ ॥

शुक्रांतर्गत शनिका प्रत्यंतर आ जाय तो गैया, ऊंट, गधा, लोहे आदिका लाभ होवे, लेकिन रुपयों का लाभ कम होवे, खाने को तिल तथा उड़द मिलें ।७।

बुद्धिर्विज्ञानराज्यश्रीर्निध्यधिकारलाभकृत् ।
भोजनं हवितक्राभ्यां शुक्रस्योपदशां बुधः ॥ ८ ॥

अगर बुधका प्रत्यंतर शुक्रांतर्दशागत हो जाय तो बुद्धि, विज्ञान, राज्य, लक्ष्मी, तथा खानि आदिका अधिकारी होवे, और भोजन में खूब दूध दही छाछ उड़ते रहें ॥ ८ ॥

भ्रमणं देशग्रामाणां रोगमृत्युमहद्भयम् ।
लभते द्रव्यधान्यादि शुक्रस्योपदशां शिखी ॥ ९ ॥

जब कि शुक्रान्तर्दशा में केतुकी उपदशा आ लगे तो देश तथा गामों में खूब घूमता रहे रोग एवं मृत्युका बड़ा डर बनारहे, द्रव्यधान्यादिका पूर्ण लाभ होवे ।९।

अथ संध्यादशा फलम्—

तत्रादौ रविसंध्याफलम्—

संध्या दिनेशस्य विपाककाले धनागमं शौर्यनरेन्द्रसौख्यम् ।
धर्मोद्यमं सौख्यमतीव तीक्ष्णं भूपादिसौख्यं विभवादिमानम् ॥ १

जब मनुष्यको सूर्यकी संध्या दशा लगती है तब उसके फल कालमें धनागम, शौर्य, राजा से सौख्य, धर्म में उद्यम, अत्यंत सुख; राजा आदि से सौख्य और वैभव से मान प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥

प्रचंडवित्तं स्वकुलाधिकारं सुवर्णताम्राश्वरथादिकाप्तिः ।
आरोग्यताविद्रुमरत्नलाभं प्राप्नोति कीर्तिं रिपुसंक्षयं च ॥ २ ॥

और खूब धन; स्वकुलाधिकार, तथा सुवर्ण ताम्र अश्व रथादिककी प्राप्ति, आरोग्य और मोती मूंगाका लाभ, कीर्ति और शत्रु क्षय होते हैं ॥ २ ॥

तुङ्गादिसंस्थःफलमेव संध्या नीचारिसंस्थोऽथ शुभं फलं च ।
तदर्थनाशं पितृबंधुहानिं हृदाक्षिपीडाकरपित्तरोगम् ॥ ३ ॥

परंतु उपरिश्लोकद्वयोक्त संध्या फल तब मिलता है जबकि सूर्य मेषका होकर स्थित हो और यदि नीच का या शत्रुक्षेत्री होकर स्थित हो तब धनका नाश, पिता भ्राता की हानि, हृदय नेत्रों में पीडा और हाथों में पित्त प्रकोप से रोग आदि अशुभ फल होते हैं॥ २ ॥

अथ चन्द्रसंध्याफलम्—

क्षपेशसंध्यापरिपाककाले प्राप्नोति वित्तं द्विजमंत्रिसौख्यम् ।
स्वविक्रमाच्च स्वगुणैःसुवर्णं सुगंधिद्रव्यादिषु कार्यलाभम्॥१॥

चन्द्र संध्या दशा में धन लाभ, ब्राह्मण और मंत्रिजनों से सुख, अपने पराक्रम तथा गुणों से सुवर्ण और सुगन्धित द्रव्यादिकों से कार्य लाभ होता है ॥ १ ॥

प्रबोधकल्याणधनात्मजाप्तिरभीष्टसिद्धिर्धनधर्मलाभम् ।
सत्साधुसंपर्ककथानुरक्तं कुलाधिमुख्यं नृपपूजितं च ॥ २ ॥

प्रबोध, कल्याण, धनऔरपुत्रोंकी प्राप्ति, अभीष्टकार्यकी सिद्धि, धन धर्मकालाभ, सज्जनोंसे समागम, कथामें अनुराग, कुलमें श्रैष्ठ्य, और राजासे पूजा प्राप्त होतीहै।

नीचारिसंस्थे कृषकस्वरूपो मित्रारिहर्त्ता दुहितुःप्रसूतिः ।
अर्थक्षयं शोकरुजादिकष्टं क्रोधोद्भवं विद्रवमृत्युकारी ॥ ३ ॥

और जो चन्द्रमा नीचका या शत्रुक्षेत्री होकर संध्यामें होताहै तब जातक खेती करनेवाला, मित्रोंके शत्रुओं को मारने वाला, कन्याका जन्म, अर्थका नाश, शोक तथा रोगसे कष्ट, क्रोधी, उपद्रवी, और मृत्युसमान दुःख पाने वाला होता है ॥ ३ ॥

अथ भौमसंध्याफलम्—

स्वपाककाले धरणीसुतस्य संध्या समाप्नोति महाप्रतापम् ।
शौर्यं हविस्तस्करपापकर्मा दोर्दंडतेजा रणसाहसी च ॥ १ ॥

मंगलकी संध्या दशा होतीहै तबप्रताप खूब बढे,तथा शौर्य, चोरों और पापियों को दण्डदेने वाला भुजदंडोंका प्रताप होवे और रणमें खूब साहसी होवे ॥ १ ॥

नृपेश्वरःशस्त्रविषाग्निकर्मनेतारसूर्यानृपकूलधर्मैः ।
कांतादिकार्ये सततार्थलाभं हेमांगनाताम्रहिरण्यलाभम् ॥ २ ॥

राजाओं में प्रधान, तथा शस्त्र विष अग्निकर्म में प्रधान, स्त्री आदि के कार्य में निरंतर लाभयुक्त, सुवर्ण स्त्री और ताम्रका लाभ होता है ॥ २ ॥

अथ बुधसंध्याफलम्—

बुधस्य संध्या विदधाति शश्वद्धनागमं मित्रकलत्रपुत्रैः ।
वणिक्प्रयोगादखिलैश्च कार्यैर्महेंद्रजालैःकुहकादिभिश्च ॥१॥

बुधकी संध्या दशा होतो सब समय मित्र, कलत्र और पुत्रोंसे धनका आगमहो और व्यापार आदि सब कर्तव्य तथा इन्द्रजाल और कपट प्रकारोंसे भी धनागम होवे ॥ १ ॥

द्यूतप्रयोगाद्द्विपकर्ममंत्रैर्दैवज्ञसिद्धांतरसायनाद्यैः ।
भूहेमलोहैश्च नृपात्मजेभ्यो लाभो धनानां सुखसौख्यवृद्धिः॥२

जूआ खेलनेसे, हाथीयोंके क्रय विक्रयसे तथा मंत्रोंसे,ज्योतिष सिद्धांत विद्यासे औषधिसंबंध से, भूमि सुवर्ण लोहा के व्यापार से एवम् अपने राजा तथा स्वपुत्रों से धनों का लाभ और सुखकी वृद्धि होती है ॥२ ॥

नीचारिसंस्थोऽस्तमितश्च सौम्यास्त्रिधातुपीडां कुरुतेऽर्थनाशम् ।
कलत्रहानिं नृपबंधनाप्तिं परस्वदुःखं नृपपीडितञ्च ॥ ३ ॥

१--एतदनन्तरं नीचस्थकुजफलावबोधकं निम्नस्थ मप्येकं पद्यमशुद्धप्रायं पूर्वपुस्तकेषु लिखितमासीत् तथाहि—

" मतिंच पूर्वांकटुकैः कषाये रसैः कुमत्रैः कुजन्मेषु शक्तिः
स्वभ्रातृबन्धु स्वजनार्थ नाशं दाह ानुजः शोणितपित्ततेजस्या"

यदि बुध नीचका या अपने शत्रुके घरका या अस्त गत होवै तो बात पित्त कफसे पीड़ा, और धनका नाश, स्त्री की हानि; राजा से बंधन, दूसरे के धन चुराने से दुःख तथा राजा से पीड़ा पाता है ॥ ३ ॥

अथ गुरुसंध्याफलम्—

गुरुःस्वसंध्यां लभतेऽतिसौख्यं हेमांबरं रत्नगजाश्वजातम् ।
धनं लभेत्पुत्रसमुच्चयं च स्वधर्मसिद्धिं द्विजदेवपूजाम् ॥ १ ॥

गुरु की संध्या दशामें सुवर्ण वस्त्र रत्न हाथी घोड़ों से अत्यन्त सुख, धन पुत्रों की वृद्धि और अपने धर्म की सिद्धि, और देवता तथा ब्राह्मणोंकी पूजा प्राप्त होती है

जनागमं च त्रिदिवेश्वरत्वं वेश्मप्रवेशस्त्वपि चार्थसिद्धिः ।
स्वजातिसन्मानमतिप्रहर्षं भूपालसौख्यं विविधार्थलाभम् ॥२॥

और स्वजनोंका आगमन, इन्द्रतुल्यबली, नवीन गृहमेंप्रवेश, अर्थोंकीसिद्धि, अपनी जातिमें सन्मान, अत्यंत आनंद, राजासे सुख, और अनेक अर्थलाभ प्राप्त होते हैं

विदेशनिम्ने कृतगोविवर्णैर्गुरुःस्वपाके सुहृदर्थनाशम् ।
भूपालभंगं सुतकष्टरोगं करोति पाके बहुदुःखकारी ॥ ३ ॥

जो गुरु नीच वा अस्त गत होवें तो विदेशों में जाकर नीचोंका सा काम करें अपने तथा मित्रों के भी धन का नाश करै राजा से भंग, पुत्रोंको कष्ट तथा रोग और अनेक दुःख होवें ॥ ३ ॥

अथ शुक्रसन्ध्याफलम्—

दैत्येंद्रपूज्यस्य करोति सन्ध्या महार्थसम्प्राप्तिमजस्रसौख्यम् ।
नृपेश्वरत्वं स्वकुलाधिकारं प्राप्नोति वित्तं मणिमौक्तिकानि ॥१॥

शुक्रकी संध्या दशामें बहुत धनका लाभ, बडा सुख, राजाओं में महत्व पावे, और अपने कुलका अधिकारी होवे और मणिमोती आदि अधिक धन मिले॥१॥

गजाश्वयानासनमानहर्षैःप्रख्यातकर्मा क्रयविक्रयाणाम् ।
धनागमं भूकृषिणा महोक्षैःकलत्रवृद्धिं सुखसौख्यजातम् ॥२॥

हाथी घोडा सवारी आसन मान और हर्षसे युक्त, तथा खरीदने बेचने के

काम में विख्यात, भूमि खेती और वृषके निमित्तसे धन लाभ स्त्रियोंकी वृद्धि और सब सुख होते हैं ॥ २ ॥

शुक्रे गते निम्नगृहेऽरिगेहे योधैर्जितो बारबलिप्तिगुप्तिः ।
दुष्टांगनासंगमसौख्यहर्त्ता धनक्षयं स्त्रीसुतधर्मनाशम् ॥ ३ ॥

यदि शुक्र नीच या शत्रु क्षेत्री हो तो लड़ाके शत्रुओं से हारे, दुष्ट स्त्रियों से संगम होवे, सुखका नाश, धनका क्षय, और स्त्री पुत्र धर्मका नाश होता है॥३।

अथ शनिसंध्याफलम्—

यदा तु तीक्ष्णांशुसुतस्य संध्यां ददाति लाभं स्वकुलाधिकारम् ।
खरोष्ट्रगोपाक्षिकधान्यवस्त्रकुलित्थमाषादिककोद्रवाप्तिः ॥ १ ॥

जब मनुष्यको शनिकी संध्या होती है तब अनेक लाभ हों, तथा अपने कुलके अधिकार मिलें, गधा, ऊँट, गौ, पक्षी; धान्य, वस्त्र, कुलथी, उडद, और कोदों आदि अन्न विशेष की प्राप्ति होवे ॥ १ ॥

वृंदेश्वरं ग्रामपदाधिपत्यं कुलोन्नतिं हीनजनप्रमाणम् ।
लोहायसीसत्रपुसन्माहिष्यैर्धनागमं मर्त्यचतुष्पदेभ्यः ॥ २ ॥

और किसी ग्रोहका मालिक बनकर रहे, ग्रामका आधिपत्य मिले, कुलकी उन्नति करे दीनजनों का पालन करे लोह, सीसा, लाख, अच्छी २ भैंसों के निमित्त से तथा मनुष्य और पशुओं से भी धन मिले ॥ २ ॥

नीचारिसंस्थोऽस्तमितोदितस्य सौरस्य पाके कुरुते च कष्टम् ।
सद्बंधुभार्याधनपुत्रनाशं देहे रुजा तीव्रतरानिलोत्था ॥ ३ ॥

जो शनि नीच या शत्रु क्षेत्री वा अस्तगत होवे तो कष्ट हो, उत्तम बन्धु भार्यापुत्र धनका नाश हो, और देहमें कष्ट साध्य बात रोगसे उत्पन्न पीड़ा होवे ॥ ३ ॥

उक्तान्यतो द्वादशभिःप्रकारैर्नैसर्गिकादीनि दशांतराणि ।
तत्रापि संध्याफलपाक उक्तः स चिंतनीयो सदृशःफलेन ॥ ४ ॥

पूर्व नैसर्गिक आदि जो बारह प्रकार से दशांतर (दशाओं के भेद) कहे हैं उनमें भी संध्या दशा फल पाक कहा है उसको भी उसी प्रकार समझना चाहिये।

अथ पाचक दशाफलम्—

अथ रविमध्ये रव्यादिपाचक दशाफलम्—

राजमानं सुखं चैव सन्मानं शत्रुनाशनम् ।
लभते सौख्यलाभं च रविमध्ये स्वयं रविः ॥ १ ॥

जब रवि की पाचक दशा में रवि आता है तब राजा से मान, सुख, सन्मान; शत्रु नाश, सौख्य लाभ प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥

रोगादिनाशं धनधान्यलाभं शत्रुक्षयं प्रीतिसुखोदयं च ।
सूर्यस्य चन्द्रांतरसंधिपाके तत्रास्तभाद्द्वित्रिशुभं करोति ॥ २ ॥

जब सूर्य के अन्तर्गत चन्द्रमा की पाचक दशा आती है तब रोगों का नाश; धन धान्य का लाभ, शत्रुजनों का नाश, प्रीति तथा सुख का उदय. और अगर उच्चस्थ हो तो इससे दूना तिगुना शुभ फल होता है ॥ २ ॥

दिवाकरस्यांतरगःकुजश्चेल्लाभोऽभयं विक्रमहेमताम्रम् ।
संग्रामधुर्याजयवाहनानि प्रचंडतां भूपसुखं करोति ॥ ३ ॥

जब सूर्य के अन्तर्गत मंगल की पाचक दशा आती है तब लाभ, अभय, विक्रम, सुवर्ण, ताम्र. संग्राम में जय, सवारी. प्रचण्डता, और राजा से सुख सब प्राप्त होते हैं ॥ ३ ॥

देहे च कष्टं ज्वररोगदौःस्थ्यं करोति शोकक्षयशत्रुवैरम् ।
अर्थक्षयं रोगरुजाप्रवासं बुधो विपाके दिवसेश्वरस्य ॥ ४ ॥

जब सूर्य के अन्तर्गत बुध की पाचक दशा आती है तब देह में कष्ट, ज्वर. तथा रोगों के कारण तन्दुरुस्ती बिगड़ जाय, शोक, क्षयरोग, शत्रुओं से बैर भावबढे, धननाश; और रोगों से देशान्तरगमनादि अनेक अनिष्ट फल होते हैं । ४ ।

पापादिरोगव्यसनादिमुक्तिर्धर्मोदयं ज्ञानसुखागमं च ।
सूर्यःसुरेज्यांतरगो विपाके करोति लक्ष्मीं धनवर्धनं च ॥५॥

जब सूर्य के अन्तर्गत गुरु की पाचकदशा आती है तब पाप रोग और दुःखों से मुक्ति, धर्म में प्रवृत्ति. ज्ञान तथा सुख की प्राप्ति, लक्ष्मी और धन की वृद्धि होती है ॥ ५ ॥

दद्रूशिरोगांगलरोगदोषाञ्छूलं ज्वरं वा सुहृदःस्वहर्ता ।
शस्त्राद्भयं मृत्युसदृक्षदुःखं रव्यन्तरे दैत्यगुरुःकरोति ॥ ६ ॥

जब मनुष्य को सूर्य के अन्तर्गत शुक्र की पाचकदशा आती है तब शरीर में दाद, शिर में पीडा, गांगन रोग, दोष, शूल, ज्वर हो और मित्र के धन को हरे, मृत्यु तुल्य दुःख और शस्त्र से भय होता है ॥ ६ ॥

कार्यार्थनाशं क्षितिपालभंगं देहे रुजापित्तसमुद्भवं च ।
विद्युद्भयं बुद्धिविनाशदैन्यं संध्या तु सौरेर्दिवसेश्वरस्य ॥७

और जब सूर्य के अन्तर्गत शनि की पाचकदशा आती है तब मनोरथ तथा धन का नाश. राजा से भंग, देह में पैत्तिक रोग, विजली से भय, बुद्धि का विनाश और दीनता हो ॥ ७ ॥

अथ चन्द्रमध्ये चन्द्रान्तरफलानि—

मणिमुक्ताफलं चैव सौख्यानि विविधानि च ।
वस्त्रप्राप्तिःसुखप्राप्तिःस्वपाके संस्थितःशशी ॥ १ ॥

जब चन्द्रमा अपनी पाचक दशा में होता है तब मणि, मोती, मूंगा का लाभ, अनेक प्रकार के सुख तथा वस्त्र प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥

रक्तवस्तुकृतो लाभो बिदेशगमनं भवेत् ।
सुखसंतानमाप्नोति चन्द्रे भौमस्य पाचके ॥ २ ॥

जब चन्द्रमा में भौम की पाचक दशा आती है तब रक्त वस्तु का लाभ, देशान्तर की यात्रा, सुख और सन्तान फल होते हैं ॥ २ ॥

दुःखं सुखं समं चैव लाभहानी तथैव च ।
उद्वेगवशगो नित्यं चन्द्रस्यांतर्गते बुधे ॥ ३ ॥

जब चन्द्रमा में बुध की पाचक दशा आती है तब समान दुःख सुख, लाभ नुकसान भी समान हों, और नित्य उद्वेग और पराधीनता प्राप्त होते हैं ॥ ३ ॥

स्वर्णलाभं पुत्रजन्म ह्यानंदं हर्षसंयुतम् ।
मणिर्मुक्ताफलं चैव चन्द्रस्यांतर्गते गुरौ ॥ ४ ॥

जब चन्द्रमा के अन्तर्गत गुरु की पाचक दशा आती है तब सुवर्ण का लाभ, पुत्र का जन्म, हर्ष, आनन्द, मणि और मुक्ताफल प्राप्त होते हैं ॥ ४ ॥

उत्तमस्त्रीजनैर्योगो दिव्यकन्यासमुद्भवः ।
धर्म्मयुक्ता धनप्राप्तिश्चन्द्रस्यान्तर्गते सिते ॥ ५ ॥

चन्द्रान्तर्गत शुक्र की पाचक दशा हो जाय तो उत्तम स्त्रियों से सम्बंध, सुन्दर लड़की की उत्पत्ति, एवं धर्मयुक्त धन प्राप्ति होवे ॥ ५ ॥

वेश्यागमं करोत्येव विवादं स्त्रीसमागमः ।
अकस्माद्धनलाभश्च चंद्रमध्ये शनिर्यदा ॥ ६ ॥

जब चन्द्रांतर्गत शनि की पाचक दशा आती है तब वह मनुष्य अवश्य वैश्यागमन करे, विवाद, और किसी स्त्री से समागम, और अकस्मात् धन का लाभ होता है ॥ ६ ॥

मणिविद्रुमलाभं च सर्वसौख्यसुखागमम् ।
प्रतापं गंधसंयुक्तं कर्पूरादि शशी रवेः ॥ ७ ॥

जब चन्द्रांतर्गत रविकी पाचक दशा आती है तब मणि मूंगा का लाभ, सब सुखों की प्राप्ति, कपूर तुल्य शुभ्र जिसकी कि चारों और बड़ाई हो रही हो ऐसा प्रताप बढे ॥ ७ ॥

अथ भौममध्ये भौमादिपाचक दशाफलम्—

भौमे शत्रुविमर्दःस्यात् कलहो बन्धुभिर्नृणाम् ।
स्वान्तरे बहुपीडा स्याद् वृद्धस्त्रीगणिकारतिः ॥ १ ॥

मंगल के अंतर्गत मंगल की ही पाचक दशा आवे तो शत्रु नाश, भाई बन्दों के साथ झगडा, तथा अत्यंत पीडा और बुड्ढीस्त्री तथा वैश्या से प्रेम करे १

बलं मानं सुखं चैव धनलाभं सुखागमम् ।
लभते मानवो नित्यं भौममध्ये बुधो यदा ॥ २ ॥

जब भौम के अंतर्गत बुध की पाचक दशा आती है तब मनुष्य को बल, मान, सुख, धन का लाभ, सुखागम, ये नित्य प्राप्त होते हैं ॥ २ ॥

सौभाग्यसौख्यमतुलं नानाशत्रुविमर्दनम् ।
लभते सुखसौभाग्यं भौममध्ये गुरुर्यदा ॥ ३ ॥

जब मंगलांतर्गत गुरु की पाचक दशा आती है तब अतुल सुख, और सौभाग्य, अनेक शत्रुओं का नाश, अतएव खूब ही सुख सौभाग्य प्राप्त होतेहैं । ३

स्वदेहपीडां धनमानहानिं महत्प्रतापं सुखवर्जितं च ।
ददाति भौमांतरगो भृगुश्च धर्मार्थसिद्धिं विजयं तथैव॥४॥

जब मंगल के मध्यगत शुक्र की पाचक दशा आती है तब देह में पीडा, धन मान की हानि, प्रताप बहुत बढे, लेकिन इतने पर भी सुख की नींद कभी न सोवे, पर धर्मार्थ की सिद्धि, तथा विजय जरूर प्राप्त होवे ॥ ४ ॥

स्वदेहभंगं कुरुते शनौ कुजो विपाककाले सुखवर्जितं च ॥
धनागमं ह्यर्थविनाशनं च सेवा भवेन्नीचजनप्रतापे ।। ५

जब मंगल के अन्तर्गत शनिकी पाचक दशा आती है तब स्वदेहका भंग, सुखका नाश, कभी धनका आगम और कभी नाश, और धनी नीच जनों के यहां नौकरी करता है ॥ ५ ॥

सूर्यो रोगविनाशं च श्वेतवस्तुफलप्रदम् ॥
सन्मानं चैव भूपालसर्वसौख्यं धनागमम् ॥ ६ ॥

जब मंगल के अन्तर्गत रविकी पाचक दशा आती है तब रोगों का नाश, श्वेत वस्तुसे लाभ; और राजा से सन्मान और धन तथा सबरे सुख मिलें ॥ ६ ॥

ददाति हेमांबरसौख्यलाभं धनं तथा भोगसुखं च संततिम्
मित्रागमं भ्रातृपितुश्च भक्तिं ददातिचंद्रोऽतरगःकुजस्य॥७॥

जब मनुष्यको मंगलके अंतर्गत चन्द्रमाकी पाचक दशा आती है तब सुवर्ण वस्त्र सुखका लाभ, धन, भोग, सुख और संतति लाभ, मित्रोंका आगम, और पिता भ्राता में भक्ति होती है ॥ ७ ॥

अथ बुधमध्ये बुधादिपाचकदशाफलम्—

स्वबोधबुद्धिदं चैव शत्रूणां च क्षयंकरम् ॥

द्रव्यलाभं धनं सौख्यं स्वपाके बुधगे सदा ॥ १ ॥

और जब बुधके अन्तर्गत बुधकी पाचक दशा आती है तब स्वतःही बुद्धि और ज्ञान होवे, शत्रुजनोंका नाश, द्रव्यलाभ और धन प्राप्ति से सुख हो ॥ १ ॥

हेमांवराणां प्राप्तिःस्याद् विदेशगमनं भवेत् ॥
बुधस्यांतर्गते जीवे धनधान्यसुखं भवेत् ॥ २ ॥

जब बुधके अन्तर्गत गुरुकी पाचक दशा आती है तब सुवर्ण और वस्त्रोंका लाभ, विदेश गमन, और धनधान्य का सुख प्राप्त होता है ॥ २ ॥

बुधमध्ये यदा शुक्रो भवत्येव सुखागमः ॥
धनधान्यसमृद्धं स्य द्बहुसौख्यं करोति च ॥ ३ ॥

जब बुधके अंतर्गत शुक्रकी पाचक दशा आती है तब अनेक सुखोंकी प्राप्ति धनधान्यकी समृद्धि और अनेक सुख होते हैं ॥ ३ ॥

बुधसंध्यान्तराले तु सौरपाको यदा भवेत् ॥
तदा राजा भवेन्मानसुखसंतानकारकः ॥ ४ ॥

जब मनुष्यको बुध संध्यान्तर्गत शनिकी पाचक दशा आती है तब राजा हो तथा मान सुख और संतानकी प्राप्ति होवे ॥ ४ ॥

वातपित्तकृता पीडा हानिकारी नरो भवेत् ॥
पाककाले बुधस्यापि यदा ह्यन्तरतोरविः ॥ ५ ॥

जब बधके अन्तर्गत सूर्य की पाचक दशा आती है तब बात पित्तसे शरीर में पीड़ा, और अनेक प्रकारकी हानि होती रहे ॥ ५ ॥

देहपीडा हृदुद्वेगःकलहश्च गृहे भवेत् ॥
अत्यंतहानिकारी च बुधमध्ये तु चंद्रमाः ॥ ६ ॥

जब बुधके अन्तर्गत चन्द्रमाकी पाचक दशा आती है तब देहमें पीडा चित्तमें घबराहट; घरमें कलह, और अत्यन्त हानिका करने वाला होता है ॥ ६ ॥

अग्निदाहं ज्वरं तीव्रं भवेद्रक्तविकारकम् ॥
शत्रुघातरुजं चैव बुधमध्ये कुजे सदा ॥ ७ ॥

जब बुधके अन्तर्गत भौमकी पाचक दशा आती है तब अग्निसे दाह तीव्रज्वर, रक्त विकार, शत्रु से घात और रोग होता है ॥ ७ ॥

अथ जीवमध्ये जीवादिपाचकदशा फलम्—

पापैश्च रोगैश्च भवेद्विमुक्तो धर्म्मं जयं प्राप्य समस्तकाले ॥
जीवः स्वपाके फलमातनोति धनागमं मित्रकलत्रपुत्रैः ॥१॥

जब गुरुके अन्तर्गत गुरुकी ही पाचक दशा आतीहैं तब पाप रोगोंकी निवृत्ति सर्वदा धर्म बढे, तथा जय होवे, और स्त्री मित्र तथा पुत्रों से धनागम होवे ॥ १ ॥

कार्यार्थनाशं च महाविरोधं विशेषमाप्नोति नरोऽतिसौख्यम् ॥
शृंगारकोशस्य नरैश्च सौख्यं यदा भवेज्जीवगतो भृगुश्च ॥२॥

जब गुरुके अन्तर्गत शुक्रकी पाचक दशा आती हैं तब कार्यार्थका नाश, महा विरोध, विशेष सुख, तथा अपुन खुद बड़ी सज धजके साथ रहा करै खजाने की तथा अन्यान्य लोगों से सुखकी प्राप्ति करे॥ २ ॥

शनैश्चरे पाकगतेऽथ जीवे दानं करोत्येव हि सर्वसौख्यम् ॥
द्रव्यापहारं व्यसनादियुक्तं ज्वराभिघातं व्यसने च सौख्यम् ॥

और जब गुरुके अन्तर्गत शनिकी पाचक दशा आती है तब खूब दान करे, तथा सब सुख मिले, कुछ द्रव्य चोरीमें जाय, व्यसनादिमें लगा रहे; ज्वर से पीडा और व्यसनों में सुख माने ॥ ३ ॥

संध्या गुरोःपाकरविःस्वकाले धनागमं मित्रकलत्रकं च ॥
चिरं बसेद्देशविदेशकेषु महत्प्रतापं विजयं च सौख्यम् ॥ ४

जब गुरुके अन्तर्गत रविकी पाचक दशा आती है तब धन मित्र कलत्रका आगम, बहुत काल तक विदेश वास करे, महा प्रताप, विजय तथा सौख्य प्राप्त होते हैं ॥ ४ ॥

तीर्थागमे भवेत्सौख्यं पुत्रमित्रसमागमम् ।
धनलाभो भवेच्चैव गुरुपाके शशी यदा ॥ ५ ॥

जब गुरुके अन्तर्गत चन्द्रमाकी पाचक दशा आती है तब तीर्थयात्रा में मन रक्खे, सुख हो, पुत्र मित्रका समागम, और धनका लाभ होता है ॥ ५ ॥

अग्निचौरभयं नास्ति धनप्राप्तिःपदे पदे ।
राजमानं गृहे सौख्यं जीवमध्ये कुजे गतिः ॥ ६ ॥

और जब गुरुकी दशामें भौमकी पाचक दशा आती है तब अग्नि चोरके भयकी निवृत्ति, क्षण २ में धन प्राप्ति; राजमान और गृहमें सुख होते हैं ॥ ६ ॥

जीवांतरगते सौम्ये पुत्रधान्यं गृहे सुखम् ।
मांगल्यं च भवेन्नित्यं वस्त्रप्राप्तं सुखं भवेत् ॥ ७ ॥

जब गुरुकी अन्तर्दशा में बुधकी पाचक दशा आती है तब पुत्र धन धान्यका घरमें सुख, और नित्य मंगल और वस्त्र सुख प्राप्त होते हैं ॥ ७ ॥

अथ शुक्रमध्ये शुक्रादिपाचकदशाफलम्—

स्वपाककाले भृगुनंदनोऽपि हेमांबरं नित्यसुखं ददाति ।
वस्त्रादिलब्धिं च सुखागमं च धनं लभेत्पुत्रसमन्वितं च ॥१॥

जब शुक्रके अन्तर्गत शुक्रकी ही पाचक दशा आती है तब सुवर्ण वस्त्रका नित्य सुख होवे, और नित्य वस्त्रादि प्राप्ति, सुखका आगम, और पुत्र धनकी प्राप्ति होती है ॥ १ ॥

राज्याभिमानं सुखसंपदं च परोपकारी व्ययमाप्नुवंति ।
शनैश्चरःशुक्रगते समेति मांगल्यकार्यं च सुखावहं च ॥२॥

और जब शुक्रकी अन्तर्दशामें शनिकी पाचक दशा आती है तब राज्यका अभिमान, सुख संपत्ति, परोपकारमें आसक्त, अधिक खर्चहो, और मंगल कार्योमें सुख प्राप्त होता है ॥ २ ॥

कार्यनाशं गृहे सौख्यं भुंजति प्रभवःसदा ।
विपाके सूर्यशुक्रे च मानवो लभते फलम् ॥ ३ ॥

और जब शुक्रांतर्दशामें रविकी पाचक दशा आती है तब कार्यनाश, किन्तु तबभी घरमें सुख, भोग मनुष्यको प्राप्त होते हैं ॥ ३ ॥

ददाति वित्तं बहुसौख्ययुक्तं वस्त्रांबरं रत्नसमुच्चयं च ।
सौख्यार्थलाभं स्वगृहे च सौख्यं यदा भवेच्छुक्रगतो हिमांशुः ॥

जब शुक्र के अंतर्गत चंद्रमा की पाचक दशा आती हैं तब अनेक सुखों से युक्त धन, वस्त्र आभूषण और रत्नों की प्राप्ति सुख और धन की प्राप्ति और घर में सुख होते हैं ॥ ४ ॥

भृगोर्विपाके धरणीसुतोऽपि कार्यार्थलाभं बहुलार्थयुक्तम् ।
महत्प्रतापं सुखसंगमं च ददाति प्राप्नोति भयं कुतश्च ॥५॥

जब शुक्र की अंतर्दशा में मंगल की पाचक दशा आती है तब कार्य और धनों का लाभ, जिनसे बहुत से मतलब उसके हल हो जांय, महत्प्रताप, सुख का समागम, और कभी कभी कहीं से भय भी होता है ॥ ५ ॥

ददाति मौक्तिकं चैव सुखसौभाग्यपुत्रकम् ।
कन्याजन्म गृहे सौख्यं भृगुमध्ये गते बुधे ॥ ६ ॥

जब शुक्र के अंतर्गत बुध की पाचक दशा आती है तब मोती सुख, सौभाग्य, हों तथा पुत्र कन्या का जन्म, और घर में सुख होता है ॥ ६ ॥

सुखं करोति सौभाग्यं व्यवहारे महत्सुखम् ।
लाभं कार्यस्य सिद्धिःस्याच्छुक्रमध्ये गते गुरौ ॥ ७ ॥

जब शुक्र के अंतर्गत गुरु की पाचक दशा आती है तब सुख, सौभाग्य हो, व्यवहार में महत्सुख, लाभ और सब कार्यों की सिद्धि होती है ॥ ७ ॥

अथ शनिमध्ये पाचक फलम्—

शनेर्विपाके कुरुतेऽभिमानं महत्सुखं लोहगतादिवृद्धिः ।
लाभं प्रतापं च शरीरकष्टं प्राप्ते ददात्येव हि सूर्यपुत्रः ॥ १ ॥

और जब शनिकी अन्तर्दशा में शनिकी ही पाचक दशा आती है तब अत्यंत अभिमान, महत्सुख, लोह आदिके व्यवहारमें लाभ होवे, प्रताप बढे, शरीर में कष्ट होते हैं ॥ १ ॥

धनहानिर्भवेन्नित्यं हानिशोकौ भयं तथा ।
विदेशे भ्रमणं शीले शनेःपाके गतो रविः ॥ २ ॥

जब शनिके अन्तर्गत सूर्यकी पाचक दशा आती है तब नित्य धनकी हानि, उसी तरह शोक; भय और विदेश में भ्रमण होता है ॥ १ ॥

सुखदं रोगनिर्मुक्तं लाभदं हानिजं तथा ।
करोति शनिपाके च चन्द्रमाःसमवास्थितः ॥ ३ ॥

जब शनिके अन्तर्गत चन्द्रमाकी पाचक दशा आती है तब मनुष्यको सुख हो, रोगों से मुक्ति होवे, लाभ तथा नुकसान होता है ॥ ३ ॥

महीसुतेऽतरगते कलहं समुपद्रवः ।
अग्निदाहं ज्वरं तीव्रं विफलं तु कृतं भवेत् ॥ ४ ॥

जब शनि के अन्तर्गत भौम की पाचक दशा आती है तब कलह, उपद्रव, अग्नि से दाह, तीव्र ज्वर और किये हुए उद्योग निष्फल होते हैं ॥ ४ ॥

सौरांतरगते सौम्ये राजमानं करोति च ।
मध्यसंपद्युतो गेहःकार्यप्राप्तिःसुवस्त्रदम् ॥ ५ ॥

जब मनुष्य को शनि की अन्तर्दशा में बुध की पाचक दशा आती है तब राजा से मान, घर में मध्यम दर्जा की सम्पत्ति रहे, और कार्य प्राप्ति तथा वस्त्रों का लाभ होता है ॥ ५ ॥

करोति जीवो बहुबुद्धिसौख्यं राज्याभिधं देशपुराधिपत्यम् ।
परोपकारं सुखसंपदश्च करोति सौरे च गुरुःसदैव ॥ ६ ॥

जब मनुष्य को शनि की अन्तर्दशा में गुरु की पाचक दशा आती है तब तीव्र बुद्धि ; अनेक सौख्य, राज्य लाभ हो, देशपुर का आधिपत्य मिले, परोपकार में तत्पर रहै, और सुख संपत्ति खूब मिले ॥ ६ ॥

ददाति वित्तं भृगुनंदनःसुखं सुखार्थविद्याऽऽगमनं भवेत्स्वयम् ।
सुनिर्मलं बाहुवलेन संयुतं विदेशमध्यास्य नरःसुखं लभेत् ॥७॥

जब शनि की अन्तर्दशा में शुक्र की पाचक दशा आती है तब मनुष्य को बिना परिश्रम के ही धन, सुख तथा विद्या की प्राप्ति हो तथा भुजाओं के निर्मल प्रताप से युक्त रहे; और विदेश गमन में सुख प्राप्त करे ॥ १ ॥

अथ योगिनीदशाप्रकारः—

नत्वा गणेशं गिरमब्जयोनिं विष्णुं शिवं सूर्यमुखान् ग्रहेंद्रान् ।

वक्ष्ये स्फुटं सूर्यकृताद्यशास्त्राद्दशाक्रमं वा किल योगिनीजम्॥१॥

अब पहिले गणेश, सरस्वती, ब्रह्मा, विष्णु, शिव और सूर्य आदि नव ग्रहों को प्रणाम करके सूर्य कृत ग्रन्थों के मतके आधार पर योगिनियों के दशा क्रम को स्फुट करके कहता हूं ॥ १ ॥

पूर्वं जनस्य विधिवत् प्रसवं विचार्य संवत्सरर्त्वयनमासदिनर्क्षकालैः
यस्मिन्भवेद्दिवसभे जननं जनस्य तद्भं पिनाकनयनैःसहितं विधेयम्।२
गौरीशमूर्त्या विभजेच्च शेषं यत्संख्यकं सैव दशा जनस्य ।
यया जनःकर्मफलस्य पक्तिःशुभाशुभस्य स्फुटतामुपैति ॥ ३ ॥

जिस मनुष्य की योगिनी दशा निकालनी होय तो पहिले उसके जन्मकालिक वर्ष, ऋतु, अयन, मास दिन, नक्षत्र; आदि से ठीक ठीक जन्म समय का विचार करके, फिर अश्विनी नक्षत्र से लेकर जिस नक्षत्र में जन्म हुआ हो उस तक गिने जितनी संख्या बैठे उसमें तीन और मिलाकर आठ से भाग दे तब जो शेष रहे तदनुसार मंगलो पिंगलादि आठ योगिनियों का क्रम पूर्वक निर्णय करे जिससे कि मनुष्य के शुभाशुभ कार्य फल की स्पष्टता हो जाती है ॥ २- ३॥

* उदाहरण—

जैसे किसी मनुष्य का जन्म नक्षत्र ज्येष्ठा है जो कि अश्विनी से गिनने पर १८ होता है इसमें तीन और मिलायें तो २१ हुए इसमें आठ का भाग दिया तो शेष रहे ५ अब मंगलादि से क्रम पूर्वक गिनने पर जन्म समय में ५ पांचवी भद्रिका योगिनी की महादशा आई इसी प्रकार और उदाहरण भी जान लेना चाहिये।

अथ योगिनीनां नामानि—

मंगला १ पिंगला २ धान्या ३ भ्रामरी ४ भद्रिका ५ तथा ।
उल्का ६ सिद्धा ७ संकटा च ८ ह्येतासां नामवत्फलम् ॥ ४ ॥

मंगला १ पिंगला २ धान्या ३ भ्रामरी ४ भद्रिका ५ उल्का ६ सिद्धा ७ और संकटा ८ ये आठ योगिनी हैं इन आठों का स्वनामानुसार फल होता है ।४।

१ — * " स्वर्क्षं पिनाकनयनैः संयोज्य वसुभि ८ हरेत्
शेषेण योगिनी ज्ञेयाशून्यजाते तु संकटा " इति ग्रन्थान्तरम् ।

अथासां महादशावर्षप्रमाणमन्तर्दशाकरणञ्च—

एकं द्वौ गुणवेदबाणरससप्ताष्टांकसंख्याः क्रमा-
त्स्वीयस्वीयदशाविपाकसमये ज्ञेयं शुभं वाऽशुभम् ।
षट्त्रिंशैर्विभजेद्दिनीकृतमथैकद्वित्रिवेदेषुषट्-
सप्ताष्टघ्नदशाभवेयुरिति ता एवं दशांतर्दशाः ॥ ५ ॥

एक, दो, तीन, चार; पांच, छः, सात, और आठ इस तरह क्रमानुपूर्वक मंगलादिक ८ योगिनियों के महादशा वर्ष कहे हैं—अर्थात्—मंगला का १ वर्ष, पिंगला को २, धान्य का ३, भ्रामरी ४, भद्रिका का ५, उल्का का ६, सिद्धा का ७, और संकटा को ८ वर्ष महादशा समय जानना चाहिये, इनका अपनी अपनी दशा समय में स्वस्वनामानुसार शुभाशुभ फल होता है, अब इनकी अन्तर्दशा लाने की क्रिया यह है कि—महादशा वर्ष संख्या के दिन बना कर उनमें छत्तीस का भाग दे तब जो लब्धि आवे उसे गुणय माने फिर जिस योगिनी की अन्तर्दशा लानी होय तो उस पूर्व प्राप्त लब्धि गुणय को उसी के महादशा वर्ष से गुणा दे तो उसकी अन्तर्दशा के दिन निकल आवेंगे इस तरह १ से गुणने पर मंगला का, २ से गुणने पर पिंगला का, ३ से गुणने पर धान्या का इत्यादि क्रम से अन्तर्दशा दिन जानें ।

गतर्क्षनाडी गुणिता दशाब्दैस्सर्वर्क्षनाडीविहृतां फलंयत् ।
वर्षादिकं भुक्तफलं ततश्च भोग्यं दशाब्दान्तरितं हि लेख्यम्॥६॥

सब से पहिले जन्म समय के नक्षत्र का भयात और भभोग अच्छी तरह बनावे, इसके बाद भयात को पलात्मक बनावे । (अर्थात् भयात की घटियों को ६० से गुणा दें फिर पलों को जोड़ दें तो भयात पलात्मक होजायगा इसी तरह से भभोग को पलात्मक बनावें) फिर जिस योगिनी महादशामें जन्म हुआ है उसके महादशा बर्ष से भयात को गुणकर भभोग का भाग देना चाहिये; तब जो वर्षादि लब्धि आवे वह भुक्त होगा, उसको महादशाबर्ष में घटाने पर शेष भोग्य काल होगा, अर्थात् जो भुक्त है उसके बराबर जन्मसे पहिले ही दशा भोग चुकी, और जो भोग्य है उसके तुल्य जन्म समय के आगे भोगेगी यह स्पष्ट होता है ।

उदाहरण—

जैसे किसी मनुष्य के जन्म समय भयात २८—३२ और भभोग ५६—४८ तथा जन्म दशा धान्या की है अतः सुविधा के लिये पहिले भयात—भभोग को पलात्मक बनाया तो क्रम से भयात १७१२ और भभोग ३४०८ हुआ अब भयात १७१२ को धान्या के वर्ष ३ से गुणा कर ५१३६ में भभोग ३४०८ से भाग देने के लिये न्यास—

```
३४०८)५१३६(१
     ३४०८
     ————
     १७२८
     ×१२
     ————
३४०८)२०७३६(६
     २०४४८
     ————
       २८८
       ×३०
     ————
३४०८)८६४०(२
     ६८१६
     ————
     १८२४
     ×३०
     ————
३४०८)१०९४४०(३२
     १०२२४
     ————
      ७२००
      ६८१६
     ————
     ३८४×६०
     ————
३४०८)२३०४०(६
     २०४४८
     ————
     २५९२ शेष
```

इसी तरह भुक्तदशा.वर्षादि-१—६—२—३२—६ आई, इसीको महादशा वर्ष ३ में से घटाया तो भोग्य दशा—१—५—२७—२७—५४ हुई इसी तरह उक्त क्रिया के ही करने से योगिनी, अष्टोत्तरी, विंशोत्तरी, तीनों दशाओं का भुक्त भोग्य निकलता है।

अथ मंगलादि योगिनीमहादशाफलानि लिख्यन्ते—

सद्धर्मे द्विजदेवगोपुरजनोत्कर्षप्रदात्री नृणां-
नानाभोगयशोऽर्थसन्नृपपराश्वेभांगजाप्तिप्रदा ।

सन्मांगल्यविभूषणाबंरचयस्त्रीभोगसंदायिनी–
ज्ञानानंदकरी दशा भवति सा ज्ञेया सदा मंगला ॥ १ ॥

मंगला योगिनीकी महादशा में सद्धर्म ब्राह्मण देवता गौ इनमें भक्ति तथा शहर के लोगों में प्रीति हो, नाना भोग; यश, अर्थ, राजसदृश ऐश्वर्य, हाथी,घोड़ा उत्तम मंगल, वस्त्राभूषण, स्त्री संभोग और ज्ञानानन्दकी देने वाली होती है ॥ १॥

स्यात्पुसां यदि पिंगला प्रसवतो हृद्रोगशोकप्रदा–
नानारोगकुसंगदेहमनसो व्याध्यर्दितार्तिप्रदा ।
तृष्णासृग्ज्वरपित्तशूलमलिनस्त्रीपुत्रभृत्याप्तस–
न्मानध्वंसकरी धनव्ययकरी सत्प्रेमहंत्री खला ॥ २ ॥

पिंगला योगिनीकी महादशा में हृद्रोग, शोक, अनेक रोग, कुसंबंध से देह तथा मन में व्याधि, तृष्णा, चिन्ता और रुधिर, ज्वर, पित्त, शूल होवे, मलिन स्त्री मिले, पुत्र भृत्योंसे प्राप्त सन्मानका नाशहो और धनका व्यय, और सज्जनोंसे हुए प्रेमका नाश हो इसलिए इस योगिनी महादशा को फल दुष्ट समझना ॥ २ ॥

धान्या धन्यतमा धनागमसुखव्यापारभोगप्रदा–
पुंसां मानविवृद्धिदा रिपुगणप्रध्वंसिनी सौख्यदा ।
विद्याराजजनप्रबोधसुरतज्ञानांकुरान्वर्द्धिनी–
सत्तीर्थामरसिद्धसेवनरतिर्लभ्या दशा भाग्यतः ॥ ३ ॥

धान्या योगिनी की महादशाहो तब धनका आगम, सुख, व्यापार, भोग,मान की वृद्धिहो, शत्रुगणों का नाश, तथा सुख हो, विद्या, राजजन, प्रबोध, सुन्दर रमण और ज्ञानांकुर बढे, सत्तीर्थ देवता, सिद्धजनों की सेवा में प्रीति हो, वास्तव में यह दशा भाग्य से ही मिलती है ॥ ३ ॥

दुर्गारण्यमहीधरोपगहरारामातपव्याकुला–
दूराद्दूरतरं भ्रमंति मृगवत्तृष्णाकुलाःसर्वतः ।
भूपालान्वयजा दशामधिगता ये वै नृपा भ्रामरीं–
स्वं राज्यं प्रविहाय ते स्फुटतरं क्ष्माधो लुठन्ते मुहुः ॥४॥

भ्रामरी योगनी की महादशा में दुर्ग, बन पर्वत बडी २ घोरडांगों में घामसे व्याकुल होकर सर्वत्र मृगवत् प्यास से व्याकुल होकर दूर २ तक घूमता फिरताहै, साक्षात् राज वंशमें पैदा हुआ भी जातक इस दशामें अपने राज पाटको छोडकर धरती पर कंगलोंकी तरह मारा २ फिरता रहता है ॥ ४ ॥

सौहार्दं निजवर्गभूसुरसुरेशानां सुहृन्मान्यता-
मांगल्यं गृहमंडलेऽखिलसुखव्यापारसक्तं मनः ।
राज्यं चित्रकपोलपालितिलकासप्तांगनाभिःसमं
क्रीडामोदभरो दशा भवति चेत्पुंसां हि भद्राभिधा ॥ ५ ॥

जब भद्रिका योगिनी की महादशा आती है तब अपने कुल वर्ग तथा ब्राह्मण और देवताओं में भक्ति (प्रेम) बढे मित्रों में सन्मान हो, और घर मेंमंगल होवें व्यापार में मन आसक्त रहे एवं कपोलों पे विचित्र सुगन्धित द्रव्य लगाये हुए सात स्त्रियों के साथ राज्य तथा आनन्द, भोग, क्रीडा; प्राप्त हों ॥ ५ ॥

उल्का चेद्यदि योगिनी गुरुदशा मानार्थगोवाहन-
व्यापारांबरहारिणी नृपजनक्लेशप्रदा नित्यशः ।
भृत्यापत्यकलत्रवैरजननी रम्यापहन्त्री नृणां
हृन्नेत्रोदरकर्णदानपदजो रोगःस्वदेहे भृशम् ॥ ६ ॥

उल्का योगिनी की महादशा में मान धन, गौ; वाहन, व्यापार और वस्त्र इन सबों का नाश हो, नित्य राजाओं द्वारा क्लेश, नौकर पुत्र तथा स्त्री से वैर हो, रम्य वस्तुका नाश हो और हृदय, नेत्र, उदर, कर्ण और पांवों में रोग उत्पन्न हो और भी रोग लगातार उसके शरीर में बने रहें ॥ ६ ॥

सिद्धा सिद्धकरी सुभोगजननी मानार्थसंदायिनी
विद्याराजजनप्रतापधनसद्धर्माप्तसज्ज्ञानदा ।
व्यापारांबरभूषणादिकसुतोद्वाहादिमांगल्यदा
सत्संगान्नृपदत्तराज्यविभवो लभ्या दशा पुण्यतः ॥ ७ ॥

और जब मनुष्यको सिद्धानामक योगिनीकी महादशा आती है तब वह दशा मनुष्य के कार्यों को सिद्ध करने वाली, सुन्दर भोगों की देने वाली, मान तथा धन की देने वाली, विद्या, राजतुल्यप्रताप, धन, सद्धर्म तथा ज्ञानको देने वाली, और व्यापार वस्त्राभूषणादिक और पुत्रके विवाहादिक मंगलों को देने वाली होती है और उस मनुष्यको सत्संगसे राजदत्त विभव प्राप्त होते हैं इससे यह समझना कि यह सिद्धा योगिनीकी दशा बडे पुण्य से प्राप्त होती है ॥ ७ ॥

राज्यभ्रंशाग्निदाहो गृहपुरनगरग्रामगोष्ठेषु पुंसां
तृष्णारोगांगधातुक्षयविकृतिरथो पुत्रकांतावियोगः ।
चेतस्यान्मोहोऽरिभीतिःकृशतनुलतिका संकटाया विरोधो
नोमृत्युर्जन्मकालाद्यमपि हि विना संकटं योगिनीजम् ॥ ८ ॥

और जब मनुष्यको संकटानामक योगिनीकी दशा आती है तब राज्य से भ्रंश और ग्रह पुर; नगर गाम और खिरक में अग्निदाह, तृष्णाकी वृद्धि, अंगमें रोग, धातु क्षयका विकार, पुत्र तथा स्त्रीसे वियोग, मोह, शत्रुजनों से भय, शरीर में दौर्बल्य, मनुष्यों से विरोध, एवं अन्तमें ससंकट ही मृत्यु हो ॥ ८ ॥

भ्रामर्यां च तथोल्कायां संकटांतर्दशा भवेत् ।
तदा तु यमराज्यस्य सदनं प्राप्यते नृभिः ॥ ९ ॥

और जब मनुष्यको भ्रामरी या उल्का योगिनी की महा दशामें संकटा नामक योगिनी का अन्तर आता हैं तब वह मनुष्य यमराज के स्थानको गमन करने वाला होता है ॥ ९ ॥

अथ योगिनीदशासु प्रत्यन्तरनिष्कासनम्—

स्वीस्वीदशाया दिवसादिनिघ्ना स्वांतर्दशाया दिवसैःक्रमेण ।
षड्भिर्विभक्ता घटिकास्तथा च स्युर्मंगलाद्याःक्रमशो नितांतम् ॥ १

अपनी अपनी अन्तर्दशाओं के दिन आदिको जिस जिसकी अन्तर्दशा निकालनी हो उनके अन्तर्दशाओं के दिनोंसे गुणा करें फिर जो अंक सिद्ध हो उसमें छः का भाग देवे तब क्रमसे मंगला आदि योगिनियों के प्रत्यन्तरों के मास दिनादिक निकलते हैं ॥ १ ॥

अथ मंगलान्तरफलम्—

मित्रपुत्रकलत्रांगव्यापारसुखदायिनी ।
मंगलान्तर्गता जाता मंगला मंगलप्रदा ॥ २ ॥

जब मंगला की महादशा में मंगला की ही अन्तर्दशा आती है तब मित्र, पुत्र, स्त्री और अपने शरीर को किसी व्यापार के द्वारा सुख होवे, और सदा घर में मंगल होते रहैं ॥ २ ॥

कलहःस्वजनैःसार्द्धं मानसोद्वेगमेव हि ।
विविधार्तिप्रदा नित्यं पिंगला मंगलां गता ॥ ३ ॥

और जब मंगला की महादशा में पिंगला योगिनी की अन्तर्दशा होती है तब स्वजनों से कलह, मन में उद्वेग, और अनेक प्रकार की पीड़ायें होतीं हैं ॥ ३ ॥

गजाश्वगोधनप्राप्तिःसुतमित्रसुखं महत् ।
विलासो विविधःपुंसां धान्या स्यान्मंगलां गता ॥ ४ ॥

मंगला के भीतर धान्या योगिनी की अन्तर्दशा आवे तो हाथी, घोडा, गौ और धन की प्राप्ति, पुत्र और मित्रों के निमित्त से महत्सुख, और पुरुषों के संग से विचित्र विलास प्राप्त होते हैं ॥ ४ ॥

स्त्रीमित्रकलहो नित्यं प्रवासो धननाशनम् ।
नरेंद्रैःसह सांगत्यं भ्रामरी मंगलां गता ॥ ५ ॥

और जब मनुष्य को मंगला के भीतर भ्रामरी नामक योगिनी का अन्तर आता है तब मनुष्य को स्त्री और मित्रों से कलह, नित्य परदेश वास, धन का नाश और नरेंद्रों से सहवास प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

धनधान्यसुतस्त्रीभिःप्रीतिःस्यात्स्वजनैःसह ।
प्रमोदःसुरभिज्ञो वा भद्रा चेन्मंगलां गता ॥ ६ ॥

और जब मंगला की महादशा में भद्रिका योगिनी की अन्तर्दशा आती है तब धन, धान्य, पुत्र और स्त्री तथा स्वजनों से प्रीति हो, तथा अत्यन्त आनन्द हो; अथवा सुन्दर बातों को जानने वाला होता हैं ॥ ६ ॥

धनकीर्तिसुतोद्वेगः स्त्रीमित्रपशुपीडनम् ।
भूपतेर्हानिदा नित्यमुल्का स्यान्मंगलां गता ॥ ७ ॥

और जब मंगलाकी महादशा में उल्का योगिनी की अन्तर्दशा आती है तब धन कीर्ति और पुत्रों की तरफ से उद्वेग, स्त्री मित्र और पशुओं को पीडा, और राजा से हानि होती है ॥ ७ ॥

भवेत्पुत्रधनस्त्रीभिर्विलासो विविधं सुखम् ।
बंधुमित्रैः समं योगः सिद्धा चेन्मङ्गलां गता ॥ ८ ॥

और जब मंगलाकी महादशा में सिद्धा नामक योगिनी की अन्तर्दशा आती है तब पुत्र स्त्री और धनके साथ विलास, अनेक सुख, और मित्र तथा भाई बन्दों से सहयोग होता है ॥ ८ ॥

जलाग्निचौरभूपालपीडनं कलिवर्द्धनम् ।
मृत्युतुल्यं तथा ज्ञेयं संकटा मंगलां गता ॥ ९ ॥

और जब मंगलाकी महादशामें संकटा योगिनीकी अंतर्दशा आतीहै तब जल, चोर, अग्नि के कारण तथा राजा की नाखुशी से पीडा, कलहकी वृद्धि और मृत्यु समान कष्ट प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

अथ पिंगलान्तरफलम्—

पिंगला स्वदशां प्राप्ता रुक्शोकव्यसनार्तिदा ।
मानसोद्वेगसंतापक्लेशभ्रमणदा मता ॥ १ ॥

और जब कि पिंगला महादशान्तर्गत पिंगला की ही अन्तर्दशा आती है तब रोग, शोक, व्यसन, मानस उद्वेग और सन्ताप, क्लेश, तथा भ्रमण को देने वाली होतीहै।१।

धान्या धान्यार्थदात्री च विलाससुतकामदा ।
पिंगलांतर्गतारण्यरमणीसुखदा नृणाम् ॥ २ ॥

और जब पिंगला महादशान्तर्गत धान्या योगिनी की अन्तर्दशा आती है तब धान्य, धन, विलास, पुत्र और मनोरथ की प्राप्ति हो, सुन्दर जंगलों में स्त्रियों से विलास सुख हो ॥ २ ॥

देशत्यागो गृहग्रामपुरलोकधनक्षतिः ।
कलहः स्वजनैः सार्द्धं भ्रामरी पिंगलां गता ॥ ३ ॥

और जब पिंगला महादशा में भ्रामरी की अन्तर्दशा आती है तब स्वदेश का त्याग, घर, ग्राम, पुर तथा लोकमें सर्वत्र धनकी क्षति और स्वजनोंके साथकलह हो।

भद्रा भद्रकरी प्रोक्ता पिंगलांतर्गता यदा।
स्थानांतरात्पुत्रकीर्तिर्व्यापारे धनलाभदा॥ ४॥

पिंगला की दशा में जब भद्रा की अन्तर्दशा आती है तब सर्वत्र कल्याण, स्थानांतर से पुत्र की कीर्ति बढे, और व्यापार में धन लाभ हो॥ ४॥

उल्कादशा यदा पुंसां पिंगलामध्यतो भवेत्।
विग्रहो बंधुभिःसार्द्धं राजचौरजनार्दनम्॥ ५॥

और जब पिंगलांतर्गत उल्का की अन्तर्दशा आती है तब भाई बन्दों से विग्रह, और राजा या चोरों से स्वजनों को पीडा हो॥ ५॥

सिद्धिदा मंत्रयंत्राणां सिद्धा धान्यधनप्रदा।
पिंगला मध्यमा पुंसां कासश्वासप्रमेहदा॥ ६॥

और जब पिंगला महादशा में सिद्धा योगिनी की अन्तर्दशा आतीहै तब मन्त्र यंत्रों की सिद्धि होवे, धन धान्य की प्राप्ति, और कास श्वास प्रमेहकी बीमारी हो।६।

पिंगलांतर्यदा जाता संकटा धनहानिदा।
दुष्टव्याधिविरोधित्वं शत्रुराजभयं तथा॥ ७॥

और जब पिंगला महादशा के भीतर संकटा योगिनी की अन्तर्दशा आती है तब धन हानि, दुष्ट व्याधि, सबसे विरोध और शत्रु तथा राजा से भय हो॥ ७॥

मंगला विविधव्याधिशोकमोहभयार्तिदा।
पिंगलांतर्गता पुंसामायुर्नाशकरी तथा॥ ८॥

और जब पिंगला महादशा में मंगला की अन्तर्दशा आती है तब अनेक प्रकार व्याधि, शोक, मोह, भय, आर्ति और आयु का नाश हो॥ ८॥

अथ धान्यादशान्तरफलम्—

धान्या निजदशां प्राप्ता भूग्रामधनधान्यदा।

१—नन्विह रेफादव्यवहितपरस्यापि नस्य "रषाभ्यांनोणः समानपदे" इति णत्वं कथं न भवतीति चेन्न—निमित्तनिमित्तिनोरपदस्थत्वासम्भवात्पदे ग्रहण-

नृपस्वजनपुत्रस्त्रीसुखं स्याद्विविधं नृणाम् ॥ १ ॥

और जब धान्या महादशा में धान्या की ही अन्तर्दशा आती है तब भूमि, ग्राम धन धान्य की प्राप्ति हो, और राजा, स्वजन, स्त्री; पुत्रों के द्वारा अनेक प्रकार के सुख प्राप्त हों ॥ १ ॥

धान्यांतर्भ्रामरी चेत्स्याद्भ्रमणक्लेशहानिदा ।
अन्यस्थानाश्रयाल्लाभःस्वजनैश्च विरोधता ॥ २ ॥

और जब धान्या महादशा के अंतर्गत भ्रामरी की अन्तर्दशा आती है तब भ्रमण, क्लेश और हानि हो, और अन्य स्थान के आश्रय से लाभ, तथा स्वजनों से विरोध हो ॥ २ ॥

भद्रा सौभाग्यजननी गृहमित्रसुखप्रदा ।
धान्यांतर्नृपमंत्रीशवाहनांबरभूमिदा ॥ ३ ॥

और धान्या महादशा के भीतर जब भद्रा की अंतर्दशा आती है तब सौभाग्य, गृह, मित्र और सुख की प्राप्ति हो, और राजमन्त्रित्व, सामर्थ्य, वाहन, वस्त्र और भूमि की प्राप्ति होवे ॥ ३ ॥

विविधं कष्टमुत्पातमुल्का धान्यान्तरं गता ।
तत्र हृत्कटिशूलादिपीडनं धननाशनम् ॥ ४ ॥

और जब धान्या महादशांतर्गत उल्का नामक योगिनी की अंतर्दशा आती है तब अनेक प्रकार के कष्ट, उत्पात, और हृदय, कटि में शूलादि की पीडा और धन का नाश हो ॥ ४ ॥

सिद्धा धान्यांतरं याता सुतमित्रोत्सवप्रदा ।
नानाभोगप्रदा नित्यं ज्ञेया सा तु बिचक्षणैः ॥ ५ ॥

और जब धान्या की महादशा में सिद्धा की अंतर्दशा आती है तब पुत्र, मित्र और उत्सव तथा नानाप्रकार के भोगों की प्राप्ति हो ॥ ५ ॥

सामर्थ्यादेवैकपदत्वे लब्धे समानग्रहणं यत्समानमेव पदं (निमित्तवत्पदभिन्न पदस्थत्वाभाव वदखण्डपदम्) स्यात्तत्रैव णत्वं यथा स्यादित्येतदर्थं पदग्रहणम्, अर्थात् यत्र णत्वनिमित्तरेफषकारवत्पदाभिन्नपदस्थं नत्वं स्यात् तत्रैव णत्वं भवति नान्यत्र, तेन समासे रामनाम- सर्वनरः, गन्धर्वगानमित्यादौ न भवति तत्र हि नकारस्यैकपदवृत्तित्वेऽपि णत्वनिमित्तरेफवद्रामपदाद् भिन्न नामपदस्थितनकारत्वात् इति दिक्

धान्यासूपगता यत्र संकटा बंधनप्रदा ।
नीतिव्यापारभूपालमानसोत्साहदा मता ॥ ६ ॥

और जब धान्या की महादशा में संकटा की अंतर्दशा आती है तब कैद भोगनी पडे किंतु राजनीति तथा व्यापार के द्वारा राजा के ही मन में उसकी तरफ से उत्साह हो ॥ ६ ॥

पिंगला यदि धान्यांतर्व्यवधाहस्तभूधनः ।
सोत्साहो नृपतेर्भीतिः शिरोरुक्शूलसंश्रितः ॥ ७ ॥

और जब धान्या महादशा में पिंगला की अंतर्दशा आती है तब वह पुरुष अनेक तरकीबों से अपने हाथ से भूमि धन संपादन करे, उत्साह हो, शिर रोग शूल रोग से युक्त कुछ दिन बाद ही हो ॥ ७ ॥

अथ भ्रामरीयोगिन्यामंतरफलम्—

भ्रामरी स्वदशामध्ये भीतिमोहविषार्तिदा ।
स्वस्थाने स्वजने शैलो वैरिदुष्टजलार्त्तिदा ॥ १ ॥

जब मनुष्यको भ्रामरी महादशाके भीतर भ्रामरी की ही अंतर्दशा आतीहै तब भय, मोह, विष तथा अन्य पीडा होवे, और अपने स्थान, स्वजन, पर्वत तथा वैरी; दुष्ट मनुष्य और जल के निमित्त से पीडा हो ॥ १ ॥

भद्रा तु भ्रामरीमध्ये विदेशगमनं भवेत् ।
निजमित्रसमायोगो विद्यासन्मानभूपतिः ॥ २ ॥

और जब भ्रामरी महादशा में भद्रा की अंतर्दशा आती है तब विदेश में गमन, अपने मित्रों से संयोग, और विद्या के बल से राजासे सन्मान प्राप्त करे।२।

उल्का तु भ्रामरीमध्ये ज्वरशूलासृगार्त्तिदा ।
धनपुत्रकलत्रांगपीडा हानिकरी मता ॥ ३ ॥

और जब भ्रामरी महादशा में उल्का की अंतर्दशा आती है तब शूल ज्वर और रुधिर के निमित्त से पीडा, धन, पुत्र, स्त्री और अंगमें पीडा और हानि होवे।३।

सिद्धा सिद्धिप्रदा नित्यं भ्रामरीमध्यतो यदा ।
विवेकविद्यानिधिदा भयरोगार्तिनाशका ॥ ४ ॥

और जब भ्रामरी महादशामें सिद्धाकी अन्तर्दशा आती है तब नित्य मनोरथोंकी सिद्धिहो, ज्ञान, विद्या तथा निधिका लाभ हो, भय, रोग, तथा पीडाका नाश हो ।४।

संकटा मरणं क्लेशःशोकं मोहं गतं गदः ।
राजचोरजनख्यातिप्रदा भ्रामरिमध्यगा ॥ ५ ॥

और जब भ्रामरी महादशामें संकटाकी अंतर्दशा आती है तब मरण सम कष्ट, क्लेश, शोक, मोह, भय, रोगहों किन्तु अन्ततोगत्वा राजा और चोर जनोंमें ऐसा बढिया काम करे जिससे कि उसकी पूरी २ नामवरी हो ॥ ५ ॥

विलासो विविधं सौख्यं नृपसेवातिपुष्टता ।
भ्रामर्यंतगता यत्र मंगला सह मंगला ॥ ६ ॥

और जब भ्रामरी महादशा के भीतर मंगलाकी अन्तर्दशा आतीहै तब विलास, विविध सुख, राजसेवा तथा अति पुष्टता प्राप्त होती है ॥ ६ ॥

पिंगला भ्रामरीमध्ये गुदांघ्रिमुखरोगदा ।
गजाश्वमहिषव्याघ्रव्रणभीतिप्रदा भवेत् ॥ ७ ॥

और जब भ्रामरी महादशामें पिंगलाकी अन्तर्दशा आती है तब गुदा पांव और मुखमें रोग, हाथी, घोड़ा, महिष, व्याघ्र और घावों से भय होता है ॥ ७ ॥

भ्रामर्युपगता धान्या धनवाहनभोगदा ।
नृपैःप्रीतिकरी भिल्लैर्वैरहानिकरी मता ॥ ८ ॥

और जब कि भ्रामरी महादशा के अंतर्गत धान्याकी अन्तर्दशा आती है तब धन; वाहन, भोग होंवे राजाओं से प्रीति हो, और भिल्लोंसे बैर एवं हानिहो। ८।

अथ भद्रिकान्तर फलम्—

भद्रा भद्रां गता यत्र यशोभद्राश्वगोप्रदा ।
व्यसनार्तिहरा पुण्यमार्गरोधकरी मता ॥ १ ॥

और जब भद्रिका महादशामें भद्रिकाकी ही अन्तर्दशा आतीहै तब यश, कल्याण घोड़ा तथा गैया इनकी प्राप्ति होवे, अनेक दुःख तथा पीड़ाओं का नाश हो और पुण्यकर्म से निवृत्ति होवे ॥ १ ॥

उल्का भद्रांतरं याता विवादकृतरोगदा ।

स्थानभ्रंशो द्रव्यहानिकारण्युद्वेगदायिनी ॥ २ ॥

और जब भद्रिका महादशामें उल्काकी अन्तर्दशा आती है तब झगडोंके कारण रोग होजाय, और पूर्व मिलित स्थानसे भ्रष्ट होजावे, द्रव्यका नुकसान हो, और चित्तमें घबगहट होवे ॥ २ ॥

भद्रिकान्तर्गता सिद्धा द्विजदेवार्चने रतिः ।
पुत्रमित्रकलत्रांगगृहग्रामजनोत्सवान् ॥ ३ ॥

और जब भद्रिका महादशा में सिद्धाकी अन्तर्दशा आती है तब ब्राह्मण तथा देवताओं की पूजामें प्रीति बढे, पुत्र; मित्र; स्त्री, शरीर, घर; ग्राम, और मनुष्यों में खूब उत्सव के साथ दिन कटते रहें ॥ ३ ॥

भद्रादशां समायाता संकटा संकटार्तिदा ।
मोहशोकविपद्दात्री भ्रांतिदेशगमार्त्तिदा ॥ ४ ॥

और जब भद्रिकाकी महादशामें संकटाकी अन्तर्दशा आती है तब अनेक संकट और पीड़ा मोह, शोक, विपत्ति पडे, भ्रांति के कारण विदेशों में जाकर दुःखके साथ दिन गुजारने पडें ॥ ४ ॥

सन्मानधनभूकीर्तिव्यापारे सुतसौख्यदा ।
मंगला भाद्रिकामध्ये पितृवंशविवृद्धिदा ॥ ५ ॥

और जब भद्रिका महादशामें मंगला की अन्तर्दशा आती है तब सन्मान, धन, भूमि, कीर्ति का लाभ हो और व्यापारमें धन बढे, पुत्रोंको सुख होवे, और पिता के वंशमें वृद्धि होवे ॥ ५ ॥

यदा मध्ये तु भद्रायाःपिंगला पित्तरोगदा ।
कृषिवाणिज्यभूवृद्धाश्रयतो विविधप्रदा॥ ६ ॥

और जब भद्रिका महादशा में पिंगलाकी अन्तर्दशा आतीहै तब पित्तके प्रकोपसे रोगहो, किन्तु खेती, व्यापार, भूमि तथा वृद्धोंके आश्रयसे अनेक प्रकारके लाभ होवें।

रुधिराग्नियमाद्भीतिर्भद्रायां भ्रामरी यदा ।
गृहक्षेत्ररिपुध्वंसो निजबंधुजनैःसुखम् ॥ ७ ॥

और जब भद्रिका महादशामें भ्रामरीकी अन्तर्दशा आतीहै तब रुधिर; अग्निऔर यमराजसे भय,घर खेत और शत्रुका एकदम नाश और अपने बन्धुजनोंसेसुख होवे।७।

अथ उल्कादशान्तर फलम्—

शत्रुभिःसहसा हानिर्द्रव्यस्य महती व्यथा ।
उल्कामध्ये यदोल्का च राज्यभ्रंशात्तु भीतिदा ॥ १ ॥

जब मनुष्यको उल्काकी महादशामें उल्काकी ही अन्तर्दशा आती है तब शत्रुके द्वारा अकस्मात् बडी भारी धनकी हानि हो अतएव बडी ही तकलीफ उठानी पडे और राज्य नाशसे बडा डर होवे ॥ १ ॥

सिद्धा तु स्वफलं त्यक्त्वा परस्य फलदायनी ।
उल्कांतरं समायाता विदेशगमनप्रदा ॥ २ ॥

और जबकि उल्काकी महादशा में सिद्धाकी अन्तर्दशा आतीहै तब सिद्धा अपने शुभ फलको छोडके दूसरे के अशुभ फलोंको देने वाली तथा विदेश गमन कराने वाली होती है ॥ २ ॥

उल्काया मध्यगा यत्र संकटा मरणप्रदा ।
स्त्रीपुत्रमित्रभृत्यादिजनहानिकुलक्षयः ॥ ३ ॥

और जब उल्का में संकटाकी दशा आती है तब मरण तुल्य कष्ट होवें, तथा स्त्री पुत्र मित्र नौकर चाकर जनोंकी हानि हो, तथा यहां तक कि अपने कुनवा भरका क्षय होजाय ॥ ३ ॥

उल्काया मध्यगा यत्र मंगला मोहकारिणी ।
धनमित्रविवेकस्त्रीसुखदा मलहारिणी ॥ ४ ॥

और जब उल्का महादशा में मंगलाकी अन्तर्दशा आतीहै तब मोह, धन, मित्र, विवेक तथा स्त्रीसे सुख प्राप्त होवे, और अनेक खराबियां नष्ट होवें ॥ ४ ॥

कुष्ठकंबूशिरोरोगैः पीडितो धरणीतले ।
भ्रमते नात्र संदेहो यद्युल्कायां तु पिंगला ॥ ५ ॥

और जब उल्का महादशामें पिंगलाका अन्तर आताहै तब शरीरमें कुष्ठरोग, कंठरोग और शिरोरोगों से पीडित होकर देश देशांतरमें निःसन्देह भ्रमण करना पड़ताहै ॥

नो लाभो न सुखं किंचिद्धातव्याधिकफोदयः ।
धान्योल्कायां समायाता स्त्रीपुत्रस्वजनैःकलिः ॥ ६ ॥

और जब उल्का महादशामें धान्याकी अन्तर्दशा आती है तब लाभ और सुख तनिक भी न होवे, एवं वातव्याधि तथा कफका प्रकोप बढे और स्त्री पुत्र स्वजनों से कलह होते हैं ॥ ६ ॥

उद्विग्नमानसं मोहो भ्रमःपुंसोऽरिजं भयम् ।
नानाक्लेशसमायोगो भ्रामर्युल्कांतरं गता ॥ ७ ॥

और जब कि उल्का महादशा में भ्रामरी की अंतर्दशा आती है तब मनुष्यको मनमें उद्वेग, मोह, भ्रम, शत्रु से भयहो तथा अनेक क्लेशोंसे भिड़ना पड़ता है ॥७॥

उल्कामध्ये तु संप्राप्ता भद्रा भद्रार्थदायिनी ।
भूषणांबरहानिःस्यात्कुलमित्रजनात्सुखम् ॥ ८ ॥

और जब उल्का महादशामें भद्रिकाकी अंतर्दशा आती है तब खूब कल्याण हो तथा धन बढे किन्तु वस्त्राभूषणकी हानिहो, तथा कुल और मित्रजनोंसे सुख होवे ॥८॥

अथ सिद्धांतर्दशाफलम्—

सिद्धा सिद्धार्थसंदात्री स्वजनैस्सह सौख्यदा ।
सिद्धायामथवैश्वर्य्यं सुतमित्रसुखप्रदा ॥ १ ॥

जब मनुष्यको सिद्धा महादशा के भीतर सिद्धाकी ही अन्तर्दशा आती है तब सब कार्योंकी सिद्धिहो, स्वजनों के साथ सुखहोवे अथवा खूब ऐश्वर्य बढे, तथा पुत्र मित्रों से भी धनको खूब सुख मिले ॥ १ ॥

बंधनं नृपचौरेभ्यो धनहानिर्महद्भयम् ।
देशत्यागो भवेन्नूनं सिद्धायां संकटा यदा ॥ २ ॥

और सिद्धा महादशा में जब संकटाकी अन्तर्दशा आती है तब बंधन, राजा और चोरों से धन की खूब हानि, महद्भय और देश त्याग अवश्य होता है ॥ २ ॥

विलासःस्वजनैःसौख्यं धनलब्धिर्नृपाद्भवेत् ।
मंगला सिद्धिदा सिद्धासंगता विविधा यदा ॥ ३ ॥

और जब सिद्धा महादशा में मंगलाकी अंतर्दशा आतीहै तब स्वजनों के साथ विलास तथा सौख्य हो; राजा से धन लाभ और अनेक प्रकारकी सिद्धि होवे ।३।

सिद्धायां पिंगलायां तु मानं क्रोधाग्निदाहिका ।
वैरोदयो निजैःसार्द्धं परद्रव्याभिधारणम् ॥ ४ ॥

और सिद्धा महादशा में जब पिंगलाकी अंतर्दशा आती है तब मान, तथा क्रोधाग्नि का नाश हो, और बैर भाव खूब बढे, और अपने के साथ पराये द्रव्यको धारण करे ॥ ४ ॥

पुंसां धान्या तु सिद्धायां प्राक्पुण्यनिचयो भवेत् ।
मनःप्रकल्पितं सर्वं सिद्धमायाति सर्वतः ॥ ५ ॥

और जब सिद्धाकी महादशामें धान्याकी अंतर्दशा आतीहै तब पूर्वजन्मके पुण्यों के फलोंका उदय होवे, और मनःसंकल्पित सर्व सिद्धि सब तरफसे प्राप्त होतीहैं ।५।

भ्रामरी यदि संप्राप्ता सिद्धायां यस्य जन्मनि ।
स्वस्थानाद्व्यसनैस्त्यागान्ननु राजकुलाद्भयम् ॥ ६ ॥

और जब सिद्धा महादशामें भ्रामरीकी अन्तर्दशा आती है तब व्यसनों के कारण से स्वस्थान त्याग और राजकुलसे अवश्य भय प्राप्त होता है ॥ ६ ॥

मांगल्यं भोगजननी विद्यासौख्यगुणप्रदा ।
नराणां सिद्धिदा भद्रा सिद्धायामुपजायते ॥ ७ ॥

और जब सिद्धा महादशामें भद्रिकाकी अंतर्दशा आतीहै तब मंगल और भोगविलास खूब होते रहें, विद्या,सौख्य तथा गुणोंकी प्राप्ति होवे, तथा अनेक प्रकारकी सिद्धि हों॥

उल्का सिद्धां समापन्ना धनधान्यविनाशिनी ।
क्लेशशोकव्यसनदा गुदरुङ्मोहकारिणी ॥ ८ ॥

और जब सिद्धा महादशामें उल्का नामक योगिनीकी अंतर्दशा आतीहै तब धन धान्यका नाश; क्लेश, शोक और व्यसन होवें और गुदामें रोग तथा मोह होवे ।८।

अथ संकटादशान्तर फलम्—

संकटा स्वदशां प्राप्ता करोति मरणं ध्रुवम् ।
राजवंशाच्च हानिश्च देशत्यागो धनक्षयः ॥ १ ॥

जब संकटा महादशा में संकटाकी ही अन्तर्दशा आती है तब अवश्य मरण सम दुःख पाना पडे, राजवंशसे हानि, स्वदेश का त्याग और धनका नाश हो ॥ १ ॥

शिरोरुग्विविधै रोगैर्व्याधिभिर्व्यसनैस्तथा ।
कलत्रं पीड्यते पुंसो मंगला संकटां गता ॥ २ ॥

और जब संकटा महादशा में मंगलाकी अन्तर्दशा आती है तब शिरमें रोग तथा अन्य अनेक रोग व्याधि व्यसनों से उसकी स्त्री को बडी कठिन पीडा झेलनी पडे ॥ २ ॥

अकस्माद्धनहानिःस्यात्पुत्रशोकोऽरिजं भयम् ।
पिंगला संकटां याता वियोगःस्वजनैःसह ॥ ३ ॥

और जब संकटा महादशा के भीतर पिंगला की अन्तर्दशा आती है तब अचानक ही धनकी हानि, पुत्र शोक, शत्रु से भय, स्वजनों से वियोग होवे ॥३॥

गुल्मोदरकृता पीडा निजपुत्रसुखं महत् ।
स्वदेशजनताकीर्तिर्धान्या तु संकटां गता ॥ ४ ॥

और जब संकटा महादशा में धान्या का अन्तर आता है तब गुल्मोदर रोगसे पीडा, अपने पुत्रों से अति सुख, और स्वदेशकी जनता में कीर्ति बढे ॥ ४ ॥

भ्रामरी संकटामध्ये भ्रमणं पृथिवीतले ।
देशग्रामपुरद्वारराज्यभ्रंशोऽरिजं भयम् ॥ ५ ॥

और जब संकटा महादशा में भ्रामरीका अन्तर आताहै तब समस्त भूमण्डल में भ्रमण करे,देश;ग्राम;पुर,द्वार और राज्यसे भ्रष्ट होजाय और शत्रुसे भय प्राप्तहोवे॥

विद्यालंकारवस्त्राणि विविधानि महद्यशः ।
विग्रहोऽन्यजनैःसार्द्धं भद्रा चेत्संकटां गता ॥ ६ ॥

और जब संकटा महादशा में भद्रिकाकी अन्तर्दशा आती है तब विद्या, आभूषण; विविध वस्त्र तथा महद्यश प्राप्त हो;और अन्य मनुष्यों से झगडे होते रहें ॥

उल्का प्राप्तधनग्राममहारिणी मृत्युकारिणी ।
संकटान्तर्गताऽजस्रं पशुमात्रकुलार्दनः ॥ ७ ॥

और संकटा महादशामें उल्का नामक योगिनी की जब अन्तर्दशा आती हैं तब प्राप्त हुए धन, ग्राम अपने कब्जे से निकल जांय, मृत्यु सम कष्ट होवे और पशु तथा कुलको पीड़ा हो ॥ ७ ॥

उत्साहो विविधः पुंसां निजपुत्रसुखोदयः ।
मनःप्रसन्नतामेति सिद्धा चेत्संकटां गता ॥ ८ ॥

और जब संकटा महादशामें सिद्धाकी अन्तर्दशा आती है तब अनेक उत्साह; अपने पुत्रसे सुखोदय; और मनमें प्रसन्नता होती है ॥ ८ ॥

आसीद्गुर्जरमंडले द्विजवरःशांडिल्यगोत्रोद्भवः--
श्रीमद्याजिकवंशमंडनमणिर्ज्योतिर्विदामग्रणीः ।
श्रौतस्मार्तरतो जनार्दन इति ख्यातःस्वकीयैर्गुणै--
स्तत्सूनुर्हरजी दशां स्फुटतरां चक्रे परां योगिनीम् ॥ ९ ॥

गुजरात देश वासी, शांडिल्यगोत्री, याज्ञिकवर्य्य, ज्योतिर्विदों में प्रधान और श्रौत (वैदिक) तथा स्मार्त क्रियाओं को करने वाले, जनार्दन नामक श्रेष्ठ ब्राह्मण अपने गुणों से संसार में सुप्रसिद्ध थे उनके पुत्र विद्वान् हरजी ने यह योगिनी दशा स्पष्ट की है ॥ ९ ॥

अथ योगिनीनां स्वामिग्रहाः—

चन्द्रःसूर्यो वाक्पतिर्भूमिपुत्रश्चांद्रिर्मंदो भार्गवःसैंहिकेयः ।
एते नाथा मंगलादिप्रदिष्टाः सौम्याःसौम्यानामनिष्टाःखलानाम् १

चन्द्रमा सूर्य बृहस्पति मंगल, बुध, शनि शुक्र और राहु ये ग्रह क्रमसे मंगला आदि योगिनीयों के स्वामी होते हैं इनमें शुभ योगिनीयों के शुभ ग्रह और अशुभ योगिनीयों के अशुभ ग्रह स्वामी होते हैं जैसे मंगलाका चन्द्रमा, पिंगलाका सूर्य, धान्याका बृहस्पति, और भ्रामरीका मंगल स्वामी होताहै इत्यादि क्रमसे और भी जानिये ॥

स्थानवलात् ग्रहाणां शुभाशुभफलम्—

यःखेटोऽस्तगृहं तथारिभवनं नीचं प्रयातो यथा-
वर्षेशाद्रिपुगो हि तस्य गदिता सर्वा दशा मध्यमा ।
यश्चोच्चस्थलमाश्रितःस्वभवने मूलत्रिकोणे खगो-
मित्रागारमुपागतो निगदिता तस्याखिला सौख्यदा ॥३॥

जो ग्रह सप्तम घरमें या शत्रु ग्रहके घरमें या नीच गतहो वा वर्षेश के स्थानसे छटे स्थान पर स्थित हो तो उस ग्रहकी सब दशान्तर्दशा मध्यम फलदा होती हैं, और जो ग्रह उच्चका या स्वगेही या मूल त्रिकोणी या मित्र क्षेत्री होताहै उस ग्रहकी दशा सदा सुख तथा शुभफल देने वाली होती है ॥ ३ ॥

कस्यचिन्मते तु—

पिंगलातो भवेत्सूर्यो मंगलातो निशाकरः
भ्रामरीतो भवेत्क्ष्माजो धान्यातोऽभूद्विधोःसुतः ॥ ४ ॥
भद्रिकातो गुरुरभूत्सिद्धातःकविसंभवः ।
उल्कातो भानुतनयःसंकटातो विधुन्तुदः ॥ ५ ॥

पिंगलासे सूर्य, मंगलासे चन्द्रमा, भ्रामरी से मंगल, धान्यासे बुध, भद्रासे बृहस्पति, सिद्धासे शुक्र, उल्कासे शनि और संकटा से राहु उत्पन्न हुआ है ॥ ५ ॥

अस्या एव दशांते च केतुरेवं विधीयते ॥ ६ ॥

इतिरुद्रयामले योगिनीदशाक्रमः समाप्तः ॥

और इसीके अन्तमें केतुनामक ग्रह विधान किया है यह किसी आचार्यका मतहै॥

वर्षप्रवेशवेलानयनम्—

इष्टःशको जन्मशकेन हीनास्त्रिधा सपादो दलितश्च सार्धम् ।
समन्वितो जन्मगवारपूर्वैः स्फुटा भवेदब्दनिवेशवेला ॥ १ ॥

वर्ष प्रवेश निकालने की क्रिया यह है कि-जब किसी वर्ष का वर्ष प्रवेश निकालना हो तो उस वर्ष में जो शकाब्द होवे उसको जन्म कालिक शकाब्द में से हीन करने से जो शेष रहे उसे गताब्द समझे, उस गताब्द को तीन स्थानों में पृथक् पृथक् स्थापित करे, फिर प्रथमांक को सवाया करे (वार—जाने) दूसरे को आधा करे (घडी—जाने) तृतीयांक को ड्यौढा करे (पल) फिर जो अंक सिद्ध हो उसमें यथास्थानस्थितक्रम से वार, घडी, पल, (वार की जगह के अंक पर वार घडीमें घडी,पलमें पल) जोडदे, तो वर्ष प्रवेशका समय स्पष्टनिकलआवेगा।

समाप्तश्चायं समस्तो ग्रन्थः—

चन्द्राङ्काङ्कमृगाङ्कमानकलिते श्रीवैक्रमे वत्सरे
चैत्रे मासि दलेऽमले गुहतिथौ वारे बुधे शोभने ।
मिश्रेण त्रिगुणायकेन परमानन्देन संपूरिता—
टीकैषा भगवत्पदाब्जयुगले तिष्ठेत्प्रसूनार्हणा ॥ १ ॥

* इति मङ्गलसागरी, शुभं भवतु *